

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में

निर्गन्धं पावयणं

अंगसूत्ताणि ३

नायाधम्मकहाओ • उवासगदसाओ •
अंतगडदसाओ • अणुत्तरोववाइयदसाओ •
पणहावागरणाइं विवागसुयं

वाचना प्रमुक्त
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

प्रकाशक
जैन विश्व भारती
लाडनूँ (राजस्थान)

प्रबंध सम्पादक :

श्रीचन्द्र रामपुरिया,

निदेशक

आगम और साहित्य प्रकाशन

(जैन विश्व भारती)

आर्थिक सहायक

श्री रामलाल हुंसराज गोलछा

बिराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :

विक्रम संवत् २०३१

कार्तिक कृष्णा १३

(२५०० वां निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक । ६२५

मूल्य : ८०/

मुद्रक :—

एस. नारायण एण्ड सन्स (प्रिन्टिंग प्रेस)

७११७/१८, पहाडी बीरज, बिराटनी-६

ANGA SUTTĀNI

III

NAYĀDHAMMAKAHĀO . UWĀSAGADASĀO .
ANTAGADADASĀO . ANUTTAROWAWĀIYADASAO .
PANHAWAGARANAIN . VIVĀGASUYAM .

(Original text Critically edited)

Vācanā PRAMUKHA
ĀCĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher .
JAIN VISWA BHĀRATI
LĀDNUN (Rajasthan)

Managing Editor
Shreechand Rampuria.

Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Financial Assistance
Sri Ramlal Hansraj Golchha
Biratnagar (Nepal)

V.S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvāṇa Day

Pages 925

Rs. 80/-

Printers :
S. Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraaj,
Delhi-6

समर्पण

पुष्टो वि पञ्चा-पुरितो सुवक्त्रो,
आजा-पहानो जनि जस्स निब्बं ।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
निक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुब्बं ॥

विलोडियं आगमबुद्धमेव,
सद्धं सुलद्धं जवणीयमच्छं ।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निब्बं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुब्बं ॥

पवाहिया जेण सुयस्स चारा,
गणे समत्थे मम भावते वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायजस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुब्बं ॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पट्ट,
होकर भी आगम-प्रधान था ।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से ।

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत ।
श्रुत-सदृध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से ।

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में ।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से ।

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हूँ। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक :	मुनि नथमल
सहयोगी :	मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन :	मुनि सुदर्शन
„	मुनि मधुकर
„	मुनि हीरालाल

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुस्तर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

ग्रन्थानुक्रम

१. प्रकाशकीय	६
२. सम्पादकीय	१३
३. सूचिका (हिन्दी)	२१
४. सूचिका (अंग्रेजी)	३१
५. विषयानुक्रम	४१
६. संकेत निर्देशिका	५५
७. नायाचम्पकहाओ	१
८. उवासगदसाओ	३६४
९. अंतमउवसाओ	५३६
१०. अजुसरोववाइयवसाओ	६११
११. पन्हावानरजाइ	६३५
१२. विभागसुअं	७१४

परिशिष्ट

१. संक्षिप्त-पाठ, पूर्व-स्वत और पूर्ति आचार-स्वत
२. पुरक पाठ
३. मुद्रिपत्रम्

प्रकाशकाय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई में विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुंचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी रांका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को बम्बई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर में 'गांधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम संस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर में ही क्यों न स्थापित की जाये? दोनों संस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारशहर) को बम्बई बुलाया गया। सारी बातें उनके सामने रखी गईं और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक बार इसी दृष्टि से 'गांधी विद्या-मन्दिर' संस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुंचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्दजी चोपड़ा और मैं तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आछा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली से हम लोगों के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई से पहुंचे। सरदारशहर में भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गांधी विद्या-मन्दिर' की प्रबन्ध समिति के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री संतगण व साध्वियों के वृन्द सहित कर्नाटक में नंदी पहाड़ी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने बीच में पैर थामे और मुझ से कहा "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप में आगे बढ़ाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नंदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। (सरदार-शहर) प्रतिक्रमण के बाद का समय था। पहाड़ी की तलहटी में दीपक और आकाश में तारे जग-मगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर कांच महल में पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने बैठा था। वचनबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊंगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन स्वैताम्बर तेरापंची महासभा के एक विभाग के रूप में परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

मैं उसका संयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड़ और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहां महासभा के सभापति श्री हनुमान-मलजी बैंगानी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान में होने की बात ठहरी। इस तरह नंदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नहीं किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से ६६ मील दूर लाडनू (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो संयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-संशोधन का कार्य सं० २०११ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हाथ में लिया। कुछ समय बाद उज्जैन में दर्शन किए। सं० २०१३ में लाडनू में आचार्यश्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनों बाद सुजानगढ़ में दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढंग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने कहा—“ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।” आचार्यश्री की वाचना में प्रस्तुत आगम बैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा में कदम आगे बढ़े। पर अन्त में प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१. आगम-सुप्त ग्रन्थमाला : मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला : मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।
४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमों से सम्बन्धित कथाओं का संकलन और अनुवाद।
५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला : आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रंथमाला में—(१) दसवेआलियं तह उत्तरज्जम्यणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्जमणं, (४) उबवाइयं और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइयं एवं सुयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्रायः समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नहीं हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला में—(१) दसवेआलियं एवं (२) उत्तरज्जम्यणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायांग का मुद्रण-कार्य प्रायः समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रन्थमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी ग्रंथमाला में कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ ।

पाँचवीं ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. २) ।

उक्त प्रकाशन-कार्य में सराबगी बेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सराबगी, गोविंदलालजी सराबगी एवं कमलनयनजी सराबगी) का बहुत बड़ा अनुदान महासभा को रहा । अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सराबगी एवं उनके पुत्र पन्नालालजी सराबगी की स्मृति में प्राप्त हुआ था । भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानों में ज्यों-के-स्थों गूँज रहे हैं—
“धन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य में जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार हैं, उनकी बराबरी कौन कर सकेगा ?” उन्हीं तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा ।

कार्य के द्वितीय चरण में श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया ।

आचार्यश्री की वाचना में सम्पादित आगमों के संग्रह और मुद्रण का कार्य अब ‘जैन विश्व भारती’ के अंचल से हो रहा है । प्रथम प्रकाशन के रूप में ११ अंगों को तीन खण्डों में ‘अंगसुत्ताणि’ के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड में आचार, सूत्रकृत्, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अंग हैं ।

दूसरे खण्ड में भगवती—पाँचवाँ अंग है ।

तीसरे खण्ड में ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अंग हैं ।

इस तरह म्यारह अंगों का तीन खण्डों में प्रकाशन ‘आगम-सुत्त ग्रंथमाला’ की योजना को बहुत आगे बढ़ा देता है ।

ठाणांग सानुवाद संस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रंथमाला के तीसरे ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत होगा ।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप में ‘दशवैकालिक और उत्तराध्ययन’ का प्रकाशन हुआ है; जो एक नई योजना के रूप में है । इसमें सभी आगमों का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है ।

दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटकों के रूप में दिया जा रहा है ।

‘जैन विश्व भारती’ की इस अंग एवं अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने में जिन महानुभावों के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हें संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है ।

मुद्रण-कार्य में एस० नारायण एण्ड संस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नहीं रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने में श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध में श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

इस अवसर पर मैं आदर्श साहित्य संघ के संचालकों तथा कार्यकर्ताओं को भी नहीं भूल सकता। उन्होंने प्रारम्भ से ही इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने, धारने तथा अन्यान्य व्यवस्थाओं को क्रियान्वित करने में सहयोग दिया है। आदर्श साहित्य संघ के प्रबन्धक श्री कमलेश जी चतुर्वेदी सहयोग में सदा तत्पर रहे हैं, तदर्थ उन्हें धन्यवाद है।

‘जैन विश्व भारती’ के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोड़िया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त बन्धुओं को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है, इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

सन् १९७३ में मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था में लगा। आचार्यश्री यात्रा में थे। दिल्ली में मुद्रण की व्यवस्था बैठाई गई। कार्यारंभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था में विलंब होने से कार्य में द्रुतगति नहीं आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ा। स्वल्प समय में इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम संपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा संपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी का एक कर्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैंने इससे अधिक कुछ और नहीं किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर संस्करण ‘जैन विश्व भारती’ के प्रारंभिक उपहार के रूप में उस समय जनता के कर-कमलों में आ रहे हैं, जबकि जगत्वंश श्रमण भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, बंशारी रोड

२९, हरिवार्ध

दिल्ली-६

श्रीचन्द्र रामपुरिया

निवेद्य

आगम और साहित्य प्रकाशन

जैन विश्व-भारती

सम्पादकीय

ग्रन्थ-बोध—

आगम सूत्रों के मौलिक विभाग दो हैं—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। अंग-प्रविष्ट सूत्र महावीर के मुख्य शिष्य गणधर द्वारा रचित होने के कारण सर्वाधिक मौलिक और प्रामाणिक माने जाते हैं। उनकी संख्या बारह है—१. आचारांग २. सूत्रकृतांग ३. स्थानांग ४. समवायांग ५. व्याख्याप्रज्ञप्ति ६. ज्ञाताधर्मकथा ७. उपासकदशा ८. अंतकृतदशा ९. अनुत्तरोपपातिकदशा १०. प्रश्नव्याकरण ११. विपाकश्रुत १२. दृष्टिवाद। बारहवां अंग अभी प्राप्त नहीं है। शेष ग्यारह अंग तीन भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। प्रथम भाग में चार अंग हैं—१. आचारांग २. सूत्रकृतांग ३. स्थानांग और ४. समवायांग, दूसरे भाग में केवल व्याख्याप्रज्ञप्ति और तीसरे भाग में शेष छह अंग।

प्रस्तुत भाग अंग साहित्य का तीसरा भाग है। इसमें नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं और विवागसुयं—इन ६ अंगों का पाठान्तर सहित मूल पाठ है। प्रारम्भ में संक्षिप्त भूमिका है। विस्तृत भूमिका और शब्द-सूची इसके साथ सम्बद्ध नहीं है। उनके लिए दो स्वतन्त्र भागों की परिकल्पना है। उसके अनुसार चौथे भाग में ग्यारह अंगों की भूमिका और पांचवें भाग में उनकी शब्द-सूची होगी।

प्रस्तुत पाठ और सम्पादन-पद्धति

हम पाठ-संशोधन की स्वीकृत पद्धति के अनुसार किसी एक ही प्रति को मुख्य मानकर नहीं चलते, किन्तु अर्थ-मीमांसा, पूर्वापरप्रसंग, पूर्ववर्ती पाठ और अन्य आगम-सूत्रों के पाठ तथा वृत्तिगत व्याख्या को ध्यान में रखकर मूलपाठ का निर्धारण करते हैं। लेखनकार्य में कुछ त्रुटियां हुई हैं। कुछ त्रुटियां मौलिक सिद्धान्त से सम्बद्ध हैं। वे कब हुईं यह निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता। पाठ के संक्षेप या विस्तार करने में हुई हैं, यह संभावना की जा सकती है। 'नायाधम्मकहाओ' १।५।५६ में बारह व्रत और पांच महाव्रतों का उल्लेख है। स्थानांग ४।१३६, उत्तराध्ययन २३।२३-२८ के अनुसार यह पाठ शुद्ध नहीं है। बाईस तीर्थंकरों के युग में चातुर्यामि धर्म होता है, पांच महाव्रत और द्वादशव्रत रूप धर्म नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि अगार-विनय और अनगार-विनय का पाठ ओबाइय सूत्र के अगारधर्म और अनगारधर्म के आधार पर पूरा किया गया है। इसलिए जो वर्णन वहां था वह यहां आ गया। हमने इस पाठ की पूर्ति रायपसेणइय सूत्र के आधार

पर की है, देखें—नायाधम्मकहाओ पृष्ठ १२२ का सातवां पाद-टिप्पण । इस प्रकार के आलोच्य पाठ नायाधम्मकहाओ १।१२।३६, १।१६।२१, १।१६।४६ में भी मिलता है । प्रश्नव्याकरण सूत्र १०।४ में 'कायवर' पाठ मिलता है । वृत्तिकार ने इसका अर्थ 'काचवर'—प्रधान काच दिया है, किन्तु यह पाठ शुद्ध नहीं है । लिपि-दोष के कारण मूलपाठ विकृत हो गया । निशीयाध्ययनके ग्यारहवें उद्देशक (सूत्र १) में 'कायपायाणिवा और बइरपायाणिवा' दो स्वतन्त्र पाठ हैं । वहां भी पात्र का प्रकरण है और यहां भी पात्र का प्रकरण है । काचपात्र और वज्रपात्र—दोनों मुनि के लिए निषिद्ध हैं । इस आधार पर यहां भी 'वर' के स्थान पर 'वइर' पाठ का स्वीकार औचित्यपूर्ण है । लिपिकाल में इस प्रकार का वर्ण-विपर्यय अन्यत्र भी हुआ है । 'जात' के स्थान पर 'जाब' तथा 'पंचकमण' के स्थान पर 'एवंकमण' पाठ मिलता है । पाठ-संशोधन में इस प्रकार के अनेक विचित्र पाठ मिलते हैं । उनका निर्धारण विभिन्न स्रोतों से किया जाता है ।

प्रतिपरिचय

१. नायाधम्मकहाओ—

क. तारुपत्रीय (फोटोप्रिंट) मूलपाठ—

यह प्रति जेससमेर भंडार से प्राप्त है । यह अनुमानतः बारहवीं शताब्दी की है ।

ख. नायाधम्मकहाओ (पंचपाठी) मूल पाठ वृत्ति सहित—

यह प्रति गर्बया पुस्तकालय, सरदारशहर की है । पत्र के चारों ओर हासियों (Margin) में वृत्ति लिखी हुई है । इसके पत्र १८६ तथा पृष्ठ ३७२ हैं । प्रत्येक पत्र १० $\frac{३}{४}$ इंच लम्बा तथा ४ $\frac{३}{४}$ इंच चौड़ा है । पत्र में मूलपाठ की १ से १३ तक पंक्तियां हैं । प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ३८ तक अक्षर हैं । प्रति स्पष्ट और कलात्मक है । बीच में तथा इधर-उधर वापिकाएं हैं । यह अनुमानतः १४-१५ शताब्दी की होनी चाहिए । प्रति के अंत में टीकाकार द्वारा उद्धृत प्रशस्ति के ११ श्लोक हैं । उनमें अन्तिम श्लोक यह है—

एकादशमु गतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसमानां ।

अणहिलपाटकनगरे भाद्रवद्वितीयां पञ्जुसणसिद्धयं ॥१॥

समाप्तेयं ज्ञाताधर्मप्रदेशटीकेति ॥छ॥ ४२५५ ग्रंथाग्रं ॥ वृत्ति । एवं सूत्र
वृत्ति १७५५ ग्रंथाग्रं ॥१॥छ॥

ग. नायाधम्मकहाओ (मूलपाठ)

यह प्रति गर्बया पुस्तकालय, सरदारशहर की है । इसके पत्र ११० तथा पृष्ठ २२० हैं । प्रत्येक पत्र १० $\frac{३}{४}$ इंच लम्बा तथा ४ $\frac{३}{४}$ इंच चौड़ा है । प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में ४८ से ५३ तक अक्षर हैं । प्रति जीर्ण-सी है । बीच में बाबड़ी है ।

लिपि संवत् १५५४ है। अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—संवत् १५५४ वर्षे प्रथम श्रावण वदि २ रबी। श्री श्री श्री शीरोही नगरे। राया राउ श्रीजगमालराज्ये ॥ श्रीत पागण्डे गच्छनायकश्रीसुमतिसाधसूरि। तत्पट्टे श्रीहेमविमलसूरिराज्ये। महोपाध्याय श्रीअनंत-हंसगणीनां उपदेशेन ॥ साह श्री सूरालिखितं ॥ जोसी पोपालिखितं ॥ आति उज्जल संयुक्त बीजा लिखितं ॥छ॥छ॥१॥ इसके आगे १२ श्लोक लिखे हुए हैं।

घ. टब्बा

यह प्रति १२वें अध्ययन से आगे काम में ली गई है।

२. उवासगदसाओ—

क. उवासगदसाओ—मूल पाठ (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट)—

इसकी पत्र संख्या २० व पृष्ठ ४० है। पत्र क्रमांक संख्या १८२ से २०२ तक है। फोटो प्रिंट पत्र संख्या ६ है व एक पत्र में ८ पृष्ठों का फोटो है। इसकी लम्बाई १४ इंच, चौड़ाई $\frac{3}{4}$ इंच है। प्रत्येक पत्र में ४ से ६ तक पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ४५ के करीब अक्षर हैं।

प्रति के अन्त में 'ग्रन्थ ८१२' इतना ही लिखा हुआ है। संवत् बगैरह नहीं है पर विपाक सूत्र पत्र संख्या २८५ में लिपि संवत् ११८६ है। अतः उसके आधार पर यह ११८६ से पहले की ही मालूम पड़ती है।

ख. उवासगदसाओ—टब्बेयुक्त पाठ (हस्तलिखित)—

यह प्रति गर्धया पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र ३६ तथा पृष्ठ ७२ हैं। प्रत्येक पत्र में पाठ की आठ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में करीब ५२ अक्षर हैं। पाठ के नीचे राजस्थानी में अर्थ लिखा हुआ है। प्रत्येक पृष्ठ १० इंच लम्बा व $\frac{3}{4}$ इंच चौड़ा है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्न प्रशस्ति है—

संवत् १७७८ वर्षे मिति माघमासे कृष्णपक्षे पंचमीतिथौ बुधवारं मुनिना सिवेना-
लेखि स्ववाचनाय श्रीमत्कनैपुरमध्ये श्रीरस्तु कल्याणमस्तु लेखकपाठकयोः श्रीः।

३. अंतगडबसाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट)। पत्र संख्या २०३ से २२२ तक। विपाक सूत्र के अंत में (पत्र संख्या २८५ में) लिपि संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है। अतः क्रमानुसार पत्रों से यह प्रति भी ११८६ से पहले की होनी चाहिए।

ख. हस्तलिखित—गर्धया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त तीन सूत्रों की संयुक्त प्रति (उवासगदशा, अंतगड, अणुत्तरोबबाइय) परिचय—देखें अणुत्तरोबबाइय 'क' प्रति—लेखन संवत् १४६५ है।

ग. हस्तलिखित—गर्घया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त ।

यह प्रति पंचपाठी है । इसके पत्र २६ तथा पृष्ठ ५२ हैं । प्रत्येक पृष्ठ में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक अक्षर हैं । प्रति की लम्बाई १० $\frac{१}{४}$ इंच तथा चौड़ाई ४ $\frac{१}{४}$ इंच है । अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं । प्रति 'तकार' प्रधान तथा अपठित होने के कारण कहीं-कहीं अशुद्धियां भी हैं । प्रति के अंत में लेखन संवत् नहीं है । केवल इतना लिखा है—॥छ॥ ग्रंथाग्रं ८६० ॥०॥ ॥०॥ पुष्यत्नसूरीणा ॥

घ. यह प्रति गर्घया पुस्तकालय सरदारशहर से प्राप्त है । इसके पत्र २० हैं । प्रत्येक पत्र में पाठ की पांच पंक्तियां हैं । प्रत्येक पंक्ति के बीच में टन्वा लिखा हुआ है । प्रति सुन्दर लिखी हुई है । पत्र की लम्बाई १० इंच व चौ० ४ $\frac{१}{४}$ इंच है । प्रति के अंत में तीन दोहे लिखे हुए हैं ।

थली हमारी देश है, रिणी हमारो ग्राम ।
गोत्र वंश है माहातमा, गणेश हमारो नाम ॥१॥
गणेश हमारा है पिता, मैं सुत मुन्नीलाल ।
बड़ो गच्छ है खरत्तरो, उजियागर पोसाल ॥२॥
बीकानेर व्रत्मान है, राजपुतानां नाम ।
जंगलघर बादस्या, गंगासिंहजी नाम ॥३॥
श्रीरस्तु ॥छ॥ कल्याणमस्तु ॥छ॥

१. अनुत्तरोबवाइयदसाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) । पत्र संख्या २२३ से २२८ तक । विपाक सूत्र पत्र संख्या २८५ में लिपि संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है । अतः क्रमानुसार यह प्रति ११८६ से पहले की है ।

ख. गर्घया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त तीन सूत्रों की (उपासकदशा, अन्तकृत और अनुत्तरोपपातिक) संयुक्त प्रति है । इसके पत्र १५ तथा पृष्ठ ३० हैं । प्रत्येक पत्र १३ $\frac{१}{४}$ इंच लम्बा तथा ५ $\frac{१}{४}$ इंच करीब चौड़ा है । प्रत्येक पत्र में २३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में करीब ८२ अक्षर हैं । प्रति पठित तथा स्पष्ट लिखी हुई है । प्रति के अन्त में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है । उसके अनुसार यह प्रति १४६५ की लिखी हुई है :—

ऊकेशवंशो जयति प्रशंसापदं सुपर्वा बलिदत्तशोभः ।

डागाभिषा तत्र समस्ति शाखा पात्रावली बारितलोकतापा ॥१॥

मुक्ताफलतुलां बिभ्रत् सद्बृत्तः सुगुणास्पदं ।

तस्यां श्रीशालभद्राख्यः सम्यग्बृच्चिरजायत ॥२॥

तदन्वयस्याभरणं बभूव वांगाभिधानः सुविशुद्धबुद्धिः ।
 विवेकसत्संगतिलोचनाभ्यां दृष्ट्वा सुमार्गं य उरीचकार ॥३॥
 तदंगजन्माजनि बाह्दहास्यः सद्धर्मकर्मार्जनबद्धकक्षः ।
 बल्लो यदीयं गुरुदेवभक्तिरलंचकाराब्जमिवालिराजी ॥४॥
 क्रमेण तद्वंशविशालकेतुः कर्माविधः श्रावकपुंगवोभूत् ।
 चित्रं कलावानपि यः प्रकामं बुधप्रमोदार्पणहेतुरुच्चैः ॥५॥
 तदंगभूरभूत्साधु महणो द्रुहिणोपमः ।
 राजहंसगतिः शश्वच्चतुराननतां दधत् ॥६॥
 तस्याहंदं ह्ययुगलाब्जमधुघ्नतस्य यात्रादिभूरिसुकृतोच्चयकारकस्य ।
 आसीदसामयशसः किल माह्वणाद्या देविप्रिया प्रणयिनी गिरिजेव शंभोः ॥७॥
 तत्कुक्षिप्रभवाबभूवुरभितोप्युद्योतयंतः कुलं,
 चत्वारस्तनया नयाजितघना नाभ्यर्थना भीरवः ।
 आद्यस्तत्र कुमारपाल इति विख्यातः परो वर्द्धन-
 स्तार्त्तीयस्त्रिभुवाभिधस्तदपरो गेलाह्वयोमाभूवि ॥८॥
 चत्वारोपि व्यधुरधरितां मर्त्यधात्रीरहस्ते,
 स्वौदार्येणातनुधनभृतो बांधवा धर्मकर्म ।
 अन्योन्यं स्पर्द्धयेव प्रतिदिनमनयास्तेषु गेलाह्व्य भार्या,
 गंगा देवीति गंगावदमलहृदयास्तीह जैनां हिलीना ॥९॥
 तत्कुक्षिभूः श्रावक ऊदराज, आधो द्वितीयः किल बूट नामा ।
 द्वावप्यभूतां गुरुदेवभक्तौ मंदोदरी नाम सुता तथास्ति ॥१०॥
 ऊदाह्व्यस्य समीरीति माऊ बूटस्य च प्रिया ।
 आसधरो मंडनश्च तयो पुत्री यथाक्रमम् ॥११॥
 अमुना परिवारेण, सारेण सहिता शुभा ।
 गंगादेवी गुरोर्बक्त्रादुपदेशामृतं पपी ॥१२॥
 आबाल्याद्धर्मकर्मणि तत्त्वान्यसौ निरंतरं ।
 एकादशांगसूत्राणि लेखयामास हर्षतः ॥१३॥
 विजयिनि स्वरतरगच्छे जिनभद्रसूरिसाम्राज्ये ।
 गुणं निधिं 'बाद्धींदु' मिते विक्रमभूपाद् व्रजति वर्षे ॥१४॥
 गंगादेवी सुतोपेता, लेखयित्वांगपुस्तकं ।
 दत्तेस्म श्रीतपोरलोपाध्यायेभ्यः प्रमोदतः ॥१५॥
 ॥छा॥ श्रीः ॥

ग, हस्तलिखित प्रति गर्भया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त । इसके पत्र ६ तथा पृष्ठ १८ हैं । प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३५ से ४० तक अक्षर हैं । प्रति

की लम्बाई १० $\frac{१}{२}$ इंच तथा चौड़ाई ४ $\frac{१}{२}$ इंच है। अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं। प्रति शुद्ध 'तथा' 'त' प्रधान है। अंत में लेखन-संवत् तथा लिपिकर्ता का नाम नहीं है केवल निम्नोक्त वाक्य है—

॥छ॥ अणुत्तरोववाइयदशांगं नवमं अंगं समत्तं छ॥ श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः
छ छः प्रति का अनुमानित समय १६०० है।

५. पण्हावागरणाई—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मूलपाठ—

पत्र संख्या २२८ से २५६

ख. पंचपाठी। हस्तलिखित अनुमानित संवत् १२वीं सदी का उत्तरार्ध।

यह प्रति गर्धया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ६८ हैं। प्रत्येक पत्र १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच है। मूलपाठ की पंक्तियां १ से १२ तथा पंक्ति में लगभग २३ से ३५ अक्षर हैं। चारों ओर वृत्ति तथा बीच में बावड़ी है। अन्तिम प्रशस्ति की जगह—
ग्रंथाग्र १२५० शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥ लिखा है। लेखन कर्ता तथा लिपि-संवत् का उल्लेख नहीं है किन्तु अनुमानतः यह प्रति १३वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

ग. त्रिपाठी (हस्तलिखित)—

गर्धया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। इसके पत्र १११ हैं। प्रत्येक पत्र १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच है। मूलपाठ की पंक्तियां १ से ८ तथा प्रत्येक पंक्ति में ३६ से ४६ तक लगभग अक्षर हैं। ऊपर नीचे दोनों तरफ वृत्ति तथा बीच में कलात्मक बावड़ी है। प्रति के उत्तरार्ध के बीच बीच के कई पन्ने सुप्त हैं। अंत में सिर्फ ग्रंथाग्र १२५० ॥छ॥ श्री ॥ छ॥०॥ लिखा है। लिपि संवत् अनुमानतः १६वीं शताब्दी होना चाहिए।

घ. मूलपाठ (सचित्र)—

पूनमचंद दुधोड़िया, छापर द्वारा प्राप्त। इसके पत्र २७ हैं। प्रत्येक पत्र १२×५ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५१ से ६० तक अक्षर हैं। बीच में बावड़ी है तथा प्रथम दो पत्रों में सुनहरी कार्य किए हुए भगवान् महावीर और गौतम स्वामी के चित्र हैं। लेखन संवत् नहीं है पर यह प्रति अनुमानतः १५७० के लगभग की होनी चाहिए। अशुद्धि बहुत है।

च. मूलपाठ तथा टब्बा की प्रति—

गर्धया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। पत्र संख्या ८३।

क. यह प्रति वर्तमान में जैन विश्व मारती, लाहूर् में है। इसके पत्र १०३ तथा पृष्ठ २०६

है। बालाबोध पंचपाठी। पंक्तियां नीचे में १ ऊपर में ११ तक हैं। अक्षर २८ से ३५ तक हैं। लेखन संवत् १९६७। लेखक सुदर्शन। प्रति काफी शुद्ध है। •

६. विभागसुर्य—

क. मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट) २६० से २८५ तक। (मूलपाठ) पंक्तियां ५ से ६ तक। कुछ पंक्तियां अछूरी तथा कुछ अस्पष्ट हैं। प्रति प्रायः शुद्ध है। लेखन संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ सोमवार। पुष्पिका काफी लम्बी है पर अस्पष्ट है। प्रति की लम्बाई १४ इंच तथा चौड़ाई १३ इंच है और तीन कोष्ठकों में लिखी हुई है। •

ख. मूलपाठ—

यह प्रति गर्धया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ३२ तथा पृष्ठ ६४ हैं। पत्रों की लम्बाई १० ३/४ तथा चौड़ाई ४ १/४ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। कहीं-कहीं भाषा का अर्थ लिखा हुआ है। प्रति प्रायः शुद्ध है। अन्तिम प्रशस्ति में लिखा है:—

शुभं भवतु लेखकपाठकयोः ॥ संवत् १६३३ वर्षे आसो वदि ८ रवि लिखितं। छ॥ :। •

ग. मूलपाठ—

यह प्रति हनूतमलजी मांगीलालजी बेंगानी बीदासर से प्राप्त हुई। इसके पत्र ३५ तथा पृष्ठ ७० हैं। प्रत्येक पत्र ११ १/४ इंच लम्बा तथा ४ १/४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १२ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४५ से ४६ तक अक्षर हैं। प्रति अशुद्धि बहुत है। अन्तिम प्रशस्ति में—

एककारस्य अंगं समतं ॥ ग्रंथाग्र १२१६ ॥ टीका ६०० एतस्या ॥ लिपि संवत् नहीं है, पर पत्रों की जीर्णता तथा अक्षरों की लिखावट से यह प्रति करीब ४०० वर्ष पुरानी होनी चाहिए। •

वृ. एम० सी मोदी तथा बी० जी० चोकसी द्वारा सम्पादित तथा गुर्जरग्रंथरत्न कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण १९३५, 'विभागसुर्य'।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवद्विगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा की।

आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुस्तर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूँ।

प्रस्तुत पाठ के सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी का पर्याप्त योग रहा है। मुनि बालचन्द्रजी, इस कार्य में क्वचित् संलग्न रहे हैं। प्रति-शोधन में मुनि दुलहराजजी का पूर्ण योग मिला है। इसका ग्रंथ-परिमाण मुनि मोहनलाल (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योगका मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्द्रजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्द्रजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। 'अंगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन में इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व-भारती' के अध्यक्ष श्री छेमचन्द जी सेठिया, 'जैन विश्व-भारती' तथा 'आदर्श साहित्य संघ' के कार्यकर्त्ताओं ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सब का पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अणुव्रत बिहार

नई दिल्ली

२५०० वां निर्वाण दिवस।

मुनि नथमल

भूमिका

नायाधम्मकहाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का छठा अंग है। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध का नाम 'नाया' और दूसरे श्रुतस्कन्ध का नाम 'धम्मकहाओ' है। दोनों श्रुतस्कन्धों का एकीकरण करने पर प्रस्तुत आगम का नाम 'नायाधम्मकहाओ' बनता है। 'नाया' (ज्ञात) का अर्थ उदाहरण और 'धम्मकहाओ' का अर्थ धर्म-आख्यायिका है। प्रस्तुत आगम में चरित और कल्पित—दोनों प्रकार के दृष्टान्त और कथाएं हैं।^१

जयध्वला में प्रस्तुत आगम का नाम 'नाहधम्मकहा' (नायधर्मकथा) मिलता है। नाय का अर्थ है स्वामी। नायधर्मकथा अर्थात् तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित धर्मकथा। कुछ संस्कृत ग्रन्थों में प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' उपलब्ध होता है। आचार्य अकलंक ने प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' बतलाया है।^२ आचार्य मलयगिरि और अभयदेवमूरि ने उदाहरण-प्रधान धर्मकथा को ज्ञाताधर्मकथा कहा है। उनके अनुसार प्रथम अध्ययन में 'ज्ञात' और दूसरे अध्ययन में 'धर्म-कथाएं' हैं। दोनों ने ही ज्ञात पद के दीर्घीकरण का उल्लेख किया है।^३

श्वेताम्बर साहित्य में भगवान् महावीर के वंश का नाम 'ज्ञात' और दिगम्बर साहित्य में 'नाय' बतलाया गया है। इस आधार पर कुछ विद्वानों ने प्रस्तुत आगम के नाम के साथ भगवान् महावीर का सम्बन्ध जोड़ने का प्रयत्न किया है। उनके अनुसार 'ज्ञातृधर्मकथा' या 'नायधर्मकथा'

१. समवायो, पद्मपत्रसमवायो, सूत्र २४।

२. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७२ : ज्ञातृधर्मकथा।

३. (क) मदीयूति, पत्र २३०, ३१ : ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथाः, अथवा ज्ञातानि—ज्ञाताध्ययनानि प्रथमश्रुतस्कन्धे, धर्मकथा द्वितीयश्रुतस्कन्धे यादु ग्रन्थपद्धतिषु (ता) ज्ञाताधर्मकथाः पृथोदरा-रित्वात्पूर्वपक्षस्य दीर्घान्तरात्।

(ख) समवायवृत्ति, पत्र १०८ : ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा, दीर्घत्वं संज्ञात्वाद् अथवा प्रथमश्रुतस्कन्धे ज्ञातानिश्चायकत्वाद् ज्ञातानि, द्वितीयस्तु तथैव धर्मकथाः।

का अर्थ है—भगवान् महावीर की धर्मकथा^१। वेबर के अनुसार जिस ग्रंथ में ज्ञातृवंशी महावीर के लिए कथाएं हों उसका नाम 'नायाधम्मकहा' है^२। किन्तु समवायांग और नंदी में जो अंगों का विवरण प्राप्त है उसके आधार पर 'नायाधम्मकहा' का 'ज्ञातृवंशी महावीर की धर्मकथा'—यह अर्थ संगत नहीं लगता। वहां बतलाया गया है कि ज्ञाताधर्मकथा में ज्ञातों (उदाहरणभूत व्यक्तियों) के नगर, उद्यान आदि का निरूपण किया गया है^३। प्रस्तुत आगम के प्रथम अध्ययन का नाम भी 'उत्तिस्तणाए' (उत्तिस्त ज्ञात) है। इसके आधार पर 'नाय' शब्द का अर्थ 'उदाहरण' ही संगत प्रतीत होता है।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम के दृष्टान्तों और कथाओं के माध्यम से अहिंसा, अस्वाद, श्रद्धा, इन्द्रिय-विजय आदि आध्यात्मिक तत्त्वों का अत्यन्त सरस शैली में निरूपण किया गया है। कथावस्तु के साथ वर्णन की विशेषता भी है। प्रथम अध्ययन को पढ़ते समय कादम्बरी जैसे गद्य काव्यों की स्मृति हो आती है। नवें अध्ययन में समुद्र में डूबती हुई नौका का वर्णन बहुत सजीव और रोमांचक है। बारहवें अध्ययन में कलुषित जल को निर्मल बनाने की पद्धति वर्तमान जल-शोधन की पद्धति की याद दिलाती है। इस पद्धति के द्वारा पुद्गल द्रव्य की परिवर्तनशीलता का प्रतिपादन किया गया है।

मुख्य उदाहरणों और कथाओं के साथ कुछ अवान्तर कथाएं भी उपलब्ध होती हैं। आठवें अध्ययन में कूप-मंजूक की कथा बहुत ही सरस शैली में उल्लिखित है। परिव्राजिका चोखा जितशत्रु के पास जाती है। जितशत्रु उसे पूछता है—'तुम बहुत घूमती हो, क्या तुमने मेरे जैसा अन्तःपुर कहीं देखा है?' चोखा ने मुस्कान भरते हुए कहा—'तुम कूप-मंजूक जैसे हो।'

'वह कूप-मंजूक कौन है?' जितशत्रु ने पूछा।

चोखा ने कहा—'कूप में एक मेंढक था। वह वहीं जन्मा, वहीं बड़ा। उसने कोई दूसरा कूप, तालाब और जलाशय नहीं देखा। वह अपने कूप को ही सब कुछ मानता था। एक दिन एक समुद्री मेंढक उस कूप में आ गया। कूप-मंजूक ने कहा—तुम कौन हो? कहां से आए हो? उसने कहा—मैं समुद्र का मेंढक हूँ, वहीं से आया हूँ। कूप-मंजूक ने पूछा—वह समुद्र कितना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा—वह बहुत बड़ा है। कूप-मंजूक ने अपने पैर से रेखा खींचकर कहा—क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा—इससे बहुत बड़ा है। कूप-मंजूक ने कूप के पूर्वी तट से पश्चिमी तट तक फुदक कर कहा—क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा—इससे भी बहुत बड़ा है। कूप-मंजूक इस पर विश्वास नहीं कर सका। इसने कूप के सिवाय कुछ देखा ही नहीं था'।

इस प्रकार नाना कथाओं, अवान्तर-कथाओं, वर्णनों, प्रसंगों और शब्द-प्रयोगों की दृष्टि से प्रस्तुत आगम बहुत महत्वपूर्ण है। इसका विश्व के विभिन्न कथा-ग्रन्थों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर कुछ नए तथ्य उपलब्ध हो सकते हैं।

१. जैन साहित्य का इतिहास, पूर्व-पीठिका, पृष्ठ ६९०।

२. Stories From the Dharma of NAYA ६० ए० वि० १२, पृष्ठ ६६।

३. (क) समवायो, पद्मवसमवायो, पृष्ठ २४।

(ख) नंदी, पृष्ठ ८३।

४. नायाधम्मकहाओ ८।१५४, पृ० १८६, १८७।

उवासगदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का सातवां अंग है। इसमें दस उपासकों का जीवन वर्णित है इसलिए इसका नाम 'उवासगदसाओ' है। श्रमण-परम्परा में श्रमणों की उपासना करने वाले गृहस्थों को श्रमणोपासक या उपासक कहा गया है। भगवान् महावीर के अनेक उपासक थे। उनमें से दस मुख्य उपासकों का वर्णन करने वाले दस अध्यायन इसमें संकलित हैं।

वचन-वस्तु—

भगवान् महावीर ने मुनि-धर्म और उपासक धर्म—इस द्विविध धर्म का उपदेश दिया था। मुनि के लिए पांच महाव्रतों का विधान किया और उपासक के लिए बारह व्रतों का। प्रथम अध्ययन में उन बारह व्रतों का विशद वर्णन मिलता है। श्रमणोपासक आनन्द भगवान् महावीर के पास उनकी दीक्षा लेता है। व्रतों की यह सूची धार्मिक या नैतिक जीवन की प्रशस्त आचार-संहिता है। इसकी आज भी उतनी ही उपयोगिता है जितनी ढाई हजार वर्ष पहले थी। मनुष्य स्वभाव की दुर्बलता जब तक बनी रहेगी तब तक उसकी उपयोगिता समाप्त नहीं होगी।

मुनि का आचार-धर्म अनेक आगमों में मिलता है, किन्तु गृहस्थ का आचार-धर्म मुख्यतः इसी आगम में मिलता है। इसलिए आचार-शास्त्र में इसका मुख्य स्थान है। इसकी रचना का मुख्य प्रयोजन ही गृहस्थ के आचार का वर्णन करना है। प्रसंगवश इसमें नियतिवाद के पक्ष-विपक्ष की सुन्दर चर्चा हुई है। उपासकों की धार्मिक कसौटी की घटनाएं भी मिलती हैं। भगवान् महावीर उपासकों की साधना का कितना ध्यान रखते थे और उन्हें समय-समय पर कैसे प्रोत्साहित करते थे यह भी जानने को मिलता है।

जयधवला के अनुसार प्रस्तुत आगम उपासकों के ग्यारह प्रकार के धर्म का वर्णन करता है। उपासक-धर्म के ग्यारह अंग ये हैं—दर्शन, व्रत, सामायिक, पौषषोपवास, सच्चित्तविरति, रात्रि-भोजन विरति, ब्रह्मचर्य, आरंभविरति, अनुमति विरति और उद्दिष्ट विरति^१। आनन्द आदि श्रावकों ने उक्त ग्यारह प्रतिमाओं का आचरण किया था। व्रतों की आराधना स्वतन्त्र रूप में भी की जाती है और प्रतिमाओं के पालन के समय भी की जाती है। व्रत और प्रतिमा—ये दो पद्धतियां हैं। समवायांग और नन्दी सूत्र में व्रत और प्रतिमा दोनों का उल्लेख है। जयधवला में केवल प्रतिमाओं का उल्लेख है।

अंतगडदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का आठवां अंग है। इसमें जन्म-मरण की परम्परा का अंत करने वाले व्यक्तियों का वर्णन है, तथा इसके दस अध्ययन हैं इसलिए इसका नाम 'अंतगडदसाओ' है। समवायांग में इसके दस अध्ययन और सात वर्ग बतलाए गए हैं^१। नंदी सूत्र में इसके अध्ययनों का कोई उल्लेख नहीं है, केवल आठ वर्गों का उल्लेख है^२। अभयदेवसूरि ने दोनों में सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन हैं इस अपेक्षा से समवायांग सूत्र में दस अध्ययन और अन्य वर्गों की अपेक्षा से सात वर्ग बतलाए गए हैं। नन्दी सूत्र में अध्ययनों का उल्लेख किए बिना केवल आठ वर्ग बतलाए गए हैं^३। किन्तु इस सामञ्जस्य का अंत तक निर्वाह हो नहीं सकता, क्योंकि समवायांग में प्रस्तुत आगम के शिक्षा-काल (उद्देशन-काल) दस बतलाए गए हैं। नंदीसूत्र में उनकी संख्या आठ है। अभयदेवसूरि ने लिखा है कि उद्देशनकालों के अन्तर का आशय हमें ज्ञात नहीं^४। नंदीसूत्र के चूर्णिकार श्री जिनदास महत्तर और वृत्तिकार श्री हरिभद्रसूरि ने भी यह लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन होने के कारण प्रस्तुत आगम का नाम 'अंतगडदसाओ' है^५। चूर्णिकार ने दसा का अर्थ अवस्था भी किया है^६।

प्रस्तुत आगम का वर्णन करने वाली तीन परम्पराएं हैं—एक समवायांग की, दूसरी तत्त्वार्थवातिक आदि की और तीसरी नंदी की।

प्रथम परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन हैं। इसकी पुष्टि स्थानांग सूत्र से होती है। स्थानांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन और उनके नाम निर्दिष्ट हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, जमाली, भगाली, किकष, चित्तक और फाल अंबडपुत्र^७। तत्त्वार्थवातिक में कुछ पाठ-भेद के साथ ये दस नाम मिलते हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, यमलीक, बलीक, कंबल, पाल और अंबण्डपुत्र^८। समवायांग में दस अध्ययनों का उल्लेख है, किन्तु उनके नाम निर्दिष्ट नहीं हैं। तत्त्वार्थवातिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में प्रत्येक

१. समवायो, पद्मचसमवायो, सूत्र ६६ :दस अज्जयणा सत्त वर्णा ।

२. नंदी, सूत्र ८८ :अट्ठ वर्णा ।

३. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : दस अज्जयणं ति प्रथमवर्गपिण्णयं चट्ठे, नन्दां तथैव व्याख्यातत्वाद्, यच्चेह पठ्यते 'सत्त वर्णा' ति तत् प्रथमवर्गान्यवगणितया, यतोऽप्यष्ट वर्गाः, नन्नामपि तथा पठितत्वाद् ।

४. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : ततो भणितं—अट्ठ उद्देशनकाला इत्यादि, इह च दस उद्देशनकाला अभीवन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः ।

५. (क) नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : पठमवर्गे दस अज्जयणं ति तत्सकचतो अंतगडदसं ति ।

(ख) नन्दीसूत्र, वृत्तिसहित पृ० ८३ : प्रथमवर्गे दसाध्ययनानि इति तत्सकचय्या अन्तगडदसा इति ।

६. नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : दसं ति—अवस्था ।

७. ठाणं, १०।११३ ।

८. तत्त्वार्थवातिक १।२०, पृ० ७३ ।

तीर्थंकर के समय में होने वाले दस-दस अंतकृत केवलियों का वर्णन है^१। जयधवला में भी तत्त्वार्थ-वातिक के वर्णन का समर्थन मिलता है^२। नंदी सूत्र में दस अध्ययनों का उल्लेख और नाम निर्देश दोनों नहीं हैं। इस आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि समवायांग और तत्त्वार्थवातिक में प्राचीन परम्परा सुरक्षित है और नंदी सूत्र में प्रस्तुत आगम के वर्तमान स्वरूप का वर्णन है। वर्तमान में उपलब्ध आठ वर्गों में प्रथम वर्ग के दस अध्ययन हैं, किन्तु इनके नाम उक्त नामों से संबंधा भिन्न हैं, जैसे—गौतमसमुद्र, सागर, गम्भीर, स्तिमित, अचल, कापित्य, अक्षोभ, प्रसेनजित, और विष्णु। अमयदेवसूरि ने स्थानांग वृत्ति में इसे वाचनान्तर माना है^३। इससे स्पष्ट होता है कि नंदी में जिस वाचना का वर्णन है वह समवायांग में वर्णित वाचना से भिन्न है।

‘अंतगड’ शब्द के दो संस्कृत रूप प्राप्त होते हैं—अंतकृत और अंतकृत्। अर्थ की दृष्टि से दोनों में कोई अन्तर नहीं है, किन्तु ‘गड’ का ‘कृत’ रूप छाया की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है।

विषय-वस्तु—

वासुदेव कृष्ण और उनके परिवार के सम्बन्ध में इस आगम में विशद जानकारी मिलती है। वासुदेवकृष्ण के छोटे भाई गजसुकुमाल की दीक्षा और उनकी साधना का वर्णन बहुत ही रोमांचकारी है।

छठे वर्ग में अर्जुनमालाकार की घटना उल्लिखित है। एक आकस्मिक घटना ने उसे हत्यारा बना दिया और एक प्रसंग ने उसे साधु बना दिया। परिस्थिति और वातावरण से मनुष्य बनता-बिगड़ता है—इसे स्वीकार न करें फिर भी यह स्वीकार किया जा सकता है कि मनुष्य के बनने-बिगड़ने में वे निमित्त बनते हैं।

अतिमुक्तक मुनि के अध्ययन में आन्तरिक साधना का महत्व समझा जा सकता है। समग्र आगम में तपस्या ही तपस्या दृष्टिगोचर होती है। ध्यान के उल्लेख नगण्य हैं। भगवान् महावीर ने उपवास और ध्यान—दोनों को स्थान दिया था। तपस्या के वर्गीकरण में उपवास बाह्य तप और ध्यान आन्तरिक तप है। भगवान् महावीर ने अपने साधना-काल में उपवास और ध्यान—दोनों का प्रयोग किया था। यह अनुसन्धेय है कि प्रस्तुत आगम में केवल उपवास पर ही इतना बल क्यों दिया गया? विस्मृति और नव-निर्माण की श्रृंखला में बचा हुआ प्रस्तुत आगम अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण और अनुसन्धेय है।

१. तत्त्वार्थवातिक १।२०, ५० ७३ :इत्येते दस वर्तमानतीर्थंकरतीर्थे। एवमुपवासीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थे
अन्येऽन्ये च दस दशानगरा दस दस वाचनामुपसर्गान्निमित्तं कृत्स्नकर्मज्ञयावन्तकृतः दस अस्यां वर्ण्यन्ते इति
वन्तकृतवशाः।

२. कलावपाहुड भाष १ ५० १३० : अंतगडदसा नाम अंगं चउब्बिहोवसग्गे दारुणे सहिकम पाडिहेरं लड्डूण विज्जाणं
वदे सुवंसवादि-दस-दस-साहु तित्थं पडि वण्णेदि।

३. स्थानांगवृत्ति पक्ष ४८३ :ततो वाचनान्तरापेक्षाणीमानीति सम्भावयामः।

अणुत्तरोबबाइयदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का नवां अंग है। इसमें अनुत्तर नामक स्वर्ग-समूह में उत्पन्न होने वाले मुनियों से सम्बन्धित दस अध्ययन हैं, इसलिए इसका नाम 'अणुत्तरोबबाइयदसाओ' है। नंदी सूत्र में केवल तीन वर्गों का उल्लेख है^१। स्थानांग में केवल दस अध्ययनों का उल्लेख है^२। राजवातिक के अनुसार इसमें प्रत्येक तीर्थंकर के समय में होने वाले दस-दस अनुत्तरोपपातिक मुनियों का वर्णन है^३। समवायांग में दस अध्ययन और तीन वर्ग—दोनों का उल्लेख है^४। उसमें दस अध्ययनों के नाम उल्लिखित नहीं हैं। स्थानांग और तत्त्वार्थवातिक के अनुसार उनके नाम इस प्रकार हैं।

(१) स्थानांग के अनुसार—

ऋषिदास, धन्य, सुनक्षत्र, कार्तिक, स्वस्थान, शालिभद्र, आनंद, तेतली, दशार्णभद्र और अतिमुक्त^५।

(२) राजवातिक के अनुसार—

ऋषिदास, बान्य, सुनक्षत्र, कार्तिक, नन्द, नन्दन, शालिभद्र, अभय, वारिषेण और चिलातपुत्र^६।

उक्त दस मुनि भगवान् महावीर के शासन में हुए थे—यह तत्त्वार्थवातिककार का मत है। धवला में कार्तिक के स्थान पर कार्तिकेय और नंद के स्थान पर आनंद मिलता है^७।

प्रस्तुत आगम का जो स्वरूप उपलब्ध है वह स्थानांग और समवायांग की वाचना से भिन्न है। अभयदेवसूरि ने इसे वाचनान्तर बतलाया है^८। उपलब्ध वाचना के तृतीय वर्ग में धन्य,

१. नंदी, सूत्र ८६ :तिष्णि वत्सा ।

२. ठाणं १०।११४

३. (क) तत्त्वार्थवातिक १।२०, पृ० ७३ ।

.....इत्येते दस वर्धमानतीर्थंकरतीर्थे । एषमृषभादीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये च दश दशानधारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निजित्व विजयाद्यनुत्तरोपपन्ना इत्येवमनुत्तरोपपादिकः दशास्यां वर्धन्त इत्यनुत्तरीय-पादिकदशा ।

(ख) कसावपाहुड भाग १, पृ० १३० ।

अणुत्तरोबबाइयदसा नाम अंगं चउब्बिहोबसग्गे दारुणे सहियूण चउवीसहं तित्थयरणं तित्थेषु अणुत्तर-विभागं गदे दस दस मुणिवसहे वण्णेदि ।

४. समबाओ, पद्मवत्समबाओ ६७ ।

.....दस अण्णवत्ता तिष्णि वत्ता..... ।

५. ठाणं १०।११४ ।

६. तत्त्वार्थवातिक १।२० पृ० ७३ ।

७. बट्ठवज्जानन १।१।२ ।

८. स्थानांगवृत्ति पत्र ४८३ :

उत्पेवमिहापि वाचनान्तरापेक्षवाज्ज्ययमविभाष उक्तो न पुनवपमध्वमानवाचनापेक्षयेति ।

सुनसत्र और ऋषिदास—ये तीन अध्ययन प्राप्त हैं। प्रथम वर्ग में वारिषेण और अभय—ये दो अध्ययन प्राप्त हैं, अन्य अध्ययन प्राप्त नहीं हैं।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम में अनेक राजकुमारों तथा अन्य व्यक्तियों के वैभवपूर्ण और तपोमय जीवन का सुन्दर वर्णन है। धन्य अनगर के तपोमय जीवन और तप से कृश बने हुए शरीर का जो वर्णन है वह साहित्य और तप दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

पण्हावागरणाहं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का दसवां अंग है। समवायांग सूत्र और नंदी में इसका नाम 'पण्हावागरणाहं' मिलता है^१। स्थानांग में इसका नाम 'पण्हावागरणदसाओ' है^२। समवायांग में 'पण्हावागरणदसासु'—यह पाठ भी उपलब्ध है। इससे जाना जाता है कि समवायांग के अनुसार स्थानांग-निर्दिष्ट नाम भी सम्मत है। जयधवला में 'पण्हावायरण' और तत्त्वार्थवातिक में 'प्रश्नव्याकरणम्' नाम मिलता है^३।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के विषय-वस्तु के बारे में विभिन्न मत प्राप्त होते हैं। स्थानांग में इसके दस अध्ययन बतलाए गए हैं—उपमा, संख्या, ऋषि-भाषित, आचार्य-भाषित, महावीर-भाषित, क्षौमक प्रश्न, कोमल प्रश्न, आदर्श प्रश्न, अंगुष्ठ प्रश्न और बाहु प्रश्न^४। इनमें वर्णित विषय का संकेत अध्ययन के नामों से मिलता है।

समवायांग और नंदी के अनुसार प्रस्तुत आगम में नाना प्रकार के प्रश्नों, विद्याओं और दिव्य-संवादों का वर्णन है^५। नंदी में इसके पैंतालिस अध्ययनों का उल्लेख है। स्थानांग से उसकी

१. (क) समबाओ, पण्णगसमबाओ सूत्र ६८।

(ख) नंदी, सूत्र ६०।

२. ठाणं १०।११०।

३. (क) कसायपाहुव, भाग १ पृष्ठ १३१ : पण्हावायरणं नाम अंबं....।

(ख) तत्त्वार्थवातिक १।२० : ...प्रश्नव्याकरणम्।

४. ठाणं १०।११६:

पण्हावागरणदसाणं दस अस्सवणा पण्णत्ता, सं जहा—उपमा, संखा, इतिभासिवाहं, वायरिषभासिवाहं, महावीरभासिवाहं, बोमगपसिवाहं, कोमलपसिवाहं, अहागपसिवाहं, अंगुठपसिवाहं बाहुपसिवाहं।

५. (क) समबाओ, पण्णगसमबाओ सूत्र ६८:

पण्हावागरणेषु अट्ठत्तरं पसिजसयं अट्ठत्तरं अपसिजसयं अट्ठत्तरं पसिजापसिजयं पिण्णाहसया, नायसुवण्णेहि सद्धिं विण्णा संवाया आचविण्णंति।

(ख) नंदी, सूत्र ६०।

कोई संगति नहीं हैं। समवायांग में इसके अध्ययनों का उल्लेख नहीं है, किन्तु उसके 'पण्हावाकरण-दसासु' इस आलापक (पैराग्राफ) के वर्णन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समवायांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययनों की परम्परा स्वीकृत है। उक्त आलापक में बतलाया गया है कि प्रश्नव्याकरणदसा में प्रत्येक बुद्ध भाषित, आचार्य भाषित, वीरमहर्षि भाषित, आदर्श प्रश्न, अंगुष्ठ प्रश्न, बाहु प्रश्न, असि प्रश्न, मणि प्रश्न, क्षीम प्रश्न, आदित्य प्रश्न आदि-आदि प्रश्न वर्णित हैं। इन नामों की स्थानांग में निदिष्ट दस अध्ययन के नामों के साथ तुलना की जा सकती है। यद्यपि उद्देशनकाल पेंतालिस बतलाए गए हैं फिर भी अध्ययनों की संख्या का स्पष्ट निर्णय नहीं किया जा सकता। गंभीर विषय वाले अध्ययन की शिक्षा अनेक दिनों तक दी जा सकती है।

तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में अनेक आक्षेप और विक्षेप के द्वारा हेतु और नय से आश्रित प्रश्नों का उत्तर दिया गया है, लौकिक और वैदिक अर्थों का निर्णय किया गया है।

जयघवला के अनुसार प्रस्तुत आगम आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेजनी और निर्वेदनी—इन चारों कथाओं तथा प्रश्न के आधार पर नष्ट, मुष्टि, चिन्ता, लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, जीवन और मरण वा वर्णन करता है।

उक्त ग्रंथों में प्रस्तुत आगम का जो विषय वर्णित है वह आज उपलब्ध नहीं हैं। आज जो उपलब्ध है उसमें पांच आश्रवों (हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह) तथा पांच संवरों (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) का वर्णन है। नंदी में उसका कोई उल्लेख नहीं है। समवायांग में आचार्य भाषित आदि अध्ययनों का उल्लेख है तथा जयघवला में आक्षेपणी आदि चारों कथाओं का उल्लेख है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम का उपलब्ध विषय भी प्रश्नों के साथ रहा हो, बाद में प्रश्न आदि विद्याओं की विस्मृति हो जाने पर वह भाग प्रस्तुत आगम के रूप में बचा हो। यह अनुमान भी किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम के प्राचीन स्वरूप के विच्छिन्न हो जाने पर किसी आचार्य के द्वारा नए रूप से रचना की गई हो। नंदी में प्रस्तुत आगम की जिस वाचना का विवरण है, उसमें आश्रवों और संवरों का वर्णन नहीं है, किन्तु नंदी चूर्णि में उनका उल्लेख मिलता है। यह संभव है कि चूर्णिकार ने उपलब्ध आकार के आधार पर उनका उल्लेख किया है।

१. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, सू० ७३, ७४ :

आक्षेपविक्षेपहेतुनयामितानां प्रश्नानां व्याकरणं प्रश्नव्याकरणम् । तस्मिन्लौकिकवैदिकानामर्थानां निर्णयः ।

२. कसावपाहुड, भाग १, सू० १३१, १३२:

पण्हावाकरणं नाम अंगं आक्षेपणी-विक्षेपणी-संवेजनी-निर्वेदनीनामाग्रे चउत्तिहं कहाओ पण्हाओ बहु-मुष्टि-चिन्ता-साहामाह-सुखदुःख-जीवियमरणाणि च वण्णेदि ।

३. नंदी सूत्र, चूर्णि सहित सू० १६ ।

विभागसुयं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का ध्यारहवां अंग है। इसमें सुकृत और दुष्कृत कर्मों के विपाक का वर्णन किया गया है, इसलिए इसका नाम 'विभागसुयं' है^१। स्थानांग में इसका नाम 'कम्म विभागदत्ता' है^२।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के दो विभाग हैं—दुःख विपाक और सुख विपाक। प्रथम विभाग में दुष्कर्म करने वाले व्यक्तियों के जीवन प्रसंगों का वर्णन है। उक्त प्रसंगों को पढ़ने पर लगता है कि कुछ व्यक्ति हर युग में होते हैं। वे अपनी क्रूर मनोवृत्ति के कारण भयंकर अपराध भी करते हैं। दुष्कर्म व्यक्ति की शारीरिक और भानसिक स्थितियों को किस प्रकार प्रभावित करता है, यह भी जानने को मिलता है। दूसरे विभाग में सुकृत करने वाले व्यक्तियों के जीवन-प्रसंग हैं। जैसे क्रूर कर्म करने वाले व्यक्ति हर युग में मिलते हैं वैसे ही उपशान्त मनोवृत्ति वाले लोग भी हर युग में मिलते हैं। अच्छाई और बुराई का योग आकस्मिक नहीं है।

स्थानांग सूत्र में कर्म विपाक के दस अध्ययन बतलाए गए हैं—मृगापुत्र, गोत्रास, अंड, शकट, माहन, नन्दीषेण, शौरिक, उदुम्बर, सहस्रोदाह-आमरक और कुमार लिच्छवी^३। ये नाम किसी दूसरी वाचना के हैं।

उपसंहार

अंग सूत्रों के विवरण और उपलब्ध स्वरूप में पूर्ण संवादिता नहीं है। इस आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि अंग सूत्रों का उपलब्ध स्वरूप केवल प्राचीन नहीं है, प्राचीन और अर्वाचीन दोनों संस्करणों का सम्मिश्रण है। इस विषय का अनुसन्धान बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकता है कि अंग सूत्रों के उपलब्ध स्वरूप में कितना प्राचीन भाग है और कितना अर्वाचीन तथा किस आचार्य ने कब उसकी रचना की। भाषा, प्रतिपाद्य, विषय और प्रतिपादन शैली के आधार पर यह अनुसन्धान किया जा सकता है। यद्यपि यह कार्य बहुत ही श्रम, साध्य है, पर असंभव नहीं है।

१. (क) समवायो, पइण्णसमवायो सूत्र ६६।

(ख) नंदी, सूत्र ६१।

(ग) उत्तरार्चवातिक १।२०।

(घ) कसावपाहुड, भाग १ पृ० १३२।

२. ठाण १०।११०।

३. ठाण १०।१११।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगमों के पाठ-संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा है। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्य-शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नचमल को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुह्यतर कार्य बड़ा बुरा होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्ग्रहस्य पकड़ने में इनकी सेवा काफी पैनी हो गई है। विनय-शीलता, श्रम-परायणता और गुह्य के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता हो पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने संघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बल-बूते पर ही आगम के इस गुह्यतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपने शिष्य साधु-साध्वियों के निस्वार्थ, विनीत एवं समर्पणात्मक सहयोग से इस बृहद् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूंगा।

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार, नई दिल्ली-१
२५००वां निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Preface

NĀYĀ DHAMMAKAHĀO

The title

The present Āgama is the sixth Anga of Dwādaśāṅgī. It has two Śrutaskandhas. The first is called as 'NĀYĀ' and the second as 'DHAMMAKAHĀO'. On combining both the Śrutaskandhas, the present Āgama has the title as 'NĀYĀDHAMMAKAHĀO'. 'NĀYĀ' (Jnāta) means examples and 'DHAMMAKAHĀO' means religious fables. The present Āgama has both of historical illustrations and imaginary fables.¹

In the Jayadhawālā the title of this Āgama is found as 'Nāhadhāmma-kahā' (Nāhadharma-kathā). 'Nātha' means the Lord. 'Nāhadhāmma-kahā' i.e, the dharmakathā expounded by the Tīrthankara. In some Sanskrit works the title of this Āgama is given as 'Jnātṛidharmakathā'. Āchārya Akalanka too has given the title of this Āgama as 'Jnātadharmakathā'². Ācharya Malayagiri and Abhayadeva Sūri give the title of 'Jnātadharmakathā. It is a treatise mainly containing illustrative religious stories. According to them, the first Śrutaskandha has illustrations and the second Śrutaskandha has religious stories. Both of them mention the lengthening of the word 'Jnāta'.³

The family name of lord Mahāvīra has been given as 'Jnāta' and 'Nātha' in the Śwetamber and Digamber literature respectively. On this basis, some scholars have tried to relate this Āgama with lord Mahāvīra.⁴ They hold that 'Jnātadharmakathā' or 'Nātha-dharmakathā' means the 'Dharmakathā by lord Mahāvīra'. Waber says that the work having fables pertaining to the religion of Jnātṛiwanśī Mahāvīra, is titled as NĀYĀDHAMMAKAHĀ.⁵ But, on the account found in the Samwāyāṅga and the Nandi, the meaning

1. Samawao, painnagasamawao, Sutra 94.
2. Tatwartha Vartika, 1/20.
3. (a) Nandivritti, pages 230-31.
(b) Samawayanga Vritti, page 108.
4. Jain sahitya ka Pitihās, Purwa-Pithika, page 660.
5. Stories from the Dharma of NAYA, I.A., Vol. 19, page 66.

'Dharmakathā of Jnātrīwansi Mahāvīra' does not seem to be appropriate. It has been told there that in the 'Jnātadharmakathā', the cities and gardens etc. of the 'Jnātas' (the persons cited) have been described.¹ The title of the first Adhyayana of this Āgama is 'Ukkhittanāye' (Utkshiptajpāta). On this basis also, the word 'Nātha' seems to go with the meaning as an 'illustration' only.

The content

The spiritual elements such as non-violence, palate control, faith, restraint of senses etc. have been expounded in an excellent style through the illustrations and fables in the present Āgama. Besides that of a plot, it has the elegance of description also. While going through the first Adhyayana, we have the reminiscence of the poetical prose-work such as the Kādambari. In the ninth Adhyayana, the description of the boat sinking in the sea, is very lively and horripilating. In the twelfth Adhyayana, the process of purifying water reminds us of the modern method. The changability of the Pudgala substance has been expounded by this illustration.

Along with the main illustrations and fables, some subsidiary fables are also found. In the eighth Adhyayana the fable of a well-frog has been recorded in an excellent style. Parivrājikā Chokha goes to Jitaśatru. Jitaśatru enquires of her—You wander a lot. Have you ever seen a harem like that of mine? With a smile Chokha said—You are like a Kūpa-Mandūka.

Who is that Kūpa Mandūka ?

Chokha said—There was a frog in a well. He was born and brought up there. He considered his well everything. One day an ocean-frog came down in that well. The well-frog said to him—Who are you ? He answered—I am a frog from the ocean. I have come from there. The well-frog asked him—How big is the ocean ? The ocean-frog said—It is very big. The well-frog, drawing a boundry with his foot, asked him—Is the ocean as big as this ? The ocean-frog answered—Far more greater than this. The well-frog had a jump, from the eastern to the western end of the well, and said—Is the ocean so big ? The ocean-frog answered—It is far more bigger than this too. The well-frog could not believe it as it had never seen any thing except the well².

1. (a) Samwao, painnagasamawao, Sutra 94.
(b) Nandi, Sutra 85.
2. Nayadhammakahao, 8/154, pages 186-87,

In this way, from the view point of various fables, insertions, illustrations, descriptions, anecdotes and word-usages, this Āgama has a great value. A comparative study of it with that of the different fable-works found the world over may well give some new facts.

UWĀSAGADASĀO

The title

The present Āgama is the seventh Anga of the Dwādaśāṅgī. It has the biographies of ten Upāsakas (lay devotees), therefore, it is called as 'Upāsagadasāo'. In the Śramaṇū order the laymen serving the Śramaṇas are called Śramaṇopāsakas or Upāsakas. Lord Mahāvira had large number of Upāsakas. It comprises of ten 'Adhyayanas' depicting the life of ten principal Upāsakas.

The Content

Lord Mahāvira has given twofold code of conduct, such as laws of conduct for Munis and laws of conduct for Upāsakas. Five Mahāvratas (great vows) were postulated for a Muni and twelve Vratas (vows) for a Upāsaka. Śramaṇopāsaka Anand was consecrated and initiated to his cult by him. The list of the Vratas is an excellent code of conduct pertaining to religious or ethical life. Even today, it has the same utility as it had 2500 years ago. As long as the weakness of human nature is there, its utility will always exist.

The code of conduct for Munis is found in many Āgamas but the code of conduct for laymen is found in this Āgama only. It has, therefore, its own place in the codes of conduct. The object of its composition is only to put forth the code of conduct for a layman. Incidentally, Niyatiwāda has also been discussed nicely with its arguments for and against. Incidents, proving the religious touch-stone for the Upāsakas, are also found. It also throws light on the fact as to how lord Mahāvira took care of the accomplishment of the Upāsakas, and encouraged them to higher spiritual life from time to time.

According to the Jayadhawalā the present Āgama narrates eleven-fold practices of the 'Upāsakas'. They are—Darśan, Vrat, Sāmayika, Pauṣadhopawā, Saṁcitta-Virati, Ratri-Bhojan-Virati, Brahmaçarya, Ārambha-Virati, Parigraha-virati, Anumāti-Virati, and Uddiṣṭa Virati¹. The Śrāvakas, beginning from

1. Kasyapahuda, part I, pages 129-30,

Ananda, had practised above said eleven Pratimās. The Vratas are practised indenpendently, and at the time of fulfilment of Pratimās also. These Vratās and Pratimās are the two religious codes for an Upāsaka. In the Samawāyānga and the Nandi Sūtra, Vratā and Pratimā both are mentioned. The Jayadhawalā gives an account of Pratimās only.

ANTAGADADASÃO

The title

The present Āgama is the eighth of the Dwādaśāṅgī. The illustrious ones who put an end to the cycle of death and birth, have been narrated in it, and it has ten Adhyayanas. Hence the title 'Antagadadasão'. The Samwāyānga tells us that it contained ten Adhyayanas and seven Vargas¹. The Nandi Sūtra says nothing about its Adhyayanas and only eight Vargas have been accounted for and in it². Sri Abhayadeva Sūri has tried to find consistency in these both. He tells us that the first Varga has ten Adhyayanas, therefore the Samawāyānga Sūtra mentions ten Adhyayanas and seven Vargas only. The Nandi Sūtra gives eight Vargas only with no mention of Adhyayanas³. But this consistency cannot be maintained to the end, because the Samawāyānga gives us ten Śiksha-kālas (Uddeśan kālas) of this Āgama and the Nandi Sūtra gives only eight. Sri Abhayadeva Sūri admits that he does not understand the purpose behind the difference in the number of the Uddeśan-kālas⁴. The Chūrṇikār of the Nandisūtra, Sri Jinadas Mahattar and the Vrittikār, Śri Haribhadra Sūri also write that the present Āgama is given the title 'Antagaḍadasão' as it has ten Adhyayanas in the first Varga⁵. The Chūrṇikār takes the meaning of 'Daśā' as 'Awasthā' (condition) also⁶.

Three traditions are found to narrate the present Āgama : firstly, that of the samawāyānga; secondly, that of the Tatwārtha Vārtika, and thirdly, that of the Nandi Sūtra.

1. Samawao, painnagasamawao, Sutra 96.
2. Nandi Sutra, 88.
3. Samwayanga Vritti, page 112.
4. Samawayanga Vritti, page 112.
5. (a) Nandi with Churni, page 68.
(b) Nandi with Vritti, page 83.
6. Nandi with the Churni page 68. Dasatti Awastha.

According to the first tradition, the present Āgama has ten Adhyayanas. The Sthānānga Sūtra supports it. The Sthānānga mentions the ten Adhyayanas and their headings, such as Nami, Mātanga, Somila, Ramagupta, Sudarśana, Jamāli, Bhagāli, Kimkaṣa, Ćilawaka, Pāla, and the Ambaṣṭhaputtra.¹ These headings are found in the Tatwārthavartika also with some variance, such as, Nami, Mātang, Somila, Ramaguptā, Sudarśana, Yamalīka, Kambala, Pāla and Ambaṣṭhaputtra. Samawayānga mentions ten adhyayanas without giving their names. The present Āgama gives an account of the Antakṛita Kewalis, in groups of ten contemporaries of each Tirthankara.² The Jayadhawala, too, supports this statement of the Tatwārthavartika. In the Nandisūtra mention is found neither of the ten Adhyayanas nor of their headings. On this basis, it can be inferred that the Samawāyānga and the Tatwārthavartika maintain the old tradition and the Nandi-Sūtra gives the Āgama in the form found at present. There are ten Adhyayanas of the first Varga out of the eight Vargas found at present, but their headings altogether differ from the above-said headings, i.e., Gautama, Samudra, Sāgara, Gambhīra, Stanita, Acala Kāmpilya, Akṣetra, Prasajit and Viṣṇu. In the 'Sthānāngavritti' Sri Abhaya-deva Suri acknowledges it as a variant 'Vācnā'.³ This shows that the 'Vācnā' of the 'Nandi' is different from the 'Vācnā' found in the 'Samawāyānga'.

The word 'Antagaḍa' has two Sanskrit forms—Antakṛita and Antakrit. Both have the same sense but 'gāda' goes more with the Sanskrit version 'Kṛita' so far as morphology is concerned.

The Content

This Āgama gives an excellent account of Vāsudeva Kṛiṣṇa and his family. The Dikṣā (initiation) and accomplishment of Gajasukamāla, the younger brother of Vāsudeva Kṛiṣṇa has been horripiliatingly narrated.

In the sixth Varga, is found an account of the incident occurred with Arjuna, the gardener. An accident turned him to be a murderer and the other association made him a saint. It may not be admitted that a man changes with the circumstances and atmosphere, but, even then, it may be accepted that they are the cause of the rise and fall of a man.

1. Tatwārthavartika 1/20
2. Tatwārthavartika 1/20.
3. Sihany Vritti.

By the Adhyayana of Atimuktaka Muni, the value of spiritual accomplishment can be well understood. Fasting alone is seen in this Āgama through out. The narrations of meditations are scanty. Lord Mahavira had laid stress upon both—the fast and the meditation. In the classification of penance, fast is the outer penance and meditation is the inner one. Lord Mahavira in his penance-period, had observed both, fast and meditation. It is worth investigating why this Āgama lays so much stress on fasting only. This Āgama, a remanent in the succession of oblivion and reproduction, is valuable and worthy of research work from many points of view.

ANUTTAROWAWĀIYA-DASĀO

The title

This Āgama is the ninth Anga of the Dwādaśaṅgī. As it containsten Adhyayanas regarding the Munis born in the Anuttara Swarga class, its title is given as 'Anuttarowawāiya-Dasāo'. The Nandi Sūtra mentions only three Vargas¹. The Sthānāṅga quotes only ten Adhyayanas.² According to the Rajavārttika groups of ten Anuttaropapātika Munis, contemporaries of each Tirthanker, have been narrated in it.³ The Samawāyāṅga mentions the ten Adhyayanās and the three Vargas too.⁴ But the headings of the ten Adhyayanas have not been given in it. According to the Sthānāṅga and the Tattwārthavārttika they read as, Rīṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Swasthan, Śālibhadra, Ānanda, Tetali, Daśārnabhadra and Atimukta⁵, and as Rīṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Nandanandana, Śātibhadra, Abhaya, Wāriṣeṇa, and Cilattaputra respectively. The above said Munis were the contemporaries of Lord Mahāvira, such is the opinion of the author of the Tattawārthavārttika.⁶ In the Dhawalā we find Kārtikeya instead of Kārttika and Ānand instead of Nanda⁷.

The present form of the Āgama is different from the 'Vācna' of the Sthānāṅga and the Samawāyāṅga. Abhayadeva Sūri holds that it is a different 'Vācna'. In the form of the Āgama, that is available, three Adhyayanas, such

1. Nandi, Sutra, 89.

2. Thanam, 10/114.

3. Tattawarth varttikas 1/20, Kasayapahuda I, page 130.

4. Samawao, painnagasamawao, Sutra 97.

5. Thanam 10/114.

6. Tattawarthvarttika 1/20.

7. Satkhundagama 1/1/2.

as Dhanya, Sunakshtra and Rīṣidasa, are found. In the first Varga, only two Adhyayanas, named as Wārisreṇa and Abhaya, are seen.

The contents

This Āgama beautifully narrates the luxury and ascetic lives of many princes. The narration of the ascetic life of Dbanya Aṇagāra and his body emaciated due to the penance is noteworthy both from the literary and spiritual viewpoints.

PANHĀWĀGARAṆĀIN

The title

The present Āgama is the tenth Anga of the Dwādaśāṅgī. Its title has been mentioned as 'Paṇhāwāgaraṇāin' in the Samawāyanga Sūtra and the Nandī.¹ Its name is found as 'Paṇhāwāgaradasāo'² in the Sthānāṅga and the same reads as 'Paṇhāwāgaraṇadasāsu' in the Samawāyāṅga. It is, therefore inferred that the title mentioned in the Sthānāṅga is also in concurrence with the Samawāyāṅga. The Jayadhawalā and the Tattwārthavarttika note it as Paṇhāwāyaraṇa or Praśna-Vyākaraṇā.³

The Contents

Opinions differ regarding the contents of the present Āgama. The Sthānāṅga cites its ten Adhyayanas, such as, Upamā, Samkhyā, Rīṣibhāṣita, Ācāryabhāṣitā, Mahāvira-bhāṣitā, Kṣaumaka-Praśna, Komala-Praśna, Ādarsa-Praśna, Anguṣṭha-Praśna and Bāhu-Praśna.⁴ The headings of the Adhyayanas indicate well the contents they have.

According to the Samawāyāṅga and the Nandī, the present Āgama has various types of queries, sciences (vidyās) and the dialogues of the Devas dealt with.⁵

The Nandī notes fortyfive Adhyayanas of it, which do not accord with the Sthānāṅga. The Samawāyāṅga makes no mention of its Adhyayanas.

1. (a) Samawao painnagasamawao, Sutra 98.
(b) Nandī, Sutra 90.
2. Thanam, 10/110.
3. (a) Kasayapahuda pt. I, page 131.
(b) Tatwarthavarttika 1/20.
4. Thanam 10/116.
5. (a) Samawao, painnagasamawao, Sutra 98.
(b) Nandī, Sutra, 90.

But, from its 'Paṇḥāwāgarāṇadasāsu' paragraph, it may be inferred that the Samawāyāṅga accepts the traditional ten Adhyayanas of the present Āgama . The said paragraph tells us that Pratyeka Buddhabhāṣita, Ācāryabhāṣita, Viramaharṣi-Bhāṣita, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praśna, Bāhu-Praśna, Asi-Praśna, Maṇi-Praśna, Kṣauma-Praśna, Āditya-Praśna etc. have been dealt with in the 'Praśna-Vyākaraṇa-Dasā'. These headings can well be compared with those of ten Adhyayanas mentioned in the Sthānāṅga. Though the Uddeśana-Kālas have been mentioned as fortyfive, the exact number of the Adhyayanas cannot be decided definitely. The teaching of the Adhyayana on a deep topic could be spread over for many days.

According to the Tattwārthavārttika many queries have been expounded in this Āgama , depending on cause and inference by 'Ākṣepa' and 'Vikṣepa'. Also the Laukika (secular) and Vedic Arthas have been ascertained in it.¹

The Jayadhawālā notes that this Āgama narrates the Naṣṭa, Muṣṭi, Ćintā, Lābha, Alābha, Sukha, Dukkha, Jīwan and Maraṇa with the help of the four kinds of fables, i.e. Ākṣepaṇī, Prakṣepaṇī, Samvejaṇī, and Nirvedaṇī, as well as purporting a query.²

The contents of the Āgama, as mentioned in the said works, is not found today. What is found covers the five Āśrawas (Hinsā, Asatya, Ćaurya, Ābrahmaĉarya and Parigraha) and the five Samwaras (Ahimsa, Satya, Ācaurya, Brhmacarya, and Aparigraha) only. The Nandi does not make mention of it at all. The Samawāyāṅga mentions the Adhyayanas beginning from Ācārya-Bhāṣita, while the Jayadhawala gives an account of the four kinds of fables beginning from Ākṣepaṇī. It may be inferred that the known contents of the Āgama formerly were in the form of the queries and subsequently, the learning of query etc. being lost, the remanent part formed the present Āgama. It is also likely that the old form of the present Āgama being lost, some Ācārya composed it a fresh. The 'Vacna' of this Āgama given in the Nandi, does not narrate the Āśrawas and the Samwaras, but the Ćūrṇi of the Nandi does it.³ Likely it is that the Ćūrṇikāra did it on the basis of the present form of the Āgama.

1. Tattwārthavārttika 1/20.

2. Kaśayapahuda part I, page 131.

3. Nandi Sutra with the Ćūrṇi on page 12.

VIVĀGASUYAM

The title

The present Āgama is the 11th Anga of the Dwādaśāṅgi. The Vipāka (fruit) of the Sukṛita and Duṣkṛita deeds has been dealt with in it, therefore the title 'Vivāgasuyam.'¹ The Sthānāṅga gives its title as 'Kāmma Vivāgadasā.'²

The Contents

This Āgama has two divisions, i.e. the Dukha Vipāka and the Sukha Vipāka. The first division contains the topics on the lives of the individuals doing bad deeds. On going through the said contents, it appears that, in every age, there are some individuals who commit horrible crimes on account of their cruel mentality. It is also gathered how the criminal deeds affect their physical and mental states. The second division has the life-contents of those individuals who perform good deeds. As the committant of cruel deeds are found in every age, so are the persons having the tranquil mentality. Conjunction of goodness and badness is not without cause.

Conclusion

The Sthānāṅga Sūtra enamurates ten Adhyayanas of the Karma-Vipāka such as, Mṛigāputra, Gotrāsa, Aṇḍa, Sakata, Māhan, Nandiṣeṇa, Śaurika Udumbara, Sahasoddāha-Āmaraka, and Kumar Licchavi. These headings have been taken from some other 'Vācna'.

The account of the Anga-Sūtras and the peculiar form they are presently found in are not fully harmonic. On this basis, it may be inferred that the obtained form of the Āgama Sūtras is not ancient only, but is a mixture of the editions of old and new, both. This will form an important subject of investigation as to how much of the present form of the Anga-Sūtra is ancient and how much modern, as well as who of the Ācāryas composed it and when. The language, the subject-matter and the style of ascertainment will surely form the basis of investigation. This is of course, highly toilsome, but not impossible.

(a) Samawao, painnagasamawao, Sutra 99

(b) Nandi Sutra 91.

(c) Tattawarthavarttika 1/20

(d) Kasayapahuda, Pt I, page 132.

Thanam 10/110.

Accomplishment of the work

In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many a Muni. I bless them that their devotedness to the performance be ever more developed.

For the editing of this Āgama major amount of credit goes to my learned disciple Muni Shri Nath Mali. Day in and day out he has devoted himself to this arduous task. It is because of his concentrated efforts that the work has got such a nice accomplishment. Otherwise, it would not have been an easy job. On account of his in-born Yogic temperament he was capable of attaining that concentration of mind which was essential for achieving the end. On account of his constant devotion to the work of research in the field of Āgamic literature his intellect has achieved sufficient sharpness in finding out immediately the hidden meaning and mysteries of Āgamic expositions. His keen sense of obedience, perseverance and absolute dedication have contributed much in developing his personality. The above qualities are seen in him since his early age. Right from the time when he joined the Sangha I have been an observer of these qualities of his, which have so developed. His capacity to undertake to a big task has given me ever increasing satisfaction.

I have undertaken this hard and tremendous task of editing the Āgamas relying on the strength of such learned disciples in the Sangha. I am now, quite confident that I shall be able to complete this hazardous work with the help and assistance of my obedient, selfless and devout disciples.

On the holy occasion of this 25th centenary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the teachings of the Lord.

विसयाणुक्कम

नायाधम्मकहाओ

पढमं अउभयणं

सू० १-२१३

पृ० १-७३

उक्खेव-पदं १, मेहस्स नगरपरिवारादि-वण्ण-पदं ११, धारिणीए सुमिणदंसण-पदं १८, सेणियस्स सुमिणनिवेदण-पदं १९, मेणियस्स सुमिणमहिम-निदंसण-पदं २०, धारिणीए सुमिणजागरिया-पदं २१, सुमिणपाठग-निमंतण-पदं २२, मेणियस्स सुमिणफल-पुच्छा-पदं २७, सुमिणफलकहण-पदं २९, सुमिणपाठम-विमज्जण-पदं ३०, मेणियस्स सुमिणपसंसा-पदं ३१, धारिणीए दोहल-पदं ३२, धारिणीए चिता-पदं ३४, पडिचारियाण चिताकारण-पुच्छा-पदं ५३, पडिचारियाणं सेणियस्स निवेदण-पदं ३९, मेणियस्स चिताकारण-पुच्छा-पदं ४०, धारिणीए चिताकारणनिवेदण-पदं ४५, मेणियस्स आसासण-पदं ४६, अभयकुमारस्स सेणियं पइ चिताकारणपुच्छा-पदं ४७, मेणियस्स चिताकारणनिवेदण-पदं ४९, अभयस्स आसासण-पदं ५०, अभयस्स देवागहण-पदं ५२, देवागमण-पदं ५४, देवस्स अकालमेह-विउव्वण-पदं ५९, धारिणीए दोहद-पूरण-पदं ६०, अभएण देवस्स पडिविसज्जण-पदं ७०, धारिणीए गब्भचरिया-पदं ७२, मेहस्स जम्म-वद्धावण-पदं ७३, मेहस्स जम्मुस्सवकरण-पदं ७६, मेहस्स नामादिसक्कार (संस्कार) करण-पदं ८१, मेहस्स लालणपालण-पदं ८२, मेहस्स कलागहण-पदं ८४, मेहस्स पाणिग्गहण-पदं ८९, पीइदाण-पदं ९१, महावीरसमवसरण-पदं ९४, मेहस्स जिन्तासा-पदं ९५, कंबुइज्जपुरिसस्स निवेदण-पदं ९७, मेहस्स भगवओ समीवे गमण-पदं ९८, धम्मदेसणा-पदं १००, मेहस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं १०१, मेहस्स अम्मापिऊणं निवेदण-पदं १०२, धारिणीए सोगाकुलदसा-पदं १०५, धारिणीए मेहस्स य परिसंवाद-पदं १०६, मेहस्स एगदिवसरज्ज-पदं ११४, मेहस्स निक्खमण-पाओग्ग-उव्वरण-पदं १२१, कासवेण मेहस्स अग्गकेसकप्पण-पदं १२४, मेहस्स अलंकरण-पदं १२८, मेहस्स अभिनिक्खमणमहुस्सव-पदं १२९, सिस्सभिव्खादाण-पदं १४५, मेहस्स पव्वज्जागहण-पदं १४९, मेहस्स मणो-संकिलेस-पदं १५२, मेहस्स संबोध-पदं १५५, भगवया सुमेरुप्पम-भवनिरूवण-पदं १५६, भगवया मेरुप्पम-भवनिरूवण-पदं १६३, मेरुप्पमेण मंडलनिम्माण-पदं १७४, दवग्गिभीतसावयाणं मंडलपवेस-पदं १७८, मेरुषभस्स पादुक्खेव-पदं १८०, तीय संदग्गे बट्टमाण-तितिक्खोवदेस-पदं १८८, मेहस्स जाइसरण-पदं १९०, मेहस्स समप्पणपुब्बं पुणो पव्वज्जा-पदं १९१, मेहस्स निग्गंठचरिया-पदं १९४, मेहस्स

भिक्षुवृद्धिमा-पदं १६६, मेहस्त गुणरयणसंवच्छर-पदं १६६, मेहस्त सरीरदसा-पदं २०२, मेहस्त विपुलपञ्चए अणसण-पदं २०३, मेहस्त समाहिमरण-पदं २०८, धरेहि मेहस्त आयाणमंडसमप्पण-पदं २०९, गोयमपुच्छाए भगवओ उत्तर-पदं २१०, निक्खेव-पदं २१३ ।

दीयं अउभयणं

सू० १-७७

पृ० ७४—६२

उक्खेव-पदं १, घणसत्थवाह-पदं ७, विजयतक्कर-पदं ११, भद्दाए संताणमणोरह-पदं १२, भद्दाए देवदिन्नि-पुत्तपसव-पदं १६, देवदिन्निस्स कीडा-पदं २५, देवदिन्निस्स अपहार-पदं २८, देवदिन्निस्स गवेसणा-पदं २९, विजयतक्करस्स निग्गह-पदं ३३, देवदिन्निस्स नीहरण-पदं ३४, घणस्स निग्गह-पदं ३५, घणस्स घराओ आहाराणयण-पदं ३७, विजयतक्करेण संविभाग-मग्गण-पदं ३९, घणस्स तन्निसेध-पदं ४०, आवाधितस्स घणस्स विजयतक्करावेक्खा-पदं ४३, विजयतक्करेण तन्निसेध-पदं ४५, घणेण पुणो कथिते विजएण संविभागमग्गण-पदं ४७, घणेण विजयस्स संविभागदाण-पदं ५२, पंथगस्स भद्दाए साटोवं तन्निवेदण-पदं ५५, भद्दाए कोव-पदं ५७, घणस्स चारमुत्ति-पदं ५८, घणस्स सम्माण-पदं ५९, भद्दाए कोवोव-समपुव्वं सम्माण-पदं ६१, विजय-णायस्स निग्गमण-पदं ६७, घण-णायस्स निग्गमण-पदं ६९, निक्खेव-पदं ७७ ।

तत्तुवं अउभयणं

सू० १-३५

पृ० ६३—१०२

उक्खेव-पदं १, मयूरीअंड-पदं ५, सत्थवाहदारग-पदं ६, देवदत्ता गणिया-पदं ८, सत्थवाह-दारगाणं उज्जाणकीडा-पदं ९, सत्थवाहदारगेहि मयूरी अंडगाणयण-पदं १७, सागरदत्त-पुत्तस्स संदेहेण अंडयविणास-पदं २१, जिणदत्तपुत्तस्स सद्दाए मयूर-त्तद्धि-पदं २५, निक्खेव-पदं ३५ ।

अउत्थं अउभयणं

सू० १-२३

पृ० १०३—१०८

उक्खेव-पदं १, पावसियालग-पदं ६, कुम्भ-पदं ७, पावसियालगणं आहारगवेसण-पदं ८, कुम्माणं साहरण-पदं १०, अगुत्तकुम्मस्स मच्चु-पदं १३, गुत्तकुम्मस्स सोक्ख-पदं १९, निक्खेव-पदं २३ ।

पंथमं अउभयणं

सू० १-१३०

पृ० १०९—१३९

उक्खेव-पदं १, थावच्चापुत्त-पदं ७, अरिट्टुनेमि-समवसरण-पदं १०, कण्हस्स पज्जुवासणा-पदं १२, थावच्चापुत्तस्स पब्बज्जासंकप्प-पदं १८, कण्हस्स थावच्चापुत्तस्स यपरिसंवाद-पदं २२, कण्हस्स जोगक्खेम-बोसणा-पदं २६, थावच्चापुत्तस्स अभिनिक्खमण-पदं २७, सिस्सभिक्षा-दाण-पदं ३०, थावच्चापुत्तस्स पब्बज्जागहण-पदं ३४, थावच्चापुत्तस्स अणगारचरिया-पदं ३५, थावच्चापुत्तस्स जणवयविहार-पदं ३९, सेलगराय-पदं ४२, सेलगस्स गिहिधम्म-पडिबत्ति-पदं

४५, सेलगस्स समणोवासयचरिया-पदं ४७, सुदंसणसेट्ठि-पदं ५१, सुयपरिव्वायग-पदं ५२, सोयमूलयधम्म-पदं ५५, सुदंसणस्स सोयमूलय-धम्मपडिवत्ति-पदं ५६, थावच्चापुत्तस्स सुदंसणेण संवाद-पदं ५८, सुदंसणस्स विणयमूलय-धम्मपडिवत्ति-पदं ६२, सुएण सुदंसणस्स पडिसंबोध-पयत्त-पदं ६५, सुयस्स थावच्चापुत्तेण संवाद-पदं ७०, सरिसवयाणं भक्खामक्ख-पदं ७३, कुलत्थाणं भक्खामक्ख-पदं, ७४, मासाणं भक्खामक्ख-पदं ७५, अत्थित्त-पण्ह-पदं ७६, सुयस्स परिव्वायगसहस्सेण पव्वज्जा-पदं ७७, सुयस्स जणवयविहार-पदं ८१, थावच्चापुत्तस्स परिनिव्वाण-पदं ८३, सेलगस्स अभिनिक्खमणामिप्पाय-पदं ८५, मंडुयस्स रायाभिसेय-पदं ८२, सेलयस्स निक्खमणाभिसेय-पदं ८६, सेलगस्स पव्वज्जा-पदं ८६, सेलगस्स अणगारचरिया-पदं १००, सुयस्स परिनिव्वाण-पदं १०२, सेलगस्स रोगातंक-पदं १०६, सेलगस्स तिगिच्छा-पदं ११०, सेलगस्स पमत्तविहार-पदं ११७, साहूहिं सेलगस्स परिच्चाय-पदं ११८, पंथगस्स चाउम्मासिय-खामणा-पदं ११९, सेलगस्स कोव-पदं १२२, सेलगस्स अब्भुज्जयविहार-पदं १२४, निक्खेव-पदं १३० ।

छट्ठं अउभयणं

सू० १-५

पृ० १४०-१४२

उक्खेव-पदं १, गरुत्त-लहुयत्त-पदं ४, निक्खेव-पदं ५

सत्तमं अउभयणं

सू० १-४४

पृ० १४३-१५४

उक्खेव-पदं १, घणमत्थवाह-पदं ३, घणस्स परिकखापयोग-पदं ६ परिकखापरिणाम-पदं २२, निक्खेव-पदं ४४ ।

अट्ठमं अउभयणं

सू० १-२३६

पृ० १५५-२०३

उक्खेव-पदं १, वल-गय-पदं २, महब्बलंगय-पदं ९, महब्बलादीणं पव्वज्जा-पदं १६, महब्बलस्स तवविसय-माया-पदं १८, महब्बलादीणं विविहतवचरण-पदं १९, समाहिमरण-पदं २६, पच्चायाति-पदं २७, मल्लिस्स मोहणघर-निम्माण-पदं ४०, पडिबुद्धिराय-पदं ४३, चंदच्छाय-राय-पदं ६४, रुप्पि-राय-पदं ६०, संख-राय-पदं १०१, अदीणसत्तु-राय-पदं ११४, जियसत्तु-राय-पदं १३८, दूयाणं संदेस-निवेदण-पदं १५७, कुंभएण दूयाणं असक्कार-पदं १५९, जियसत्तुपामोक्खाणं कुंभएणं जुज्झ-पदं १६१, मल्लीए चिताहेउ-पुच्छा-पदं १६९, कुंभगस्स चिताहेउ-कहण-पदं १७२, मल्लीए उवायनिरुवण-पदं १७३, मल्लीए जियसत्तु-पामोक्खाणं संबोह-पदं १७५, जियसत्तुपामोक्खाणं जाइसरण-पदं १८१, मल्लीए पव्वज्जा-पदं १८२, मल्लिस्स केवलणाण-पदं २२५, जियसत्तुपामोक्खाणं पव्वज्जा-पदं २२७, मल्लिस्स सिस्ससंपदा-पदं २३० मल्लिस्स निव्वाण-पदं २३५, निक्खेव-पदं ३३६ ।

नवमं अउभयणं

सू० १-६४

पृ० २०४-२२०

उक्खेव-पदं १, मागंदिय-दारणाणं समुद्दजत्ता-पदं ४, नावा भंग-पदं ९, रयणदीव-पदं १३, रयणदीवदेवया-पदं १६, रयणदीवदेवयाए मागंदिय-पुत्ताणं निहेस-पदं १९, मागंदियपुत्ताणं

वणसंडगमण-पदं २१, सेलगजक्स-पदं २६, रयणदीवदेवया-उवसग-पदं ३७, जिणरक्खि-
यविवत्ति-पदं ४१, जिणपालियस्स चंपागमण-पदं ४५, निक्खेव-पदं ५४ ।

वसन्तं अउभयणं

सू० १-६

पृ० २२१-२२३

उक्खेव-पदं १, परिहायमाण-पदं २, परिवह्दमाण-पदं ४, निक्खेव-पदं ६ ।

एककारसन्तं अउभयणं

सू० १-१०

पृ० २२४-२२६

उक्खेव-पदं १, देसविराहय-पदं २, देसाराहय-पदं ४, सम्बविराहय-पदं ६, सम्बाराहय-पदं
निक्खेव-पदं १० ।

बारसन्तं अउभयणं

सू० १८४६

पृ० २२७-२३६

उक्खेव-पदं १, फरिहोदग-पदं ३, जियसत्तुणा पाणभोयणपसंसा-पदं ४, सुबुद्धिस्स उवेहा-पदं,
६, जियसत्तुणा फरिहोदगस्स गरहा-पदं ११, सुबुद्धिस्स उवेहा-पदं १५, जियसत्तुस्स विरोध-
पदं १८, सुबुद्धिणा जलसोधण-पदं १९, सुबुद्धिणा जलपेसण-पदं २०, जियसत्तुणा उदगर-
यणपसंसा-पद २१, जियसत्तुणा उदगाणयणपुच्छा-पदं २४, सुबुद्धिस्स उत्तर-पदं २७,
जियसत्तुणा जलसोधण-पदं ३०, जियसत्तुस्स जिण्णासा-पदं ३१, सुबुद्धिस्स उत्तर-पदं ३२,
जियसत्तुस्स समणोवासयत्त-पदं ३४, पव्वज्जा-पदं ३८, निक्खेव-पदं ४६ ।

तेरसन्तं अउभयणं

सू० १-४५

पृ० २३७-२४७

उक्खेव-पदं १, गोयमस्स पुच्छा-पद ४, भगवओ उत्तरे ददुदुरदेवस्स नंदभव-पदं ७, नंदस्स
धम्मपडिवत्ति-पदं ९, मिच्छत्तपडिवत्ति-पदं १३, पोक्खरिणी-निम्माण-पदं १५, वणसंड-पदं
१८, चित्तमभा-पदं २०, महाणसमाला-पदं २१, तिगिच्छियमाला-पद २२, अलंकारिय-
मभा-पदं २३, नदम्म पममा-पद २४, नदम्म नेगुप्पत्ति-पद २८, तिगिच्छा-पदं २९,
भगवओ उत्तरे ददुदुरदेवस्स ददुदुरभव-पद ३२, ददुदुरस्स जाइसरण-पदं ३५, भगवओ
रायगिह्हे समवसरण-पदं ३७, ददुदुरस्स समवसरणं पइ गमण-पदं ३९, ददुदुरस्स मच्चु-
पदं ४१, निक्खेव-पदं ४५ ।

चोहसन्तं अउभयणं

सू० १-८६

पृ० २४८-२६५

उक्खेव-पदं १, पोट्टिलाए कीडा-पदं ८, तेयलिपुत्तस्स आसत्ति-पदं ९, पोट्टिलाए वरण-पदं १२
पोट्टिलाए विवाह-पदं १८, कणगरहस्स रज्जासत्ति-पदं २१, पउमावईए अमच्चैणमंतणा-
पदं २२, अवच्च परिबत्तण-पदं २४, दारियाए मयकिच्च-पदं ३१, अमच्चपुत्तस्स उस्सव-पदं
३३, पोट्टिलाए अप्पियत्त-पदं ३६, पोट्टिलाए दाणसाला-पदं ३८, अज्जा-संघाडणस्स
भिक्षायरियागमण-पदं ४०, पोट्टिलाए अमच्चपसायोवाय-पुच्छा-पदं ४३, अज्जा-संघाड-
णस्स उत्तर-पदं ४४, पोट्टिलाए सावया-पदं ४५, पोट्टिलाए पव्वज्जा-पदं ५०, कणगरहस्स

मच्चु-पदं ५५, कणगज्जयस्स रायाभिसेय-पदं ५७, तेयलिपुत्तस्स सम्माण-पदं ६०, पोट्टिलदेवेण तेयलिपुत्तस्स संबोह-पदं ६२, तेयलिपुत्तस्स मरणचेट्ठा-पदं ७२, तेयलिपुत्तस्स विम्हयकरण-पदं ७७, पोट्टिलदेवस्स संबाद-पदं ७८, तेयलिपुत्तस्स जाईसरणपुब्बं पव्वज्जा-पदं ८१, केवलण-पदं ८३, कणगज्जयस्स सावगघम्म-पदं ८५, तेयलिपुत्तस्स सिद्धि-पदं ८८, निक्खेव-पदं ८९ ।

पण्णरसमं अज्जयणं

सू० १-२२

पृ० २६६-१७१

उक्खेव-पदं १, घणस्स घोषणा-पदं ६, घणस्स निद्देस-पदं ११, निद्देसपालणस्स निगमण-पदं १३, निद्देसाज्पालणस्स निगमण-पदं १५, घणस्स अहिच्छत्ताऽऽगमण-पदं १७, घणस्स पव्वज्जा-पदं २०, निक्खेव-पदं २२ ।

सोलसमं अज्जयणं

सू० १-३२७

पृ० २७२-३३५

उक्खेव-पदं १, नागसिरी-कहाण-पदं ४, नागसिरीए तित्तालाउय-उवक्खडण-पदं ६, घम्म-रुइस्स तित्तालाउय-दाण-पद ११, तित्तालाउय-परिट्ठावण-पदं १६, अहिंसद्वं तित्तालाउय-भक्खण-पदं १९, घम्मरुइस्स समाहिमरण-पदं, २०, साहूहि घम्मरुइस्स गवेसण-पदं २२, साहूहि घम्मरुइस्स समाहिमरण-निवेदण-पदं २३, घम्मरुइस्स सइसभा-पदं २४, नागसिरीए गरिहाण-पदं २५, नागसिरीए गिहनिव्वासण-पदं २८, नागसिरीए भवभमण-पदं ३०, सूमालिया-कहाण-पदं ३२, सूमालियाए सागरेण सद्धि विवाह-पदं ३७, सागरस्स पलायण-पदं ५२, सूमालियाए चिंता-पदं ६२, सागरदत्तेण जिणदत्तस्स उवालंभ-पदं ६७, सागरस्स पुणोगमण-व्वुदास-पदं ६८, सूमालियाए दमगेण सद्धि पुणव्विवाह-पदं ७०, दमगस्स पलायण-पदं ८०, सूमालियाए पुणोचिंता-पदं ८७, सूमालियाए दाणसाला-पदं ९२, अज्जा-संघाडगस्स भिक्खारियागमण-पदं ९४, सूमालियाए सागरपसायोवाय-पुच्छा-पदं ९७, अज्जा-संघाडगस्स उत्तर-पदं ९८, सूमालियाए साविया-पदं-९९, सूमालियाए पव्वज्जा-पदं १०४, सूमालियाए आतावणा-पदं १०६, सूमालियाए नियाण-पदं १०९, सूमालियाए वाउसियत्त-पदं ११४, सूमायालिए पुढोविहार-पदं ११८, दोवई-कहाण-पदं, १२०, दोवईए सयंवर-संकप्प-पदं, १३१, बारवईए द्वयपेसण-पदं १३२, कण्हस्स पत्थाण-पदं १३६, हत्थिणाउरे द्वयपेसण-पदं १४२, द्वयपेसण-पदं १४५, रायसहस्साणं पत्थाण-पदं १४६, दुवयस्स आतित्थ-पदं १४७, दोवईए सयंवर-पदं १५३, दोवईए पंडव-वरण-पदं १६४, पाणिग्गहण-पदं १६७, पंडुरायस्स निमंतण-पदं १७०, पंडुरायस्स आतित्थ-पदं १७२, कल्लाणकार-पदं १८१, नारदस्स आगमण-पदं १८४, नारदस्स अवरकंका-गमण-पदं १९१, दोवईए साहरण-पदं २०१, दोवईए चिंता-पदं २०७, पडमनाभस्स आसासण-पदं २०८, दोवईए गवेसणा-पदं २१२, दोवईए उवलद्धि-पदं २२६, सपंडवस्स कण्हस्स पयाण-पदं २३३, कण्हस्स देवाराधण-पदं २३७, कण्हस्स मग्गजायणा-पदं २३९, कण्हेण द्वयपेसण-पदं, २४३, पडमनाभेण द्वयस्स अवमाण-पदं २४५, द्वयस्स पुणो आगमण-पदं २४६, पडमनाभस्स पंडवोहि जुद्ध-पदं २४७, पंडवाणं पराजय-पदं २५२,

कण्हेण पराजय-हेउ-कहणपुब्बं जुउभ-पदं २५४, पउमनाभरस पलायण-पदं २६०, कण्हस्स नरसिंहरूव-पदं २६१ पउमनाभस्स सरण-पदं २६३, सदीवई-पंडवरस कण्हस्स पच्चावट्टण-पदं २६६, वासुदेव-जुयलस्स संखसहेण मिलण-पदं २६८, कविलेण पउमनाभस्स निव्वासण-पदं २७८, अपरिक्खणीयपरिक्खा-पदं २८१, कण्हेण पंडवाणं निव्वासण-पदं २८६, पंडुमहुरा-निवेसण-पदं ३०३, पंडुसेण जम्म-पदं ३०४, पंडवाणं दोवईए य पव्वज्जा-पदं ३१०, अरिट्टनेमिस्स निव्वाण-पदं ३१८, पंडवाणं निव्वाण-पदं ३२३, दोवईए देवत्त-पदं ३२५, निक्खेव-पदं ३२७ ।

सत्तरसमं अज्झयणं

सू० १-३७

पृ० ३३६-३४६

उक्खेव-पदं १, कालियदीव-जत्ता-पदं ५, कालियदीवे आस-पेच्छण-पदं १४, संजत्तियाणं पुणरागमण-पदं १६, आसाण आणयण-पदं १७, अमुच्छिय-आसाणं सायत्त-विहार-पदं २४, निगमण-पदं २५, मुच्छिय-आसाणं परायत्त-पदं २६, निगमण-पदं ३६ ।

अट्ठारसमं अज्झयणं

सू० १-६२

पृ० ३४७-३५८

उक्खेव-पदं १, चिलाय-दासचेडस्स विग्गह-पदं ६, चिलायस्स गिहाओ निक्कासण-पदं १०, चिलायस्स दुव्वसण-पवत्ति-पदं १६, चोरपल्ली-पदं १८, चिलायस्स चोरपल्ली-गमण-पदं २३, विजयस्स मच्चु-पदं २६, चिलायस्स चोरसेणावइत्त-पदं २८, चिलायस्स घणस्स गिहे चोरिय-पदं ३३, नगरगुत्तिएहि चोरनिग्गह-पदं ३६, चिलायस्स चोरपल्लीतो पलायण-पदं ४४, निगमण-पदं ४८, घणस्स संसुमाकए कंदण-पदं ४६, घणेणं अडवि-संघणट्ठं सुया-मंससोणियाहार-पदं ५१, निगमण-पदं ६० ।

एगुणबीसइमं अज्झयणं

सू० १-४६

पृ० ३५९-३६७

उक्खेव-पदं १, कंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं ८, कंडरीयस्स वेयणा-पदं २०, कंडरीयस्स तिगिच्छा-पदं २२, कंडरीयस्स पमत्त-विहार-पदं २७, पुंडरीएण पडिबोह-पदं २९, कंडरी-यस्स पव्वज्जा-परिच्चाय-पदं ३२, पुंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं ३८, कंडरीयस्स मच्चु-पदं ३६, निगमण-पदं ४२, पुंडरीयस्स आराहणा-पदं ४३, निगमण-पदं ४७, निक्खेव-पदं ४८,

बीओ सुयक्खंधो

पढमो वग्गो

१-५ अज्झयणाणि

सू० १-६३

पृ० ३६८-३८०

उक्खेव-पदं १, कालीदेवी-पदं १०, कालीए भगवओ वंदण-पदं ११, गोयमस्स पसिण-पदं १३, भगवओ उत्तरे काली-पदं १५, कालीए पव्वज्जा-पदं १६, कालीए वाउसियत्त-पदं ३४, कालीए पुढो विहार-पदं ३८, कालीए मच्चु-पदं ३६, निक्खेव-पदं ४५ । २-५ अज्झयणाणि

उवासगदसाओ

पठमं अउभयणं

सू० १-८६

पृ० ३६५-४२०

उक्खेव-पदं १, आणंदगाहावइ-पदं ८, महावीर-समवसरण-पदं १७, आणंदस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं २३, अतियार-पदं ३१, आणंद-अभिग्गह-पदं ४५, सिवणंदाए वंदणदु-गमण-पदं ४६, सिवणंदाए गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं ५१, गोयम-पुच्छा-पदं ५३, भगवओ जणवय-विहार-पदं ५४, आणंदस्स समणोवासग-चरिया-पदं ५५, सिवणंदाए समणोवासिय-चरिया-पदं, ५६, आणंदस्स धम्मजागरिया-पदं ५७, आणंदस्स उवासगपडिगा-पडिवत्ति-पदं ६१, आणंदस्स अणसण-पदं ६५, आणंदस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पदं ६६, गोयमस्स आगमण-पदं ६७, आणंद-गोयम-संवाद-पदं ७६, भगवओ उत्तर-पदं ८१, गोयमस्स लामणा-पदं ८२, भगवओ जणवयविहार-पदं ८३, आणंदस्स समाहिमरण-पदं ८४, निक्खेव-पदं ८६ ।

बीयं अउभयणं

सू० १-५७

पृ० ४२१-४३६

उक्खेव-पदं १, कामदेवगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, कामदेवस्य गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, कामदेवस्य समणोवासयग-चरिया-पदं १६, भद्दाए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, कामदेवस्स धम्मजागरिया-पदं १८, काम-देवस्स पिसायरूव-कय-उवसग्ग-पदं २०, कामदेवस्स हत्थिरूव-कय-उवसग्ग-पदं २८, कामदेवस्स सप्परूव-कय-उवसग्ग-पदं ३४, देवरूव-विउब्बण-पदं ४०, कामदेवस्स पडिमा-पारण-पदं ४१, कामदेवस्स भगवओ पज्जुवासणा-पदं ४२, भगवया कामदेवस्स उवसग्ग-वागरण-पदं ४५, भगवया कामदेवस्स पसंसा-पदं ४६, कामदेवस्स पडिगमण-पदं ४८, भग-वओ जणवयविहार-पदं ४९, कामदेवस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पदं ५०, कामदेवस्स अणसण-पदं ५४, कामदेवस्स समाहिमरण-पदं ५५, निक्खेव-पदं ५७ ।

तइयं अउभयणं

सू० १-५३

पृ० ४४०-४५३

उक्खेव-पदं १, चुलणीपियगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, चुलणीपियस्स गिहि-धम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, चुलणीपियस्स समणोवासग-चरिया-पदं १६, सामाए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, चुलणीपियस्स धम्मजागरिया-पदं १८, चुलणीपियस्स देव-कय-उवसग्ग-पदं २०, °जेठुपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणी-यसपुत्त ३३, °महासत्थवाही ३६, चुलणीपियस्स कोलाहल-पदं ४२, भद्दाए पत्तिण-पदं ४३, चुलणीपियस्स उत्तर-पदं ४४, पायच्छित्त-पदं ४५, चुलणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं ४७, चुलणीपियस्स अणसण-पदं ५१, चुलणीपियस्स समाहिमरण-पदं ५२, निक्खेव-पदं ५३ ।

चउत्थं अउभयणं

सू० १-५३

पृ० ४५४-४६६

उक्खेव-पदं १, सुरादेवगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, सुरादेवस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, सुरादेवस्स समणोवासग-चरिया-पदं १६,

धन्नाए समणोवासिव-चरिया-पदं १७, सुरादेवस्स धम्मजागरिया-पदं १८, सुरादेवस्स देव-
कय-उवसग्ग-पदं २०, °जेठुपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणीयसपुत्त ३३, °सोलस-
रोगायकं ३६, सुरादेवस्स कोलाहल-पदं ४२, धन्नाए पसिण-पदं ४३, सुरादेवस्स उत्तर-पदं
४४, पायच्छित्त-पदं ४५, सुरादेवस्स उवासगपडिमा-पदं ४७, सुरादेवस्स अणसण-पदं ५१,
सुरादेवस्स समाहिमरण-पदं ५२, निक्खेव-पदं ५३ ।

पंचमं अउभयणं

सू० १-५४

पृ० ४६७-४१६

उक्खेव-पदं १, चुल्लसययगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, चुल्लसययस्स गिहि-
धम्म-पडिबत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, चुल्लसयतस्स समणोवासग-चरिया-
पदं १६, बहुलाए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, चुल्लसयय-धम्मजागरिया-पदं १८,
चुल्लसययस्स देव-कय-उवसग्ग-पदं २०, °जेठुपुत्त २१, °मज्झिमपुत्त २७, °कणीयसपुत्त
३३, °हिरण्णकोडीबिप्पकिरण ३६, चुल्लसययस्स कोलाहल-पदं ४२, बहुलाए पसिण-पदं
४३, चुल्लसययस्स उत्तर-पदं ४४, पायच्छित्त-पदं ४५, चुल्लसययस्स उवासगपडिमा-पदं ४७,
चुल्लसययस्स अणसण-पदं ५१, चुल्लसययस्स समाहिमरण-पदं ५२, निक्खेव-पदं ५३ ।

छट्ठं अउभयणं

सू० १-४२

पृ० ४८०-४८६

उक्खेव-पदं १, कुंडकोलियगाहावइ-पदं २, महावीर समवसरण-पदं ७, कुंडकोलियस्स
गिहिधम्म-पडिबत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, कुंडकोलियस्स समणोवासग-
चरिया-पदं १६, पूसाए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, देवेण नियतिवाद-समत्थण-पदं १८,
कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पदं २१, देवेण नियतिवाद-समत्थण-पदं २२, कुंडको-
लिएण नियतिवाद-निरसण-पदं २३, देवस्स पडिगमण-पदं २४, महावीर-समवसरण-पदं
२५, महावीरेण पुब्बवुत्तंत-परूवण-पदं २८, महावीरेण कुंडकोलियस्स पसंसा-पदं २९,
भगवओ जणवयविहार-पदं ३२, कुंडकोलियस्स धम्मजागरिया-पदं ३३, कुंडकोलियस्स
उवासगपडिमा-पदं ३५, कुंडकोलियस्स अणसण-पदं ३६, कुंडकोलियस्स समाहिमरण-पदं
४०, निक्खेव-पदं ४२ ।

सप्तमं अउभयणं

सू० १-८६

पृ० ४९०-५१३

उक्खेव-पदं १, सद्दालपुत्त-पदं २, सद्दालपुत्तस्स देवसंदेस-पदं ८, सद्दालपुत्तस्स संकप्प-पदं
११, महावीर-समवसरण-पदं १२, महावीरस्स देवसंदेस-विरूवण-पदं १७, सद्दालपुत्तस्स
निवेदण-पदं १८, महावीरेण सद्दालपुत्त-संबोधण-पदं १९, सद्दालपुत्तस्स गिहिधम्म-पडिबत्ति-
पदं २८, अग्निमित्ताए वंदणट्ठ-गमण-पदं ३३, अग्निमित्ताए गिहिधम्म-पडिबत्ति-पदं ३७,
भगवओ जणवयविहार-पदं ३९, सद्दालपुत्तस्स समणोवासगचरिया-पदं ४०, अग्निमित्ताए
समणोवासियचरिया-पदं ४१, गोसालस्स आगमण-पदं ४२, गोसालेण महावीरस्स गुण-
कित्तण-पदं ४४, विवाद-पट्टवणा-पसिण-पदं ५०, सद्दालपुत्तस्स धम्मजागरिया-पदं ५४,

सद्दालपुत्तस्स देवरूब-कय-उवसग्ग-पदं ५६, °जेट्टपुत्त ५७, °मज्झिमपुत्त ६३, °कणीय-
सपुत्त ६६, °अग्निमित्ताभारिया ७५, सद्दालपुत्तस्स कोलाहल-पदं ७८, अग्निमित्ताए
पसिण-पदं ७९, सद्दालपुत्तस्स उत्तर-पदं ८०, पायच्छित्त-पदं, ८१, सद्दालपुत्तस्स उवासग्ग-
पडिमा-पदं ८३, सद्दालपुत्तस्स अणसण-पदं ८७, सद्दालपुत्तस्स समाहिमरण-पदं ८८,
निकखेव-पदं ८९ ।

अट्ठमं अउभयं

सू० १-५४

पृ० ५१४-५२६

उक्खेव-पदं १, महासतयगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ८, महासतयस्स गिहि-
धम्म-पडिबत्ति-पदं १४, महासतयस्स समणोवासग्ग-चरिया-पदं १६, भगवओ जणवयविहार-
पदं १७, रेवतीए चिता-पदं १८, रेवतीए सबत्ती-उद्दवण-पदं १९, रेवतीए मंसमज्जासायण-
पदं २०, अमाषाय-पदं २१, महासतगस्स धम्मजागरिया-पदं २५, महासतगस्स अणुकूल-
उवसग्ग-पदं २७, महासतगस्स उवासग्गपडिमा-पदं ३२, महासतगस्स अणसण-पदं ३६,
महासतगस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पदं ३७, महासतगस्स पुणरवि अणुकूल-उवसग्ग-पदं ३८,
महासतगस्स विक्खेव-पदं ४१, महावीर-समवसरण-पदं ४४, महासतगस्स अंतिए गोतम-
पेसण-पदं ४६, गोतमस्स आगमण-पदं ४७, महासतगस्स वंदण-पदं ४८, महावीरुत्तस्स
कहण-पदं ४९, महासतगस्स पायच्छित्त-पदं ५०, गोयमस्स पडिणिकसमण-पदं ५१, भगवओ
जणवयविहार-पदं ५२, महासतगस्स अणसण-पदं ५३, निकखेव-पदं ५४ ।

नवमं अउभयं

सू० १-२७

पृ० ५२७-५३१

उक्खेव-पदं १, नंदिणीपियगाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, नंदिणीपियस्स
गिहिधम्म-पडिबत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, नंदिणीपियस्स समणोवासग्ग-
चरिया-पदं १६, अस्सिणीए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, नंदिणीपियस्स धम्मजागरिया-
पदं १८, नंदिणीपियस्स उवासग्गपडिमा-पदं २०, नंदिणीपियस्स अणसण-पदं २४, नंदिणी-
पियस्स समाहिमरण-पदं २५, निकखेव-पदं २७ ।

दसमं अउभयं

सू० १-२७

पृ० ५३२-५३७

उक्खेव-पदं १, लेइयापितागाहावइ-पदं २, महावीर-समवसरण-पदं ७, लेतियापियस्स
गिहिधम्म-पडिबत्ति-पदं १३, भगवओ जणवयविहार-पदं १५, लेतियापियस्स समणोवासग्ग-
चरिया-पदं १६, फग्गुणीए समणोवासिय-चरिया-पदं १७, लेतियापियस्स धम्मजागरिया-
पदं १८, लेतियापियस्स उवासग्गपडिमा-पदं २०, लेतियापियस्स अणसण-पदं २४,
लेतियापियस्स समाहिमरण-पदं २५, निकखेव-पदं २७ ।

अंतगउवसाओ

पडमो वग्गो

सू० १-२६

पृ० ५४१-५४५

उक्खेव-पदं १, गोयम-पदं ८, निकखेव-पदं २५, समुदादि-पदं २६ ।

बीओ वगो

सू० १-३

पृ० ५४५

उक्खेव-पदं १, अक्खोभादि-पदं ३ ।

तइओ वगो

सू० १-११८

पृ० ५४६-५६६

उक्खेव-पदं १, अणीयसादि-पदं ४, सारण-पदं १६, उक्खेव-पदं १७, छण्हं अणगाराणं तव-संकप्प-पदं १९, छण्हं पि देवईए गिहे पवेस-पदं २२, देवईए पुणरागमणसंका-पदं २९, संकासमाघाण-पदं ३०, पुत्त-बोह-पदं ३१, देवईए हरिस-पदं ४२, देवईए पुत्ताभिलासा-पदं ४३, कण्हस्स चिताकारणपुच्छा-पदं ४४, देवईए चिताकारणनिवेदण-पदं ४६, कण्हस्स देवाराहण-पदं ४७, कण्हेण देवईए आसासण-पदं ५१, गयसुकुमालस्स जम्म-पदं ५२, सोमिलघूयाए कण्णतेउर-पक्खेव-पदं ५५, धम्मदेसणा-पदं ६२, गयसुकुमालस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं ६३, गयसुकुमालस्स अम्मापिऊणं निवेदण-पदं ६४, देवईए सोगाकुलदसा-पदं ६७, देवईए गयसुकुमालस्स य परिसंवाद-पदं ६८, गयसुकुमालस्स एकदिवस-२७ज-पदं ७७, गयसुकुमालस्स पव्वज्जा-पदं ८४, गयसुकुमालस्स महापडिमा-पदं ८८, सोमिलकय-उवसग-पदं ८९, गयसुकुमालस्स सिद्धि-पदं ९०, कण्हेण बुद्धस्स साहिज्जकरण-पदं ९४, कण्हस्स गयसुकुमाल-दंसणाभिलासा-पदं ९८, गयसुकुमालस्स सिद्धि-सूयणा-पदं ९९, सोमिलस्स अकालमच्चू-पदं १०८, निक्खेव-पदं १११, उक्खेव-पदं ११२, सुमुहादि-पदं ११३ ।

चउत्थो वगो

सू० १-७

पृ० ५७०, ५७१

उक्खेव-पदं १, जालिपभित्ति-पदं ४, निक्खेव-पदं ७ ।

पंचमो वगो

सू० १-४३

पृ० ५७२-५७८

उक्खेव-पदं १, पउमावई-पदं ४, गोरिपभित्ति-पदं ३३, मूलसिरी-मूलदत्ता-पदं ३९ ।

छट्ठो वगो

सू० १-१०२

पृ० ५७८-५९३

१, २ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं १, मकाइ-किंम-पदं ४, अज्जुण-मालागार-पदं १०, अज्जुणस्स जक्खपज्जु-वासणा-पदं १६, गोठीए अणाचार-पदं १७, अज्जुणस्स पडिसोघ-पदं २५, रायगिहे आतंक-पदं २८, भगवओ समवसरण-पदं ३३, सुदंसणस्स वंदणट्ठं गमण-पदं ३५, सुदंसणस्स अज्जु-णकय-उवसग-पदं ४०, उवसगनिवारण-पदं ४३, सुदंसणस्स अज्जुणस्स य भगवओ पज्जुवासणा-पदं ४६, अज्जुणस्स पव्वज्जा-पदं ५१, अज्जुणअणगारस्स तितिकखा-पदं ५३, अज्जुणअणगारस्स सिद्धि-पदं ५९, कासवादि-पदं ६०, अइमुत्त कुमार-पदं ७१, गोयमस्स भिक्खायगिया-पदं ७५, गोयम-अइमुत्तकुमार-संवाद-पदं ७७, अइमुत्तकुमारस्स पव्वज्जा-पदं ८५, अलक्क-पदं ९७, निक्खेव-पदं १०२ ।

सप्तमो वग्गो

सू० १-७

पृ० ५६४

उक्खेव-पदं १, नंदादि-पदं ४ ।

अट्ठमो वग्गो

सू० १-३८

पृ० ५४६-६१२

उक्खेव-पदं १, कालीए रयणावलितव-पदं ४, सुकालीए कणगावलितव-पदं १८, महाकालीए खुड्ढागसीहनिक्कीलियतव-पदं २१, कण्हाए महालयसीहनिक्कीलियतव-पदं २२, सुकण्हाए भिक्खुपडिमा-पदं २३, महाकण्हाए खुड्ढागसव्वओभट्ठ-पदं २७, वीरकण्हाए महालयसव्वओ-भट्ठपडिमा-पदं २९, रामकण्हाए भट्ठोत्तरपडिमा-पदं ३०, पिउसेणकण्हाए मुत्तावलितव-पदं ३१, महासेणकण्हाए आयंबिलवट्ठमाणतव-पदं ३२, निक्खेव-पदं ३८, परिसेसो ।

अणुत्तारोववाइयवसाओ

पठमो वग्गो

सू० १-१६

पृ० ६१३-६१६

उक्खेव-पदं १, जालि-पदं ६, निक्खेव-पदं १४, मयालिपभित्ति-पदं १५, निक्खेव-पदं १६ ।

दोउच्चो वग्गो

सू० १-६

पृ० ६१७-६१८

उक्खेव-पदं १, दीहसेणादि-पदं ४, निक्खेव-पदं ६ ।

तच्छो वग्गो

सू० १-७५

पृ० ६१९-६३३

उक्खेव-पदं १, घण्णस्स गिहवास-पदं ४, घण्णस्स पव्वज्जा-पदं १०, घण्णस्स तवचरिया-पदं २२, घण्णस्स तवजणियसरीरलावण्ण-पदं ३१, सेणियस्स महादुक्करकारय-पुच्छा-पदं ५३, भगवओ उत्तर-पदं ५७, सेणिएण घण्णस्स थवणा-पदं ५८, घण्णस्स सव्वट्टसिद्ध-गमण-पदं ५९, निक्खेव-पदं ६३, सुणक्खत्त-पदं ६४, दसिदासादि-पदं ७४, निक्खेव-पदं ७५, परिसेसो ।

पण्हावागरणाइं

पठमं अउभयणं

सू० १-४०

पृ० ६३५-६५०

उक्खेव-पदं १, पाणवहस्स सरूव-पदं २, पाणवहस्स तीसनाम-पदं ३, पाणवहस्स पगार-पदं ४, पाणवहस्स कारण-पदं ११, पाणवहस्स कत्तार-पदं २०, पाणवहस्स फलविबाग-पदं २३, निगमण-पदं ४० ।

द्वीयं अउभयणं

सू० १-१९

पृ० ६५१-६५६

उक्खेव-पदं १, अलियवयणस्स तीसनाम-पदं २, अलियवयणस्स पगार-पदं ३, अलिय-वयणस्स फलविबाग-पदं १५, निगमण-पदं १९ ।

तद्वयं अङ्गभयणं

सू० १-२६

पृ० ६५७-६६७

उक्खेव-पदं १, अदिण्णादाणस्स तीसनाम-पदं २, चोरिय-चोरपगार-पदं ३, रण्णो परधण-हरण-पदं ४, घणत्थं जुद्ध-पदं ५, लूटाक-पदं ६, सामुहियचोर-पदं ७, दारुणचोर-पदं ८, अदिण्णादाणस्स फलविवाग-पदं ९, निगमण-पदं २६ ।

अउत्थं अङ्गभयणं

सू० १-१५

पृ० ६६८-६७७

उक्खेव-पदं १, अबंभस्स तीसनाम-पदं २, सुरगणस्स अबंभ-पदं ३, चक्कवट्टिस्स अबंभ-पदं ४, बलदेव-वासुदेवस्स अबंभ-पदं ५, मंडलिय-नरवरेंदस्स अबंभ-पदं ६, जुगलियाणं लावण्णनिरुवणपुरस्सरं अबंभ-पदं ७, जुगलिणीणं लावण्णनिरुवणपुरस्सरं अबंभ-पदं ८, अबंभस्स फलविवाग-पदं ९, निगमण-पदं १५ ।

पंचमं अङ्गभयणं

सू० १-१०

पृ० ६७८-६८२

उक्खेव-पदं १, परिग्गहस्स तीसनाम-पदं २, देवाणं परिग्गह-पदं ३, मणुस्साणं परिग्गह-पदं ४, परिग्गहत्थं सिक्खा-पदं ५, परिग्गहीणं पवित्ति-पदं ६, परिग्गहस्स फलविवाग-पदं ८, निगमण-पदं १० ।

छट्ठं अङ्गभयणं

सू० १-२५

पृ० ६८३-६८८

उक्खेव-पदं १, अहिंसा-पज्जवनाम-पदं ३, अहिंसा-शुद्ध-पदं ४, अहिंसा-माहप्प-पदं ६, उच्छग्वेसणा-पदं ७, अहिंसाए पंचभावणा-पदं १६, निगमण-पदं २२ ।

सप्तमं अङ्गभयणं

सू० १-२५

पृ० ६८९-६९३

उक्खेव-पदं १, सच्चस्स माहप्प-पदं २, सच्चस्स शुद्ध-पदं १०, सावज्जसच्च-पदं १२, अणवज्जसच्च-पदं १४, सच्चस्स पंचभावणा-पदं १६, निगमण-पदं २२ ।

अट्ठमं अङ्गभयणं

सू० १-१७

पृ० ६९४-६९७

उक्खेव-पदं १, अदत्तस्स अग्गहण-पदं २, अदत्तादाणवेरमणस्स अजोग्गता-पदं ५, अदत्तादा-णवेरमणस्स जोग्गता-पदं ६, अदत्तादणवेरमणस्स पंचभावणा-पदं ८, निगमण-पदं १४ ।

नवमं अङ्गभयणं

सू० १-१५

पृ० ६९८-७०३

उक्खेव-पदं १, बंभचेरमाहप्प-पदं २, बंभचेरयिरीकरण-पदं ४, बंभचेरस्स पंचभावणा-पदं ६, निगमण-पदं १२ ।

दसमं अङ्गभयणं

सू० १-२३

पृ० १००४-७१३

उक्खेव-पदं १, अकप्पदब्बजाय-पदं ३, असण्णिहि-पदं ६, अकप्पभोयण-पदं ७, कप्पभोयण-

पदं ८, रोगायके वि असण्णिहि-पदं ९, उवगरणधारणविहि-पदं १०, समणस्स सक्खनिरु-
वण-पदं ११. अपरिग्गहस्स पंचभावणा-पदं १३, निगमण-पदं १९, परिसेसो ।

विवागसुयं

पढमो सुयक्कंषो

पढमं अउभयणं

सू० १-७१

पृ० ७१७-७३१

उक्खेव-पदं १, मियापुत्तवण्णग-पदं ९, गोयमस्स जाइअणपुरिसविसए पुच्छा-पदं १६,
भगवया मियापुत्तरूव-निरूवण-पदं २६, गोयमस्स मियापुत्तदसण-पदं २७, गोयमेण मिया-
पुत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं ४१, मियापुत्तस्स एक्काइभव-वण्णग-पदं ४३, मियापुत्तस्य
वत्तमाणभव-वण्णग-पदं ५८, मियापुत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं ७०, निक्खेव-पदं ७१ ।

द्वीयं अउभयणं

सू० १-७४

पृ० ७३२-७४३

उक्खेव-पदं १, गोयमेण उज्झियस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं १२, उज्झियस्स गोत्तासभव-वण्णग-
पदं १७, उज्झियस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं ४३, उज्झियस्स आगामिभव-वण्णग-पदं ६६,
निक्खेव-पदं ७४ ।

तइयं अउभयणं

सू० १-६६

प० ७४५ से ७५६

उक्खेव-पदं १, गोयमेण अभग्गसेणस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं १३, अभग्गसेणस्स नित्तयभव-
वण्णग-पदं १७, अभग्गसेणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं २३, अभग्गसेणस्स आगामिभव-
वण्णग-पदं ६५, निक्खेव-पदं ६६ ।

चउत्थं अउभयणं

सू० १-४०

पृ० ७५७ से ७६२

उक्खेव-पदं १, सगडस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं १२, सगडस्स छन्नियभव-वण्णग-पदं १३,
सगडस्स वत्तमाणभव वण्णग-पदं १८, सगडस्स आगमिभव-वण्णग-पदं ३२,
निक्खेव-पदं ४० ।

पंचमं अउभयणं

सू० १-३०

पृ० ७६३ से ७६६

उक्खेव-पदं १ गोयमेण बहस्सइदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं १०, बहस्सइदत्तस्स महेसरदत्त-
भव-वण्णग-पदं ११, बहस्सइदत्तस्स वत्तमाणभव वण्णग-पदं १७, बहस्सइदत्तस्स आगमि-
भव-वण्णग-पदं २९, निक्खेव-पदं ३० ।

छट्ठं अउभयणं

सू० १- ३८

पृ० ७६७-७७३

उक्खेव-पदं १, गोयमेण नंदिवट्ठणस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं ७, नंदिवट्ठणस्स कुज्जोहणभव-
वण्णग-पदं ९, नंदिवट्ठणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं २५. नंदिवट्ठणस्स आगामिभव-
वण्णग-पदं ३७. निक्खेव-पदं ३८ ।

सप्तमं अङ्गभूयणं

सू० १-३६

पृ० ७७४ से ७८२

उक्त्वेव-पदं १, गोयमेण उंवरदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं ७, उंवरदत्तस्स घणंतरिभव-वण्णग-पदं १३, उंवरदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं १८, उंवरदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं ३८, निक्खेव-पदं ३६ ।

अट्ठमं अङ्गभूयणं

सू० १-२८

पृष्ठ ७८२-७८७

उक्त्वेव-पदं १, सोरियदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं ८, सोरियदत्तस्स सिरीयभव-वण्णग पदं ६. सोरियदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं १४, सोरियदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं २७, निक्खेव-पदं २८ ।

नवमं अङ्गभूयणं

सू० १-६०

पृ० ७८८-७९७

उक्त्वेव-पदं १, देवदत्ताए पुव्वभवपुच्छा-पदं ६, देवदत्ताए सीहसेणभव-वण्णग-पदं ७, देवदत्ताए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं ३०, देवदत्ताए आगामिभव-वण्णग-पदं ५६, निक्खेव-पदं ६०

दसमं अङ्गभूयणं

सू० १-२०

पृ० ७९८-८०१

उक्त्वेव-पदं १, अंज्जए पुव्वभवपुच्छा-पदं ४, अंज्जए पुढविसिरीभववण्णग-पदं ५, अंज्जए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं ६, अंज्जए आगामिभव-वण्णग-पदं १६, निक्खेव-पदं २० ।

बीओ सुयक्खसंघो

पष्ठमं अङ्गभूयणं

सू० १-३७

८०२-८०६

उक्त्वेव-पदं १, सुबाहुकुमार-पदं ४, सुबाहुस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं १५ सुबाहुस्स सुमुहभव-वण्णग-पदं १६, सुबाहुकुमारस्स पव्वज्जा-पदं ३१, सुबाहुकुमारस्स आगामिभव-वण्णग-पदं ३५, निक्खेव-पदं ३७,

२-१० अङ्गभूयणाणि ।

पृ० ८१०-८१३

संकेत निर्देशिका

- ० ये दोनों बिन्दु पाठपूर्ति के द्योतक है। पाठपूर्ति के प्रारम्भ में भग बिन्दु [०] और उसके समापन में रिक्त बिन्दु [०] रखा गया है। देखें—पृष्ठ २ सू ६।
 - [?] कोष्ठकवर्ती प्रश्नचिह्न [?] अदर्शों में अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें—पृष्ठ ३. सूत्र ७।
 - ' ये दो या इससे अधिक शब्दों के स्थान में पाठान्तर होने का सूचक है। देखें पृष्ठ २ सू० ४। 'वण्णओ' व 'जाव' शब्द के टिप्पण में उसके पूर्ति स्थल का निर्देश है। देखें—पृष्ठ १ टिप्पण ३ और पृष्ठ ३ सूत्र ८।
 - < क्राश [X] पाठ न होने का द्योतक है। देखें—पृष्ठ ३ टिप्पण ४।
 - ० पाठ के पूर्व या अन्त में खाली बिन्दु [०] अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखें—पृ० ३ सूत्र ७ टिप्पण ५।
- 'जहा' 'तहेव' आदि पर टिप्पण में दिए गए सूत्रांक उसकी पूर्ति के सूचक हैं। देखें—पृष्ठ ३०१ सूत्र ७ तथा पृष्ठ ३७८ सूत्र ५०।
- क, ख, ग, घ, च, छ, व, देखें—सम्पादकीय में 'प्रति-परिचय' शीर्षक।
- 'व्या० वि' व्याकरण विमर्श। देखें—पृष्ठ ३६६ टिप्पण १।
- 'क्व' क्वचित् प्रयुक्तादर्श।
- सं० पा० संक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखें—पृष्ठ ५ टिप्पण १।
- वृपा वृत्ति-सम्मत पाठान्तर। देखें—पृष्ठ १० टिप्पण ३।
- वृ वृत्ति का सूचक है। देखें—पृष्ठ ६ टिप्पण १७।
- पू० पूर्णपाठार्थ द्रष्टव्यम्। देखें—पृष्ठ ५२६ टिप्पण १।
- अ० अंतगडदसाओ।
- अ० अणुत्तरोववाडयदसाओ।
- उबा० उवासगदसाओ।
- ओ० ओवाडयं।
- ना० नायाधम्मकहाओ।
- भ०, भग०, भगवई।
- राय० रायपसेणइयं।
- पण्हा० पण्हावागरणाइं।
- वि० विवागसूयं।
- सूय० सूयगडो।
- जंबू० जंबूदीवपण्णत्ति।

नायाधम्मकहाओ

पढमं अउभयणं

उक्खित्तणाए

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समणं चंपा नामं नयरी होत्था—वण्णओ' ॥
२. तीसे णं चंपाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए पुण्णभद्दे नामं चेइए' होत्था—वण्णओ' ॥
३. तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए नामं राया होत्था—वण्णओ' ॥
४. तेणं कालेणं तेणं समणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं थेरे जातिसंपण्णे कुलसंपण्णे बल-रूव-विणय-नाण-दंसण-चरित्त'-लाघव-संपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे 'जिइदिए' जियनिद्दे' जियपरीसहे जीवियास'-मरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे एवं—करण-चरण-निग्गह-निच्छय-अज्जव-मद्दव-लाघव-खंति-गुत्ति-मुत्ति-विज्जा-मंत-बंभ'-वेय-नय-नियम-सच्च-सोय-नाण-दंसण-चरित्तप्पहाणे ओराले" घोरे घोरव्वए" घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल-तेयलेस्से चोद्दसपुव्वी" चउनाणोवगए पंचहि अणगारसएहि सद्धि संपरि-वुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं द्दइज्जमाणे" सुहंसुहेणं विहरमाणे

१. ओ० सू० १ ।

२. चेतिए (क, ख, ग) ।

३. ओ० सू० २-१३ ।

४. ओ० सू० १४ ।

५. चरित्त लज्जा (राय० सू० ६८६) ।

६. जियइदिए (ख) ।

७. जियनिद्दे जित्तिदिए (राय० सू० ६८६) ।

८. जीवियासा (ग, घ) ।

९. बंभचेर (ख, घ) । वृत्तौ 'ब्रह्म' पदमेव व्याख्यातमस्ति, यथा—ब्रह्म—ब्रह्मचर्यं सर्वमेव वा कुशलानुष्ठानम् । कामुचित् प्रतिपु 'बंभचेर' इति मूलपाठरूपेण परिवर्तितमभूत् ।

१०. उराले (ख, घ) ।

११. घोरगुणे (राय० सू० ६८६) ।

१२. चोदस ० (ख); चउद्दस ० (ग) ।

१३. द्दित्तज्ज ० (ख, ग) ।

‘जेणेव चंपा नयरी’, जेणेव पुण्णभट्टे चेतिए’ तेणामेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता अहापडिह्वं ओगगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे
विहरति ॥

५. ‘तए णं’ चंपाए नयरीए परिसा निग्गया’ । धम्मो कहिओ । परिसा जामेव
दिसि पाउब्भूया, तामेव दिसि पडिगया ॥
६. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अंतेवासी अज्जजंबू
नामं अणगारे कासव’ गोत्तेणं सत्तुस्सेहे’ *समचउरंस-संठाण-संठिण, वइररिसह-
णाराय-संघयणे कणग-पुलग-निघस-पम्ह-गोरे उगगतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे
उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल-
तेयलेस्से° अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे भाणकोट्टो-
वगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
७. तए णं से अज्जजंबूनामे अणगारे जायसड्ढे जायसंसए’ जायकोउहल्ले
‘संजायसड्ढे संजायसंसए, संजायकोउहल्ले
उप्पण्णमड्ढे उप्पण्णसंसए, उप्पण्णकोउहल्ले’
समुप्पण्णमड्ढे समुप्पण्णसंसए, समुप्पण्णकोउहल्ले’ उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणामेव
अज्जसुहम्मे थेरे, तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ‘अज्जसुहम्मे थेरे’” तिकवुत्तो
‘आयाहिण-पयाहिणं’” करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अज्ज-

१. नगरी (ग) ।

२. क्वचिद् ‘राजगृहे गुणसिलके’ इति दृश्यते
स चापपाठ इति मन्यते (वृ) ।

३. तेणं कालेणं (ख); तेणं (घ) ।

४. निग्गया । कोणितो निग्गतो (ग); निग्गया ।
कोणिओ निग्गओ (घ) । वृत्तौ—परिषद्-
कूणिकराजादिको लोको निर्गता—निःसृता—
एवं व्याख्यातमस्ति । अनेन ‘परिसा
निग्गया’ इत्येव मूलपाठः संभाव्यते ।
‘कोणिओ निग्गओ’ इति व्याख्यांशो मूल-
पाठत्वेन परिवर्तितोभूत् । उपास रुदशासु
(१।१६) राजनिर्गमस्य स्वतंत्र सूत्रमपि
दृश्यते ।

५. विभक्तिरहितं पदम् । काश्यपो गोत्रेण इति
वृत्तिः ।

६. सं० पा०—सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स ।

७. °संसते (ख, ग) ।

८. औपपानिक (८३) सूत्रे क्रमभेदो विद्यते,
यथा—जायसड्ढे° उप्पण्णमड्ढे° संजाय-
सड्ढे° समुप्पण्णमड्ढे° ।

९. °कोउहल्ले (ख) ।

१०. अज्जसुहम्मं थेरं (वृपा) । औपपानिक
(८३) सूत्रे तथा रायपसेणइय (१०)
सूत्रेपि एतत्सदृशप्रकरणे ‘समणं भगवं
महावीरं’ इति द्वितीयान्तपदं लभ्यते ।
अत्र सप्तम्यन्तपदं लभ्यते । वृत्तिकृता
एतदेव प्रमाणीकृतम्—‘अज्जसुहम्मे थेरे’
इत्यत्र षष्ठ्यर्थे सप्तमी (वृ) ।

११. आताहिणपदाहिणं (ग), आयाहिणं (घ) ।

- सुहम्मस्स थेरस्स नच्चासण्णे नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणण्णं पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जइ' णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं 'आइगरेणं नित्थगरेणं सहसंबुद्धेणं' लोगनाहेणं लोगपईवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदाण्णं सरणदाण्णं चक्खुदाण्णं मग्गदाण्णं धम्मदाण्णं धम्मदेसाण्णं धम्मनायगेणं' धम्मवरचाउरंतचक्कवट्ठिणा' अप्पडिहयवरनाण-दंसणघरेणं जिणेणं जाणण्णं' बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं निण्णेणं तारण्णं मित्रमयलमरुयमणंनमक्खयमव्वावाहमणुणरावत्तयं" सासयं ठाणमुबगण्णं" [सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं ?] 'पंचमस्स अंगस्स' अयमद्वे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं 'भंते ! अंगस्स' नायाधम्मकहाणं के अद्वे पण्णत्ते ?
८. जंबु त्ति अज्जमुहम्मि थेरे अज्जजंबूनामं अणगारं एवं वयासी— एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव" संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो मुयक्खंघा पण्णत्ता, तं जहा—नायाणि य धम्मकहाओ य ॥
९. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव" संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो मुयक्खंघा पण्णत्ता, तं जहा—नायाणि य धम्मकहाओ य । पढमस्स णं भंते ! मुयक्खंघस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव" संपत्तेणं नायाणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?
१०. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव" संपत्तेणं नायाणं एगूणवीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

१. वदासी (ग, वृ) ।
 २. जति (ख, ग) ।
 ३. सइ० (ख); सयं० (घ) ।
 ४. X (ख, घ) ।
 ५. ०वट्ठीणं (ख, ग, घ) । अत्र प्रकरणसंगत्या तृतीयान्तं पदं युज्यते । समवायांगे (मू० २) इत्थमेव विद्यते । क्वचित् प्रयुक्तासु प्रस्तुत-सूत्रस्य प्रतिष्वपि तृतीयान्तं पदं प्राप्यते । तेन तदेव मूले स्वीकृतम् ।
 ६. जावएणं (ख, घ) ।
 ७. ० मरुत ० वत्तियं (ख, घ); ० मरुत ० (ग) ।
 ८. अत्र चिन्हांकितपाठः औपपत्तिकसूत्रेभ्यो भिन्नो वर्तते । एन० बी० वैद्य संपादित— 'नायाधम्मकहाओ' पाठे विज्ञेयानि

- अधिकानि लभ्यन्ते, किन्तु अस्माकं पाठ-शोधार्थं प्रयुक्तासु प्रतिषु तानि न सन्ति ।
 द्रष्टव्यं— औपपत्तिकसूत्रस्य तृतीयं परि-शिष्टम् ।
 ९. अष्टमे सूत्रे 'जाव संपत्तेणं' संक्षिप्त-पाठो लभ्यते । अत्र च 'सामयं ठाणमुबगण्णं' इति पाठोस्ति । अस्य अग्रिमपाठेन संगति-र्नास्ति, औपपत्तिक (२१) सूत्रे 'सिद्धिगइ-णामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं' इति पाठो विद्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।

१०. अंगस्स विवाहपण्णत्तीए (घ) ।

११. अंगस्स भंते ! (ख, घ) ।

१२, १३, १४, १५. ना० १।१।७ ।

संगहणी-गाहा

१. उक्खित्तणाए २. संघाडे, ३. णंडे ४. कुम्मे य ५. सेलगे ।
 ६. तुंवे य ७. रोहिणी ८. मल्ली, ९. मायंदी १०. 'चंदिमा इ' य ॥ १॥
 ११. दावह्वे १२. उदगणाए, १३. मंडुक्के' १४. तेयली वि य ।
 १५. नंदीफले १६. अवरकंका' १७. आइण्णे' १८. सुंसुमा इ य ॥ २॥
 १९. अवरं य पुंडरीए, नाए एगूणवीसमे' ॥

मेहस्स नगरपरिवारादि-वण्णग-पदं

११. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं नायाणं एगूणवीसं
 अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—उक्खित्तणाए जाव' पुंडरीए त्ति य । पढमस्स णं
 भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
 १२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे
 दाहिणड्ढभरहे रायगिहे नामं नयरे होत्था—वण्णओ' ॥
 १३. गुणसिलए चेतिए—वण्णओ' ॥
 १४. तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था—महताहिमवंत-महंत-मलय-
 मंदर-महिदसारे वण्णओ' ॥
 १५. तस्स णं सेणियस्स रण्णे नदा नामं देवी होत्था—सूमालपाणिपाया" वण्णओ" ॥
 १६. तस्स णं सेणियस्स पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था—अहीण"
 *पडिपुण्ण"-पंचिदियसरीरे लक्खण-वज्जण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाण-
 पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे० सुरूवे, साम-
 दंड-भेय-उवप्पयाणनीति-सुप्पउत्त-नय-विहण्णू", 'ईहा-वूह'"-मग्गण-गवेसण-
 अत्थसत्थ-मइविसारए, उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मयाए" पारिणामियाए—
 चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, सेणियस्स रण्णे बहूसु कज्जेसु य" [कारणेसु य ?]

१. चंदमाई (घ) ।
 २. मंडुक्के (ख) ।
 ३. अमर० (घ) ।
 ४. आतिण्णे (ख, ग) ।
 ५. ० वीसइमे (ग) ।
 ६. ना० १।१।७ ।
 ७. ना० १।१।१० ।
 ८. ओ० सू० १ ।
 ९. ओ० सू० २-१३ ।
 १०. ओ० सू० १४ ।
 ११. सुकुमाल० (घ) ।
 १२. ओ० सू० १५ ।

१३. सं० पा०—अहीण जाव सुरूवे ।
 १४. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'पडिपुण्ण' पदं व्याख्यातं
 नास्ति ।
 १५. विहिज्जा (ख) ।
 १६. ईहापूह (ग); ईहापोह (घ) ।
 १७. कम्मइयाए (ख, घ); कम्मियाए (ग) ।
 १८. अतो नन्तरं उपासकदशासु (१।१३) राय-
 पसेणइय (६७५) सूत्रे 'कारणेसु य' इति
 पाठो विद्यते । प्रस्तुतसूत्रस्य पंचमाध्ययने
 (६०) सूत्रेपि कज्जेसु य कारणेसु य इति
 पाठो लभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।

कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्जेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे
पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए
आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए, सव्वकज्जेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए
विइण्णवियारे रज्जधुरचित्तए यावि होत्था, सेणियस्स रण्णो रज्जं च रट्ठं च
कोसं च कोट्टागारं च बलं च वाहणं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव समुपेक्खमाणे-
समुपेक्खमाणे विहरइ ॥

१७. तस्स णं सेणियस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था—‘सुकुमाल-पाणिपाया
अहीण’-पंचेदियसरीरा लक्खण-वज्जण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण’-मुजाय-
सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमाकार-कंत-पियदंसणा सुरूवा करयल-‘परिमित-तिव-
लिय’ वलियमज्झा ‘कोमुइ-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण-सोमवयणा कुंडलुल्लि-
हिय-गंडलेहा’ सिंगारागार-चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-
सललिय-संलाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा
पडिरूवा, सेणियस्स रण्णो इट्ठा कंता पिया मणुण्णा नामधेज्जा वेसासिया
सम्मया बहुमया अणुमया भंडकरंडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविया
चेलपेडा इव सुसंपरिगिहीया रयणकरंडगो विव सुसारक्खिया, मा णं सीयं
मा णं उण्हं मा णं दंसा मा णं मसगा मा णं वाला मा णं चोरा मा णं वाइय-
पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइय’ विविहा रोगायंका फुसंतु त्ति कट्ठु सेणिएण रण्णा
सद्धि विउलाइं भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणी ० विहरइ ॥

धारिणीए सुमिणदंसण-पदं

१८. तए णं सा धारिणी देवी अण्णदा कदाइ तंसि तारिसगंसि—छक्कट्टग-लट्टमट्ट-

१. सं० पा०—होत्था जाव सेणियस्स रण्णो
इट्ठा जाव विहरइ ।
२. अहीण-पडिपुण्ण (ओ० सू० १५) ।
३. प्पमाण-पडिपुण्ण (ओ० सू० १५) ।
४. परिमिय-पसत्थ-तिवली (ओ० सू० १५) ।
५. कुंडलुल्लिहिय गंडलेहा कोमुइ-रयणियर...
सोमवयणा (ओ० सू० १५) ।
६. आगमेषु बहुषु स्थानेषु ‘मणुण्णा मणामा’ इति
पाठरचनादृश्यते । द्रष्टव्यम्—१।१४।४३ ।
क्वचिद् ‘वेज्जा’ इति पाठो लभ्यते ।
द्रष्टव्यम्—विवागसुयं १।१५६ । प्रस्तुतपाठः
वृत्त्या पूरितोस्ति, तत्र ‘नामधेज्जा’ इति पाठः

उल्लिखितोस्ति । विपाकश्रुतस्य संदर्भे
असावपि पाठः समीचीनः प्रतिभाति ।
प्रस्तुतागमे (१।१।१०६) एव ‘वेज्जे’ इति
पाठो लभ्यते । ओवाइय (१।१७) सूत्रे
शरीरवर्णनप्रसङ्गे ‘वेज्जं’ इति पाठोऽस्ति ।
एवं विभिन्नस्थलेषु पाठावलोकनेन एतत्
सुनिश्चितं भवति यत् लिपिकरणकाले पाठ-
परिवर्तनं जातम् । ‘वेज्ज वेज्ज’ इतिपाठा-
पेक्षया ‘नामधेज्जा’ इति पाठः अर्थदृष्ट्या
अधिकं संगच्छते ।

७. विभक्तिरहितं पदम् ।

संठिय-खंभुगय-पवरवर-सालभंजिय-उज्जलमणिकणगरयणथूभिय-विडंकजालद्व-
चंदनिज्जहंतरकणयालिचंदसालियाविभक्तिकलिए 'सरसच्छधाऊवल-वण्णरइए'
बाहिरओ दूमिय-घट्ट-मट्टे अंभितरओ पसत्त-सुविलिहिय'-चित्तकम्मे नाणा-
विह-पंचवण्ण-मणिरयण'-कोट्टिमतले पउमलया-फुल्लवल्लि-वरपुप्फजाइ-
उल्लोय-चित्तिय-तले वंदण'-वरकणगकलससुणिम्मिय-पडिपूजिय'-सरसपउम-
सोहंतदारभाए पयरग'-लंबंत-मणिमुत्तदाम-सुविरइयदारसोहे सुगंध'-वरकुसुम-
मउय-पम्हलसयणोवयार-मणहिययनिव्वुइयरे कप्पूर-लवंग-मलय-चंदण-
कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्जंत-सुरभि-मघमघंत'-गंधुद्वयाभिरामे'
सुगंधवर [गंध ?] गंधिए गंधवट्ठिभूए मणिकिरण-पणासियंधयारे किबहुणा ?
जुइगुणेहिं सुरवरविमाण-विडंबियवरघरए', तंसि तारिसंगसि सयणिज्जंसि—
सालिगणवट्टिए उभओ विव्वोयणे दुहओ उण्णए 'मज्जे णय गंभीरे'"
गंगापुलिणवालुय-उद्दालसालिए ओयविय-खोम-दुगुल्लपट्ट'-पडिच्छयणे अत्थरय-
मलय-नवतय-कुसत्त-लिव'-सीहकेसरपच्चुत्थिए" सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए
सुरम्मे आइणग-रुय'-वूर'-नवणीय-तुल्लफासे पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि
मुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी 'एगं महं सत्तुस्सेहं रययकूड-सन्निहं
नहयलंसि सोमं सोमागारं लीलायंतं जंभायमाणं मुहमतिगयं गयं पासित्ता
णं पडिबुद्धा'".

१. सरसच्छधाऊवल ° (घ); कंश्चित्पुनरेवं संभा- ६. गंध ° (ख घ) ।
वितमिदम्—सरसच्छधाऊवलरत्तरए (वृ) । १०. वेलंबवर ° (ग, घ) ।
२. सर्वासु प्रतिपु 'नुवि' इति पठ्यमानमस्ति । ११. मज्जेण य गंभीरे (वृपा) ।
वृत्तो 'धुचि-—पवित्र' इति व्याख्यातमस्ति । १२. खोमदुगुल ° (घ) ।
प्राचीनलिप्यां चकारवकारयोः प्रायः १३. लिव्व (ख, ग) ।
सादृश्येनात्र वर्णविपर्ययो जातः । वृत्तिकारेण १४. °पच्चुत्थिए (ख); °पच्चुत्थिए (क्व०) ।
तथैव व्याख्यातः । १५. रुय (ख) ।
३. मणिरतण (ग) । १६. पूर (ख) ।
४. चंदण (ख, घ); अत्र वकारस्थाने चकारो १७. वाचनान्तरे त्वेवं दृश्यते—जाव सीहं सुविणे
जातः । पासित्ता णं पडिबुद्धा । यावत्करणात् इदं
द्रष्टव्यम्—एगं च णं महंतं पंडुरं धवलं
५. पडिपूजिय (ख, ग, घ, वृपा) ।
६. पयरम्म (ग, घ); एकस्मिन् वृत्त्यादर्शं
'प्रतरकाणि', अपरस्मिंदश्च 'प्रवरकाणि'
इति संस्कृतरूपं लभ्यते ।
७. सुगंधि (वृ) ।
८. °मघित (ग); °मघंत (घ) ।

वाचनान्तरे त्वेवं दृश्यते—जाव सीहं सुविणे
पासित्ता णं पडिबुद्धा । यावत्करणात् इदं
द्रष्टव्यम्—एगं च णं महंतं पंडुरं धवलं
सेयं संखल-विमलदहि-वण्णगोलीर-फेण-
रयणिकरपगासं [अथवा—हार-रजत-
लीरसागर-दगरय-महासेल-पंडुरतरोरु-रम-
णिज्ज-वरिसणिज्जं] थिर-लट्ट-पउट्ट-पीवर-

सेनियस्स सुमिणनिवेदण-पदं

१६. तए णं सा धारिणी देवी अयमेयारूवं उरालं कल्लाणं सिवं धण्णं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणो हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पोइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया 'धाराहय-कलंबपुप्फं पिव समूससिय-रोमकूवा' तं सुमिणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलं-वियाए रायहंससरिसीए गईए जेणामेव से सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं ताहि इट्ठाहि कंताहि पियाहि मणुन्नाहि मणामाहि उरालाहि कल्लाणाहि सिवाहि धण्णाहि मंगल्लाहि सस्सिरीयाहि हिययगमणि-ज्जाहि हिययपल्हायणिज्जाहि मिय-महुर-रिभिय-गंभीर-सस्सिरीयाहि गिराहि संलवमाणी-संलवमाणी पडिबोहेइ, पडिबोहेत्ता सेणिएणं रण्णा अरुभणुण्णाया समाणी नाणा-मणिकणगरयणभत्तिचित्तंसि महासणंसि निसीयइ, निसिइत्ता आसत्था वीसत्था मुहासणवरगया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु सेणियं रायं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिगणवट्टिए जाव' नियगवयणमइवयंतं' गयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा—तं एयस्स णं देवाणुप्पिया ! उरालस्स'

मुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढाविडं वियमुहं परि-
कम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोहंतलडउट्ठं
रत्तुप्पलपत्तमउय-सुकुमालतालुनिल्लालियग्ग-
जीहं महगुलियभित्तं पिगलच्छं मूसागयपवर-
कणयतावियआवत्तायंत - वट्ठ - तडियविमल-
सरिसनयणं [अत्र 'वट्ठ' तड्' इत्येतावदेव
पुस्तके दृष्टं संभावनया तु 'वृत्ततदित' इति
व्याख्यातम् । पाठांतरेण तु—वट्ठ-पडिपुन्न-
पसत्थ-निड-महुगुलिय-पिगलच्छं] विसाल-
पीवरभमरोरु-पडिपुन्नविमलसंघं [अथवा—
पडिपुण्ण-सुजायसंघं] मिदुविसदसुहम-
लक्खण-पसत्थ-वित्थिन्न-केसरसडं [अथवा—
निम्मलवरकेसरवरं] असिय-सुनिम्मिय-
सुजाय अप्फोडियलंगूलं सोमं सोमागारं
लीलायंतं जंभायमाणं गगनतलाओ ओवयमाणं
सीहं अभिमुहं मुहे पविसमाणं पासित्ता
णं पडिबुद्धा (बु) ।

१. हट्ठतुट्ठा (ख); हट्ठातुट्ठा (घ); वृत्ती 'हृष्ट-
तुष्टा—अत्यर्थं तुष्टा अथवा हृष्टा—विस्मिता,
तुष्टा—तोषवती' इति व्याख्यातमस्ति किन्तु
औपपातिकाद्यागमेषु 'हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया'
इति संयुक्तः पाठो लभ्यते । अत्रापि तथैव
गृहीतः ।

२. °सिया (ख, ग, घ) ।

३. एतद् विशेषणं वृत्ती नास्ति व्याख्यातम् ।

४. ना० १।१।१८ ।

५. एष पाठो यत्र समर्पितोस्ति तत्र
(१।१।१८) 'मुहमतिगयं' इति पाठो विद्यते,
अत्रापि तथैव युज्यते किन्तु सर्वास्वपि
प्रतिषु 'नियगवयणमइवयंतं' इति पाठो
लभ्यते । नानयोः कश्चिदर्थभेदः तेनासावेव
पाठः स्वीकृतः ।

६. सं० पा०—उरालस्स क सि घ मं जाव
सुमिणस्स ।

●कल्लाणस्स सिवस्स धण्णस्स मंगल्लस्स सस्सिरीयस्स ° सुमिणस्स के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

सेजियस्स सुमिणमहिम-निबंसण-पवं

२०. तए णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-^१●चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण ° हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चुंचुमालइयतणू^२ ऊसवियरोमकूवे तं सुमिणं ओगिण्हइ^३, ओगिण्हित्ता ईहं पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गहं करेइ, करेत्ता धारिणिं देवि ताहि जाव^४ हिययपल्हायणिज्जाहिं मिय-महुर-रिभिय-गंभीर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं^५ अणवूहमाणे-अणवूहमाणे एवं वयासी—उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । सिवे धण्णे मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । आरोग-तुट्ठि-दीहाउय^६-कल्लाण-मंगल्लकारेणं णं तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे । अत्थलाभो ते^७ देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो ते देवाणुप्पिए ! रज्जलाभो ते देवाणुप्पिए ! भोग-सोक्खलाभो ते देवाणुप्पिए !

एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं^८ कुलपव्वयं कुलवडिसयं^९ कुलतिलकं कुलकित्तिकरं कुलवित्तिकरं^{१०} कुलनंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं जाव^{११} सुरुवं दारयं पयाहिसि । से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय^{१२}-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते^{१३} वित्थिण्ण-विपुल-वलवाहणे रज्जवई^{१४} राया भविस्सइ ।

तं उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे^{१५} । ●कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । सिवे धण्णे मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । °

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

२. चुंचु ° (ख, घ) ।

३. ओगिण्हति २ (ख) ।

४. ना० १।१।१६ ।

५. १।१।१६ सूत्रे अत्र 'गिराहिं' पाठो विद्यते ।

६. दीहाउ (ख) ।

७. X (ग, घ) सर्वत्र ।

८. कुलहेउं (बुपा) ।

९. ° वडंसयं (ख) ।

१०. नासोपाठः, वृत्तिसम्मतः, यथा—क्वचिद् वृत्तिकरमित्यपि दृश्यते ।

११. ओ० सू० १४३ ।

१२. विण्णाय (क, ख, घ) ।

१३. वित्तिकंते (क); वियक्कतं (ख) ।

१४. रज्जयती (क) ।

१५. सं० पा०—दिट्ठे जाव आरोग्य ।

आरोग-तुट्टि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्लकारणं तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्ठु भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेइ ।

धारिणीए सुमिणजागरिया-पदं

२१. ताए णं सा धारिणी देवी सेणिणं रण्णा एवं वुत्ता समाणी हट्ठुतुट्ठु-चित्तमाणंदिया जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयल-परिग्गहियं'°सिरसावत्तं मत्थाए° अंजलि कट्ठु एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया ! तहमेयं देवाणुप्पिया ! अवितहमेयं देवाणुप्पिया ! असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया ! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! इच्छियपडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! सच्चे णं एसमट्ठे जं तुम्हे वयह त्ति कट्ठु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सेणिणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिकणगरयण-भत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयसि सयणिज्जंसि निसीयइ, निसीइत्ता एवं वयासी— 'मा मे' से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुमिणे अण्णेहि पावसुमिणेहि पडिहम्मिहित्ति कट्ठु देवय-गुरुजणसंवद्धाहि' पसत्थाहि धम्मियाहि कहाहि सुमिणजागरियं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

सुमिणपाठग-निमंतण-पदं

२२. ताए णं से' सेणिए राया पच्चूसकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे' सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! बाहिरियं उवट्ठाणसालं अज्ज 'सविसेसं परमरम्मं'° गंधोदगसित्त-सुइय'-सम्मज्जिओवलित्तं पंचवण्ण-सरससुरभि'-मुक्क-पुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क - तुरुक्क-धूव-डज्जंत-सुरभि'-मघमघंत-गंधुद्धयाभिरामं सुगंधवर(गंध ?) गंधियं" गंधवट्ठिभूयं करेह, कारवेह य, एयमाणत्तियं" पच्चप्पिणह ॥

१. ना० १।१।१६ ।

व. सुइ (क); सुइयं (घ) ।

२. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव अंजलि ।

६. °सुरमिक्कुसुम (क) ।

३. इमे (ख) ।

१०. × (ख, ग, घ) ।

४. °संबुद्धाहि (ख) ।

११. सुयंघ० (क); १।१।७६ सूत्रे: पूरितपाठे

५. × (क, ख, ग) ।

'गंध' शब्दोविद्यते । औपपातिकस्य ५५

६. कोटुंबिय० (क) ।

सूत्रेपि स लभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।

७. सविसेस० (क); सविसेसे० (ख); सविसेस-

१२. एव० (क, ख, ग, घ) ।

परम० (ग) ।

२३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्टुट्टु-
 •चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया
 तमाणत्तियं० पच्चप्पिणंति ।।

२४. तए णं से सेणिए राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलु-
 म्मिलियम्मि अहपंडुरे^१ पभाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्ध-बंधुजीवग-
 पारावयचलणनयण - परहुयसुरत्तलोयण-जासुमणकुसुम-जलियजलण-तवणिज्ज-
 कलस-हिगुलयनिगर-रूवाइरेगरेहंत-सस्सिरीए दिवायरे अहकमेण उदिए तस्स
 'दिणकर-करपरंपरोयारपरद्धमि' अंधयारे बालातव^२ - कुकुमेण 'खचित्तेव्व'^३
 जीवलोण लोयण-विसयाणुयास^४-विगसंत-विसददंसियम्मि लोए कमलागर-
 संडबोहए उट्ठियम्मि मूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सयणिज्जाओ
 उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव अट्टणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्टणसालं
 अणुपविसइ ।

अणंगवायाम-जोग^५-वगण-वामहण-मल्लजुद्धकरणेहिं संते परिस्संते सयपागसह-
 स्सपागेहिं सुगंधवरतेल्लमादिएहिं पीणणिज्जेहिं दीवणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं
 मयणिज्जेहिं विहणिज्जेहिं सव्विदियगायपल्हायणिज्जेहिं अब्भंगेहिं अब्भंगिए
 समाणे, तेल्लचम्मंसि पडिपुण्ण-पाणिपाय-सुकुमालकोमलतलेहिं पुरिसेहिं छेएहिं
 दक्खेहिं पट्ठेहिं कुसलेहिं मेहावीहिं निउणेहिं निउणसिप्पोवगएहिं जियपरिस्स-
 मेहिं अब्भंगण-परिमदणुवल्लण-करणगुणनिम्माएहिं, अट्ठिसुहाए मंससुहाए
 तयामुहाए रोमसुहाए--चउव्विहाए संवाहणाए संवाहिए समाणे अवगयपरिस्समे
 नरिंदे अट्टणसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समत्तजाला-
 भिरामे^६ विचित्त-मणि-रयण-कोट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि नाणामणि-
 रयण-भत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहनिसण्णे सुहोदएहिं 'गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं'^७

१. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव पच्चप्पिणंति ।

२. अहपंडुरे (क, ख); अहा० (ग) ।

३. दिनकरपरंपरोयारपरद्धमि (क, ख, ग, घ,
 वृपा) ।

४. बालायव (वचिन्) ।

५. खइय व्व (ख); खचियंमि (घ) ।

६. ०तास (क, ख); ०वास (घ) ।

७. जोग (क, ख, ग, घ) । प्रयुक्तासु सर्वास्वपि
 प्रतिषु 'जोग' इति पाठो लभ्यते, किन्तु वृत्तौ

'योग्या' इति व्याख्यातमस्ति तथा औप-
 पातिक (६३) सूत्रे 'जोग' इति पाठोऽस्ति ।
 असौ च समीचीनः तेन मूले स्वीकृतः ।

८. अब्भंगिएहिं (ख) ।

९. समंत (वृ); समत्त, समुत्त (वृपा) ।

१०. पुप्फोदएहिं गंधोदएहिं (क, ख, ग, घ) ।
 वृत्तौ पूर्वं गंधोदकं ततश्च पुष्पोदकं व्याख्यात-
 मस्ति । औपपातिक (६३) सूत्रे पि एष
 एव क्रमो दृश्यते ।

सुद्धोदएहि य पुणो पुणो कल्लाणग'-पवर-मज्जणविहीए मज्जिण तत्थ कोउय-
सएहि बहुविहेहि कल्लाणग'-पवर-मज्जणावसाणे पम्हल-मुकुमाल-गंधकासाइ-
लूहियंगे अहय-सुमहग्घ-दूसरयण-सुसंवुए सरस-सुरभि-गोसीस-चंदणाणुलित्त-
गत्ते सुइमाला-वण्णगविलेवणे आविद्ध-मणिसुवण्णे कप्पिय-हारद्धहार-तिसरय-
पालंव-पलंवमाण-कडिमुत्त-मुकयसोहे पिणद्धगेवेज्ज-अंगुलैज्जग-ललियंगय-
ललियकयाभरणे' नाणामणि-कडग-तुडिय-थंभियभुए अहियरूवसस्सिरीए
कुंडलुज्जोइयाणणे मउड-दित्तसिरए हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे 'मुद्दिया-पिंगलं-
गुलीए पालंव-पलंवमाण-सुकय-पडउत्तरिज्जे' नाणामणिकणगरयण-विमल'-
महरिह-निउणोविय-मिसिमिसित'-विरइय-सुसिलिट्ट-विसिट्ट-लट्ट-संठिय-पसत्थ-
आविद्ध-वीरवलाए, किं वट्टणा ? कप्परुक्खए, चेव मुअलंकिय'-विभूसिए नरिदे
सकोरेंटमल्लदामेण' छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीइयंगे मंगल-जय-
सद्ध-कयालोए' अणेगगणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-
मंति-महामंति-गणग - दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमट्ट-नगर-निगम-सेट्टि-सेणावइ-
सत्थवाह-दूय-संधिवालसद्धि संपरिवुडे धवलमहामेहनिग्गए विव गहगण-दिप्पंत-
रिक्खतारागणाण मज्जे ससि व्व पियदंसणे नरवइ मज्जणघराओ पडिनिक्ख-
मइ, पडिनिक्खमिक्खा जेणेव' वाहिरिया उवट्टाणसाला, तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिसण्णे ॥

२५. तए णं से सेंणिए राया अप्पणो अदूरसामंते उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ट भद्दा-
सणाइ—सेयवत्थ-पच्चुत्थुयाइ' सिद्धत्थय'-मंगलोवयार-कय'-संतिकम्माइ—
रयावेइ, रयावेत्ता नाणामणिरतणमंडियं अहियपेच्छणिज्जरूवं महग्घवरपट्टणु-
ग्गयं सण्ह-बहुभत्तिसय-चित्तठाणं ईहामिय-उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-

१. कल्लाण (ग) ।

२. कल्लाण (क, ख, ग) ।

३. कयाभरणे (ग) ।

४. मुद्दिया-पिंगलंगुलीए पालंव-पलंवमाण-
मुकय-पडउत्तरिज्जे (क, ख, ग) ।

५. °कणगरयण (क, ग) ।

६. मिसिमिसित (क, घ) ।

७. अलंकिय (क, ख, घ) ।

८. सकोरिट ° (घ) ।

९. अत्र औपपातिकस्य पाठक्रमो अस्माद् भिन्नो

वर्तते । अर्थसमीक्षया सचाधिकः संगतोप्य-

स्ति—'कयालोए मज्जणघराओ पडिणि-
क्खमइ, पडिणिक्खमिक्खा अणेगगणनायग-
दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-
इव्व-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल-
सद्धि संपरिवुडे धवल-महामेहनिग्गए इव
गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्जे
ससिक्ख पियदंसणे नरवइ जेणेव (ओ० सू०
६३) ।

१०. पच्चत्थयाइ (क); पच्चत्थुयाइ (ग) ।

११. सिद्धत्थ (क, ख, ग) ।

१२. कत (ग) ।

किन्नर'-रुह-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं सुखचियवरकणग-
पवरपेरंतदेसभागं अंभितरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावेत्ता अत्थरग-मउअ-
मसूरगं-उत्थइयं धवलवत्थ-पच्चुत्थुयं' विसिट्ठअंगसुहफासयं' सुमउयं धारिणीए
देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी
— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठंगमहानिमित्तमुत्तत्थपाढए' विविहसत्थकुसले
सुमिणपाढए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एयमाणतियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ॥

२६. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया
जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियया' करयल्ल-परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं
मत्थए अंजलि कट्ठु एवं देवो ! तह त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति,
सेणियस्स रण्णो अंतिय!ओ पडिनिक्खमंति, ' रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेणं
जेणेव सुमिणपाढगगिहाणि तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सुमिणपाढए
सद्दावेति ॥

सेणियस्स सुमिणफल-पुच्छा-पदं

२७. तए णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहि सद्दाविया समाणा
हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियया ष्हाया कयबलिकम्मा"
•कय-कोउय-मंगल°-पायच्छित्ता अप्पमहरघाभरणालंकियसरीरा 'हरियालिय-
सिद्धत्थय-कयमुद्धाणा'" सएहि-सएहि गेहेहितो" पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता
रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेणं जेणेव सेणियस्स भवणवडेंसगदुवारे, तेणेव
उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एगयओ मिलंति", मिलित्ता सेणियस्स रण्णो
भवणवडेंसगदुवारेणं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाण-
साला, जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं
जएणं विजएणं वद्धावेति, सेणिएणं रण्णा अच्चिय-वंदिय-पूइय-माणिय'"-
सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति ॥

२८. तए णं से सेणिए राया जवणियंतरियं धारिणिं देवि ठवेइ, ठवेत्ता पुप्फफल-
पडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुमिणपाढए एवं वयासी—एवं खलु

१. किन्नर (ख, ग) ।

२. °मसूर (क, ख, ग, घ) ।

३. पच्चत्थुयं (क); पच्चत्थियं (घ) ।

४. विसिट्ठ° (क, ख, घ) ।

५. °मुत्तत्थधारए (ख) ।

६. ना० १।१।१६ ।

७. हयहियया (क) ।

८. °निक्खमंति, २ ता (ग, घ) ।

९. ना० १।१।१६ ।

१०. सं० पा० — कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता ।

११. सिद्धत्थय-हरियालिया-कयमंगलमुद्धाणा
(बृपा) ।

१२. गिहेहितो (क) ।

१३. मेलायंति (क); मिलायंति (ख, घ) ।

१४. माणिय-पूइय (क, ग); पूइय (ख, घ) ।

देवानुप्पिया ! धारिणी देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि जाव' महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुद्धा । तं एयस्स णं देवानुप्पिया ! उरालस्स जाव' सस्सिरीयस्स महासुमिणस्स के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ? ॥

सुमिणफल-कहण-पदं

२६. तए णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निमम्म हट्ठुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियया तं मुमिणं सम्मं 'ओगिण्हंति ओगिण्हित्ता' ईहं अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता अण्णमण्णेण सद्धि 'संचालेत्ति, संचालेत्ता' तस्स सुमिणस्स लद्धट्ठा 'पुच्छियट्ठा गहियट्ठा' विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा सेणियस्स रण्णो पुरओ सुमिणसत्थाइ उच्चारेमाणा-उच्चारेमाणा एवं वयासी—एवं खलु अम्हं सामी ! सुमिणसत्थंमि वायालंसं मुमिणा, तीसं महासुमिणा—वावत्तारि सब्वसुमिणा दिट्ठा । तत्थ णं सामी ! अरहंतमायरो वा चक्कवट्ठिमायरो वा अरहंतंसि वा चक्क-वट्ठिसि वा गढं वक्कममाणंसि एएसि तीसाए महासुमिणाणं इमे चोद्दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, तं जहा—

संगहणी-गाहा—

१. गय २. वसह' ३. सीह ४. अभिमेय ५. दाम ६. ससि ७. दिणयरं ८. भयं ९. कुंभं ।
१०. पउमसर ११. सागर १२. विमाणभवण १३. रयणुच्चय १४. सिहिं च ॥
वासुदेवमायरो वा वासुदेवंसि गढं वक्कममाणंसि एएसि चोद्दसण्हं महा-सुमिणाणं अण्णयरे सत्त महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ।
बलदेवमायरो वा बलदेवंसि गढं वक्कममाणंसि एएसि चोद्दसण्हं महासुमिणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ।
मंडलियमायरो वा मंडलियंसि गढं वक्कममाणंसि एएसि चोद्दसण्हं महा-सुमिणाणं अण्णयरं महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति ।
इमे य सामी ! धारिणीए देवीए एगे महासुमिणे दिट्ठे, तं उराले णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव' आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्लकारए णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे । 'अत्थलाभो सामी ! पुत्तलाभो सामी ! रज्जलाभो सामी ! भोगलाभो सामी ! सोक्खलाभो सामी' ! एवं

१. ना० १।१।१८, १९ ।

२, ३. ना० १।१।१९ ।

४. परिगिण्हंति २ (ख) ।

५. संवाएत्ति २ ता (क); बोलेत्ति २ (ख) ।

६. गहियट्ठा पुच्छियट्ठा (क, घ) ।

७. उसभ (क, ख) ।

८. ना० १।१।२० ।

९. अत्र विंशतितमं सूत्रमनुसृत्य पाठः स्वीकृतः,

खलु सामी ! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव' दारणं पयाहिइ । से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय'परिणयमित्ते जोव्वणग-मणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विपुल-बलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा ।

तं उराले णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव' आरोग-तुट्ठि'-दीहा-उय-कल्लाण-मंगल्लकारए णं सामी ! धारणीए देवीए सुमिणे० दिट्ठे त्ति कट्ठु भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेति ॥

सुमिणपाढग-विसज्जण-पदं

३०. तए णं से सेणिए राया तेसिं सुमिणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियए करयल'परिगगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु० एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया ! जाव' जं णं तुम्हे वयह त्ति कट्ठु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ', ते सुमिणपाढाए विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विपुलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति', दलइत्ता पडिविसज्जेइ ॥

सेणियस्स सुमिणपसंसा-पदं

३१. तए णं से सेणिए राया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव धारिणी देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता 'धारिणि देवि' एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! सुमिणसत्थंसि वायालीसं सुमिणा'तीसं महासुमिणा—वावत्तरिं सव्वसुमिणा दिट्ठा जाव' तं उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । सिवे धण्णे मंगल्ले सस्सिरीणं णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे । आरोग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्ल-कारए णं तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्ठु० भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेइ ॥

प्रतिषु चात्र पाठस्य क्रमविपर्ययो दृश्यते—
अत्यलाभो सामी ! सोक्खलाभो साम !
भोगलाभो सामी ! पुत्तलाभो रज्जलाभो
(क, ख, ग, घ) ।

१. ना० १।१।२० ।

२. विण्णाय (वृ); विण्णय (वृपा) ।

३. ना० १।१।२० ।

४. सं० पा०—आरोग-तुट्ठि जाव दिट्ठे ।

५. ना० १।१।१६ ।

६. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

७. ना० १।१।२१ ।

८. संपडिच्छइ (ग, घ) ।

९. दलइ (क) ।

१०. धारणी देवी (क); धारणीए देवीए (ख, ग),
धारणीं देवीं (घ) ।

११. सं० पा०—सुमिणा जाव भुज्जो २ अणु-
बूहति ।

१२. ना० १।१।२६ ।

धारिणीए दोहल-पर्व

३२. तए णं सा धारिणी देवी सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियया तं सुमिणं सम्मं पडिच्छति, जेणेव सए वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ण्हाया कयबलि-कम्मा' •कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी • विहरइ ॥

३३. तए णं तीसे धारिणीए देवीए दोमु मासेसु वीइक्कंतेसु तइए मामे वट्टमाणे तस्स गव्वभस्स दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउव्ववित्था --

धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ,
कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ,
कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे
णं तांसि माणुस्सए जम्मजीवियफले, जाओ णं मेहेसु अट्ठभुग्गएसु अट्ठभुज्जएसु
अट्ठभुण्णएसु अट्ठभुट्ठिएसु सगज्जिएसु सविज्जिएसु सफुसिएसु सथणिएसु'
घंतघोय-रुप्पपट्ट-अंक-संख-चंद-कुंद-सालिपिट्टरासिसमप्पभेसु चिकुर-हरियाल-
भेय-चंपग-सण-कोरेंट-सरिसव'-पउमरयसमप्पभेसु लक्खारस-मरस-रत्तकिमुय-
जासुमण-रत्तबंधुजीवग-जानिहिगुलय'-सरस - कुंकुम-उरव्वभससरुहिर - इंदगोवग-
समप्पभेसु'बरहिण-नील-गुलिय'-सुगचासपिच्छ-भिगपत्त-सासग'-नीलुप्पलनियर-
नवसिरीसकुसुम - नवसद्वलसमप्पभेसु जच्चंजण-भिगभेय-रिट्ठग-भमरावलि-
गवलगुलिय-कज्जलसमप्पभेसु फुरंत-विज्जुय-सगज्जिएसु वायवस-विपुलगगण-
चवलपरिसक्किरेसु, निम्मल-वरवारिधारा-परालिय-परयंडमारुयसमाहय-
समोत्थरंत-उवरिउवरितुरियवासं पवासिएसु,
धारा-पहकर-निवाय-निव्वाविय' मेइणितले हरियगगणकंचुए पल्लविय' पायव-

१. ना० १।१।१६ ।

२. सं० पा०—कयबलिकम्मा जाव विपुलाइं जाव विहरइ ॥

३. सथणिज्जेसु (क) ।

४. सरिसय (ख); सरिस (घ); वाचनान्तरे— 'सण' स्थाने 'कंचण' 'सरिसव' स्थाने 'सरिस' ति पठ्यते (ङ) ।

५. हिगुलिय (ग, घ) ।

६. इंदगोवसम० (क) ।

७. गुलिया (ख, घ) ।

८. सामग (क, ख); साम (वृथा) ।

९. निर्वापितशब्दाच्च सप्तम्येकवचनलोपो दृश्यः (वृ) ।

१०. इदं समस्तपदं स्यादपि तथापि वृत्तिकृता 'पल्लविय' पदं स्वतंत्ररूपेण व्याख्यातम्— इह सप्तमीबहुवचनलोपो दृश्यः, ततः पल्लवितेषु (वृ) ।

गणेषु बल्लिवियाणेषु' पसरिएसु उन्नएसु' सोभग्गमुवगएसु' वेभारगिरि-
प्पवाय-तड-कडगविमुक्केसु उज्झरेसु, तुरियपहाविय-पल्लोट्टफेणाउलं सकलुसं
जलं वहंतीसु गिरिनदीसु सज्जज्जुण-नीव-कुडय-कंदल-सिलिध'-कलिएसु
उववणेषु,

मेहरसिय - हट्टुट्टुचिट्ठिय - हरिसवसपमुक्ककंठकेकारवं मुयंतेसु बरहिणेषु'
उउवस'-मयजणिय-तरुणसहयरि-पणच्चिएसु नवसुरभि-सिलिध-कुडय-कंदल-
कलंब-गंधद्वणि मुयंतेसु उववणेषु ।

परहुय-रुय-रिभिय-संकुलेसु उद्दाइत-रत्तइंदगोवय-थोवय-कारुण्णविलविएसु
ओणयतणमंडिएसु दद्दुरपयंपिएसु संपिडिय-दरिय-भमर-महुयरिगहकर-
परिलित-मत्त-छप्पय-कुसुमासवलोल-महुर-गुंजंतदेसभाएसु उववणेषु ।

परिसामिय'-चंद-सूर-गहगण-पणट्टनक्खत्ततारगपहे' इंदाउह-बद्ध-चिधपट्टम्मि'
अंबरतले उड्डीणबलागपंति'-सोभंतमेहवंदे कारंडग-चक्कवाय-कलहंस-उस्सुयकरे
संपत्ते पाउसम्मि काले ण्हायाओ'' कयबलिकम्माओ कय-कोउय-मंगल-पायच्छि-
त्ताओ 'किं ते?' 'वरपायपत्तनेउर-मणिमेहल-हार-रइय-ओविय'-कडग-'खुड्डुय'-
विचित्तवरवलयथंभियभुयाओ कुंडलउज्जोवियाणणाओ'' रयणभूसियंगीओ,
नासा''-नीसासवाय-वोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिससंजुत्तं ह्यलालापेलवाइरेयं

१. ०सुं (क, ख); अन्यत्रापि यत्र क्वचित्
एतत् दृश्यते ।

२. पाठान्तरे - नगेषु पर्वतेषु नदेषु वा ह्रदेषु १३. उचिय (ग, घ) ।

३. सोहृगं (क) ।

४. सिलिद्ध (ख, ग) ।

५. बरिहणेषु (क) ।

६. उडुं (ख); उडुं (ग, घ) ।

७. परिक्कामिय (क, ग, घ, वृपा) ।

८. ०तारागपहे (क); ०तारागणपहे (ग) ।

९. ०पटंटसि (ख, घ) ।

१०. ०बलागवति (ख) ।

११. किभूता अम्मयाओ इत्याह—ण्हायाओ
इत्यादि (वृ) ।

१२. किन्नो (क); किन्ने (ग); किं रो (घ) । १६. नास (क) ।

किं तत् 'यत् करोति' इति शेषः । किं च

[भ० ६।१४४ सूत्रस्य पादटिप्पणं] असौ
पाठः व्याख्यादृष्ट्या सरलोस्ति ।

पदं व्याख्यातमस्ति—उचितानि योग्यानि
(वृ) । किन्तु अत्र 'ओविय' पदं समीचीन-
मस्ति । संभवतो लिपिशेषेण परिवर्तनं
जातम् । २४ सूत्रे 'ओविय' इति पाठो
लभ्यते । तत्र वृत्तिकारेण 'ओविय' स्ति
परिकर्मितानि इति' व्याख्या कृतास्ति । अत्र
वृत्तिकारेण 'उचिय' पाठो लब्धः तेन तथा
व्याख्यातः ।

१४. खड्डुय (घ); खड्डुय (घ) ।

१५. खड्डुय-एगावलि-कंठमुरज-तिसरय-वरवल-
य-हेमसुत्त-कुंडलुज्जोवियाणणाओ (वृपा) ।

धवलकणय-स्त्रचियंतकम्मं आगासफलिह-सरिसप्पभं अंसुयं पवर' परिहियाओ,
 दुगूलसुकुमालउत्तरिज्जाओ' 'सव्वोउय-सुरभिकुसुम-पवरमल्लसोभियसिराओ'
 कालागरुधूवधूवियाओ सिरि-समाणवेसाओ, सेयणय'-गंधहत्थिरयणं दुरुडाओ
 समाणीओ, सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं 'चंदप्पभवइरवेरुलिय-
 विमलदंड-संखकुंद-दगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगास-चउचामरवालवीजियं-
 गीओ' सेणिएणं रण्णा सद्धिहत्थिखंधवरगणं पिट्टओ-पिट्टओ समणुगच्छमाणीओ
 चाउरंगिणीए सेणाए-महया हयाणीएणं गयाणीएणं रहाणीएणं पायत्ताणीएणं-
 सव्विड्डीए' सव्वज्जुईए' •सव्ववलेणं सव्वसमुदाएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए
 सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडिय-सद्-सण्णि-
 णाएणं महया इड्डीए महया जुईए महया वलेणं महया समुदाएणं महया वरतु-
 डिय-जमगसमग-प्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-भल्लरि-खरमुहि-ट्टुक्क-मुरय-
 मुइंग-दुंदुहि° -निग्घोसनाइयरवेणं रायगिहं नयरं सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-
 चउम्मुह-महापहपहेमु आसित्तसित्त-सुइय-सम्मज्जिओवलित्तं' •पंचवण्ण-सरस-
 सुरभि-मुक्क-पुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्जंत-
 सुरभि-मघमघंत-गंधुद्धयाभिरामं° सुगंधवर (गंध?) गंधियं' गंधवट्ठिभूयं
 अवलोएमाणीओ नागरजणेणं अभिनंदिज्जमाणीओ' गुच्छ-लया-रुक्ख-गुम्म-
 वल्लि-गुच्छोच्छाइयं सुरम्मं वेभारगिरिकडग'-पायमूलं सव्वओ समंता
 'आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहलं' विणिंति" ।
 तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुगएसु जाव दोहलं विणिज्जामि" ॥

१. प्रवरमिहानुस्वारलोपोदृश्यः (वृ) । 'ग' प्रती 'पवर' इति पाठोऽपि लभ्यते ।
२. दुगुल्ल° (क) ।
३. पाठान्तरे—सर्वतुंकमुरभिकुसुमं: सुरचिताः प्रलम्बा शोभमानाः कान्ता चित्रा माला यासां तास्तथा । एवमन्यान्यपिपदानि बहुवचनानि संस्करणीयानि । इह वर्णके बृहत्तरो वाचनभेदः (वृ) ।
४. सेयणयं (ख) ।
५. अयमेवार्थो वाचनान्तरे इत्यमघोतः— सेयवरचाभराहि उद्धुवमाणीहि-उद्धुवमा-णीहि (वृ) ।
६. सव्व° (ख) ।

७. सं० पा०—सव्वज्जुईए जाव निग्घोसनाइय-रवेणं ।
८. सं० पा०—सामज्जिओवलित्तं जाव सुगंध-वरगंधियं ।
९. १।१।७६ सूत्रे, वृत्तेः पूरितपाठे 'गंध' शब्दो विद्यते । औपपत्तिकस्य ५५ सूत्रेऽपि स लभ्यते । अत्रापि तथैव गृह्यते ।
१०. अभिनंदिज्जमाणीओ २ (क) ।
११. वेभार° (ख, ग) ।
१२. दोहलं (क, घ) ।
१३. विणएंति (क); विणियति (घ) ।
१४. वृत्तिकारस्य सम्मुखे सम्मता आदर्शा आसन् तेषु 'समंता आहिंडज्ज' इत्येतावानेव पाठः आसीत् । अग्रिमस्य पाठस्य वृत्तिकृता

धारिणीए चिता-पदं

३४. तए णं सा धारिणी देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि असंपत्तदोहला असंपुण्णदोहला असम्माणियदोहला सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्ग-सरीरा पमइलदुब्बला किलंता ओमंथियवयण-नयणकमला पंडुइयमुही करयल-मलिय व्व चंपगमाला नित्तेया दीणविवणवयणा जहोचिय-पुप्फ-गंध-मल्लालं-कार-हारं' अणभिलसमाणी किङ्कारमणकिरियं' परिहावेमाणी दीणा दुम्मणा निराणंदा भूमिगयदिट्ठीया ओहयमणसंकप्पा' •करतलपलहत्थमुही अट्टज्झाणोव-गया° भियाइ ॥

पडिच्चारियाणं चिताकारणपुच्छा-पदं

३५. तए णं तीसे धारिणीए देवीए अंगपडिच्चारियाओ अंभितरियाओ दासचेडियाओ' धारिणि देवि ओलुग्गं' भियायमाणं' पासंति, पासित्ता एवं वयासी—किण्णं' तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव भियायसि ?
३६. तए णं सा धारिणी देवी ताहिं अंगपडिच्चारियाहिं अंभितरियाहिं दासचेडि-याहिं' य एवं वुत्ता समाणी ताओ दासचेडियाओ' नो आढाइ नो परियाणइ', 'अणाढायमाणी अपरियाणमाणी' तुसिणीया संचिट्ठइ' ॥
३७. तए णं ताओ अंगपडिच्चारियाओ अंभितरियाओ दासचेडियाओ धारिणि देवि दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—किण्णं तुमे' देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्ग-सरीरा जाव' भियायसि ?
३८. तए णं सा धारिणी देवी ताहिं अंगपडिच्चारियाहिं' अंभितरियाहिं दासचेडि-

वाचनान्तरत्वेन उल्लेखः कृतः, तस्य संगतत्वमपि प्रदर्शितम्—आहुँडज्ज ति आहिंडते । अनेन चैव मुक्तव्यतिकरमाजां सामान्येन स्त्रीणां प्रशंसाद्वारेणात्मविषयेऽकालमेघदोहदो धारिण्याः प्रादुरभूत् इत्युक्तम् । वाचनान्तरे तु—ओलोयमाणीओ २ आहिंडे-माणीओ २ दोहलं विणिज्जति । तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुगएसु जाव दोहलं विणिज्जामि । संगतत्वायं पाठ इति (ब) ।

१. मल्लालंकाराहारं (क, ख, ग) ।
 २. कीडा (क, ख, घ) ।
 ३. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव भियाइ ।
 ४. चेडीओ (क, ग) ।

५. ना० १।१।३४ ।

६. अत्र पाठसंक्षेपकरणे सुक्खं भुक्खं निम्मंसं इति विशेषणत्रयी न विवक्षितास्ति । एवमग्रेपि ।

७. किं नं (क); किं णं (ख); किण्हं (ग) ।

८. °चेडीहि (ख, ग) ।

९. चेडियाओ (ख, ग) ।

१०. परियाणाइ (ग); परियाणेति (घ) ।

११. °माणा अपरियाणमाणा (ख, घ) ।

१२. चिट्ठइ (क) ।

१३. तुमं (क, ग) ।

१४. ना० १।१।३४ ।

१५. °परियारियाहि (क) ।

याहिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ नो परियाणइ, अणाढाय-
माणी अपरियाणमाणी तुसिणीया संचिट्ठइ ॥

पडिचारियाणं सेणियस्स निवेदण-पदं

३६. तए णं ताओ अंगपडिचारियाओ अविभतरियाओ दासचेडियाओ धारिणीए
देवीए अणाढाइज्जमाणोओ अपरिजाणिज्जमाणोओ तहेव संभंताओ समाणीओ
धारिणीए देवीए अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमिता जेणेव सेणिए
राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं' *दसणहं सिरसावत्तं
मत्थए अंजलिं० कट्ठु जएणं विजएणं वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं
खलु सामी ! किंपि अज्ज धारिणी देवी ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव' अट्टज्झा-
णोवगया भियायइ ॥

सेणियस्स चित्ताकारणपुच्छा-पदं

४०. तए णं से सेणिए राया तासि अंगपडिचारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म
तहेव संभंते समाणे सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं' 'जेणेव धारिणी देवी तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता" धारिणिं देवि ओलुग्गं ओलुग्गसरीरं जाव' अट्टज्झा-
णोवगयं भियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिए !
ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया भियायसि ?

४१. तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ नो
परियाणइ जाव' तुसिणीया संचिट्ठइ ॥

४२. तए णं से सेणिए राया धारिणिं देवि दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—किण्णं
तुमं देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव' अट्टज्झाणोवगया भियायसि ?

४३. तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ता समाणी
नो आढाइ नो परियाणइ' तुसिणीया संचिट्ठइ ॥

४४. तए णं से सेणिए राया धारिणिं देवि सवह-सावियं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—
किण्णं' देवाणुप्पिए" ! अहमेयस्स अट्टस्स अणरिहे सवणयाए ? तो" णं तुमं
ममं अयमेयारूवं मणोमाणसियं दुक्खं रहस्सीकरेसि ॥

१. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव कट्ठु ।

६. ना० १।१।३६ ।

२. ना० १।१।३४ ।

७. ना० १।१।३४ ।

३. चेइयं (क, ख, ग, घ) ।

८. पू०—ना० १।१।३६ ।

४. जेणेव धारिणी देवी तेणेव पहारेत्थ गमणाए

९. किण्हकिण्णमिति वा पाठः (बृ) ।

तएणं सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी
तेणेव उवागच्छइ २ (ग, वृपा) ।

१०. तुमं देवाणु० (क, घ) । अत्र 'तुमं' अना-
वश्यको विद्यते ।

५. ना० १।१।३४ ।

११. ता (घ) ।

धारिणीए चिताकारणनिवेदन-पदं

४५. तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा सबह-साविया समाणी सेणियं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मम तस्स उरालस्स जाव' महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे' अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए—धण्णओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव' वेभारगिरि-कडग'-पायमूलं सब्वओ समंता आहिंढमाणीओ-आहिंढमाणीओ' दोहलं विणित्ति । तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव' दोहलं विणेज्जामि । 'तए णं अहं' सामी ! अयमेयारूवंसि अकालदोहलंसि अविणिज्जमाणंसि ओलुग्गा जाव' अट्टज्झाणोवगया भियामि ॥

सेणियस्स आसासण-पद

४६. तए णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म धारिणिं देवि एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा जाव' अट्टज्झाणोवगया भियाहि । अहं णं तह' करिस्सामि" जहा णं तुब्भं अयमेयारूवस्स अकाल-दोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ त्ति कट्ठु धारिणिं देवि इट्ठाहि कंताहि पियाहि मणुन्नाहि मणामाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासेत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे धारिणीए देवीए एयं अकालदोहलं बहूहिं आएहि य उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य—'चउव्विहाहिं बुद्धीहिं' अणुचितेमाणे-अणुचितेमाणे तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा 'ठिइं वा उप्पत्ति वा' अविदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव' भियायइ ॥

अभयकुमारस्स सेणियं पइ चिताकारणपुच्छा-पदं

४७. तयाणंतरं च णं अभए" कुमारे 'ण्हाए कयबलिकम्मे" •कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते° सव्वालंकारविभूसिए पायवंदए पहारेत्थ गमणाए ॥

१. ना० १।१।१६ ।

२. अतमेया° (ग) ।

३. ना० १।१।३३ ।

४. वेभार° (ख, ग) ।

५. द्रष्टव्य : १।१।३३ सूत्रस्यासौ पाठः ।

६. ना० १।१।३३ ।

७. तए णं हं (क); तते णं हं (ख); तेणा हं (घ) ।

८, ९. ना० १।१।३४ ।

१०. तहा (घ) ।

११. घत्तीहामि (वृ); करिस्सामि (वृपा) ।

१२. चउव्विहाए बुद्धीए (ग) ।

१३. उप्पत्ति वा ठिइं वा (क); उप्पत्ति वा (वृपा) ।

१४. ना० १।१।३४ ।

१५. अभय (क, ग, घ) ।

१६. सं० पा०—कयबलिकम्मे जाव सव्वालंकार° ।

४८. तए णं से अभए कुमारे" जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं ओहयमणसंकप्पं जाव' भियायमाणं पासइ, पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अण्णया' ममं सेणिए राया एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आढाइ परियाणइ सक्कारेइ सम्माणेइ [इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं वग्गूहिं ?] आलवइ संलवइ अद्दासणेणं उवनिमंतेइ मत्थयंसि अग्घाइ । इयाणिं ममं मेणिए राया नो आढाइ नो परियाणइ नो सक्कारेइ नो सम्माणेइ नो इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं वग्गूहिं आलवइ संलवइ नो अद्दासणेणं उवनिमंतेइ नो मत्थयंसि अग्घाइ, किं पि ओहयमणसंकप्पे जाव' भियायइ । तं भवियव्वं णं एत्थ कारणेणं । तं सेयं खलु ममं सेणियं रायं एयमट्ठं पुच्छित्तए— एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणामेव' सेणिए राया तेणामेव' उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं ताम्रो ! अण्णया ममं एज्जमाणं पासित्ता आढाइ परियाणहं "सक्कारेह सम्माणेह" आलवह संलवह अद्दासणेणं उवनिमंतेह "मत्थयंसि अग्घायह" । इयाणिं ताम्रो ! तुब्भे ममं नो आढाइ जाव 'नो मत्थयंसि अग्घायह" किं पि ओहयमणसंकप्पा जाव भियायह । तं भवियव्वं णं ताम्रो ! एत्थ कारणेणं । ताम्रो तुब्भे मम ताम्रो ! एयं कारणं अगूहमाणा" असंकमाणा अनिण्हवमाणा अपच्छाएमाणा जहाभूतमवितहमसंदिद्धं एयमट्ठं आइक्खह । तए णंहं तस्स कारणस्स अंतगमणं गमिस्सामि ॥

सेणियस्स चित्ताकारणनिवेदण-पदं

४९. तए णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे अभयं कुमारं एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! तव चुल्लमाउयाए" धारिणीदेवीए तस्स गब्भस्स दोसु मासेसु अइक्कंतेसु तइयमासे वट्टमाणे दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे

१. × (घ) ।

२. ना० १।१।३४ ।

३. अण्णया य (क); अण्णतो (घ) ।

४. आसणेणं (क, ख, ग) । नोयुक्तपुनरावर्तने 'अद्दासणेण' पाठोस्ति, अत्रापि तथैव युज्यते ।

५. अग्घायइ (क, ख, ग) ।

६. ना० १।१।३४ ।

७. जेणेव (घ) ।

८. तेणेव (घ) ।

९. सं० पा०—परियाणह जाव मत्थयंसि

१०. पू०—अस्य सूत्रस्य पूर्वभागः ।

११. आग्घायह आसणेणं उवनिमंतेह (क, घ) ।

१२. नो आसणेणं उवनिमंतेह (क, ख, ग, घ) ।

१३. अगूहमाणा (ख, ग, घ) ।

१४. तुल्ल० (ग) ।

दोहले पाउब्भवित्था—घण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव' वेभारगिरिकडग-पायमूलं सब्बओ समंता आहिंङमाणीओ-आहिंङ-माणीओ दोहलं विणिति । तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुगएसु जाव दोहलं विणिज्जामि ।

तए णं अहं पुत्ता धारिणीए देवीए तस्स अकालदोहलस्स बहूहिं आएहि य उवाएहि य जाव' उप्पत्ति अविदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव' भियामि, तुमं आगयं पि न याणामि । तं एतेणं कारणेणं अहं पुत्ता ! ओहयमणसंकप्पे जाव भियामि ॥

अभयस्स आसासण-पदं

५०. तए णं से अभए कुमारे सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियए सेणियं रायं एवं वयासी—मा णं तुब्भे ताओ ! ओहयमणसंकप्पा जाव' भियायह । अहं णं तहा करिस्सामि जहा णं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ त्ति कट्ठु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं" •कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं वग्गूहिं° समासासेइ ॥

५१. तए णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियए अभयं कुमारं सक्कारेइ समाणेइ, पडिविसज्जेइ ॥

अभयस्स देवाराहण-पदं

५२. तए णं से 'अभए कुमारे' 'सक्कारिए सम्माणिए' पडिविसज्जिए समाणे सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणामेव सए भवणे, तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे निसण्णे ॥

५३. तए णं तस्स अभयस्स" कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए" •चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु सक्का माणुस्सएणं उवाएणं मम

१. ना० १।१।३३ ।

२. ना० १।१।४६ ।

३. ना० १।१।३४ ।

४. ना० १।१।१६ ।

५. तोहय° (क) ।

६. ना० १।१।३४ ।

७. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव समासासेइ ।

८. ना० १।१।१६ ।

९. अभयकुमारे (ख, ग, घ) ।

१०. सक्कारिय ° (क); सक्कारिय सम्माणिय (ख, ग) ।

११. अभय (ख, ग, घ) ।

१२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

चुल्लमाउयाए^१ धारिणीए देवीए अकालदोहलमणोरहसंपत्ति करित्तए, नन्नत्थ^२ दिव्वेण उवाएणं । अत्थिणं मज्झ^३ सोहम्मकप्पवासी पुव्वसंगइए देवे महिड्डीए^४ *महज्जुइए महापरक्कमे महाजसे महब्बले महाणुभावे^५ महासोक्खे^६ । तं सेयं खलु मम पोसहसालाए पोसहियस्स वंभचारिस्स^७ उम्मुक्कमणिसुवण्णस्स ववगयमालावण्णगविलेवणस्स निक्खित्तसत्थमुसलस्स एगस्स अवीयस्स दब्भ-संथारोवगयस्स अट्टमभत्तं पगिण्हित्ता^८ पुव्वसंगइयं देवं मणसीकरेमाणस्स विहरित्तए ।

तए णं पुव्वसंगइए देवे मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं अकाल-मेहेसु दोहलं विणेहिति—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव पोसहसाला तेणामेव^९ उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता^{१०} दब्भसंथारणं दुरुहइ, दुरुहित्ता अट्टमभत्तं^{११} पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभचारो जाव पुव्वसंगइयं देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे^{१२} चिट्ठइ ॥

देवागमण-पदं

५४. तए णं तस्स अभयकुमारस्स अट्टमभत्ते परिणममाणे पुव्वसंगइयस्स देवस्स आसणं चलइ ।
५५. तए णं से पुव्वसंगइए सोहम्मकप्पवासी देवे आसणं चलयं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ ।
५६. तए णं तस्स पुव्वसंगइयस्स देवस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए^{१३} *चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे^{१४} समुप्पज्जित्था—एवं खलु मम पुव्वसंगइए जंबुदीवे दीवे भारहे वासे दाहिण्डुभरहे रायगिहे नयरे पोसहसालाए पोसहिए अभए नामं कुमारे अट्टमभत्तं पगिण्हित्ता णं ममं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ । तं सेयं खलु मम अभयस्स कुमारस्स अत्तिए पाउब्भवित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं

१. तुल्ल ° (ग) प्रायः सर्वत्र ।

२. ण अण्णत्थ (क) ।

३. मम (घ) ।

४. सं० पा०—महिड्डीए जाव महासोक्खे ।

५. महसोक्खे (क, ख) ।

६. बंभयारिस्स (घ) ।

७. परिगिण्हित्ता (क, घ) ।

८. तेणेव (ङ) ।

९. पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता (ख, घ), अत्र उपासकदशायाः प्रथमाध्ययने (६०) सूत्रे एवं पाठो विद्यते—दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता ° ।

१०. अट्टमं ° (ख) ।

११. × (क, ख, घ) ।

१२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

समोहण्णइ', समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं' निसिरइ, तं जहा—रयणाणं वइराणं' वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंकाणं अंजणाणं रययाणं' जायरूवाणं अंजणपुलगाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहावायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परिगिण्हइ, परिगिण्हित्ता अभयकुमारमणुकंपमाणे देवे 'पुव्वभवजणिय-नेह-पीइ-बहुमाणजायसोगे' तओ विमाणवरपुंडरीयाओ रयणुत्तमाओ 'धरणियल-गमण-तुरिय-संजणिय-गमणपयारो' 'वाघुण्णिय-विमल-कणग-पयरग-वडंसगमउडुक्क-डाडोवदंसणिज्जो अणेगमणि-कणगरयणपहकरपरिमंडिय-भत्तिचित्त-विणि-उत्तग-मणुगुणजणियहरिसो पिखोलमाणवरललियकुंडलुज्जलिय-वयणगुणजणिय-सोम्मरूवो' उदिओ विव कोमुदीनिसाए सणिच्छरंगारकुज्जलियमज्झभागत्थो नयणाणंदो सरयचंदो दिव्वोसहिपज्जलुज्जलियदंसणाभिरामो उदुलच्छिसमत्त-जायसोहो पइट्ठगंधुद्धयाभिरामो मेरू विव नगवरो विगुव्वियविचित्तवेसो दीवसमुदाणं असंखपरिमाणनामघेज्जाणं मज्झकारेणं वीइवयमाणो उज्जोयंतो' पभाए विमलाए जीवलोयं रायगिहं पुरवरं च अभयस्स पासं ओवयइ दिव्व-रूवधारी ।

५७. तए णं से देवे अंतलिव्वपडिवण्णे दसद्धवण्णाइं सखिखिणियाइं पवर वत्थाइं परिहिए' अभयं कुमारं एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया ! पुव्वसंगइए

१. समोहणति (क, ख, घ) ।

२. दंडं उड्डं (ग) ।

३. वयराणं (ग, घ) ।

४. रयणाणं (ग, घ) इत्यपपाठः ।

५. वाचनान्तरे—पूर्वभवजनितस्नेहप्रीतिबहुमान-जनितशोभः (वृ) ।

६. वाचनान्तरे—धरणीतलगमनसंजनितमनः प्रचारः (वृ) ।

७. ० सोमरूवो (ख, घ); वाचनान्तरे पुनरेवं विशेषणत्रयं दृश्यते—वाघुन्निय-विमलकणग-पयरग-वडंसगपकंपमाण - चललोल - ललिय-परिलंबमाण-नर-मगर-तुरग-मुहसय-विणिग्ग-ओगिण्ण - पवरमोत्तियविरायमाणमउडुक्क-डाडोवदरिसणिज्जो अणेगमणिकणगरयण-पहकरपरिमंडिय-भाग भत्तिचित्त-विणिउत्तग-मणुगुणजणिय-पेखोलमाणवरललियकुंडलुज्ज-

लियअहियआभरणजणियसोभे गयजलमल-विमलदंसणविरायमाणरूवे (वृ) ।

८. उज्जोयंतो (क, ग) ।

९. 'परिहिए' इतिपाठानन्तरं आदर्शेषु 'एवको ताव एसो गमो । अन्नो वि गमो' इत्युल्लेखोस्ति । तदनन्तरं द्वितीयोः गमः साक्षाल्लिखितोस्ति, तेनादर्शेषु गमद्वयस्य सम्मिश्रणं जातम् । वृत्तावपि अस्य सूचना लभ्यते, यथा—एकस्तावदेष गमः पाठोन्यो पि द्वितीयो गमो वाचनाविशेषः पुस्तकान्तरेषु दृश्यते । अस्योल्लेखस्यानुसारेण द्वितीयगमस्य पाठः इत्थं भवति—“तएणं से देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सीहाए उडुयाए जयणाए छेयाए दिव्वाए देवगईए जेणामेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे जेणामेव दाहिणइडभरहे

सोहम्मकप्पवासी देवे महिइढीए' जं णं तुमं पोसहसालाए अट्टमभत्तं पगिण्हित्ता' णं ममं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठसि, तं एस णं देवाणुप्पिया ! अहं इहं हव्वमागए । संदिसाहि' णं देवाणुप्पिया ! किं करेमि ? किं दलयामि' ? किं पयच्छामि ? किं वा ते हियइच्छियं' ?

५८. तए णं से अभए कुमारे तं पुव्वसंगइयं देवं अंतलिकखपडिवण्णं पासित्ता हट्ठतुट्ठे पोसहं पारेइ, पारेत्ता करयल' परिगहियं सिरसावत्तं मत्थए० अंजलि कट्ठु एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालदोहले पाउब्भूए—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव पुव्वगमेणं जाव' वेभारगिरिकडग-पायमूलं सव्वओ समंता आहिंइमाणीओ-आहिंइमाणीओ दोहलं विणिति । तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव' दोहलं विणेज्जामि—तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं अकालदोहलं विणेहि ॥

देवस्स अकालमेहविउव्वण-पवं

५९. तए णं से देवे अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाने हट्ठतुट्ठे अभयं कुमारं एवं वयासी—

तुमं णं देवाणुप्पिया ! सुनिव्वय-वीसत्थे अच्छाहि' । अहं णं तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं अकालदोहलं" विणेमि त्ति कट्ठु अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उत्तरपुरत्थिमे णं वेभार-पव्वए वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसरइ" जाव" दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता खिप्पा-मेव सगज्जियं सविज्जुयं सफुसियं पंचवण्णमेहनिणाओवसोहियं दिव्वं पाउससिंरि विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणामेव" अभए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

रायगिहे नयरे पोसहसाला अभयकुमारे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंत-लिकखपडिवन्ने दसद्ववण्णाइं सखिखिणियाइं पवर वत्थाइं परिहिए" ।

वृत्तिकारेण द्वितीयगमविषये एका सूचनापि दत्तास्ति—अयं द्वितीयो गमो जीवाभिगम-सूत्रवृत्त्यनुसारेण लिखितः (बृ) ।

१. महिइए (ख, घ); पू०—ना० १।१।५३ ।
२. संगिण्हित्ता (क, ख, ग) ।
३. संदिसहा (क); संदिसह (घ) ।

४. दलामि (ख, ग, घ) ।

५. हियं० (ग) ।

६. सं० पा०—करयल अंजलि ।

७, ८. ना० १।१।३३ ।

९. अत्थाहि (ग, घ) ।

१०. जावदोहलं (क) ।

११. निसरति (ख, ग, घ) ।

१२. ना० १।१।५६ ।

१३. जेणेव (ख, ग, घ) ।

अभयं कुमारं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए तव पियट्टयाए 'सगज्जिया सफुसिया सविज्जुया' दिव्वा पाउससिरी विउव्विया, तं विणेऊ णं देवाणुप्पिया ! तव चुल्लमाउया धारिणी देवी अयमेयारूवं अकालदोहलं ॥

धारिणीए दोहव-पूरण-पवं

६०. तए णं से अभए कुमारे तस्स पुव्वसंगइयस्स 'सोहम्मकप्पवासिस्स देवस्स' अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्टे सयाओ भवणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल' ●परिगहियं सिरसावत्तं मत्थए० अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु ताओ ! मम पुव्वसंगइएणं सोहम्मकप्पवासिणा देवेणं खिप्पामेव सगज्जिया सविज्जुया (सफुसिया ?) पंचवण्णमेहनिणाओवसोभिया दिव्वा पाउससिरी विउव्विया । तं विणेऊ णं मम चुल्लमाउया धारिणी देवी अकालदोहलं ॥
६१. तए णं से सेणिए राया अभयस्स कुमारस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्टे कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! रायगिहं नगरं सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु आसित्तसित्त-सुइय-संमज्जिओवलित्तं जाव' सुगंधवर [गंध ?] गंधियं गंधवट्ठिभूयं करेह य कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥
६२. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा' ●सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठुट्ट-चित्त-माणंदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया तमाण-त्तियं० पच्चप्पिणंति ॥
६३. तए णं से सेणिए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हय-गय-रह-पवरजोह'-कलियं चाउरंगिणि सेणं सन्नाहेह, सेयणयं च गंधहत्थिं परिकप्पेह । तेवि तहेव करेति जाव पच्च-प्पिणंति ॥
६४. तए णं से सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

१. सगज्जिय सफुसिय सविज्जुया (क, ख, ग, घ); पूर्वपंक्तौ 'सफुसियं' अंतिमं पदमस्ति अत्र च 'सविज्जुया' इत्यंतिमं पदम् । कथ-मसीविपर्ययो जातः इति न निश्चयपूर्वकं वक्तुं शक्यते ।
२. देवस्स सोहम्मकप्पवासिस्स (क, ख, ग, घ) ।
३. सं० पा०—करयल अंजलिं ।
४. हट्ठुट्टु (क, ग, घ) ।
५. ना० १।१।३३ ।
६. सं० पा०—कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पि-णंति ।
७. जोहपवर (क, ख, ग, घ) । अष्टमाध्यय-नरय १६१ सूत्रानुसारेण असौ पाठः परिवर्तितः ।
८. सेल्लं (क, ख, ग, घ) ।

धारिणिं देवि एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिण्ण ! सगज्जिया^१ *सविज्जुया सफुसिया दिव्वा^२ पाउससिरी पाउब्भूया । तं णं तुमं देवाणुप्पिण्ण ! एयं अकाल-दोहलं विणेहि ॥

६५. तए णं सा धारिणी देवी सेणिणं रण्णा एवं वुत्ता समाणी हट्टुट्टा जेणामेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता अतो अन्तेउरंसि ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता 'किं ते'^३ वरपायपत्तनेउर-मणिमेहल-हार-रइय-ओविय-कडग-खुड्डय-विचित्त वरवलयथंभियभुया जाव^४ 'आगास-फालिय-समप्पभं'^५ असुयं नियत्था^६, सेयणयं गंधहत्थिं दुरुढा समाणी अमय-महिय-फेणपुंज-सन्निगासाहिं सेयचामरवाल-वीयणीहिं वीइज्जमाणी-वीइज्जमाणी संपत्थिया ॥
६६. तए णं से सेणिणं राया ण्हाए कयवलिकम्मे^७ *कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते अणुप्पमहग्घाभरणालं किय^८ सरीरे हत्थिखंधवरगाए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामराहिं वीइज्जमाणे धारिणिं देवि पिट्ठो अणुगच्छइ ॥
६७. तए णं सा धारिणी देवी सेणिणं रण्णा हत्थिखंधवरगाएणं पिट्ठो-पिट्ठो समणुगम्ममाण-मग्गा ह्य-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सिद्धिं संपरिवुडा मह्या भड-चडगर-वंदपरिक्खित्ता सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए जाव^९ द्दुभिनिग्घोसनाइयरवेणं रायगिहे नयरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-^{१०} चउम्मुह^{११}—महापहपहेसु नागरजणेणं अभिनंदिज्जमाणी-अभिनंदिज्जमाणी जेणामेव 'वेभारगिरि-पव्वए'^{१२} तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेभारगिरि-कडग-तडपायमूले आरामेसु य 'उज्जाणेसु य'^{१३} काणणेसु य वणेसु य वणसंडेसु य 'ख्वेसु य'^{१४} 'गुच्छेसु य'^{१५} गुम्मेसु य लयासु य वल्लीसु य कंदरासु य दरीसु य चुंढीसु^{१६} य जूहेसु^{१७} य कच्छेसु य नदीसु य संगमेसु य 'विवरेसु य'^{१८} अच्छमाणी^{१९}

- | | |
|--|---|
| १. सं० पा०—सगज्जिया जाव पाउससिरी । | ६. वेभार ^० (ख, ग); विभार ^८ (घ) । |
| २. किं तत् 'यत् करोति' इति शेषः । | १०. × (ख, ग) । |
| ३. ना० १।१।३३ । | ११. × (ख) । |
| ४. सप्पभं ^० फालिय ^० (क); ^० फलिहसप्पभं (ख); ^० फालिय सप्पभं (ग); ^० फालिह-सप्पभं (घ); ^० फलिह-सरिसप्पभं (१।१।३३) | १२. गच्छेसु य (ख); × (ग) । |
| ५. नियच्छा (क, ग) । | १३. चुट्टिसु (क); वान्हिसु (ख); चोड्ढीसु (ग, घ) । |
| ६. सं० पा०—कयवलिकम्मे जाव सरीरे । | १४. दहेसु (ख, ग, घ, वृपा) । |
| ७. ना० १।१।३३ । | १५. × (क); विरयत्तेसु य (ख); विरयत्तेसु य (ग); विरयत्तेसु य (घ) । |
| ८. सं० पा०—चच्चर जाव महापहपहेसु । | १६. अत्थमाणी (ख) । |

य पेच्छमाणी य मज्जमाणी य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य पल्लवाणि य
गिण्हमाणी य माणेमाणी य अग्घायमाणी' य परिभुंजेमाणी' य परिभाएमाणी
य वेभारगिरिपायमूले 'दोहलं विणेमाणी' सव्वओ समंता आहिडइ ॥

६८. तए णं सा धारिणी देवी सम्माणियदोहला' विणीयदोहला संपुण्णदोहला'
संपत्तदोहला' जाया यावि होत्था ॥

६९. तए णं सा धारिणी देवी सेयणयगंधहत्थिं दुरूढा' समाणी सेणिएणं हत्थिखंध-
वरगएणं पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगम्ममाण-मग्गा हय-गय'-●रह-पवरजोहकलियाए
चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महया भड-चडगर-वंदपरिक्खत्ता
सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए जाव' दुंदुभिनिग्घोसनाइय०-रवेणं जेणेव रायगिहे नयरे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता रायगिहं नयरं मज्झमज्झेणं जेणामेव सए
भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता विउलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइ'
●पच्चणुभवमाणी० विहरइ ॥

अभएण देवस्स पडिविसज्जण-पदं

७०. तए णं से अभए कुमारे जेणामेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता
पुव्वसंगइयं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

७१. तए णं से देवे सगज्जियं [सविज्जुयं सफुसियं ?] पंचवण्णमेहोवसोहियं दिव्वं
पाउससिरिं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता जामेव दिसिं' पाउब्भूए तामेव दिसिं'
पडिगए ॥

धारिणीए गव्वभच्चरिया-पदं

७२. तए णं सा धारिणी देवी तंसि अकालदोहलंसि विणीयंसि सम्माणियदोहला
तस्स गव्वभस्स अणुकंपणट्ठाए" जयं चिट्ठइ जयं आसयइ" जयं सुवइ, आहारं पि

१. × (क); आग्घाएमाणी (ख) ।

२. परिभुंजमाणी (ख, ग) ।

३. विणेमाणी (क, ख, ग); दोहलं विणेमाणी
(घ); वृत्तिकारेणापि 'दोहलं' इति पाठो
मूलतया नैव व्याख्यातः ।

यथा—विणेमाणी ति—दोहलं विनयंती
(बृ) ।

४. १।१।३३ सूत्रानुसारेण 'सम्माणियदोहला'

इति पाठो युज्यते, यद्यपि प्रयुक्तादर्शेषु
नोपलभ्यते । क्वचित्प्रयुक्तेषु आदर्शेषु
लभ्यते ।

५. संपन्नदोहला (घ) ।

६. संपन्नदोहला (क, ख) ।

७. दुरूढा (क) ।

८. सं० पा०—हयगय जाव रवेणं ।

९. ना० १।१।३३ ।

१०. सं० पा०—भोगभोगाइं जाव विहरइ ।

११. दिसं (क, घ) ।

१२. दिसं (क, घ) ।

१३. °ट्टयाए (क) ।

१४. आसति (घ) ।

य णं आहारेमाणी—नाइतित्तं नाइकडुयं नाइकसायं नाइअंबिलं नाइमहुरं, जं तस्स गब्भस्स हियं मियं पत्थयं देसे य काले य आहारं आहारेमाणी, नाइचित्तं नाइसोयं नाइमोहं नाइभयं नाइपरित्तासं^१ ववगयचित्ता-सोय-मोह-भय-परित्तासा उदु^२-भज्जमाणं^३ सुहेहिं भोयण-च्छायण-गंध-मल्लालंकारेहिं तं^४ गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ॥

मेहस्स जम्म-वद्धावण-पदं

७३. तए णं सा धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धमाणं^५ य^६ राइदियाणं वीइक्कंताणं अद्धरत्तकालसमयंसि^७ सुकुमालपाणिपायं जाव^८ सव्वंगसुंदरं दारगं पयाया ॥

७४. तए णं ताम्रो अंगपडियारियाओ धारिणिं देवि नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव^९ सव्वंगसुंदरं दारगं पयायं पासंति, पासित्ता सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं^{१०} जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं जएणं विज-एणं वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडि-पुण्णाणं जाव सव्वंगसुंदरं दारगं पयाया । तं णं अम्हे देवाणुप्पियाणं पियं निवेएमो, पियं भे^{११} भवउ ॥

७५. तए णं से सेणिए राया तासि अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे ताम्रो अंगपडियारियाओ महुरेहिं वयणेहिं विउलेण य पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, मत्थयघोयाओ^{१२} करेइ, पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेइ, कप्पेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

मेहस्स जम्मुस्सवकरण-पदं

६७. तए णं से सेणिए राया [पच्चूसकालसमयंसि^{१३} ?] कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायगिहं नगरं आसिय^{१४}—
•सम्मज्जिओवलित्तं सिंघाडग-तिय - चउक्क-चच्चर - चउम्मुह-महापहपहेसु
आसित्त-सित्त-सुइ-सम्मट्ठ-रत्थंतरावण-वीहियं मंचाइमंचकलियं णाणाविहराग-

१. × (क, ख, ग) ।

२. उदु (ग) ।

३. भयमाण (क, ख, घ) ।

४. × (क) ।

५. अद्धु ° (ग) ।

६. × (ख, ग) ।

७. अद्धरत्त ° (ख) । ८. ओ० सू० १४३ । १४. सं० पा०—आसिय जाव परिणीयं ।

९. ना० १।१।७३ ।

१०. चेतियं (क, ग, घ) ।

११. ते (क, ख, ग, घ) ।

१२. मत्थाघोयाओ (क, ग) ।

१३. क्वचित् प्रयुक्तादर्शेषु कोष्ठकवर्तिपाठो लभ्यते तथा १।१।२२ सूत्रेपि विद्यते, तेनात्र स्वीकृतः ।

ऊसिय-ज्झय-पडागाइपडाग-मंडियं लाउल्लोइय-महियं गोसीस-सरस-रत्त-
चंदण-दहर-दिण्णपंचंगुलितलं उवचियचंदणकलसं चंदणघड-सुकय-तोरण-
पडिदुवारदेसभायं आसत्तोसत्तविउल-वट्ट-वग्घारिय-मल्लदाम-कलावं पंचवण्ण-
सरस-सुरभिमुक्क-पुप्फपूजोवयार-कलियं कालागुरु-पवर-कुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-
डज्झंत-मघमघेंत-गंधुद्धयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूयं नड-णटग-
जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहकहग-पवगं-लासग-आइक्खग-लंख-मंख- तूणइल्ल-
तुंववीणिय-अणेगतालायर °परिगीयं करेह, कारवेह य, चारगपरिसोहणं करेह,
करेत्ता माणुम्माणवद्धणं करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणहं ॥

७७. *तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्टुट्टु-चित्त-
माणंदिया पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया तमाण-
त्तियं ° पच्चप्पिणंति ॥

७८. तए णं से सेणिए राया अट्टारससेणि-प्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नगरे अग्गिभतरवाहिरिए उस्सुंक्कं
उक्करं अभडप्पवेसं अदंडिम-कुदंडिमं अधरिमं अधारणिज्जं अणुद्धयमुइगं
अमिलायमल्लदामं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं पमुइय-
पक्कीलियाभिरामं जहारिहं 'ठिइवडियं दसदेवसियं' करेह, कारवेह य,
एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

७९. तेवि तहेव करेंति, तहेव पच्चप्पिणंति ॥

८०. तए णं से सेणिए राया वाहिरियाए उवट्टाणसालाए सीहासणवरगए पुरत्थाभि-
मुहे सण्णिसण्णे 'सतिएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य दाएहि दलय-
माणे दलयमाणे' पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे एवं च णं विहरइ ॥

मेहस्स नामादिसक्कार (संस्कार) करण-पदं

८१. तए णं तस्स अम्मापियरो 'पढमे दिवसे ठितिपडियं' करेंति, वित्तिए दिवसे

१. चारगारसोहणं (क); चारगसोहणं (ख, घ);
चारगारपरिसोहणं (ग) एकस्मिन् हस्त-
लिखितवृत्त्यादर्शे 'चारगपरिशोधनं' इति
व्याख्यातमस्ति अपरस्मिंदश्च 'चारागारशोधनं'
इति लभ्यते ।

२. सं० पा०—पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति ।

३. उस्सुक्कं (क, ग, घ) ।

४. ठिइवडियं (वृ); वाचनान्तरे—दसदिवसियं
ठिइपडियं ।

५. × (ख, ग, घ) ।

६. सएहि साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य
दाएहि भागेहि ° (क); °जाएहि दाएहि
भागेहि ° (ख, घ), °दलमाणे २ (ग);
वाचनान्तरे—शतिकंश्च इत्यादि यागान्—
देवपूजाः, दायान्—दानानि, भागान्—लब्ध-
द्रव्यविभागान् इति (वृ) ।

७. जायकम्मं (क, ख, ग, घ, वृ.); निरयाव-
लियाओ १।१।६० 'ठितिपडियं च जहा
मेहस्स' इति संकेतितमस्ति, तस्याधारेणासौ
पाठः स्वीकृतः ।

जागरियं करेति, ततिए दिवसे चंदसूरदंसणियं' करेति, एवामेव 'निवत्ते असुइजायकम्मकरणे' संपत्ते बारसाहे' विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं बलं च बह्वे गणनायग-^०दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंविद्य-कोडुंविद्य-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्-नगर-निगम-सेट्टि-सेणावड-सत्थवाह-दूय-संधिवाले^० आमंतंति । तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयं-^०मंगल-पायच्छित्ता^० सव्वालंकारविभूमिया' महइमहालयंमि भोयणमंडवंमि तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं मित्त-नाइ-^०नियग-सयण-संबंधि-परियणेहि बलेण च बहूहि गणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंविद्य-कोडुंविद्य-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड - पीढमद् - नगर-निगम-सेट्टि-सेणावड-सत्थवाह-दूय-संधिवालेहि^० सद्धि आसाएमाणा 'विसाएमाणा परिभाएमाणा' परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरंति । जिमियभुत्तुत्तरागयावि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं बलं च बह्वे गणनायग जाव संधिवाले विपुलेण पुप्फ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एवं वयासी —

जम्हा णं अम्हं इमस्स दारगस्स गब्भत्थस्स चेव समाणस्स अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए, तं होऊ णं अम्हं दारए मेहे नामेणं । तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं गोणं गुणनिप्फणं नामधेज्जं करेति मेहे इ ॥

१. पाठान्तरे तु—प्रथमदिवसे स्थितिपतितां, तृतीये चन्द्रसूरदर्शिकां, षष्ठे जागरिकां (वृ) ।

२. निवत्ते सुइ^० (क, ख, ग, वृपा); निवत्ते असुइ^० (घ) । वृत्तिकृता 'निवृत्ते—अतिक्रान्ते अशुचीनां जातकम्मकरणे' इतिव्याख्यातम्, तेन तदनुसारी पाठः 'निवत्ते असुइजायकम्मकरणे' इत्येवंरूपः स्यात् । यत्र 'सुइजाय^०' इति पाठः सम्मतस्तत्रैव 'निवत्ते' इति पाठः सङ्गच्छेत ।

३. बारसाहदिवसे (क, ख, ग, घ) । वृत्तिकारेण—'बारसाहदिवसे' इति पाठः विकल्प-द्वयेन व्याख्यातः, यथा—बारसाहदिवसे ति—द्वादशाख्ये दिवसे इत्यर्थः । अथवा

द्वादशानामङ्गां समाहारो द्वादशाहं, तस्य दिवसो येन पूर्यते (वृ) । यद्यपि वृत्तिकारेण 'बारसाहदिवसे' इति पाठो व्याख्यातस्तथा-प्यस्माभिः 'बारसाहे' इतिपाठः स्वीकृतः, एतदर्थं द्रष्टव्यम्—ओवाइय (१४४) सूत्रस्य बारसाहे' पदस्य पादटिप्पणम् ।

४. सं० पा०—गणनायग जाव आमंतंति ।

५. सं० पा०—कयकोउय जाव सव्वालंकार-विभूमिया ।

६. सव्वालंकारविभूमिया (क, ख, ग) ।

७. सं० पा०—मित्त-नाइ-गणनायग जाव सद्धि ।

८. पडिलाहेमाणा (क); × (ग) ।

मेहस्स लालणपालण-पद

८२. तए णं से मेहे कुमारे पंचधाईपरिग्गहिए, [तं जहा—खीरधाईए मज्जणधाईए कीलावणधाईए मंडणधाईए अंकधाईए]' अण्णाहि य बहूहि—खुज्जाहि चिला-ईहि' 'वामणीहि वडभीहि बब्बरीहि बउसीहि' जोणियाहि पल्हवियाहि ईसिणि-याहि' थारुणिगियाहि' लासियाहि लउसियाहि दामिलीहि' सिंहलीहि' भारबीहि' पुलिदीहि' पक्कणीहि' बहलीहि' मुरुंडीहि' सबरीहि' पारसीहि'—नानादेसीहि' विदेसपरिमंडियाहि' इंगिय-चित्थिय-पत्थिय-वियाणियाहि' सदेस-नेवत्थ-गहिय-वेसाहि' निउणकुसलाहि' विणीयाहि', चेडियाचक्कवाल-वरिसघर-कंचुइज्ज-महयरग"-वद-परिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे" अंकाओ अंकं परि-भुज्जमाणे परिगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे" रम्मंसि मणिकोट्टिमत्तलंसि परंगिज्जमाणे" निव्वाय-निव्वाघायंसि गिरिकंदरमल्लीणे व चंपगपायवे सुहंसुहेणं वड्ढइ" ॥

८३. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुब्बेणं" नामकरणं च पजेमणं" च पचंकमणं च चोलोवणं च महया-महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं करंसु ॥

मेहस्स कलागहण-पद

८४. तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो साइरेगट्टवासजायगं चेव" सोहणंसि तिहि-करण-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणंति ॥

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते । ११. साहिज्जमाणे (ख, ग, घ) ।
२. चिलाइयाहि (क, ख, ग, घ, रायपसेणइयं १२. अतोअे वृत्ती पाठान्तरस्योल्लेखो विद्यते—
सू० ८०४) । उवनच्चिज्जमाणे २ उवगाइज्जमाणे २
३. पउसियाहि (ओ० सू० ७०) । उवलालिज्जमाणे २ उवगूहिज्जमाणे २
४. इसिणियाहि (क, ख, ग) । अवयासिज्जमाणे २ परिवदिज्जमाणे २
५. थारुणिगियाहि (ओ० सू० ७०) । परिचुंबिज्जमाणे २ । द्रष्टव्यम्—(ओवाइय-
सूत्रस्य परिसिष्टं पृ० १५१); रायपसेणइयं
सू० ८०४) । सूत्र ८०४ ।
६. मुरुंडीहि (ओ० सू० ७०); मुरुंडीहि (राय०
सू० ८०४) । १३. परिगिज्जमाणे २ (क, ग) ।
७. वामणि [वावणि (ख, ग)] वडभिबब्बरि- १४. वडति (घ) ।
बउसिजोणियपल्हविइसिणिथारुणिगिलासिय-
लउसियदमिलिसिंहलिआरिपुलिदिपक्कणि- १५. अणुपुब्बं (ख) ।
बहलिमुरुंडिसबरिपारसीहि (क, ख, ग, घ) । १६. एवं जेमणं च एवं चंकमणं च (ख, ग) ।
८. नानादेसी (क, ख, ग) । १७. अतोअे 'गम्मट्टमे वासे' इति पाठो विद्यते,
किन्तु एतत् पाठान्तरं प्रतीयते । 'साइरेगट्ट-
९. युक्त इति गम्यते (वृ) ।
१०. महत्तरंग (घ) ।

८५. तए णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुय-
पज्जवसाणाओ वावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ
सिक्खावेइ, तं जहा—

१. लेहं २. गणियं ३. रुवं ४. नट्टं ५. गोयं ६. वाइयं ७. सरगयं ८. पोक्खर-
गयं ९. समतालं १०. जूयं^१ ११. जणवायं १२. पासयं १३. अट्ठावयं
१४. पोरेकव्वं १५. दगमट्ठियं १६. अण्णविहिं १७. पाणविहिं १८.
वत्थविहिं १९. विलेवणविहिं २०. सयणविहिं २१. अज्जं २२. पहेलियं
२३. मागहियं २४. गाहं २५. गीइयं २६. सिलोयं २७. हिरणजुत्ति
२८. सुवण्णजुत्ति २९. चुण्णजुत्ति^२ ३०. आभरणविहिं ३१. तरुणोपडिकम्मं
३२. इत्थिलक्खणं ३३. पुरिसलक्खणं ३४. हयलक्खणं ३५. गयलक्खणं
३६. गोणलक्खणं ३७. कुक्कुडलक्खणं ३८. छत्तलक्खणं ३९. दंडलक्खणं
४०. असिलक्खणं ४१. मणिलक्खणं ४२. कागणिलक्खणं^३ ४३. वत्थुविज्जं^४
४४. खंधारमाणं^५ ४५. नगरमाणं^६ ४६. वूहं ४७. पडिवूहं ४८. चारं
४९. पडिचारं ५०. चक्कवूहं ५१. गरुलवूहं ५२. सगडवूहं ५३. जुद्धं ५४.
निजुद्धं ५५. जुद्धाड्जुद्धं ५६. अट्ठिजुद्धं ५७. मुट्ठिजुद्धं ५८. वाहुजुद्धं ५९.
लयाजुद्धं ६०. ईसत्थं ६१. छरुप्पवायं ६२. घणुवेयं^७ ६३. हिरणपागं
६४. सुवण्णपागं ६५. वट्ठेखेड्डं^८ ६६. सुत्तखेड्डं ६७. नालियाखेड्डं ६८. पत्तच्छेज्जं
६९. कडच्छेज्जं ७०. सज्जीवं ७१. निज्जीवं ७२. सउणरुतं ति ॥

८६. तए णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जव-
साणाओ वावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खा-
वेइ, सेहावेत्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेइ ॥

८७. तए णं मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो तं कलायरियं महुरेहिं वयणेहिं 'विउलेण
य'^९ वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेति^{१०} सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता
विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति, दलइत्ता पडिविसज्जेति ॥

८८. तए णं से मेहे कुमारे वावत्तरि-कलापंडिए नवंगसुत्तपडिवोहिए अट्ठारस-

वासजायगं, इति पाठस्यानन्तरमसौ पाठो
नावश्यकः प्रतिभाति । ओवाइय (१४५),
रायपसेणइय (८०५) सूत्रयोरपि स्वीकृतपाठः
उपलभ्यते ।

१. तूतं (ग) ।
२. तुण्णाजुत्ति (ख) ।
३. कागिणी० (ग) ।

४. वत्थविज्जं (क, ग) ।
५. ०मारणं (क) ।
६. ०मावणं (ख) ।
७. घणुवेयं (ख, ग) ।
८. वेट्ठेखेड्डं (क) ।
९. विउलेणं (ख, घ) ।
१०. हक्कारेति (ख) ।

विहिप्पगारदेसीभासाविसारए' गीयरई गंधव्वनट्टकुसले ह्यजोही गयजोही
रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अलंभोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाए
यावि होत्था ॥

मेहस्स पाणिग्गहण-पदं

८६. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं बावत्तरि-कलापंडियं
जाव' वियालचारि' जायं पासंति, पासित्ता अट्ठपासायवडिसए कारेंति—
अब्भुगयमूसिय' पहसिए विव मणि-कणग-रयण-भत्तिचित्ते वाउद्धय-विजय-
वेजयंती-पडाग-छत्ताइच्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमभिलंघमाणसिहरे जालंतर-
रयण' पंजरुम्मिलिए' व्व मणिकणगथूभियाए वियसिय-सयवत्त-पुंडरीए
तिलयरयणद्धचंदच्चिए' नाणामणिमयदामालंकिए अंतो बहिं च सण्हे
तवणिज्ज-रुइल'-वालुया-पत्थरे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासाईए' *दरिसणिज्जे
अभिरूवे ° पडिरूवे ।

एगं च णं महं भवणं कारेंति—अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्टियसालभंजियागं
अब्भुगयसुकयवइरवेइयातोरण'-वररइयसालभंजिय'-सुसिलिट्ठ - विसिट्ठ-लट्ठ-
संठिय-पसत्थ-वेरुलियखंभ-नाणामणिकणगरयण-खचियउज्जलं बहुसम-सुविभत्त-
निचियरमणिज्जभूमिभागं ईहामिय'-*उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-
किन्नर-रुइ-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय °-भत्तिचित्तं खंभुगयवयरवेइ-
यापरिगयाभिरामं विज्जाहर-जमल-जुयल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं''
रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं'' भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं'' सुहफासं
सस्सिरीयरूवं कंचणमणिरयणथूभियागं नाणाविह-पंचवण-घंटापडाग-परिमंडि-

१. अट्ठारसविह ° (ख); अट्ठारसदेसीभासा ° (वृपा); °चंदचित्ता (राय ° सू ° १३७) ।
(ओ ° सू ° १४८); अट्ठारसविहदेसिप्पगार- ८. रुइर (ग) ।
भासा ° (राय ° सू ° ८०६) । अष्टादश- ९. सं ° पा °—पासाईए जाव पडिरूवे ।
विधे: प्रकारा: प्रवृत्तिप्रकारा: अष्टादशभिर्वा १०. °वतिरवेतिया ° (ग); °वरवरइरवेइया
विविभिर्भेद: प्रचार: प्रवृत्तियंस्या (वृ) । (राय ° सू ° १७) ।
२. ना ° १।१'८८ । ११. सालभंजिया (क, ख, घ) ।
३. वियालचारी (क) । १२. सं ° पा °—ईहामिय जाव भत्तिचित्त ।
४. अत्र च द्वितीयाबहुवचनलोपो दृश्य: (वृ) । १३. °मीणं (क, ख, ग) ।
५. द्वितीयाबहुवचनलोपो दृश्य: (वृ) । १४. °मालिणीयं (ख) ।
६. पंजरुम्मिलिय (ख, ग) । १५. °लेस्सं (क, ग) ।
७. °यंदच्चिए (क, ख, ग); °चंदचित्ते

यग्गसिहरं घवल-मिरिचिकवयं विणिम्मुयंतं लाउल्लोइयमहियं जाव' गंधवट्ठिभूयं
पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं ॥

६०. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं सोहणंसि तिहि-करण-
नक्खत्त-मुहुत्तंसि सरिसियाणं सरिव्वयाणं सरित्तयाणं सरिसलावण्ण-रूव-
जोव्वण-गुणोव्वेयाणं सरिसएहिं तो रायकुलेहिं तो आणिल्लियाणं' पसाहणट्ठंग-
अविहववहु'-ओव्वयण-मंगलसुजंपिएहि अट्ठहि रायवरकन्नाहि सद्धि एगदिवसेणं
पाणिं गिण्हाविसु ॥

पीडवाण-पदं

६१. तए णं तस्स मेहस्स अम्मापियरो इमं एयारूवं पीडवाणं दलयंति—अट्ठ हिरण्ण-
कोडीओ अट्ठ सुवण्णकोडीओ गाहाणुसारेण भाणियव्वं जाव' पेसणकारियाओ,

१. ना० १।१।७६ ।

३. अविधव० (क) ।

२. आणतिल्लियाणं (क); आणियन्नियाणं (ग) ।

४. मूलपाठे यासां गाथानां समर्पणमस्ति ताः
वृत्त्यनुसारेणैमाः—

१. अट्ठहिरण्णसुवण्णय-कोडीओ मउड-कुंडलाहारा ।
अट्ठद्धहार-एक्कावलीओ मुत्तावली अट्ठ ॥
२. कणगावलि-रयणावलि-कडगजुगा तुडिय-खोम-जुगा ।
वडजुग-गट्ठजुगाइ-दुकुल्लजुगलाय अट्ठट्ठा ॥
३. सिरि-हिरि-धिइ-कित्तीओ बुद्धी लच्छी य होंति अट्ठट्ठा ।
नंदा भट्ठा य तला य ऋय-वय नाडाइं आमे य ॥
४. हत्थी जाणा जुग्गा, सीया तह संदमाणि-गिल्लीओ ।
थिल्ली य वियडजाणा, रह-गामा दास-दासीओ ॥
वाचनान्तरे—रथानन्तरमइथा हस्तिनइचापीयन्ते (घ) ।
५. किकर-कंचुइ-नयहर-वरिसघर-तिविह दीव-थाले य ।
पाई-थासण - पल्लग-कइविय - अवाएडय - अवक्का ॥
६. पावीडाभिसिय-करोडियाओ पल्लंकए य पडिसिज्जा ।
हंसाईहिं विसिट्ठा, आसण-भेया उ अट्ठट्ठा ॥
७. हंसे कोंचे गरुडे, उण्णय-पणए य दीह-भदे य ।
पक्खे मयरे पउमे, होइ दिसासोरिथ एक्कारे ॥
८. तेल्ले कोट्ट-समुग्गा, पत्ते चोए तगर एला य ।
हरियाले हिगुलए, मणोसिला सासवसमुग्गे ॥
९. खुज्जा-बिलाइ-वामणि-वडभीओ बव्वरि-वडसियाओ ।
ओणिय-पल्हवियाओ, इसिणीया थारुइणिया य ॥

अण्णं च विपुलं घण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-
सार-सावएज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं
भोत्तुं पकामं परिभाएउं^१ ॥

६२. तए णं से मेहे कुमारे एगमेगाए भारियाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ, जाव^२
एगमेगं पेसणकारिं दलयइ, अण्णं च विउलं घण-कणग^३-●रयण-मणि-मोत्तिय-
संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ
कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं ° परिभाएउं दलयइ ॥

६३. तए णं से मेहे कुमारे उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं वरतरुणि-
संपउत्तेहिं वत्तीसइबद्धएहिं^४ नाडएहिं 'उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे'^५ उवलालि-
ज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे [इट्ठे]^६ सद्-फरिस-रस-रूव-गंधे विउले माणुस्सए
कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

महावीरसमवसरण-पदं

६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुंवि चरमाणे गामाणु-
गामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए^७
●तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओगगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं
तवसा अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ ॥

१०. लासिय-लउसिय-दमिणी, सींहलि तह आरवी पुलिदी य ।

पक्कणि-बहलि-मुरुंडी, सबरीओ पारसीओ य ॥

११. छत्तधरा चेडीओ, चामरधर-तालयंटयधरीओ ।

सकरोडियाधरीओ, खीराई पंच घाईओ ॥

१२. अट्टंगमदियामो, उम्मद्दिग-ण्हविग-मंडियाओ य ।

वण्णय-चुण्णय-पीसिय-कीलाकारी य दवगारी ॥

१३. उत्थावियाओ तह णाडइल्ल-कोडुंबिणी-महाणमिणी ।

भंडारी अट्ठ (उक्क) धारिणि, पुप्फधरि पाणियधरी य ॥

१४. बलिकारि य सेज्जाकारियाओ अब्भंतरीओ बाहरिया ।

पडिहारी मालारी, पेसणकारीओ अट्टट्ट ॥

भगवती (११।१५६) सूत्रे क्वचित् केचित् पाठभेदा अपि लभ्यते ।

१. भाएउं (ख, ग) ।

२. ना० १।१।६१ ।

३. सं० पा०—घण-कणग जाव परिभाएउं ।

४. °बद्धेहिं (क); वत्तीसनिबद्धेहिं (ग) ।

५. उवणच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे (राय०
सू० ७१०) ।

६. एतत् पदं रायपसेणइय (७१०) सूत्रे
विद्यते, अत्रापि युज्यते ।

७. सं० पा०—चेइए जाव विहरइ ।

मेहस्स जिन्नासा-पदं

६५. तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग-^१●तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु०-
महया जणसद्दे इ वा जाव' बहवे उग्गा भोगा [०]' रायगिहस्स नगरस्स मज्झं-
मज्झेणं एगदिसि एगाभिमुहा निग्गच्छंति । इमं च णं मेहे कुमारे उप्पि
पासायवरगए फुट्टमाणेहि मुद्दंगमत्थाएहि जाव' माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे
रायमग्गं च 'ओलोएमाणे-ओलोएमाणे' एवं च णं विहरइ ॥
६६. तए णं से मेहे कुमारे ते बहवे उग्गे भोगे जाव' एगदिमाभिमुहे निग्गच्छमाणे
पासइ, पासित्ता कंचुइज्जपुरिसं' सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—किण्णं' भो
देवाणुप्पिया ! अज्ज रायगिहे नगरे इंदमहे इ वा खंदमहे इ वा एवं—
रुद्द-सिव-वेसमण-नाग-जक्ख-भूय-नई- तलाय-रुक्ख - चेइय - पव्वयमहे इ वा
उज्जाण-गिरिजत्ता इ वा ? जओ णं बहवे उग्गा भोगा जाव एगदिसि
एगाभिमुहा निग्गच्छंति ॥

कंचुइज्जपुरिसस्स निवेदण-पदं

६७. तए णं से कंचुइज्जपुरिसे समणस्स भगवओ महावीरस्स गहियागमणपवित्तीए
मेहं कुमारं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज रायगिहे नयरे इंदमहे
इ वा जाव' गिरिजत्ता इ वा जं णं एए उग्गा भोगा जाव' एगदिसि एगाभिमुहा
निग्गच्छंति । एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे"
इहमागए इह संपत्ते इह समोसडे इह चेव रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए
अहापडिरूवं" ●ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे०
विहरइ ॥

मेहस्स भगवओ समीवे गमण-पदं

६८. तए णं से मेहे कुमारे कंचुइज्जपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म
हट्ठतुट्ठे कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणु-
प्पिया ! चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्टवेह ।
तहत्ति उवणेंति ॥

१. सं० पा०—सिंघाडग जाव महया ।

२. ओ० सू० ५२ ।

३. जाव (क, ख, ग, घ) ।

४. ना० १।१।६३ ।

५. उवत्तोएमाणे २ (ग) ।

६. ओ० सू० ५२ ।

७. कंचुइ-पुरिसं (राय० सू० ६८८) ।

८. किं णं (क, ख) ।

९. ना० १।१।६६ ।

१०. ओ० सू० ५२ ।

११. तित्थंकरे (ख) ।

१२. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ ।

६६. तए णं से मेहे ण्हाए जाव' सव्वालंकारविभूसिए चाउग्घंटं आसरहं दुरुढे समाणे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भड-चडगरं-वंद-परियाल-संपरिवुडे रायगिहस्स नयरस्स मज्झमंज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स छत्ताइच्छत्तं पडागाइपडागं विज्जाहर-चारणे जंभए य देवे ओवय-माणे उप्पयमाणे पासइ, पासित्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ ।
[तं जहा—१. सचित्ताणं दव्वाणं विउसरण्याए' २. अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरण्याए ३. एगसाडियं-उत्तरासंगकरणेणं ४. चक्खुफासे अंजलिपग्ग-हेणं ५. मणसो एगत्तीकरणेणं]'^१ । जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे पंजलिउडे अभिमुहे विणएणं पज्जुवासइ ॥

धम्मवेसणा-पदं

१००. तए णं समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममाइक्खइ—
जह जीवा वज्झंति, मुच्चंति जहा य संकिलिस्संति । धम्मकहा भाणियव्वा जाव' परिसा पडिगया ॥

मेहस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं

१०१. तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—
सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।
पत्तियामि^२ णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।
रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।^३
अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।

१. ना० १।१।८१ ।

२. चडगर-रह-पहकर (राय० सू० ६८३) ।

३. वियोसरण्याए (वृपा) ।

४. एगल्लसडियं (क) ।

५. एगत्तिभावेणं (क, वृपा) ।

६. असी कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्याशः प्रतीयते ।

७. ओ० सू० ७१-७६ ।

८. सं० पा०—एवं पत्तियामि णं रोएमि णं ।

एयमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छिय-
मेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से 'जहेयं तुब्भे वयह' । नवरि'
देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि । तम्भो पच्छा मुंडे भवित्ता णं
अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामि ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि' ॥

मेहस्स अम्मापिऊणं निषेदण-पदं

१०२. तए णं से मेहे कुमारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदिता नमंसित्ता
जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटे
आसरहं दुरुहइ, महया भड-चडगर-पहकरेणं रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेणं
जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ
पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता अम्मापिऊणं पायवडणं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्म-
याओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे
धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ॥

१०३. तए णं तस्स मेहस्स अम्मापियरो एवं वयासी—धन्नोसि तुमं जाया ! संपुण्णो
सि तुमं जाया !

कयत्थो सि तुमं जाया ! कयलक्खणो सि तुमं जाया !

जन्नं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य ते
धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ॥

१०४. तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरो दोच्चंपि' एवं वयासी—एवं खलु अम्म-
याओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे
धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं
अब्भैणुण्णाए समाने समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं
अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥

धारिणीए सोगाकुलदसा-पदं

१०५. तए णं सा धारिणी देवी तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुण्णं अमणामं असुय-

जहेव तं तुब्भे वयह जं (क, ख, ग, घ);

असौ पाठः सर्वासु प्रतिषु विद्यते, तथाप्यत्र

'उपासकदशा' (७।३७) नुसारी पाठः स्वी-

कृत । आदर्शगतपाठापेक्षया तत्रस्थपाठः

समीचीनः प्रतिभाति । प्रस्तुतादर्शेषु

लिपिदोषेण परिवर्तनस्य संभावना स्यादिति
नासी स्वीकारोऽन्यथात्वं भजते ।

२. नवरं (घ) ।

३. × (क, ख, ग) ।

४. दोच्चंपि तच्चंपि (ख, घ) ।

पुव्वं फरुसं^१ गिरं सोच्चा निसम्म इमेणं एयारूवेणं मणोमाणसिएणं महया पुत्तदुक्खेणं अभिभूया समाणी सेयागयरोमकूवपगलंत-चलिणगाया^२ सोयभर-पवेवियंगी नित्तेया दीण-विमण-वयणा करयलमलिय व्व कमलमाला तक्खणओ-लुगदुब्बलसरीर-लावणसुन्न-निच्छाय-गयसिरीया पसिढिलभूसण-पडंतखुम्मिय-संचुणियधवलवलय^३-पब्भट्टउत्तरिज्जा सूमाल^४-विकिण्ण-केसहत्था मुच्छावस-नट्टचेय-गरुई^५ परसुनियत्त व्व चंपगलया निव्वत्तमहे व्व^६ इंदलट्ठी विमुक्क-संधिवंधणा कोट्टिमत्तलंसि सव्वंगेहि धसत्ति पडिया ॥

धारिणीए मेहस्स य परिसंवाद-पदं

१०६. तए णं सा धारिणी देवी ससंभमोवत्तियाए तुरियं कंचणभिगारमुहविणिग्गय-सीयलजलविमलधाराए परिसिंचमाण^७-निव्वावियगायलट्ठी उक्खेवय^८-तालविट-वीयणग-जणियवाएणं सफुसिएणं अंतेउर-परिजणेणं^९ आसासिया समाणी मुत्ता-वलि-सन्निगास-पवडंत^{१०}-अंसुधाराहि सिंचमाणी पओहरे, कलुण-विमण-दीणा रोयमाणी कंदमाणी तिप्पमाणी सोयमाणी विलवमाणी मेहं कुमारं एवं वयासी—

तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंतं पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे^{११} वेसा-सिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उत्सा-सिए^{१२} 'हियय-णंदि-जणणे'^{१३} 'उंवरपुप्फं व'^{१४} दुल्लहे सवणयाए, किमंगपुण पासण-याए ? नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए । तं भुंजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो । तओ पच्छा अम्हेहि कालगएहि परिणयवए वड्ढिय-कुलवंसतंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे^{१५} समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ॥

१. परुसं (क) ।
२. विलीण^० (क, ख, ग, घ) ।
३. ^०खुणिय^० (भ० ६।१६८) ।
४. मुकुमाल (क, घ) ।
५. गुरुइ (ख) ।
६. व (ख) ।
७. परिसिंचमाणा (घ) ।
८. उक्खेवण (क, ख) ।
९. परियणेणं (ख, ग, घ) ।
१०. पडंत (क) ।

११. धिज्जे (ग); धेज्जे (घ); पेज्जे (ओ० सू० ११७) ।
१२. ^०उत्सासए (क, ख, ग); वाचनान्तरे—जीविउत्सविए (वृ) ।
१३. हिययाणंदजणणे (क, ख, वृ); एकस्यां हस्त-लिखितवृत्तावपि 'हृदयनंदिजननः' इति लिखितमस्ति ।
१४. ^०पुप्फमिव (ख) ।
१५. निरवयक्खे (घ) ।

१०७. तए णं मे मेहे कुमारे अम्मापिऊहि एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरो एवं वयासी — तहेव णं तं अम्मो ! जहेव णं तुब्भे ममं एवं वयह — “तुमं सि णं जाया ! अम्मं एगे पुत्ते ‘इट्ठे कंते पिण् मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए वहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूण जीविय-उत्सासिए हियय-णंदि-जणणे उंवरपुप्फं व दुल्लहे सवणयाण, किमंग पुण पासणयाण ? नो खलु जाया ! अम्मं इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए । तं भुंजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो । तओ पच्छा, अम्मंहि कालगएहि परिणयवाण वडिडय-कुलवंसतंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे’ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिण् मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं० पव्वइस्ससि ।” एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सए भवे अघुवे अणितिए असासए वसणसओवद्वाभिभूते विज्जलयाचंचले अणिच्चे जलबुव्वुयसमाणे कुसगजलबिंदुसन्निभे संभब्भरागसरिमे सुविणदंसणोवमे सडण-पडण-विद्धंसण-धम्मं पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुंवि गमणाए के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहि अट्ठभणुणाए समाणे समणस्स’ भगवओ महावीरस्स अंतिण् मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं० पव्वइत्तए ॥

१०८. तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी — ‘इमाओ ते जाया ! सरिसियाओ सरित्तयाओ सरिव्वयाओ सरिसलावण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाओ सरिसेहितो रायकुलेहितो आणिल्लियाओ भारियाओ’ । तं भुंजाहि णं जाया ! एयाहि सद्धि विउले माणुस्सए कामभोगे । पच्छा भुत्तभोगे समणस्स’ भगवओ महावीरस्स अंतिण् मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं० पव्वइस्ससि ॥

१. सं० पा० — तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स जाव पव्वइस्ससि ।

२. निरवक्खे (क, ग); निरावेक्खे (ख); निरवयक्खे (घ) ।

३. अणिइए (क); अणितिते (ग); अणियए (घ, वृ) ।

४. सुविणयदंसं० (क), सुविणगदंसं० (घ) ।

५. सं० पा० — समणस्स जाव पव्वइत्तए ।

६. आणिल्लियाओ (ख); आणियल्लियाओ (ग, घ) ।

७. वाचनान्तरे मेघकुमारभार्यावर्णकमेवमुपलभ्यते—

इमाओ ते जाया विपुलकुलबालियाओ कलाकुसल-सव्वकाललालिय-सुहोइयाओ महवगुण-जुत्त-निउणविणओवयार-पंडिय-वियक्खणाओ मंजुलमियमहुरभणिय-हसिय-विपेक्खिय-गइ-विलास-वेट्ठियविसारयाओ अविक्कलकुलसील-सालिणीओ विसुद्ध कुलवंससंताणतंतुवद्धण-पगब्भउब्भवप्पभावणीओ मणोणुकूलहियय-इच्छियाओ अट्ठ तुज्ज गुणवल्लहाओ भज्जाओ उत्तमाओ णिच्चं भावाणुरत्तसव्वंगसुंदरीओ (वृ) ।

८. तओ पच्छा (क, घ); पच्छा तु (ख) ।

९. सं० पा० — समणस्स जाव पव्वइस्ससि ।

१०६. तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरं एवं वयासी—तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं णं तुभे ममं एवं वयह'—“इमाओ ते जाया ! सरिसियाओ” •सरित्तयाओ सरिव्वयाओ सरिसलावण-रूव-जोव्वण-गुणोव्वेयाओ सरिसेहिंतो रायकुलेहिंतो आणिल्लियाओ भारियाओ । तं भुंजाहि णं जाया ! एयाहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे । पच्छा भुत्तभोगे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं० पव्वइस्ससि ।”

एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सगा कामभोगा असुई वंतासवा पित्तासवा खेला-सवा सुक्कासवा सोणियासवा ‘दुरुय-उस्सास’-नीसासा दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णा उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणियसंभवा अधुवा अणितिया असासया सडण-पडण-विद्धंसणधम्मा पच्छा पुरं च णं अवस्स-विप्पजहणिज्जा ।

से के णं जाणइ अम्मयाओ ! •के पुंवि गमणाए के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुभेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं० पव्वइत्तइ ॥

११०. तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमे यं ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुवहू हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं । तं अणुहोही ताव जाया । विपुलं माणुस्सगं इड्ढिसक्कारसमुदयं । तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे

१. वयहा (ग) ।

२. सं० पा०—सरिसियाओ जाव समणस्स पव्वइस्ससि ।

३. असुइ (ख, घ); असुत्ती (ग), अतोअे सर्वा-स्वपि प्रतिषु ‘असासया’ इति पाठो विद्यते किन्तु वृत्ती नास्ति स व्याख्यातः तथा प्रस्तुतपाठक्रम एव ‘अणितिया असासया’ इति पाठो विद्यते, तेन नासावन्न गृहीतः ।

४. दुरुस्सास (क, ख, ग, घ) एतत् पदमत्र वृत्ती नास्ति व्याख्यातम् । अष्टमाध्ययनस्य १८० सूत्रस्य वृत्ती व्याख्यातमस्ति, यथा—दुरुपी विरूपी उच्छ्वासनिःश्वासी यस्य (वृ) । तदाधारेणास्ती पाठः स्वीकृतः ।

५. मुखमुञ्जोच्चारणार्थं ‘दुरुव’ शब्दस्य ‘दुरुय’ मिति रूपं कृतं संभाव्यते, अथवा दुरुपाथंवाची देशीशब्दोऽसौ स्यात् ? वृत्ती ‘दुरुय’ शब्दस्य ‘दुरुप’ इत्यर्थोऽस्ति कृतः ।

६. खेल जल्ल (घ) ।

७. अणियता (ग) ।

८. सं० पा०—अम्मयाओ जाव पव्वइत्तए ।

९. त (क, ख, ग) ।

१०. मोत्तिए य (ख) ।

११. तंतसार (घ) ।

१२. अणुहोहि ति (ख, घ); अणुहोहि (ग)

१३. ताव जाव (ख) ।

समणस्स भगवओ महावीरस्स' अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइस्ससि ॥

१११. तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरं' एवं वयासी- तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वयह—“इमे ते जाया ! अज्जग-पज्जग'-●पिउपज्जयागए सुवहू हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं । तं अणुहोही ताव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्ढि-सक्कारसमुदयं । तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइस्ससि ।”

एवं खलु अम्मयाओ ! हिरण्णे य जाव सावएज्जे य अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए' मच्चुसाहिए, अग्गिसामण्णे' ●चोरसामण्णे रायसामण्णे दाइयसामण्णे ° मच्चुसामण्णे सडण-पडण-विद्धंसणघम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहण्णिज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के' ●पुव्वि गमणाए के पच्छा ° गमणाए ? तं इच्छामि णं' ●अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुणाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अण-गारियं ° पव्वइत्तए ॥

११२. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो जाहे नो संचाएन्ति मेहं कुमारं वहाँहि विसयाणुलोमाहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्ण-वणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहि संजमभउव्वेयकारियाहि पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एवं वयासी-एस णं जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगतत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्ख-प्पहोणमग्गे, अहीव एगंतदिट्ठिए', खुरो इव एगंतधाराए', लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गंगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्धो इव भुयाहि दुत्तरे, तिक्खं कमियव्वं", गरुअं लंबेयव्वं, असिधारव्वयं" चरियव्वं । नो" खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिए वा

१. सं० पा०—महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि ।

२. अम्मापियरो (क, ख, ग, घ) ।

३. सं० पा०—पज्जग जाव तओ पच्छा अणु-भूयकल्लाणे पव्वइस्ससि ।

४. दाविय ° (क) ।

५. सं० पा०—अग्गिसामण्णे जाव मच्चुसामण्णे । १२. नो य (ख, घ) ।

६. सं० पा०—के जाव गमणाए ।

७. सं० पा०—तं इच्छामि णं जाव पव्वइत्तए ।

८. एगंतदिट्ठिए (घ) ।

९. एगधाराए (बु); एगंतधाराए (बूपा) ।

१०. चंकमियव्व (क) ।

११. असिधाराव्वयं (क, ग, घ) ।

उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वट्ठलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा वीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा ।

तुमं च णं जाया ! सुहसमुच्चिए^१ नो चेव णं दुहसमुच्चिए^२, नालं सीयं नालं उण्हं नालं खुहं नालं पिवासं नालं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइए^३ विविहे रोगा-यंके, उच्चावए गामकंटए, वावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्मं अहियासित्तए । भुंजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे । तअओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स^४ भगवअओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराअओ अणगारियं^५ पव्वइ-स्ससि ॥

११३. तए णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहि एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरं एवं वयासी—तहेव णं तं अम्मयाअओ^१ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वयह—“एस णं जाया ! निगंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे^२ केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धि-मग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगंत-दिट्ठिए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गंगा इव महानई पडिसीयगमणाए, महासमुद्धो इव भुयाहि दुत्तरे, तिक्खं कमियव्वं, गरुअं लंवेयव्वं, असिधारव्वयं चरियव्वं । नो खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निगंथाणं आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वट्ठलियाभत्ते वा गिलाण-भत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा वीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा ।

तुमं च णं जाया ! सुहसमुच्चिए नो चेव णं दुहसमुच्चिए, नालं सीयं नालं उण्हं नालं खुहं नालं पिवासं नालं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइए विविहे रोगा-यंके, उच्चावए गामकंटए वावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्मं अहियासित्तए । भुंजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे । तअओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवअओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराअओ अणगारियं^५ पव्वइस्ससि ।” एवं खलु अम्मयाअओ ! निगंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोग-पडिवद्धाणं परलोगनिप्पिवासाणं दुरणुच्चरे पाययजणस्स, नो चेव णं धीरस्स^६ । निच्छियववसियस्स एत्थ किं दुक्करं करणयाए ?

१. °समुच्चिए (क, ग) ।

२. °समुच्चिए (घ) ।

३. सन्निवाइय (ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—समणस्स जाव पव्वइस्ससि ।

५. अम्मताओ (ख, ग) ।

६. सं० पा०—अणुत्तरे पुणरवि तं चेव जाव तअओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवअओ जाव पव्वइस्ससि ।

७. धीरस्स (ख, ग) ।

तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुव्भेहिं अब्भणुणाए समाने समणस्स भगवओ'
 •महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं० पव्वइत्तए ॥

मेहस्स एगदिवसरज्ज-पव

११४. तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएन्ति व्हूहिं विमयाणुलोमाहि
 य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पणवणाहि य सणवणाहि य विणव-
 णाहि य आघवित्तए वा पणवित्तए वा मणवित्तए वा विणवित्तए वा ताहे
 अकामकाइं चेव मेहं कुमारं एवं वयासी—इच्छामो नाव जाया ! एगदिवसमवि
 ते रायसिंरि पासित्तए ॥
११५. तए णं से मेहे कुमारं अम्मापियरमणुवत्तमाणे तुमिणीए संचिट्ठइ ॥
११६. तए णं से सेणिए राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, मद्दावेत्ता एवं वयासी—
 खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महग्घं विउलं
 रायाभिसेयं उवट्ठवेह' ॥
११७. तए णं ते कोडुवियपुरिसा' •मेहस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महग्घं विउलं
 रायाभिसेयं० उवट्ठवेत्ति ॥
११८. तए णं से मेणिए राया व्हूहिं गणनायगेहि य जाव' संधिवालेहि य सद्धि
 संपरिवुडे मेहं कुमारं अट्ठसएणं सोवणियाणं कलमाणं एवं—रुप्पमयाणं
 कलसाणं मणिमयाणं कलसाणं सुवणरुप्पमयाणं कलसाणं, सुवणमणिमयाणं
 कलसाणं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं सुवणरुप्पमणिमयाणं कलसाणं, भोमेज्जाणं
 कलसाणं सव्वोदाएहिं सव्वमट्ठियाहिं सव्वपुप्फेहिं सव्वगंधेहिं सव्वमल्लेहिं
 सव्वोसहीहिं' सिद्धत्थएहि य सव्विड्डीए सव्वज्जुईए सव्वबलेणं जाव' दंडुभि-
 निग्घोस-णाइयरवेणं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता
 करयल'•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं० कट्ठु एवं वयासी—
 'जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा !
 जय-जय नंदा ! भद्दं ते' अजियं जिणाहि, जियं पालयाहि', जियमज्जे वसाहि,
 [अजियं जिणाहि सत्तुपक्खं, जियं च पालेहि मित्तपक्खं'],^{११} •इंदो इव देवाणं

१. सं० पा०—भगवओ जाव पव्वइत्तए ।

२. ०मणुयत्तमाणे (क) ।

३. उवट्ठावेह (ख) ।

४. सं० पा०—कोडुवियपुरिसा जाव ते वि
 त्तेव ।

५. ना० १।१।२४ ।

६. सव्वोसहि (क, ख); सव्वोसहि (ग, घ) ।

७. ना० १।१।३३ ।

८. सं० पा०—करयल जाव कट्ठु ।

९. जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा ! भद्दे,
 (ओ० सू० ६८) ।

१०. पालेहि (क) ।

११. सं० पा०—मित्तपक्खं जाव भरहो ।

१२. कोष्ठकर्वातिवाक्यद्वयं सर्वाषु प्रतिषु लभ्यते,

चमरो इव असुराणं धरणो इव नागाणं चंदो इव ताराणं ° भरहो इव मणुयाणं
 रायगिहस्स नगरस्स अन्नेसि च बहूणं गामागर-नगर'-●खेड-कब्बड-दोणमुह-
 मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संबाह-सण्णिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं
 भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-
 गीय-वाइय - तंती-तल - ताल-तुडिय - घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं
 भोगभोगाइं भुंजमाणे ° विहराहि त्ति कट्टु जय-जय-सद्दं पउंजति ॥

११६. तए णं से मेहे राया जाए—महयाहिमबंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव'
 रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥

१२०. तए णं तस्स मेहस्स रण्णो [तं मेहं रायं ?] अम्मापियरो एवं वयासी—भण
 जाया ! किं दलयामो ? किं पयच्छामो ? किं वा ते हियइच्छिणं सामत्थे ?

मेहस्स निक्खमणपाओग-उवगरण-पदं

१२१. तए णं से मेहे राया' अम्मापियरो एवं वयासी—इच्छामि णं अम्मयाओ !
 कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहं' च आणियं, कासवयं च सदावियं' ॥

१२२. तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी- गच्छह
 णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सिरिधराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय दोहि सय-
 सहस्सेहि कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहं' च उवणेह, सयसहस्सेणं कासवयं
 सदावेह ॥

१२३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्टुट्टा सिरि-
 धराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय कुत्तियावणाओ दोहि सयसहस्सेहि रयहरणं
 पडिग्गहं च उवणेति, सयसहस्सेणं कासवयं सदावेति ॥

कासवेणं मेहस्स अगगकेसकप्पण-पदं

१२४. तए णं से कासवए तेहि कोडुंबियपुरिसेहि सदाविए समाणे हट्टुट्ट-चित्तमाणंदिए
 जाव' हरिसवसविसप्पमाणहियए ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-

तथापि पुनरुक्तं व्याख्यारूपं प्रतीयते ।
 वृत्तावपि नैतद् व्याख्यानमस्ति । 'ओवाइय'
 (६८) सूत्रे पि नैतल्लभ्यते । तेन नास्माभि-
 र्मूलपाठरूपेण स्वीकृतः ।

१. सं० पा०—नगर जाव सण्णिवेसाणं आहे-
 वच्चं जाव विहराहि ।

२. ओ० सू० १४ ।

३. दलामो (क) ।

४. हिययइच्छिणं (क); हियपयच्छिणं (ख) ।

५. कुमारे (क, ख, ग) ।

६. पडिग्गहणं (ख) ।

७. सदाविउं (क); सदावेउं(ख, ग); सदावित्तए
 (घ); वृत्तौ—'शब्दितं—आकारितम्' इति
 व्याख्यातं विद्यते । 'आनीतमिच्छामि' तथैव
 'शब्दितमिच्छामि' इति उपयुक्तोस्ति सम्बन्धः,
 तस्मात् 'सदावियं' इति वृत्त्यनुसारी पाठः
 स्वीकृतः ।

८. पडिग्गहणं (ख) ।

९. ना० १।१।१६ ।

पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं पवर' परिहिण् अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव सेणिण् राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं वयासी—संदिसह णं देवाणुप्पिया ! जं मए करणिज्जं ॥

१२५. तए णं से सेणिण् राया कासवयं एवं वयासी—गच्छाहि णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुरभिणा गंधोदणं निक्के' हत्थपाए पक्खालेहि, सेयाए चउप्फलाए' पोत्तीए मुहं बंधित्ता मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेहि ॥

१२६. तए णं से कासवाए सेणिण् रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठुत्तु-चित्तमाणंदिण् जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियाए' •करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं० पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सुरभिणा गंधोदणं [निक्के ?] हत्थपाए पक्खालेइ, पक्खालेत्ता मुद्धवत्थेणं मुहं बंधइ, बंधित्ता परेणं जत्तेणं मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे निक्खमण-पाउग्गे अग्गकेसे कप्पेति ॥

१२७. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया महरिहेणं हंसलक्खणेणं पडसाडाएणं अग्गकेसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुरभिणा गंधोदणं पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चाओ दलयइ, दलयत्ता सेयाए पोत्तीए वंधइ, वंधित्ता रयणसमुगयंसि पक्खवइ, मंजूसाए पक्खवइ, हार-वारिधार'-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइं असूइं विणिम्मयमाणी-विणिम्मयमाणी, रोयमाणी-रोयमाणी, कंदमाणी-कंदमाणी, विलवमाणी-विलवमाणी एवं वयासी—एस णं अहं मेहस्स कुमारस्स अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य—अपच्छिमे दरिसणे भविस्सइ त्ति कट्ठु उस्सीसामूले ठवेइ ॥

मेहस्स अलंकरण-पदं

१२८. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो उत्तरावक्कमणं सोहासणं रयावेंति, मेहं कुमारं दोच्चं पि तच्चं पि सेयापीएहि' कलसेहि ण्हावेंति, ण्हावेत्ता पम्हलसूमालाए गंधकासाइयाए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं

१. विभक्तिरहितं पदम् ।

२. निक्के ति सर्वथा विगतमलान् (वृ) ।

३. चउप्फलाए (क्व०) अट्टपडलाए (भ० ६।१८६) ।

४. ना० १।१।१६ ।

५. सं० पा०—हियाए जाव पडिसुणेइ ।

६. वारिधारा (ग) ।

७. सेयाणीएहि (ग, घ); अत्र लिङ्करणे 'पकारो' णकाररूपेण परिवर्तितोभूत् अथवा 'सैकानीतैः' इत्यर्थस्य परिकल्पनायां 'सेयाणी-एहि' इत्यपि पाठः शुद्धस्यात् ।

गायाइं अणुलिपंति, अणुलिपित्ता नासा-नीसासवाय-वोज्झं' •वरणगरपट्टणु-
गयं कुसलणरपसंसितं अस्सलालापेलवं छेयायरियकणगखचियंतकम्मं° हंस-
लक्खणं पडसाडगं नियंसंति, हारं पिणद्धेति, अद्धहारं पिणद्धेति, एवं—एगावलि
मुत्तावलि कणगावलि रयणावलि पालंबं पायपलंबं कडगाइं' तुडिगाइं'
केऊराइं अंगयाइं दसमुद्धियाणंतयं कडिसुत्तयं कुंडलाइं चूडामणिं रयणुक्कडं
मउडं—पिणद्धेति, पिणद्धेत्ता' गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमेणं'—चउव्विहेणं
मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेंति ॥

मेहस्स अभिनिक्खमणमहुस्सव-पदं

१२६. तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठं लीलट्ठिय-सालभजियागं
ईहामिय-उसभ-तुरय-नर-मगर - विहग-वालग-किन्नर-रुह - सरभ-चमर-कुंजर-
वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं घंटावलि-महुर-मणहरसरं सुभ-कंत-दरिसणिज्जं
निउणोविय-मिसिमिसैंत-मणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं अब्भुगय-वइरवेइया-
परिगयाभिरामं विज्जाहरजमल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं' रूवग-
सहस्सकलियं भिसमाणं' भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेस्सं सुहफासं सस्सिरीयरूवं
सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवट्टवेह ॥
१३०. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा हट्टुट्टा अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठं जाव' सीयं
उवट्टवेंति ॥
१३१. तए णं से मेहे कुमारे सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे
सण्णिसण्णे ॥
१३२. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाया कयवलिकम्मा जाव' अप्पमहग्घा-

१. सं० ११०—नासानीसासवायवोज्झं जाव हंस-
लक्खण ।
२. एतत् पदं वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।
३. × (ख, ग) ।
४. पिणद्धेत्ता दिव्वं सुमणदामं पिणद्धति,
दहरमलयमुगंघिए गंधे पिणद्धेति । तए णं
तं मेहं कुमारं (क, ख, ग); 'घ' प्रति विहाय
सर्वांमु प्रतिपु पाठान्तररूपेणोद्धृतः पाठो
लभ्यते । 'घ' प्रती एवं पाठोस्ति—'दिव्वं
सुमणदामं पिणद्धेति । तते णं तं मेहं कुमारं
गंथिम०' । किन्तु भगवत्यां (६१२३)

- आचारचूलायां (१५१२८) च असौ पाठः
अतीव व्यवस्थितरूपेण प्राप्तोस्ति, अतः
तयोराधारेण अत्रापि पाठः स्वीकृतः । अनेन
प्रस्तुतसूत्रे जातस्य पाठमिश्रणस्य परिहारः
सहजमेव जातः ।
५. संजोडमेणं (ख) ।
६. °मालिणीयं (क, ख, ग) ।
७. मिसमीणं (ख, ग) ।
८. ना० १११२६ ।
९. ना० ११ १११२७ ।

भरणांलंकियसरीरा सीयं दुरुहइ, दुरुहिता मेहस्स कुमारस्स दाहिणपासे भद्दा-
सणंसि^१ निसीयइ ॥

१३३. ताए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अंबघाई रयहरणं च पडिग्गहं च गहाय सीयं
दुरुहइ, दुरुहिता मेहस्स कुमारस्स वामपासे भद्दासणंसि निसीयइ ॥

१३४. ताए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा
संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास - संलावुल्लाव - निउणजुत्तोवयारकुसला
आमेलगजमलजुयल-वट्ठिय-अठभुण्णय-पीण-रइय-संठिय-पओहरा हिम-रयय-
कुंदेंदुपगासं सकोरेंटमल्लदामं धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं ओहारेमाणी-
ओहारेमाणी चिट्ठइ ॥

१३५. ताए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारुवेसाओ^२ •मंगय-
गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-संलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयार^३ कुसलाओ सीयं
दुरुहंति, दुरुहिता मेहस्स कुमारस्स उभओ पामं^४ नाणामणि-कणग-रयण-
महरिहत्तवणिज्जुज्जल-विचित्तदंडाओ चिल्लियाओ मुहुमवरदीहवालाओ मंख-
कुंद-दगरय-अमयमट्ठियफेणपुंज-सण्णिगासाओ चामराओ गहाय सलीलं ओहारे-
माणीओ-ओहारेमाणीओ चिट्ठंति ॥

१३६. ताए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी सिंगारा^५-गारचारुवेसा संगय-
गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-संलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयार^६ कुसला सीयं
दुरुहइ, दुरुहिता मेहस्स कुमारस्स पुरओ पुरत्थिमे णं चंदप्पभवइर-वेरुलिय-
विमलदंडं तालियंटं गहाय चिट्ठइ ॥

१३७. ताए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी^७ •सिंगारागारचारुवेसा संगय-
गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-संलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयार^८ कुसला सीयं
दुरुहइ, दुरुहिता मेहस्स कुमारस्स पुव्वदक्खिणे^९ णं मेयं रययामयं विमलसलिल-
पुण्णं मत्तगयमहामुहाकिनिसमाणं भिगारं गहाय चिट्ठइ ॥

१३८. ताए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं
वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं
एगाभरण-गहिय-निज्जोयाणं कोडुंबियवरतरुणाणं सहस्सं सद्दावेहं ॥

१. भद्दासणम्मि (ख); भद्दासणे (ग) ।

२. सं० पा०—सिंगारागारचारुवेसाओ जाव कुस-
लाओ ।

३. पासि (ख) ।

४. सं० पा०—सिंगारा जाव कुसला ।

५. सं० पा०—वरतरुणी जाव मुरुवा (क, ख,

ग, घ) अत्र पूर्वसूत्रक्रमेण 'जाव कुसला'
इति युज्यते, कथमिदं परिवर्तनं जातमिति
ज्ञातुं न शक्यते ।

६. दक्खिणे (ग) ।

७. सं० पा०—सद्दावेह जाव सद्दावेति ।

१३६. *तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं एगाभरण-
गहिय-निज्जोयाणं कोडुंबियवरतरुणाणं सहस्सं० सद्दावेति ॥
१४०. तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा सेणियस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहि सद्दाविया
समाणा हट्ठा ण्हाया जाव^१ [सव्वालंकारविभूसिया ?^२] एगाभरण-गहिय-
गिज्जोया जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं
रायं एवं वयासी—संदिसह णं देवाणुप्पिया ! जं णं अम्हेहि करणिज्जं ॥
१४१. तए णं से सेणिए राया तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं एवं वयासी—गच्छह णं
तुब्भे देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं^३ सीयं परिवहेह ॥
१४२. तए णं तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सेणिएण रण्णा एवं वुत्तं संतं हट्ठं मेहस्स
कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं परिवहइ ॥
१४३. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं^४ सीयं दुरुढस्स समाणस्स इमे
अट्ठमंगलया तप्पढमयाए पुरओ अहाणुपुव्वीए^५ संपत्थिया, तं जहा —सोवत्थिय^६-
सिरिवच्छ - नंदियावत्त - वद्धमाणग-भद्दासण - कलस-मच्छ-दप्पणया जाव^७

१. ना० १।१।८१ ।

२. अत्र जाव शब्दस्याग्रिमो पाठो नास्ति सूचितः,
किन्तु प्रसंगानुसारेण पूर्तिकृत एव पाठो
युज्यते ।

३. °वाहिणीं (ग, घ) ।

४. °वाहिणीं (ख); वाहिणी (ग) ।

५. आणुपुव्वीए (घ) ।

६. सोत्थिय (ग) ।

७. (१) तयाणंतरं च णं पुण्णकलसाभंगारं
दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-
आनोयदरिसणिज्जा वाउडुयविजयवेजयंती
य ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणु-
पुव्वीए संपट्टिया ।

(२) तयाणंतरं च णं वेरुलियभिसंतविमलदंडं
पलंवकोरेंटं मरुलदामोवसोहियं चंदमडलनिभं
विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं च मणिरयण-
पायवीहं सगाउयाजुयसमाउत्तं बहुकिंकर-
कम्मकर-पुरिस-पायत्त-गरिक्खित्त पुरओ
अहाणुपुव्वीए संपट्टियं ।

(३) तयाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुं-
ग्गाहा चावग्गाहा चामरग्गाहा, पोत्थयग्गाहा
फलग्गाहा पीढयग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा
हडप्पग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्टिया ।

(४) तयाणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो
छिहंदिणो पिच्छिणो हासकरा डमरकरा
चाडुकरा कीडंता य वायंता य गायंता य
नच्चंता य हसंता य सोहंता य साविता य
रक्खंता य आलोयं च करेमाणा जयसदं च
पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्टिया ।

(५) तयाणंतरं च णं जच्चाण तरमल्लिहाय-
णाणं थासग-अहिलाण-चामर-गंड-परिमंडिय-
कडीणं किंकरवरतरुणपरिग्गहियाणं अट्ठसयं
वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्टियं ।

(६) तयाणंतरं च णं ईसीदंताणं ईसीमत्ताणं
ईसीतुंगाणं ईसीउच्छंगविसाल-धवलदंताणं
कंचणकोसी-पविट्ठदंताणं कंचण-मणिरयण-
भूसियाण वरपुरिसारोहगसंपउत्ताणं अट्ठसयं

बह्वे अत्थत्थिया' *कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किब्बिसिया कारोडिया कारवाहिया संखिया चक्किया नंगलिया मुहमंगलिया वद्धमाणा पूसमाणया खंडियगणा ताहि इट्ठाहि कंताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि मणाभिरामाहि हिययगमणिज्जाहि वग्गूहि जयविजयमंगलसएहि° अणवरयं अभिनंदंता य अभियुणंता य एवं वयासी—जय-जय नंदा ! जय-जय भट्टा !

जय-जय नंदा ! भट्टं ते । अजियं जिणाहि इंदियाइं, जियं च पालेहि समण-धम्मं, जियविग्घो वि य वसाहि तं देव ! सिद्धिमज्जे, निहणाहि रागदोसमल्ले तवेण धिइ-धणियं°-वद्धकच्छो, मट्ठाहि य अट्ठकम्मसत्तू भाणेणं उत्तमेणं मुक्केणं अप्पमत्तो, पावय वित्तिमिरमणुत्तरं केवलं नाणं, गच्छ य मोक्खं परमं पयं

गयाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

(७) तयानंतरं च णं सच्छत्ताणं सज्झयाणं सघट्टाणं सगडागाणं सत्तोरणवरणं सणंदि-घोसाणं सखिखिणी-जाल-परिक्खित्ताणं हेमवय-वित्त-तिणिस-कणग-णिज्जुत्त-दारुयाणं कालायस-मुक्कयणेमि-जंतकम्माणं सुसिलिट्ठ-वत्तमंडल-घुराणं आइणवरतुरगसुसं-पत्ताणं कुसलनरच्छेयमारहिमुसंगहियाणं बत्तीसतोण-परिमडियाणं सककड-वडेंसगाणं सचावसर-गहरणावरणभरिय - जुद्धसज्जाणं अट्ठसयं रहाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

(८) तयानंतरं च णं अस्सि-सत्ति-कुंत-तोमर-सूल-लउल-भिडिमाल-घणु-पाणिसज्जं पायत्ता-णीयं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

(९) तए णं से मेहे कुमारे हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे कुंडलुज्जोइयाणणे मउडदित्त-सिराए अब्भहियं रायतेयलच्छीए दिप्पमाणे सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहि उद्धव्वमाणीहि-उद्धव्वमा-णीहि हयगयपवरवरजोहकलियाए चाउरंगि-णीए सेणाए समणुग्गममाणमग्गे जेणेव गुणसिलए चेइए, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

(१०) तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरओ महं आसा आसवरा उमओ पासि पागा

णागधरा (नागवग—वृषा) पिट्ठओ रह-संवेत्ति (रहसंगेलि-वृषा) ।

(११) तए णं से मेहे कुमारे अब्भुगयभिगारे पग्गहियतालियटे ऊमवियसेयद्यत्ते पवीजिय-बालवीयणीए सव्विड्डीए सव्वजुत्तीए सव्व-वलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंध-मल्लालंकारेणं सव्वतुडिय-सद्-सण्णिणाणं महया इड्डीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-भल्लरि खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहि - णिग्घोस-णाइयरवेणं रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ ।

(१२) तए णं तस्स मेहकुमारस्स रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्जेणं निग्गच्छमाणस्स बह्वे अत्थत्थिया कामत्थिया भोगत्थिया... । उपरिलिखितः पाठो वृत्तेः समुद्धृतोऽस्ति । औपपातिकस्य ६४-६८ सूत्रेषु असौ पाठः किञ्चिच्छब्दभेदेन सहोपलभ्यते ।

१. सं० पा०—अत्थत्थिया जाव ताहि इट्ठाहि जाव अणवरयं ।

२. वलिक (ग, वृषा); एकस्यां वृत्तिप्रती 'पलिक' इत्यपि लभ्यते ।

सासयं च अयलं, 'हंता परीसहचमूणं', अभीओ परीसहोवसग्गाणं, धम्मे ते अविग्घं भवउ त्ति कट्टु पुणो-पुणो मंगल-जयसइं पउजंति ॥

१४४. तए णं से मेहे कुमारे रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ ॥

सिस्सभिकख दाण-पदं

१४५. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! मेहे कुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते ॥ १ ॥ पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडग-समाणे रयणे रयणभूए ० जीवियऊसासए हिययणंदिजणए उंवरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए ?

से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पंके जाए जले संवडिढए नोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेसु संवडिढए नोवलिप्पइ कामरएणं नोवलिप्पइ भोगरएणं । एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गे भीए जम्मण-जर-मरणाणं, इच्छइ देवाणु-प्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अम्हे णं देवाणु-प्पियाणं सिस्सभिकखं दलयामो । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिकखं ॥

१४६. तए णं समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स अम्मापिऊहि एवं वुत्ते समणे एयमट्ठं सम्मं पडिमुणेइ ॥

१४७. तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अयक्कमइ, सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ ॥

१४८. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडमाडणं आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइं अमूणि विणिम्मयमाणी-विणिम्मयमाणी रोयमाणी-रोयमाणी कंद-माणी-कंदमाणी विलवमाणी-विलवमाणी एवं वयासी—जइयव्वं जाया !

१. हत्वा परीसह-चमू—परीषहसैन्यम् । ४. संवुड्ढे (ख, ग) ।

णमित्यलंकारे अथवा कथंभूतः त्वम्, हंता— ५. जम्म (ख, ग) ।

विनाशकः परीषह चमूनाम् (वृ) । ६. सीसभिकख (क) ।

२. पच्चोरुहइ (ख, ग) । ७. X (क, ग, घ) ।

३. सं० पा०—कंते जाव जीवियऊसासए । ८. पडग० (ख) ।

घडियव्वं जाया ! परक्कमियव्वं जाया ! अस्मि च णं अट्ठे नो पमाण्यव्वं ।
अम्हंपि णं एसेव मग्गे भवउ त्ति कट्ठु मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समणं
भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिमं पाउब्भूया
तामेव दिसं पडिगया ॥

मेहस्स पव्वज्जागहण-पदं

१४६. तए णं से मेहे कुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणामेव समणे
भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं
तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता
एवं वयासो — आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त पलित्ते
णं भंते ! लोए जराए मरणेण य ।

से जहानामए केइ गाहावई अगारंसि भियायमाणंसि जे तत्थ भंडे भवइ
अप्पभारे' मोल्लगरूए तं गहाय आयाए एगंतं अवक्कमइ — एस मे नित्थारिए
समाणे 'पच्छा पुरा य'^१ लोए हियाए सुहाए खमाए' निस्सेसाए आणुगामियत्ताए
भविस्सइ । एवामेव मम वि एगे आयाभंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे । एस
मे नित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सइ । तं इच्छामि णं देवाणुप्पिएहिं
सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं सयमेव सेहावियं सयमेव सिक्खावियं
सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तियं^२ धम्ममा-
इक्खियं ॥

१५०. तए णं समणे भगवं महावीरं मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ सयमेव^३ 'मुंडावेइ
सयमेव सेहावेइ सयमेव सिक्खावेइ सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-
करण-जायामायावत्तियं^४ धम्ममाइक्खइ — एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं
चिट्ठियव्वं, एवं निसीयव्वं, एवं तुयट्ठियव्वं, एवं भुजियव्वं, एवं भासियव्वं,
एवं उट्ठाए उट्ठाय^५ पाणेहिं भूएहिं जीवेहि सत्तेहि संजमेणं संजमियव्वं, अस्मि
च णं अट्ठे नो पमाण्यव्वं ॥

१५१. तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए इमं एयारूवं धम्मियं
उवएसं सम्मं पडिवज्जइ — तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ^६, 'तह निसीयइ तह
तुयट्ठइ, तह भुंजइ, तह भासइ, तह^७ उट्ठाए उट्ठाय^८ पाणेहिं भूएहिं जीवेहि
सत्तेहि संजमेणं संजमइ ॥

१. अप्पसारं (वृषा) ।

२. पच्छाउरस्स (वृषा)

३. खेमाए (क्व०) ।

४. °उत्तियं (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा० — सयमेव° आयार जाव
धम्ममाइक्खइ ।

६. °उट्ठाए (ग); उत्थाय उत्थाय (वृ) ।

७. सं० पा० — चिट्ठइ जाव उट्ठाए ।

८. उट्ठाए (क) ।

मेहस्स मणो-संकिलेस-पदं

१५२. जद्विस्सं च णं मेहे कुमारे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तस्स णं दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि समणाणं निग्गंथाणं अहाराइणियाए सेज्जा-संथारए सु विभज्जमाणे सु मेहकुमारस्स दारमूले सेज्जा-संथारए जाए यावि होत्था ॥
१५३. तए णं समणा निग्गंथा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए परियट्ठणाए धम्माणुजोगचिताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया मेहं कुमारं हत्थेहिं संघट्ठेति *अप्पेगइया पाएहि संघट्ठेति अप्पेगइया सीसे संघट्ठेति अप्पेगइया पोट्ठे संघट्ठेति अप्पेगइया कायंसि संघट्ठेति ° अप्पेगइया ओलंडेति अप्पेगइया पोलंडेति अप्पेगइया पाय-रय-रेणु-गुडियं करेति । एमहालियं च रयणिं मेहे कुमारे नो संचाएइ खणमवि अच्छिं निमीलित्तए ॥
१५४. ताए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए *चित्थिए पत्थिए मणो-गाए संकप्पे ° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सेणियस्स रण्णे पुत्ते धारिणीए देवीए अत्ताए मेहे ° इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए वहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासए हियय-णंदि-जणणे उंवर-पुण्फं व दुल्लहे ° सवणयाए । तं जया णं अहं अगारमज्झावसामि तया णं मम समणा निग्गंथा आढायंति परियाणंति सक्कारंति सम्माणंति, अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं आइक्खंति, इट्ठाहिं कंताहिं वग्गूहिं आल-वेति संलवेति । जप्पभिइं च णं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तप्पभिइं च णं मम समणा निग्गंथा नो आढायंति ° नो परियाणंति नो सक्का-रंति नो सम्माणंति नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं आइक्खंति,

१. जं दिवसं (घ) ।

२. अणगारे (क) ।

३. पुव्वा ° (क, ग, घ) ।

४. आहारातिणियाए (ख, ग) ।

५. मेहस्स अणगारस्स (क) सर्वत्र ।

६. दारमूले (क, ख) ।

७. य (क, ख, ग, घ) । १८६ सूत्रस्य
आधारेण अत्र 'वा' इति पाठो गृहीतः ।८. सं० पा०—एवं पाएहि सीसे पोट्ठे
कायंसि ।

१०. एवंमहा ° (क, घ); एयमहा ° (ग) ।

११. रयणी (क, घ) ।

१२. अच्छी (ख) ।

१३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

१४. सं० पा०—मेहे जाव सवणयाए ।

१५. समणयाए (क, ख, ग) ।

१६. °मज्झवसामि (क); °मज्जेवसामि (ग);
अगारमज्जे आवसामि (वृपा) ।

१७. परिजाणंति (ग) ।

१८. वाकरणाइं (क, ख, ग) ।

१९. सं० पा०—आढायंति जाव संलवेति ।

नो इट्ठाहिं कंताहिं वग्गूहिं आलवेति ° संलवेति । अदुत्तरं च णं ममं समणा निग्गंथा राम्मो पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए °परियट्ठणाए धम्माणुजोगचिताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया हत्थेहिं संघट्टेति अप्पेगइया पाएहिं संघट्टेति अप्पेगइया सीसे संघट्टेति अप्पेगइया पोट्टे संघट्टेति अप्पेगइया कायंसि संघट्टेति अप्पेगइया ओलंडेति अप्पेगइया पोलंडेति अप्पेगइया पाय-रय-रेणु-गुंडियं करेति ° । एमहालियं च णं रत्ति अहं नो संचाएमि अच्छि निमिल्लावेत्तए [निर्मलित्तए ?] । तं सेयं खलु मज्झं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्झावसित्तए' त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता अट्ट-दुहट्ट-वमट्ट-माणसगाए निरयपडिरूवियं च णं तं रयणिं खवेइ', खवेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए सुविमलाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव' उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं निक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ जाव' पज्जुवासइ ॥

मेहस्स संबोध-पवं

१५५. तए णं मेहा ! इ समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं एवं वयासी—से नूणं तुमं' मेहा ! राम्मो पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि समणेहिं निग्गंथेहिं वायणाए पुच्छणाए °परियट्ठणाए धम्माणुजोगचिताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइगच्छमाणेहिं य निग्गच्छमाणेहिं य अप्पेगइएहिं हत्थेहिं संघट्टिए अप्पेगइएहिं पाएहिं संघट्टिए अप्पेगइएहिं सीसे संघट्टिए अप्पेगइएहिं पोट्टे संघट्टिए अप्पेगइएहिं कायंसि संघट्टिए अप्पेगइएहिं ओलंडिए अप्पेगइएहिं पोलंडिए अप्पेगइएहिं पाय-रय-रेणु-गुंडिए कए । ° एमहालियं च णं राइं तुमं नो संचाएसि मुहुत्तमवि अच्छि निमिल्लावेत्तए । तए णं तुज्झं' मेहा ! इमेयारूवे अज्झत्थिए °चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे ° समुप्पज्जित्था — जया णं अहं अगारमज्झावसामि तया णं ममं

१. सं० पा०—पुच्छणाए जाव एमहालिय ।

७. ना० १ १।२४ ।

२. १५३ सूत्रे 'निमिलित्तए' इति पाठोस्ति ।

८. तेणामेव (ग) ।

अत्र तत्तुल्यार्थेऽपि 'निमिल्लावेत्तए' इति

९. राय० सू० ६० ।

पाठः कथं जातः ?

१०. तुमे (ग) ।

३. ममं (ग) ।

११. सं० पा०—पुच्छणाए जाव एमहालियं ।

४. ना० १।१।२४ ।

१२. तुब्भ (क); तुब्भे (ख, घ) ।

५. °मज्झे वसित्तए (क) ।

१३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

६. वेदेति (घ) ।

समणा निगंथा आढायंति' •परियाणंति सक्कारेति सम्माणेति अट्टाई हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं आइक्खंति, इट्ठाहिं कंताहिं वग्गूहिं आलवेति संलवेति ° । जप्पभिइं च णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि तप्पभिइं च णं ममं समणा निगंथा नो आढायंति जाव' संलवेति । अदुत्तरं च णं ममं समणा निगंथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अप्पेगइया जाव' पाय-रय-रेणु-गुडियं करेति । तं मेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्जे आवसित्ताए त्ति कट्ठु एवं संपेहेसि, संपेहेत्ता अट्ठ-दुहट्ठ-वसट्ठ-माणसगाए' •निरयपडिरुवियं च णं तं ° रयणिं खवेसि, खवेत्ता जेणामेव अहं तेणामेव हव्वमागाए । मे नूणं मेहा ! एस 'अत्थे समत्थे । हंता अत्थे समत्थे' ॥

भगवया सुमेरुप्पभ-भवनिरुवण-पदं

१५६. एवं खलु मेहा ! तुमं इओ तच्चे अईए भवग्गहणे वेयइडगिरिपायमूले वणयरेहि निव्वत्तियनामधेज्जे मेए संख-उज्जल-विमल-निम्मल-दहिघण-गोखीर-फेण-रयणियरप्पयामे सत्तुस्सहे नवायाए दसपरिणाहे सत्तंगपइट्ठिए 'सोम-सम्मिए' सुखे' पुरओ उदग्गे समूसियसिरे सुहासणे पिट्ठओ वराहे अइयाकुच्छी' अच्छिद्-कुच्छी अलंबकुच्छी पलंबलंबोदराहरकरे' घणुपट्ठागिति-विंसिट्ठपुट्ठे अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्ठिय-पीवर-गत्तावरे' अल्लीण-पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुण्ण-सुचारु-कुम्मचलणे पंडुर' सुविमुद्ध-निद्ध-निरुवहय-विसत्तिनहे छट्ठंते सुमेरुप्पभे नाम हत्थिराया होत्था ॥

१५७. तत्थ णं तुमं मेहा ! वहीहि हत्थीहि य हत्थिणयाहि य लोट्टाहि य लोट्टियाहि

१. सं० पा०—आढायति ° ।

२. ना० १।१।१५४ ।

३. ना० १।१।१५३ ।

४. ना० १।१।२४ ।

५. सं पा०—अट्ठदुहट्ठवसट्ठमाणसगाए जाव रयणि ।

६. अट्ठे समट्ठे हंता अट्ठे समट्ठे [क्वचित्] ।

७. समे मुसंटाए (वृ); सोम-सम्मिए (वृपा) ।

८. वृत्ती नास्ति व्याख्यातः ।

९. अतिया ° (ग, घ) ।

१०. अलंब ° (वृ); पलंब ° (वृपा) ।

११. अतोअे वृत्ती वाचनान्तरस्य निर्देशोस्ति — अभ्युदगत-मुकुल-मल्लिका-धवलदन्तः, आना-मित-चाप-नलित-संवेल्लिताग्रशुंडः । उपाशक-दशाया—(२।२८) मिदं विशेषगद्वयं भूलपाठे विद्यते—अट्ठभुग्गय - मउल-मल्लिया- विमल-धवलदंत ° आणामिय-चाव-ललिय-संवेल्लि-यग्गसोंडं ।

१२. पंडर (क, च) ।

य कलभाहि य कलभियाहि य सद्धि संपरिवुडे हत्थिसहस्सनायाग देसाग पागट्टी पट्टवग जूहवई वंदपरिवड्डाग, अण्णेसि च वहुणं एकल्लाणं हत्थिकलभाणं आहेवच्चं °पोरेवच्चं सामित्तं भटित्तं महत्तरगतं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारे-माणे पालेमाणे ° विहरसि ॥

१५८. ताग णं तुमं मेहा ! निच्चप्पमत्ते सइं पल्लिग कंदप्परई मोहणसीने 'अवितण्हे कामभोगतिसिग' वहुहि हत्थीहि य °हत्थिणियाहि य लोद्वगहि य लोद्वियाहि य कलभाहि य कलभियाहि य सद्धि °संपरिवुडे वेयड्डगिरिपायमूले गिरीमु य दरीमु य कुहरेमु य कंदरामु य उज्जरेमु य निज्जरेमु य वियरणमु' य गड्डामु य पल्ललेमु य चिल्ललेमु य कडगेमु य कडयपल्ललेमु य तडीमु य विय-डीमु य टंकेमु य कूडेमु य सिहरेमु य पट्टभारेमु य मंचेमु य मालेमु य काणणेमु य वणेमु य वणसंडंमु य वणराईमु य नदीमु य नदीकच्छंमु य जहेमु य संगमेमु य दावीमु य पोक्खरणीमु' य दीहियामु य गुंजालियामु य सरेमु य सरपंतियामु य सरसरपंतियामु य वणयरेहिं दिन्नवियारे वहुहि हत्थीहि य जाव' सद्धि संपरिवुडे वहुविहत्तरपल्लव'-पडरपाणियतणे'° निवभाग निरुव्विग्गे मुहंमुहेणं विहरसि ॥

१५९. ताग णं तुमं मेहा - अण्णया' कयाइ पाउस-वरिसारत्त-सरद'-हेमंत-वसंतंमु कमेण पंचमु उऊमु समइक्कंतंमु गिम्हकालसमयंसि जेट्टामूले मासे पायव-घंससमुट्ठिणं सुक्कतण-पत्त-कयवर-मारुय-संजोगदीविण महाभयंकरेणं' हुयवहेणं वणदव-जाल'-संपलित्तेमु वणंतंमु धूमाउलासु दिसामु महावाय-वेगेणं सघट्टिणमु छिण्णजालेसु आवयमाणेसु पोल्लरुक्खंमु अतो-अतो भियायमाणेसु मय-कुहिय-विणट्ट-किमिय'-कद्दम-नईवियरगज्झीणपाणीयंतंमु वणंतंमु भिगारक-दीणकंदिय-रवेसु 'खरफरस-अण्णिट्ट-रिट्ट-वाहित्त-विदुमग्गेसु'° दुमेसु तण्हावस-मुक्कपक्ख-पायाडियजिब्भतालुय'-असंपुडियतुंड-पक्खिसंघेसु ससत्तेसु गिम्हुम्ह'-

१. परियट्टा (क) ।

२. कल्लाणं (ग) ।

३. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरसि ।

४. अवितण्हकामनिमिग (क); अवितण्हकामभोगे (ग) ।

५. सं० पा०—हत्थीहि य जाव संपरिवुडे ।

६. वियरेसु (ख, ग, घ) ।

७. पुक्खरिणीसु (क) ।

८. ना० १।१।१५७ ।

९. °पल्लवे (क) ।

१०. पाणियतले (क, ग, घ) ।

११. अन्नता (ख) ।

१२. सरय (ख, ग, घ) ।

१३. महाभयकरेणं (क, ख, घ) ।

१४. जाला (ख) ।

१५. किमि (वृ); किमिय (वृपा) ।

१६. खरफरस-रिट्ट-वाहित्त-विदुमग्गेसु (वृपा) ।

१७. पर्याडिय ° (घ) ।

१८. गिम्हुउम्ह (ख); गिम्ह (घ) ।

उण्हवाय-खरफरुसचंडमारुय-सुक्कतणपत्तकयवरवाउलि-भमंतदित्तसंभंतसावया-
उल-मिगतण्हाबद्धचिधपट्टेसु गिरिवरेसु संवट्टइएसु' तत्थ-मिय-ससय'-सरीसि-
वेसु' अक्खदालियवयणविवर-निल्लालियगगीहे महंततुंबइय-पुण्णकण्णे संकुचिय-
थोर-पीवर-करे ऊसिय-नंगूले पीणाइय'-विरसरडिय-सद्वेणं फोडयंतेव अंवरतलं,
पायदहरएणं कंययंतेव मेइणितलं, विणिम्मयमाणे य सीयरं', सव्वओ समंता
वत्तिवियाणाइं छिदमाणे, रुक्खसहस्साइं तत्थ मुबहूणि नोल्लयंते', विणट्टरट्टेव्व
नरवरिंदे, वायाइद्वेव्व पोए, मंडलवाएव्व परिव्वभमंते, अभिक्खणं-अभिक्खणं
लिडनियरं पमुंचमाणे-पमुंचमाणे वहूहि हत्थीहि य जाव' सद्धि दिसोदिसिं
विप्पलाइत्था ॥

१६०. तत्थ णं तुमं मेहा ! जुण्णे जरा-जज्जरिय-देहे आउरे भंभिए' पिवासिए दुव्वले
किलंते नट्टसुइए मूढदिसाए सयाओ जूहाओ विप्पहूणे' वणदवजालापरद्वे"
उण्हेण य तण्हाए य छुहाए य परव्वभाहए समाणे भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे
संजायभए सव्वओ समंता आधावमाणे परिधावमाणे एगं च णं महं सरं
अप्पोदगं' पंकवहुलं अतित्थेणं' पाणियपाए ओइण्णे ।

तत्थ णं तुमं मेहा ! तीरमइगए पाणियं असंपत्ते अंतरा चेव सेयंसि विसण्णे ।
तत्थ णं तुमं मेहा ! पाणियं पाइस्सामि त्ति कट्टु हत्थं पसारेसि । से वि य ते
हत्थे उदगं न पावइ । तए णं तुमं मेहा ! पुणरवि कायं पच्चुद्धरिस्सामि त्ति
कट्टु वलियतरायं पंकंसि खुत्ते ॥

१६१. तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ एगे चिरनिज्जूढाए गयवरजुवाणाए सगाओ
जूहाओ कर-चरण-दंत-मुसलप्पहारेहि विप्परद्वे समाणे तं चेव महद्दहं पाणी-
यपाए समोयरइ । तए णं से कलभए तुमं पासइ, पासित्ता तं पुव्ववेरं सुमरइ,
मुमरित्ता आमुरत्ते' रुट्टे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे जेणेव तुमं तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं तिक्खेहि दंतमुसलेहि तिक्खुत्तो पिट्ठो 'उट्ठु-

१. संवट्टएसु (ग) ।

६. नोल्लवते (ग) ।

२. पसय (ख, ग, घ, वृ); अनुयोगद्वारवृत्तौ
पाठान्तररूपेण 'पसय' शब्दः प्राप्यते—
पसयस्सु—आटविको द्विखुरः चतुष्पदविशेषः ।
प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तावपि इत्यमेव व्याख्यात-
मस्ति—प्रमयाश्चाटव्यचतुष्पदविशेषाः ।

७. ना० १।१।१५७ ।

८. उभुसिए (क, घ); जुंजिए (ग); 'भुसियं'
बुभुक्षितमित्यर्थः (अंतगडवृत्ते ३।८) ।

९. विप्पहूणे (क) ।

३. सिरीसवेसु (ख, ग) ।

१०. °वरद्वे (क); °परद्वे (ख) ।

४. पिणाइय (ख); पेणाइय (ग) ।

११. अप्पोययं (ख) ।

५. सीइरं (क); सीयारं (क्व०) ।

१२. अतित्थणं (ख, ग) ।

१३. आमुहत्ते (क, ख) ।

भइ, उट्टुभित्ता" पुव्वं वेरं निज्जाएइ, निज्जाएत्ता हट्टुट्टे पाणीयं पिबइ, पिबित्ता" जामेव दिसिं पाउवभूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

१६२. तए णं तव मेहा ! सरीरगंसि वेयणा पाउवभित्था—उज्जला विउला" कक्खडा" •पगाढा चंडा दुक्खा° दुरहियासा । पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरित्था ।

भगवया मेरुप्पभ-भवनिरुवण-पदं

१६३. तए णं तुमं मेहा ! तं उज्जलं" •विउलं कक्खडं पगाढं चंडं दुक्खं° दुरहियासं सत्तराईदियं वेयणं वेदेसि, सवीमं वाससयं परमाउयं पालइत्ता अट्ट-•दुहट्ट-वसट्टे" कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वामे दाहिणइडभरहे गंगाए महानईए दाहिणे कूले विभगिरिपायमूले एगेणं मत्तवरगंधहत्थिणा एगाए गयवरकरेणूए कुच्छिसि गयकलभाए जणिए ॥

१६४. तए णं सा गयकलभिया नवण्हं मासाणं वसंतमासंसि" तुमं पयाया ॥

१६५. तए णं तुमं मेहा ! गव्ववासाओ विप्पमुक्के समाणे गयकलभाए यावि होत्था—रत्तुप्पल-रत्तसूमालाए जामुमणाऽरत्तपालियत्तय-लक्खारस-सरसकुंकुम-संभ्रवभरागवण्णे", इट्टे नियगस्स जूह्वइणो", गणियार"-कणेह"-कोत्थ-हत्थी अणेगहत्थिसयसंपरिवुडे रम्मेमु गिरिकाणणेमु मुहंमुहेणं विहरसि ॥

१६६. तए णं तुमं मेहा ! उम्मुक्कवालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते जूह्वइणा कालधम्मुणा संजुत्तेणं तं जूहं सयमेव पडिवज्जसि ॥

१६७. तए णं तुमं मेहा ! वणयरेहि निव्वत्तियनामधेज्जे" •सत्तुस्सेहे नवायाए दसपरिणाहे सत्तंगपइट्टिण सोम-मम्मिण मुरुवे पुरओ उदगे समूसियसिरे सुहासणे पिट्टओ वराहं अइयाकुच्छी अच्छिइकुच्छी अलवकुच्छी पलंवलंबोदराहरकरे धणुपट्टागिति-विसिट्टुट्टे अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्टिय-पीवर-गत्तावरे अल्लीण-

१. उट्टुभइ २ (क) ।

२. पुव्व (ख, घ) ।

३. पियइ २ (क, ख, घ) ।

४. तिउला विउला (ख); तिउला (वृषा) ।

५. सं० पा०—कक्खडा जाव दुरहियासा ।

६. सं० पा०—उज्जलं जाव दुरहियासं ।

७. वसट्ट-दुहट्टे (क, ख, ग, वृ) ।

८. °मासम्मि (क); °मासे (ग) ।

९. पालियात्तय (क, घ); पारिजत्तय (क्व०) ।

१०. °संभ्रराग° (क) ।

११. °वइणा (ग) ।

१२. गणियायार (घ) ।

१३. करेणु (घ) ।

१४. सं० पा०—निव्वत्तियनामधेज्जे जाव चाउदंते । इह यावत् करणेन यद्यपि समग्रः पूर्वोक्तो हस्तिवर्णकः सूचितस्तथापि श्वेततावर्जो द्रष्टव्यः, इह रक्तस्य तस्य वर्णितत्वात् । अतएवाग्रे सत्तुस्सेहे इत्यादिक-मतिदेशं वक्ष्यति (वृ) ।

पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुण्ण-सुचारु-कुम्मचलणे पंडुर-सुविसुद्ध-निद्ध-निरुवहय-
विसतिनहे° चउदंते मेरुप्पभे हत्थिरयणे होत्था' । तत्थ णं तुमं मेहा !
सत्तसइयस्स जूहस्स आहेवच्चं° पोरेवच्चं° सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगतं आणा-
ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे° अभिरमेत्था ॥

१६८. तए णं तुमं मेहा ! अणया कयाइ गिम्हकालसमयंसि जेट्टामूत्ते [मासे पायव-
घंससमुट्टिएणं सुक्कतण-पत्त-कयवर-मारुय-संजोगदीविणं महाभयंकरेणं
हुयवहेणं ?]' वणदव-जाला-पलित्तेसु वणंतेसु धूमाउलासु दिसासु जाव'
मंडलवाएव्व परिव्वभंते भीए तत्थे° तसिए उव्विगे° संजायभए वूहहिं
हत्थीहि य' °हत्थिणियाहि य लोट्टिएहि य लोट्टियाहि य कलभएहि य कलभि-
याहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्वओ समंता दिसोदिसिं विप्पलाइत्था ॥
१६९. तए णं तव मेहा ! तं वणदवं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए' °चित्तिए
पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—कहि णं मन्ने मए अयमेयारूवे
अग्गिसंभमे' अणूभूयपुव्वे ?
१७०. तए णं तव मेहा ! लेस्साहिं विमुज्झमाणीहिं अज्झवसाणेणं सोहणेणं सुभेणं
परिणामेणं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा-पूह-मग्गण-गवेसणं
करेमाणस्स सन्निपुव्वे जाईसरणे समुप्पज्जित्था ॥
१७१. तए णं तुमं मेहा ! एयमट्ठं सम्मं° अभिसमेसि—एवं खलु मया'' अईए दोच्चे
भवग्गहणे इहेव जंबुद्दीवे दोवे भारहे वामे वेयड्ढगिरिपायमूले जाव'' सुमेरुप्पभे
नाम हत्थिराया होत्था । तत्थ णं मया'' अयमेयारूवे अग्गिसंभमे'' समणुभूए ॥
१७२. तए णं तुमं मेहा ! तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि नियएणं जूहेणं
सद्धिं समण्णागए यावि होत्था ॥
१७३. तए णं तुमं मेहा ! सत्तुस्सेहे जाव'' सन्निजाईसरणे चउदंते मेरुप्पभे नामं हीत्थ
होत्था ॥

१. होत्था । सत्तंगपट्टिए तहेव जाव पडिरूवे
(क, घ) । यत् पुनरिह दृश्यते—सत्तंगेत्यादि
तद् वाचनान्तरवर्णकापेक्षं कुलिखितमिति
(बृ) ।

२. सं० पा०—आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था ।

३. १५६ सूत्रस्य वर्णनपद्धत्यासौ पाठोऽत्र युज्यते ।

४. ना० १।१।१५६ ।

५. सं० पा०—तत्थे जाव संजायभए ।

६. सं० पा०—हत्थीहि य जाव कलभियाहि ।

७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

८. °संभवे (ख, ग) ।

९. × (ग) ।

१०. मता (ख) ।

११. ना० १।१।१५६ ।

१२. महया (क, ख, ग); एतत् पदं अशुद्धं
दृश्यते ।

१३. °संभवे (घ) ।

१४. ना० १।१।१६७ ।

मेरुप्पमेण मंडलनिम्माणपदं

१७४. तए णं तुज्झं मेहा ! अयमेयारूवे अञ्जकणिए जाव' समुप्पज्जित्था—मेयं खलु मम इयाणि गंगाए महानईए दाहिणिल्लंसि कूलंसि विभगिरिपायमूले 'दवग्गि-संताणकारणट्ठा' सएणं जूहेणं महइमहालयं मंडलं घाइत्ताए' त्ति कट्ठु एवंपेहेसि, संपेहेत्ता मुहंसुहेणं विहरसि ॥

१७५. तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ पढमपाउमंसि' महावुट्ठिकायंसि सन्निययंसि गंगाए महानईए अदूरसामंते वहरिं हत्थोहि य जाव' कलभियाहि य सत्तहि य हत्थिसएहि संपरिवुडे एगं महं जोयणपरिमंडलं महइमहालयं मंडलं घाएसि—जं तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कंटए वा लया वा वल्ली वा खाणुं वा रुक्खे वा खुवे वा, तं सव्वं तिक्खुत्तो' आहुणिय-आहुणिय पाएणं उट्ठवेसि, हत्थेणं गिण्हसि, एगंते एडेसि ॥

१७६. तए णं तुमं मेहा ! तस्मेव मंडलस्स अदूरसामंते गंगाए महानईए दाहिणिल्ले कूले विभगिरिपायमूले गिरीमु य जाव' मुहंसुहेणं विहरसि ॥

१७७. तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ मज्झिमए वरिसारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निययंसि जेणेव मे मंडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छिन्ता दोच्चं पि 'मंडलघायं करेसि' ॥

एवं—चरिमवरिसारत्तंसि" महावुट्ठिकायंसि सन्निययमाणंसि जेणेव मे मंडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छिन्ता तच्चं पि मंडलघायं करेसि" जाव' मुहंसुहेणं विहरसि ॥

दवग्गिभीतसावयाणं मंडलपवेस-पदं

१७८. 'तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ कमेण पंचसु उऊसु समइक्कंतेसु

१. ना० १।१।१६६ ।

२. वणदवग्गिमंताण० (क); दवग्गिमंजाय०

(ख, ग, घ); दवग्गिमंताण० (वृपा) ।

४. घातए (ख) ।

४. ०पाउसे (ग); ०पाउसम्मि (घ) ।

५. ना० १।१।१५७ ।

६. × (ग, घ) ।

७. उट्ठवेसि (क); उट्ठरेसि (ख, ग);

उवट्ठेसि (घ); उट्ठवेसित्ति उट्ठरसि (वृ) ।

८. ना० १।१।१५८ ।

९. महाविट्ठि० (क, ख) ।

१०. तं मंडलं घाएगि (क, ग, घ) ।

११. ०वामारत्तंसि (ख) ।

१२. करेसि, जं तत्थ तणं वा जाव (क, ख, ग, घ);

गमान्तरप्रसंगे वृत्तिकारेण 'तच्चं पि

मंडलघायं करेसि जाव मुहंसुहेणं विहरसि'—

इति पाठः उद्धृतोस्ति, तस्याचारेणसौपाठोत्र

स्वीकृतः ।

१३. ना० १।१।१७५, १७६ ।

१४. प्रथमो गमः पादटिप्पणे विन्यस्तोस्ति, द्वितीय-

श्च मूलपाठे रक्षितोऽस्ति । वृत्तिकृता द्वितीय-

गमस्य गमान्तरत्वेन उल्लेखः कृतोस्ति, यथा—

गिम्हकालसमयंसि जेट्टामूले मासे पायव-वंससमुट्टिएणं^१ जाव^२ संवट्टइएसु
मियपसुपंखिसरीसिवेसु^३ दिसोदिसि विप्पलायमाणेसु तेहिं बहूहिं हत्थीहि य^४
सद्धि जेणेव से मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

यत् पुनः 'तए णं तुमं मेहा अण्णया कयाइ
कमेणं पंचसु' इत्यादि दृश्यते, तद् गमान्तरं
मन्थामहे (वृ)

आदर्शेषु गमद्वयं लिखितमस्ति । द्वितीयो
गमः पूर्ववर्ति १५६ सूत्रस्य वर्णनेन सादृश्यं
गच्छति, तेन तस्यैव मूले सन्निवेशः कृतः ।
प्रथमो गमः इत्थमस्ति—

अह मेहा ! तुमं गइंदाभावम्मि वट्टमाणो
कमेणं नलिणिवणविहवणकरे हेमंते कुंद-
लोद्ध-उद्धत-तुसारपउरम्मि अइक्कंते,
अहिणवगिम्हसमयंसि पत्ते वियट्टमाणो वणेसु
'वणकरेणु - विविह - दिन्नकयपसव - छाओ'^१
उउयकुसुम^२-चामरा^३-कण्णपूर-परिमंडियाभि-
रामो मयवस-विगसंत-कडतड-किलिन्न-
गंधमदवारिणा मुरभिजणियगंधो करेणुपरि-
वारिओ उउसमत्त^४-जणियसोहो काले
दिणयरकरपयंडे परिसोसिय-तरुवरसिहर^५-
भीमतरदंसणिज्जे भिगार-रवंत-भेरवरवे
नाणाविहपत्त-कट्ट-तण-कयवरुद्धत-पइमारुया-
इद्ध-नह्यल-पदुममाणे^६ वाउलि-दारुणतरे
तण्हावस - दोस - दूसिय^७-भमंत-विविहसावय-

समाउले भीमदरिसणिज्जे^८ वट्टंते दारुणम्मि-
गिम्हे मारुयवस - पसर - पसरिय - वियंभिएणं
अवमहिय-भीमभेरव-रवप्पगारेणं महुधारा-
पडिय-सित्त-उद्धायमाण-धगधगेत - संदुद्धएणं^९
दित्ततर-सफुल्लिगेणं धूममालाउलेण
सावयसयंतकरणेणं वणदवेणं जालालोविय^{१०}-
निरुद्धधूमंधकारभीओ आयवालोय^{११}-
महंततुंबइय-पुण्ण-कण्णो 'आकुंचिय-थोर-
पीवरकरो भयवस-भयंत-दित्तनयणो'^{१२} वेणेण
महामेहो व्व वाय-णोल्लिय-महन्नल्लरुवो
जेण कओ तेण^{१३} पुरा दवगि-भयभीयहियएणं
अवगयतणप्पएसरुक्खो रुक्खोद्वेसो दवगि-
संताणकारणट्टा^{१४} 'तेहिं बहूहिं हत्थीहि य
सद्धि'^{१५} जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।
एक्को ताव एस गमो ।

१. संघंस ° (क, ख, घ) ।

२. ना० १।१।१५६ ।

३. १५६ सूत्रे इत्थं पाठरचनास्ति—तस्य-मिय-
ससय-सरीसिवेसु ।

४. पू०—ना० १।१।१५७ ।

१. वणरेणुविविहदिन्नकयपंचुषाओ (वृपा) ।

२. तुमं कुसुम (घ), कुसुम (वृ), उउयकुसुम (वृपा) ।

३. चामर (क्व०) ।

४. ०समय (क) ।

५. ०सिरिहर (घ, वृ) ।

६. दुमगणे (वृपा) ।

७. दोसिब (वृ) ।

८. ०दंसणिजे (ख) ।

९. सद्धुद्धएणं (वृपा) ।

१०. जालालेविय (वृ) ।

११. आयवाले (वृ), आयवालोय (वृपा) ।

१२. आकुंचियथोरीपीवरकराभोयसव्वदिसिभयंतदित्तनयणो
(वृपा) ।

१३. ते (क, ख, घ) ।

१४. कारणत्वा (क, ग, घ) ।

१५. एतावान् पाठः ख, ग, घ, प्रतिषु नास्ति, केवलं 'क'
प्रतावेव विद्यते, वृत्त्यनुभूतिरस्ति तेनास्माभिः
स्वीकृतः ।

तत्थ णं अण्णे बह्वे सीहा य वग्घा य विगा य दीविया य अच्छा य तरच्छा य परासरा' य सियाला य विराला य मुणहा य कोला य ससा य कोकंतिया य चित्ता य' चिल्लला' य पुव्वपविट्ठा अग्गिभयविद्दुया' एगयओ विलघम्मेणं चिट्ठंति ॥

१७६. तए णं तुमं मेहा ! जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता तेहिं बहूहि सीहेहि य जाव' चिल्ललेहि य एगयओ विलघम्मेणं चिट्ठसि ॥

मेरूपभस्स पादुक्खेव-पवं

१८०. तए णं तुमे' मेहा ! पाएणं गत्तं कंडूइस्सामी' ति कट्ठु पाए उक्खित्ते' । तंसि च णं अंतरंसि अण्णेहिं बलवन्तेहिं सत्तेहिं पणोलिज्जमाणे'-पणोलिज्जमाणे ससए अणुप्पविट्ठे ॥

१८१. तए णं तुमे' मेहा ! गायं कंडूइत्ता'' पुणरवि पायं पडिनिक्खेविस्सामि'' त्ति कट्ठु तं ससयं अणुपविट्ठं पाससि, पासित्ता पाणाणुकंपयाए'' भूयाणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए सत्ताणुकंपयाए से पाए अंतरा'' चेव संघारिए, नो चेव णं निखित्ते ॥

१८२. तए णं तुमं मेहा ! ताए पाणाणुकंपयाए'' •भूयाणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए • सत्ताणुकंपयाए संसारे परित्तीकए, माणुस्साउए निवद्धे ॥

१८३. तए णं से वणदवे अड्ढाइज्जाइं राइंदियाइं तं वणं भामेइ, भामेत्ता निट्ठिए उवरए उवसंते विज्झाए यावि होत्था ॥

१. पारासरा (घ) ।

६. पणोलिज्ज ° (क, ग) ।

२. य चित्तलगा य (ख, ग); य चित्तला य (घ) ।

१०. तुमं (क, ख, ग, घ) ।

११. कंडूइत्ता (क, ख) ।

३. चिल्लाला (क) । एतेषां मध्येऽधिकृत-वाचनायां कानिचिन्त दृश्यन्ते ।

१२. निक्खमिस्सामि (क); निक्खमिस्सामि (ख, ग, घ) ।

४. °भयाभिद्दुया (क, ख, घ) ।

१३. °कंपाए (ग) ।

५. ना० १।१।१७८ ।

१४. अंतरे (ग) ।

६. तुमं (क, ख, ग, घ) ।

१५. सं० पा०—पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए ।

७. कडूइ ° (ख) ।

८. अणुक्खित्ते (क, ग, घ) ।

१८४. तए णं ते बहवे सीहा य जाव' चिल्लला य तं वणदवं निट्ठियं' •उवरयं उवसंतं • विज्झायं पासंति, पासित्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परव्भाह्या समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सव्वओ समंता विप्पसरित्था ।
१८५. तए णं ते बहवे हत्थी' •य हत्थिणीओ य लोट्टया य लोट्टिया य कलभा य कलभिया य तं वणदवं निट्ठियं उवरयं उवसंतं विज्झायं पासंति, पासित्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य • छुहाए य परव्भाह्या समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता दिसोदिसि विप्पसरित्था ।
१८६. तए णं तुमं मेहा ! जुणो जरा-जज्जरिय-देहे सिढिलवलितय'-पिणिद्धगत्ते दुब्बले किलंते जंजिए पिवासिए अत्थामे अवले अपरक्कमे ठाणुकडे' वेगेण विप्पसरिस्सामि त्ति कट्ठु पाए पसारमाणे विज्जुहए विव रययगिरि'-पव्वभारे धरणितलंसि सव्वंगेहिं सण्णवइए ॥
१८७. तए णं तव मेहा ! सरीरगंसि वेयणा पाउव्वभूया —उज्जला' •विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा दुरहियासा । पित्तज्जरपरिगयसरीरे • दाहवक्कंतीए यावि विहरसि ॥

तीय संबन्धे वट्टमाण-तित्तिक्खोवदेस-पदं

१८८. तए णं तुमं मेहा ! तं उज्जलं जाव' दुरहियासं तिण्णि राइंदियाइं वेयणं वेएमाणे विहरित्ता एगं वाससयं परमाउं पालइत्ता इहेव जंवुदीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे मेणियस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुञ्छिसि कुमारत्ताए पच्चायाए ॥
१८९. तए णं तुमं मेहा ! आणुपुव्वेणं गव्वभासाओ निक्खंते' ममाणे उम्मुक्कवालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते मम अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए । तं जइ नाव तुमे मेहा ! तिरिक्खजोणियभावमुवगणं अपडिलद्ध-सम्मत्तरयण-लंभेणं से पाए पाणाणुकंपयाए' •भूयाणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए सत्ताणुकंपयाए •

१. ना० १।१।१७८ ।

२. सं० पा०—निट्ठियं जाव विज्झायं ।

३. सं० पा०—हत्थी जाव छुहाए ।

४. •तया (घ) ।

५. ठाणुकडे (क); ठाणुखंभे (घ) ।

६. रेवय० (क्व०); एकस्यां हस्तलिखितवृत्ता-

वपि 'रेवयगिरि' इति पाठो लभ्यते । वृत्तौ

'रययगिरि' पाठस्य पर्यालोचनमपि कृतमस्ति-

इह प्राग्भारः ईषदवनतखंड उयमानेनास्य

महत्तयैव न वर्णतो रक्तत्वात् तस्य । वाच-

नान्तरे तु मित एवासाविति (वृ) ।

७. सं० पा०—उज्जला जाव दाहवक्कंतीए ।

८. ना० १।१।१८७ ।

९. निक्कंते (ख) ।

१०. सं० पा०—पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा ।

अंतरा चेव संधारिण, नो चेव णं निक्खित्ते । किमंग पुण तुमं मेहा ! इयाणि
'विपुलकुलसमुद्भवे णं'^१ निरुवह्यसरीर-दंतलद्धपंचिदिणं^२ णं एवं उट्ठाण-वल-
वीरिय-पुरिसगार-परक्कममंजुत्ते णं मम अंतिणं मुंडे भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइणं सभाणे समणाणं निगंथाणं राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसम-
यंसि वायणाए^३ •पुच्छणाए परियट्ठणाए^४ • धम्माणुओगचिताए य उच्चारस्स
वा पासवणस्स वा अइगच्छमाणाण य निगगच्छमाणाण य हत्थसंघट्टणाणि य
पायसंघट्टणाणि य^५ •सीससंघट्टणाणि य पोट्टसंघट्टणाणि य कायसंघट्टणाणि य
ओलंडणाणि य पोलंडणाणि य पाय^६ -रय-रेणु-गुंडणाणि य नो सम्मं सहसि
खमसि तितिक्खसि अहियासेसि ?

मेहस्स जाइसरण-पदं

१६०. तए णं तस्स मेहस्स अणगारस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिणं एयमट्ठं
सोच्चा निसम्म मुभेहिं परिणामेहिं पसत्थेहिं अज्जवसाणेहिं लेसाहिं विसुज्झ-
माणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मगण-गवेसणं
करेमाणस्स सण्णिपुव्वे जाइसरणे समुप्पण्णे, एयमट्ठं सम्मं अभिसमेइ ॥

मेहस्स समप्पणपुव्वं पुणो पव्वज्जा-पदं

१६१. तए णं से मेहे कुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे^१ दुगुणाणी-
यसंवेगे^२ आणंदयंसुपुण्णमुहे^३ हरिसवसं^४ •विसप्पमाण हियए^५ • धाराहयकलंबकं
पिव समूससियरोमकूवे^६ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता
एवं वयासी—

अज्जप्पभित्ती णं भंते ! मम दो अच्छीणि मोत्तूणं अवसेसे काए समणाणं
निगंथाणं निसट्ठे त्ति कट्ठु पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ,
वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

१. तुमे (क, ख, ग, घ) ।

२. विपुलकुलसमुद्भवे ण मित्यादौ णकारो
वाक्यालंकारे (वृ) ।

३. पत्तलद्ध^० (क, ख, ग, घ, वृपा) ।

४. सं० पा०—वायणाए जाव धम्माणुओग-
चिताए ।

५. सं० पा०—पायसंघट्टणाणि य जाव
रयरैणुगुंडणाणि ।

६. 'पुव्वजाइसरणे (क, ख, ग, घ, वृ); १०. समूसविय^० (क, ख, घ) ।

^०पुव्वभवे (वृपा); भगवती ११/१७२

सूत्रानुसारेण असौ वृत्तेः पाठभेदो भूले
स्वीकृतः ।

७. दुगुणाणिय^० (क, ख, ग, घ) ।

८. आणंदयंसु^० (ख, ग) ।

९. सं० पा०—हरिसवसं^० । हरिसवसत्ति
अनेन हरिसवसविसप्पमाणहियए त्ति द्रष्टव्यम्
(वृ) ।

इच्छामि णं भंते ! इयाणि दोच्चंपि सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं' •सयमेव सेहावियं सयमेव सिक्खावियं° सयमेव आयार-गोयरं जायामाया-वत्तियं' धम्ममाइक्खियं' ॥

१६२. तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ' •सयमेव मुंडावेइ सयमेव सेहावेइ सयमेव सिक्खावेइ सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-करण°-जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ—एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं निसीयव्वं, एवं तुयट्ठियव्वं, एवं भुजियव्वं एवं भासियव्वं एवं उट्ठाए' उट्ठाय पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमियव्वं ॥

१६३. तए णं से मेहे समणस्स भगवओ महावीरस्स अयमेयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छिता तह गच्छइ तह चिट्ठइ' •तह निसीयइ तह तुयट्ठइ तह भुंजइ तह भासइ तह उट्ठाए उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि° संजमेणं संजमइ ॥

मेहस्स निगगंठवरिया-पदं

१६४. तए णं से मेहे अणगारे जाए—इरियासमिए° •भासासमिए एसण।समिए आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणिआ-समिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तवंभयारी चाई लज्जू धन्ने खंतिखमे जिइदिए सोहिए अणियाणे अप्पुस्सुए अबहिल्लेसे सुसामण्णरए दंते इणमेव निगगंथं पावयण पुरओकाउं विहरंति° ॥

१६५. तए णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स 'तहारूवाणं थेराणं अंतिए' सामाइयमाइयाइं' 'एक्कारस अंगाइं'° अहिज्जइ, अहिज्जिता बहूहि छट्ठमदसमदुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि' अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

मेहस्स भिक्खुपडिमा-पदं

१६६. तए णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ गुणसिलयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१. सं० पा०—मुंडावियं जाव सयमेव ।

इति विशेषणं नास्ति ।

२. °उत्तियं (क, ख, ग, घ) ।

८. अंतिए तहारूवाणं थेराणं (क, ख, ग, घ) ।

३. °माइक्खिउं (क, ग, घ) ।

अत्र लेखने 'अंतिए' पदस्य विपर्ययो जातः

४. सं० पा०—पव्वावेइ जाव जायामाया-वत्तियं ।

इति संभाव्यते । (१।१।२०८) सूत्रे पि स्वीकृतपाठवत् पाठो लभ्यते—

५. उट्ठाय (क, ग, घ) ।

९. °माइयाणि (क, ग); सामातियमाइयाणि (ख) ।

६. सं० पा०—चिट्ठइ जाव संजमेणं ।

७. मं० पा०—अणगार-वण्णओ भाणियव्वो । १०. °अंगाति (ख); एक्कारसंगाइं (घ) ।

वृत्तावयं पाठः उल्लिखितोस्ति, तत्र 'दंते' ११. °खवणेहि (ख) । पू०—ना० १।१।२०१ ।

१६७. तए णं से मेहे अणगारे अणया कयाइ समण भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुणाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

१६८. तए णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुणाए^१ समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

मासियं भिक्खुपडिमं 'अहासुत्तं अहाकणं अहामगं'^२ सम्मं काएणं फामेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्टेइ, सम्मं काएणं फामेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुणाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ।

जहा पढमाए अभिलावो तहा दोच्चाए तच्चाए चउत्थाए पंचमाए छम्मासियाए सत्तमासियाए पढमसत्तराइंदियाए दोच्चसत्तराइंदियाए^३ तच्च सत्तराइंदियाए^४ अहोराइयाए^५ एगराइयाए^६ वि ॥

मेहस्स गुणरयणसंवच्छर-पदं

१६९. तए णं से मेहे अणगारे बारस भिक्खुपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुणाए समाणे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

२००. तए णं से मेहे अणगारे पढमं मासं चउत्थं-चउत्थेणं अणिक्वत्तेणं तवोकम्मेणं, दिया ठाणुकुडुए सूरभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडएणं^७ । दोच्चं मासं छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्वत्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुकुडुए सूरभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडएणं । तच्चं मासं अट्ठमं-अट्ठमेणं अणिक्वत्तेणं तवोकम्मेणं, दिया ठाणुकुडुए सूरभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडएणं ।

१. अणुणाते (ग) ।

५. अहोराइंदियाए (ख, घ) ।

२. स्थानाङ्गं (७।१३) एवं पाठो लभ्यते—

६. एगराइंदियाए (ग, घ) ।

अहासुत्तं अहाअत्थं अहातच्चं अहामगं अहाकणं ।

७. अवाउडतेणं (ख); अवाउडेणं (घ); अप्रावृतेन अविद्यमानप्रावरणेन । स एव वा अप्रावृतः णंकारस्त्वलंकारार्थः (वृ) ।

३. दोच्चा° (ख); बीया° (घ) ।

४. तच्चा° (ख); तीया° (घ) ।

चउत्थं मासं दसमं-दसमेणं अणिक्वित्तेणं तवोकम्मेणं, दिया ठाणुक्कुडुए
सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडएणं ।
पंचमं मासं दुवालसमं-दुवालसमेणं अणिक्वित्तेणं तवोकम्मेणं, दिया ठाणुक्कुडुए
सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडएणं ।
एवं एएणं अभिलावेणं छट्ठे चोदसमं-चोदसमेणं, सत्तमे सोलसमं-सोलसमेणं,
अट्ठमे अट्ठारसमं - अट्ठारसमेणं, नवमे वीसइमं-वीसइमेणं, दसमे बावीसइमं-
बावीसइमेणं, एक्कारसमे चउव्वीसइमं-चउव्वीसइमेणं, बारसमे छव्वीसइमं-
छव्वीसइमेणं, तेरसमे अट्ठावीसइमं-अट्ठावीसइमेणं, चोदसमे तीसइमं-तीसइमेणं,
पंचदसमे बत्तीसइमं-बत्तीसइमेणं, सोलसमे चउत्तीसइमं-चउत्तीसइमेणं—अणि-
क्वित्तेणं तवोकम्मेणं, दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे,
वीरासणेणं' अवाउडएण य ॥

२०१. तए णं से मेहे अणगारे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं अहासुत्तं' °अहाकप्पं अहा-
मग्गं° सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्ठेइ अहासुत्तं अहाकप्पं'
°अहामग्गं सम्मं काएणं फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता° किट्ठेत्ता समणं
भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहि छट्ठमदसमदुवालसेहि
मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणं विहरइ ॥

मेहस्स सरीरवसा-पदं

२०२. तए णं से मेहे अणगारे तेणं 'ओरालेणं' विपुलेणं सस्सिरिएणं पयत्तेणं पग्गहिएणं'
कल्लाणेणं सिवेणं घन्नेणं मंगल्लेणं उदग्गेणं उदारेणं उत्तमेणं महानुभावेणं
तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे' निम्मंसे किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्धे किसे
घमणिसंतए जाए यावि होत्था—जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ, भासं
भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामि त्ति गिलाइ ।
से जहानामए इंगालसगडिया इ वा कट्ठसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा
तिलंडासगडिया' इ वा एरंडसगडिया' इ वा' उण्हे दिन्ना सुक्का'° समाणी

१. वीरासणेण य (क, ख, ग) ।

२. सं० पा०—अहासुत्तं जाव सम्मं ।

३. सं० पा०—अहाकप्पं जाव किट्ठेत्ता ।

४. उरालेणं (ख, ग, घ) ।

५. परिग्गहिएणं (क, ख) ।

६. सुक्खे (क, ग, घ) :

७. तिससगडिया (ख) ।

८. एरंडकट्ठसगडिया (ख) ।

९. भगवती (२।१) सूत्रे स्कन्दकवर्णके कानिचित् १०. सुक्खा (ख, ग) ।

पदानि अधिकानि विपर्ययं प्राप्तानि च
वर्तन्ते, यथा—ओरालेणं विपुलेण पयत्तेणं
पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं घन्नेणं मंगल्लेणं
सस्सिरिएणं उदग्गेणं उदारेणं उत्तमेणं उदा-
रेणं महानुभावेणं० ।

से जहा नामए कट्ठसगडिया इ वा पत्तसग-
डिया इ वा पत्ततिलभंडसगडिया इ वा
एरंडकट्ठसगडिया इ वा इंगालसगडिया इ वा ।

ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, एवामेव मेहे अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेणं, अवचिए मंससोणिणं, ह्यासणे इव भासरासिपरिच्छन्ने तवेणं तेणं तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

मेहस्स विपुलपव्वए अणसण-पदं

२०३. तेणं कालेणं तेणं समाणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे जाव' पुव्वानुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे जेणामेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरुवं ओगगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
२०४. तए णं तस्स मेहस्स अणगारस्स राम्मो पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए' १ चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे' २ समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेण' ३ विपुलेणं सस्सिरीएणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं उदग्गेणं उदारेणं उत्तमेणं महाणुभावेणं तवोक्कमेणं मुक्के लुक्के निम्मंसे किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मा-वणद्धे किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था—जीवंजीवेणं गच्छामि, जीवं-जीवेणं चिट्ठामि, भासं भासित्ता गिलामि, भासं भासमाणे गिलामि', ४ भासं भासिस्सामि त्ति गिलामि । तं अत्थि ता' मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिस-कार' ५-परक्कमे सद्धा-घइ-संवगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसकार'-परक्कमे सद्धा-घइ-संवगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, ताव ता' मे सेयं कल्लं पाउप्प-भायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते' ६ समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणु-ण्णायस्स समाणस्स सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहित्ता गोयमादीए समणे निगंथे निगंथीओ य खामेता तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहित्ता सयमेव मेहघणसण्णिगासं पुढविंसिलापट्टयं पडिलेहित्ता संलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' ७ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव समणे भगवं

१. ओ० १६ ।

२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

३. सं० पा०—उरालेणं तहेव जाव भासं ।

४. तामेव (ख, ग) ।

५. पुरिसक्कार (क, घ) ।

६. पुरिसगार (क) ।

७. ताव (क, ग, घ); तावताव (वृ) ।

८. ना० १।१।२४ ।

९. जलते सूरिए (ख, ग) ।

१०. ना० १।१।२४ ।

महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समणं भगवं महावीरं तिक्वुत्तो आयाहिण-पायाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे' पज्जुवासइ ॥

२०५. 'मेहा इ !' समणे भगवं महावीरे मेहं अणगारं एवं वयासी—से नूणं तव मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अय-मेयारूवे अज्झत्थिए' •चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे • समुप्पज्जित्था -- एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं' तवोक्कमेणं सुक्के जाव' जेणेव' इहं तेणेव हव्व-मागए ।

से नूणं मेहा ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि ।

अहामुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

२०६. तए णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समणे हट्ठुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्वुत्तो आयाहिण-पायाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ', आरुहेत्ता गोयमादोए' समणे निग्गंये निग्गंथोओ य खामेइ, खामेत्ता तहारूवेहिं कडादोहिं थेरेहिं सद्धि विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, दुरुहित्ता सयमेव महघणसण्णिगासं" पुढविशिलापट्ठयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दव्वभसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दव्वभसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभि-मुहे संपलियं कनिसण्णे करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव" सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स जाव सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स । वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्ठु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पुव्वि पि य णं माए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए, मुसावाए अदिण्णादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे माणे माया लोहे पेज्जे दोसे कलहे

१. पंजलियडे (ख); अंजलियडे (घ) ।

७. ना० १।१।१६ ।

२. मेह ति (ख); मेघाइ (घ) ।

८. आरुभेइ (ख); आरुहति (घ) ।

३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

९. गोयमादि (क, ख, ग, घ) ।

४. ना०—१।१।२०४ ।

१०. अतांओ १।५।८३ सूत्रे 'देवसण्णिवाय' इति पदं विद्यते ।

५. पू० ना० १।१।२०४ ।

६. अत्र १।१।२०४ सूत्रस्य 'जेणेव समणे भगवं ११. ओ० सू० २१ ।

महावीरे' अतः पूर्ववर्ती पाठः समर्पितोऽस्ति ।

अण्णवणं पेसुण्णे परपरिवाए अरइरई मायामोसे मिच्छादंसणसल्ले-
पच्चक्खामि ।

इयाणिं पि णं अहं तस्सेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव मिच्छा-
दंसणसल्लं पच्चक्खामि, सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं चउव्विहंपि आहारं
पच्चक्खामि जावज्जीवाए ।

जंपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं^१ •मणुणं मणामं थेज्जं वेस्मासियं सम्मयं
बहुमयं अणुमयं भंडकरंडगसमाणं मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं
पिवासा मा णं चोरा मा णं वाला मा णं दंसा मा णं मसया मा णं वाइय-पित्तिय-
संभिय-सण्णिवाइयं^२ • विविहा रोगायंका परीमहोवसग्गा 'फुसंतीति कट्ठु'^३
एयं^४ पि य णं चरमेहिं^५ उसास-नीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्ठु संलेहणा-
भूसणा-भूसिए^६ भत्तपाण - पडियाइक्खिए पाओवगाए कालं अणवकंखमाणे
विहरइ ॥

२०७. तए णं ते थेरा भगवंतो मेहस्स अणगारस्स अगिलाए वेयावडियं करंति ॥

मेहस्स समाहिमरण-पदं

२०८. तए णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए
सामाइयमाइयाइं^१ एक्कारसअंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं दुवालस-
वरिसाइं सामण्णपरियाणं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं भोसेत्ता,
सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता, आलोइय-पडिक्कते उद्वियसल्ले समाहिपत्ते
अणुपुव्वेणं कालगाए ॥

थेरेहिं मेहस्स आयारभंडसमप्पण-पदं

२०९. तए णं ते थेरा भगवंतो मेहं अणगारं अणुपुव्वेणं कालगयं पासंति, पासित्ता
परिनेव्वाणवत्तियं^१ काउस्सगं करंति, करेत्ता मेहस्स आयारभंडगं गेण्हति,
विउलाओ पव्वयाओ सणियं-सणियं 'पच्चोरुहंति, पच्चोरुहिता'^२ जेणामेव
गुणसिलाए चेइए, जेणामेव समणे भगवं महावीरे, तेणामेव उवागच्छंति,
उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं

१. सं० पा०—पियं जाव विविहा ।

२. इह प्रथमाबहुवचनलोपो इत्यः (भ० वृ) ।

३. फुसंति चिट्ठंति (ग, घ) ।

४. एवं (क, ख, ग, घ) ।

५. चरिमेहिं (घ) ।

६. संलेखनास्पर्शकः (वृ); संलेहणाभूसणाभूसिए
(वृया) ।

७. सामाइयाइं (ख) ।

८. परिनिव्वाणवत्तियं (ख, घ); परिनिव्वाण-
पत्तियं (ग) ।

९. पच्चोरुहंति २ (क) ।

वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभद्दए^१ •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपणे अल्लीणे^२ • विणीए, से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुण्णाए समाणे गोयमाइए समणे निगंथे निगंथीओ य खामेत्ता अम्हेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, सयमेवमेघघणसण्णिगासं पुढविसिलं पडिलेहेइ^३, भत्तपाण-पडियाइक्खिए अणुपुव्वेणं कालगए ।

एस णं देवाणुप्पिया ! मेहस्स अणगारस्स आयारभंडए ॥

गोयमपुच्छाए भगवओ उत्तर-पवं

२१०. भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नामं अणगारे से णं भंते ! मेहे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववण्णे ?
२११. गोयमा ! इ^४ समणे भगवं महावीरे गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभद्दए जाव^५ विणीए, से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाडयमाइयाइ^६ एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, वारस भिक्खु-पडिमाओ गुणरयण-संवच्छरं तवोकम्मं काणं फासेत्ता जाव^७ किट्ठेत्ता, मए अब्भणुण्णाए समाणे गोयमाइ थेरे खामेत्ता, तहारूवेहिं •कडादीहिं थेरेहिं सद्धिं • विपुलं पव्वयं [सणियं-सणियं ?] दुरुहित्ता^८, दव्वसंथारणं, संथरित्ता दव्वसंथारोवगए सयमेव पंचमहव्वए उच्चारत्ता, वारस वासाइं सामणपरि-यागं पाउणित्ता, मासियाणं संलेहणाणं अप्पाणं भूसित्ता, सद्धिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलांइय-पडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहित्ते कालमामे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं बहूइं जायणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जायणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिंद-बंभ-^९ लंतग-महासुक्क-सहस्साराणय-पाणयारणच्चुए तिण्णि य अट्टारसुत्तरे गेवेज्ज-विमाणवाससए बीईवइत्ता विजए महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे ।

१. सं० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए ।

६. मामाडयाइं (ख) ।

२. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्ती 'अल्लीणे' इत्यस्य अनन्तरं 'भद्दए' इति पाठोऽस्ति ।

७. ना० १।१।२०१ ।

३. अत्र पुनर्लेखने अपूर्णो पाठोऽस्ति । अस्य पूर्तये द्रष्टव्यं १।१।२०६ सूत्रम् ।

८. सं० पा०—तहारूवेहिं जाव विपुलं ।

९. अत्र पुनर्लेखने अपूर्णो पाठोऽस्ति । अस्य पूर्तये द्रष्टव्यं १।१।२०६ सूत्रम् ।

४. दि (क, ख, ग, घ) ।

१०. बंमलोक (घ) ।

५. न० १।१।२०६ ।

तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं मेहस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई' ॥

२१२. एस णं भंते ! मेहे देवे ताम्भो देवलोयाम्भो आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वामे सिज्झिहिइ वुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमनं काहिइ ॥

निक्खेव-पर्व

२१३. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव' सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं अप्पोलंभ'-निमित्तं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा —

महुरेहिं निउणेहिं, वयणेहिं चोययंति आयरिया ।
सीसे कहिंचि खलिए, जह मेहमुणिं महावीरो ॥१॥

१. × (क, ख, ग) ।

२. ना० १।१।७ ।

३. अप्पोपालंभ (क्व०); एकस्यां वृत्तिप्रतावपि 'अप्पोपालंभ' इति लिखितमस्ति ।

बीयं अज्भयणं

संघाडे

उक्तेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं पढमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, वितियस्स णं भंते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था — वण्णओ' ॥
३. तस्स' णं रायगिहस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए गुणसिलए नामं चेइए होत्था — वण्णओ' ।
४. तस्स णं गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महं एगं जिण्णुज्जाणे यावि होत्था — विणट्ठदेवउल'-परिसडियतोरणघरे नाणाविहगुच्छ-गुम्म-लया-वल्लि-वच्छच्छाइए' अणेग-वालसय-संकणिज्जे यावि होत्था ॥
५. तस्स णं जिण्णुज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे भग्गकूवे' यावि होत्था ॥
६. तस्स णं भग्गकूवस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए यावि होत्था — किण्हे किण्हाभासे जाव' रम्मे महामेहनिउरंवभूए' बहूहि ख्वेहि य गुच्छेहि य गुम्मेहि य लयाहि य वल्लीहि य तणेहि य कुसेहि' य खण्णुएहि' य संछण्णे पलिच्छण्णे अंतां भुसिरे वाहिं गंभीरे अणेग-वालसय-संकणिज्जे यावि होत्था ॥

१. नगरवण्णओ (क, ग); नगरस्सवण्णओ (ग);

ओ० मू० १ ।

२. तत्थ (ग) ।

३. ओ० मू० २-१३ ।

४. विणट्ठदेवउले (ख, घ) ।

५. ०च्छातिए (ग) ।

६. कूबए (क, ख, ग) ।

७. ओ० मू० ४ ।

८. वाचनान्तरे त्विदमधिकं पठ्यते—पत्तिए पुप्फिण फलिण हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव-अईव उवसोभमाणे चिट्ठइ (वृ) ।

९. कुसएहि (क); कुविएहि (वृपा) ।

१०. खाणुएहि (ख); खत्तएहि (घ, वृपा) ।

धनसत्थवाह-पदं

७. तत्थ णं रायगिहे नयरे धणे नामं सत्थवाहे—अड्ढे दित्ते^१ •वित्थिण्णं-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे बहुदासो-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए बहुधण-बहुजायरुवरया आओग-पओग-संपउत्ते विच्छड्डिय^२ •विउल'-भत्तपाणे ॥
८. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स भद्दा^३ नामं भारिया होत्था—मुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा लक्खण-वज्जण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमागार-कंत-पियदंसणा मुरुवा करयल-परिमिय-तिवलिय^४-वलियमज्झा^५ कुंडलुल्लिहियगंडलेहा कोमुइ-रयणियर^६-पडिपुण्ण-सोमवयणा^७ सिगारागार-चारुवेसा^८ •संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-निउण-जुत्तोवयार-कुसला पासादीया दरिस्सणिज्जा अभिरूवा^९ पडिरूवा वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाया यावि होत्था ॥
९. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स पंथा नामं दासचेडे होत्था—सव्वंगसुंदरंगे मंसो-वचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था ॥
१०. ताए णं से धणे सत्थवाहं रायगिहे नयरे बहूणं नगर-निगम^{१०}-सेट्ठि-सत्थवाहाणं अट्टारसण्ह य सेणिप्पसेणीणं बहूमु कज्जेमु य कुडुवंमु य मंतेमु य जाव^{११} चक्खु-भूए यावि होत्था । नियगस्स वि य णं कुडुवंस्स बहूमु कज्जेमु य जाव चक्खुभूए यावि होत्था ॥

विजयतक्कर-पदं

११. तत्थ णं रायगिहे नयरे विजए नामं तक्करे होत्था—पावचंडाल-रूवे भीमतररुद्ध-कम्मं आरुसिय-दित्त-रत्तनयणे^{१२} खरफरुस-महल्ल-विगय-वीभच्छदाढिए असंपुडियउट्टे उद्धय-पइण्ण-लंवंतमुद्धए भमर-राहुवण्ण निरणुक्कोसे निरणुतावे दारुणे पइभए^{१३} निसंसइए^{१४} निरणुकपे अहीव एगंतदिट्ठीए खुरेव एगंतधाराए गिद्धेव आमिसतल्लिच्छे अग्गिमिव सव्वभक्खी जलमिव सव्वग्गाही उक्कंचण-वंचण-माया-नियडि-कूड-कवड-साइ-संपओग-बहुले चिरनगरविणट्ठ-दुट्ठसीलायार-

१. सं० पा०—दित्ते जाव विउलभत्तपाणे ।

२. विच्छिन्न (ओ० सू० १४) ।

३. पउर (ओ० सू० १४) ।

४. सुभद्दा (ख) ।

५. पसत्थ-तिवली (ओ० सू० १५) ।

६. मज्झा (क, ख, घ) ।

७. रयणियर-विमल (१।१।१७) ।

८. सोमचंदवयणा (ग) ।

९. सं० पा०—चारुवेसा जाव पडिरूवा ।

१०. नियम (क, ग) ।

११. ना० १।१।१६ ।

१२. रत्तनयणे (क) ।

१३. पतिभते (ग) ।

१४. नेसंसत्तिए (ख); निसंसे (वृपा) ।

चरित्ते जूयप्पसंगी मज्जप्पसंगी भोज्जप्पसंगी मंसप्पसंगी दारुणे हिययदारए^१ साहसिए संधिच्छेयए उवहिए विस्संभघाई आलीवग^२-तित्थभेय-लहुहत्थसंपउत्ते परस्स दव्वहरणम्मि निच्चं अणुबद्धे तिक्कवेरे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अइ-गमणाणि य निग्गमणाणि य बाराणि य अवबाराणि य छिंडीओ य खंडीओ य नगरनिद्धमणाणि य संबट्टणाणि य निव्वट्टणाणि य जूयखलयाणि य पाणागाराणि य वेसागाराणि य तक्करट्टाणाणि य तक्करघराणि य सिघाडगाणि य तिगाणि य चउक्काणि य चच्चराणि य नागघराणि य भूयघराणि य जक्खदेउलाणि य सभाणि य पवाणि य पणियसालाणि य सुन्नघराणि य आभोएमाणे मग्गमाणे गवेसमाणे, बहुजणस्स छिद्देसु य विसमेसु य विहुरेसु^३ य वसणेसु य अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जण्णेसु य पव्वणीसु य मत्तपमत्तस्स य वक्खित्तस्स य वाउलस्स य सुहियस्स य दुहियस्स य विदेसत्थस्स य विप्पवसियस्स य मग्गं च छिद्दं च विरहं^४ च अंतरं च मग्गमाणे गवेसमाणे एवं च णं विहरइ । वहिया वि य णं रायगिहस्स नगरस्स आरामेसु य उज्जाणेसु य वावि-पोक्खरणि-दीहिय-गुजालिय-सर-सरपंतिय सरसरपंति-यासु य जिणुज्जाणेसु य भग्गकूवेसु^५ य मालुयाकच्छएसु य सुसाणेसु य 'गिरिकंदरेसु य लेणेसु य'^६ उवट्टाणेसु य बहुजणस्स छिद्देसु य जाव अंतरं च मग्गमाणे गवेसमाणे एवं च णं विहरइ ॥

भद्दाए संताणमणोरह-पवं

१२. तए णं तीसे भद्दाए भारियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए^७ •चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे^८ समुप्पज्जित्था—अहं धणेणं सत्थवाहेणं सद्धि बहूणि वासाणि सह-फरिस-रस-गंध-रूवाणि माणुस्सगाइं कामभोगाइं पच्चणुब्भवमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं^९ वा पयामि^{१०} ।

तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ^{११}, •संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ

१. जणहियाकारए (ट्टपा) ।

२. आलियग (क, ख) ।

३. विहुरेसु (क, ख, घ) ।

४. विहरं (ख, ग) ।

५. भग्गकूवएसु (क, ख, घ) ।

६. •लेणेसु य देवउलेसु य (क); गिरिकंदरलेण (ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

८. × (क, ग, घ) ।

९. दारिगं (क, ख) ।

१०. पयायामि (ग) ।

११. सं० पा०—अम्मयाओ जाव सुलद्धे ।

णं ताम्रो अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताम्रो अम्मयाओ, • सुलद्धे णं
माणुस्सए जम्मजीवियफले तासिं अम्मयाणं, जासिं मण्णे नियगकुच्छिमंभूयाइं
थणदुद्ध-लुद्धयाइं महुरसमुल्लावगाइं मम्मणपयंपियाइं थणमूला' कक्खदेसभागं
अभिसरमाणाइं' मुद्धयाइं थणयं पियंति,' तम्रो य कोमलकमलोवमेहि
हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंग'-निवेसियाणि देंति समुल्लावए पिए सुमहुरे पुणो-
पुणो मंजुलप्पभणिण। 'तं णं अहं' अघण्णा अपुण्णा अकयलक्खणा एत्तो
एगमवि न पत्ता । तं सेयं मम कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे
सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते घणं सत्थवाहं आपुच्छित्ता घणं
सत्थवाहेणं अब्भणुण्णाया समाणी सुबहुं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं
उवक्खडावेत्ता सुबहुं पुप्फ-वत्थ'-गंध-मल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्त-
नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-महिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा जाइं इमाइं
रायगिहस्स नयरस्स बहिया नागाणि य भूयाणि य जक्खाणि य इंद्राणि य
खंदाणि य रुद्धाणि य सिवाणि य वेसमणाणि य, तत्थ णं बहूणं नागपडिमाण
य जाव वेसमणपडिमाण य महुरिहं पुप्फच्चणियं करेत्ता जन्तुपायपडियाए एवं
वइत्तए'—जइ णहं' देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारियं वा पयामि', 'तो णं'
अहं तुभं जायं च दायं च भायं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेमि त्ति कट्ठु
उवाइयं उवाइत्तए'—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव'
उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणामेव घणे सत्थवाहे
तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—

एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तुभेहिं सद्धिं बहूइं वासाइं" •सह-करिस-रस-
गंध-रूवाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं पच्चणुब्भवमाणी विहरामि, नो चेव णं
अहं दारगं वा दारियं वा पयामि । तं घण्णाओ णं ताम्रो अम्मयाओ जाव
कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंग-निवेसियाणि • देंति समुल्लावए

१. थणमूले (क) ।

२. अइसर° (ख, ग) ।

३. 'अंतगड' सूत्रे (३।६।२६) 'मुद्धयाइ पुणो
य' इतिपाठोऽस्ति । तद्वृत्तिकृता मुग्धकानि—
अस्यव्यक्तविज्ञानानि भवन्तीति गम्यते,
इति क्रियाया अध्याहारः कृतः ।
'निरयावलिआओ' सूत्रे (३।४) 'पण्हयंति
पुणो य' इति पाठो विद्यते ।

४. उच्छंगे (क, ख) ।

५. अहं णं (क, ख, ग) ।

६. ना० १।१।२४ ।

७. × (ख, ग, घ) ।

८. उवाइत्तए (क) ।

९. ण अहं (घ) ।

१०. पयायामि (क, ग) ।

११. तेणं (क, ख, ग) ।

१२. उववाइत्तए (क) ।

१३. ना० १।१।२४ ।

१४. सं० पा०—वासाइं जाव देंति ।

सुमहुरे पिए पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए । तं णं अहं अहण्णा अपुण्णा अकय-
लक्खणा एत्तो एगमवि न पत्ता । तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुभेहि
अब्भणुण्णाया समाणो विपुलं असणं^१ •पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता जाव
अक्खयणिहिं च^२ •अणुवड्ढेमि उवाइयं करित्तए ॥

१३. तए णं घणे सत्थवाहे भइं भारियं एवं वयासी-ममं^३ पिय णं देवाणुप्पिए ! एस
चेव मणोरहे—‘कहं णं’^४ तुमं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जासि ?—भइए
सत्थवाहीए एयमट्ठं अणुजाणइ ॥

१४. तए णं सा भइए सत्थवाही घणेणं सत्थवाहेणं अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठुट्ठ-
चित्तमाणंदिया जाव^५ हरिसवस-विसप्पमाण-हियया विपुलं असण-पाण-खाइम-
साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता सुबहुं पुप्फ-वत्थ^६ गंधमल्लालंकारं गेण्हइ,
गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता रायगिहं नयरं मज्झमज्झणं
निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फ^७ •वत्थ-गंध •मल्लालंकारं ठवेइ, ठवेत्ता पुक्खरिणि
ओगाहेइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलकीडं करेइ, करेत्ता
ण्हाया कयवलिकम्मा उल्लपडसाडिगा जाइं तत्थ उप्पलाइं^८ •पउमाइं कुमुयाइं
णलिणाइं सुभगाइं सोगंधियाइं पोंडरीयाइं महापोंडरीयाइं सयवत्ताइं •
सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता
तं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लं [मल्लालंकारं ?] गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणामेव नागघराए
य जाव^९ वेसमणघराए य तेणामेव^{१०} उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तत्थ णं
नागपडिमाण य जाव^{११} वेसमणपडिमाण य आलोए पणामं करेइ. ईसि
पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता नागपडिमाओ
य जाव वेसमणपडिमाओ य लोमहत्थएणं^{१२} पमज्जइ, पमज्जित्ता उदगधाराए
अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता पम्हल-सूमालाए गंधकासाइए गाय्हाइं लूहेइ. लूहेत्ता
महरिहं^{१३} ‘वत्थारुहणं च मल्लारुहणं च गंधारुहणं च वण्णारुहणं’^{१४} च करेइ,
करेत्ता धूवं डहइ, डहित्ता जन्नुपायपडिया पंजलिउडा एवं वयासी —

१. सं० पा०—असणं जाव अणुवड्ढेमि ।

२. मम (ग) ।

३. कहणं (क, घ); कह णं (ख) ।

४. ना० १।१।१६ ।

५. × (ख, ग, घ) ।

६. सं० पा०—पुप्फ जाव मल्लालंकारं ।

७. सं० पा०—उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ।

८. ना० १।२।१२ ।

९. तेणेव (क, ख, ग, घ) ।

१०. ना० १।२।१२ ।

११. •हत्थेणं (ख, ग, घ) ।

१२. रायपसेणइय (२६१) सूत्रे असौ पाठः

किंचिद् भेदेन लभ्यते—पुप्फारुहणं मल्ला-

रुहणं चुण्णारुहणं वत्थारुहणं आभरणारुहणं ।

जइ णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि तो णं अहं जायं च' •दायं च भायं च अक्खयणिहि च° अणुवड्ढेमि त्ति कट्ठु उवाइय करेइ, करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसाएमाणी' •विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी एवं च णं° विहरइ । जिमिय'•भुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयता चोक्खा परम° सुइभूया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया ॥

१५. अदुत्तरं च णं भद्दा सत्थवाही चाउद्सट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमामिणीमु विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेइ, उवक्खडेत्ता बह्वे नागा य जाव' वेसमणा य उवायमाणी नमंसमाणी जाव एवं च णं विहरइ ॥

भद्दाए देवदिन्न-पुत्तपसव-पदं

१६. तए णं सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ' केणइ कालंतरेणं आवण्णमत्ता जाया यावि होत्था ॥
१७. तए णं तीसे भद्दाए सत्थवाहीए [तस्स गवभस्स ?]' दोमु मामेमु वीइक्कंतेमु तइए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव' कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, जाओ णं विउलं अमणं पाणं खाइमं साइमं सुवहुयं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-महिलियाहि' सड्ढि संपरिवुडाओ रायगिहं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता पोक्खरिणि ओगाहेंति, ओगाहित्ता ण्हायाओ कयवलिकम्माओ मव्वालंकार-विभूसियाओ विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणीओ' •विसाए-माणीओ परिभाएमाणीओ° परिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव धणं सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम तस्स गवभस्स'

१. सं० पा०—जायं च जाव अणुवड्ढेमि ।

गवभस्स' इति पाठोक्ति । तेनात्रापि 'तस्स

२. सं० पा०—आसाएमाणी जाव विहरइ ।

गवभस्स' इति पाठो युज्यते ।

३. सं० पा०—जिमिय जाव सुइभूया ।

७ ना० १।२।१२ ।

४. ना० १।२।१२ ।

८. १।२।१२ सूत्रे 'महिलाहि' पाठो विद्यते ।

५. कयाइं (क) ।

९. सं० पा०—आसाएमाणीओ जाव परिभुंजे-

६. १।१।३३ सूत्रे 'तइए मासे वट्टमाणे तस्स

माणीओ ।

गवभस्स दोहलकालसमयसि' इति पाठो १०. ना० १।१।२४ ।

विद्यते । प्रस्तुत सूत्रे पि किंचिदग्रे 'तस्स ११. सं० पा०—गवभस्स जाव विणेंति ।

• दोसु मासेसु वीइक्कंतेसु तइए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—
घण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव दोहलं ° विणेंति । तं इच्छामि णं देवाणु-
प्पिया ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणी ° • विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं
सुबहुयं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय जाव दोहलं ° विणित्तए ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

१८. तए णं सा भद्दा घणेणं सत्थवाहेणं अब्भणुण्णाया समाणी हट्टुट्टु-चित्तमाणं-
दिया जाव° हरिसवस-विसप्पमाणहियया विपुलं 'असणं पाणं खाइमं साइमं
उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता जाव° धूवं° करेइ, करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव
उवागच्छइ ॥
१९. तए णं ताओ मित्त-नाइ°-•नियग-सयण-संबंधि-परियण°-नगरमहिलाओ भद्दं
सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसियं करेंति ॥
२०. तए णं सा भद्दा सत्थवाही ताहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-
नगरमहिलियाहिं° सद्धि तं विपुलं असणं° • पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणी
विसाएमाणी परिभाएमाणी° परिभुंजेमाणी दोहलं विणेइ, विणेत्ता जामेव
दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥
२१. तए णं सा भद्दा सत्थवाही संपुण्णदोहला जाव° तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ॥
२२. तए णं सा भद्दा सत्थवाही नवण्हं मासाणं वट्टपडिपुण्णाणं अट्टट्टमाण य राइं-
दियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं जाव° दारगं पयाया ॥
२३. तए णं तस्स दारगस्स अस्मापियरो पढमे दिवसे जायकम्मं करेंति, तहेव जाव°

१. सं० पा०—समाणी जाव विहरित्तए (क, ख, ग, घ); यद्यपि पाठसंगोषनप्रयुक्तेषु सर्वेष्वपि आदर्शेषु 'विहरित्तए' इति पाठो लभ्यते किन्तु अर्थमीमांसया नासी समीचीनः प्रतिभाति । नास्य केनापि पाठेन पूर्तिर्जायते । संभवतो लिपिदोषेण 'विणित्तए' इत्यस्य 'विहरित्तए' इति रूपेण परिवर्तनं जातम् । एतस्य पाठस्य स्वीकारेऽस्य पूर्तिरपि जायते । स्तवकादर्शे 'विणित्तए' इति पदस्यार्थः कृतोस्ति ।

२. ना० १।१।१६ ।

३. ना० १।२।१४ ।

४. असणं जाव उल्लपडसाडिगा जेणेव नागघरए जाव धूवं (क, ख, ग, घ) । दोहदस्य उत्पत्तिः, पत्युस्तस्य निवेदनं, तस्यपूर्तिश्च—

एतेषु त्रिष्वपि स्थानेषु पाठस्य समानता युज्यते, किन्तु दोहदस्य पूर्तिविषयकः पाठस्ततो भिन्नोस्ति । अत्र अनेकधा जाव शब्दः प्रयुक्तोस्ति । तदनुसारेण पाठपूरणे 'पणामं करेइ' इत्यस्य पदस्य द्विधा प्रयोगो जायते, किन्तु प्रतिप्रामाण्यात् अनन्यगतिकैरस्माभिरन्याधाराभावेन यथा लब्ध एव पाठः स्वीकृतः ।

५. सं० पा०—नाइ जाव नगरमहिलाओ ।

६. १२ सूत्रे—परियण-महिलाहिं । १७ सूत्रे—परियण-महिलियाहिं । १८ सूत्रे—परियण-नगरमहिलियाहिं ।

७. सं० पा०—असणं जाव परिभुंजेमाणी ।

८. ना० १।१।७२ ।

९. ना० १।१।२० ।

१०. ना० १।१।८१ ।

विपुलं' असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, तहेव' मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं भोयावेत्ता अयमेयारूवं गोणं गुणनिष्फणं नामधेज्जं करेति — जम्हा णं अम्हं इमे दारए बहूणं नागपडिमाण य जाव' वेसमणपडिमाण य उवाइयलद्धे', तं होउ णं अम्हं इमे दारए देवदिन्ने नामेणं ।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेति देवदिन्ने त्ति ॥

२४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढेति ॥

देवदिन्नस्स कीडा-पदं

२५. तए णं से पंथए दासचेडए देवदिन्नस्स दारगस्स बालग्गाही जाए, देवदिन्नं दारगं कडीए गेण्हइ, गेण्हित्ता बहूहिं डिभएहि य डिभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धि संपरिवुडे अभिरमइ ॥
२६. तए णं सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ देवदिन्नं दारयं ण्हायं कयवलिकम्मं कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्तं सब्बालंकारविभूसियं करेइ, करेत्ता पंथयस्स दासचेडगस्स हत्थयंसि दलयइ ॥
२७. तए णं से पंथए दासचेडए भद्दाए सत्थवाहीए हत्थाओ देवदिन्नं दारगं कडीए गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, बहूहिं डिभएहि य' डिभि-याहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य' कुमारियाहि य सद्धि संपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं एगंते ठावेइ, ठावेत्ता बहूहिं डिभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धि संपरिवुडे पमत्ते' यावि बिहरइ ॥

देवदिन्नस्स अपहार-पदं

२८. इमं च णं विजए तक्करे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि [अइगमणाणि य निग्गम-णाणि य ?] वाराणि य अववाराणि य तहेव जाव' सुन्नघराणि य आभोएमाणे मग्गेमाणे गवेसमाणे जेणेव देवदिन्ने दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं सब्बालंकारविभूसियं पासइ, पासित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणालंकारेसु मुच्छिए गट्टिए गिट्ठे अज्झोववण्णे पंथयं दासचेडयं पमत्तं पासइ, पासित्ता दिसालोयं करेइ, करेत्ता देवदिन्नं दारगं गेण्हइ, गेण्हित्ता

१. तिपुलं (ख) ।

२. पू०—ना० १।१।८१ ।

३. ना० १।२।१२ ।

४. ओवाइय० (क) ।

५. सं० पा०—डिभएहि य जाव कुमारियाहि

६. पमग्गे (ख) ।

७. ना० १।२।११ ।

कक्खंसि अल्लियावेइ', अल्लियावेत्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ', पिहेत्ता सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं' रायगिहस्स नगरस्स अरुद्धारेणं' निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव जिणुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारयं जीवियाओ ववरोवेइ, ववरोवेत्ता आभरणालंकारं गेण्हइ, गेण्हित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजठं भग्गकूवए पक्खिवइ', पक्खिवित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छयं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता निच्चले निप्फंदे तुसिणीए दिवसं खवेमाणे' चिट्ठइ ॥

देवदिन्नस्स गवेसणा-पवं

२६. तए णं से पंथए दासवेडए' तओ मुहुत्तंतरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं तंसि ठाणंसि अपासमाणे रोयमाणे कंदमाणे [विलवमाणे ?]' देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ । देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! भट्ठा सत्थवाहो देवदिन्नं दारयं ण्हायं जाव' सव्वालंकारविभूसियं मम हत्थंसि" दलयइ । तए 'णं अहं' देवदिन्नं दारयं कडीए गिण्हामि", *गिण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमामि, बहूहि डिभएहि य डिभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं एगंते ठावेमि, ठावेत्ता बहूहि डिभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे पमत्ते यावि विहरामि ।

तए णं अहं तओ मुहुत्तंतरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं तंसि ठाणंसि अपासमाणे रोयमाणे कंदमाणे [विलवमाणे ?] देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समंता° मग्गण-गवेसणं करेमि । तं न नज्जइ णं सामी ! देवदिन्ने दारए केणइ नीते" वा अवहिते वा अक्खित्ते वा—पायवडिए धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं निवेदेइ ॥

१. अल्लियावेइ (क, ख) ।

२. पेहेइ (क) ।

३. वेइयं (क, ग) ।

४. अववारेण (क) ।

५. निक्खिवइ (ग) ।

६. क्षेपयन् (वृ) ।

७. वेडे (क, ख, घ) ।

८. ठविए (ख) ।

९. १।२।३४ सूत्रे 'रोयमाणे जाव विलवमाणे'

इति पाठोस्ति । अत्रापि तथैव युज्यते ।

१०. ना० १।२।२६ ।

११. हत्थे (घ) ।

१२. णं हं (ख, ग) ।

१३. सं० पा०—गिण्हामि जाव मग्गणगवेसणं ।

१४. नितिए (क, ग) ।

३०. तए णं से घणे सत्थवाहे पंथयस्स दासचेडगस्स एयमट्ठं सोच्चा निसम्म' तेण य महया पुत्तसोएणाभिभूए समाणे परसु'-णियत्ते व चंपगपायवे 'वसत्ति' घरणी-यलंसि सव्वंगेहि सण्णिवइए ॥
३१. तए णं से घणे सत्थवाहे तम्हो मुहुत्तंतरस्स आसत्थे पच्चागयपाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वम्हो समंता मग्गण-गवेसणं करेइ । देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइं वा पउत्ति वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता महत्थं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव नगरगुत्तिया' तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता तं महत्थं पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए देवदिन्ने नामं दारग इट्ठे जाव' उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तए णं सा भद्दा देवदिन्नं ण्हाय' सव्वालंकारविभूसियं पंथगस्स' हत्थे दलाइ जाव' पाय-वडिए तं मम निवेदेइ । तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वम्हो समंता मग्गण-गवेसणं कयं ॥
३२. तए णं ते नगरगोत्तिया घणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा सण्णद्ध-वद्ध-वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया" *पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिध-पट्टा° गहियाउह-पहरणा घणेणं सत्थवाहेणं सद्धिं रायगिहस्स नगरस्स 'बहुसु अइगमणेसु'" य जाव' पवासु य मग्गण-गवेसणं करेमाणा रायगिहाम्हो नगराम्हो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरंगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजडं पासंति, पासित्ता हा हा अहो ! अकज्जमिति कट्टु देव-दिन्नं दारगं भग्गकूवाम्हो उत्तारेंति, घणस्स सत्थवाहस्स हत्थे दलयंति ॥

विजयतक्करस्स निग्गह-पदं

३३. तए णं ते नगरगुत्तिया विजयस्स तक्करस्स पयमग्गमणुगच्छमाणा" जेणेव

१. निसम्मा (क, ख, ग) ।

२. परिसुणियत्ते (ख, घ) ।

३. नगरगोत्तिए (क) ।

४. ना० १।१।१०६ ।

५. पू०—ना० १।२।२६ ।

६. पंथदासस्स (ग) ।

७. ना० १।२।२७, २६ ,

८. करेइ (क) ।

९. × (ग, वृपा) ।

१०. सं० पा०—पट्टिया जाव गहियाउहपहरणा ।

११. बहूणि अइगमणाणि (क, ख, ग, घ) ।

यद्यपि १।१।११ सूत्रे 'अइगमणाणि य' पाठो विद्यते, किन्तु अत्र 'मग्गण-गवेसणं' इति पदस्य संबंधेन सप्तम्यन्तो युज्यते, यथा पवासु । इदं पदं द्वितीयान्तं केन कारणेनात्र कृतमथवा संक्षेपीकरणे गृहीत-मिति न ज्ञातुं शक्यते ।

१२. ना० १।२।११ ।

१३. पयमग्गमणुगच्छमाणा २ (क); पायमग्ग (घ) ।

मालुयाकच्छं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता मालुयाकच्छं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसिता विजयं तक्करं ससक्खं सहोढं सगेवेज्जं जीवग्गाहं' गेण्हंति, गेण्हिता अट्ठि-मुट्ठि-जाणुकोप्पर-पहार-संभग्ग-महिय-गत्तं करंति, करेत्ता अवउड' बंधणं करंति, करेत्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणं गेण्हंति, गेण्हिता विजयस्स तक्करस्स गीवाए बंधंति, बंधिता मालुयाकच्छगाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता रायगिहं नयरं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसिता रायगिहे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु कसप्पहारे य 'छिवापहारे य लयापहारे' य निवाएमाणा-निवाएमाणा छारं च धूलि च कयवरं च उवरि पकिरमाणा-पकिरमाणा महया-महया सहेणं उग्घोसेमाणा एवं वयंति—एस णं देवाणु-प्पिया ! विजए नापं तक्करे'—●पावचंडालरूवे भीमतररुद्धकम्मे आरुसिय-दित्त-रत्तनयणे खरफरुस-महल्ल-विगय-वीभच्छदाडिअ संपुडियउट्टे उद्धुय-पइण्ण-लंबंतमुद्धए भमर-राहुवण्णे निरणुक्कोसे निरणुतावे दारुणे पइभए निसंसइए निरणुकपे अहीव एगंतदिट्ठीए खुरेव एगंतधाराए गिद्धेव आमिस-तल्लिच्छे अग्गिमिव ° सव्वभक्खी बालघायाए वालमारए ।

तं नो खलु देवाणुप्पिया ! एयस्स केइ राया वा रायमच्चे वा अवरज्झइ, नन्तथ' अप्पणो सयाइं कम्माइं अवरज्झंति त्ति कट्ठु जेणामेव चारगसाला तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छिता हडिबंधणं करंति, करेत्ता भत्तपाणनिरोहं करंति, करेत्ता तिसंभं कसप्पहारे य' °छिवापहारे य लयापहारे य ° निवाए-माणा विहरंति ॥

देवदिन्नस्स नीहरण-पदं

३४. तए णं से धणे सत्यवाहे मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धि रोय-माणे' °कंदमाणे ° विलवमाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरस्स' महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं नीहरणं करेति, करेत्ता वहूइं लोइयाइं मयगकिच्चाइं' करेति, करेत्ता केणइ कालंतरेणं अवगयसोए जाण यावि होत्था ॥

१. गीवग्गाहं (घ) ।

२. अवउड (ख, घ); अवउडग (वृपा) ।

३. लयप्पहारे ° (क); लयापहारे य छिवापहारे य (ख, ग, घ); असौ पाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतः । १।२।४५ सूत्रेपि अयमेव क्रमो लभ्यते ।

४. पयरमाणा (क) ।

५. सं० पा०—तक्करे जाव गिद्धे विव आमिस-भक्खी ।

६. वाचनान्तरेत्विदं नाधीयते (वृ) ।

७. सं० पा०—कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा ।

८. सं० पा०—रोयमाणे जाव विलवमाणे ।

९. सरीरयस्स (क) ।

१०. मयकिच्चाइं (क) ।

धणस्स निगह-पदं

३५. तए णं से धणे सत्थवाहे अण्णया कयाइं लहुसयंसि रायावराहंसि संपलित्ते' जाए यावि होत्था ॥
३६. तए णं ते नगरगुत्तिया धणं सत्थवाहं गेण्हंति, गेण्हत्ता जेणेव चारए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चारणं अणुप्पवेसंति, अणुप्पवेसित्ता विजएणं तक्करेणं सद्धि एगयम्हो हडिबधणं करेति ॥

धणस्स घराओ आहाराणयण-पदं

३७. तए णं सा भद्दा भारिया कल्लं पाउप्पभाणं रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेइ, 'भोयणपिडयं करेइ', करेत्ता भोयणाइं पक्खिवइ, लंछिय-मुहियं करेइ, करेत्ता एणं च सुरभि [वर?] वारिपडिपुण्णं दगवारयं करेइ, करेत्ता पंथयं दास-चेडयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं गहाय चारगसालाए धणस्स सत्थवाहस्स उवणेहि ॥
३८. तए णं से पंथए भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे तं भोयणपिडयं तं च सुरभिवरवारिपडिपुण्णं दगवारयं गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडि-णिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता राहगिहं नगरं मज्झमज्झेणं जेणेव चारगसाला जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणपिडयं ठवेइ, ठवेत्ता उल्लंछेइ, उल्लंछेत्ता भोयणं गेण्हइ, गेण्हित्ता भायणाइं ठावइ', ठावित्ता हत्थ-सोयं दलयइ, दलयित्ता धणं सत्थवाहं तेणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं परिवेसेइ ॥

विजयतक्करेण संविभागमगण-पद

३९. तए णं से विजए तक्करे धणं सत्थवाहं एवं वयासी—तुम्हे णं देवाणुप्पिया ! ममं एयाओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेहि ॥

धणस्स तन्मिसेध-पदं

४०. तए णं से धणे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वयासी—अवियाइं अहं विजया ! एयं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं कायाण वा सुणगाण वा दलएज्जा, उक्कुल्लियाए वा णं छड्डेज्जा, नो चेव णं तव पुत्तघायगस्स पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडणीयस्स^५ पच्चामित्तस्स एत्तो विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेज्जामि^४ ॥

१. संपलित्ते (क, वृ) ।

२. ना० १।१।२४ ।

३. भोयणं पिडए करेइ (क, वृपा); °पिडयं भरेइ (वृपा) ।

४. धावइ (ल); धोवइ (ग, घ) ।

५. पडिणीयस्स (ग, घ) ।

६. करेज्जासि (क, ग) ।

४१. तए णं से घणे सत्थवाहे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारेइ, तं पंथयं पडिविसज्जेइ ॥

४२. तए णं से पंथए दासचेडए तं भोयणपिडगं^१ गिण्हइ, गिण्हित्ता जामेव दिंसि पाउब्भूए तामेव दिंसि पडिगए ॥

आवाधितस्स धणस्स विजयतक्करावेक्खा-पदं

४३. तए णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारियस्स समाणस्स उच्चार-पासवणे णं उब्वाहित्था ॥

४४. तए णं से घणे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वयासी—एहि ताव विजया^२ ! एगंतमवक्कमामो^३ 'जेणं अहं'^४ उच्चार-पासवणं परिट्टवेमि ॥

विजयतक्करेण तन्निसेध-पदं

४५. तए णं से विजए तक्करे धणं सत्थवाहं एवं वयासी—तुज्झं^५ देवाणुप्पिया ! विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारियस्स अत्थि उच्चारे वा^६ पासवणे वा, ममं णं देवाणुप्पिया ! इमेहिं बह्महिं कसप्पहारेहि यं^७ *छिवापहारेहि यं^८ लयापहारेहि यं तण्हाए यं छुहाए यं परज्झमाणस्स^९ नत्थि केइ उच्चारे वा^{१०} पासवणे वा । तं छदेणं तुमं देवाणुप्पिया ! एगंते अवक्कमित्ता उच्चार-पासवणं परिट्टवेहि ॥

४६. तए णं से घणे सत्थवाहे विजएणं तक्करेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

घणेण पुणो कथिते विजएण संविभागमगण-पदं

४७. तए णं से घणे सत्थवाहे मुहुत्तंतरस्स वलियतरागं उच्चार-पासवणेणं उब्वाहि-उज्जमाणे विजयं तक्करं एवं वयासी—एहि ताव विजया^{११} ! *एगंतमवक्कमामो जेणं अहं उच्चार-पासवणं परिट्टवेमि^{१२} ॥

४८. तए णं से विजए तक्करे धणं सत्थवाहं एवं वयासी—जइ णं पुमं देवाणुप्पिया ! ताम्मो विपुलाम्मो असण-पाण-खाइम-साइमाम्मो संविभागं करेहि, तम्मोहं तुमेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमामि ॥

४९. तए णं से घणे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वयासी—'अहं णं'^{१३} तुब्भं^{१४} ताम्मो विपुलाम्मो असण-पाण-खाइम-साइमाम्मो संविभागं करिस्सामि ॥

१. भोयणपडिगहं (ख) ।

२. विजया एत्तो (क) ।

३. जाव णं अहं ताव (क); जा णं ° (ख, घ) ।

४. तुज्झ ण (क) ।

५. × (क, ख, ग, घ) ।

६. सं० पा०—कसप्पहारेहि यं जाव लयापहारेहि ।

७. परज्झमाणस्स (क, घ) ।

८. × (क, ख) ।

९. सं० पा०—विजया जाव अवक्कमामो ।

१०. अहणं (क, घ) ;

११. तुम (घ) ।

५०. तए णं से विजए तक्करे धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥
 ५१. तए णं से 'धणे सत्थवाहे विजाण तक्करेण' सद्धि एगंते अवक्कमइ, उच्चार-
 पासवणं परिट्ठवेइ, आयंते चोक्खे परमसुइभूए तमेव ठाणं उवसंकमिता णं
 विहरइ ॥

धणेण विजयस्स संविभागदाण-पदं

५२. तए णं सा भद्दा कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि
 दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं' •पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेइ, भोयण-
 पिडयं करेइ, करेत्ता भोयणाइं पक्खवइ, लंछिय-मुद्दियं करेइ, करेत्ता एगं च
 मुरभि [वर ?] वारिपडिपुण्णं दगवारयं करेइ, करेत्ता पंथयं दासचेडयं सद्दावेइ,
 सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं विपुलं असणं पाणं
 खाइमं साइमं गहाय चारगसालाए धणस्स सत्थवाहस्स उवणेहि ॥
 ५३. तए णं मे पंथए भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ते समाने हट्ठुट्ठे तं भोयणपिडयं
 तं च मुरभिवरवारिपडिपुण्णं दगवारयं गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ
 पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमिता रायगिहं नगरं मज्झमज्झेणं जेणेव चारगसाला
 जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणपिडयं ठवेइ, ठवेत्ता
 उल्लंछेइ, उल्लंछित्ता भोयणं गेण्हइ, गेण्हित्ता भायणाइं ठावइ, ठावित्ता हत्थ-
 सोयं दलयइ, दलयित्ता धणं सत्थवाहं तेणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं •
 परिवेसेइ ॥
 ५४. तए णं से धणे सत्थवाहे विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-
 खाइम-साइमाओ संविभागं करेइ ॥

पंथगस्स भद्दाए साटोवं तन्निवेदण-पदं

५५. तए णं से धणे सत्थवाहे पंथगं दासचेडयं विसज्जेइ ॥
 ५६. तए णं से पंथए भोयणपिडयं गहाय चारगाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमिता
 रायगिहं नयरं मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव भद्दा सत्थवाही तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भद्दं [सत्थवाहि ?] एवं वयासी—एवं खलु देवाणु-
 प्पिए ! धणे सत्थवाहे तव पुत्तघायगस्स' •पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स
 पडणीयस्स • पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ
 संविभागं करेइ ॥

भद्दाए कोव-पदं

५७. तए णं सा भद्दा सत्थवाही पंथगस्स दासचेडगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा

४. विजए धणेण सत्थवाहेण (क, ख, ग) ।

१. ना० १।१।२४ ।

२. सं० पा०—असणं जाव परिवेसेइ ।

१. सं० पा०—पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ।

आसुरुत्ता रुद्धा' •कुविया चंडिकिया° मिसिमिसेमाणी घणस्स सत्थवाहस्स पओसमावज्जइ ॥

घणस्स चारमुत्ति-पदं

५८. तए णं से घणे सत्थवाहे अणया कयाइं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परि-यणेणं सएण य अत्थसारिणं रायकज्जाओ अप्पाणं मोयावेइ, मोयावेत्ता चारग-सालाओ पडिणक्खमइ, पडिणक्खमित्ता जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता अलंकारियकम्मं कारवेइ' जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता अहघोयमट्टियं' गेण्हइ, गेण्हित्ता पोक्खरिणीं ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे' •कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए° रायगिहं नगरं अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

घणस्स सम्माण-पदं

५९. तए णं तं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासित्ता रायगिहे नयरे वहवे नगर'-निगम'-सेट्ठि-सत्थवाह-पभिइओ आढंति' परिजाणंति सवकारेति सम्माणंति अब्भुट्ठंति सरिरकुसलं पुच्छंति ॥

६०. तए णं से घणे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ ।
जावि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तंजहा—दासा इ वा पेस्सा इ वा भयगा' इ वा भाइल्लगा' इ वा, सा वि य णं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पायवडिया खेमकुसलं पुच्छइ ।
जावि य से तत्थ अब्भंतरिया" परिसा भवइ, तंजहा—माया इ वा पिया इ वा भाया इ वा भइणी इ वा, सावि य णं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, आस-णाओ अब्भुट्ठेइ, कंठाकंठियं अवयासिय" वाह-प्पमोक्खणं करेइ ॥

भट्ठाए कोवोवसमपुच्चं सम्माण-पदं

६१. तए णं से घणे सत्थवाहे जेणेव भट्ठा भारिया तेणेव उवागच्छइ ॥

१. सं० पा०—रुद्धा जाव मिसिमिसेमाणी ।

२. कारेति (ख); करावेई (घ) ।

३. अट्ठायमट्टियं (क्व०) ।

४. सं० पा०—कयवलिकम्मे जाव रायगिहं ।

५. नागर (ग) ।

६. नियये (क); नियग (ग) ।

७. आढायंति (क) ।

८. भइगा (क, ग, घ) ।

९. आतिल्लगा (ग) ।

१०. अब्भंतरिया (ग, घ) ।

११. अवदासिय (ग, घ) ।

६२. तए णं सा भद्दा धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ नो परिजाणइ' अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी तुसिणीया परम्मूही संचिट्ठइ ॥
६३. तए णं से धणे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वयासी—किण्णं तुज्झं देवाणुप्पिए ! न तुट्ठी वा न हरिसो वा नाणंदो वा, जं मए सएणं अत्थसारेणं रायकज्जाओ' अप्पा' विमोडए ॥
६४. तए णं सा भद्दा धणं सत्थवाहं एवं वयासी—कहं णं देवाणुप्पिया ! मम तुट्ठी वा' °हरिसो वा° आणंदो वा भविस्सइ ? जेणं तुमं मम पुत्तघायगस्स' °पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडणीयस्स° पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेसि ॥
६५. तए णं से धणे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिए ! धम्मो त्ति वा तवोत्ति वा 'कय-पडिकया इ वा' लोणजत्ता इ वा नायए इ वा 'घाडियए इ वा' सहाए इ वा सुहि त्ति वा [विजयस्स तक्करस्स ?] ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागे कए, नण्णत्थ सरीरचित्ताए ॥
६६. तए णं सा भद्दा धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव'° हरिसवस-विसप्पमाणहियया आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता कंठाकंठि'° अवयासेइ'° खेमकुसलं पुच्छइ, पुच्छित्ता ण्हाया'° °कयवलिक्कम्मा कय-कोउय-मंगल°-पायच्छित्ता विपुलाइं भोगभोगाइं भुजमाणी विहरइ ॥

विजय-णायस्स निगमण-यवं

६७. तए णं से विजए तक्करे चारगसालाए तेहि वंधेहि य वहेहि य कसप्पहारेहि य'° °छिवापहारेहि य लयापहारेहि य° तण्हाए य छुहाए य परज्जमाणे कालमासे कालं किच्चा नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ।

१. परियाणाइ (क, ख); परियाणइ (ग, घ) ।

२. तुज्झं (क्व०) ।

३. रज्जकज्जाओ (ग, घ) ।

४. अप्पाणं (ख) ।

५. सं० पा०—तुट्ठी वा जाव आणंदो ।

६. सं० पा०—पुत्तघायगस्स जाव पच्चा-मित्तस्स ।

७. कयपडिकइया वा (क); कयाइपडिकईया बाला (घ) ।

८. घोडयए इ वा (क ख); संघाडियए वा (घ) ।

९. अस्मिन् सूत्रे कस्मै संविभागो दत्तः इति

न स्पष्टं भवति : ७५ सूत्रे 'जाव विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ' इति पाठो विद्यते । तस्य पूर्तिः प्रस्तुतसूत्रेणैव जायते । एतेन प्रतीयते अत्रापि 'विजयस्स तक्करस्स' इति पाठः आसीत्, किन्तु केनापि कारणे-नासी नृत्तितोभूत् ।

१०. ना० १।१।१६ ।

११. कंठाकंठि (ख, ग) ।

१२. अवभासेइ (ख); अवतासेइ (ग, घ) ।

१३. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

१४. सं० पा०—कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए ।

से णं तत्थ नेरइए जाए काले कालीभासे' *गंभीरलोमहरिसे भीमे उत्तासणए परमकण्हे वण्णेणं ।

से णं तत्थ निच्चं भीए निच्चं तत्थे निच्चं तसिए निच्चं परमऽसुहसंबद्धं नगरगतिं °वेयणं पच्चणुंभवमाणे विहरइ ।

से णं तन्नो उव्वट्टित्ता अणादीयं अणवदगं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ ॥

६८. एवामेव जंबू ! जो णं अम्मं निगंथो वा निगंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ' अणगारियं पव्वइए समाणे विपुलमणि-मोत्तिय'-धण-कणग-रयणसारेणं लुब्भइ, सो वि एवं चेव ॥

धण-गायस्स निगमण-पदं

६९. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा जाव' पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा' *गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा° जेणेव रायगिहे नयरे जेणेव गुणसिलए चेइए' *तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता° अहा-पडिरूवं ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

७०. परिसा निगया धम्मो कहिओ ॥

७१. तए णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म' इमेयारूवे अज्झत्थिए' *चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था— एवं खलु थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा' इहमागया इहसंपत्ता । तं गच्छामि ?" णं थेरे भगवंते वंदामि नमंसामि [एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ?"]

१. सं० पा—कालीभासे जाव वेयणं ।

२. × (क, ख, ग) ।

३. आगाराओ (ख, घ) ।

४. मुत्तय (ख, ग) ।

५. ना० १।१।४ ।

६. सं० पा०—चरमाणा जाव जेणेव ।

७. सं० पा०—चेइए जाव अहापडिरूवं ।

८. निसम्मा (क, ख, ग) ।

९. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

१०. पू०—ना० १।१।४ ।

११, १२. इच्छामि (क, ख, ग, घ); पाठसंशोधन-प्रयुक्तेषु आदर्शेषु तथा मुद्रितपुस्तकेष्वपि 'इच्छामि' इति पाठो लभ्यते, किन्तु

अन्यागमानामेतत्तुल्यप्रकरणसमीक्षयाऽत्र

'गच्छामि' इति पाठः उपयुक्तः प्रतिभाति ।

एवमेव 'एवं संपेहेइ, संपेहिता' इति संयोजकः पाठोपि बहुषु आगमेषु लभ्यते ।

अत्रापि इत्थमेव युज्यते । अत्र संभाव्यते लिपिदोषेण वर्णपरिवर्तनं जातम्, तेन

'गच्छामि' स्थाने 'इच्छामि' इति जातम् ।

उत्तरोत्तरमेष एव पाठः प्रचुरेषु आदर्शेषु संक्रान्तोभूत् । संक्षेपीकरणपद्धतेः कारणेन

'एवं संपेहेइ, संपेहिता' इति पाठोत्रालिखितोऽस्ति ।

उक्तप्रकरणानुसारी पाठः 'उवासगदसाओ' (१।२०) सूत्रे इत्थमस्ति—तं गच्छामि णं

ण्हाए' •कयवलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते ° सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाई वत्थाइं पवर' परिहिए पायविहारचारेणं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ ॥

७२. तए णं थेरा भगवंतो घणस्स विचित्तं धम्ममाइक्खंति ॥

७३. तए णं से घणे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा एवं वयासी—

सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयण' ।

•पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।

रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।

अब्भुट्टेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।

एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छिय-
मेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वयह त्ति कट्ठु
थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ° जाव' पव्वइए जाव' वहूणि
वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता भत्तं पच्चक्खाइत्ता, मासियाए संलेहणाए
[अप्पाणं भोसेत्ता ?], सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता' कालमामे कालं
किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे ।

तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । तस्स" णं
घणस्स देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई ॥

७४. से णं घणे देवे तामो देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं
अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहइ जाव' सव्वदुक्खाणमतं
करेहिइ ॥

७५. जहा णं जंबू ! घणेणं सत्थवाहेणं नो धम्मो त्ति वा" •तवो त्ति वा कय-
पडिकया इ वा लोगजत्ता इ वा नायए इ वा घाडियए इ वा सहाए इ वा सुहि
त्ति वा ° विजयस्स तक्करस्स तामो विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ
संविभागे कए, नण्णत्थ सरीरसारक्खणट्टाए ॥"

७६. एवामेव जंबू ! जे णं अम्हं निग्गंथे वा" निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं

देवानुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं
वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि
कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—
एवं सपेहेइ, सपेहिता ण्हाए ।

६. छेदइत्ता (ग, घ) ।

७. तत्थ (ख, ग, घ) ।

८. ठिई पण्णत्ता (क, ख) ।

९. ना० १।१।२१२ ।

१. सं० पा०—ण्हाए जाव सुद्धप्पावेसाइं ।

२. विभक्तिरहितं पदम् ।

३. सं० पा०—पावयणं जाव पव्वइए ।

४, ५. भग० ६।३३ ।

१०. सं० पा०—धम्मो त्ति वा जाव विजयस्स ।

११. °सारक्खणट्टयाए (ख); सरीररक्खणट्टाए
(ग) ।

१२. सं० पा०—निग्गंथे वा जाव पव्वइए ।

अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं० पवइए समाणे ववगय-ण्हाणुमहण-
पुप्फ-गंध-मल्लालंकार-विभूसे' इमस्स ओरालिय-सरीरस्स नो वण्णहेउं वा 'नो
रुवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा'२ तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं
आहारमाहारेइ, नण्णत्थ नाणदंसणचरित्ताणं वहणट्टयाए, से णं इहलोए चेव
वहूणं समणाणं बहूणं३ समणीणं बहूणं४ सावगाणं५ बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे'
●वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सवकारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं
देवयं चेइयं विणएणं० पज्जुवासणिज्जे भवइ,
परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेय-
णाणि य एवं हिययउप्पायणाणि६ य वसणुप्पायणाणि य उल्लंबणाणि य
पाविहिइ, 'पुणो अणाइयं'७ च णं अणवदगं दीहमद्धं८ ●चाउरंतं संसारकंतारं०
वीईवइस्सइ—जहा व से धणे सत्थवाहे ॥

निक्खेव-पदं

७७. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव'९ संपत्तेणं दोच्चस्स
नायज्भयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा

सिवसाहणेसु आहार-विरहिओ जं न वट्टए देहो ।
तम्हा धणो व्व विजयं, साहू तं तेण पोसेज्जा ॥१॥

१. विभूसिते (ख, ग) ।

२. रुवहेउं वा बलविसयहेउं वा (क, ख, ग,
घ) । असीपाठ-संघटना १।१८।६१ सूत्रस्या-
धारेण कृतास्ति ।

३, ४. × (क, ख, ग, घ) ।

५. सावगाण य (क, ख, ग) ।

६. सं० पा०—अच्चणिज्जे जाव पज्जुवास-
णिज्जे ।

७. °उप्पाडणाणि य (क) ।

८. अणाईयं (ख, घ); अणातीतं (ग) ।

९. सं० पा०—दीहमद्धं जाव वीईवइस्सइ ।

१०. ना० १।१।७ ।

तच्च अज्भयणं

अंडे

उक्त्वैव-पद

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं दोच्चस्स अज्भयणस्स नायावम्म-
कहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था - वण्णओ' ।
३. तीसे णं चंपाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सुभूमिभागे नामं
उज्जाणे—'सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे' सुरम्मे नंदणवणे' इव मुह-मुरभि-
सीयलच्छायाए समणुवद्धे ॥
४. तस्स णं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उत्तरओ' एगदेसम्मि मालुयाकच्छाए
होत्था—वण्णओ' ॥

मयूरी अंड-पदं

५. तत्थ णं एगा वणमयूरी दो पुट्ठे परियागाए पिट्ठुंडी-पंडुरे' निव्वणे निरुवहाए
भिण्णमुट्ठिप्पमाणे मयूरी-अंडए पसवइ, पसवित्ता सएणं' पक्खवाएणं सारक्ख-
माणी संगोवेमाणी' संचिट्ठेमाणी' विहरइ ॥

१. ओ० सू० १ ।

२. सव्वोउए (वृ); सव्वोउय (क, ख, ग, घ, बृपा); वृत्तिकृता अत्र द्वयोरपि पाठयोः समीक्षा कृतास्ति यथा—सव्वोउएत्ति—सर्वे ऋतवो वसन्तादयः, तत्संपाद्यकुसुमादि-भावानां वनस्पतीनां सद्भावात्, यत्र तत्तथा । क्वचित् 'सव्वोउयत्ति' दृश्यते तेन च 'सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे' इत्येतत् सूचितम् (वृ) ।

३. नंदणे वणे (ख) ।

४. उत्तर (क, ख, ग) ।

५. ना० १।२।६ ।

६. पिट्ठुपिंडी (क); वृत्ती 'पिष्टस्य-शान्विलोटस्य उंडी—पिंडी' इति व्याख्यातमस्ति । असौ व्याख्याशः मूलपाठे पि संक्रान्तः ।

७. पंडरे (क, ग) ।

८. सतेणं (ख, घ) ।

९. संगोवमाणी (ख); संगोयमाणी (ग) ।

१०. संचिट्ठेमाणी (क); सचिट्ठेमाणी (ख, ग, घ); असौ पाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतः ।

सत्थवाहदारग-पदं

६. तत्थ णं चंपाए नयरीए दुवे सत्थवाहदारगा परिवसंति, तं जहा—जिणदत्तपुत्ते^१ य सागरदत्तपुत्ते^२ य —सहजायया सहवड्डियया सहपंसुकीलियया सहदारदरिसी अण्णमण्णमणुरत्तया अण्णमण्णमणुव्वयया^३ अण्णमण्णच्छंदाणुवत्तया अण्णमण्णहिय-इच्छियकारया^४ अण्णमण्णसु गिहेसु किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणु-बभवमाणा विहरंति ॥

७. तए णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अण्णया कयाइं एगयओ सहियाणं समुवागयाणं^५ सण्णिसण्णाणं सण्णिविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—जण्णं देवाणुप्पिया ! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पव्वज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जइ, तण्णं अम्हेहिं एगयओ समेच्चा^६ नित्थरियव्वं ति कट्ठु अण्णमण्णमेयारूवं संगारं^७ पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ॥

देवदत्ता गणिया-पदं

८. तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नामं गणिया परिवसइ—अइडा^१ •दित्ता वित्ता वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणा बहुधण-जायरूव-रयया आओग-पओग-संपउत्ता विच्छड्डिय-पउर^२—भत्तपाणा चउसट्ठिकलापंडिया चउसट्ठि-गणियागुणोववेया अउणत्तीसं विसेसे रममाणी एक्कवीसं^३—रइगुणप्पहाणा वत्तीस-पुरिसोवयारकुसला नवंगसुत्तपडिवोहिया अट्टारसदेसीभासाविसारया सिंगारा-गारचारुवेसा संगय-गय-हसिय^४—•भणिय-चेट्ठिय-विलाससंलावुल्लाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला^५ ऊसियज्झया सहस्सलंभा विदिण्णछत्त-चामर-बालवीय-गणिया कण्णीरहप्पयाया वि होत्था ।

बहूणं गणियासहस्साणं^६ आहेवच्चं^७ •पोरेवच्चं सामित्तं भट्ठित्तं महत्तरगतं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणी पालेमाणी महयाऽहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी^८ विहरइ ॥

१. °उत्ते (ग) ।

२. °उत्ते (ग) ।

३. °मणुव्वया (ग) ।

४. तिच्छियकारया (ख, ग, घ) ।

५. समुवागयाणं (क, ख, ग) ।

६. संहिच्चा (वृपा) ।

७. संगरं (वृपा) ।

८. सं० पा०—अइडा जाव भत्तपाणा ।

९. एक्कवीसं (क) ।

१०. सं० पा०—संगयगयहसिय (अतोश्रे वृत्तौ वाचनान्तरं लभ्यते—वाचनान्तरे त्विदम-धिकम्—सुंदरघण-जघण-वयण-चरण-नयण-लावण-रूव-ओव्वणविलासकलिया (वृ) । ओवाइय-वाचनान्तरे किञ्चिद्भेदोस्ति-द्रष्टव्यम्—ओवाइयं पृष्ठ १३६ ।

११. °सहस्सीणं (ख) ।

१२. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ ।

सत्यवाहदारगाणं उज्जाणकीडा-पदं

६. तए णं तेसिं सत्यवाहदारगाणं अण्णया कयाइ पुब्बावरण्हकालसमयंसि' जिमिय-भुत्तुत्तरागयाणं समाणाणं आयंताणं चोक्खाणं परमसुइभूयाणं मुहासणवर-गयाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—सेयं खलु अम्हं देवाणु-प्पिया ! कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरं सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं धूव-पुप्फ-गंध-वत्थ-मल्लालंकारं' गहाय देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरि पच्चणुवभव-माणाणं विहरित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिमुणेंति, पडिमुणेंता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरं सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते कोडुवियपुरिसे सद्दावेत्ति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेह, उवक्ख-डेत्ता तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं धूव-पुप्फ-गंध-वत्थ-मल्लालंकारं गहाय जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नंदा पुक्खरिणी तेणेव' उवागच्छह, उवागच्छित्ता नंदाए पोक्खरिणीए' अदूरसामंते थूणामंडवं' आहणह—आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं' •पंचवण्ण-सरससुरभि-मुक्क-पुप्फपुंजोवयारकलियं काला-गरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डउभंत-सुरभि-मघमघंत-गंधुदुयाभिरामं सुगंधवर-गंधगंधिय गंधवट्ठिभूयं० करेह, करेत्ता अमहे पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह जाव चिट्ठंति ॥

१०. तए णं ते सत्यवाहदारगा दोच्चंपि कोडुवियपुरिसे सद्दावेत्ति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव [भो देवाणुप्पिया !?] 'लहुकरण-जुत्त-जोइयं' समखुर-वालिहाण-'समलिहिय-तिक्खगसिगएहि' रययामय-घंट-सुत्तरज्जु-पवरकंचण-

१. पुब्बावरण्ह० (क) ।

२. ना० १।१।२४ ।

३. × (ख, ग, घ) ।

४. तेणामेव (क, ग, घ) ।

५. पुक्खरिणीए (क, ख) ।

६. धूण० (ख) ।

७. सं० पा०—सम्मज्जिओवलित्तं सुगंधं जाव कलियं (क, ख, ग, घ); अत्र पाठसंक्षेपे कश्चिद् विपर्ययः संभाव्यते । १।१।३३ सूत्रे

'सम्मज्जिओवलित्तं जाव सुगंधवरगंधियं' अस्ति, तथैव अत्रापि 'सम्मज्जिओवलित्तं जाव गंधवट्ठिभूयं' इति संक्षेपः उपयुक्तः स्यात् । 'सम्मज्जिओवलित्तं' इति पाठानन्तरं 'सुगंध' इति पदं क्वापि नोपलभ्यते ।

८. लहुकरणजुत्तएहि जोइयं (वृषा) ।

९. समलिहियं तिक्खसिगएहि (क, घ); समलिहिय-सिगएहि ।

खचिय-नत्थपग्गहोग्गहियएहिं' नीलुप्पलकयामेलएहिं पवर-गोण-जुवाणएहिं
'नाना-मणि-रयण-कंचण'-घंटियाजालपरिक्खित्तं" पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव
पवहणं उवणेह । ते वि तहेव उवणेति ॥

११. तए णं ते सत्थवाहदारगा ण्हाया" *कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता
अप्पमहग्घाभरणालंकिय° सरीरा पवहणं दुरुहंति, दुरुहित्ता जेणेव देवदत्ताए
गणियाए गिहे' तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पवहणाओ पच्चोरुहंति,
पच्चोरुहित्ता देवदत्ताए गणियाए गिहं' अणुप्पविसंति ॥

१२. तए णं सा देवदत्ता गणिया ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासइ, पासित्ता
हट्टुट्ठा आसणाओ अम्भुट्ठेइ, अम्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता
ते सत्थवाहदारए एवं वयासी—सदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमिहागमणप्प-
ओयणं ?

१३. तए णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्तं गणियं एवं वयासी—इच्छामो णं देवाणुप्पिए !
तुमे' सद्धि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरि पच्चणुम्भवमाणा
विहरित्तए ॥

१४. तए णं सा देवदत्ता तेसि सत्थवाहदारगाणं एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता
ण्हाया कयबलिकम्मा' जाव" सरी-समाणवेसा जेणेव सत्थवाहदारगा तेणेव
उवागया" ॥

१५. तए णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धि जाणं दुरुहंति, दुरुहित्ता
चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नंदा पोक्खरिणी
तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पवहणाओ पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता नंदं"

(जंबूणयामय-कलाव-जुत्त-पइविसिट्टएहिं ।

उवासगदसाओ १।४०) । वृत्ती—जंबूणया-
मय° इति पाठो वाचनान्तरत्वेन
उल्लिखितोस्ति ।

१. °वग्गहियएहिं (क); °वग्गहोवग्गहियएहिं
(ख, ग)

२. × (क) ।

३. नाणा-मणि-कणग-घंटियाजालपरिणयं सुजाय-

जुग-जुत्त-उज्जुग - पसत्थ - सुविरइय-निम्मियं

(उवासगदसाओ १।४७) । वृत्ती—

°'सुजायजुग' °इति पाठः वाचनान्तरत्वेन

उल्लिखितोस्ति ।

४. सं० पा०—ण्हाया जाव सरीरा ।

५. गेहे (ख) ।

६. गेहे (क, घ) ।

७. पयोयणं (ख); पतोयणं (घ) ।

८. तुम्हेहिं (ग); तुम्भेहिं (क्वचित्) ।

९. कयबलिकम्मा किं ते (क); कयबलिकम्मा
किं ते पवर (ग); कयबलिकम्मा किं ते वर
(घ) ।

१०. ना० १।१।३३ ।

११. उवागच्छंति (ख); समागया (घ) ।

१२. नंदा (ख) ।

पोक्खरिणि ओगाहेति, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेति, करेत्ता जलकिडुं करेति, करेत्ता ण्हाया देवदत्ताए सद्धि [नंदाओ पोक्खरिणीओ ?] पच्चुत्तरंति, जेणेव थूणामंडवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता [थूणामंडवं ?] अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता सव्वालंकारभूसिया आसत्था वीसत्था सुंहासणवरगया देवदत्ताए सद्धि तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरंति । जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा [आयंता चोक्खा परममुडभूया ?] देवदत्ताए सद्धि विपुलाइं कामभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ॥

१६. तए णं ते सत्थवाहदारगा पुव्वावरण्हकालसमयंसि देवदत्ताए गणियाए सद्धि थूणामंडवाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता हत्थसंगेल्लीए सुभूमिभागे उज्जाणे वहूसु आलिघराएसु यं °कयलिघराएसु य लताघराएसु य अच्छणघराएसु य पेच्छणघराएसु य पमाहणघराएसु य मोहणघराएसु य सालघराएसु य जालघराएसु य ° कुसुमघराएसु य उज्जाणसिरि पच्चणुवभवमाणा विहरंति ॥

सत्थवाहदारगेहिं मयूरीअंडगणयण-पवं

१७. तए णं ते सत्थवाहदारगा जेणेव से मालुयाकच्छए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

१८. तए णं सा वणमयूरी ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासड, पासित्ता भीया तत्था महया-महया सद्देणं केकारवं °विणिम्मयमाणी-विणिम्मयमाणी° मालुया-कच्छाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता एगंसि रुक्खडालयंसि° ठिच्चा ते सत्थवाहदारए मालुयाकच्छगं च अणिमिसाए दिट्ठीए पेच्छमाणी° चिट्ठइ ॥

१९. तए णं ते सत्थवाहदारगा अण्णमणं सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जहा° णं देवाणुप्पिया ! एसा वणमयूरी अम्हे एज्जमाणे पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा पलाया महया-महया सद्देणं °केकारवं विणिम्मयमाणी-विणिम्मयमाणी मालुयाकच्छाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता एगंसि

१. द्रष्टव्यम्—१।२।१४ सूत्रस्य—पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ—इति पदम् ।

२. द्रष्टव्यम्—१।३।११ सूत्रस्य—देवदत्ताए गणियाए गिहं अणुप्पविसंति—इति पदम् ।

३. द्रष्टव्यम्—१।३।६ ।

४. संगिल्लीए (क, घ) ।

५. सं० पा०—आलिघराएसु य जाव कुसुमघरा-एसु । वृत्तिकृता पूर्णः पाठो व्याख्यातः, ११. जया (क) ।

संक्षिप्तपाठस्य सूचनापि कृतास्ति, यथा—

क्वचित् कदलीगृहादिपदानि यावच्छब्देन सूच्यन्ते (वृ) ।

६. केकारवं (क, ख, घ) ।

७. विणिम्मयमाणी-विणिम्मयमाणी (ग) ।

८. °डालसि (घ) ।

९. °कच्छं (क, ख, ग, घ) ।

१०. देहमाणी (क, ग, घ) ।

११. जया (क) ।

१२. सं० पा०—सेद्देणं जाव अम्हे ।

रुक्खडालयंसि ठिच्चा ° अम्हे मालुयाकच्छयं' च [अणिमिसाए दिट्ठीए ?]
 पेच्छमाणी' चिट्ठइ, तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं ति कट्ठु मालुयाकच्छयं अंतो
 अणुप्पविसंति । तत्थ णं दो पुट्ठे परियागए' °पिट्ठुंडी-पंडुरे निव्वणे निरुव्हए
 भिण्णमुट्ठिप्पमाणे मयूरी-अंडए ° पासित्ता अण्णमण्णं सद्दावेत्ति, सद्दावेत्ता एवं
 वयासी—सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे वणमयूरी-अंडए साणं जातिमंताणं
 कुक्कुडियाणं अंडएसु पक्खिवावित्तए । तए णं ताम्रो जातिमंताम्रो कुक्कुडियाम्रो
 एए अंडए सए य अंडए सएणं पंखवाएणं सारक्खमाणीम्रो संगोवेमाणीम्रो
 विहरिस्संति । तए णं अम्हं एत्थं दो कीलावणगा मयूरी-पोयगा भविस्संति
 त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सए सए दासचेडए'
 सद्दावेत्ति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छहं णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! इमे अंडए
 गहाय सगाणं जातिमंताणं कुक्कुडीणं अंडएसु पक्खिवह जाव ते वि पक्खिवेंति ॥

२०. तए णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स
 उज्जाणसिरि पच्चणुब्भवमाणा विहरित्ता तमेव जाणं दुरुद्धा समाणा जेणेव
 चंपा नयरी जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता
 देवदत्ताए गिहं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता देवदत्ताए गणियाए विउलं
 जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति, दलइत्ता सक्कारेंति सम्माणेंति, सक्कारेत्ता
 सम्माणेत्ता देवदत्ताए गिहाम्रो पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव साइं-
 साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि
 होत्था ॥

सागरदत्तपुत्तस्स संदेहेण अंडयविणास-पदं

२१. तत्थ णं जे से सागरदत्तपुत्ते' सत्थवाहदारए से णं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए
 जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव से वणमयूरी-
 अंडए तेणव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तंसि मयूरी-अंडयंसि संकिए कंखिए विति-
 गिच्छसमावण्णे भेयसमावण्णे कलुससमावण्णे किण्णं ममं एत्थ कीलावणए' मयूरी-
 पोयए भविस्सइ उदाहु नो भविस्सइ ? त्ति कट्ठु तं मयूरी-अंडयं अभिक्खणं-
 अभिक्खणं उव्वत्तेइ परियत्तेइ आसारेइ संसारेइ चालेइ फंदेइ घट्टेइ खोभेइ
 अभिक्खणं-अभिक्खणं कण्णमूलंसि टिट्ठियावेइ' ।

१. °कच्छकं (क); कच्छयं (ग) ।

२. पेहमाणी (क, घ); पिच्छमाणी (ग) ।

३. सं० पा०—परियागए जाव पासित्ता ।

४. जायमेत्ताणं (क) ।

५. एत्थ (घ) ।

६. दासचेडे (क) ।

७. एह गच्छह (क) ।

८. सागरदत्तस्स पुत्ते (ग) ।

९. ना० १।१।२४ ।

१०. कीलावण (ख, ग, घ) ।

११. डिडियावेइ (क); डिट्ठियावेइ (ख) ।

टिट्ठियारेइ (ग) ।

२२. तए णं से मयूरी'-अंडः अभिक्खणं-अभिक्खणं उव्वत्तिज्जमाणे' •परियत्तिज्ज-
माणे आसारिज्जमाणे संसारिज्जमाणे चालिज्जमाणे फंदिज्जमाणे घट्टिज्जमाणे
खोभिज्जमाणे अभिक्खणं-अभिक्खणं कण्णमूलंसि० टिट्ठियावेज्जमाणे पोच्चडे
जाए यावि होत्था ॥
२३. तए णं से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए अण्णया कयाइं जेणेव से मयूरी-अंडए
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं मयूरी-अंडयं पोच्चडेमेव' पासइ, अहो णं
ममं एत्थं कीलावणए मयूरी-पोयए न जाए त्ति कट्टु ओहयमणं •संकप्पे
करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए० भियाइ' ॥
२४. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं
अतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए' समाणे पंचमहव्वएसु'
छज्जीवनिकाएमु निग्गंथे पावयणे संकिए' •कंखिए वितिगिंछसमावण्णे भेय-
समावण्णे० कलुससमावण्णे, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं
बहूणं" सावगाणं बहूणं" सावियाण य हीलणिज्जे निदणिज्जे खिसणिज्जे गरह-
णिज्जे परिभवणिज्जे",
परलोए वि य णं आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य" •बहूणि मुंडणाणि य बहूणि
तज्जणाणि य बहूणि तालणाणि य बहूणि अंदुबंधणाणि य बहूणि घोलणाणि
य बहूणि माइमरणाणि य बहूणि पिइमरणाणि य बहूणि भाइमरणाणि य बहूणि
भगिणीमरणाणि य बहूणि भज्जामरणाणि य बहूणि पुत्तमरणाणि य बहूणि
घूयमरणाणि य बहूणि सुण्हामरणाणि य,
बहूणं दारिदाणं बहूणं दोहग्गाणं बहूणं अप्पियसंवासाणं बहूणं पियविप्प-
ओगाणं बहूणं दुक्ख-दोमणस्साणं आभागी भविरसति, अणादियं च णं अणवयगं
दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो० अणुपरियट्टिस्सइ" ॥

१. वणमयूरी (ग, घ) । ११. × (क, ख, ग) ।
२. सं० पा०—उवत्तिज्जमाणे जाव टिट्ठिया- १२. परभवणिज्जे (क, ख, घ); भगवती
वेज्जमाणे । (५।६१) सूत्रे 'गरहह अवमन्नह' इति
३. पोच्चडेमेयं (ख) । पदमस्ति ।
४. सत्थवाह (क, ख, ग) । १३. सं० पा०—दंडणाणि य जाव अणुपरियट्टइ ।
५. सं० पा०—ओहयमण जाव भियायइ । १४. अणुपरियट्टइ (क, ख, ग, घ) । 'भविस्सति'
६. भियायइ (ख, घ); भ्यायति (ग) । इति क्रियापदस्यानन्तरं 'अणुपरियट्टिस्सइ'
७. पव्वज्जिते (ख); पव्वतिए (ग, घ) । इति पाठो युज्यते । सप्तमाध्ययनस्य २७
८. ० महव्वए (ख, ग, घ) । सूत्रेऽपि एवमेव पाठो लभ्यते । तेनात्रापि
९. सं० पा०—संकिए जाव कलुससमावण्णे । तथैव स्वीकृतः ।
१०. × (ख, ग) ।

जिणदत्तपुत्तस्स सद्दाए मयूर-लद्धि-पव

२५. तए णं से जिणदत्तपुत्ते जेणेव से मयूरी-अंडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तंसि मयूरी-अंडयंसि निस्संकिए [निककंखिए निव्वित्तिगिच्छे ?] 'सुव्वत्तए णं' मम एत्थ कीलावणए मयूरी-पोयए भविस्सइ त्ति कट्ठु तं मयूरी-अंडयं अभिक्खणं-अभिक्खणं नो उव्वत्तेइ' *नो परियत्तेइ नो आसारेइ नो संसारेइ नो चालेइ नो फंदेइ नो घट्टेइ नो खोभेइ अभिक्खणं-अभिक्खणं कण्णमूलंसि० नो टिट्ठियावेइ ।
२६. तए णं से मयूरी-अंडए अणुव्वत्तिज्जमाणे जाव' अटिट्ठियाविज्जमाणे कालेणं समएणं उब्भिन्ने' मयूरी-पोयए एत्थ जाए ॥
२७. तए णं से जिणदत्तपुत्ते तं मयूरी-पोययं पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठे मयूर-पोसए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इमं मयूर-पोयगं बहूहि मयूर-पोसण-पाओगोहिं दव्वेहिं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेह', नदुल्लगं' च सिक्खावेह ॥
२८. तए णं ते मयूर-पोसगा जिणदत्तपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, तं मयूर-पोयगं गेण्हंति, जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति, तं मयूर-पोयगं' *बहूहि मयूर-पोसण-पाओगोहिं दव्वेहिं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेंति०, नदुल्लगं च सिक्खावेति ॥
२९. तए णं से मयूर-पोयए उम्मुक्कवालभावे विण्णयं-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाणपडिपुण्णपक्ख-पेहुणकलावे 'विचित्त-पिच्छसत्तचंदए' १० नीलकंठए नच्चणसीलए एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए अणेगाइं नदुल्लगसयाइं केकाइयसयाणि ११ य करेमाणे विहरइ ॥
३०. तए णं ते मयूर-पोसगा तं मयूर-पोयगं उम्मुक्कवालभावं जाव' केकाइय-सयाणि य करेमाणं पासित्ता णं तं मयूर-पोयगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जिणदत्तपुत्तस्स उव्वणेंति ॥
३१. तए णं से जिणदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए मयूर-पोयगं उम्मुक्कवालभावं जाव' १

१. द्रष्टव्यम्—३४ सूत्रम् ।

२. सुव्वत्तणं (क, घ); X (ख); मुद्धत्तणं (ग) ।

३. सं० पा०—उव्वत्तेइ जाव नो टिट्ठियावेइ ।

४. ना० १।३।२५ ।

५. उब्भिन्न (ग) ।

६. संवट्टेह (क, ख, ग, घ) ।

७. नडुल्लगं (ग); नट्टुल्लगं (घ) ।

८. सं० पा०—मयूरपोयगं जाव नदुल्लगं ।

९. विन्ताण (क); विन्ताय (ख, ग, घ) ।

१०. विचित्तपिच्छोसत्तचंदए (ख, ग, घृपा) ।

११. केयाणिपगसइयाइं (क); केयाइग० (ख, ग); केकातित० (घ) ।

१२. ना० १।३।२६ ।

१३. ना० १।३।२६ ।

केकाइयसयाणि य करेमाणं पासित्ता हट्ठुट्ठे तेसिं विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं'
 *दलयइ, दलइत्ता° पडिविसज्जेइ ॥

३२. तए णं से मयूर-पोयगे जिणदत्तपुत्तेणं एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए
 नंगोला-भंग-सिरोधरे सेयावंगे' ओयारिय'-पइण्णपक्खे उक्खित्तचंदकाइय-कलावे
 केक्काइयसयाणि मुंचमाणे' नच्चइ ॥

३३. तए णं से जिणदत्तपुत्ते' तेणं मयूर-पोयएणं चंपाए नयरीए सिंघाडग'-*तिग-
 चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेसु सएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सि-
 एहि य पणिएहि' जयं करेमाणे विहरइ ॥

३४. एवामेव समणाउसो ! जो अम्महं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं
 अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचमहव्वएसु
 छज्जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे निस्संक्रिए निक्कंखिए निव्वित्तिगिच्छे', से णं
 इहभवे चेव बहूणं समणाणं' *बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण
 य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे
 कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे भवइ ।

परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेय-
 णाणि य एव—हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लंवणाणि य
 पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतरं°
 वीईवइस्सइ ॥

निक्खेव-पवं

३५. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव'
 सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं 'तच्चस्स नायज्झयणस्स'" अयमट्ठे पण्णत्ते ।
 —त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जिणवरभासियभावेसु, भावसच्चेसु भावओ मइमं ।
 नो कुज्जा संदेहं, संदेहोऽणत्थहेउ त्ति ॥१॥

१. सं० पा०—पीइदाणं जाव पडिविसज्जेइ ।

३. पणिएहि य (ख, ग, घ) ।

२. सेयावण्णे (घ, वृ); सेयावंगे (वृपा) ।

८. निव्वित्तिगिच्छे (ख, घ) ।

३. ओरालिय (ग, घ) ।

९. सं० पा०—समणाणं जाव वीईवइस्सइ ।

४. मुच्चमाणे (क, ख, ग, घ); विमुंचमाणे (क्व०) ।

१०. ना० १।१।७ ।

५. जिणयत्त° (क) ।

११. नायाणं तच्चस्स अज्झयणस्स (क, ख, ग);
 नायाणं तच्चस्स नायाज्झयणस्स (घ) ।

६. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

निसंदेहत्तं पुण, गुणहेउं जं तम्हो तयं कज्जं ।
 एत्थं दो सेट्ठिसुया, अंडयगाही उदाहरणं ॥२॥
 कत्थइ मइदुब्बल्लेण, तव्विहायरियविरहम्हो वावि ।
 नेयगहणत्तणेणं, नाणावरणोदयेणं च ॥३॥
 हेऊदाहरणासंभवे य, सइ सुट्ठु जं न बुज्जेज्जा ।
 सव्वण्णुमयमवितहं, तहावि इइ चित्तए मइमं ॥४॥
 अणुवकय-पराणुग्गह-परायणा उ जिणा जगप्पवरा ।
 जिय - राग - दोस - मोहा, य नन्नहावाइणो तेण ॥५॥

चउत्थं अज्भयणं

कुम्भे

उपखेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं 'तच्चस्स नायज्भयणस्स' अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! नायज्भयणस्स' के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी' नामं नयरी होत्था—वण्णओ' ॥
३. तीसे णं वाणारसीए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिस्सीभाए गंगाए महानईए मयंग-तीरद्वहे नामं दहे होत्था—अणुपुव्वसुजायवप्प'-गंभीरसीयलज्जे 'अच्छ-विमल-सलिल-पलिच्छण्णे' संछण्ण-पत्त-पुप्फ-पलासे' बहुउप्पल-पउम-कुमुय-नलिण-सुभग-सोगंधिय-'पुंडरीय - महापुंडरीय' - सयपत्त-सहस्सपत्त - केसरपुप्फोवचिए' पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥
४. 'तत्थ णं बहूणं मच्छाण य कच्छभाण य गाहाण य मगराण य मुंसुमाराण य सयाणि य सहस्साणि य सयसहस्साणि य जूहाइं निदभयाइं निरुव्विग्गाइं सुहंसुहेणं अभिरममाणाइं-अभिरममाणाइं विहरंति' ॥

१. नायाणं तच्चस्स° (ख, ग); नायाण तच्चस्स अज्भयणस्स (घ) ।

२. नायाणं (क, ख, घ)

३. वाराणसी (ग) ।

४. ओ० सू० १ ।

५. आणुपुव्व° (घ) ।

६. × (वृ); अच्छ-विमल-सलिल-पलिच्छन्ने (वृपा) ।

७. × (वृ); क्वचित्तु संछन्नेत्यादि सूचनादिदं १०. 'तत्थ णं' इत्यादि आदर्शगतः पाठः नास्ति वृत्तौ व्याख्यातः ।

दृश्यम्—संछन्नपउमपत्त - विसमुणाले ।
क्वचिदेवं पाठः—संछन्नपत्तपुप्फपलासे (वृ) ।

८. पोंडरीय-महापोंडरीय (ग) ।

९. °चिए छप्पय-परिभुज्जमाण-कमले अच्छ-विमल-सलिल-पत्थ-पुण्णे परिहत्थभमंत-मच्छ - कच्छभ - अण्णेगसउणगण - मिहुणय पविचरिए (वृ); असौ पाठः आदर्शेषु नोपलभ्यते ।

५. तस्स णं मयंगतीरद्दहस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महं एगे' मालुयाकच्छए होत्था—
वण्णओ' ॥

पावसियालग-पद

६. तत्थ णं दुवे पावसियालगा परिवसंति—पावा चंडा रुद्धा तल्लिच्छा साहसिया
लोहियपाणी आमिसत्थी आमिसाहारा आमिसप्पिया आमिसलोला आमिसं
गवेसमाणा रत्तिवियालचारिणो दिया पच्छन्नं' या वि चिट्ठंति ॥

कुम्म-पदं

७. तए णं ताम्रो मयंगतीरद्दहाओ अणया कयाइं सूरियंसि चिरत्थमियंसि लुलि-
याए सभाए पविरलमाणुसंसि निसत-पडिनियंतंसि समाणंसि दुवे कुम्मगा
आहारत्थी आहारं गवेसमाणा सणियं-सणियं उत्तरंति, तस्सेव' मयंगतीरद्दहस्स
परिपेरंतेणं सव्वओ समंता परिघोलमाणा-परिघोलमाणा 'वित्ति कप्पेमाणा'
विहरंति ॥

पावसियालगाणं आहारगवेसण-पदं

८. तयाणंतरं च णं ते पावसियालगा आहारत्थी' आहारं गवेसमाणा मालुयाकच्छ-
गाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मयंगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छंति,
उवागच्छित्ता तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं परिघोलमाणा-परिघोलमाणा
वित्ति कप्पेमाणा विहरंति ॥
९. तए णं ते पावसियालगा' ते कुम्मए पासंति, पासित्ता जेणेव ते कुम्मए तेणेव
पहारेत्थ गमणाए ॥

कुम्माणं साहरण-पदं

१०. तए णं ते कुम्मगा ते पावसियालए एज्जमाणे पासंति, पासित्ता भीया तत्था
तसिया उव्विग्गा संजायभया हत्थे य पाए य गीवाओ य सएहि-सएहि काएहि
साहरंति', साहरित्ता निच्चला निप्फंदा' तुसिणीया संचिट्ठंति ॥

१. वेगे (ग, घ) ।

२. ना० १।२।६ ।

३. पच्छन्न (क, ख); पच्छन्नं (ग, घ) ।

४. तस्स य (ख); तस्से य (ग, घ) ।

५. एवं च णं (क) ।

६. आहारत्थी जाव (क, ख, ग, घ); सर्वास्वपि
प्रतिपु जाव शब्दो लभ्यति किन्तु अर्थमीमा-
सया नासौ समीचीनः प्रतिभाति । यद्यत्र

जाव शब्दः स्यात् तदा आमिसत्थी जाव
आमिसं इति पाठः संगतः स्यात् । यदि
पूर्ववत्तिसूत्रमनुश्रियते तदा जाव शब्दो
नापेक्ष्यते ।

७. °सियाला (ख, ग, घ) ।

८. सहरति (ग, घ) ।

९. निप्फंदा (ख, घ) ।

११. तए णं ते पावसियालगा जेणेव ते कुम्मगा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते कुम्मए' सव्वओ समंता उव्वत्तंति परियत्तंति आसारंति संसारंति चालंति घट्टंति फंदंति खोभंति नहेहि आलुपंति दंतेहि य अक्खोडंति, नो चेव णं संचाएंति तेसि कुम्मगाणं सरीरस्स किंचि' आवाहं वा 'वावाहं वा' उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए ॥
१२. तए णं ते पावसियालगा ते कुम्मए दोच्चंपि तच्चंपि सव्वओ समंता उव्वत्तंति' •परियत्तंति आसारंति संसारंति चालंति घट्टंति फंदंति खोभंति नहेहि आलुपंति दंतेहि य अक्खोडंति, नो चेव णं संचाएंति तेसि कुम्मगाणं सरीरस्स किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा० करेत्तए, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा सणियं-सणियं पच्चोसक्कंति, एगंतमवक्कमंति', निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति ॥

अणुत्त-कुम्मस्स मच्चु-पवं

१३. तए' णं एगे कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरंगए जाणित्ता सणियं-सणियं एगं पायं निच्छुभइ ॥
१४. तए णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं सणियं-सणियं एगं पायं नीणियं पासंति, पासित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं जइणं वेगियं' जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तस्स णं कुम्मगस्स तं पायं नखेहि आलुपंति दंतेहि अक्खोडंति, तओ पच्छा मंसं च सोणियं च आहारंति, आहारेत्ता तं कुम्मगं सव्वओ समंता उव्वत्तंति जाव' नो चेव णं संचाएंति' •तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए ॥
१५. तए णं ते पावसियालगा तं कुम्मयं दोच्चंपि तच्चंपि सव्वओ समंता उव्वत्तंति परियत्तंति आसारंति संसारंति चालंति घट्टंति फंदंति खोभंति नहेहि आलुपंति दंतेहि य अक्खोडंति, नो चेव णं संचाएंति तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए, ताहे संता तंता

१. कुम्मगा (क, ख, ग, घ); अग्निमसूत्रे 'ते कुम्मए' इति पाठोस्ति, अत्रापि तथैव युज्यते ।

२. × (ग, घ) ।

३. × (क) ।

४. सं० पा०—उव्वत्तंति जाव नो चेव णं संचाएंति करेत्तए ।

५. एगंते अवक्कमंति (क) ।

६. तस्य (ख, ग, घ) ।

७. वेगितं (ख) ।

८. ना० १।४।११ ।

९. सं० पा०—संचाएंति० करेत्तए । ताहे दोच्चंपि अवक्कमंति ।

परितंता निविण्णा समाणा सणियं-सणियं पच्चोसक्कंति, दोच्चंपि एगंत-
मवक्कमंति । °

एवं चत्तारि वि' पाया ॥

१६. °तए णं से कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरंगए जाणित्ता ° सणियं-सणियं
गीवं नीणेइ ॥

१७. तए णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं [सणियं-साणियं ?] गीवं नीणियं
पासंति, पासित्ता सिग्घं तुरियं चवलं °चंडं जइणं वेगियं जेणेव से कुम्मए तेणेव
उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तस्स णं कुम्मगस्स तं गीवं ° नहेहि [आलुंपति ?]
दंतेहि कवालं विहाडंति, विहाडेत्ता तं कुम्मगं जीवियाओ ववरोवेत्ति, ववरोवेत्ता
मंसं च सोणियं च आहारंति ॥

१८. एवमेव समणाउसो ! जो अम्महं निग्गंधो वा निग्गंधी वा आयरिय-उवज्झायाणं
अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे', पंच य से इदिया
अगुत्ता भवन्ति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं
सावगाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे °निदणिज्जे खिसणिज्जे गरहणिज्जे
परिभवणिज्जे, ° परलोए वि य णं आगच्छइ—बहूणि दंडणाणि °य बहूणि
मुंडणाणि य बहूणि तज्जणाणि य बहूणि तालणाणि य बहूणि अंदुवंधणाणि
य बहूणि घोलणाणि य बहूणि माइमरणाणि य बहूणि पिइमरणाणि य
बहूणि भाइमरणाणि य बहूणि भगिणीमरणाणि य बहूणि भज्जामरणाणि
य बहूणि पुत्तमरणाणि य बहूणि धूयमरणाणि य बहूणि सुण्हामरणाणि य ।
बहूणं दारिद्राणं बहूणं दोहग्गाणं बहूणं अप्पियसंवासाणं बहूणं पियविप्पओगाणं
बहूणं दुक्ख-दोमणस्साणं आभागी भविस्सति, अणादियं च णं अणवयगं
दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो ° अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व से
कुम्मए अगुत्तिदिए ॥

गुप्तकुम्मस्स सोक्ख-पव

१९. तए णं ते पावसियालगा जेणेव से दोच्चे कुम्मए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता
तं कुम्मगं सव्वओ समंता उव्वत्तेत्ति °परियत्तेत्ति आसारंति संसारंति चालेंति
घट्टेत्ति फंदंति खोभंति नहेहि आलुंपति दंतेहि य अक्खोडंति, नो चेव णं

१. × (ख, ग) ।

२. सं० पा०—जाव सणियं ।

३. सं० पा०—चवलं नहेहि ।

४. 'समाणे' इत्यत्र विहरतीति शेषो द्रष्टव्यः

(वृ) ।

५. सं० पा०—हीलणिज्जे ° ।

६. सं० पा०—दंडणाणि जाव अणुपरियट्टइ ।

७. सं० पा०—उव्वत्तेत्ति जाव दंतेहि निक्खु-
डंति जाव करेत्तए ।

संचाएति तस्स कुम्भगस्स सरीरस्स किञ्चि आवाहं वा वावाहं वा उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा० करेत्तए ॥

२०. तए णं ते पावसियालगा तं कुम्भगं दोच्चंपि तच्चंपि उव्वत्तंति जाव', नो चेव णं संचायंति तस्स कुम्भगस्स सरीरस्स किञ्चि आवाहं वा वावाहं वा' •उप्पाइत्तए० छविच्छेयं वा करेत्तए, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसं पाउव्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

२१. तए णं से कुम्भए ते पावसियालए चिरगए दूरंगए' जाणित्ता सणियं-सणियं गीवं नीणेइ, नीणेत्ता दिसावलोयं करेइ, करेत्ता जमगसमगं चत्तारि वि पाए नीणेइ, नीणेत्ता ताए उक्किट्ठाए' •तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धयाए जइणाए छेयाए० कुम्भगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव मयंगतीरद्दे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परियणंणं सद्धि अभिसमण्णागए यावि होत्था ॥

२२. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं समणो वा समणी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे' पंच य से इंदियाइ गुत्ताइ भवन्ति', •से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणाणं पज्जुवास-णिज्जे भवइ ।

परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लवणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदगं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ०— जहा व से कुम्भए गुत्तिदिए ॥

निकलेव-पदं

२३. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

१. ना० १।४।११ ।

२. सं० पा०—वावाहं वा जाव छविच्छेयं ।

३. दूरंगए (क, ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—उक्किट्ठाए प्फ कुम्भगईए ।

अत्र पाठ संक्षेपः 'प्फ' अनेन संकेतेन

सूचितोस्ति । वृत्ती पूर्णपाठस्य निर्देशो

लभ्यते ।

५. विहरतीति शेषः (वृ) ।

६. सं० पा०—जाव जहा ।

वृत्तिकृता समुद्रता निममनगाथा—

विसणसु इंदियाई, रंभंता राग-दोस-निम्मुक्का ।
 पावेंति निव्वुइसुहं, कुम्मोव्व मयंगदहसोक्खं ॥१॥
 इयरे उ अणत्थ-परंपराओ पावेंति पावकम्मवसा ।
 संसार-सागरगया, गोमाउग्गसियकुम्मोव्व ॥२॥

पंचमं अउभयणं

सेलगे

उपलेश-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवती' नामं नयरी होत्था— पाईणपडीणायया उदीणदाहिणवित्थिण्णा नवजोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणा-यामा धणवइ-मइ-निम्मिया' चामीयर-पवर-पागारा नाणामणि-पंचवण्ण-कविसीसग-सोहिया अलकापुरि'-संकासा पमुइय-पक्कीलिया पच्चक्खं' देव-लोगभया ॥
३. तीसे णं वारवईए नयरीए बहिया' उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए रेवतगे' नामं पव्वए होत्था—तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे नाणाविहगुच्छ-गुम्म-लया-वल्लि-परिगए हंस-मिग-मयूर-कोंच-सारस-चक्कवाय-मयणसाल-कोइलकुलोववेए अणेगतड'-कडग-वियर-उज्झर-पवायपवभारसिहरपउरे अच्छरगण-देवसंघ-चारण-विज्जाहरमिहुण-संविचिण्णे' निच्चच्छणए दसारवर-वीरपुरिस-तेलोक-बलवगाणं, सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे पासाईए दरिसणीए अभिरूवे पडिरूवे ॥

१. वारवई (क) ।

२. निम्माया (क, ग, घ); निम्मया (ख);

अस्माकं पाश्वे वृत्तेः आदर्शद्वयमस्ति ।

तत्रैकस्मिन् धणवइमतिनिम्मियत्ति—

'घनपतिर्बोधमणः तन्मत्त्वानिमिता निरूपिता'

इति पाठोस्ति । अगस्मिनादर्शे 'धणवइमइ-

निम्मायत्ति—घनपतिर्बोधमणः तन्मत्त्वा-

निम्मपिता निरूपिता' इति पाठोस्ति ।

आदर्शगत-पाठभेदानुसारेण वृत्तावपि लिपि-कर्त्रा भेद कृतः इति प्रतीयते ।

३. अलया (क, ख) ।

४. पच्चक्ख (ख) ।

५. बहिया (क, ख) ।

६. रेवयए (क); रेवए (घ) ।

७. °तडाग (क) ।

८. रायपसेणइयं (३२) सूत्रे 'संविचिण्णं' इति पाठो लभ्यते ।

४. तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामंते, एत्थ णं नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था—
सब्बोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासाईए^१ दरिसणीए अभिरूवे
पडिरूवे ॥
५. तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था—
दिब्बे वण्णम्भो^२ ॥
६. तत्थि णं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ । से णं तत्थ
समुद्विजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं,
उगगसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं राईसाहस्सीणं^३, पज्जुन्नपामोक्खाणं अद्धट्ठाणं
कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए^४ दुहंतसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं
एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं, महासेणपामोक्खाणं^५ छप्पण्णाए बलवगसाहस्सीणं,
रुप्पिणप्पामोक्खाणं वत्तीसाए महिलासाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं
अणेगाणं गणियासाहस्सीणं अण्णेसि च वहुणं ईसर-तलवर^६—●माडंबिय-कोडुंबिय-
इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ^७—सत्थवाहपभिईणं, वेयड्डुगिरि^८—सागरपेरंतस्स य दाहिणड्डु-
भरहस्स, बारवईए नयरीए आहेवच्चं^९ ●पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं
आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे^{१०} पालेमाणे विहरइ ॥

थावच्चापुत्त-पदं

७. तत्थ णं बारवईए नयरीए थावच्चा नामं गाहावइणी परिवसइ—अड्डा^१ ●दित्ता
वित्ता वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाणवाहणा बहुघण-जायरूव-रयया
आओग-पओग-संपउत्ता विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणा वहुंदासी-दास-गो-महिस-
गवेलग-प्पभूया बहुजणस्स^२ अपरिभूया ॥
८. तीसे णं थावच्चाए गाहावइणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते नामं सत्थवाहदारए होत्था—
सुकुमालपाणिपाए^३ ●अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरे लक्खण-वज्जण-गुणोववेए
माणुम्माण-प्पमाणपडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पिय-
दंसणे^४ सुरूवे ॥
९. तए णं सा थावच्चा गाहावइणी तं दारगं साइरेगअट्ठवासजाययं^५ जाणित्ता

१. पासातीए (ग, घ) ।

२. ओ० सू० २ ।

३. रायसहस्माणं (क); रातीसहस्माणं (ग);
रायासहस्माणं (घ) ।

४. सट्ठी (क); सट्ठीणं (घ) ।

५. महमेण० (ख, घ) ।

६. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह ।

७. वियड्ड० (ख) ।

८. सं० पा०—आहेवच्चं जाव पालेमाणे ।

९. सं० पा०—अड्डा जाव अपरिभूया ।

१०. सं० पा०—सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे ।

११. ०जाइं (ख); ०जायं (क्वचित्) ।

सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेइ जाव' भोगसमत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलवालियाणं एगदिवसेणं पाणि गेण्हावेइ ।
बत्तीसओ दाओ जाव' बत्तीसाए इब्भकुलवालियाहिं सद्धिं विपुले सद्-फरिस-
रस-रूव-गंधे' °पंचविहे माणुस्सए कामभोग° भुंजमाणे विहरइ ॥

अरिट्टनेमि-समवसरण-पदं

१०. तेणं कालेणं तेणं समाएणं अरहा' अरिट्टनेमी आइगरे तित्थगरे सो चेव वण्णओ' दसधणुस्सेहे नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगामे अट्टारसहिं समण-
साहस्सीहिं, चत्तालीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि
चरमाणे' °गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंमुहेणं विहरमाणे° जेणेव वारवती
नाम नगरी जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव मुरप्पियस्स
जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
अहापडिरूवं ओगहं ओगिण्हित्ता मंजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
११. परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ ॥

कण्हस्स पज्जुवासणा-पदं

१२. तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ,
सद्दावेत्ता एवं वयासी -खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माण मेघो-
घरसियं गंभीरमहुरसद्धं कोमुइयं भेरिं तानेह ॥
१३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठुत्तु' -°चित्त-
माणंदिया जाव'° हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिगहियं दसणहं
सिरसावत्तं° मत्थए अजलिं कट्ठु एवं मामी ! तह त्ति° °आणाए विणएणं
वयणं° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति,
पडिनिक्खमित्ता जेणेव सभा सुहम्मा, जेणेव कोमुइया भेरी, तेणेव उवागच्छंति,

१. ओ० सू० १४६-१४६ ।

२. ना० १।१।६१-६३ ।

३. सं० पा०—सद्दफरिसरसरूवगंधे जाव भुंज-
माणे ।

४. अरिहा (क, ख, ग) ।

५. ओ० सू० १६ तथा वाचनान्तर पृ० १४०;

अत्र 'संपाविउकामे' पर्यन्तं वर्णको ग्राह्यः । १०. सं० पा०—हट्ठुत्तु जाव मत्थए ।

६. °साहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे (क, ख, ग, ११. ना० १।१।६१ ।

घ) (औपपातिकसूत्रे सू० १६) 'चउदसहिं १२. सं० पा०—तहत्ति जाव पडिसुणेंति ।

समणसाहस्सीहिं, छत्तीसाए अज्जियासाह-

म्पोहिं सद्धिं संपरिवुडे' एकवारमेव सद्धिं
संपरिवुडे, इतिपाठोस्ति । अन्यागमेष्वपि
इत्थमेव दृश्यते । अत्रापि इत्थमेव युज्यते ।

७. सं० पा०—चरमाणे जाव जेणेव ।

८. गभीर° (ख, घ) ।

९. सामुदा (द) इयं (वृत्ता) ।

उवागच्छित्ता तं मेघोघरसियं गंभीरमहुरसहं कोमुइयं^१ भेरिं तालेंति^२ । तस्यो
निद्ध-महुर-गंभीर-पडिसुएणं पिव^३ सारइएणं बलाहएणं अणुरसियं भेरीए ॥

१४. तए णं तीसे कोमुइयाए भेरीए तालियाए समाणीए बारवईए नयरीए नव-
जोयणवित्थिण्णाए दुवालसजोयणायामाए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-कंदर-
दरी-विवर^४-कुहर-गिरिसिहर-नगरगोउर-पासाय-दुवार-भवण-देउल-पडिस्सुया^५-
सयसहस्ससंकुलं^६ करेमाणे^७ 'बारवति नयरिं'^८ सन्भितर-बाहिरियं सव्वओ
समंता सहे विप्पसरित्था ॥

१५. तए णं बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए बारसजोयणायामाए समुद्-
विजयपामोक्खा दस दसारा जाव^९ गणियासहस्साइं^{१०} कोमुइयाए भेरीए सहं
सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु-चित्तमाणंदिया जाव^{११} हरिसवस-विसप्पमाणहियया
ण्हाया आविद्ध-वग्घारिय-मल्लदाम-कलावा अह्यवत्थ-चंदणोकिन्नगायसरीरा^{१२}
अप्पेगइया ह्यगया एवं गयगया रह-सीया^{१३}-संदमाणीगया अप्पेगइया पायविहार-
चारेणं पुरिसवग्गुरापारिक्खित्ता कणहस्स वासुदेवस्स अंतियं^{१४} पाउब्भवित्था ॥

१६. तए णं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे जाव^{१५} अंतियं पाउब्भव-
माणे पासित्ता हट्टुट्टु-चित्तमाणंदिए जाव^{१६} हरिसवस-विसप्पमाणहिया कोडु-
वियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउ-
रंगिणि सेणं सज्जेह^{१७}, विजयं च गंधहत्थि उवट्टवेह^{१८} । तेवि तहत्ति उवट्टवेंति^{१९} ॥

१७. *तए णं से कण्हे वासुदेवे ण्हाए जाव^{२०} सव्वालंकारविभूसिए विजयं गंधहत्थि
दुरुढे समाणे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं घरिज्जमाणेणं महया भड-चडगर-वंद-

१. कोमुइयं (ख, ग, घ) ।

२. तालेंति (ग) ।

३. तिव (क) ।

४. विवर (क) ।

५. पडिसुया (क, घ); पडिसुया (ख, ग) ।

६. °संकुलसहं (क, ख) ।

७. करेमाणा (क, ख, ग, घ); असौ पाठः
वृत्त्वाधारेण स्वीकृतः । अत्र 'करेमाणे'
'सहे' इति पदस्य विशेषणमस्ति । वृत्तौ-
कुर्वन्निति व्याख्यातमुपलभ्यते ।

८. बारवईए नयरीए (क) ।

९. ना० १।५।६ ।

१०. अतोमे 'ईसरत्तलवर' संबन्धिपाठो विद्यते,

सचात्र संक्षेपीकरणहेतुना परित्यक्तोभूदिति
प्रतीयते ।

११. ना० १।१।१६ ।

१२. °किन्नगासरीरा (ख, ग) ।

१३. सिया (ख) ।

१४. अंतिए (ग, घ) ।

१५. ना० १।५।१५ ।

१६. ना० १।१।१६ ।

१७. सज्जेहा (ग)

१८. उट्टवेह (ग) ।

१९. उट्टवेंति (ग) ।

२०. सं० पा० —जाव पज्जुवासइ ।

२१. ना० १।१।८१ ।

परियाल-संपरिवुडे बारवतीए नयरीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं पडागाइपडागं विज्जाहर-चारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ, पासित्ता विजयाओ गंधहत्थीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अरहं अरिट्ठनेमि पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, [तं जहा—सचित्ताणं दव्वाणं विउसरण्याए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरण्याए, एगसाडिय-उत्तरासंगकरणेणं, चक्खुफासे अंजलिपगहेणं, मणसो एगत्तीकरणेणं]१। जेणामेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सुसमाणे नमंसमाणे पंजलिउडे अभिमुहे विणएणं० पज्जुवासइ ॥

थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं

१८. थावच्चापुत्ते वि निग्गए । जहा मेहे१ तहेव धम्मं सोच्चा निसम्म१ जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ । जहा मेहस्स१ तहा चेव निवेयणा ॥
१९. तए णं तं थावच्चापुत्तं थावच्चा गाहावइणी जाहे नो संचाएइ विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य बहूहि१ आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामिया चेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स१ निक्खमणमणुमन्तिथा ॥
२०. तए णं सा थावच्चा [गाहावइणी ?] आसणाओ अम्भुट्टेइ, अम्भुट्टेत्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता मित्त१-० नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धि० संपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स भवणवर-पडिदुवार-देसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडिहारदेसिएणं मग्गेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल१-० परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं० वद्धावेइ, वद्धावेत्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नामं दारए --इट्ठे१ ० कंते पिए मणुण्णे

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

लोमाहि इति पदस्य पूर्वं विद्यते ।

२. पू०—ना० १।१।१०१, १०२ ।

६. × (ख, ग, घ) ।

३. निसम्मा (ख, ग, घ) ।

७. सं० प०—मित्त जाव संपरिवुडा ।

४. पू०—ना० १।१।१०२-११३ ।

८. सं० पा०—करयल वद्धावेइ ।

५. १।१।११४ सूत्रे 'बहूहि' इति पदं विसयाणु-

९. सं० पा०—इट्ठे जाव से णं ।

मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीवियऊसासए हिययनंदिजणए उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए ?

से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पंके जाए जले संवड्डिए नोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव थावच्चापुत्ते कामेसु जाए भोगेसु संवड्डिए नोवलिप्पइ कामरएणं नोवलिप्पइ भोगरएणं ।^० से णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विगगे भीए 'जम्मण-जर-मरणणं'^१ इच्छइ अरहओ अरिट्टनेमिस्स^२ अतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगरियं^३ पव्वइत्तए । अहण्णं^४ निक्खमणसक्कारं करेमि । तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तमउड-चामराओ य विदिन्नाओ ॥

२१. तए णं कण्हे वासुदेवे थावच्चं गाहावइणि एवं वयासी—अच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुत-वीसत्था, अहण्णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि ॥

कण्हस्स थावच्चापुत्तस्स य परिसंवाद-पद्यं

२२. तए णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजयं हत्थिरयणं दुरूढे समाने जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी—मा^५ णं तुमं देवाणुप्पिया ! मुंडे भवित्ता पव्वयाहि, भुंजाहि णं देवाणुप्पिया^६ ! विपुले माणुस्सए कामभोगे मम वाहुच्छाय^७-परिगगहिए । केवलं देवाणुप्पियस्स अहं नो संचाएमि वाउकायं^८ उवरिमेणं गच्छमाणं निवारित्तए । अण्णो^९ णं देवाणुप्पियस्स जं किंचि आबाहं वा वाबाहं^{१०} वा उप्पाएइ, तं सव्वं निवारेमि ॥

२३. तए णं से थावच्चापुत्ते कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाने कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया ! मम जीवियंतकरं^{११} मच्चं एज्जमाणं निवारेसि, जरं वा सरीररूव-विणासणिं सरीरं अइवयमाणं निवारेसि, तए णं अहं तव वाहुच्छाय-परिगगहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरामि ॥

२४. तए णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाने थावच्चापुत्तं एवं

१. लिपिसंक्षेपेण एतवान् पाठः परित्यक्तोऽस्ति ।

स च १।१।१४५ सूत्राधारेण पूरितोऽस्ति ।

२. सं० पा०—अरिट्टनेमिस्स जाव पव्वइत्तए ।

६. अहं णं (ख) ।

४. नो (ग) ।

५. °प्पिया मम जीवियणुत्तए (ख) ।

६. °छाया (ख) ।

७. °क्कायं (क) ।

८. अन्ने (घ) ।

९. ण्णं (ख, ग) ।

१०. विबाहं (ख) ।

११. °करणियं (क, ख, घ) ।

वयासी—एए नं देवाणुप्पिया दुरइक्कमणिज्जा, नो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा निवारित्तए, नण्णत्थ' अप्पणो' कम्मक्खएणं ॥

२५. तए नं से थावच्चापुत्ते कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—जइ नं एए दुरइक्कमणिज्जा, नो खलु सक्का' सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा निवारित्तए°, नण्णत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं । तं इच्छामि नं देवाणुप्पिया ! अण्णाण-मिच्छत्त-अविरइ-कसाय-संचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए ॥

कण्हस्स जोगक्खेम-घोसणा-पदं

२६. तए नं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह नं देवाणुप्पिया ! वारवईए नयरीए सिंघाडग-तिग'-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेमु हत्थिखंधवरगया महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा उग्घोसणं करेह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते संसारभउव्विगे भीए जम्मण-जर-मरणाणं, इच्छइ अरहओ अरिट्टनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए', तं जो खलु देवाणुप्पिया ! राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुंविय-माडंविय-इव्वभ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहे वा थावच्चापुत्तं पव्वयंतमणु-पव्वयइ, तस्स नं कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ' पच्छाउरस्स वि य से मित्त-नाइ'-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स ° 'जोगक्खेम-वट्टमाणी' पडिवहइ त्ति कट्टु घोसणं घोसेह जाव घोसंति ॥

थावच्चापुत्तस्स अभिनिक्खमण-पदं

२७. तए नं थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं पुरिससहस्सं निक्खमणाभिमुहं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं' पत्तेयं-पत्तेयं पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढं समाणं मित्त-नाइ-परिवुडं थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउव्वभूयं ॥
२८. तए नं से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्सं अंतियं पाउव्वभवमाणं पासइ, पासित्ता कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ'

१. अन्नत्थ (ख, ग) ।

२. अप्पणा (क, ख, ग, वृ) ।

३. सं० पा०—सक्का जाव नन्नत्थ ।

४. सं० पा०—तिग जाव पहेसु ।

५. पव्वत्तित्ते (ख, घ) ।

६. अणुजाणाति (ख) ।

७. सं० पा०—नाइ ° ।

८. जोगक्खेमं वट्टमाणी (क, ख, ग); जोगक्खेम-वट्टमाणी (घ) ।

९. सव्वालंकारभूसियं (क, ख) ।

१०. ना० १।१।१२२-१२८ ।

●'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अण्णेगल्लंभ-सयसन्निविट्ठं जाव' सीयं उवट्ठवेह' ॥

२६. तए णं से थावच्चापुत्ते बारवतीए नयरीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहम्मो अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्तं पडागाइपडागं विज्जाहर-चारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ°, पासित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ ॥

सिस्सभिक्षादाण-पवं

३०. तए णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं जेणेव अरह्मा अरिट्ठनेमी 'तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते थावच्चाए गाहावइणीए एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीवियऊसासए हिययनंदिजणए उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए ?

से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पंके जाए जले संवड्डिए नोवलिप्पइ पंकरणं नोवलिप्पइ जलरणं, एवामेव थावच्चापुत्ते कामेसु जाए भोगेसु संवड्डिए नोवलिप्पइ कामरणं नोवलिप्पइ भोगरणं । एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विगे भीए जम्मण-जर-मरणानं, इच्छइ देवाणु-प्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अम्हे णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्षं दलयामो । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिक्षं ॥

३१. तए णं अरह्मा अरिट्ठनेमी कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाने एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ ॥

३२. तए णं से थावच्चापुत्ते अरहम्मो अरिट्ठनेमिस्स अंतियाओ उत्तरपुरत्थिमं दिसीभायं अवक्कमइ, सयमेव° आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ ।

३३. तए णं सा थावच्चा गाहावइणी हंसलक्खणेणं पडसाडएणं° आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छइ, हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइं असूणि 'विणिम्मु-

१. सं० पा०—तहेव सेयापीएहि कलसेहि
पहावेइ जाव अरहम्मो अरिट्ठनेमिस्स
छत्ताइछत्तं पडागाइपडागं पासइ, पासित्ता
विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता ।

२. ना० १।१।१२६ ।

३. पू०—ना० १।१।१३०-१४३ ।

४. सं० पा०—सव्वं तं चेव जाव आभरणं ।

५. पडगसाडगेणं (ख) ।

यमाणी-विणिम्भुयमाणी' • रोयमाणी-रोयमाणी कंदमाणी-कंदमाणी विलव-
माणी-विलवमाणी° एवं वयासी—जइयव्वं जाया ! घडियव्वं जाया !
परक्कमियव्वं जाया ! अस्सिं च णं अट्टे नो पमाएयव्वं' । • अम्हंपि णं एसेव
मग्गे भवउ त्ति कट्ठु थावच्चा गाहावइणी अरहं अरिट्टुनेमि वंदति नमंसति,
वंदित्ता नमंसित्ता° जामेव दिस्सि पाउब्भूया तामेव दिस्सि पडिगया ॥

थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जागहण-पदं

३४. तए णं से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेणं सद्धिं सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ,
करेत्ता जेणामेव अरहा अरिट्टुनेमी तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं
अरिट्टुनेमि तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ जाव'
पव्वइए ॥

थावच्चापुत्तस्स अणगारच्चरिया-पदं

३५. तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारे जाए—इरियासमिए भासासमिए' • एसणासमिए
आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-
पारिट्ठावणियासमिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते
कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अकोहे अमाणे अमाए अलोहे संते पसंते
उवसंते परिनिव्वुडे अणासवे अममे अकिंचणे निरुवलेवे,
कंसपाईव मुक्कतोए संखो इव निरंगणे जीवो विव अप्पडिहयगई गगणमिव
निरालंबणे वायुरिव अप्पडिवद्धे सारयसलिलं व मुद्धहियए पुक्खरपत्तं पिव
निरुवलेवे कुम्भो इव गुत्तिंदिए खगगविसाणं व एगजाए विहग इव विप्पमुक्के
भारंडपक्खीव अप्पमत्ते कुंजरो इव सोंडीरे वसभो इव जायत्थामे सीहो इव
दुद्धरिसे मंदरो इव निप्पकपे सागरो इव गंभीरे चंदो इव सोमलेस्से सूरु इव
दित्ततेए जच्चकंचणं व जायरूवे वसुंधरव्व सव्वफासविसहे मुहुयहुयासणोव्व
तेयसा जलंते ॥

३६. नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भवइ । [सेय पडिबंधे चउव्विहे
पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । दव्वओ—सच्चित्ताचित्त-
मीसेसु । खेत्तओ—गामे वा नगरे वा रण्णे वा खले वा घरे वा अंगणे वा ।
कालओ—समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा

१. विणिमुंचमाणी-विणिमुंचमाणी (ख, ग, घ);

सं० पा०—विणिम्भुयमाणी २ एवं ।

२. सं० पा०—पमाएयव्वं जाव जामेव ।

३. ना० १।१।१४६, १५० ।

४. सं० पा०—भासासमिए जाव विहरइ ।

औपपातिकसूत्रे स्थानद्वये (२७-२६, १६४)

अनगार-वर्णको विद्यते । प्रस्तुतसूत्रस्यवृत्ती
व्याख्यातादनगार-वर्णकात् तद् द्वयमपि
भिन्नमस्ति ।

अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा अयणे वा संवच्छरे वा अण्णयरे वा दीहकाल-
संजोए । भावओ—कोहे वा माणे वा माए वा लोहे वा भए वा हासे वा । एवं
तस्स न भवइ'] ॥

३७. से णं भगवं वासीचंदणकप्पे समतिणमणि-लेट्ठुकंचणे समसुहदुक्खे इहलोग-
परलोग-अप्पडिबद्धे जीविय-मरण-निरवकंखे संसारपारगामी कम्मनिग्घायणट्ठाए
एवं च णं० विहरइ ॥

३८. तए णं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए
सामाइयमाइयाइं चोइसपुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जिता बहूहिं० चउत्थ-
छट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणे० विहरइ ॥

थावच्चापुत्तस्स जणवयविहार-पदं

३९. तए णं अरहा अरिट्ठनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइयं अणगार-
सहस्सं सीसत्ताए दलयइ ॥

४०. तए णं से थावच्चापुत्ते अणया कयाइं अरहं अरिट्ठनेमि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता
नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे
'अणगारसहस्सेणं सद्धिं' बहिया जणवयविहारं विहरित्तए ।
अहासुहं ॥

४१. तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

२. सामाइयाइं (ख, ग) ।

३. सं० पा०—बहूहिं जाव चउत्थ विहरइ
(क, ख, ग, घ) । अत्र 'चउत्थ' शब्दानंतरं
'जाव' शब्दो युज्यते । 'बहूहिं' इति पदानंतरं
'जाव' शब्दो नार्थकोऽस्ति । प्रस्तुतसूत्रस्य
द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य प्रथमवर्गधस्य प्रथमाध्ययने
पि 'बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ' एवं पाठो
लभ्यते ।

४. सहस्सेणं अणगाराणं (क, ख, घ) । सहस्सेणं
अणगारेणं (ग) । अग्रिमसूत्रे 'अणगार
सहस्सेणं सद्धिं' इति पाठो लभ्यते । 'क्वचित्'
प्रयुक्तादर्शेषु अत्रापि इत्थमेव पाठोऽस्ति,
तेनात्र स एव पाठः स्वीकृतः ।

५. अहासुहं देवाणुप्पिया ! (क) ।

६. सद्धिं तेणं उरालेणं उदग्गेणं (उग्गेणं—
ख, ग) पयत्तेणं पग्गहिएणं (क, ख, ग, घ) ।
पूर्वसूत्रे थावच्चापुत्तेण विहारस्य अनुज्ञा
प्राथिता तत्र य. पाठोऽस्ति, तस्यानुसारेण
प्रस्तुतसूत्रेऽपि 'अणगारसहस्सेणं सद्धिं बहिया
जणवयविहारं विहरइ' इत्येव पाठो
युक्तोऽस्ति । एतादृशे प्रसङ्गे सर्वत्रापि
एतावानेव पाठः उपलभ्यते । 'तेणं उरालेणं०
पग्गहिएणं' एतावान् पाठोऽत्र अतिरिक्त
इव प्रतिभाति ।

यद्यसौ पाठः स्वीक्रियेत, तदानीं 'पग्गहिएणं'
इति पदस्यानन्तरं 'तवोक्कम्मेणं' इति पाठः
आवश्यकोऽस्ति । तं विना कश्चिद् अर्थ-
सम्बन्धो नोपपद्यते ।

सेलगराय-पदं

४२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सेलगपुरे नामं नगरे होत्था । सुभूमिभागे उज्जाणे ।
सेलए राया । पउमावई देवी । मंडुए^१ कुमारे जुवराया ।
४३. तस्स णं सेलगस्स पंथगपामोक्खा^२ पंच मंतिसया होत्था—उप्पत्तियाए वेणइयाए
कम्मियाए पारिणामियाए उववेया रज्जघुरं चित्तयंति ॥
४४. थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसढे । राया निग्गए ॥

सेलगस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

४५. 'तए णं से सेलए राया थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अंतिए धम्मं सोच्चा
निसम्म हट्टुट्टु-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण-
हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता थावच्चापुत्तं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं
करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—
सद्दहामि णं भंते ! निग्गथं पावयणं ।
पत्तियामि णं भंते ! निग्गथं पावयणं ।
रोएमि णं भंते ! निग्गथं पावयणं ।
अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गथं पावयणं ।
एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छिय-
मेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! जं णं तुब्भे वदह
त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं
अंतिए बह्वे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा जाव^३ इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं,
एवं—धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्टागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-
कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-संतसार-सावएज्जं, विच्छडिडत्ता
विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता, मुंडा भवित्ता णं अगाराओ
अणगारियं पव्वइया, तहा णं अहं नो संचाएमि^४ जाव^५ पव्वइत्तए,
अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए चाउज्जामियं^६ • गिहिधम्मं पडिवज्जि-

१. मड्डुए (क) सर्वत्र मड्दुए (ग); मड्डुए (घ) ।

२. • मोक्खा णं (क, ग, घ) ।

३. सं० पा०—धम्मं सोच्चा जहा ण
देवाणुप्पियाणं अंतिए बह्वे उग्गा भोगा
जाव चइत्ता हिरण्णं जाव पव्वइया तहा णं
अहं णो संचाएमि पव्वइए ।

४. राय० सू० ६८८ ।

५. राय० सू० ६९५ ।

६. अत्र 'पंचाणुव्वइयं' इति पाठः प्रबाहपतितः

इवाभाति । अहंतोऽरिष्टनेमेः समये
चतुर्यामघमंस्य प्रवृत्तिरासीत् । यथा
केशिस्वामिना चित्तसारथये चतुर्यामघमंस्य
उपदेशः कृतः (रायपसेणइयं सू० ६९३) ।
चित्तसारथेर्ब्रतस्वीकारेऽप्यस्य समीक्षा
कृतास्ति, द्रष्टव्यं—रायपसेणइयं, ६९५
सूत्रस्य पादटिप्पणम् । अत्रापि वस्तुतः
'चाउज्जामियं गिहिधम्मं' इति पाठः
समीचीनः प्रतिभाति ।

स्सामि' ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि' ॥

४६. तए णं से सेलए राया थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अंतिए चाउज्जामियं गिहि-
धम्मं उवसंपज्जइ ॥

सेलगस्स समणोवासग-चरिया-पदं

४७. तए णं से सेलए राया समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे
आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्ख-कुसले असहेज्जे देवासुर-
णाग-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणैहिं
निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्क-
खिए निव्वित्तिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिज-
पेमाणुरागरत्ते 'अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे,
ऊसियफलहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउर-परघरदार-प्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्ण-
मासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं
असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं
पाडिहारिएणं य पीढफल-सेज्जा-संधारएणं पडिलाभेमाणे सील-व्वय-गुण-
वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्भेहिं'० अप्पाणं
भावेमाणे विहरइ ॥

४८. पंथगपामोक्खा पंच मंति-सया' समणोवासया जाया ॥

४९. थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

५०. तेणं कालेणं तेणं समएणं सोगंधिया नामं नयरी होत्था—वण्णओ' । नीलासोए
उज्जाणे—वण्णओ' ॥

सुदंसणसेट्ठि पदं

५१. तत्थ णं सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्ठी परिवसइ, अड्ढे जाव'
अपरिभूए ॥

सुयपरिव्वायग-पदं

५२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुए नामं परिव्वायए होत्था—'रिउव्वेय'-जजुव्वेय'-साम-

सं० पा०—पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए
जाए अहिगयजीवाजीवे जावअप्पाणं ।
वृत्तो 'पंचाणुव्वइयं' इति पदस्याग्रे
'सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं' इति
पाठोऽस्ति । असावपि औपपातिकसूत्रात्
उद्धृतोऽस्ति वृत्तिकृता ।

१. पडिबज्जित्तए (वृ) ।

२. काहिंसि (वृ) ।

३. वृत्तो अस्य पाठस्य पूर्तिः कृताऽस्ति । तत्र
कानिचित् पदानि भिन्नानि लभ्यन्ते ।

४. ० सया य (ग) ।

५. ओ० सू० १ ।

६. नृ० १।३।३ ।

७. ना० १।५।७ ।

८. रियुव्वेय (ख) ।

९. यजुव्वेय (घ); जउव्वेय (क्व०) ।

वेय-अथव्वणवेय-सट्ठितंतकुसले^१ संखसमए लद्धट्ठे पंचजम^२-पंचनियमजुत्तं सोय-मूलयं दसप्पयारं परिव्वायगधम्मं दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणे पण्णवेमाणे धाउरत्त-‘वत्थ-पवर’-परिहिए तिट्ठ-कुडिय^३-छत्त-छन्नालय-अंकुस-पवित्तय^४-केसरि-हत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सट्ठि संपरिवुडे जेणेव सोगंधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करेत्ता संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

५३. तए णं सोगंधियाए नगरीए सिंघाडग^५-●तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु^६ बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ—एवं खलु सुए परिव्वायए इहमा-गए^७ इह संपत्ते इह समोसठे इह चेव सोगंधियाए नयरीए परिव्वायगावसहंसि संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

५४. परिसा निग्गया ! सुदंसणो वि णीति^८ ॥

सोयमूलय-धम्म-पदं

५५. तए णं से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंसणस्स य अण्णेसि च बहूणं संखाणं^९ परिकहेइ—एवं खलु सुदंसणा ! अम्हं सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते । से वि य सोए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वसोए य भावसोए य । दव्वसोए उदएणं मट्ठियाए य । भावसोए दब्भेहि य मंतेहि य । जं णं अम्हं देवाणुप्पिया ! किंचि असुई भवइ तं सव्वं सज्जपुढवीए आलिप्पइ^{१०}, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ, तओ तं असुई सुई भवइ । एवं खलु जीवा जलाभिसेय-पूयप्पाणो अविग्घेणं सगं गच्छंति ॥

१. वृत्तिकारेणात्र वाचनान्तरं व्याख्यातमस्ति । तद् औपपातिकसूत्रे (६७) इत्थमस्ति—
रिउव्वेद - यज्जुव्वेद - सामवेद-अहठ णवेद-
इतिहासपंचमाणं निष्णट्ठुद्धाणं संगोबंगणं
सरहस्साणं चउण्हं वेदाणं सारणा पारणा
धारणा सडंगवी सट्ठितंतविसारया संखाणे
सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे
अण्णेसु य बहूसु बंमण्णएसु य सत्थेसु
सुपरिणिट्ठिए ।

२. पंचजाम (घ) ।

३. पवरवत्थ (ग) ।

४. वृत्ती वाचनान्तरस्य उल्लेखो विद्यते, १०. आलिपइ (ङ) ।

तदनुसारेण ‘कुडिय-कंचणिय-करोडिय-
छत्त^०’ एवं पाठ-संरचना स्यात् । औपपातिके
(११७) पि इत्थं पाठक्रमो विद्यते—
कुडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ
य भिसियाओ य^१ ।

५. परिवत्तिय (ख, ग) अशुद्धं प्रतिभाति;
पवित्तिय (घ) ।

६. सं० पा०—सिंघाडग^० ।

७. सं० पा०—इहमागए जाव विहरइ ।

८. निग्गए (क्व०) ।

९. संखाणं धम्मं (क्व०) ।

सुदंसणस्स सोयमूलय-धम्मपडिबत्ति-पदं

५६. तए णं से सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा हट्टुट्टे' सुयस्स अंतियं सोयमूलयं धम्मं गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायए विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिला-भेमाणे' ०संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे० विहरइ ॥
५७. तए णं से सुए परिव्वायए सोगंधियाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

थावच्चापुत्तस्स सुदंसणेण संवाद-पदं

५८. तेणं कालेणं तेणं समएणं थावच्चापुत्तस्स समोसरणं । परिसा निग्गया । सुदंसणो वि णीइ' । थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—तुम्हाणं' किंमूलए धम्मे पणत्ते ?
५९. तए णं थावच्चापुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्ते समाणे सुदंसणं एवं वयासी—सुदंसणा ! विणयमूलए' धम्मे पणत्ते । से वि य विणए दुविहे पणत्ते, तं जहा—अगार-विणए' अणगारविणए य ।
- तत्थ णं जे से अगारविणए, से णं 'चाउज्जामिए गिहिधम्मे । तत्थ णं जे से अणगारविणए, से णं चाउज्जामा, तं जहा—सब्बाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सब्बाओ मुसावायाओ वेरमणं सब्बाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सब्बाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं' ।

१. हट्ट (क, ख, ग) ।
२. सं० पा०—'पडिलाभेमाणे जाव विहरइ ।
३. णीओ (ग); निग्गओ (क्व०) ।
४. तुम्हाणं (घ) ।
५. विणयमूले (ख, ग, घ) ।
६. आगार० (ख, घ) ।
७. पंच अणुव्वयाइं सत्त सिक्खावयाइं एक्कारस उवासगपडिमाओ । तत्थणं जे से अणगार-विणए, से णं पंच महव्वयाइं, तं जहा—सब्बाओ पाणाइवायाओ वेरमणं सब्बाओ मुसावायाओ वेरमणं सब्बाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं सब्बाओ मेहुणाओ वेरमणं सब्बाओ परिग्गहाओ वेरमणं सब्बाओ राइभोयणाओ वेरमणं जाव मिच्छादंसण-सत्त्वाओ वेरमणं, दसविहे पच्चक्खाणे बारस मिक्खुपडिमाओ (क, ख, ग, घ) ।

एतत् अगारानगरविनययोनिरूपणं महावीर-कालीनं वर्तते । अहंनरिष्टनेमिः द्वाविंशति-तमः तीर्थं करो विद्यते । तच्छासने चतुर्यामि धर्मस्यैव निरूपणमासीत् । मज्झिमगा बावीसं अरहंता भगवतो चाउज्जामं धम्मं पणवयंति' इति स्थानाङ्गवर्ति पाठेन उक्ताभिमतस्य पुष्टिर्जायते । उत्तराव्ययने-नापि (२३।२३-२८) अस्य समर्थनं भवति । अत्र पंचमहाव्रतात्मकस्य अनगरधर्मस्य तथा पंचाणुव्रत-सप्तशिक्षाव्रतात्मकस्य अगारधर्मस्य निरूपणं जातं तद्वर्णनसंक्रमणमेव प्रतीयते । स्थानाङ्गे चतुर्यामिनिरूपणं इत्यमस्ति—सब्बाओ पाणाइवायाओ वेरमणं सब्बाओ मुसावायाओ वेरमणं सब्बाओ अदिण्णादा-णाओ वेरमणं सब्बाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं (४।१३६) ।

इच्चेएणं दुविहेणं विणयमूलएणं धम्मेणं आणुपुब्बेणं अट्टकम्मपगडीओ खवेत्ता लोयग्गपइट्ठाणा भवन्ति ॥

६०. तए णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वयासी—तुब्भणं सुदंसणा ! किमूलए धम्मे पण्णत्ते ?

अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते' । *से वि य सोए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दब्बसोए य भावसोए य ।

दब्बसोए उदएणं मट्ठियाए य । भावसोए दब्भेहि य मंतेहि य ।

जं णं अम्हं देवाणुप्पिया ! किञ्चि असुई भवइ तं सब्बं सज्जपुढवीए आलिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ, तओ णं असुई सुई भवइ । एवं खलु जीवा जलाभिसेय-पूयप्पाणो अविग्घेणं° सगं गच्छन्ति ॥

६१. तए णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वयासी—सुदंसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा, तए णं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव' पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि काइ' सोही ? नो इणट्ठे' समट्ठे । एवामेव सुदंसणा ! तुब्भं पि पाणाइवाएणं जाव' बहिद्धा-दाणेणं' नत्थि सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्ज-माणस्स नत्थि सोही ।

सुदंसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं सज्जिय'-खारेणं आलिपइ', आलिपित्ता पयणं आरुहेइ', आरुहेत्ता उण्हं गाहेइ, तओ पच्छा सुद्धेणं वारिणा धोवेज्जा । से नूणं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जिय-खारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहियस्स सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवइ ?

हंता भवइ । एवामेव सुदंसणा ! अम्हं पि पाणाइवायवेरमणेणं जाव'' बहिद्धा-दाणवेरमणेणं'' अत्थि सोही, जहा वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स'' *सज्जिय-खारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहियस्स° सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही ॥

१. सं० पा०—पण्णत्ते जाव सगं ।

२. धोएज्जा (क, ग, घ) ।

३. × (ख, ग) ।

४. काय (क, ग) ।

५. यणट्ठे (क, ख) ।

६. ना० १।५।५६ ।

७. मिच्छादंसणसल्लेणं (क, ख, ग, घ) । १३. सं० पा०—वत्थस्स जाव सुद्धेणं ।

द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

८. सज्जिया (क, घ) ।

९. अणुलिप्पति (ख, घ); अणुलिपइ (ग) ।

१०. आरोहइ (घ) ।

११. ना० १।५।५६ ।

१२. मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं (क, ख, ग, घ) ।

द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

सुदंसणस्स विणयमूलय-धम्मपडिबत्ति-पदं

६२. तत्थ णं सुदंसणे संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! [तुभं भंति ?] धम्मं सोच्चा जाणित्तए ॥
६३. 'तए णं थावच्चापुत्ते अणगारे सुदंसणस्स तीसे य महइमहालियाए महच्चपरि-साए चाउज्जामं धम्मं कहेइ, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं जाव' ॥
६४. तए णं से सुदंसणे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव^१ समणे निगंगे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फल-सेज्जा-संथारएणं ° पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

सुएण सुदंसणस्स पडिसंबोध-पयत्त-पदं

६५. तए णं तस्स सुयस्स परिव्वायगस्स इमीसे कहाए लद्धट्टस्स समाणस्स अयमेया-रूवे^२ °अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे ° समुप्पज्जित्था—एवं खलु सुदंसणेणं सोयधम्मं विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवण्णे, तं सेयं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठि वामेत्तए पुणरवि सोयमूलए धम्मे आघवित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता परिव्वायगसहस्सेणं सद्धि जेणेव सोगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वा-मगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करेत्ता धाउरत्त-वत्थ-पवर^३-परिहिए पविरल-परिव्वायगेणं सद्धि संपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सोगंधियाए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदंसणे तेणेव उवागच्छइ ॥
६६. तए णं से सुदंसणे तं सुयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो अण्भुट्टेइ न पच्चुग-च्छइ^४ नो आढाइ नो वंदइ तुसिणीए संचिट्टइ ॥
६७. तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अण्भुट्टियं^५ पासित्ता एवं वयासी—'तुमं णं^६ सुदंसणा ! अण्णया मम एज्जमाणं पासित्ता अण्भुट्टेसि^७ ° पच्चुगच्छसि

१. सं० पा०—जाव समणोवासए जाए ६. × (क, ख, ग, घ) ।

अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे । ७. पत्तुगच्छइ (घ) ।

२. एतत् १।५।५६ सूत्रात् पूरितम् । ८. अण्भुट्टियं (ख, ग, घ) ।

३. राय० ६६४-६६७ । ९. तुमणं (क) ।

४. ना० १।५।४७ । १०. सं० पा०—अण्भुट्टेसि जाव वंदसि ।

५. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

आढासि० वंदसि, इयाणि सुदंसणा ! तुमं ममं एज्जमाणं पासित्ता' •नो
अब्भुट्टेसि नो पच्चुग्गच्छसि नो आढासि० नो वंदसि । तं कस्स णं तुमे
सुदंसणा ! इमेयारूवे विणयमूले धम्मे पडिवण्णे ?

६८. तए णं से सुदंसणे सुएणं परिव्वायगेणं एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्टेइ,
अब्भुट्टेत्ता करयल'•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु० सुयं परिव्वा-
यगं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी
थावच्चापुत्ते नामं अणगारे' •पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे०
इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ । तस्स णं अंतिए विणयमूले
धम्मे पडिवण्णे ॥

६९. तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं एवं वयासी—तं गच्छामो णं सुदंसणा ! तव
धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो, इमाइ च णं एयारूवाइं
अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छामो । तं जइ मे से इमाइं
अट्ठाइं •हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं० वागरेइ', तओ णं वंदामि
नमंसांमि । अह मे से इमाइं अट्ठाइं •हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं० नो
वागरेइ, तओ णं अहं एएहि चेव अट्ठेहि हेऊहि निप्पट्ट-पसिणवागरणं
करिस्सामि ॥

सुयस्स थावच्चापुत्तेण संवाद-पदं

७०. तए णं से सुए परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणेण य सेट्ठिणा सट्ठि जेणेव नीलासोए
उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थाव-
च्चापुत्तं एवं वयासी—जत्ता ते भंते ? जवणिज्जं 'ते (भंते ?) ? अब्बाबाहं
(ते भंते ?) ? फासुयं विहारं (ते भंते ?) ?'

७१. तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारे सुएणं परिव्वायगेणं एवं वुत्ते समाणे सुयं
परिव्वायगं एवं वयासी—सुया ! जत्तावि मे जवणिज्जं पि मे अब्बाबाहं पि मे
फासुयं विहारं पि मे ॥

७२. तए णं से सुए थावच्चापुत्तं एवं वयासी—किं ते' भंते ! जत्ता ?

१. सं० पा०—पासित्ता जाव नो वंदसि ।

२. सं० पा०—करयल० ।

३. सं० पा०—अणगारे जाव इहमागए ।

४. हेऊणि (क); हेऊति (ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—अट्ठाइं जाव वागरेइ ।

६. वागरेइ (ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—अट्ठाइं जाव नो वागरेइ ।

८. नो से (ख, ग) ।

९. प्रयुक्तादर्शेषु एतेषु त्रिविधं प्रश्नेषु 'ते भंते ?'

इति पाठो नास्ति । क्वचित्प्रयुक्तादर्शेषु
'जवणिज्जं' इति पदस्याग्रे 'ते' इति पदं
लभ्यते । तेनानुमीयते चतुर्विधं प्रश्नेषु
एवमासीत् । उत्तरसूत्रेणाप्यस्य पुष्टिर्जायते ।

१०. आदर्शेषु 'ते' इति पदं न लभ्यते, किन्तु
पूर्वप्रसंगानुसारेणात्र तद् युज्यते । भगवत्या
(१८।२०७) मपि इत्थमेव पाठो लभ्यते ।

सुया ! जणं मम नाण-दंसण-चरित्त-तव-संजममाइएहिं जोएहिं जयणा, से तं जत्ता ।

से कि ते भंते ! जवणिज्जं ?

सुया ! जवणिज्जे दुविहे पणत्ते, तं जहा—इंदियजवणिज्जे य नोइंदियजवणिज्जे य ।

से कि तं इंदियजवणिज्जे ?

सुया ! जणं ममं सोत्तिदिय-चक्खिदिय-घाणिदिय-जिण्णिदिय-फांसिदियाइं निरुवह्याइं वसे वट्ठंति, से तं इंदियजवणिज्जे ।

से कि तं नोइंदियजवणिज्जे ?

सुया ! जणं मम कोह-माण-माया-लोभा खीणा उवसंता नो उदयंति, से तं नोइंदियजवणिज्जे ।

से कि ते भंते ! अग्वावाहं ?

सुया ! जणं मम वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइया' विविहा रोगायंका नो उदीरेंति, से तं अग्वावाहं ।

से कि ते भंते ! फासुयं विहारं ?

सुया ! जणं आरामेसु उज्जाणेसु देउलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पंडग-विवज्जियासु वसहीसु पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारयं ओगिण्हित्ता णं विहरामि, से तं फासुयं विहारं ॥

सरिसवयाणं भक्खाभक्ख-पदं

७३. सरिसवया' ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?

सुया ! सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ?

सुया ! सरिसवया दुविहा पणत्ता, तं जहा—मित्तसरिसवया' य घणससरिसवया' य ।

तत्थ णं जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा पणत्ता, तं जहा—सहजायया सह-वड्ढियया सहपंसुकीलियया', ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया ।

अप्रवर्तिषु त्रिष्वपि प्रश्नेषु आदर्शलब्धस्य 'तं' इति पदस्य स्थाने 'ते' इति पदं स्वीकृतमस्ति ।

सूत्रे 'सन्निवाइय' पदं विभक्त्यन्तं स्वीकृतमस्ति, तदाधारेण त्रापि तथैव स्वीकृतम् ।

१. जवणिज्जं (क, ख, ग, घ) । भगवत्या (१८।२०६) मपि इत्थमेव पाठो लभ्यते ।

२. चिट्ठंति (ख) ।

३. सन्निवाइय (क, ख, ग, घ) । १।१।११२

४. सरिसवता (ख, ग) ।

५. °सरिसवा (ख, ग) ।

६. °सरिसवा (ख, ग) ।

७. °कीलयया (क); °कीलया (ग, घ) ।

तत्थ णं जे ते घण्णसरिसवया^१ ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य । तत्थ णं जेते असत्थपरिणया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—फासुया य अफासुया णं सुया ! [समणाणं निग्गंथाणं ?] नो भक्खेया । तत्थ णं जेते 'फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एसणिज्जा^२ य अणेसणिज्जा^३ य । तत्थ णं जेते अणेसणिज्जा ते [णं समणाणं निग्गंथाणं ?] अभक्खेया । तत्थ णं जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जाइया य अजाइया य^४ । तत्थ णं जेते अजाइया ते [णं समणाणं निग्गंथाणं ?] अभक्खेया । तत्थ णं जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—लद्धा य अलद्धा य । तत्थ णं जेते अलद्धा ते [णं समणाणं निग्गंथाणं ?] अभक्खेया । तत्थ णं जेते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया ।

एएणं अट्ठेणं सुया ! एवं वुच्चइ—सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥

कुलत्थाणं भक्खाभक्ख-पदं

७४. "कुलत्था ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?

सुया ! कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि ?

सुया ! कुलत्था दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थिकुलत्था य घण्णकुलत्था य ।

तत्थ णं जेते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कुलबहुया इ य कुलमाउया इ य कुलधूया इ य । ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया ।

तत्थ णं जेते घण्णकुलत्था ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य । तत्थ णं जेते असत्थपरिणया ते समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया ।

तत्थ णं जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—फासुया य अफासुया य । अफासुया णं सुया ! समणाणं निग्गंथाणं नो भक्खेया । तत्थ णं जेते

१. °सरिसवा (क, ख, ग, घ) ।

२. जातिया (क, ख, ग, घ) ।

३. अजातिया (क, ख, ग, घ) ।

४. भगवतीसूत्रे सोमिलप्रश्नोत्तरप्रसंगे (१८।

२१४) एसणिज्जा अणेसणिज्जा, जाइया अजाइया, असौ पाठक्रमो विद्यते । तत्र 'अफासुया फासुया' इति पाठो नास्ति । अत्र 'जाइय' इति पाठानन्तरं 'एसणिज्जा अणेसणिज्जा' इति पाठोऽस्ति । द्वयोस्तुलनायां

भगवतीवर्तिपाठक्रमः संगतोऽस्ति । याचिता-
नन्तरं एषणीयत्वस्य कापेक्षा स्यात् लिपि-
दोषेण अस्य परिवर्तनं जातमथवा अन्येन
केनचित् कारणेन, नेति वक्तुं शक्यते ।

५. सं० पा०—एवं कुलत्था वि भाणियब्बा ।
नवरं—इमं नाणत्तं—इत्थिकुलत्था य
घण्णकुलत्था य । इत्थिकुलत्था तिविहा
पण्णत्ता, तं जहा—कुलबहुया इ य कुलमाउया
इ य कुलधूया इ य । घण्णकुलत्था तहेव ।

फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य । तत्थ णं जेते अणेसणिज्जा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जाइया य अजाइया य तत्थ णं जेते अजाइया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—लद्धा य अलद्धा य । तत्थ णं जेते अलद्धा ते अभक्खेया । तत्थ णं जेते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया ।

एएणं अट्ठेणं सुया ! एवं वुच्चइ—कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि ° ॥

मासाणं भक्खाभक्ख-पदं

७५. 'मासा ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?

सुया ! मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि ?

सुया ! मासा ति विहा पण्णत्ता, तं जहा—कालमासा य अत्थमासा य धण्णमासा य ।

तत्थ णं जेते कालमासा ते दुवालसविहा पण्णत्ता, तं जहा—सावणे भद्दवए आसोए कत्तिए मग्गसिरे पोसे माहे फग्गुणे चेतो वइसाहे जेट्टामूले आसाढे । ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया ।

तत्थ णं जेते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य । ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया ।

तत्थ णं जेते धण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य । तत्थ णं जेते असत्थपरिणया ते समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—फासुया य अफासुया य । अफासुया णं सुया ! समणाणं निग्गंथाणं नो भक्खेया । तत्थ णं जेते फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य । तत्थ णं जेते अणेसणिज्जा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया ।

तत्थ णं जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जाइया य अजाइया य ।

तत्थ णं जेते अजाइया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया ।

तत्थ णं जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—लद्धा य अलद्धा य । तत्थ णं जेते अलद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया ।

१. सं० पा०—एवं मासा वि । नवरं—इम नाणत्तं—मासा ति विहा पण्णत्ता, तं जहा—कालमासा य अत्थमासा य धन्नमासा य । तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालस, तं

जहा—सावणे जाव आसाढे । ते णं अभक्खेया । अत्थमासा दुविहा—हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य । ते णं अभक्खेया । धन्नमासा तद्देव ।

तत्थ णं जेतो लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया ।

एएणं अट्ठेणं सुया ! एवं वुच्चइ—मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि ° । ॥

अस्थिरा-पण्ह-पदं

७६. एगे भवं ? दुवे भवं ? अक्खए भवं ? अव्वए भवं ? अवट्ठिए भवं ? अणेगभूय-भाव-भविए भवं ?

सुया ! एगे वि अहं, °दुवेवि अहं, अक्खए वि अहं, अव्वए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं, °अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं ।

से केणट्ठेणं भंते ! एगे वि अहं ? °दुवेवि अहं ? अक्खए वि अहं ? अव्वए वि अहं ? अवट्ठिए वि अहं ? अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं ? °

सुया ! दव्वट्ठयाए, 'एगे वि अहं', नाणदंसणट्ठयाए दुवे वि अहं, पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं, अव्वए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं, उवओगट्ठयाए अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं ॥

सुयस्स परिव्वायगसहस्सेण पव्वज्जा-पदं

७७. एत्थ णं से सुए संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुवमं अंतिए केवलपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए ॥

७८. °तए णं थावच्चापुत्तं अणगारे सुयस्स चाउज्जामं धम्मं कहेइ ॥ °

७९. तए णं से सुए परिव्वायए थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! परिव्वायगसहस्सेणं सद्धि संपरिवुडे देवाणु-प्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ॥

८०. °तए णं से सुए परिव्वायए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदंडयं य कुंडियाओ य छत्तए य छन्नालए य अंकुसाए य पवित्तए य केसरियाओ य ° धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, सयमेव सिंह उप्पाडेइ, उप्पाडेत्ता जेणेव थावच्चापुत्ते °अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अंतिए ° मुंडे 'भवित्ता पव्वइए' । सामाइयमाइयाइं चोहसपुव्वाइं अहिज्जइ ॥

१. भगवतीसूत्रे (१८।२१३-२१८) एतत्तुल्यं प्रकरणमस्ति, क्वचित्-क्वचित् किंचित् पाठ-भेदो विद्यते ।

२. सं० पा०—अहं जाव अणेगभूयभाव भविए ।

३. सं० पा०—अहं जाव सुया ।

४. एगेहं (क) एगे अहं (ख, ग घ) ।

५. X (ख, ग, घ) ।

६. X (घ) ।

७. सं० पा०—धम्मकहा भाणियव्वा ।

८. सं० पा०—उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदंडयं जाव धाउरत्ताओ ।

९. सं० पा०—थावच्चापुत्ते जाव मुंडे ।

१०. भवित्ता जाव पव्वइए (ख, ग, घ); अत्र 'जाव' शब्दस्य विपर्ययो जातोस्ति ।

सुयस्स जणवयविहार-पदं

८१. तए णं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्सं सीसत्ताए वियरइ ॥
 ८२. तए णं थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ नयरीओ नीलासोयाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमिता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

थावच्चापुत्तस्स परिनिब्बान-पदं

८३. तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सट्ठि संपरिवुडे जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता पुंडरीयं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ', दुरुहिता' मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढवि'°सिलापट्टयं पडिलेहेइ, पडिलेहेता जाव' संलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए° पाओवगमणंणुवन्ते ॥
 ८४. तए णं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव' केवलवर-नाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे' °बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्ख °प्पहीणे ॥

सेलगस्स अभिनिक्खमणाभिप्पाय-पदं

८५. तए णं से सुए अणया कयाइ जेणेव सेलगपुरे नगरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ° ॥
 ८६. परिसा निग्गया । सेलगओ निग्गच्छइ ॥
 ८७. °तए णं से सेलए सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे सुयं तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्धामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं' जाव' नवरं'' देवाणूप्पिया !

१. द्रुहति (ख) ।

२. अतोओ १।१२०६ सूत्रे 'सयमेव' इति पदं विद्यते ।

३. सं० पा०—पुढवि जाव पाओवगमणं ।

४. ना० १।२।२०६ ।

५. असौ पाठः भगवती (६।१५१) सूत्रात् १०. ना० १।१।१०१ ।

पूर्तिमर्हति, तद्महावीरकालीनं वर्णनमस्ति, ११. जं नवरं (क, ख, ग, घ); संभवतः 'जं' ततो नाक्षरयोत्र षट्नामर्हति ।

६. सं० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

७. सं० पा०—समोसरणं ।

८. सं० पा०—धम्मं सोच्चा जं नवरं ।

९. अत्र पाठपूर्तिकारणेन 'निग्गंथं पावयणं' इति पदं प्राप्तं किन्तु ऐतिहासिकदृष्ट्यात्र 'अरहंतं पावयणं' इति पदं समीचीनं स्यात् ।

संकेतरूपमस्ति ।

पंथगपामोक्खाइं पंच मंतिसयाइं आपुच्छामि, मंडुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि । तप्पो पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ॥

८८. तए णं से सेलए राया सेलगपुरं नगरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे' सणिसण्णे ॥

८९. तए णं से सेलए राया पंथगपामोक्खे पंच मंतिसए सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए सुयस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए' । 'तए णं अहं' देवाणुप्पिया ! संसार-भउव्विग्गे' •भीए जम्मण-जर-मरणाणं सुयस्स अणगारस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि । तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! किं करेह ? किं ववसह' ? 'किं वा भं' हियइच्छिए सामत्थे ?'

९०. तए णं ते पंथगपामोक्खा पंच मंतिसया सेलगं रायं एवं वयासी—जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव' पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया ! के' अण्णे आहारे वा आलंबे वा ? अमहे वि य णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव पव्वयामो ।

जहा" णं" देवाणुप्पिया ! अम्हं बहसु कज्जेसु य कारणेसु य" •कुडुवेसु य मंतेसु य गुज्जेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए°, तहा णं पव्वइयाण वि समाणाणं" बहसु कज्जेसु य जाव चक्खुभूए ॥

९१. तए णं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंच मंतिसए एवं वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे संसारभउव्विग्गा जाव" पव्वयह, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! सएसु-सएसु

१. सिहासण (क, ख, ग, घ) ।

२. अभिरुत्तिते (ग) ।

३. तए णं अहन्नं (ख); अहन्नं (ग) ।

४. सं० पा० — संसारभउव्विग्गे जाव पव्वयामि । ११. × (क, ख, ग, घ) ।

५. वसह (ग, घ) ।

१२. सं० पा०—कारणेसु य जाव तहा ।

६. ते (ख, ग) ।

१३. समाणाणं (क, ख, ग, घ) ।

७. किं मे हियइच्छिए, किं मे सामत्थे १४. ना० १।५।८८ ।

(अ० १८।४५) ।

८. ना० १।५।८९ ।

९. किं (ख, ग, घ) ।

१०. जह (ख) ।

कुटुंबेसु' जेट्टपुत्ते कुटुंबमज्जे' ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ' सीयाओ दुरुढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह । ते वि तहेव पाउब्भवन्ति ॥

मंडुयस्स रायाभिसेय-पदं

६२. तए णं से सेलए राया पंच मंतिसयाइं पाउब्भवमाणाइं पासइ, पासित्ता हट्टतुट्टे कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं" •महग्घं महरिहं विउलं० रायाभिसेयं उवट्टवेह ॥
६३. "तए णं ते कोडुंबियपुरिसा मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्टवेंति ॥
६४. तए णं से सेलए राया बहूहि गणनायगेहि य जाव' संधिवालेहि य सद्धि संपरिवुडे मंडुयं कुमारं जाव" रायाभिसेएणं अभिसिचइ ॥
६५. तए णं से मंडुए राया जाए—महयाहिमवन्त-महंत-मलय मंदर-महिदसारे जाव' रज्जं पसासेमाणे० विहरइ ॥

सेलगस्स निक्खमणाभिसेय-पदं

६६. तए णं से सेलए मंडुयं रायं आपुच्छइ ॥
६७. तए णं मंडुए राया कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सेलगपुरं नयरं आसिय"•सित्त-सुइय-सम्मज्जिओवलित्तं जाव" सुगंधवरगंधियं० गंधवट्ठिभूयं करेह य कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥
६८. तए णं से मंडुए दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे एवं" वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सेलगस्स रण्णो महत्थं" •महग्घं महरिहं विउलं० निक्खमणाभिसेयं [करेह ?] जहेव मेहस्स तहेव" नवरं—पउमावती देवी अगगकेसे पडिच्छइ, सच्चेव पडिगहं गहाय सीयं दुरुहइ । अवसेसं तहेव जाव" ॥

१. कोडुंबेसु (ख) ।

८. ओ० सू० १४ ।

२. कोडुंब० (घ) ।

९. सं० पा०—आसिय जाव गंधवट्ठिभूयं ।

३. •वाहिणीयाओ (घ) ।

१०. ना० १।१।३३ ।

४. सं० पा०—महत्थं जाव रायाभिसेयं ।

११. सदावेइ २ एवं (क) ।

५. सं० पा०—अभिसिचइ जाव राया जाए विहरइ ।

१२. सं० पा०—महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं

१३. ना० १।१।२२-१३२ ।

६. ना० १।१।२४ ।

१४. ना० १।१।३४-१४३; १।५।२६-३३ ।

७. ना० १।१।११ ।

सेलगस्स पञ्चज्जा-पदं

६६. 'तए णं से सेलगे [पंचहिं मंतिसएहिं सद्धिं ?] सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणामेव सुए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुयं अणगारं तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ जाव' पव्वइए ॥

सेलगस्स अणगारचरिया-पदं

१००. तए णं से सेलए अणगारे जाए जाव' कम्मनिग्घायणट्ठाए एवं च णं विहरइ ॥

१०१. तए णं से सेलए सुयस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए ° सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ'-●छट्ठट्ठम - दसम - दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ ॥

सुयस्स परिनिव्वान-पदं

१०२. तए णं से सुए सेलगस्स अणगारस्स ताइं पंथगपामोक्खाइं पंच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरइ ॥

१०३. तए णं से सुए अणया कयाइ सेलगपुराओ नगराओ सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१०४. तए णं से सुए अणगारे अणया कयाइ' तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव पुंडरीयपव्वए ° तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता जाव' संलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए पाओव-गमणंणुवन्ने ॥

१०५. तए णं से सुए बहूणि वासाणि सामण्णपरियाणं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सद्धिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव' केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्प-हीणे ° ॥

सेलगस्स रोगातंक-पदं

१०६. तए णं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य तुच्छेहि य लू

१. सं० पा०—अवसेस तहेव जाव सामाइय-माइयाइं ।

२. पञ्चज्जा-प्रसंगे मंत्रिणामुल्लेखो नोपलभ्यते, सच आवश्यकोऽस्ति । तेनासी पाठः प्रकरण-सादृश्येन थावच्चापुत्रवर्णनगत ३४ सूत्रात् पूरितोऽस्ति ।

३. ना० १।१।१४६, १५० ।

४. ना० १।५।३५-३७ ।

५. सं० पा०—चउत्थ जाव विहरइ ।

६. कयाइं (ख) ।

७. सं० पा०—पव्वए जाव सिद्धे० ।

८. ना० १।१।२०६ ।

९. भग० ६।१५१ ।

य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालाइक्कंतेहि य पमाणाइक्कं-
तेहि य निच्चं पाणभोयणेहि य पयइ-सुकुमालस्स सुहोचियस्स सरीरगंसि
'वेयणा पाउब्भूया'—उज्जला • बिउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा •
दुरहियासा । कंडु-दाह-पित्तज्जर-परिगयसरीरे यावि विहरइ ॥

१०७. तए णं से सेलए तेणं रोयायंकेणं सुक्के भुक्खे जाए यावि होत्था ॥

१०८. तए णं से सेलए अणया कयाइ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे • गामाणुगामं दूइज्जमाणे
सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा
अप्पाणं भावेमाणे • विहरइ ॥

१०९. परिसा निगया । मंडुओ वि निगगओ सेलगं अणगारं 'वंदइ नमंसइ पज्जु-
वासइ' ॥

सेलगस्स तिगिच्छा-पदं

११०. तए णं से मंडुए राया सेलगस्स अणगारस्स सरीरगं सुक्कं भुक्खं सव्वाबाहं
सरोगं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते ! तुब्भं अहापवत्तेहि
तेगिच्छिएहिं अहापवत्तेणं ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं तेगिच्छं आउट्टावेमि ॥
तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह, फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-
संथारणं ओगिण्हित्ताणं विहरह ॥

१११. तए णं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रण्णो एयमट्ठं तह 'त्ति' पडिसुणेइ ॥

११२. तए णं से मंडुए सेलगं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए
तामेव दिसि पडिगए ॥

११३. तए णं से सेलए कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरै सहस्स-
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते स-भंड-मत्तोवगरणमायाए पंथगपामोक्खेहि पंचहिं

१. निच्च य (क, ख, ग, घ) ।

२. सुहोइयस्स (ग) ।

३. रोगायंके पाउब्भूए (वृषा) ।

४. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।

५. सं० पा०—चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे
जाव विहरइ ।

६. अणगारं जाव वंदइ नमंसइ, रत्ता पज्जु-
वासइ, रत्ता (क) ।

७. भुक्खं जाव (क, ख, ग, घ) अत्र आदर्शेषु
'जाव' शब्दः उपलभ्यते, किन्तु अस्मि

पूतिस्थलमद्यापि क्वापि नोपलब्धम् ।

८. अहापउत्तेहि (ख); अहापवत्तिर्तेहि (घ) ।

९. तिगच्छिएहि (क) ।

१०. अहापवत्तेणं (ख) ।

११. आउट्टावेमि (क, ग, घ); आउट्टावेमि
(ख); आदर्शेषु प्रायेण 'आउट्टावेमि' इति

पाठो लभ्यते, वृत्तावत्र नास्त्यनुस्वारः ।

१२. दिसं (क) ।

१३. ना० १।१।२४ ।

अणगारसएहिं सदिं' सेलगपुरमणुप्पविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव 'मंडुयस्स रण्णो जाणसाला' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फासु-एसणिज्जं' *पीढ-फलग-सेज्जा-संधारणं ओगिण्हित्ताणं ° विहरइ ॥

११४. तए णं से मंडुए तेगिच्छिए' सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुभे णं देवाणुप्पिया ! सेलगस्स फासु-एसणिज्जेणं' *ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं ° तेगिच्छं आउट्टेह' ॥

११५. तए णं ते तेगिच्छिया मंडुएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठुट्ठा सेलगस्स अहा-पवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेति, 'मज्जपाणगं च से उवदिसंति' ॥

११६. तए णं तस्स सेलगस्स' अहापवत्तेहिं' *ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेहिं ° मज्जपाण-एण य से रोगायंके उवसंते यावि होत्था—हट्ठे गल्लसरीरे' जाए ववगय-रोगायंके ॥

सेलगस्स पमत्तविहार-पदं

११७. तए णं से सेलए तंसि रोगायंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुले असण-पाण-खाइम-साइमे मज्जपाणए य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने ओसन्ने ओसन्न-विहारी, पासत्थे' *पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी ° संसत्ते संसत्तविहारी उउवद्ध"-पीढ"-*फलग-सेज्जा-संधारणं ° पमत्ते यावि विहरइ, नो संचाएइ फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारणं पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया' *जणवयविहारं ° विहरित्तए ॥

साहूहिं सेलगस्स परिच्चाय-पदं

११८. तए णं तेसि पंथगवज्जाणं पंचण्हं अणगारसयाणं अणया कयाइ एगयओ सहियाणं" *समुवागयाणं सणिसण्णाणं सणिविट्ठाणं ° पुव्वरत्तावरत्तकाल-

१. × (ख, ग, घ) ।

२. मंडुया जाणसाला (ग) ।

३. सं० पा०—फासुयं पीढ जाव विहरइ ।

४. तिगिच्छिए (क, ख) ।

५. सं० पा०—फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छ ।

६. आउट्टेह (क, ख, ग) ।

७. × (क); मज्जण ° (ख, ग) सबंत्र ।

८. सेलगस्स तेहिं २ (क) ।

९. सं० पा०—अहापवत्तेहिं जाव मज्जपाणएण ।

१०. मल्लसरीरे (ग); बलियसरीरे (क्वचित्) ।

अत्र 'कल्ल' शब्दस्य ककारस्य गकारादेशो जातोस्ति ।

११. सं० पा०—एवं पासत्थे कुसीले पमत्ते ।

१२. ओवद्ध (क, ख) ।

१३. सं० पा०—पीढ ।

१४. सं० पा०—बहिया जाव विहरित्तए ।

१५. सं० पा०—सहियाणं जाव पुव्वरत्ता ° ।

समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणानं अयमेयारूवे अज्झत्थिए' ० चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे ० समुप्पज्जित्था—एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्जं जाव' पव्वइए विउले' असण-पाण-खाइम-साइमे मज्जपाणए य मुच्छिए नो संचाएइ' ० फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारयं पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं ० विहरित्तए । नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणानं' ० निग्गंथाणं' ओसन्नाणं पासत्थाणं कुसीलाणं पमत्ताणं संसत्ताणं उउ-बद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-संधारए ० पमत्ताणं विहरित्तए । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कल्लं सेलगं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारयं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं' ० जणवयविहारेणं ० विहरित्तए— एवं संपेहेति, संपेहेत्ता कल्लं जेणेव सेलए रायरिसी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारयं पच्चप्पिणित्ति, पच्चप्पिणित्ता पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेति, ठावेत्ता बहिया' ० जणवयविहारं ० विहरंति ॥

पंथगस्स चाउम्मासिय-खामणा-पदं

११६. तए णं से पंथए सेलगस्स सेज्जा-संधारय-उच्चार-पासवण-खेल्ल-सिघाणमत्त-ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणएणं अगिलाए विणएणं वेयावडियं करेइ ॥
१२०. तए णं से सेलए अण्णया कयाइ कत्तियं-चाउम्मासियंसि विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आहारमाहारिए सुबहुं च मज्जपाणयं' पीए पच्चावरण्हकाल-समयंसि" सुहप्पसुत्ते ॥
१२१. तए णं से पंथए कत्तिय-चाउम्मासियंसि कयकाउस्सगगे देवसियं पडिक्कमणं

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था । १०. मज्जणपाययं (ख) ।

२. ओ० सू० २३ ।

३. विपुलेणं (क) ।

४. सं० पा०—संचाएइ जाव विहरित्तए ।

५. सं० पा०—समणानं जाव पमत्ताणं । अस्स पूतिः १।५।११० सूत्रे प्रदत्तसंकेतानुसारेण कृतास्ति ।

६. एतत् पदं १।५।१२४ सूत्राधारेण स्वीकृतम् ।

७. सं० पा०—अबुज्जएणं जाव विहरित्तए ।

८. सं० पा०—बहिया जाव विहरंति ।

९. कत्तिया (ख) ।

११. पुब्बावरण्हकालसमयसि (क, ख, ग, घ) । सर्वेषु आदर्शेषु 'पुब्बावरण्ह ०' इति पाठो लभ्यते, किन्तु अयं-मीमांसया नासावत्र संगतोस्ति । अत्र सायंकालीनसमयस्य प्रसंगोस्ति, अतः 'पच्चावरण्ह ०' इति पाठोऽस्माभिः गृहीतः । आदर्शेषु लिपिदोषेण 'पच्चा०' स्थाने 'पुब्बा ०' जातमिति संभाव्यते । उपासकदशासूत्रेपि (६।१७) इत्थं जातमस्ति ।

पडिक्कंते, चाउम्मासियं पडिक्कमिउकामे सेलगं रायरिसिं खामणट्टयाए सीसेणं पाएसु संघट्टेइ ॥

सेलगस्स कोव-पदं

१२२. तए णं से सेलए पंथएणं सीसेणं पाएसु संघट्टिए समाने आसुरुत्ते' •रुट्टे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे उट्टेइ, उट्टेत्ता एवं वयासी—से केस णं भो ! एस अपत्थियपत्थए', •दुरंत-पंत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउहसिए, सिरि-हिरि-घिइ-कित्ति-परि° वज्जिए, जे णं ममं सुहपसुत्तं पाएसु संघट्टेइ ?

१२३. तए णं से पंथए सेलएणं एवं वुत्ते समाने भीए तत्थे तसिए करयल'-•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अज्जलि° कट्टु एवं वयासी—'अहं णं' भंते ! पंथए कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते', चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं बंदमाणे सीसेणं पाएसु संघट्टेमि ।

'तं खामेमि णं तुब्भे देवाणुप्पिया' !

खमंतु णं देवाणुप्पिया !

खंतुमरहंति' णं देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो एवकरण्याए त्ति कट्टु सेलयं अणगारं एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेइ ॥

सेलगस्स अम्भुज्जयविहार-पदं

१२४. तए णं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स पंथएणं एवं वुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए' •चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था--एवं खलु अहं •चइत्ता रज्जं जाव'° पव्वइए ओसन्ने ओसन्नविहारी, पासत्थे पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी संसत्ते संसत्तविहारी उउवद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए पमत्ते यावि° विहरामि । तं नो खलु कप्पइ समणाणं निग्गंथाणं'° •ओसन्नाणं पासत्थाणं कुसीलाणं पमत्ताणं संसत्ताणं उउवद्ध-पीढ-

१. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे ।

२. सं० पा०—अपत्थियपत्थिए जाव वज्जिए (ख, ग, घ) । अत्रापि त्रिषु आदर्शेषु अन्यत्र च उपासकदशादिषु सूत्रेषु पाठान्तरनिर्दिष्टः पाठो लभ्यते, किन्तु 'पत्थय' इति पाठे समाससारत्यमस्ति ।

३. सं० पा०—करयल ।

४. अहण्णं (ख) ।

५. पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कंते (क) ।

६. X (क, ख, ग, घ); असौ पाठः क्वचिद्

प्रयुक्तादर्शाधारेण स्वीकृतः । १।१६।२६५ सूत्रेपि लभ्यते ।

७. खंतुमरहंतु (क, ग); खमन्तु ममाराहं तुमं णं (ख) ।

८. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

९. सं० पा०—अहं रज्जं च जाव ओसन्न जाव उउवद्धपीढ° विहरामि ।

१०. ओ० सू० २३ ।

११. सं० पा०—निग्गंथाणं जाव विहरित्थिए ।

फलग-सेज्जा-संधारए पमत्ताणं ° विहरित्तए । तं सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं
आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारणं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं
अणगारेणं सद्धि बहिया अम्भुज्जएणं जणवयविहारेणं विहरित्तए— एवं संपेहेइ,
संपेहेत्ता कल्लं ° मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-
संधारणं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धि बहिया अम्भुज्जएणं जणवय-
विहारेणं ° विहरइ ॥

१२५. एवामेव समणाउसो ! जे' निगंथे वा निगंथी वा ओसन्ने ° ओसन्नविहारी,
पासत्थे पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी संसत्ते
संसत्तविहारी उववद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा °-संधारए पमत्ते विहरइ, से णं
इहलोए चैव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण
य हीलणिज्जे ° निदणिज्जे खिसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे,
परलोए वि य णं आगच्छइ बहूणि दंडणाणि ° य अणादियं च णं अणवयगं
दीहमद्धं चाउरंत-संसार कंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ ° ॥

१२६. तए णं ते पंथगवज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अणमण्णं
सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सेलए रायरिसी
पंथएणं ° अणगारेणं सद्धि बहिया अम्भुज्जएणं जणवयविहारेणं ° विहरइ ।
तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सेलगं रायरिसिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए—
एवं संपेहेति, संपेहेत्ता सेलगं रायरिसिं उवसंपज्जित्ता णं विहरति ॥

१२७. तए णं से सेलए रायरिसी पंथगपामोक्खा पंच अणगारसया ° जेणेव पुंडरीए
पव्वए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहंति,
दुरुहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहंति, पडिले-
हित्ता जाव ° संलेहणा-भूसणा-भूसिया भत्तपाण-पडियाइक्खिया पाओवगमणं-
णवन्ना ॥

१. अम्भुज्जएणं जाव (क, ख, ग, घ); अत्र
जाव पदं अनावश्यकं प्रतिभाति । १।५।११८
सूत्रे संक्षिप्तपाठः आसीत् तत्र 'जाव'
पदस्योपयोगित्वम्, किन्तु नात्र ।

२. सं० पा०—कल्ल जाव विहरइ ।

३. जाव (क, ग, घ); अत्र लिपिदोषेण 'जे'
पदस्य स्थाने 'जाव' इति पदं जातम् ।

४. सं० पा०—ओसन्ने जाव संधारए ।

५. सं० पा०—हीलणिज्जे संसारो आणियब्बो ।

६. पू०—ना० १।३।२४ ।

७. सं० पा०—पंथएणं जाव विहरइ ।

८. सं० पा०—पंच अणगारसया बहूणि बासाणि
सामण्णपरियागं पाडणित्ता जेणेव पुंडरीए
पव्वए तेणेव उवागच्छंति जहेव थाणच्चापुत्ते
तहेव सिद्धा ° ।

९. ना० १।१।२०६ ।

१२८. तए णं से सेलए रायरिसी पंथगपामोक्खा पंच अणगारसया बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव' केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तमो पच्छा सिद्धा बुद्धा मुत्ता अंतगडा परिनिब्बुडा सब्बदुक्खप्पहीणा° ॥
१२९. एवामेव समणाउसो ! जो निगंथो वा निगंथी वा° •अब्भुज्जाएणं जणवय-विहारेणं विहरइ, से णं इहलोए चैव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवास-णिज्जे भवइ,
परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेय-णाणि य एवं हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लंवणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° वीईवइस्सइ ॥

निकसेव-पदं

१३०. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पणन्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

सिढिलिय-संजम-कज्जा वि, होइउं उज्जवंति जइ पच्छा ।

संवेगाओ ते सेलओ व्व आराहया होंति ॥ १ ॥

१. भग० ६।३३ ।

२. सं० पा०—निगंथो वा २ जाव बिहरिस्सइ (क, ख, ग, घ); अत्र लिपिदोषेण 'वीईवइस्सइ' स्थाने 'बिहरिस्सइ' इति जातम् । यद्यत्र 'बिहरिस्सइ' इति पदं

स्यात्, तर्हि प्रस्तुतपाठस्य पूर्तिरपि न स्यात्, न च यच्छब्दस्योत्तरवर्त्तो तच्छब्दस्यनिर्देशोपि प्राप्तो भवेत् । तेनात्र इति कल्पना कर्तुं न्याय्या यल्लिपिदोषेण विपर्ययोसौ जातः ।

छट्ठं अज्झयणं

तुंबे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं । परिसा निग्गया ॥
३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते जाव' सुक्कज्झाणोव-गए विहरइ ॥

गरुयत्त-लहुयत्त-पदं

४. तए णं से इंदभूई नामं अणगारे जायसइडे जाव' एवं वयासी—कहण्णं' भंते ! जीवा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्कतुंबं* निच्छिहं निरुवहयं दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता मट्ठियालेवेणं लिपइ, लिपित्ता उण्हे दलयइ, दलयित्ता सुक्कं समाणं दोच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता मट्ठियालेवेणं लिपइ, लिपित्ता उण्हे दलयइ, दलयित्ता सुक्कं समाणं तच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, मट्ठियालेवेणं लिपइ, उण्हे दलयइ । एवं खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणे

१. ओ० सू० ८२ ।

२. ओ० सू० ८३ ।

३. कह णं (क, ग) ।

४. सुक्कं० (क, घ) ।

अंतरा लिपमाणे' अंतरा सुक्खवेमाणे' जाव अट्ठहि मट्ठियालेवेहि लिपइ',
अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा' । से नूनं गोयमा ! से तुबे
तेसि अट्ठण्हं मट्ठियालेवेणं गरुययाए' भारिययाए' गरुय-भारिययाए' उप्पि
सलिलमइवइत्ता' अहे धरणियल'-पइट्ठाणे भवइ ।

एवामेव गोयमा ! जीवा वि पाणाइवाएणं" •मुसावाएणं अदिण्णादाणेणं
मेहुणेणं परिगहेणं जाव" •मिच्छादंसणसल्लेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ
समज्जित्ता तांसि गरुययाए भारिययाए" गरुय-भारिययाए" कालमासे कालं
किच्चा धरणियलमइवइत्ता" अहे नरगतल-पइट्ठाणा भवन्ति । एवं खलु गोयमा !
जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छन्ति । 'अह णं'" गोयमा ! से तुबे तंसि पढमिल्लुगंसि"
मट्ठियालेवंसि तित्तंसि कुहियंसि परिसडियंसि ईसि धरणियलाओ उप्पत्तित्ता
णं चिट्ठइ । तयाणंतरं दोच्चं पि मट्ठियालेवे" •तित्ते कुहिए परिसडिए ईसि
धरणियलाओ • उप्पत्तित्ता णं चिट्ठइ । एवं खलु एएणं उवाएणं तेषु अट्ठसु
मट्ठियालेवेसु तित्तेसु" •कुहिएसु परिसडिएसु • [से तुबे ?] विमुक्कबन्धणे"
अहे धरणियलमइवइत्ता उप्पि सलिलतल-पइट्ठाणे भवइ ।

एवामेव गोयमा ! जीवा पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं
अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पि लोयग-पइट्ठाणा
भवन्ति । एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं" हव्वमागच्छन्ति ॥

निकसेव-पदं

५. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव" संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झय-
णस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

- | | |
|---|--|
| १. लिपमाणे (ख, घ) । | ११. ना० १।१।२०६ । |
| २. सुक्खवेमाणे (ख, ग, घ) । | १२. × (क, ख) । |
| ३. आलिपइ (ख, ग) । | १३. × (ग) । |
| ४. पक्खिवेज्जा (ख) । | १४. •मतिवत्तित्ता (ख); •मतिवत्तित्ता (ग) । |
| ५. गरुय • (ख, ग) । | १५. अहण्णं (क, ग, घ) । |
| ६. × (ख) । | १६. पढमिल्लुगंसि (ख) । |
| ७. × (ग) । | १७. सं० पा० — मट्ठियालेवे जाव उप्पत्तित्ता । |
| ८. •मतिवत्तित्ता (ख, ग) । | १८. सं० पा० — तित्तेसु जाव विमुक्कबन्धणे । |
| ९. धरणितल (क) । | १९. विमुक्कबन्धणेसु (क) । |
| १०. सं० पा० — पाणाइवाएणं जाव मिच्छा-
दंसणसल्लेणं । | २०. लहुयत्तं (ख) । |
| | २१. १।१।७ । |

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह मिउलेवालित्तं, गुरुयं तुंबं अहो वयइ ।
 एवं कय-कम्मगुरू, जीवा वच्चंति अहरगइं ॥१॥
 तं चेव तव्विमुक्कं, जलोवर्णि ठाइ जाय-लहुभावं ।
 जह तह कम्म-विमुक्का, लोयग-पइट्ठिया होंति ॥२॥

सत्तमं अज्झयणं रोहिणी

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था । सुभूमिभागे उज्जाणे ॥

घणसत्थवाह-पदं

३. तत्थ णं रायगिहे नयरे घणे नामं सत्थवाहे परिवसइ—अड्ढे जाव' अपरिभूए । भद्दा भारिया—अहीणपंचिदियसरीरा जाव' सुरूवा ॥
४. तस्स णं घणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाह-दारंगा होत्था, तं जहा—घणपाले घणदेवे घणगोवे घणरक्खिए ॥
५. तस्स णं घणस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, तं जहा—उज्झिया भोगवइया रक्खिया' रोहिणिया ॥

घणस्स परिवक्खापओग-पदं

६. तए णं तस्स घणस्स सत्थवाहस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे* •अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं रायगिहे नयरे बहूणं ईसर*°-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इवभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह° पभित्तीणं सयस्स य कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य कारणेसु

१. ना० १।५।७ ।

२. ना० १।२।८ ।

३. रक्खित्तिया (ग); रक्खित्तिया (घ) ।

४. सं० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था

५. सं० पा०—ईसर जाव पभित्तीणं ।

य कोडुबेसु य मंतेसु य गुज्जेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपु-
च्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलंबणे चक्खू, मेढीभूते
पमाणभूते आहारभूते आलंबणभूते चक्खूभूए सब्बकज्जवड्ढावए ।

तं 'न नज्जइ' णं मए^१ गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा
सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा विप्पवसियंसि वा इमस्स कुडुंबस्स
के मन्ने आहारे वा आलंबे वा पडिबंधे वा भविस्सइ ?

तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव^२ उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता
मित्त-नाइ^३-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं^४ चउण्ह य सुण्हाणं^५ कुलघरवग्गं
आमंतेत्ता तं मित्त-नाइ-नियग^६-•सयण-संबंधि-परियणं^७ चउण्ह य सुण्हाणं^८
कुलघरवग्गं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध^९-•मल्ला-
लंकारेण य^{१०} सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ^{११}-•नियग-सयण-संबंधि-
परियणस्स^{१२} चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ चउण्हं सुण्हाणं परिकखण-
ट्ठयाए पंच-पंच सालिअक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किह वा सारक्खेइ
वा ? संगोवेइ वा ? संबड्ढेइ वा ? एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए
रयणीए जाव^{१३} उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते 'विपुलं
असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, मित्त-नाइ^{१४}-•नियग-सयण-संबंधि-
परियणं^{१५} चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ^{१६}', तओ पच्छा ण्हाए भोयणमंड-
वंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ^{१७}-•नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं^{१८} चउण्ह
य सुण्हाणं कुलघरवग्गेणं सड्ढि तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसादेमाणे
जाव^{१९} सक्कारेइ, सकारेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ^{२०}-•नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स^{२१}
चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता
जेट्ठं सुण्हं उज्झियं^{२२} सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— तुमं णं पुत्ता ! मम

१. × (ख, ग) ।

२. मए त्ति मयि (वृ) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. सं० पा०—नाइ० ।

५. ण्हुसाणं (ख) ।

६. सं० पा०—नियग० ।

७. ण्हुसाणं (ख, ग) ।

८. सं० पा०—गंध जाव सक्कारेत्ता ।

९. सं० पा०—नाइ० ।

१०. ना० १।१।२४ ।

११. सं० पा०—नाइ० ।

१२. मित्त-नाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्ग
आमंतेइ, विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ
(क, ख, ग) ।

१३. सं० पा—नाइ० ।

१४. ना० १।१।८१ ।

१५. सं० पा०—नाइ० ।

१६. उज्झितं (ख); उज्झितं (ग);
उज्झितं (घ) ।

हृत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुब्बेणं सारक्खमाणी' संगोवेमाणी विहराहि । जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि' त्ति कट्ठु सुण्हाए हत्थे दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ ॥

७. तए णं सा उज्झया धणस्स तह त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता धणस्स सत्थवाहस्स हृत्थाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हुइ, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु तायाणं कोट्टागारंसि बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति, तं जया णं मम ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाएसइ', तया' णं अहं पल्लंतराओ अण्णे पंच सालिअक्खए गहाय दाहामि' त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ते पंच सालिअक्खए एगंते एडेइ, सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था ॥
८. एवं भोगवइयाए वि, नवरं—सा छोल्लेइ, छोल्लेत्ता अणुगिलइ, अणुगिलित्ता सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था ॥
९. एवं रक्खियाए वि, नवरं—गेण्हुइ, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे' अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्त-नाइ'-●नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स० चउण्ह य सुण्हाणं कुलधरवगस्स पुरओ सदावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता ! मम हृत्थाओ' ●इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुब्बेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि । जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए० पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्ठु मम हृत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयइ । तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ संपेहेत्ता ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता' उसीसामूले ठावेइ, ठावेत्ता तिसंभं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥
१०. तए णं से धणे सत्थवाहे तहेव' मित्त'-●नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणरस

१. संरक्खमाणी (ग) ।

२. हं (क, ख) ।

३. पडिनिज्जाएज्जासि (क); दलएज्जासि (ग); पडिदेज्जासि (घ) ।

४. जातिसति (ख) ।

५. तता (क) ।

६. देहामि (ख, ग) ।

७. एमेयारूवे (ख) ।

८. सं० पा०—नाइ० ।

९. सं० पा०—हृत्थाओ जाव पडिनिज्जा एज्जासि ।

१०. पक्खिवइ २ मंजुसाए पक्खिवइ २ (क, घ) ।

११. तस्सेव (ख, ग) ।

१२. सं० पा०—मित्त जाव चउत्थं ।

चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता °
 चउत्थं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेइ, °सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता ! मम
 हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, जाव' गेण्हइ, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ,
 एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे
 समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं ताओ इमस्स भित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-
 परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं
 पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुब्बेणं सारक्खमाणी
 संगोवेमाणी विहराहि । जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए
 जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्ठु
 मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयइ ° । तं भवियव्वं एत्थ कारणेण' । तं सेयं
 खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए संबड्ढेमाणीए
 त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कुलघर-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
 तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एए पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता पढमपाउसंसि
 महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुट्ठागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह, करेत्ता
 इमे पंच सालिअक्खए वावेह, वावेत्ता दोच्चं पि 'तच्चं पि' उक्खय-निहए'
 करेह, करेत्ता वाडिपक्खेवं' करेह, करेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा
 अणुपुब्बेणं संबड्ढेह ॥

११. तए णं ते कोडुंबिया रोहिणीए एयमट्ठं पडिसुणेंति, ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति,
 अणुपुब्बेणं सारक्खंति, संगोविति" ॥
१२. तए णं कोडुंबिया पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुट्ठागं
 केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, ते पंच सालिअक्खए ववंति, दोच्चं पि तच्चं पि
 उक्खय-निहए करेंति, वाडिपरिक्खेवं करेंति, अणुपुब्बेणं सारक्खेमाणा
 संगोवेमाणा संबड्ढेमाणा विहरंति ॥
१३. तए णं ते साली अणुपुब्बेणं सारक्खज्जमाणा संगोविज्जमाणा संबड्ढिज्जमाणा
 साली जाया—किण्हा किण्होभासा' °नीला नीलोभासा हरिया हरिओभासा
 सीया सीओभासा णिद्धा णिद्धोभासा तिब्बा तिब्बोभासा किण्हा किण्हच्छाया
 नीला नीलच्छाया हरिया हरियच्छाया सीया सीयच्छाया णिद्धा णिद्धच्छाया
 तिब्बा तिब्बच्छाया घण-कडियकडिच्छाया रम्मा महामेह ° निउरंवभूया
 पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

१. स० पा०—सद्दावेइ जाव तं ।

२. ना० १।७।६, ७ ।

३. कारणेण त्ति कट्ठु (क, ञ) ।

४. × (क, ग) ।

५. निक्खए (क, ख, ग, ञ) ।

६. × (क, ख, ग) ।

७. संगोविति विहरंति (क, ख, ग, ञ) ।

८. सं० पा०—किण्होभासा जाव निउरंवभूया ।

१४. तए णं ते साली पत्तिया वत्तिया' गम्भिया पसूइया आगयगंधा' खीराइया' बद्धफला पक्का परियागया सल्लइय'-पत्तइया 'हरिय-फेरंडा'" जाया यावि होत्था ।
१५. तए णं ते कोडुंबिया ते साली पत्तिए' *वत्तिए गम्भिए पसूइए आगयगंधे खीराइए बद्धफले पक्के परियागए° सल्लइय-पत्तइए जाणित्ता तिक्खेहि नवपज्जणएहि असिएहि लुणंति, लुणित्ता करयलमलिए करेंति, करेत्ता पुणंति । तत्थ णं चोवखाणं सूइयाणं अखंडाणं अफुडियाणं छडछडापूयाणं सालीणं मागहए पत्थए जाए ॥
१६. तए णं ते कोडुंबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवंति पक्खिवित्ता ओलिपंति, ओलिपित्ता लंछिय-मुद्दिए' करेंति, करेत्ता कोट्टागारस्स एगदेसंसि" ठावेंति, ठावेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा विहरंति ॥
१७. तए णं ते कोडुंबिया दोच्चंसि वासारत्तंसि पढमपाउसंसि महावुट्टिकायंसि निवइयंसि [समाणंसि ?] खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, ते साली ववंति", दोच्चंपि उक्खाय-णिहए करेंति जाव" असिएहि लुणंति लुणित्ता" चलणतल-मलिए करेंति करेत्ता पुणंति । तत्थ णं" सालीणं बह्वे कुडवा" *जाया ॥
१८. तएणं ते कोडुंबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवंति, पक्खिवित्ता ओलिपंति ओलिपित्ता लंछिय-मुद्दिए' करेंति, करेत्ता कोट्टागारस्स° एगदेसंसि ठावेंति, ठावेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा विहरंति ॥
१९. तए णं ते कोडुंबिया तच्चंसि वासारत्तंसि महावुट्टिकायंसि निवइयंसि [समाणंसि ?] केयारे" सुपरिकम्मिए करेंति जाव" असिएहि लुणंति, लुणित्ता संवहति, संवहित्ता खलयं करेंति, मलेंति," पुणंति । तत्थ णं" सालीणं बह्वे कुंभा जाया ॥

१. पाठान्तरेण तयावत्ति (वृ) ।

२. आययगंधा (वृ) ।

३. क्षीरकिता (वृ) ।

४. सल्लइया (क, ख, ग, घ, वृपा) ।

५. हरिया° (ख); °फेरंडा (ग) ।

६. सं० पा०—पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए ।

७. सूयाणं (घ) ।

८. छडछडछडाणं पूयाणं (क); छडछडछडा-
पूयाणं (ख); छडछडाभूयाणं (ग, वृपा);
छडछडपूयाणं (घ) ।

९. मुद्दियाए (क) ।

१०. °देसम्मि (ग) ।

११. वुप्पंति (क, ग); वुपंति (ख); वुप्पंति (घ) ।

१२. ना० १।७।१२-१५ ।

१३. जाव (क, ख, ग, घ) ।

१४. पू०—ना० १।७।१५ ।

१५. सं० पा०—कुडवा जाव एगदेसंसि ।

१६. केदारे (ख, ग, घ) ।

१७. ना० १।७।१२-१५ ।

१८. मेलित्ति (ख); मेलेंति (ग, घ) ।

१९. पू०—ना० १।७।१५ ।

२०. तए णं ते कोढुंबिया ते सासी कोढागारंसि पल्लंसि' °पक्खिबंति, पक्खिवित्ता ओलिंपंति, ओलिंपित्ता लंछिय-मुद्दिए करेंति, करेत्ता सारक्खमाणा संगोवे माणा° विहरंति ॥

२१. चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया ॥

परिक्खा-परिणाम-पदं

२२. तए णं तस्स घणस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि पुब्बरत्तावरत्तकाल-समयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था— एवं खलु मए इओ अतीते' पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पंच-पंच सालिअक्खया हत्थे दिन्ना । तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पंच सालिअक्खए परिजाइत्तए' जाव' जाणामि ताव काए किहू सारक्खिया वा संगोविया वा संवड्ढिया वत्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं' °पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं जाव' ° सम्माणित्ता तस्सेव मित्त-नाइ'- °नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स ° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं पुत्ता ! इओ अतीते पंचमम्मि संवच्छरे' इमस्स मित्त-'' °नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिय-णस्स ° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तव हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयामि । जया णं अहं पुत्ता ! एए पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएसि'' । से नूणं पुत्ता ! अट्ठे समट्ठे ?

१. सं० पा०—पल्लंसि जाव विहरंति; वल्लंसि (क) पल्लंसि (ख, ग, घ); यद्यपि बहुषु आदर्शेषु 'पल्लति' इति पदं विद्यते, किन्तु नैतद् समीचीनं प्रतिभाति । यद्येतत् स्वीकृतं स्यात् तर्हि जाव शब्दस्य पूर्वोदाहारस्थलं नोपलभ्यते 'पल्लंसि' इति पदस्यार्थोपि नैव संगच्छते । अतएव अस्माभिः पल्लंसि' इति पदं स्वीकृतम् । अस्याधारः (४३) सूत्रे 'पल्ले उब्भिदइ' इति पाठे उपलभ्यते ।

२. अईए (क) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. परिजातित्तए (ख, ग, घ) ।

५. एवं (घ) ।

६. ना० १।१।२४ ।

७. सं० पा०—असणं मित्त-नाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता ।

८. ना० १।७।६ ।

९. सं० पा०—नाइ ° ।

१०. संबत्सरे (ग) ।

११. सं० पा०—मित्त ।

१२. °निज्जाएसि ति कट्ठु (क) ।

हंता भ्रतिथि ।

तं णं तुमं पुत्ता ! मम ते सालिग्रक्षए पडिनिज्जाएसि ॥

२३. तए णं सा उज्झिया एयमट्ठं धणस्स सत्थवाहस्स पडिसुणेइ, जेणेव कोट्टागारं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता पल्लाओ पंच सालिग्रक्षए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणं सत्थवाहं एवं वयासी—एए णं ताम्रो ! पंच सालिग्रक्षए ति कट्ठु धणस्स हत्थंसि ते' पंच सालिग्रक्षए दलयइ ॥

२४. तए णं धणे सत्थवाहे उज्झियं सवह-सावियं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—किण्णं पुत्ता ! ते चेव पंच सालिग्रक्षए उदाहु अण्णे ?

२५. तए णं उज्झिया धणं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु तुब्भे ताम्रो ! इम्रो भतीए पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त-नाइ'-०नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरमो पंच सालिग्रक्षए गेण्हइ, गेण्हित्ता ममं सद्दावेह, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिग्रक्षए गेण्हाहि, अणुपुब्बेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी ० विहराहि । तए णं तुब्भं एयमट्ठं पडिसुणेमि, ते पंच सालिग्रक्षए गेण्हामि, एगंतमवक्क-मामि ।

तए णं मम इमेयारूवे' अज्झत्थिए' ०चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे ० समुप्प-ज्जित्था—एवं खलु ताताणं कोट्टागारंसि' ०बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति, तं जया णं मम ताम्रो इमे पंच सालिग्रक्षए जाएसइ, तया णं अहं पल्लंतराओ अण्णे पंच सालिग्रक्षए गहाय दाहामि ति कट्ठु एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता ते पंच सालिग्रक्षए एगंते एडेमि, सकम्मसंजुत्ता यावि भवामि ० । तं नो खलु ताम्रो ! ते चेव पंच सालिग्रक्षए, एए णं अण्णे ॥

२६. तए णं से धणे सत्थवाहे उज्झियाए भंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्मा' आसुरुत्ते जाव' मिसिमिसेमाणे उज्झियं तस्स मित्त-नाइ'-०नियग-सयण-संबंधि-परिज-णस्स ० चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरमो तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च 'छाणुज्झियं च' 'कयवरुज्झियं च संपुच्छियं च' सम्मज्जियं च पाओवदाइयं

१. ते (क, ख, ग) ।

२. ×(क) ।

३. सं० पा०—नाइ चउण्ह य कुल जाव विहराहि ।

४. इमे एयारूवे (क) ।

५. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

६. सं० पा०—कोट्टागारंसि सकम्मसं ।

७. ना० १।१।१६१ ।

८. निसम्म (क्वचित्) ।

९. सं० पा०—नाइ ० ।

१०. ×(ख); वृत्तावपि नास्तिव्याख्यातम् ।

११. समुप्पज्जियं (वृ); संपुच्छियं (वृपा) ।

- च ण्हाणोवदाइयं च बाहिर'पेसणकारियं' च ठवेइ' ॥
२७. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा निगंथी वा' •आयरिय-उवज्झा-
याणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए, पंच य से महव्व-
याइं उज्झियाइं भवन्ति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं
सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे जाव' चाउरंत-संसार-कंतारं भुज्जो-
भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा सा उज्झिया' ॥
२८. एवं भोगवइया वि, नवरं"—छोल्लेमि, छोल्लित्ता अणुगिलेमि, अणुगिलित्ता
सकम्मसंजुत्ता यावि भवामि । तं नो खलु ताओ ! ते चेव पंच सालिअक्खए,
एए णं अण्णे ।
२९. तए णं से घणे सत्थवाहे भोगवइयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्मा आसुरुत्ते
जाव' मिसिमिसेमाणे भोगवइं तस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स
चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ° तस्स कुलघरस्स कंडितियं' च
कोट्टितियं' च पोसंतियं च एवं—रंधंतियं रंधंतियं परिवेसंतियं' परिभायंतियं'
अभिभतरियं' पेसणकारि महाणसिणि ठवेइ ॥
३०. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा निगंथी वा आयरिय-उवज्झा-
याणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, पंच य से महव्वयाइं
फालियाइं' भवन्ति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं
सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे जाव' चाउरंत-संसार-कंतारं भुज्जो-
भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व सा भोगवइया ॥
३१. एवं रक्खियावि', नवरं—जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
मंजूसं विहाडेइ, विहाडेत्ता रयणकरंडगाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हइ,
गेण्हित्ता जेणेव घणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच सालिअक्खए
घणस्स हत्थे दलयइ ॥
३२. तए णं से घणे सत्थवाहे रक्खियं एवं वयासी—किं णं पुत्ता ! ते चेव एए पंच
सालिअक्खए उदाहु अण्णे ?

१. बाहर (ख) ।

२. पेसणकारि (क, ख) ।

३. ठावेइ (क) ।

४. सं० पा०—निगंथी वा जाव पव्वइए ।

५. ना० १।३।२४ ।

६. उज्झिया (ग, घ) ।

७. सं० पा०—नवरं तस्स ।

८. ना० १।१।१६१ ।

९. कुंडेतियं (ख); कंडेतियं (ग); खंडेतियं (घ) ।

१०. °तियं च (ग) ।

११. °तियं च (ग) ।

१२. °तरियं च (ग) ।

१३. फाडियाति (घ) फोडियाइं (ख) ।

१४. ना० १।३।२४ ।

१५. रक्खितियावि (ख, ग) ।

३३. तए णं रक्खिया घणं सत्थवाहं एवं वयासी—ते चेव ताम्पो ! एए पंच सालि-
अक्खए, नो अण्णे ।
कहणं ? पुत्ता !
एवं खलु ताम्पो ! तुब्भे इम्पो अतीते पंचमे' *संवच्छरे इमस्स मित्त-नाइ-नियग-
सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरम्पो पंच सालि-
अक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता ममं सद्दावेह, सद्दावेत्ता ममं एवं वयासी—तुमं णं
पुत्ता ! मम हत्थाम्पो इमे पंच सालिअक्खए गिण्हाहि, अणुपुब्बेणं सारक्खमाणी
संगोवेमाणी विहराहि । जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए
जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि ति
कट्ठु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयह । तं ° भवियव्वं एत्थ कारणेणं
ति कट्ठु ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे' *बंधेमि, बंधित्ता रयणकरंडियाए
पक्खिवेमि, पक्खिवित्ता उसीसामूले ठावेमि, ठावेत्ता ° तिसंभं पडिजागरमाणी
यावि विहरामि । ताम्पो' एएणं कारणेणं ताम्पो ! ते चेव पंच सालिअक्खए,
नो अण्णे ॥
३४. तए णं से घणे सत्थवाहे रक्खियाए' अंतियं एयमट्ठं सोच्चा हट्ठुट्ठे तस्स कुल-
घरस्स हिरण्णस्स य कंस-दूस-विपुल-घण'-*कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-
सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार ° सावएज्जस्स' य भंडागारिणी' ठवेइ ॥
३५. एवामेव समणाउसो' ! *जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झा-
याणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराप्पो अणगारियं पव्वइए, ° पंच य से महव्व-
याइं रक्खियाइं भवन्ति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं
सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे जाव' चाउरंतं संसारकंतारं वीईव-
इस्सइ—जहा व सा रक्खिया ॥
३६. रोहिणीया वि एवं चेव, नवरं—तुब्भे ताम्पो ! मम सुबहुयं सगडि-सागडं
दलाह', जा णं' अहं तुब्भं ते पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएमि ॥
३७. तए णं से घणे सत्थवाहे रोहिणि' एवं वयासी—कहं' णं तुमं' पुत्ता ! ते पंच

१. ताया (ख, ग); ताय (घ) ।

२. सं० पा०—पंचमे जाव भवियव्वं ।

३. सं० पा०—वत्थे जाव तिसंभं ।

४. तत्तेणं (ख); तत्ते (ग); तं (घ) ।

५. रक्खितियाए (क, ख, ग, घ) ।

६. सं० पा०—घण जाव सावएज्जस्स ।

७. सावएज्जस्स (क); सावतेयस्स (ख, ग, घ) ।

८. भंडागारिणि (क्व) ।

९. सं० पा०—समणाउसो जाव पंच ।

१०. ना० १।३।३४ ।

११. दनयाह (घ) ।

१२. जोअणं (ख) ।

१३. रोहिणी (क, ख, ग) ।

१४. कह (ग) ।

१५. तुमं मम (क, ख, ग)

सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइस्ससि ? ॥

३८. तए णं सा रोहिणी धणं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु ताम्रो ! तुब्भे इम्रो अतीते पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त'-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता ममं सद्दावेह, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुब्बेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि । जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि ति कट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयह । तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं । तं सेयं खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीए जाव' °वहवे कुंभसयाजाया तेणेव कमेण । एवं खलु ताम्रो ! तुब्भे ते पंच सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाएमि ॥
३९. तए णं से धणे सत्थवाहे रोहिणीयाए सुबहुयं सगडि-सागडं दत्ताति' ॥
४०. तए णं से रोहिणी सुबहुं सगडि-सागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्टागारे विहाडेइ, विहाडित्ता पल्ले उब्भिदइ, उब्भिदित्ता सगडि-सागडं भरेइ, भरेत्ता रायगिहं नगरं मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ ॥
४१. तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग'-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु ° बहुजणो अण्णमण्णं एवमाइक्खइ —धण्णे णं देवानुप्पिया ! धणे सत्थवाहे, जस्स णं रोहिणीया सुण्हा पंच सालिअक्खए 'सगडि-सागडेणं' निज्जाएइ ॥
४२. तए णं से धणे सत्थवाहे ते पंच सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइए पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठे' पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्त-नाइ'-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स ° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ रोहिणीयं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहूसु कज्जेसु य' °कारणेसु य कुडुबेसु य मंतेसु य गुवभेसु य °रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं' °पडिपुच्छणिज्जं मेढि पमाणं आहारं आलवणं चक्खुं, मेढीभूयं पमाणभूयं आहारभूयं आलवणभूयं चक्खुभूयं सव्वकज्ज °वड्ढावियं पमाणभूयं ठवेइ ।
४३. एवामेव समणाउसो' ! °जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झा-याणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए°, पंच से महव्वया

१. सं० पा०—मित्त जाव बहवे ।

२. ना० १।७।१०-२१ ।

३. दलयइ (ख) ।

४. सं० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो ।

५. सगडि-सागडिएणं(क); सगडि-सागडिएणं(ख) । १०. सं० पा०—समणाउसो ! जाव पंच ।

६. हट्ठ जाव (क, घ) ।

७. सं० पा०—नाइ ।

८. सं० पा०—कज्जेसु जाव रहस्सेसु ।

९. सं० पा०—आपुच्छणिज्ज जाव वड्ढावियं ।

संवद्धिया भवन्ति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं
सावगाणं बहूणं सावियाणं य अच्चणिज्जे जाव' चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइ-
स्सइ—जहा व सा रोहिणीया ॥

निष्पेव-पवं

४४. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव'
सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।
—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सेट्ठी तह गुरुणो, जह नाइ-जणो तहा समणमंधो ।
जह बहुया तह भव्वा, जह सालिकणा तह वयाइ ॥१॥

उज्झिया—

जह सा उज्झियनामा, उज्झियसाली जहत्थमभिहाणा ।
पेसणगारित्तेणं, असंखदुक्खक्खणी जाया ॥२॥
तह भव्वो जो कोई, संघसमक्खं गुरु-विदिण्णाइं ।
पडिवज्जिउं समुज्झइ, महव्वयाइं महामोहा ॥३॥
सो इह चेव भवम्मि, जणाण धिक्कार-भायणं होइ ।
परलोए उ दुहत्तो, नाणा-जोणीसु संचरइ ॥४॥

भोगवती—

जह वा सा भोगवती, जहत्थनामोवभुत्तसालिकणा ।
पेसणविसेसकारित्तेण पत्ता दुहं चेव ॥५॥
तह जो महव्वयाइं, उवभुंजइ जीवियत्ति पालितो ।
आहाराइसु सत्तो, चत्तो सिवसाहणिच्छाए ॥६॥
सो एत्थ जहिच्छाए, पावइ आहारमाइ लिगित्ता ।
विउसाण नाइपुज्जो, परलोयसी दुही चेव ॥७॥

रक्खिया—

जह वा रक्खियबहुया, रक्खियसालीकणा जहत्थक्खा ।
परिजणमण्णा जाया, भोगसुहाइं च संपत्ता ॥८॥
तह जो जीवो सम्मं, पडिवज्जित्ता महव्वए पंच ।
पालेइ निरइयारे, पमाय-लेसंप्पि वज्जेतो ॥९॥

सो अप्पहिएक्करई, इहलोयम्मवि विऊहि पणयपप्पो ।
एगंतसुही जायइ, परम्म मोक्खं पि पावेइ ॥१०॥

रोहिणी—

जह रोहिणी उ सुण्हा, रोवियसाली जहत्थमभिहाणा ।
वड्डित्ता सालिकणे, पत्ता सब्बस्स सामित्तं ॥११॥
तह जो भव्वो पाविय, वयाइ पालेइ अप्पणा सम्मं ।
अण्णेसि वि भव्वाणं, देइ अण्णेगेसि हियहेउं ॥१२॥
सो इह संघप्पहाणो, जुगप्पहाणोत्ति लहइ संसद्दं ।
अप्पपरेंसि कल्लाण-कारप्पो गोयमपहुव्व ॥१३॥
तित्थस्स वुड्ढिकारी, अक्खेवणप्पो कुतित्थियाईणं ।
विउस-नरसेविय-कमो, कमेण सिद्धिं पि पावेइ ॥१४॥

अट्ठमं अज्झयणं

मल्लो

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^१ संपत्तेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

बल-राय-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, निसढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं, सीओदाए महानदीए दाहिणेणं, सुहावहस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिम-लवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं सलिलावई^२ नामं विजए पण्णत्ते ॥
३. तत्थ णं सलिलावईविजए वीयसोगा नामं रायहाणी^३—नवजोयणवित्थिण्णा जाव^४ पच्चक्खं देवलोगभूया ॥
४. तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए इंदकुंभे नामं उज्जाणे ॥
५. तत्थ णं वीयसोगाए रायहाणीए बले^५ नामं राया । तस्स^६ धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे^७ होत्था ॥
६. तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा जाव^८ महब्बले दारए जाए—उम्मुक्कबालभावे जाव भोगसमत्थे ॥

१. ना० १।१।७ ।

२. नलिणावती (वृषा) ।

३. °हाणी पण्णत्ता (क, ब) ।

४. ना० १।५।२ ।

५. धीबले (क, ख) ।

६. तस्स णं (क) ।

७. ओरोहो (क) ।

८. भग० ११।१३३-१५६ ।

७. तए णं तं महब्बलं अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसरिपाभोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नासयाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेति । पंच पासायसया । पंचसओ दाओ जाव' माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ।
८. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं इंदकुंभे उज्जाणे थेरा° समोसढा । परिसा निग्गया । 'बलो वि'° निग्गओ । धम्मं सोच्चा निसम्म' °हट्टुट्टे थेरे तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं जाव' नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे° ठावेमि । तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि ।
- अहासुहं देवाणुप्पिया ! जाव' एक्कारसंगवी । बहूणि° वासाणि परियाओ । जेणेव चारुपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° मासिएणं भत्तेणं सिद्धे ॥

महब्बल-राय-पदं

९. तए णं सा कमलसिरी अणया कयाइ सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा जाव' । बलभद्दो कुमारो जाओ । जुवराया यावि होत्था ॥
१०. तस्स णं महब्बलस्स रण्णो इमे 'छप्पि य वालवयंसगा'° रायाणो होत्था, तं जहा—
- अयले धरणे पूरणे वसू वेसमणे अभिचंदे"—सहजायया"° सहवड्डियया सहपंसु-कीलियया सहदारदरिसी अणमणमणुरत्तया अणमणमणुव्वयया अणमण-च्छंदाणुवत्तया अणमणहियइच्छियकारया अणमण्णेषु रज्जेसु किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥
११. तए णं तेसिं रायाणं अणया कयाइ एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सण्णि-सण्णाणं सण्णिविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहा-समुत्त्लावे समुप्पज्जित्था—जणं देवाणुप्पिया ! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पवज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जइ, तणं अम्मेहिं एगयओ° समेच्चा"° नित्थरियव्वे त्ति कट्ठु अणमणस्स एयमट्ठं पडिसुणंति ॥

१. °कल्लया ° (ग) ।

२. ना० १।१।६१-६३ ।

३. सं० पा०—थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढा । असी पाठः (१२) सूत्रेण नियोजितोस्ति ।

४. वीबलो (क) ।

५. सं० पा०—निसम्म जं० नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठावेमि ।

६. ना० १।१।१०१ ।

७. ना० १।५।८८-१०१ ।

८. पू०—ना० १।५।१०४, १०५ ।

९. भग० ११।१३३-१५६ ।

१०. छप्पिया° (क, ख, ग) ।

११. अभियंदे (ख, घ) ।

१२. सं० पा०—सहजायया जाव समेच्चा ।

१३. संहिच्चाए (ख, ग, घ) ।

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं इंदकुंभे उज्जाणे थेरा समोसढा । परिसा निग्गया । महव्वले णं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे । जं नवरं—छप्पि य वालवयंसए आपुच्छामि, वलभइं च कुमारं रज्जे ठावेमि, जावं ते छप्पि य वालवयंसए आपुच्छइ ॥
१३. तए णं ते छप्पि य वालवयंसगा महव्वलं रायं एवं वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया ! तुठ्ठे पव्वयह, अम्हं के अण्णे आहारे' °वा आलंवे वा ? अम्हे वि य णं° पव्वयामो ॥
१४. तए णं से महव्वले राया ते छप्पि य वालवयंसए एवं वयासी—जइ णं तुठ्ठे मए सद्धिं° पव्वयह, तं° गच्छह, जेट्ठपुत्ते सएहि-सएहि रज्जेहि' ठावेह, पुरिस-सहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुख्खा' °समाणा मम अतियं पाउव्ववह । तेवि तहेव° पाउव्ववन्ति ॥
१५. तए णं से महव्वले राया छप्पि य वालवयंसए पाउव्वभूए पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुवियपुरिसे सदावेइ जावं वलभइस्स अभिसेओ । जावं वलभइं रायं आपुच्छइ ॥

महव्वलादीणं पव्वज्जा-पइं

१६. तए णं से महव्वले° °छहि वालवयंसगेहि सद्धिं° महया इड्डीए पव्वइए । एक्कारसंगवी° । बहूहि चउत्थ°-°छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि अण्णाणं° भावेमाणे विहरइ ॥
१७. तए णं तेसिं महव्वलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगाराणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारुवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—जण्ण° अम्हं देवाणुप्पिया एगे तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तण्णं अम्हेहि सव्वेहि तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता बहूहि चउत्थ°-°छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमास-खमणेहि अण्णाणं भावेमाणा° विहरन्ति ॥

१. पु०—ना० १।५।५७ ।

२. ना० १।५।५७-५६ ।

३. सं० पा०—आहारे जाव पव्वयामो ।

४. सद्धिं जाव (क, ख, ग, घ) ।

५. तो णं (क्व०) ।

६. रज्जेहि रट्ठेहि (ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—दुख्खा जाव पाउव्ववन्ति ।

८. ना० १।५।६२-६४ ।

९. ना० १।५।६५, ६६ ।

१०. सं० पा०—महव्वले जाव महया ।

११. एक्कारसंगगाइं (क); एक्कारसंगगी (ख, घ) ।

१२. सं० पा०—चउत्थ जाव भावेमाणे ।

१३. जण्हं (ग, घ) ।

१४. सं० पा०—चउत्थ जाव विहरति ।

महब्बलस्स तवविसय-माया-पद

१८. तए णं से महब्बले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थिनामगोयं कम्मं निव्वत्तिस्सु—
जइ णं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा चउत्थं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तओ
से महब्बले अणगारे छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । जइ णं ते महब्बलवज्जा छ
अणगारा छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तओ से महब्बले अणगारे अट्ठमं
उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । एवं—अह अट्ठमं तो दसमं, अह दसमं तो
दुवालसमं । ‘इमेहि य’ णं वीसाए णं कारणेहि आसेविय-बहुलीकएहि तित्थयर-
नामगोयं कम्मं निव्वत्तिस्सु, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अरहंत-सिद्ध-पवयण-गुरु-थेर-बहुस्सुय'-तवस्सीसु ।
वच्छल्लया य तेसि, अभिक्ख' नाणोवओगे य ॥१॥
दंसण-विणए आवस्सए य सीलव्वए निरइयारो ।
खणलवतवच्चियाए, वेयावच्चे समाहीए ॥२॥
अपुव्वनाणगहणे, सुयभत्ती पवयण'-पहावणया ।
एएहि कारणेहि, तित्थयरत्तं लहइ 'सो उ' ॥३॥

महब्बलादीणं विविहतवच्चरण-पदं

१९. तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता
णं विहरंति जाव' एगराइयं ॥
२०. तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डाणं 'सीहनिककीलियं तवोकम्मं'
उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तं जहा—

चउत्थं करेति, सब्बकामगुणियं पारेति ।
छट्ठं करेति, चउत्थं करेति ।
अट्ठमं करेति, छट्ठं करेति ।
दसमं करेति, अट्ठमं करेति ।
दुवालसमं करेति, दसमं करेति ।
चोदसमं करेति, दुवालसमं करेति ।

१. अत्र वर्णविपर्ययेण 'यकार' स्थाने इकारो
जातः । मृदूच्चारणार्थं वर्णविपर्ययो लभ्यते
आर्षवाक्येषु ।

२. इमेहि च (क) ।

३. बहुस्सुए (क, ख, ग, घ) ।

४. अत्र अनुस्वारलोपः ।

५. समाही य (क, ख, ग, घ) ।

६. पवयणे (क, ख, ग, घ) ।

७. जीवो (वृ); एसो (वृषा) ।

८. ना० १।१।१६८ ।

९. ० लियस्तवोकम्मं (ख) ।

सोलसमं करेति, चोद्दसमं करेति ।
 अट्टारसमं करेति, सोलसमं करेति ।
 वीसद्वमं करेति, सोलसमं करेति ।
 अट्टारसमं करेति, चोद्दसमं करेति ।
 सोलसमं करेति, दुवालसमं करेति ।
 चोद्दसमं करेति, दसमं करेति ।
 दुवालसमं करेति, अट्टमं करेति ।
 दसमं करेति, छट्ठं करेति ।
 अट्टमं करेति, चउत्थं करेति ।

छट्ठं करेति, चउत्थं करेति, करेत्ता सव्वत्थं सव्वकामगुणिणं पारंति ।

एवं खलु एसा खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहि मासेहि सत्तहि य अहोरत्तेहि अहासुत्तं जाव' आराहिया भवइ ॥

२१. तयाणंतरं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेति, नवरं—विगइवज्जं पारंति ॥

२२. एवं तच्चा वि परिवाडी, नवरं—पारणए अलेवाडं पारंति ॥

२३. एवं चउत्था वि परिवाडी, नवरं—पारणए आयंबिलेण पारंति ॥

२४. तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं दोहि संवच्छरेहि अट्टवीसाए अहोरत्तेहि अहासुत्तं जाव' आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवन्ते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवन्ते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं भंते ! महालयं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

तहेव जहा' खुड्डागं, नवरं—चोत्तीसइमाओ नियत्तइ । एगाए परिवाडीए कालो एगेणं संवच्छरेणं छहि मासेहि अट्टारसहि य अहोरत्तेहि समप्पेइ' । सव्वंपि [महालयं ?] सीहनिक्कीलियं छहि वासेहि दोहि मासेहि बारसहि य अहोरत्तेहि समप्पेइ ॥

२५. तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालयं सीहनिक्कीलियं अहासुत्तं जाव' आराहित्ता जेणेव थेरे भगवन्ते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवन्ते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता बहूणि चउत्थं-^०छट्ठम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि अप्पाणं भावेमाणा^० विहरंति ॥

१. ठा० ७।१३ ।

२. विगति^० (ख); विगय (घ) ।

३. ठा० ७।१३ ।

४. पू०—ना० १।५।२० ।

५. समप्पइ (क) ।

६. ठा० ७।१३ ।

७. सं० पा०—चउत्थं जाव विहरंति ।

समाहिमरण-पदं

२६. तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा तेणं उरालेणं' तवोकम्मेणं सुक्का भुक्खा निम्मंसा किडिकिडियाभूया अट्टिचम्मावणद्धा किंसा घमणिसंतया जाया या वि होत्था । जहा खंदओ' नवरं—थेरे आपुच्छिता चारुपव्वयं सणियं-सणियं दुरुहंति जाव' दोमासियाए संलेहणाए अप्पाणं भोसेत्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेएत्ता, चतुरासीइं वाससयसहस्साइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, चुलसीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जयंते विमाणे देवत्ताए उववण्णा । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं महब्बलवज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई । महब्बलस्स देवस्स य पडिपुण्णाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई' ॥

पञ्चायाति-पदं

२७. तए णं ते महब्बलवज्जा छप्पि देवा जयंताओ देवलोगाओ आउक्खएणं 'भवक्खएणं ठित्तिक्खएणं' अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे विसुद्धपिइमाइवंसेसु' रायकुलेसु पत्तेयं-पत्तेयं कुमारत्ताए पञ्चायाया, तं जहा—पडिबुद्धी इक्खागराया,
चंदच्छाए अंगराया,
संखे कासिराया,
रुप्पी कुणालाहिवई,
अदीणसत्तू कुरुराया,
जियसत्तू पंचालाहिवई ॥

२८. तए णं से महब्बले देवे तिहिं नार्णेहिं समग्गे 'उच्चट्ठाणगएसुं गहेसुं', सोमासु दिसासु वित्तिमिरासु विसुद्धासु, जइएसुं सउणेसु, पयाहिणाणुकूलंसि भूमि-सप्पिसि मारुयंसि पवारयंसि, निप्फण्ण-सत्स-मेइणीयंसि कालंसि पमुइय-पक्कीलिएसुं जणवएसु अद्धरत्तकालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेणं जोगमुवागएणं जे से 'हेमंताणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे, तत्स णं फग्गुणसुद्धस्स' चउत्थीपक्खेणं जयंताओ विमाणाओ बत्तीसं सागरोवमठिइयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव

१. पू०—ना० १।१।२०२ ।

२. भग० २।१६४-६८; इहेव यथा मेघकुमारो
वर्णितः (१।१।२०३-२०६) ।

३. ना० १।१।२०६-२०८ ।

४. ठिई पण्णत्ता (क, ख, घ) ।

५. ठित्तिक्खएणं भवक्खएणं (ख, ग, घ) ।

६. पित्तिमाति० (ख, ग, घ) ।

७. ० गएसु गहेसु (घ) ।

८. जइतेसु गहेसु (क, ख, ग, घ) ।

९. पक्कीलिएसु (ख) ।

१०. वाचनान्तरेषु—गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे
पक्खे चेतसुद्धे तत्स णं चेतसुद्धस्स (वृ) ।

जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुंभस्स' रण्णो पभावतीए देवीए कुच्छिसि आहारवक्कंतीए भववक्कंतीए सरीरवक्कंतीए गम्भत्ताए वक्कंते ॥

२६. °जं रयणिं च णं महब्बले देवे पभावतीए देवीए कुच्छिसि गम्भत्ताए वक्कंते, तं रयणिं च णं सा पभावती देवी' चोहस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा'° । भत्तार-कहणं । सुमिणपाढगपुच्छा' जाव' °विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी° विहरइ ॥
३०. तए णं तीसे पभावईए देवीए तिण्हं भासाणं बहुपडिपुण्णाणं इमेयारूवे डोहने पाउब्भूए—धण्णाओ णं 'ताओ अम्मयाओ'° जाओ णं जल-थलय-भासर'-प्यभूएणं दसद्धवण्णेणं मल्लेणं अत्थुय-पच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सणिणसण्णाओ निवण्णाओ' य विहरंति, एगं च महं सिरिदामगंडं पाडल-मल्लिय-चंपग-असोग-पुत्ताग-नाग-मरुयग-दमणग-अणोज्जकोज्जय'°-पउरं परममुहफासं'° दरिसणिज्जं महया गंधद्धणिं मुयंतं अघायमाणीओ'° डोहलं विणेंति ॥
३१. तए णं तीसे'° पभावईए इमं एयारूवं डोहलं पाउब्भूयं पासित्ता अहासणिहिया वाणमंतरा देवा खिप्पामेव जल - थलय'° - °भासरप्यभूयं दसद्धवण्णं° मल्लं कुंभगसो य भारगसो य कुंभस्स'° रण्णो भवणंसि साहरंति, एगं च णं महं सिरिदामगंडं जाव'° गंधद्धणिं मुयंतं उवणेंति ॥
३२. तए णं सा पभावई देवी जल-थलय'°-°भासरप्यभूएणं दसद्धवण्णेणं° मल्लेणं'° दोहलं विणेइ ॥
३३. तए णं सा पभावई देवी पसत्थदोहला'° °सम्माणियदोहला विणीयदोहला संपुण्णदोहला संपत्तदोहला विउलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणी° विहरइ ॥

१. कुंभगस्स (क, ख, ग) ।

२. सं० पा०—तं रयणिं च णं चोहसमहासु-
मिणा वण्णओ ।

३. पू० कप्पो० सू० ४ ।

४. पू०—कप्पो० सू० ३ ।

५. सं० पा०—सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ ।

६. ना० १।१।१६-३२ ।

७. तातो अम्मयातो (ख) ।

८. पभासुर (ख, ग) ।

९. सयणुवण्णाओ (क, ग); सयणुवण्णातो
(ख, घ) ।

१०. °कुज्जय (क) ।

११. °सुह (ग, घ) ।

१२. आघाय° (क) ।

१३. तीए (ख, ग, घ) ।

१४. सं० पा०—थलय जाव दसद्धवण्णं ।

१५. कुंभगस्स (ख) ।

१६. ना० १।८।३० ।

१७. सं० पा०—थलय जाव मल्लेणं ।

१८. पू०—ना० १।८।३० ।

१९. सं० पा०—पसत्थदोहला जाव विहरइ ।

३४. तए णं सा पभावई देवी नवण्हं मासाणं [बहुपडिपुण्णाणं ?] अट्टमाण य राइंदियाणं [वीइक्कंताणं ?] जे से हेमंताणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिर-सुद्धे, तस्स णं एक्कारसीए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेणं [जोगमुवागएणं ?] उच्चट्ठाणगएसुं गहेसुं जाव' पमुइय-पक्कीलिएसु जणवएसु आरोयारोयं' एगूणवीसइमं तित्थयरं पयाया ॥
३५. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहेलोगवत्थव्वाओ अट्ट दिसाकुमारीमहयरियाओ जहा जंबुदीवपण्णत्तीए' जम्मणुस्सव', नवरं—मिहिलाए कुंभस्स पभावईए अभिलाओ संजोएयव्वो जाव नंदीसरवरदीवे महिमा ॥
३६. तया णं कुंभए राया बहूहि भवणवइ'-०वाणमंतर-जोइस-वेमाणिएहि देवेहि तित्थयर-जम्मणाभिसेयमहिमाए कयाए समाणीए पच्चूसकालसमयंसि नगर-गुत्तिए सद्दावेइ० जायकम्मं जाव' नामकरणं—जम्हा' णं अम्मं इमीसे' दारियाए माऊए मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीए, तं होउ णं [अम्मं दारिया ?] नामेणं मल्ली' ॥
३७. "तए णं सा मल्ली पंचघाईपरिक्खत्ता जाव" सुहंसुहेणं परिवड्ढई० ॥

१. ना०—१।८।२८ ।

२. आरोग्गारोगं (ग) ।

३. वक्ष० ५ ।

४. जम्मणं सव्वं (क, ख, ग, घ) । अत्र 'जम्मणं सव्वं' अस्य पाठस्थार्थो नैव संगति गच्छति । वृत्तिकृता—'जन्मवक्तव्यता सर्वा वाच्या' इति विवृतम्, किन्तु नात्र विवरणानु-सारी पाठोस्ति । अत्र 'जम्मणुस्सव' इति पाठः स्वाभाविकः स्यात् । जंबुद्वीपप्रज्ञप्त्यामपि 'जम्मणमहिमं करेति' इति पाठो लभ्यते । असी 'जम्मणुस्सव' इति पाठस्य पुष्टि करोति । लिपिदोषेण पाठविपर्ययो जातः इति कल्पना नात्रास्वाभाविकी ।

५. सं० पा०—भवणवइ० तित्थयर० ।

६. कप्पो० महावीर जन्म प्रहरण ।

७. जहा (ख, घ) ।

८. इमीए (क, ख, ग, घ); अत्र वड्ढ्यन्तं

पदमस्ति तेन 'इमंसे' इति पदं युज्यते ।

९. मल्ली २ (क) ।

१०. सं० पा०—जहा महव्वले जाव परिवड्ढिया ।

अत्र पूर्णपाठावलोकनार्थं महाबलस्य संकेतः कृतोस्ति । तस्य वर्णनं भगवत्यां (११।११) विद्यते । तत्राप्यादर्शेषु 'जहा दढपइण्णे' इति समर्पणमस्ति, तेनास्माभिरसी पाठः दृढप्रतिज्ञप्रकरणादेव पूरितः ।

अतोऽग्रे आदर्शेषु निम्नलिखितं गाथाद्वयं प्राप्यते, किन्तु एतत् प्रक्षिप्तमस्ति । वृत्तिकारेणापि सूचितमिदं, यथा—'सा वड्ढई भगवई' इत्यादि गाथाद्वयं आवश्यक-निर्युक्तिसंबन्धिच्छेषभमहावीरवर्णकरूपं बहु-विशेषणसाधर्म्यादिहाधीतम्, न पुनर्गाथा-द्वयोक्तानि विशेषणानि सर्वाणि मल्लि-जिनस्य घटन्ते । तेनास्माभिः नैतत् मूलपाठे स्वीकृतम् । तच्च गाथाद्वयमिदम्—

सा वड्ढई भगवई, दियलोयजुया अणोवमसरीया ।

दासीदासपरिवुडा, परिक्किणा पीढमईहि ॥१॥

३८. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा' •विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता° रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य अईव-अईव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥
३९. तए णं सा मल्ली देसूणवाससयजाया ते 'छप्पि य रायाणो' विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी-आभोएमाणी विहरइ, तं जहा—पडिबुद्धि' •इक्खागरायं, चंदच्छायं अंगरायं, संखं कासिरायं, रुप्पि कुणालाहिवइं, अदीणसत्तुं कुरुरायं° जियसत्तुं पंचालाहिवइं ॥

मल्लिस्स मोहणघर-निम्माण-पदं

४०. तए णं सा मल्ली कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! असोगवणियाए एगं महं मोहणघरं करेह—अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठं' । तस्स णं मोहणघरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गवभघराए करेह । तेसि णं गवभघरगाणं बहुमज्झदेसभाए जालघरयं करेह । तस्स णं जालघरयस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेडियं' करेह' । •एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तेवि तहेव° पच्चप्पिणंति ॥

असियसिरया मुनयणा, विबोद्धी धवलदंतपंतीया ।
वरकमलकोमलंगी, फुल्लुप्पलगंधनीसासा ॥२॥
वृत्तिकारेण स्थाने-स्थाने अनयोः पाठभेदा उल्लिखिताः ।

आवश्यकनिर्युक्तौ भगवतो ऋषभस्य वर्णने इदं गाथाद्वयमित्यमस्ति —

अह वड्ढइ सो भयवं, दियलोगचुनो य अणुवमसिरीओ ।
देवगणसंगरिवुडो, नंदाए सुमंगला-सहितो ॥१८७॥
असियसित्तो मुनयणो, विबोद्धो धवलदंतपंतीओ ।
वरपउमगवभगोरो, फुल्लुप्पलगंधनीसासो ॥१८८॥

भगवतो महावीरस्य वर्णने तद् गाथाद्वयमित्यमस्ति —

अह वड्ढइ सो भयवं, दिवलोगचुओ अणुवमसिरीओ ।
दासीदासपरिवुडो, परिकिण्णो पीढमद्देहि ॥१९॥
असियसिरओ मुनयणो, विबोद्धो धवलदंतपंतीओ ।
वरपउमगवभगोरो, फुल्लुप्पलगंधनीमासो ॥७०॥

११. राय० सू० ८०४ ।

४. पू० — ना० १।१।८६ ।

१. सं० पा० — उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण ।

५. °पीडियं (ख, घ); °पीडयं (ग) ।

२. छप्पिया° (क); छप्पि° (ख, घ) ।

६. सं० पा० — करेह जाव पच्चप्पिणंति ।

३. सं० पा० — पडिबुद्धि जाव जियसत्तुं ।

४१. तए णं सा मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिब्बयं सरिस-
लावण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं कणगामइं' मत्थयच्छिड्डं पउमुप्पल'-पिहाणं
पडिमं करेइ, करेत्ता जं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आहारेइ, तओ
मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ कल्लाकल्लि एगमेगं पिडं गहाय
तीसे कणगामईए मत्थयच्छिड्डाए' •पउमुप्पल-पिहाणाए° पडिमाए मत्थयंसि
पक्खिवमाणी-पक्खिवमाणी विहरइ ॥
४२. तए णं तीसे कणगामईए मत्थयच्छिड्डाए' •पउमुप्पल-पिहाणाए° पडिमाए
एगमेगंसि पिडे पक्खिप्पमाणे-पक्खिप्पमाणे तओ गंधे' पाउब्भवेइ, से जहाणामए
—अहिमडे इ वा' •गोमडे इ वा सुणहमडे इ वा मज्जारमडे इ वा मणुस्समडे इ
वा महिसमडे इ वा मूसगमडे इ वा आसमडे इ वा हत्थिमडे इ वा सीहमडे इ वा
वग्घमडे इ वा विगमडे इ वा दीविगमडे इ वा । मय-कुहिय-विणट्ठ-दुरभिवा-
वण्ण-दुड्ढिभगंधे किमिजालाउलसंसत्ते असुइ-विलीण-विगय-बीभत्सदरिसणज्जे
भवेयारूवे सिया ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव
अमणुण्णतराए चेव° अमणामतराए चेव ॥

पडिबुद्धिराय-पदं

४३. तेणं कानेणं तेणं समएणं कोसला नामं जणवए । तत्थ णं सागेए नामं नयरे ।
४४. तस्स णं उत्तरपुरत्थिमे' दिसीभाए, एत्थ णं महेगे नागघरए होत्था—दिब्बे
सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय-पाडिहेरे ॥
४५. तत्थ णं सागेए नयरे पडिबुद्धी नामं इक्खागराया परिवसइ । पउमावई देवी ।
सुबुद्धी अमच्चे साम-दंड'-•भेय-उवप्पयाण-नीति-सुपउत्त-नय-विहणू'
विहरई ° ॥
४६. तए णं पउमावईए देवीए अण्णया कयाइ नागजण्णए यावि होत्था ॥
४७. तए णं सा पउमावई देवी नागजण्णमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धी' •राया
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए

१. कणगामयं (ग) ।

२. पउमप्पल्ल (ख, ग, घ) ।

३. सं० पा०—मत्थयच्छिड्डाए जाव पडिमाए ।

४. सं० पा०—कणगामईए जाव मत्थयच्छिड्डाए ।

अत्र जाव शब्दस्य प्रयोगोऽशुद्धोस्ति । असौ
उपरितनसूत्रवत् 'मत्थयच्छिड्डाए जाव
पडिमाए' एवं युज्यते ।

५. गंधिए (क); गंधि (ग, घ) ।

६. सं० पा०—अहिमडे इ वा जाव अणिट्ठतराए
अमणामतराए ।

७. उत्तरपुरत्थिमे णं (ख, ग) ।

८. सं० पा०—साम दंड° । असौ अपूर्णः पाठः
'जाव' आदिपूर्तिसंकेतरहितोस्ति ।

९. पू०—ना० १।१।१६ ।

१०. सं० पा०—पडिबुद्धी° करयल° ।

अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता° एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मम कल्लं नागजण्णए भविस्सइ । तं इच्छामि णं सामी ! तुब्भेहि अब्भणुणाया समाणी नागजण्णयं गमित्तए । तुब्भे वि णं सामी ! मम नागजण्णयंसि समोसरह ॥

४८. तए णं पडिबुद्धी पउमावईए एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥

४९. तए णं पउमावई पडिबुद्धिणा रण्णा अब्भणुणाया समाणी हट्टतुट्ठा कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम कल्लं नागजण्णं भविस्सइ, तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह, सद्दावेत्ता एवं वदाह—एवं खलु पउमावईए देवीए कल्लं नागजण्णए भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! जल-थलय'-●भासरप्पभूयं° दसद्धवण्णं मल्लं नागघरयंसि साहरह, एगं च णं महं सिरिदामगंडं उवणेह ।

तए णं जल-थलय'-●भासरप्पभूएणं° दसद्धवण्णेणं मल्लेणं नाणाविह-भत्ति-सुविरइयं हंस-मिय-मयूर-कोंच-सारस-चक्कवाय'-मयणसाल-कोइल-कुलोववेयं ईहामिय'-●उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किनर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय°-भत्तिचित्तं महग्घं महरिहं विउलं पुप्फमंडवं विरएह । तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एगं महं सिरिदामगंडं जाव' गंधद्वणि मुयंतं उल्लोयंसि ओलएह, पउमावई देवि पडिवालेमाणा चिट्ठह ॥

५०. तए णं ते कोडुंबिया जाव' पउमावतिं देवि पडिवालेमाणा चिट्ठंति ॥

५१. तए णं सा पउमावई देवी कल्लं° ●पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते° कोडुंबिए पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेयं नयरं सन्निभतरबाहिरियं आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं जाव' गंधवट्ठिभूयं करेह, कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चपिणह । ते वि तहेव पच्चपिणंति ॥

५२. तए णं सा पउमावई देवी दोच्चंपि कोडुंबिय'-●पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्तं जाव' धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह । ते वि तहेव° उवट्ठवेंति ॥

१. सं० पा०—थलय° ।

२. सं० पा०—थलय° ।

३. चक्काय (क) ।

४. सं० पा०—ईहामिय जाव' भत्तिचित्तं ।

५. ना० १।८।३० ।

६. ना० १।८।४६ ।

७. सं० पा०—कल्लं° ।

८. ना० १।१।२४ ।

९. ना० १।१।३३ ।

१०. सं० पा०—कोडुंबिय जाव' खिप्पामेव लहुकरणजुत्तं जाव' जुतामेव उवट्ठवेंति ।

११. उवा० १।४७ ।

५३. तए णं सा पउमावई देवी अंतो अंतैउरंसि ण्हाया जाव' धम्मियं जाणं दुरुढा ॥
५४. तए णं सा पउमावई देवी नियग-परियाल-संपरिवुडा सागेयं नयरं मज्झमज्झेणं निज्जाइ', जेणेव पोक्खरणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोक्खरणि ओगाहति, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ जाव' परमसुइभूया उल्लपडसाडया जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव' ताइ' गेण्हइ, जेणेव नागघरए तेणेव प्हारेत्थ गमणाए ॥
५५. तए णं पउमावईए देवीए दासचेडीओ बहूओ पुप्फपडलग-हत्थगयाओ धूवकड-च्छुय-हत्थगयाओ पिट्ठओ समणुगच्छंति ॥
५६. तए णं पउमावई देवी सव्विड्डीए जेणेव नागघरए तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छित्ता नागघरं अणुप्पविसइ, लोमहत्थगं परामुसइ जाव' धूवं ड्हइ, पडिबुद्धि पडिवालेमाणी-पडिवालेमाणी चिट्ठइ ॥
५७. तए णं से पडिबुद्धी ण्हाए' हत्थिखंधवरगए सकोरेंट' मल्लदामेणं छत्तेणं घरिज्जमाणेणं ° सेयवरचामराहि वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे महया भड-चडगर-रह-पहकर-विदपरि-क्खित्ते सागेयं नगरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव नागघरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आलोए पणामं करेइ, करेत्ता पुप्फमंडवं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता पासइ तं एगं महं सिरिदामगंडं ॥
५८. तए णं पडिबुद्धी तं सिरिदामगंडं सुचिरं' कालं निरिक्खइ । तंसि सिरिदाम-गंडंसि जायविम्हए सुबुद्धि अमच्चं एवं वयासी—तुमं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागर जाव'° सण्णिवेसाइं आहिंडसि, बहूण य राईसर जाव'' सत्थवाहपभिईणं गिहाइं अणुप्पविससि, तं अत्थि णं तुमे कहिचि एरिसए सिरिदामगंडे दिट्ठुप्पवे, जारिसए णं इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे ?
५९. तए णं सुबुद्धी पडिबुद्धि रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अहं अण्णया कयाइ'' तुभं दोच्चेणं मिहिलं रायहाणि गए । तत्थ णं मए कुंभयस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए संवच्छर-पडिलेहणगंसि दिव्वे

१. ना० १।१।६५ ।

२. नियाइ (क, ख); निग्गच्छइ (घ) ।

३. ४. ना० १।२।१४ ।

५. तत्थ (क, ख, ग, घ) एतत् अणुद्धं प्रति-
भाति ।

६. ना० १।२.१४ ।

७. पू०—ना० १।१।६६ ।

८. सं० पा०—सकोरेंट जाव सेयवर°

९. सुइरं (क, ख, ग) ।

१०. ना० १।१।११८ ।

११. ना० १।५।६ ।

१२. कयाइ (ग) ।

सिरिदामगंडे दिट्ठपुब्बे । तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सइमं पि कलं न अग्घइ ॥

६०. तए णं पडिबुद्धी सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—केरिसिया ण देवाणुप्पिया ! मल्ली विदेहरायवरकन्ना, जस्स^१ णं संवच्छर-पडिलेहणयंसि सिरिदामगंडस्स पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सइमं पि कलं न अग्घइ ?

६१. तए णं सुबुद्धी पडिबुद्धिं इक्खागरायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मल्ली विदेहरायवरकन्ना सुपइट्ठियकुम्मुण्णय-चारुचरणा जाव^२ पडिरूवा ॥

६२. तए णं पडिबुद्धो सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सिरिदाम-गंड-जणियहासे^३ दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहाणि । तत्थ णं कुंभगस्स रण्णो धूयं पभावईए अत्तयं^४ मल्लि विदेहरायवरकन्नां^५ मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ॥

६३. तए णं से दूए पडिबुद्धिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घटं आसरहं पडिकप्पावेइ, पडिकप्पावेत्ता दुरूढे हय-गय^६—रह-पवर-जोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सिद्धिं संपरिवुडे^७ महया भड-चडगरेणं साएयाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव विदेहजणवए^८ जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

चंदच्छाय-राय-पवं

६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं अंगनामं^९ जणवए होत्था । तत्थ णं चंपा नामं नयरी होत्था । तत्थ णं चंपाए नयरीए चंदच्छाए अंगराया होत्था । तत्थ णं चंपाए नयरीए अरहण्णगपामोक्खा बहवे संजत्ता-नावावाणियगा परिवसंति—अड्ढा जाव^{१०} बहुजणस्स अपरिभूया ॥

६५. तए णं से अरहण्णगे समणोवासए यावि होत्था—अहिगयजीवाजीवे वण्णओ^{११} ॥

६६. तए णं तेसिं अरहण्णगपामोक्खाणं संजत्ता-नावावाणियगाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहोकहा समुल्लावे^{१२} समुप्पज्जित्था—सेयं खलु

१. अत्र पुंस्त्वनिर्देशः मल्ल्याः तीर्थकरत्वेन कृतः स्यात् ?

२. वण्णओ० (क, ख, ग, घ); जीवाजीवा-भिगमपडिवत्ती ३ ।

३. °हरित्ते (क, ख) ।

४. अत्तियं (क, ख, ग, घ) ।

५. °कन्त्यं (क, ख) ।

६. सं० पा०—गय० ।

७. विदेहा० (क, ख) ।

८. अंगा० (क, ख, ग) ।

९. ना० १।५।७ ।

१०. ना० १।५।४७ ।

११. संलावे (ख, ग, घ) ।

अम्हं गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेत्ति, पडिसुणेत्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडी-सागडियं सज्जेत्ति, सज्जेत्ता गणिमस्स धरिमस्स मेज्जस्स पारिच्छेज्जस्स य भंडगस्स सगडी-सागडियं भरेत्ति, भरेत्ता सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं भोयणवेलाए भुंजावेत्ति, *भुंजावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं ° आपुच्छंति, आपुच्छित्ता सगडी-सागडियं जोयंति, जोइत्ता चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव गंभीराए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडी-सागडियं मोयंति, पोयवहणं सज्जेत्ति, सज्जेत्ता गणिमस्स *धरिमस्स मेज्जस्स पारिच्छेज्जस्स य ° भंडगस्स [पोयवहणं ?] भरेत्ति, तंदुलाण य समियस्स य तेल्लस्स य धयस्स य गुलस्स य गोरसस्स य उदगस्स य भायणाणं य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अण्णेसि च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोयवहणं भरेत्ति । सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं भोयणवेलाए भुंजावेत्ति, भुंजावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आपुच्छंति, जेणेव पोयट्टाणे तेणेव उवागच्छंति ॥

६७. तए णं तेसि अरहण्णगं *पामोक्खाणं बहूणं संजत्ता-नावा ° वाणियगाणं *मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि °-परियणा ताहि इट्ठाहिं ° कंताहिं पियाहिं मणुणाहिं मणामाहिं ओरालाहिं ° वग्गूहिं अभिनंदंता य अभिसंथुणमाणा य एवं वयासी—अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल ! भाइणेज्ज ! भगवया समुद्देणं अभिरक्खिज्जमाणा-अभिरक्खिज्जमाणा चिरं जीवह, भद्दं च भे, पुणरवि लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे नियगं घरं हव्वमागए पासामो त्ति कट्ठु ताहि सोमाहिं निद्धाहिं दीहाहिं सप्पिवासाहिं पप्पुयाहिं दिट्ठीहिं निरक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति । तओ समाणिएसु पुप्फबलिकम्मेसु, दिन्नेसु सरस-रत्त-चंदण-दद्दर-पंचगुलितलेसु, अणुक्खत्तंसि धूवंसि, पूइएसु^१ समुद्वाएसु,

१. सं० पा०—भुंजावेत्ति जाव आपुच्छंति ।

२. गंभीर (ख, घ) ।

३. सं० पा०—गणिमस्स जाव चउव्विहभंडगस्स ।

४. भायणस्स (घ) ।

५. सं० पा०—अरहण्णग जाव वाणियगाणं ।

६. सं० पा०—वाणियगाणं जाव परियणा ।

७. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं ।

८. पूतिएसु (ख); पूइतेसु (ग, घ) ।

संसारियासु^१ वलयासु^२, ऊसिएसु सिएसु भयग्नेसु, पड्डुप्पवाइएसु तूरेसु^३
जइएसु^४ सव्वसउणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु महया उक्किट्ठ-सीहनाय^५-
●बोल-कलकल °रवेणं पक्खुभियमहासमुद्-रवभूयं पिव मेइणिं करेमाणा
एगदिसिं^६ ●एगाभिमुहा अरहण्णगपामोक्खा संजत्ता-नावा °वाणियगा नावाए
दुरूढा ॥

६८. तस्मो पुस्समाणवो वक्कमुदाहु—हं भो ! 'सव्वेसिमेव भे'^७ अत्थसिद्धी, उवट्ठियाइं
कल्लाणाइं, पडिहयाइं सव्वपावाइं, 'जुत्तो पूसो,'^८ विजओ मुहुत्तो 'अयं
देसकालो'^९ ॥

६९. तस्मो पुस्समाणवेणं^{१०} वक्कमुदाहिए^{११} हट्टुट्ठा 'कण्णधार-कुच्छिधार'^{१२} गब्भिज्ज-
संजत्ता-नावावाणियगा वावारिसु, तं नावं पुण्णुच्छं^{१३} पुण्णमुहि वंघणेहितो
मुंचंति ॥

७०. तए णं सा नावा विमुक्कवंघणा पवणवल-समाहया ऊसियसिया विततपक्खा
इव गरुलजुवई गंगासलिल-तिक्ख-सोयवेगेहिं 'संखुब्भमाणी-संखुब्भमाणी'^{१४}
उम्मी-तरंग-मालासहस्साइं समइच्छमाणी-समइच्छमाणी कइवएहिं अहोरत्तेहिं
लवणसमुद् अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा ॥

७१. तए णं तेसि अरहण्णगपामोक्खाणं संजत्ता-नावावाणियगाणं लवणसमुद् अणेगाइं
जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं वहूइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—
अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसदे अट्ठिक्खणं-अट्ठिक्खणं
आगासे देवयाओ नच्चंति ॥

७२. "तए णं ते अरहण्णगवज्जा संजत्ता-नावावाणियगा एगं"^{१५} च णं महं तालपिसायं

१. संचारियासु (क) ।
२. वलयवाहासु (क); वलयबाहासु (ग, घ)
३. भूतेसु (ग) ।
४. जतिएसु (ख); जइतेसु (ग, घ) ।
५. सं० पा०—सीहनाय जाव रवेण ।
६. सं० पा०—एगदिसिं जाव वाणियगा ।
७. सव्वेसामवि (क, ख, ग, घ) ।
८. इहावसरे इति गम्यते (वृ) ।
९. एष प्रस्तावो गमनस्येति गम्यते ।
१०. °माणएणं (ख, ग, घ) ।
११. °मुदाहरिए (क, घ) ।
१२. कुच्छिधारकण्णधार (ख, ग, घ) ।
१३. पुण्णत्थगं (ख) ।

१४. संबुज्जमाणी २ (क, ख, ग, घ) ।
१५. अत्र द्वयोर्वाचनयोः संमिश्रण जातमस्ति ।
वृत्तिकारस्य सम्मुखे असौ मिश्रितपाठ
एवादशेषु लिखितः आसीत्, तेन वृत्तिकृता
द्वयोः संगति स्थापयितुं प्रयत्नः कृतः, यथा—
तत्रार्हन्नकवर्जा यत् कुर्वन्ति तत् दर्शयितु-
मुक्तमेव पिशाचस्वरूपं सविशेषं तेषां
तद्दर्शनं चानुबदन्नाह—तए णमित्यादिः
ततस्ते अर्हन्नकवर्जा सांयान्निकाः पिशाचरूपं
वक्ष्यमाणविशेषणं पश्यन्ति (वृ) ।
वृत्तिकारेण वैकल्पिकरूपेण 'तएणं ते अरहण्णग
वज्जा' इति सूत्राद्यं वाचनान्तरत्वेन स्वीकृतम्,
यथा—अथवा 'तएणं ते 'अरहण्णगवज्जा'

पासन्ति—तालजंघं दिवंगयाहिं बाहाहिं फुट्टसिरं भमर-निगर-वरमासरासि-
महिसकालगं भरिय-मेहवणं सुप्पणहं फाल-सरिस-जीहं लंबोट्टं धवलवट्ट-
असिलिट्ट-तिक्ख-थिर-पीण-कुडिल-दाढोवगूढवयणं विकोसिय-धारासिजुयल-
समसरिस-तणुय - चंचल - गलंतरसलोल - चवल-फुरुफुरेंत - निल्लालियगजीहं
अवयत्थिय'-महल्ल-विगय-बीभच्छ-लालपगलंत-रत्ततालुयं हिगुलय-सगम्भ-
कंदरबिलं व अंजणगिरिस्स अग्गिज्जालुगिलंतवयणं' आऊसिय'-अक्खचम्म-
उड्डगंडदेसं' चीण-चिमिड-वंक-भगगनासं रोसागय-धमधमेंत'-मारुय-निट्ठुर-
खर-फरुसभुसिरं ओभुग-नासियपुडं घाडुब्भड'-रइय-भीसणमुहं उद्धमुहकण-
सक्कुलिय-महंतविगय-लोम-संखालग'-लंबंत-चलियकणं पिंगल-दिप्पंतलोयणं
'भिउडि-तडिनिडाल' नरसिरमाल-परिणद्धचिधं विचित्तगोणस-सुबद्धपरिकरं
अवहोलंत-फुप्फुयायंत'-सप्प - विच्छुय-गोधुंदुर'-नउल- सरड-विरइय-विचित्त-
वेयच्छमालियागं भोगकूर-कण्हसप्प-धमधमेंत-लंबंतकणपूरं मज्जार-सियाल-
लइयखंधं दित्त-घुघुयंत'-घूय-कय-भुंभरसिरं', घंटारवेणं भीम-भयंकरं कायर-

इत्यादि गमान्तरं 'आगासे देवयाओ नच्चति'
इतोन्नतरं द्रष्टव्यम्, अतएव वाचनान्तरे
नेदमुपलभ्यते चैवम् 'अभिमुहं आवयमाणं
पासन्ति' (वृ) ।

प्रथमवाचनापाठे कोपि कर्ता नास्ति
अतोस्माभि द्वितीयवाचनापाठे मूले
स्वीकृतः । प्रथमवाचना पाठः इदमस्ति—
'एगं च णं महं पिसायरूवं पासन्ति—
तालजंघं दिवंगयाहिं बाहाहिं मसि-भूसग-
महिस-कालगं भरिय-मेहवणं लंबोट्ट
निग्गयगदंतं निल्लालिय-जमल-जुयल-जीहं
आऊसिय-[आधूसिय (ख); आधूसिय,
आपूसिय (वृपा) ।] वयण-गडदेसं चीण-
चिमिड-[चिभिड (क); चमड (घ) ।]
नासियं विगय-भुगं-[भुग-भग (क, वृपा) ।]
भुमयं [भमयं (ख) ।] खज्जोय-दित्त-
चक्खुरागं [वाचनान्तरे - विगय - भग
भुमय - पडसिय - पयलिय - पडिय-फुल्लिग-
खज्जोय-चक्खुरागं ।] उतासणं विसालवच्छं
विसालकुण्डी पलंबकुण्डी पडसिय-पयलिय-

पयडियगत्तं [पडियगत्तं (क, ख, ग) ।]
पणच्चमाणं अप्फोडंतं अभिवगंतं
अभिगज्जंतं बहुसो-बहुसो य अट्टट्टहासे
विणिम्मुयंतं नीलुप्पल-गवल-गुलिय-[गुडिय
(ख) ।] अयसिकुमुमप्पगासं खुरधारं असि
गहाय अभिमुहमावयमाणं पासति ।

१६. एवं (क) ।

१. अवत्थिय (वृपा) ।

२. अग्गिजालो° (क); अग्गिजालु° (ख) ।

३. आऊसिय° (वृपा) ।

४. उट्ट° (ख, ग) ।

५. धम्मधमेंत (ख) ।

६. घोडुब्भड (ख) ।

७. संखालग (वृपा) ।

८. भिउडितनिडालं (वृपा) ।

९. पुप्फया° (क, ख, ग, घ) ।

१०. गोधुंदुर (ग, घ) ।

११. घुघुयंत (ख) ।

१२. भुंभल° (क, ग); सुंभल° (ख) ।

एकस्मिन् वृत्तगदर्शे 'बुंभल' इति लभ्यते ।
कुंतलं (ख) ।

जणहिययफोडणं दित्तं अट्टट्टहासं विणिम्मुयंतं, वसा-रुहिर-पूय-मंस-मल-मलिण-पोच्चडतणुं उत्तासणयं विसालवच्छं पेच्छंता भिन्ननख-मुह-नयण-कण्णं वरवग्घ-चित्त-कत्ती-णियंसणं सरस-रुहिर-गयचम्म-वियय-ऊसविय-बाहुजुयलं ताहि य खर-फरुस-असिणिद्ध-दित्त-अणिट्ट-असुभ-अप्पिय'-अकंत-वग्गूहि य तज्जयंतं—तं तालपिसायरूवं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता भीया' *तत्था तसिया उव्विग्गा° संजायभया अण्णमण्णस्स कायं समतुरंगेमाणा-समतुरंगेमाणा बहूणं इंदाण य खंदाण य रुद्धाण य सिवाण य वेसमणाण य नागाण य भूयाण य जक्खाण य अज्ज-कोट्टकिरियाण' य बहूणि उवाइयसयाणि उवाइमाणा चिट्ठंति ॥

७३. तए णं से अरहण्णए समणोवासए तं दिव्वं पिसायरूवं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता अभीए अतत्थे अचलिए असंभंते अणाउले अणुव्विग्गे अभिण्णमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे पोयवहणस्स एगदेसंसि वत्थंतेणं भूमि पमज्जइ, पमज्जित्ता ठाणं ठाइ, ठाइत्ता, करयल°-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु° एवं वयासि—नमोत्थु णं अरहंताणं भगवताणं जाव' सिद्धिगइनामघेज्जं ठाणं संपत्ताणं । जइ णं हं एत्तो उवसग्गाओ मुंचामि तो मे कप्पइ पारित्तए, अह णं एत्तो उवसग्गाओ न मुंचामि तो मे तहा पच्चक्खाएयव्वे ति कट्टु सागारं भत्तं पच्चक्खाइ ॥

७४. तए णं से पिसायरूवे जेणेव अरहण्णगे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहण्णगं एवं वयासी—हंभो अरहण्णगा ! अपत्थियपत्थया' ! *दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्ण-चाउइसिया ! सिरि-हिरि-घिइ-कित्ति°-परिवज्जिया ! नो खलु कप्पइ तव सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं चालित्तए वा' खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा । तं जइ णं तुम सील-व्वय°-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं न चालेसि न खोभेसि न खंडेसि न भंजेसि न उज्झसि° न परिच्चयसि, तो ते अहं एयं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं' गेण्हामि, गेण्हत्ता सत्तट्टतलप्पमाणमेत्ताइं उड्डं वेहासं उव्विहामि अंतोजलसि

१. अप्पियअमण्णुण (क, घ) ।

२. तज्जयंतं पासंति (क, ख, ग, घ) ।

३. सं० पा०—भीया संजायभया ।

४. कोट्टकिरियाण (क) ।

५. सं० पा०—करयल° ।

६. ओ० सू० २१ ।

७. अपत्थियपत्थया (ग, घ, वृपा); सं० पा—
अपत्थियपत्थया जाव परिवज्जिया ।

८. वा एवं (क, ख, ग, घ) ।

९. सं० पा०—सीलव्वय जाव न परिच्चयसि ।

१०. अंगुलीहि (ग) ।

निब्बोलेमि^१, जेणं^२ तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

७५. तए णं से अरहण्णगे समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहण्णए नामं^३ समणोवासए अहिगयजीवाजीवे । नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा^४ • दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेणं वा किन्नरेण वा किपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधवेण वा^५ निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तुमं णं जा^६ सद्धा तं करेहि त्ति कट्ठु अभीए जाव^७ अभिन्नमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे निच्चले निप्फंदे^८ तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

७६. तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहण्णगं समणोवासगं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—हंभो अरहण्णगा ! जाव^९ धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

७७. तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहण्णगं धम्मज्झाणोवगयं पासइ, पासित्ता बलियतरागं आसुरत्ते तं पोयवहणं दोहि अंगुलियाहि गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्तट्ठतलं^{१०}— •प्पमाणमेत्ताइ उड्ढं वेहासं उव्विहइ, उव्विहित्ता^{११} अरहण्णगं एवं वयासी—हंभो अरहण्णगा ! अपत्थियपत्थया^{१२} ! नो खलु कप्पइ तव सील-व्वय^{१३}— •गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा । तं जइ णं तुमं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ न चालेसि न खोभेसि न खंडेसि न भंजेसि न उज्झेसि न परिच्चयसि, तो ते अहं एयं पोयवहणं अंतो जलंसि निब्बोलेमि, जेणं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

७८. तए णं से अरहण्णगे समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहण्णए नामं समणोवासए—अहिगयजीवाजीवे नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधवेण वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तुमं णं जा सद्धा तं करेहि त्ति कट्ठु अभीए जाव^{१४} अभिन्नमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे निच्चले निप्फंदे

१. निब्बोलेमि (क) ।

२. जाणं (क, ग, घ) ।

३. × (ग) ।

४. सं० पा०—देवेण वा जाव निग्गंथाओ ।

५. जाव (ख, ग, घ) अशुद्धं प्रतिभाति ।

६. ना० १।८।७३ ।

७. निप्पंदे (ख) ।

८. ना० १।८।७४, ७५ ।

९. सं० पा०—सत्तट्ठतलाइ जाव अरहण्णगं ।

१०. पू०—ना० १।८।७४ ।

११. सं० पा०—सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए ।

१२. ना० १।८।७३ ।

तुसिणीए ° धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।

७६. तए णं से पिसायरूवे अरहण्णगं जाहे नो संचाएइ निगंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे संते' °तंते परितंते ° निव्विण्णे तं पोयवहणं सणियं-सणियं उवरि जलस्स ठवेइ, ठवेत्ता तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरेइ, पडिसाहरेत्ता दिव्वं देवरूवं विउव्वइ'- अंतलिक्ख-पडिवन्ने सखिखिणीयाइं दसद्धवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिण अरहण्णगं समणोवासगं एवं वयासी-हं भो अरहण्णगा ! समणोवासया ! धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया' ! °पुण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थेसि णं तुमं देवाणु-प्पिया ! कयलक्खणेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्म ° जीवियफले, जस्स णं तव निगंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।

एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिसाए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूणं देवाणं मज्झगाए महया-महया सद्देणं एवं आइक्खइ, एवं भासेइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ - एवं खलु देवा ! जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए अरहण्णए समणोवासाए अभिगयजीवाजीवे । नो खलु सक्के' केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा निगंथाओ पावयणाओ चालित्तए' °वा खोभित्तए वा ° विपरिणामित्तए वा । तए णं अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो नो एयमट्ठं सद्दहामि, पत्तियामि रोएमि । तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए' °चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पजित्था ° - गच्छामि णं अहं अरहण्णगस्स अंतियं पाउब्भवामि, जाणामि ताव अहं अरहण्णगं - किं पियधम्मे नो पियधम्मे ? दद्धधम्मे नो दद्धधम्मे ? सील-व्वय-गुण"-°वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं किं चालेइ नो चालेइ ? खोभेइ नो खोभेइ ? खंडेइ नो खंडेइ ? भंजेइ नो भंजेइ ? उज्झइ नो उज्झइ ? परिच्चयइ ° नो परिच्चयइ त्ति कट्ठु एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता ओहिं पउंजामि, पउंजित्ता देवाणुप्पियं ओहिणा आभोएमि, आभोएत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं

१. सं० पा०—संते जाव निव्विण्णे । तहेव संते जाव निव्विण्णे (क, ख, ग, घ) ।

२. पू०—उवा ° २।४० ।

३. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव जीवियफले ।

४. सक्का (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—चालित्तए जाव विपरिणामित्तए ।

६. सं० पा०—अज्झत्थिए ° ।

७. सं० पा०—गुणे...किं चालेइ जाव नो परिच्चयइ ।

अवक्कमामि' उत्तरवेउव्वियं रूवं विउव्वामि, विउव्वित्ता ताए उक्किट्टाए' देवगईए' जेणेव लवणसमुद्दे जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवाणुप्पियस्स उवसग्गं करेमि, नो चेव णं देवाणुप्पिए भीए' *तत्थे चलिए संभंते आउले उव्विग्गे भिण्णमुहराग-नयणवण्णे दीणविमणमाणसे जाए ° । तं जं णं सक्के देविदे देवराया एवं वयइ, सच्चे णं एसमट्टे । तं दिट्ठे णं देवाणुप्पियस्स इड्ढी' *जुई जसो बलं वीरियं पुरिसकार°-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए । तं खामेमि णं देवाणुप्पिया । खमेसु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहसि णं देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो एवंकरणयाए त्ति कट्ठु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, अरहण्णगस्स य दुवे कुंडलजुयले दलयइ, दलइत्ता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

८०. तए णं से अरहण्णए निरुवसग्गमिति कट्ठु पडिमं पारेइ ॥

८१. तए णं ते अरहण्णगपामोक्खा' *संजत्ता-नावा°वाणियगा दक्खिणाणुकुलेण वाएणं जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लंबेति, लंबेत्ता सगडि°-सागडं सज्जेति, तं गणिमं धरिमं मेज्जं परिच्छेज्जं च सगडि-सागडं संकामेति, संकामेत्ता सगडि-सागडं जोविति° जोवित्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडि-सागडं मोएति, मोएत्ता महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं दिव्वं कुंडलजुयलं च गेण्हंति, गेण्हित्ता [मिहिलाए रायहाणीए?] अणुप्प-विसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल°*परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थाए अंजलि कट्ठु° महत्थं° *महग्घं मह-रिहं विउलं रायारिहं पाहुडं° दिव्वं कुंडलजुयलं च उवणेति ॥

८२. तए णं कुंभए राया तेसि संजत्ता°-°नावावाणियगाणं तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं दिव्वं कुंडलजुयलं च° पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लि विदेहवररायकन्नं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं मल्लीए विदेह-रायकन्नगाए पिणद्धेइ, पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१. २, ३. पू०—राय सू० १० ।

४. सं० पा०—भीया वा...

५. सं० पा०—इड्ढी जाव परक्कमे ।

६. सं० पा०—पामोक्खा जाव वाणियगा ।

७. सगड (ग, घ) ।

८. जोएति (क) ।

९. 'क' प्रती असौ पाठः 'महत्थं' अतः प्राग्

लिखितो लभ्यते, किन्तु वस्तुतः कोष्ठक-स्थाने युज्यते । अन्यादर्शेषु नासौ लब्धोस्ति ।

१०. सं० पा०—करयल° ।

११. सं० पा०—महत्थं° ।

१२. सं० पा०—संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ ।

८३. तए णं से कुंभए राया ते अरहण्णगपामोक्खे^१ •संजत्ता-नावा^२ वाणियगे विपुलेणं वत्थ-गंध^३-•मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता^४ •उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता रायमग्गमोगाढे य आवासे वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ॥
८४. तए णं अरहण्णग^५•पामोक्खा संजत्ता-नावावाणियगा^६ •जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भंडववहरणं^७ करंति, पडिभंडे गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडी-सागडं भरंति, भरेत्ता जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं सज्जेति, सज्जेत्ता भंडं संकामेति, संकामेत्ता दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव चंपाए पोयपट्टाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लंबेति, लंबेत्ता सगडी-सागडं सज्जेति, सज्जेत्ता तं गणिमं धरिमं मेज्जं परिच्छेज्जं च सगडी-सागडं संकामेति, संकामेत्ता^८ •सगडि-सागडं जोविति, जोवित्ता जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चंपाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडि-सागडं मोएति, मोएत्ता महत्थं महग्घं मह्रिहं विउलं रायारिहं^९ •पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चंदच्छाए अंगराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं महत्थं^{१०} •महग्घं मह्रिहं विउलं रायारिहं पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं •उवणेति ॥
८५. तए णं चंदच्छाए अंगराया तं महत्थं^{११} पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते अरहण्णगपामोक्खे एवं वयासी—तुम्हे णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव^{१२} सण्णिवेसाइं आहिडइ, लवणसमुदं च अभिक्खणं-अभिक्खणं पोयवहणेहि अंगराहेह, तं अत्थियाइं भे केइ कंहिचि अच्छेराए दिट्ठपुव्वे ?
८६. तए णं ते अरहण्णगपामोक्खा चंदच्छायं अंगरायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहण्णगपामोक्खा बहवे संजत्तगा-नावा-वाणियगा परिवसामो । तए णं अम्हे अण्णया क्याइ गणिमं च धरिमं च मेज्जं च परिच्छेज्जं च गेण्हामो तहेव अहीण-अइरित्तं जाव^{१३} कुंभगस्स रण्णो उवणेमो । तए णं से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तं दिव्वं कुंडलजुयलं पिणद्धेइ^{१४}, पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ । तं एस णं सामी ! अम्हेहि कुंभगरायभवणंसि

१. सं० पा०—•पामोक्खे जाव वाणियगे ।

२. सं० पा०—गंध जाव उस्सुक्कं ।

३. सं० पा०—अरहण्णग संजत्तगा ।

४. भंडग^० (ग) ।

५. सं० पा०—संकामेत्ता जाव महत्थं पाहुडं ।

६. सं० पा०—महत्थं जाव उवणेति ।

७. पू०—ना० १।८।८१ ।

८. ना० १।१।११८ ।

९. ना० १।८।६४-८२ ।

१०. पिणिद्धइ (ख); पिणिवेइ (क) ।

मल्ली विदेहरायवरकन्ना अच्छेरए दिट्ठे । तं नो खलु अण्णा कावि तारिसिया देवकन्ना वा' ० असुरकन्ना वा नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा रायकन्ना वा ० जारिसिया णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ॥

८७. तए णं चंदच्छाए अरहण्णगपामोक्खे' सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता उत्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ॥

८८. तए णं चंदच्छाए वाणियग-जणियहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जाव' मल्लि विदेहरायवरकन्नां मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका' ॥

८९. तए णं से दूए चंदच्छाएणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठुट्ठे जाव' पहारेत्थ गमणाए ॥

रुप्पि-राय-पदं

९०. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला नाम जणवए होत्था । तत्थ णं सावत्थी नाम नयरी होत्था । तत्थ णं रुप्पी कुणालाहिवई नाम राया होत्था । तस्स णं रुप्पिस्स धूया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहू नाम दारिया होत्था—सुकुमाल-पाणिपाया' रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥

९१. तीसे णं सुबाहूए दारियाए अण्णया चाउम्मासिय-मज्जणए जाए यावि होत्था ॥

९२. तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुबाहूए दारियाए चाउम्मासिय-मज्जणयं उवट्ठियं जाणइ, जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुबाहूए दारियाए कल्लं चाउम्मासिय-मज्जणए भविस्सइ, तं तुब्भे णं रायमग्गमोगाढंसि चउक्कंसि" जल-थलय-दसद्धवण्णं मल्लं साहरह' ० जाव' एणं महं सिरिदामगंडं" गंधद्धाणि मुयंतं उल्लोयंसि ओलएह । ते वि तहेव ० ओलयंति" ॥

९३. तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुवण्णगार-सेणि सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि नाणाविहपंच-वण्णेहिं तंदुलेहिं नगरं आलिहह । तस्स बहुमज्झदेसभाए पट्ठयं रएह, एयमाण-त्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ॥

१. सं० पा०—देवकन्ना वा जाव जारिसिया ।

देवकन्नागा (क, ख, ग, घ) ।

२. पामोक्खा (क, ख, घ) ।

३. ना० १।८।६२ ।

४. ० सुक्का (घ) ।

५. ना० १।८।६३ ।

६. पू०—ना० १।१।१७ ।

७. मंडवंसि (क, ख, ग, घ) ।

८. सं० पा०—साहरह जाव ओलयंति ।

९. ना० १।८।४८ ।

१०. पू०—ना० १।८।३० ।

११. ओलेंति (क) ।

६४. तए णं से रूपी कुणालाहिवई हत्थिखंधवरगए चाउरंगिणीए सेणाए महया भड'-●चडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खित्ते ° अंतेउर-परियाल-संपरिवुडे सुबाहुं दारियं पुरओ कट्ट जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमंडवे' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता पुप्फमंडवे अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिसण्णे ॥
६५. तए णं ताओ अंतेउरियाओ सुबाहुं दारियं पट्टयंसि दुरुहेति', दुरुहेत्ता सेयापीयएहि' कलसेहि ण्हाणेंति, ण्हाणेत्ता सव्वालंकारविभूसियं' करेति, करेत्ता पिउणो पायवंदियं उवणेंति ॥
६६. तए णं सुबाहु दारिया जेणेव रूपी राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायगहणं' करेइ ॥
६७. तए णं से रूपी राया सुबाहुं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुबाहुए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए वरिसधरं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी- तुमं णं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागर-नगर' ●जाव' सणिवेसाइं आहिंडसि, बहूण य राईसर जाव' सत्थवाहपभिईणं ° गिहाणि अणुप्पविससि, तं अत्थियाइं ते कस्सइ रण्णो वा ईसरस्स वा कहिंचि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं इमीसे सुबाहुए दारियाए मज्जणए ?
६८. तए णं से वरिसधरे रुप्पि रायं करयल'-●परिगाहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अहं अण्णया तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं गए । तत्थ णं मए कुंभगस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायवरकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे । तस्स णं मज्जणगस्स इमे सुबाहुए दारियाए मज्जणए सयसहस्सइमं पि कलं न अगघइ ॥
६९. तए णं से रूपी राया वरिसधरस्स अंतियं एयमद्रुं सोच्चा निसम्म मज्जणग-जणिय-हासे'' दूयं सदावेइ'', ●सदावेत्ता एवं वयासी—जाव' मल्लि विदेहराय-वरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ॥

१. सं० पा०—भड''' ।

२. °मंडवं (क) ।

३. दुरुहंति (ग, घ) ।

४. सेयापीयएहि (क) ।

५. °भूसियं (क, ख) ।

६. पायगहणं (क) ।

७. सं० पा०—नगर गिहाणि ।

८. ना० १।१।११८ ।

९. ना० १।५।६ ।

१०. सं० पा०—करयल''' ।

११. अगघइ सेसं तहेव मज्जणग-जणियहासे (क) ।

१२. सं० पा०—सदावेइ जाव जेणेव ।

१३. ना० १।८।६३ ।

१००. तए णं से दूए रुप्पिणा एवं वुत्ते समाणे हट्टुट्टे जाव'० जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

संख-राय-पदं

१०१. तेणं कालेणं तेणं समएणं कासी नामं जणवए होत्था । तत्थ णं वाणारसी नामं नयरी होत्था । तत्थ णं संखे नामं कासीराया होत्था ॥
१०२. तए णं तीसे मल्लीए विदेहवररायकन्नाए' अण्णया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए यावि होत्था ॥
१०३. तए णं से कुंभए राया सुवण्णगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुम्हे णं देवाणुप्पिया । इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधि' संघाडेह, [संघाडेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह' ?] ॥
१०४. तए णं सा सुवण्णगारसेणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवण्णगार-भिसियासु निवेसेइ, निवेसेत्ता वूहि आएहि य' *उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मयाहि य पारिणामियाहि य बुद्धीहि' परिणामेमाणा इच्छंति तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधि घडित्तए, नो चेव णं संचाएइ घडित्तए ॥
१०५. तए णं सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'-*परिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु जाएणं विजएणं वद्धा-वेइ', वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अज्ज तुम्हे' अम्हे सद्दावेह, जाव' संधि संघाडेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हामो, गेण्हित्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवगच्छामो जाव' नो संचाएमो संधि' संघाडेत्ता । तए णं अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स अण्णं सरिसयं कुंडलजुयलं घडेमो ॥
१०६. तए णं से कुंभए राया तीसे सुवण्णगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्ठु एवं वयासी—केस णं तुम्हे कलाया णं भवह, जे णं तुम्हे इमस्स

१. ना० १।८।६३ ।

२. ०कन्नयाए (ख) ।

३. संधी (क, ख, ग, घ) ।

४. स्वर्णकारश्चेष्ट्या राज्ञे निवेदने कोण्ठकवर्ती पाठो विद्यते । द्रष्टव्यम्—सू० १०५ । तेन अत्रासी युज्यते ।

५. सं० पा०—आएहि य जाव परिणामेमाणा ।

६. सं० पा०—करयलवद्धावेत्ता ।

७. तुम्हे (ग) ।

८. ना० १।८।१०३ ।

९. ना० १।८।१०४ ।

१०. X (ख, घ) ।

दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स नो संचाएह संधि संधाडित्ते ? ते सुवण्णगारे निव्विसए आणवेइ ॥

१०७. तए णं ते सुवण्णगारा कुंभगेणं रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साइं-साइं गिह्वाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाए रायहाणीए मज्झमज्झेणं निक्खमंति, निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झमज्झेणं निक्खमंति, निक्खमित्ता जेणेव कासी जणवाए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणंसि' सगडी-सागडं मोएंति, मोएत्ता महत्थं जाव' पाहुडं गेण्हंति, गेण्हित्ता वाणारसोए नयरीए मज्झमज्झेणं' जेणेव संखे कासीराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल'-●परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु जएणं विजएणं० वद्धावेति, वद्धावेत्ता पाहुडं उवणेंति, उवणेतता एवं वयासी—अग्गे णं सामी ! मिहिलाओ कुंभएणं रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा इह हव्वमागया । तं इच्छामो णं सामी ! तुब्भं वाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसित्तं ॥
१०८. तए णं संखे कासीराया ते सुवण्णगारे एवं वयासी—किं णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुंभएणं रण्णा निव्विसया आणत्ता ?
१०९. तए णं ते सुवण्णगारा संखं कासीरायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! कुंभगस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए कुंडल-जुयलस्स संधी विसंधिइए । तए णं से कुंभए राया सुवण्णगारसेणिं सद्दावेइ जाव' निव्विसया आणत्ता । तं एएणं कारणेणं सामी ! अग्गे कुंभएणं रण्णा निव्विसया आणत्ता ॥
११०. तए णं से संखे कासीराया सुवण्णगारे एवं वयासी केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स रण्णो धूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेहरायवरकन्ना ?
१११. तए णं ते सुवण्णगारा संखं कासीरायं एवं वयासी—नो खलु सामी ! अण्णा कावि तारिसिया देवकन्ना वा' ●असुरकन्ना वा नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा रायकन्ना वा० जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना ॥
११२. तए णं से संखे कासीराया कुंडल-जणिय-हासे दूयं सद्दावेइ", ●सद्दावेत्ता एवं

१. अंगुजाणंसि (घ) ।

करयल ए (ख, ग) ।

२. ना० १।८।२१ ।

३. रायपसेणइय ६८३ सूत्रे अस्यानन्तरं

५. ना० १।८।१०३-१०६ ।

'अणुपविसइ' इति क्रियापदं लभ्यते ।

६. सं० पा०—देवकन्ना वा जाव जारिसिया ।

४. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेहि (क);

७. सं० पा०—सद्दावेइ जाव तद्देव पहारेत्थ ।

वयासी—जाव' मल्लि विदेहरायवरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ॥

११३. तए णं से दूए संखेणं एवं वुत्ते समाणे हट्टुत्तुडे जाव' जेणेव मिहिला नयरी तेणेव ° पहारेत्थ गमणाए ॥

अदीणसत्त-राय-पदं

११४. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुरु नामं जणवए होत्था । तत्थ णं हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था । तत्थ णं अदीणसत्तू नामं राया होत्था जाव' रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥

११५. तत्थ णं मिहिलाए तस्स णं कुंभगस्स रण्णो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए मल्लीए अणुमगजायए मल्लदिन्ने' नामं कुमारे सुकुमालपाणिपाए जाव' जुवराया यावि होत्था ॥

११६. तए णं मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—गच्छह णं तुब्भे मम पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह—अणेग-खंभसयसण्णिविट्ठं' एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ॥

११७. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगर-सेणिं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं' देवाणुप्पिया ! चित्तसभं हाव-भाव-विलास-बिब्बोयकलिएहिं रुवेहिं चित्तेह', °चित्तेत्ता एयमाणत्तियं ° पच्चप्पिणह ॥

११८. तए णं सा चित्तगर-सेणी एयमट्ठं' तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइ गिहाइं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तूलियाओ वण्णए य गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता भूमिभागे विरचति, विरचित्ता भूमि सज्जेइ, सज्जेत्ता चित्तसभं हाव-भाव'-विलास-बिब्बोय-कलिएहिं रुवेहिं ° चित्तेजं पयत्ता यावि होत्था ॥

११९. तए णं एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगर-लद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णा-गया—जस्स णं दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं निव्वत्तेइ ॥

१२०. तए णं से चित्तगरे' मल्लीए जवणियंतरियाए' जालंतरेण पायंगुट्ठं पासइ । तए

१. ना० १।८।६२।

२. ना० १।८।६३ ।

३. ओ० सू० १४ ।

४. °दिन्ने (क, ख, ग, घ) ।

५. ओ० सू० १४३ ।

६. पू०—ना० १।१।८६ ।

७. गच्छह णं तुब्भे (ख, घ) ।

८. सं० पा०—चित्तेह जाव पच्चप्पिणह ।

९. द्रष्टव्यम्—अस्यैवाध्ययनस्य १०४ सूत्रम् ।

१०. सं० पा०—भाव जाव चित्तेजं ।

११. चित्तगरदारए (क, ख, ग, घ) ।

१२. जवणियंतराए (ख); जवणंतरियाए (ग) ।

णं तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव' समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मम मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्ठाणुसारेणं सरिसगं' ० सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण ० गुणोव्वेयं रूवं निव्वत्तिए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता भूमिभागं सज्जेइ, सज्जेत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्ठासारेणं सरिसगं जाव रूवं निव्वत्तेइ ॥

१२१. तए णं सा चित्तगर-सेणी चित्तसभं हाव-भाव'-विलास-विब्वोयकलिएहि रूवेहि ० चित्तेइ, चित्तेत्ता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥
१२२. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगर-सेणिं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलयत्ता पडिविसज्जेइ ॥
१२३. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे' ण्हाए अंतोउर-परियाल-संपरिवुडे अम्मवाईए सद्धि जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चित्तसभं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता हाव-भाव-विलास-विब्वोयकलियाइ रूवाई पासमाणे-पासमाणे जेणेव मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
१२४. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवं रूवं निव्वत्तियं पासइ, पासित्ता' इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव' समुप्पज्जित्था - एस णं मल्ली विदेहरायवरकन्ने त्ति कट्टु लज्जिए विलिए' वेड्डे सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ ॥
१२५. तए णं तं मल्लदिन्नं कुमारं अम्मघाई सणियं-सणियं पच्चोसक्कतं पासित्ता एवं वयासी—किण्णं तुमं पुत्ता ! लज्जिए विलिए वेड्डे सणियं-सणियं पच्चोसक्कसि ?
१२६. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे अम्मघाई' एवं वयासी—जुत्तं णं अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए गुरु-देवयभूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तसभं' अणुपविसित्ते ?
१२७. तए णं अम्मघाई मल्लदिन्नं कुमारं एवं वयासी—नो खलु पुत्ता ! एस मल्ली

१. ना० १।१।४८ ।

२. सं० पा०—सरिसगं जाव गुणोव्वेयं ।

३. सं० पा०—जाव हाव भावं । अत्र जाव

शब्दः भावशब्दानंतरं युज्यते ।

४. कुमारे अणया (क, ख, ग) ।

५. अतोऽग्रे 'तस्स' इति पदमध्याहर्तव्यम् ।

६. ना० १।१।४८ ।

७. विलिए (ख); विलज्जिए (घ); बीडिए (ङ) ।

८. अम्मघाई (क, ख, ग, घ) ।

९. चित्तघरसभं (ख, ग, घ) ।

विदेहरायवरकन्ना । एस णं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए चित्तगरएणं तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ॥

१२८. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे अम्मधाईए एयमट्टं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते' एवं वयासी—केस णं भो ! से चित्तारए अपत्थिय'°पत्थए, दुरंत-पंत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउद्दसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-°परिवज्जिए, जे णं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरु-देवयभूयाए' °लज्जणिज्जाए मम चित्तसभाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए त्ति कट्टु तं चित्तगरं वज्जं आणवेइ ॥

१२९. तए णं सा चित्तगर-सेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं' °सिरसावत्तं मत्थए अज्जलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ° वद्धावेत्ता एवं वयासी— एवं खलु सामी ! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगर'-लद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया- जस्स णं दुपयस्स वा' °चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं रूवं° निव्वत्तेइ । तं मा णं सामी ! तुव्वे तं चित्तगरं वज्जं आणवेह । तं तुव्वे णं सामी ! तस्स चित्तगरस्स अण्णं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह' ॥

१३०. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे तस्स चित्तगरस्स संडासगं छिदावेइ, छिदावेत्ता निव्विसयं आणवेइ ॥

१३१. तए णं से चित्तगरे मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे सभंडमत्तो- वगरणमायाए मिहिलाओ नयरीओ निक्खमइ, निक्खमित्ता 'विदेहस्स जणव- यस्स'° मज्झमज्झेणं' जेणेव कुरुजणवए जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवा- गच्छइ, उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता चित्तफलं सज्जेइ, सज्जेत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्ठाणुसारेण रूवं निव्वत्तेइ, निव्वत्तेत्ता कक्खंतरंसि छुव्वइ, छुव्वित्ता महत्थं जाव'° पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता 'हत्थिणा- उरस्स नयरस्स'° मज्झमज्झेणं'° जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ,

१. पू०—ना० १।८।१०६ ।

२. सं० पा०—अपत्थिय जाव परिवज्जिए ।

३. सं० पा०—देवयभूयाए जाव निव्वत्तिए ।

४. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव वद्धा- वेत्ता ।

५. चित्तकार (ख, ग) ।

६. सं० पा०—दुपयस्स वा जाव निव्वत्तेति ।

७. निव्वत्तएह (ख) ।

८. विदेहं जणवयं (क, ख, ग, घ); १।८।१०७

सूत्रानुसारेणासौ पाठः स्वीकृतोस्ति । अत्र

क्रियापदमन्तरा द्वितीयाः विभक्तिर्नैव संगच्छते ।

९. 'निक्खमइ, निक्खमित्ता' इत्यध्याहार्यम् ।

१०. ना० १।८।८१ ।

११. हत्थिणाउरं नयरं (क, ख, ग, घ) ।

१२. रायपसेणइय ६८३ सूत्रे अस्यानन्तरं 'अणुपविसइ' इति क्रियापदं लभ्यते ।

उवागच्छिता करयल'●परिगगहियं सिरसावत्तं मत्थए अञ्जलिं कट्ठु जएणं विजएणं वद्धावेइ° वद्धावेत्ता पाहुं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं सामी ! मिहिलाओ रायहाणीओ कुंभगस्स रण्णो पुत्तेण पभावईए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाने इहं हव्वमागए । तं इच्छामि णं सामी ! तुब्भं बाहुच्छाया-परिगगहिए' ●निव्वभए निरुव्विग्गे सुहं-सुहेणं° परिवसित्तए ॥

१३२. तए णं से अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं' एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! मल्लदिन्नेणं निव्विसए आणत्ते ?
१३३. तए णं से चित्तगरे अदीणसत्तुं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्तगर-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभं हाव-भाव-विलास-विब्वोयकलिएहिं रुवेहिं चित्तेह तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव' मम संडासगं छिदावेइ, छिदावेत्ता निव्विसयं आणवेइ । एवं खलु अहं सामी ! मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते ॥
१३४. तए णं अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं एवं वयासी—से केरिसए णं देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ॥
१३५. तए णं से चित्तगरे कक्खंतराओ चित्तफलगं नीणेइ, नीणेत्ता अदीणसत्तुस्स उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एस णं सामी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगार-भाव-पडोयारे निव्वत्तिए । नो खलु सक्का' केणइ देवेण वा' ●दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा° मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ॥
१३६. तए णं से अदीणसत्तू पडिरूव-जणिय-हासे द्वयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी'—●जाव' मल्लिं विदेहरायवरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ॥
१३७. तए णं से दूए अदीणसत्तुणा एवं वुत्ते समाने हट्ठुट्ठे जाव' जेणेव मिहिला नयरी तेणेव° पहारेत्थ गमणाए ॥

१. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता ।

२. सं० पा०—परिगगहिए जाव परिवसित्तए ।

३. चित्तगरदारयं (ख, ग, घ) ।

४. ना० १।८।११७-१३० ।

५. प्राकृतव्याकरणानुसारेण 'सक्क' इति पदं युज्यते, किन्तु आदर्शेषु 'सक्का' इति पदमेव

लिखितमस्ति । एतद् लिपिदोषेण जात-मथवा प्राकृतशैल्या प्रयुक्तम् ?

६. सं० पा०—देवेण वा जाव मल्लीए ।

७. सं० पा०—तहेव जाव पहारेत्थ ।

८. ना० १।८।६२ ।

९. ना० १।८।६३ ।

जियसत्तु-राय-पदं

१३८. तेणं कालेणं तेणं समएणं पंचाले जणवए । कंपिल्लपुरे नयरे । जियसत्तू नामं राया पंचालाहिवई । तस्स णं जियसत्तुस्स धारिणीपामोक्खं देवोसहस्सं ओरोहे^१ होत्था ॥
१३९. तत्थ णं मिहिलाए चोक्खा^२ नामं परिव्वाइया—रिउब्बेय^३—*यज्जुब्बेद-सामवेद-अहव्वणवेद-इतिहासपंचमाणं निघट्ठुछट्ठाणं संगोवंगणं सरहस्साणं चउण्हं वेदाणं सारगा जाव^४ बंभण्णएसु य सत्थेसु^५ सुपरिणिट्ठिया यावि होत्था ॥
१४०. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूणं राईसर जाव^६ सत्थवाहपभिईणं पुरओ दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरइ ॥
१४१. तए णं सा चोक्खा अणया कयाइं तिदंडं च कुंडियं च जाव^७ धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हत्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिक्खत्ता पविरल-परिव्वाइया-सद्धिं संपरिवुडा मिहिलं रायहाणिं मज्झमंज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे जेणेव कन्नंतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता उदयपरिफोसियाए^८ 'दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए'^९ निसीयइ, निसीइत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणधम्मं च^{१०} *सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी^{११} विहरइ ॥
१४२. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी—तुब्भेणं^{१२} चोक्खे ! किंमूलए धम्मे पण्णत्ते ?
१४३. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लि विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी—अम्हं णं देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते । जं णं अम्हं किंचि असुई भवइ तं णं उदएण य मट्ठियाए^{१३} *य सुई भवइ । एवं खलु अम्हे जलाभिसेय-पूयप्पाणो^{१४} अविग्घेणं सगं गच्छामो ॥
१४४. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी—चोक्खे^{१५} ! से जहानामए केइ पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहारेणं चेव धोवेज्जा, अत्थि णं

१. ओरोहो (क); उवरोहे (ख) ।

२. चोक्खी (ख) ।

३. सं० पा०—रिउब्बेय जाव परिणिट्ठिया ।

४. ओ० सू० ६७ ।

५. ना० १।५।६ ।

६. ओ० सू० ११७ ।

७. *फासियाए (क, ग) ।

८. *पच्चत्थुयाते भिसियाते (ख, घ) ।

९. सं० पा०—दाणधम्मं च जाव विहरइ ।

१०. तुब्भेणं (ख, घ) अशुद्धं प्रतिभाति ।

११. सं० पा०—मट्ठियाए जाव अविग्घेणं ।

१।५।६० सूत्रे एतत् वर्णनं किञ्चित् परिवर्तनेन लभ्यते ।

१२. चोक्खा (ख, घ) ।

चोक्खे ! तस्स रहिरकयस्स वत्थस्स रहिरेणं धोव्वमाणस्स काइ सोही ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।

एवामेव चोक्खे ! तुब्भणं पाणाइवाएणं जाव' मिच्छादसणसल्लेणं नत्थि
काइ सोही, जहा तस्स रहिरकयस्स वत्थस्स रहिरेणं चेव धोव्वमाणस्स ॥

१४५. तए णं सा चोक्खा' परिव्वाइया मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए एवं वुत्ता समाणी
संकिया कंखिया वित्तिगिंछिया भेयसमावण्णा जाया यावि' होत्था, मल्लीए
विदेहरायवरकन्नाए नो संचाएइ किंचिवि पामोक्खमाइक्खत्ताए', तुसिणीया
संचिट्ठइ ॥

१४६. तए णं तं चोक्खं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए बहूओ दासचेडीओ हीलेंति
निंदंति खिसंति गरिहंति, अप्पेगइयाओ हेरुयालेंति अप्पेगइयाओ मुहुमक्कडि-
याओ' करेंति अप्पेगइयाओ वग्घाडियाओ' करेंति अप्पेगइयाओ तज्जेमाणीओ
तालेमाणीओ निच्छुहंति ॥

१४७. तए णं सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडियाहिं' °हीलिज्जमाणी
निदिज्जमाणी खिसिज्जमाणी ° गरहिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव' मिसिमिसेमाणी
मल्लीए विदेहरायवरकन्नयाए पओसमावज्जइ, भिसियं गेण्हइ, गेण्हित्ता
कन्नंतंउराओ पडिणिक्खमई, पडिणिक्खमित्ता मिहिलाओ निग्गच्छइ, निग्ग-
च्छित्ता, परिव्वाइया-संपरिवुडा जेणेव पंचालजणवए जेणेव कंपिल्लपुरे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूणं राईसर' ° जाव' सत्थवाहपभिईणं पुरओ
दाणघम्मं च सोयघम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पणवेमाणी परूवेमाणी
उवदंसेमाणी ° विहरइ ॥

१४८. तए णं से जियसत्तू अण्णया कयाइ अंतो अंतोउर-परियाल-सद्धि संपरिवुडे'
°सीहासणवरगए यावि ° विहरइ ॥

१४९. तए णं सा चोक्खा, परिव्वाइया-संपरिवुडा जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो भवणे
जेणेव जियसत्तू राया तेणेव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जियसत्तुं जएणं विजएणं
वद्धावेइ ॥

१५०. तए णं से जियसत्तू चोक्खं परिव्वाइयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता सीहासणाओ

१. एवं चोक्खी (क, ग); एवं चोक्खा (ख) ।

बग्घाडाओ (घ) ।

२. ओ० सू० १६३ ।

८. सं० पा०—दासचेडियाहिं जाव गरहिज्ज-
माणी ।

३. चोक्खी (क, ख, ग, घ) ।

४. वि (ग) ।

९. ना० १।८।१०६ ।

५. °माति° (ग, घ) ।

१०. सं० पा०—राईसर जाव विहरइ ।

६. मुहुमक्कडियं (क) ।

११. ना० १।५।६ ।

७. बग्घाडिया (क); बग्घाडिओ (ख, ग); १२. सं० पा०—संपरिवुडे एवं जाव विहरइ ।

अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता चोक्खं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता आस-
णेणं उवनिमंतेइ ॥

१५१. तए णं सा चोक्खा उदगपरिफोसियाए' •दब्भोवरि पच्चत्थुयाए • भिसियाए
निविसइ', निविसित्ता जियसत्तुं रायं रज्जे य' •रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य
बले य वाहणे य पुरे य • अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ ॥
१५२. तए णं सा चोक्खा जियसत्तुस्स रण्णो दाणधम्मं च' •सोयधम्मं च तित्थाभि-
सेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी • विहरइ ॥
१५३. तए णं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जायविम्हए चोक्खं एवं वयासी—तुमं
णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव' सण्णिवेसंसि आहिडसि, बहूण य
राईसर'—सत्थवाहप्पभिईणं गिहाइं अणुप्पविससि, तं अत्थियाइं ते कस्सइ रण्णो
वा' •ईसरस्स वा कहिं चि • एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं इमे मम
ओरोहे ?
१५४. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया 'जियसत्तुणा एवं वुत्ता समाणी ईंसि विहसियं'
करेइ, करेत्ता एवं वयासी—सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया ! तस्स अगडददुरेस्स ।
के णं देवाणुप्पिए ! से अगडददुरे ?
जियसत्तू ! से जहानामए अगडददुरे सिया । सेणं तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्णं
अगडं वा तलागं वा दहं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे मण्णइ—अयं चेव
अगडे वा' •तलागे वा दहे वा सरे वा • सागरे वा ।
तए णं तं कूवं अण्णे सामुद्दए ददुरे हव्वमागए ।
तए णं से कूवददुरे तं सामुद्दयं' ददुरं एवं वयासी—से के' तुमं देवाणुप्पिया !
कत्तो वा इह हव्वमागए ?
तए णं से सामुद्दए ददुरे तं कूवददुरं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया !
अहं सामुद्दए ददुरे ।

१. सं० पा०—उदगपरिफोसियाए जाव भिसि-
याए ।

२. निविसइ (क, ख, ग, घ) ।

३. सं० पा०—रज्जे य जाव अंतेउरे ।

४. सं० पा०—दाणधम्मं च जाव विहरइ ।

५. ना० १।१।११८ ।

६. पू०—ना० १।५।६ ।

७. सं० पा०—रण्णो वा जाव एरिसए ।

८. ओरोवे (ख) ।

९. जियसत्तु एवं व ईंसि अवहसियं (क, ख, १२. केसणं (घ) ।

ग); जियसत्तुं एवं वयासी ईंसि अवहसिय
(घ); आदर्शेषु 'एवं व' इति संक्षिप्तरूपं
लिखितं लभ्यते स्तबकादर्शे तत्र 'एवं
वयासी' इति जातम् । स्तबककारेण 'इम
कहइ' इत्यर्थोपि कृतः । अस्य मौलिकं रूपं
अस्माभिः प्रस्तुतसूत्रस्य षोडशाध्यायने
लब्धम् ।

१०. सं० पा०—अगडे वा जाव सागरे ।

११. समुद्दयं (घ) ।

१२. केसणं (घ) ।

तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुदयं दद्दुरं एवं वयासी—केमहालए णं देवाणु-
प्पिया ! से समुद्दे ?

तए णं से सामुद्दे दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी—महालए णं देवाणुप्पिया !
समुद्दे ।

तए णं से कूवदद्दुरे पाएणं लीहं कड्ढेइ, कड्ढेत्ता एवं वयासी—एमहालए
णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे । महालए णं से समुद्दे ।

तए णं से कूवदद्दुरे पुरत्थिमिल्लाम्भो तीराम्भो उप्पिडित्ता णं 'पच्चत्थिमिल्लं
तीरं' गच्छइ, गच्छित्ता एवं वयासी—एमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

एवामेव तुमं पि जियसत्तु अण्णेसिं वहुणं राईसर जाव' सत्थवाहप्पभिईणं भज्जं
वा भगिणिं वा धूयं वा सुहं वा अपासमाणे जाणसिं जारिसाए मम चेव णं
ओरोहे, तारिसाए नो अण्णेसिं ।

तं एवं खलु जियसत्तु ! मिहिलाए नयरीए कुंभगस्स धूया पभावईए अत्तया
मल्ली नामं विदेहरायवरकन्ना रूवेण य जोव्वणेण यं •लाव्वणेण य उक्किट्ठा
उक्किट्ठसरीरा, ° नो खलु अण्णा काइ [तारिसिया ?] देवकन्ना' •वा असुर-
कन्ना वा नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा रायकन्ना वा ° जारि-
सिया मल्ली विदेहरायवरकन्ना [तीसे ?] छिन्नस्स वि पायंगुट्ठगस्स इमे
तवोरोहे सयसहस्सइमं पि कलं न अग्घइ त्ति कट्ठु जामेव दिसं पाउड्ढूया
तामेव दिसं पडिगया ॥

१५५. तए णं से जियसत्तु परिव्वाइया-जणिय-हामे दूयं सद्दावेइ', •सद्दावेत्ता
एवं वयासी—जाव' मल्लि विदेहरायवरकन्नां मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि
य णं सा सयं रज्जसुंका ॥

१५६. तए णं से दूए जियसत्तुणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठुट्ठे जाव' जेणेव मिहिला नयरी
तेणेव ° पहारेत्थ गमणाए ॥

दूयाणं संवेस-निवेदन-पदं

१५७. तए णं तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जेणेव मिहिला तेणेव
पहारेत्थ गमणाए ॥

१. × (क, ख, ग, घ) ।

२. तहेव (क, ख, ग, घ) ।

३. ना० १।५।६ ।

४. जाणसि (घ) ।

५. सं० पा०—जोव्वणेण य जाव नो खलु ।

६. सं० पा०—देवकन्ना... ।

७. सं० पा०—सद्दावेइ जाव पहारेत्थ ।

८. ना० १।८।६२ ।

९. ना० १।८।६३ ।

१५८. तए णं छप्पि दूयगा जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाणंसि पत्तेयं-पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेति, करेत्ता मिहिलं रायहाणि अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पत्तेयं करयल^१परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु^२ साणं-साणं राईणं वयणाइं निवेदेति^३ ॥

कुंभएण दूयाणं असक्कार-पदं

१५९. तए णं से कुंभए तेसिं दूयाणं 'अंतियं एयमट्ठं' सोच्चा आसुरत्ते^४ रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे^५ तिवलियं भिज्जिं निडाले साहट्ठु एवं वयासी — न देमि णं अहं तुब्भं मल्लिं विदेहरायवरकन्नं ति कट्ठु ते छप्पि दूए असक्कारिय असम्माणिय अवदारेणं^६ निच्छुभावेइ ॥

१६०. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रण्णा 'असक्कारिय असम्माणिय'^७ अवदारेणं^८ निच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा-सगा जणवया जेणेव 'सयाइ-सयाइ नगराइ'^९ जेणेव सया-सया रायाणो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल^{१०}परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु^{११} एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अम्हे जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव मिहिला तेणेव उवागया जाव^{१२} अवदारेणं निच्छुभावेइ । 'तं न देइ णं सामी ! कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं' साणं-साणं राईणं एयमट्ठं निवेदेति ॥

जियसत्तुपामोक्खाणं कुंभएणं जुउभ-पदं

१६१. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरत्ता रुट्ठा कुविया चंडिकिया मिसिमिसेमाणा अण्णमण्णस्स दूय-संपेसणं करेति, करेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव मिहिला तेणेव उवागया जाव^{१३} अवदारेणं निच्छूढा । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स जत्तं^{१४} गेण्हित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं

१. सं० पा०—करयल^१ ।

२. निवेसंति (क, ग, घ) ।

३. × (ख, ग) ।

४. सं० पा०—आसुरत्ते जाव तिवलियं ।

५. अवदारेणं (क, ख, घ) ।

६. असक्कारिय-असम्माणिया (ख, ग) ।

७. अवदारेणं (क) ।

८. सयाति-सयाति नगराति (ख) ।

९. सं० पा०—करयल^९ ।

१०. ना० १।८।१५८, १५९ ।

११. ना० १।८।१५८, १५९ ।

१२. जुत्तं (ख, ग) ।

पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता ण्हाया सण्णद्धा' हत्थिखंघवरगया सकोरेंटमल्लदामेणं' छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहि वीइज्जमाणा° महया ह्य-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडा सव्विड्डीए जाव' दुंदुभि-नाइयरवेणं 'सएहिंतो-सएहिंतो नगरेहिंतो निग्गच्छंति', निग्गच्छित्ता एगयमो मिलायंति, जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

१६२. तए णं कुंभए राया इमीसे कहाए लद्धे समाने वलवाउयं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव ह्य'-●गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणि° सेणं सन्नाहेहि', सन्नाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि सेवि जाव पच्चप्पिणति' ।।
१६३. तए णं कुंभए राया ण्हाए सण्णद्धे' हत्थिखंघवरगए' ●सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं° सेयवरचामराहि वीइज्जमाणे महया ह्य-गय-रह-पवर-जोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे सव्विड्डीए जाव' दुंदुभि-नाइयरवेणं मिहिलं मज्झमज्झेणं निज्जाइ', निज्जावेत्ता विदेहजणवयं मज्झ-मज्झेणं जेणेव देसगं' तेणेव खंघावारनिवेसं करेइ, करेत्ता जियसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ ।।
१६४. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा' छप्पि रायाणो जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभएणं रण्णा सद्धि संपलग्गा' यावि होत्था ।।
१६५. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभयं रायं ह्य-महिय-पवरवीर-घाइय-'विवडियचिध-धय'°-पडागं किच्छोवगयपाणं' दिसोदिसि पडिसेहेति ।।

१. पू०—ना० १।२।३२ ।

चामराहि ।

२. सं० पा०—सकोरेंटमल्लदाम जाव सेयवर-चामराहि महया ।

१०. ना० १।१।३३ ।

११. निग्गच्छई (घ) ।

३. ना० १।१।३३ ।

१२. देसगंते (क, ख, घ); देसगंते (क्व); देसमग्गे (क्व) ।

४. सएहिंतो जाव निग्गच्छंति (क); सएहि २ नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति (ख, ग, घ) ।

१३. जियसत्तू° (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—ह्य जाव सेणं ।

१४. योद्धुमिति शेषः (वृ) ।

६. सन्नाहेइ (क, ख, ग, घ) । अदशेषु बहुवचनान्तः प्रयोगो दृश्यते, किन्तु एकवचन-कर्तृके पाठे नासौ उपयुक्तोस्ति । ओवाइय-५६ सूत्रेपि एकवचनान्तं क्रियापदं लभ्यते ।

१५. निवडियधयच्छत्तिचिध (क) ।

१६. किच्छपाणोवगयं (क); किच्छपाणोवगयं (ख, ग, घ) । प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ नायं पाठो व्याख्यातोस्ति । १।१६।२५२ सूत्रस्य वृत्तावस्य व्याख्या दृश्यते । तत्रत्यः पाठो व्याख्या च सम्यक् प्रतिभाति, तेन तदनु-सारेणात्र पाठः स्वीकृतः ।

७. पच्चप्पिणंति (क, ख, ग, घ) ।

८. पू०—ना० १।२।३२ ।

९. सं० पा०—हत्थिखंघवरगए जाव सेयवर-

१६६. तए णं से कुंभए जियसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं हय-मंहिय-^१० पवरवीर-
घाइय-विवडियच्चिध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं० पडिसेहिए समाणे
अत्थामे अबले अवीरिए^२० अपुरिसक्कारपरक्कमे० अघारणिज्जमिति कट्टु
सिग्धं तुरियं^३० चवलं चंडं जइणं० वेइयं जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता मिहिलं अणुपविसइ,^४ अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइं पिहेइ,
पिहेत्ता रोहसज्जे चिट्ठइ ॥
१६७. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति,
उवागच्छित्ता मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं निरुच्चारं सव्वओ समंता
ओरुंभित्ता णं चिट्ठंति ॥
१६८. तए णं से कुंभए राया मिहिलं रायहाणिं ओरुद्धं जाणित्ता अंभितरियाए
उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं
अंतराणि य छिदाणि य 'विवराणि य'^५ मम्माणि^६ य अलभमाणे बहूहिं आएहि
य उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मयाहि य पारिणामियाहि
य—बुद्धोहिं परिणामेमाणे-परिणामेमाणे किंचि आयं वा उवायं वा अलभमाणे
ओहयमणसंकप्पे^७० करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए० भियायइ ॥

मल्लीए चिताहेड-पुच्छा-पवं

१६९. इमं च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया^८० कयवलिकम्मा कयकोउय-
मंगलपायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया० बहूहिं खुज्जाहिं^९ संपरिवुडा जेणेव
कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पायग्गहणं करेइ ॥
१७०. तए णं कुंभए मल्लि विदेहरायवरकन्नं नो आढाइ नो परियाणाइ^{१०} तुसिणीए
संचिट्ठइ ॥
१७१. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभगं एवं वयासी—तुब्भे णं ताओ !
अण्णया ममं एज्जमाणिं^{११}० पासित्ता आढाइ परियाणाह अंके निवेसेह । इयाणिं
ताओ ! तुब्भे ममं नो आढाइ नो परियाणाह नो अंके० निवेसेह । किण्णं तुब्भं
अज्ज ओहय^{१२}० मणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया० भियायह ?

१. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहिए ।

२. सं० पा०—अवीरिए जाव अघारणिज्ज० ।

३. सं० पा०—तुरियं जाव वेइयं ।

४. ०पवेसेइ (ख, ग, घ) ।

५. विरहाणि य (ग); विरहाणि य विवराणि (घ) ।

६. सम्माणि (क, ख, ग) अशुद्धं प्रतिभाति ।

७. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पे जाव भियायइ ।

८. सं० पा०—ण्हाया जाव बहूहिं ।

९. पू०—ओ० सू० ७० ।

१०. द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम् ।

११. एज्जमाणं (ख, ग, घ) । सं० पा०—
एज्जमाणि जाव निवेसेह ।

१२. सं० पा०—ओहय जाव भियायह ।

कुंभगस्स चिताहेउ-कहण-पदं

१७२. तए णं कुंभए मल्लि विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! तव कज्जे जियसत्तुपामोक्खेहि छहि राईहि दूया संपेसिया । ते णं मए असक्कारिय' •असम्माणिय अवहारेणं° निच्छूढा । तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिलं रायहाणि निस्संचारं' •निरुच्चारं सव्वओ समंता ओरुंभित्ता णं° चिट्ठंति । तए णं अहं पुत्ता तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि [य छिट्ठाणि य विवराणि य मम्माणि य ?] अलभमाणे जाव' अट्टज्झाणोवगाए भियामि ॥

मल्लीए उवायनिरुवण-पदं

१७३. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ता कुंभगं रायं एवं वयासी—माणं तुब्भे ताओ ! ओहयमणसंकप्पा' •करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया° भियायह । तुब्भे णं ताओ ! तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं पत्तेयं-पत्तेयं रहस्सिए' दूयसंपेसे करेह, एगमेगं एवं वयह—तव देमि मल्लि विदेहरायवरकन्नं ति कट्ठु संभकालसमयंसि' पविरल-मणूसंसि निसंत-पडिनिसंतंसि पत्तेयं-पत्तेयं मिहिलं रायहाणि अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसेत्ता गवभघरएसु अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसेत्ता मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइं पिहेह, पिहेत्ता रोहासज्जा' चिट्ठह ॥

१७४. तए णं कुंभए' •तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं पत्तेयं-पत्तेयं रहस्सिए' दूयसंपेसे करेइ जाव'° रोहासज्जे चिट्ठइ ॥

मल्लीए जियसत्तुपामोक्खाणं संबोह-पदं

१७५. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव'° उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जालंतरोहिं कणगमइं मत्थयछिट्ठुं पउमुप्पल-पिहाणं पडिमं पासंति—एस णं मल्ली विदेहराय-वरकन्नत्ति कट्ठु मल्लीए रायवरकन्नाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा गडिया अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठोए पेहमाणा-पेहमाणा चिट्ठंति ॥

१. सं० पा०—असक्कारिया जाव निच्छूढा ।

२. सं० पा०—निस्संचारं जाव चिट्ठंति ।

३. ना० १।८।१६८ ।

४. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव भिया-यह ।

५. रहस्सियं (क, ख, ग, घ) ।

६. संभा° (क, ग) ।

७. °सज्जे (क, ख, ग, घ); अत्र कर्तृपदं क्रियापदं च बहुवचनान्तमस्ति अतः अनेन कर्तृपदविशेषणेन बहुवचनान्तेन भाष्यम् ।

८. सं० पा०—कुंभए एवं तं चेव जाव पवेसेइ रोहासज्जे ।

९. ना० १।८।१७३ ।

१०. ना० १।१।२४ ।

१७६. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया' •कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल °-
पायच्छिता सव्वालंकारविभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव' परिकिखत्ता जेणेव
जालघरए जेणेव कणगमई मत्थयच्छिड्डा पउमुप्पल-पिहाणा पडिमा तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छिता तीसे कणगमईए मत्थयच्छिड्डाए पउमुप्पल-पिहाणाए
पडिमाए मत्थयाओ तं पउमुप्पल-पिहाणं' अवणेइ । तओ' णं गंधे निद्धावेइ', से
जहाणामए—अहिमडे इ वा जाव' एत्तो असुभतराए' चेव ॥
१७७. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया
समाणा सएहि-सएहि उत्तरिज्जेहिं आसाइ' पिहेति, पिहेत्ता परम्मुहा चिट्ठंति ॥
१७८. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खे एवं वयासी—किण्णं
तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएहि-सएहि उत्तरिज्जेहिं' •आसाइं पिहेत्ता° परम्मुहा
चिट्ठह ?
१७९. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा मल्लि विदेहरायवरकन्नं एवं वयंति ... एवं खलु
देवाणुप्पिए ! अम्हे इमेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहि-सएहि
उत्तरिज्जेहिं' •आसाइं पिहेत्ता° चिट्ठामो ॥
१८०. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खे एवं वयासी—जइ ताव
देवाणुप्पिया ! इमीसे कणग' •मईए मत्थयच्छिड्डाए पउमुप्पल-पिहाणाए°
पडिमाए कल्लाकल्लि ताओ मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ एगमेगे
पिंडे पक्खिप्पमाणे-पक्खिप्पमाणे इमेयारूवे असुभे पोगगल'-परिणामे, इमस्स'
पुण ओरालियसरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स
सोणियपूयासवस्स दुरुय'-ऊसास-नीसासस्स 'दुरुय-मुत्त-पूइय-पुरीस-पुण्णस्स' ॥

१. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छिता ।

२. ओ० सू० ७० ।

३. पउमं (क, ख, ग, घ) ।

४. ततेणं (ख, घ) ।

५. णिद्धाइ (क); णिद्धवेइ (ख) ।

६. ना० १।८।४२ ।

७. प्रस्तुताध्ययनस्य ४२ सूत्रे 'एत्तो अणिट्ठतराए
चेव अकंततराए चेव' इत्यादि पदानि
दृश्यन्ते । तत्र 'असुभतराए चेव' इति पदं
नास्ति । अत्र संभवतः 'अणिट्ठतराए'
इत्यादिपदानां सारसंग्रहरूपेण 'असुभतराए'
इति पदं प्रयुक्तमस्ति ।

८. आसाति (ख, ग, घ) ।

९. पिहिति (क, ग) ।

१०. सं० पा०—उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा ।

११. सं० पा०—उत्तरिज्जेहिं जाव चिट्ठामो ।

१२. सं० पा०—कणग जाव पडिमाए ।

१३. पोगगले (क, ख, घ) ।

१४. अतः पूर्वं वाचनान्तरे 'किमंग पुण' इति
लभ्यते । (वृ) ।

१५. दुरुय (ब) । मुखमुखोच्चारणार्थं 'दुरुव'
शब्दस्य 'दुरुय' मितिरूपं कृतं संभाव्यते
अथवा दुरुपार्थवाची देशी शब्दः स्यात् ?
वृत्ती 'दुरुय' शब्दस्य 'दुरुप' इत्यर्थोस्ति
कृतः ।

१६. दुरुय-मुत्त-पुरिस-पूय-बहुपडिपुण्ण(१।१।१०६)।

‘सडण-पडण-छेयण-विद्धंसण-धम्मस्स’ केरिसए य परिणामे भविस्सइ ? तं माणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्झह मुज्झह अज्झोववज्जह । एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवरविदेहवासे सलिलावतिसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बल-पामोक्खा सत्तवि य वालवयंसया रायाणो होत्था —सहजाया जाव पव्वइया । तए णं अहं देवाणुप्पिया ! इमेणं कारणेणं इत्थीनामगोयं कम्मं निव्वत्तेमि — जइ णं तुब्भे चउत्थं उवसंपज्जित्ता णं विहरह, तए णं अहं छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि सेसं तहेव सव्वं । तए णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा । तत्थ णं तुब्भं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई । तए णं तुब्भे ताओ देवलोगाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे जाव साइं-साइं रज्जाइं उवसंपज्जित्ता णं विहरह । तए णं अहं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया ।

गाहा—

किथ तयं पम्हुट्ठं, जंथ तया भो ! जयंतपवरम्मि ।

वुत्था समय-णिबद्धा, देवा तं संभरह जाइ ॥१॥

जियसत्तुपामोक्खाणं जाइसरण-पदं

१८१. तए णं तेसि जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्मा सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावर^{१०}णिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणणं सण्णिपुव्वे० जाइसरणे समुप्पण्णे, एयमट्ठं सम्मं अभिसमागच्छंति ॥

मल्लीए पव्वज्जा-पदं

१८२. तए णं मल्ली अरहा^{११} जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पण्णजाइसरणे जाणित्ता गव्वघराणं दाराइं विहाडेइ ॥

१. सडण जाव धम्मस्स (ग) ।

२. इमे (ग) ।

३. सलिलावतिम्मि (ख) ।

४. सत्तपि (क, ख, घ) ।

५. ना० १।८।१०-१६ ।

६. चोत्थं (ख, ग, घ) ।

७. ना० १।८।१८-२६ ।

८. ना० १।८।२७ ।

९. ना० १।८।२८-३४ ।

१०. पम्हुट्ठा (ख, ग) ।

११. णिबद्धं (वृपा) ।

१२. सं० पा०—तयावर ईहापूह जाव सण्णि-जाइसरणे ।

१३. जाई० (घ) ।

१४. अभिसमण्णागच्छंति (ग) ।

१५. अरिहा (क) ।

१८३. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति ॥
१८४. तए णं महब्बलपामोक्खा सत्तवि य' बालवयंसा एगयओ अभिसमण्णागया वि होत्था ॥
१८५. तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव' पव्वयामि । तं तुब्भे णं किं करेह ? किं ववसह ? 'किं वा भे हियइच्छिए सामत्थे' ?
१८६. तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लि अरहं एवं वयासी—जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव' पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलंबणे वा आहारे वा पडिबंधे वा ? जह चेव णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे अम्हं इओ तच्चे भवग्गहणे बहूसु कज्जेसु' य मेढी पमाणं जाव' घम्मधुरा होत्था, तह' चेव णं देवाणुप्पिया ! इण्हि पि जाव' घम्मधुरा भविस्सह । अमहे वि णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा' भीया जम्मणमरणाणं देवाणुप्पिया—'सद्धि मुंडा भवित्ता' °णं अगाराओ अणगारियं ° पव्वयामो ॥
१८७. तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो एवं वयासी—जइ णं तुब्भे संसारभउव्विग्गा जाव' मए सद्धि पव्वयह, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएहि-सएहि रज्जेहि जेट्ठपुत्ते" ठावेह, ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ" दुरुहह", मम अंतियं पाउब्भवह ॥
१८८. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठं पडिसुणेंति ॥
१८९. तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो गहाय जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेइ ॥
१९०. तए णं कुंभए ते जियसत्तुपामोक्खे विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-

१. पिय (ख) ।

२. ना० १।५।८६ ।

३. के भे हियसामत्थे (क, ख, ग); १।५।८६
सूत्रात् किञ्चित् पाठः स्वीकृतः ।

४. ना० १।५।८६ ।

५. पू०—ना० १।५।९० ।

६. ना० १।५।९० ।

७. तहा (ख, ग, घ) ।

८. ना० १।५।९० ।

९. भउव्विग्गा जाव (क, ख, ग, घ) । अशुद्धं प्रतिभाति ।

१०. देवाणुप्पियाणं (क्व०) ।

११. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामो ।

१२. ना० १।५।८६ ।

१३. °पुत्ते रज्जे (ख, ग, घ) ।

१४. सीविया (क) ।

१५. दुरुद्धा समाणा (क); अस्याध्ययनस्य १४
सूत्रेपि 'दुरुद्धा समाणा' इति पाठोस्ति ।

वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ', सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडि-
विसज्जेइ ॥

१६१. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभएणं रण्णा विसज्जिया समाणा
जेणेव साइं-साइं रज्जाइं जेणेव [साइं-साइं ?] नगराइं तेणेव उवागच्छंति,
उवागच्छित्ता 'सगाइं-सगाइं' रज्जाइं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ॥

१६२. तए णं मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ' ॥

१६३. तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्कस्स आसणं चलइ ॥

१६४. तए णं से' सक्के देविदे देवराया आसणं चलयं पासइ, पासित्ता ओहि
पउंजइ, पउंजित्ता मल्लि अरहं ओहिणा आभोएइ । इमेयारूवे अज्झत्थिए
चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु जंबुदीवे दीवे भारहे
वासे मिहिलाए नयरीए कुंभगस्स रण्णो [धूया पभावईए देवीए अत्तया ?]
मल्ली अरहा निक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ । तं जीयमेयं तीय-पच्चुप्पण-
मणागयाणं सक्काणं अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणानं इमेयारूवं अत्थ-
संपयाणं दलइत्तए, [तं जहा—

संगहणी-गाहा—

तिण्णेव य कोडिसया, अट्टासीइं च हुंति कोडीओ ।

असिइं च सयसहस्सा', इंदा दलयंति अरहाणं ॥१॥]

एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता वेसमणं देवं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु
देवाणुप्पिया ! जंबुदीवे दीवे भारहे वासे' *मिहिलाए रायहाणीए कुंभगस्स
रण्णो धूया पभावईए देवीए अत्तया मल्ली अरहा निक्खमिस्सामि त्ति मणं
पहारेइ जाव इंदा दलयंति अरहाणं । ° तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जंबुदीवं
दीवं भारहं वासं मिहिलं रायहाणिं कुंभगस्स रण्णो भवणंसि इमेयारूवं अत्थ-
संपयाणं साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥

१६५. तए णं से वेसमणे देवे सक्केणं देविदेणं देवरण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्टुट्टे करयल'
°परिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए
विणएणं वयणं ° पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जंभए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं
वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जंबुदीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं

१. सम्माणेइं जाव (क, ख, ग) ।

२. सयाइं २ (ख) ।

३. संपहारेइ (क); संपाहारेति (ख); पाहारेइ (ग) ।

४. × (ख) ।

५. सयसहस्सं (ग, घ) ।

६. सं० पा०—वासं जाव असीइं च सयसहस्सा दलइत्तए । अत्र संक्षेपीकरणे किञ्चित् विपर्ययो जातः इति संभाव्यते ।

७. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेइ ।

रायहाणि कुंभगस्स रण्णो भवणंसि तिण्णि कोडिसया अट्टासीइं च कोडीओ
असीइं सयसहस्साइं—इमेयारूवं अत्थ-संपयाणं साहरह, साहरित्ता मम
एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

१६६. तए णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा जाव' पडिसुणेत्ता
उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं
समोहण्णंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति, जाव' उत्तरवेउ-
व्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव' देवगईए वीईवय-
माणा-वीईवयमाणा जेणेव जंबुद्धीवे दीवे भारहे वासे जेणेव मिहिला' रायहाणी
जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभगस्स रण्णो
भवणंसि तिण्णि कोडिसया जाव' साहरंति, साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे
तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल'० परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं
मत्थए अंजलि कट्ठु तमाणत्तियं० पच्चप्पिणंति ॥
१६७. तए णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव'० तमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥
१६८. तए णं मल्ली अरहा कल्लाकल्लि जाव मागहओ पायरासो त्ति बहूणं सणाहाण
य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य करोडियाण' य कप्पडियाण य 'एगमेगं
हिरण्णकोडि अट्ठ य अणूणाइं सयसहस्साइं—इमेयारूवं अत्थ-संपयाणं'
दलयइ ॥
१६९. तए णं कुंभए राया मिहिलाए रायहाणीए तत्थ-तत्थ तहि-तहिं देसे-देसे बहूओ
महाणससालाओ करेइ । तत्थ णं बहूवे इमणुया दिण्णभइ-भत्त-वेयणा विउलं
असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेंति । जे जहा आगच्छंति, तं जहा - पंथिया
वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासंडत्था वा गिहत्था वा, तस्स
य तहा आसत्थस्स वोसत्थस्स सुहासणवरगयस्स तं विउलं असण-पाण-खाइम-
साइमं परिभाएमाणा परिवेसेमाणा' विहरंति ॥
२००. तए णं मिहिलाए नयरीए सिंघाडग'-० तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-
पहेसु' बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स
रण्णो भवणंसि सब्बकामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं

१. ना० १।८।१६५ ।

२, ३. राय० सू० १० ।

४. ना० १।८।१६५ ।

५. सं० पा०—करयल जाव पच्चप्पिणंति ।

६. ना० १।८।१६६ ।

७. काडडियाणं (वृषा) ।

८. एगमेगं हत्थामासं ति वाचनान्तरे दृश्यते(वृ)।

९. परिवेसमाणा (क, ख) ।

१०. सं० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो ।

बहूणं समणाण य' •माहणाण य सणाहाण य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण
य करोडियाण य कप्पडियाण य परिभाइज्जइ° परिवेसिज्जइ' ।

संगहणी-गाहा—

वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छियं दिज्जए बहुविहीयं ।

सुर-असुर देव-दाणव-नरिद-महियाण निक्खमणे ॥१॥

२०१. तए णं मल्ली अरहा संबच्छरेणं तिण्णि कोडिसया अट्टासीइं च' कोडीओ
असीइं सयसहस्साइं—इमेयारूवं अत्थ-संपयाणं दलइत्ता निक्खमामि त्ति मणं
पहारेइ' ॥

२०२. तेणं कालेणं तेणं समएणं लोगंतिया देवा वंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे'
सएहि-सएहि विमाणेहि सएहि-सएहि पासायवडिसएहि पत्तेयं-पत्तेयं चउहि सामा-
णियसाहस्सीहि तिहि परिसाहि सत्तिहि अणिएहि सत्तिहि अणियाहिवईहि
सोलसाहि आयरक्खदेवसाहस्सांहि अण्णेहि य बहूहि लोगतिएहि देवेहि सद्धि
संपरिवुडा महयाअहय-नट्ट-गीय-वाइय'-•तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-
पडुप्पवाइय° रवेणं [विउलाइं भोगभोगाइं ?] भुंजमाणा विहरंति, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्धतोया य ।

तुसिया अवावाहा, अग्गिच्चा चैव रिट्ठा य' ॥१॥

२०३. तए णं तेसि लोगंतियाणं देवाणं पत्तेयं-पत्तेयं आसणाइं चलंति तहेव जाव' तं
जीयमेयं लोगंतियाणं देवाणं अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणानं संबोहणं
करित्तए त्ति । तं गच्छामो णं अम्हे वि मल्लिस्स अरहओ संबोहणं करेमो त्ति
कट्ठु एवं संपेहेति, संपेहेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता
वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसि-
रंति, एवं जहा जंभगा जाव' जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रण्णो
भवणे जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अंतलिक्ख-

१. सं० पा०—समणाण य जाव परिवेसिज्जइ ।

२. सूरसूरियं परिवेसिज्जइ—इति वाचनान्तरम्
(वृ) ।

३. च ह्येति (क, ख, ग, घ) ।

४. च सयसहस्सा (क, ख, ग, घ) ।

५. पहारेति (ख, घ) ।

६. विमाणे पत्थडे (ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—वाइय जाव रवेणं ।

८. क्वचिद् दशविधा एते व्याख्यायन्ते, अस्मा-
भिस्तु स्थानाङ्गानुसारेणैवमभिहिताः (वृ) ।

९. ना० १।८।१६४ ।

१०. ना० १।८।१६६ ।

पडिबण्णा सखिखिणियाइं' •दसद्धवण्णाइं° वत्थाइं पवरं परिहिया करयल'-
 •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु° ताहिं इट्ठाहिं' •कंताहिं
 पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं° एवं वयासी—बुज्झाहिं भगवं लोगणाहा!
 पवत्तेहि धम्मतित्थं जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकरं भविस्सइ त्ति कट्ठु दोच्चंपि
 तच्चंपि एवं वयंति, मल्लि अरहं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव
 दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ॥

२०४. तए णं मल्ली अरहा तेहि लोगंतिएहिं देवेहि संबोहिए समाणे जेणेव अम्मा-
 पियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'•परिग्गहियं दसणहं सिरसा-
 वत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु° एवं वयासी—इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं
 अब्भणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ता' •णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ।
 अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबधं करेह ॥

२०५. तए णं कुंभए राया कोडुं वियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव
 भो देवाणुप्पिया ! अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव' अट्ठसहस्सेणं
 भोमेज्जाणं कलसाणं अण्णं च महत्थं' •महग्घं महरिहं विउलं° तित्थयराभि-
 सेयं उवट्ठवेह । तेवि जाव उवट्ठवेंति ॥

२०६. तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिदे जाव' अच्चुयपज्जवसाणा आगया ॥

२०७. तए णं सक्के देविदे देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
 खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव'
 अण्णं च'' •महत्थं महग्घं महरिहं° विउलं तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह । तेवि
 जाव उवट्ठवेंति । तेवि कलसा 'तेसु चेव कलसेसु'° अणुपविट्ठा ॥

२०८. तए णं से सक्के देविदे देवराया कुंभए य राया मल्लि अरहं सीहासणंसि
 पुरत्थाभिमुहं निवेसेंति'', अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव' तित्थयरा-
 भिसेयं अभिसिंचंति ॥

२०९. तए णं मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिलं च

१. सं० पा०—सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं ।

अत्र वस्तुतः 'जाव परिहिए' इति संक्षेपो
 युज्यते । पूर्वसूत्रेष्वपि इत्थमेव लब्धत्वात् ॥

२. विभक्तिरहितं पदम् ।

३. सं० पा०—करयल° ।

४. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव एवं ।

५. सं० पा०—करयल° ।

६. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए ।

७. राय० सू० २८० ।

८. सं० पा०—महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं

९. जंबु° वक्खारो ५ ।

१०. ना० १।८।२०५ ।

११. सं० पा०—अण्णं च तं विउलं ।

१२. ते चेव कलसे (ख, ग) ।

१३. निवेसेइ (क, ख, ग, घ) ।

१४. ना० १।८।२०५ ।

संभितरबाहिरियं जाव' सव्वओ समंता 'आघावंति परिघावंति' ॥

२१०. तए णं कुंभए राया दोच्चंपि उत्तरावकमणं सीहासणं रयावेइ, जाव' सव्वा-
लंकारविभूसियं करेइ, करेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मणोरमं सीयं उवट्टवेह । तेवि उवट्टवेति ॥
२११. तए णं सक्के देविदे देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणोगखंभसय-सण्णिविट्ठं जाव' मणोरमं सीयं
उवट्टवेह । तेवि जाव उवट्टवेति । सावि सीया तं चेव सीयं अणुप्पविट्ठा ॥
२१२. तए णं मल्ली अरहा सीहासणाओ अम्भुट्टेइ, अम्भुट्टेत्ता जेणेव मणोरमा सीया
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मणोरमं सीयं अणुपयाहिणीकरेमाणे' मणोरमं
सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥
२१३. तए णं कुंभए अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुम्भे
णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव' सव्वालंकारविभूसिया मल्लिस्स सीयं परिवहह ।
तेवि जाव परिवहंति ॥
२१४. तए णं सक्के देविदे देवराया मणोरमाए सीयाए दक्खिणिल्लं' उवरिल्लं बाहं
गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हइ, चमरे दाहिणिल्लं हेट्ठिल्लं,
बली उत्तरिल्लं हेट्ठिल्लं, अवसेसा देवा जहारिहं मणोरमं सीयं परिवहति ।

संगहणी-गाहा—

पुंवि उक्खित्ता, माणुसेहिं साहट्ठरोमकूवेहिं ।
पच्छा वहंति सीयं, असुरिदसुरिदनागिदा ॥१॥
चलचवलकुंडलधरा, सच्छंदविउव्वियाभरणधारी ।
देविददानविदा, वहंति सीयं जिणिदस्स ॥२॥

२१५. तए णं मल्लिस्स अरहओ मणोरमं सीयं दुरुहस्स' समाणस्स इमे अट्टमंगला
पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया—एवं निग्गमो जहा जमालिस्स" ॥
२१६. तए णं मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पेगइया देवा मिहिलं रायहाणि

१. राय० सू० २८१; जुंबु० वक्खारो ५ ।
२. संपरिघावंति (क, ख, ग, घ) ।
३. ना० १।१।१२८ ।
४. ना० १।१।१२९ ।
५. × (क); ० करेमाणा (ग) ।
६. ना० १।८।१७६ ।
७. दक्खिणिल्लेणं (ग) ।

८. ० रोमपुलएहि (आयारचूला १५।२८ गा० १२) ।
९. दुरुहस्स (ख, घ) ।
१०. भगवत्यां (६।३३) यथा जमालेनिष्क्रमणं
तथेह वाच्यं, इहैव यथा मेघकुमारस्य, नवरं
चमरधारितरुण्यादिषु शक्यशानादीन्द्रप्रवेशतः
इह विशेषः (वृ) । ओ० सू० ६४-६८ ।

अभिभतरबाहिरं आसिय-संमज्जिय-संमट्ट-सुइ-रत्थंतरावणवीहियं करेति 'जाव परिधावन्ति' ॥

२१७. तए णं मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सीयाओ पच्चोरुहइ, 'आभरणालंकारं ओमुयइ ॥
२१८. तए णं पभावई हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणालंकारं पडिच्छइ' ॥
२१९. तए णं मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ ॥
२२०. तए णं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ, पडिच्छिता खीरोदग-समुद्धे साहरइ ॥
२२१. तए णं मल्ली अरहा नमोत्थु णं सिद्धाणं ति कट्ठु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ । जं समयं च णं मल्ली अरहा सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ, तं समयं च णं देवाण माणुसाण य निग्घोसे तुडिय-णिणाए' गीय-वाइय'-निग्घोसे य सक्कवयणसंदे-सेणं निलुक्के यावि होत्था । जं समयं च णं मल्ली अरहा सामाइयचारित्तं पडि-वण्णे तं समयं च मल्लिस्स अरहओ माणुसधम्मओ उत्तरिए मणपज्जवणाणे समुप्पण्णे ॥
२२२. मल्ली णं अरहा जे से हेमंताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोसमुद्धे तस्स णं पोसमुद्धस्स एक्कारसीपक्खेणं पुव्वण्हकालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं अस्सिणीहि नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं तिहि इत्थीसएहि—अभिभतरियाए परि-साए, तिहि पुरिससएहि—वाहिरियाए परिसाए सद्धि मुंडे भवित्ता पव्वइए ॥
२२३. मल्लि अरहं इमे अट्ठ नायकुमारा अणुपव्वइंसु, तं जहा—

१. आसिय अभिभतरवासविहि, गाहा जाव परिधावन्ति (क, ख, ग, घ); 'अप्पेगइया देवा मंचाइमंचकलियं करेतीत्यादिमंघकुमार-निष्क्रमणोक्तनगरवर्णकस्य' तथा 'अप्पेगइया देवा हिरण्णवासं वासिसु एवं सुवन्नवासं वासिसु एवं रयण-वइर-पुप्फ-मल्ल-गंध-चुण्ण-आभरणवासं वासिसु' इत्यादि वर्षासमूहस्य तथा 'अप्पेगइया देवा हिरण्णविहि भाइंसु एवं सुवण्णविहि भाइंसु' इत्यादिबिधिसमूहस्य तीर्थंकरजन्माभिषेकोक्त-संग्रहार्था याः क्वचिद् गाथाः सन्ति ता अनुसृत्य सूत्रमध्येयं यावदप्पे-गइया देवा आधावन्ति परिधावन्तीत्येतदवसान-मित्यर्थः । इदं च राजप्रश्नकृतादौ (सू० २८१) द्रष्टव्यमिति (वृ) ।

वृत्तिकृता निर्दिष्टा नगरवर्णका मेघकुमार-निष्क्रमणप्रकरणे नास्ति, किन्तु जन्मोत्सव-प्रकरणे लभ्यते । द्रष्टव्यं १।१।७६ सूत्रम् । वृत्तिकृता पाठान्तररूपेण निर्दिष्टा गाथा आदर्शेषु प्रकटरूपेण न लभ्यन्ते वृत्तावपि लिखिता न सन्ति । ना० १।८।२०६ ।

२. आभरणालंकारं पभावई पडिच्छइ (क, ख, ग, घ) असौ पाठः संक्षिप्तलिपिपद्धत्या कालक्रमेण अपूर्णो जातः । असौ च १।१।१४८ सूत्रमनुसृत्य पूरितः ।

३. णाए (ग) ।

४. वाइयपणिय (ग, घ) ।

५. सामाइयं (क) ।

गाहा—

नंदे य नंदिमित्ते, सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य ।

अमरवइ अमरसेणे, महसेणे चेव अट्टमए ॥

२२४. तए णं ते भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया देवा मल्लिस्स अरहओ निक्खमण-महिमं करेति, करेत्ता जेणेव नंदीसरे' •दीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अट्टाहियं महिमं करेति, करेत्ता जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि° पडिगया ॥

मल्लिस्स केवलणाण-पदं

२२५. तए णं मल्ली अरहा जं चेव दिवसं पव्वइए, तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकाल-समयंसि' असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयमि मुहासणवरगयस्स सुहेणं परिणामेणं पसत्थाहि लेसाहि तयावरण-कम्मरय-विकरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते' •अणुत्तरे निव्वाधाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवल-वरनाणदंसणे समुप्पण्णे ॥

२२६. तेणं कालेणं तेणं समाणं सब्बदेवाणं आसणाइं चलेंति, समोसढा धम्मं सुणेंति, सुणेंत्ता जेणेव नंदीसरे दीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अट्टाहियं' महिमं करेति, करेत्ता जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि° पडिगया । कुंभए वि निगच्छइ ।

जियसत्तुपामोक्खाणं पव्वज्जा-पदं

२२७. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेट्टपुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्स-वाहिणीयाओ [सीयाओ ?] दुरूढा [समाणा ?] सव्विड्ढीए जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति जाव' पज्जुवासंति ॥

२२८. तए णं मल्ली अरहा तीसे महइमहालियाए परिंसाए, कुंभगस्स रण्णो, तेसिं च जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं धम्मं परिकहेइ । परिंसा जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया । कुंभए समणोवासए जाव पडिगए, पभावई य ॥

२२९. तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी—आलित्तए णं भंते ! लोए, पलित्तए णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्तए णं भंते !

१. सं० पा०—नंदीसरे अट्टाहियं करेति जाव पडिगया ।

२. पुव्वावरण्ह° (क, ग, घ) ।

३. सं० पा०—अणंते जाव समुप्पण्णे ।

४. सं० पा०—अट्टाहियं महानंदीसरं जामेव दिसं पाउ जाव पडिगए ।

५. ओ० सू० ६९ ।

लोए जराए मरणेण य जाव' पव्वइया जाव' चोइसपुव्विणो । अणंते वरनाण-
दंसणे केवले [समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा ?] सिद्धा ॥

मल्लिस्स सिस्ससंपदा-पदं

२३०. तए णं मल्ली अरहा सहस्संववणाओ उज्जाणाओ निक्खमइ, निक्खमित्ता
बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥
२३१. मल्लिस्स णं अरहओ भिसगपामोक्खा अट्ठावीसं गणा अट्ठावीसं गणहरा
होत्था ॥
२३२. मल्लिस्स णं अरहओ चत्तालीसं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया
होत्था, बंधुमइपामोक्खाओ पणपन्नं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जिया-
संपया होत्था, सावयाणं एगा सयसाहस्सी चुलसीइं सहस्सा, सावियाणं तिण्णि
सयसाहस्सीओ पण्णट्ठि च सहस्सा, छस्सया चोइसपुव्वीणं, वीसं सया ओहि-
नाणीणं, वत्तीसं सया केवलनाणीणं, पणतीसं सया वेउव्वियाणं, अट्ठसया
मणपज्जवनाणीणं, चोइससया वाईणं, वीसं सया अणुत्तरोववाइयाणं ॥
२३३. मल्लिस्स णं अरहओ दुविहा अंतकरभूमी होत्था, तं जहा—जुगंतकरभूमी
परियायंतकरभूमी य । जाव वीसइमाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकरभूमी
दुवासपरियाए अंतमकासी ॥
२३४. मल्ली णं अरहा पणुवीसं धणूइं उड्डं उच्चत्तेणं, वण्णेणं पियंगुसामे समचउरंस-
संठाणे वज्जरिसहनाराय-संघयणे मज्झदेसे सुहंसुहेणं विहरित्ता जेणेव सम्मेए'
पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सम्मेयसेलसिहरे पाओवगमणंणुवन्ने ॥

मल्लिस्स निव्वाण-पदं

२३५. मल्ली णं अरहा एगं वाससयं अगारवासमज्झे पणपणं वाससहस्साइं वाससय-
ऊणाइं केवलपरियाणं पाउणित्ता पणपणं वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता
जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेतिसुद्धे, तस्स णं चेतिसुद्धस्स चउत्थीए
पक्खेणं भरणीए नक्खत्तेणं [जोगमुवागएणं ?] अट्ठरत्तकालसमयंसि पंचहिं
अज्जियासएहिं—अब्भितरियाए परिसाए, पंचहिं अणगरसएहिं—बाहिरियाए

१. ना० १।१।१४६, १५० ।

२. भग० २।१ ।

३. वातीणं (ग) ।

४. अंतगडं (घ) ।

५. 'दुमासपरियाए' इति क्वचित् क्वचिच्च

'चउमासपरियाए' इति दृश्यते (वृ);

दुबालस० (क) अशुद्धं प्रतिभाति ।

६. सम्मेते (ग, घ) ।

७. पाओवगमणुववण्णे (ख); पाओवगमणुवण्णे
(ग) ।

८. X (ख, ग) ।

परिसाए, मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारियपाणी 'पाए साहट्टु' खीणे वेयणिज्जे आउए नामगोए सिद्धे । एवं परिनिब्बाणमहिमा भाणियब्बा जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए,^१ नंदीसरे अट्टाहियाओ पडिगयाओ ॥

निक्खेव-पदं

२३६. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्यता निगमनगाथा—

उग्गतवसंजमवओ, पगिट्टुफलसाहगस्स वि जयिस्स ।
धम्मविसए वि सुहमा वि, होइ माया अणत्थाय ॥१॥
जह मल्लिस्स महावल-भवम्मि तित्थयरनामबंधे वि ।
तव-विसय-थेवमाया जाया जुवइत्त-हेउत्ति ॥२॥

—

नवमं अज्झयणं मायंदी

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, नवमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स' के अट्ठे पणत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी' । पुण्णभट्ठे चेइए ॥
३. तत्थ' णं मायंदी नाम सत्थवाहे परिवसइ—अड्ढे' । तस्स णं भट्ठा नामं भारिया । तीसे णं भट्ठाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था, तं जहा - जिणपालिए य जिणरक्खिए य ॥

मागंदिय-दारगाणं समुद्द-जत्ता-पदं

४. तए णं तेसि मागंदिय-दारगाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं' इमेयारूवे मिहोकहासमुत्तावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अम्हे लवणसमुद्दं पोयवहणेणं एक्कारसवाराओ' ओगाढा । सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा' पुणरवि नियघरं हव्वमागया । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! दुवालसंपि' लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणंति, पडिसुणेत्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता

- | | |
|--|----------------------------------|
| १. ना० १।१।७ । | ५. पू०—ना० १।२।७ । |
| २. नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं (क, ख, ग, घ) । | ६. पू०—ना० १।३।७ । |
| ३. नयरी पुव्वत्तवन्नणं (ख); नयरी पुव्वुत्त (ग) । | ७. °वारा (ख, ग, घ) । |
| ४. एत्थ (ख) । | ८. अणहसमुग्गा (ख); अणट्ठ ° (ग) । |
| | ९. दुवालसमंपि (क) । |

एवं वयासी एवं खलु अम्हे अम्मयाओ ! लवणसमुदं पोयवहणेणं एक्कारसवाराओ' ओगाढा । सव्वत्थ वि य णं लद्धु कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि° नियघरं हव्वमागया । तं इच्छामो णं अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसंपि° लवणसमुदं पोयवहणेणं ओगाहित्तए ॥

५. तए णं ते मागंदिय-दारए अम्मापियरो एवं वयासी—इमे भे जाया ! अज्जय'-
°पज्जय-पिउपज्जयागए सुवहु हिरण्णे य सुवण्णे य कमे य दूमे य मणि-
मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावाज्जे य अलाहि जाव
आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं° परिभाएउं । तं
अणुहोह ताव जाया ! विपुले माणुस्सए इड्डीसक्कारसमुदाए । किं भे सपच्चा-
वाएणं निरालंबणेणं लवणसमुदोत्तारेणं ? एवं खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता
सोवसग्गा यावि भवइ । तं मा णं तुब्भे दुवे पुत्ता ! दुवालसंपि° लवण°समुदं
पोयवहणेणं° ओगाहेह । मा हु तुब्भं सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ ॥
६. तए णं ते मागंदिय-दारगा अम्मापियरो दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—एवं
खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारसवाराओ लवण°समुदं पोयवहणेणं ओगाढा ।
सव्वत्थ वि य णं लद्धु कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघरं हव्वमागया ।
तं सेयं खलु अम्हं अम्मयाओ ! दुवालसंपि लवणसमुदं पोयवहणेणं°
ओगाहित्तए ॥
७. तए णं ते मागंदिय-दारए अम्मापियरो जाहे नो संचाएन्ति वूहिं आघवणाहि य
पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमदुं
अणुमणित्था ॥
८. तए णं ते मागंदिय-दारगा अम्मापिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिमं च घरिमं
च मेज्जं च पारिज्जेज्जं च भंडगं गेण्हंति, जहा अरहन्नगस्स जाव° लवणसमुदं
वहूइं जोयणसयाइ ओगाढा ॥

नावा-भंग-पदं

९. तए णं तेसि मागंदिय-दारगाणं लवणसमुदं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं
समाणाणं अणेगाइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—अकाले° गज्जिए°
°अकाले विज्जुए अकाले° थणियसद्दे कालियवाए जाव° समुट्टिए ॥

१. सं० पा० वाराओ तं चेव जाव नियघरं ।

२. दुवालस (क, ख, ग, घ) ।

३. सं० पा०—अज्जग जाव परिभाएत्तए ।

४. दुवालसमंपि (क, ख) ।

५. सं० पा०—लवण जाव ओगाहेह ।

६. सं० पा०—लवण जाव ओगाहित्तए ।

७. ना० १।८।६६-७० ।

८. अगाले (क); अयाले (ख) ।

९. सं० पा०—गज्जियं जाव थणियसद्दे ।

१०. तत्थ (क्व) ।

१०. तए णं सा नावा तेणं कालियवाएणं आहुणिज्जमाणी-आहुणिज्जमाणी संचालिज्जमाणी-संचालिज्जमाणी संखोभिज्जमाणी-संखोभिज्जमाणी सलिल-तिक्ख-वेगेहि अइअट्टिज्जमाणी'-अइअट्टिज्जमाणी कोट्टिमंसि' करतलाहते विव तिदूसए' तत्थेव-तत्थेव ओवयमाणी य उप्पयमाणी य, उप्पयमाणी विव धरणीयलाओ सिद्धविज्जा विज्जाहरकन्नगा, ओवयमाणी विव गगणतलाओ भट्टविज्जा विज्जाहरकन्नगा, विपलायमाणी विव महागरुल-वेग-वित्तासिय भुयगवरकन्नगा, धावमाणी विव महाजण-रसियसद्-वित्तत्था ठाणभट्टा आसकिसोरी, निगुंजमाणी विव गुरुजण-दिट्ठावराहा सुजणकुलकन्नगा, धुम्ममाणी विव वीचि'-पहार-सय-तालिया', गलिय-लंबणा विव गगणतलाओ', रोयमाणी विव सलिलगंथि'-विप्पइर-माण-थोरंसुवाएहि नववहू उवरयभत्तुया, विलवमाणी विव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्दुया महापुरवरी, भायमाणी विव कवड-च्छोमण-पमोणजुत्ता जोगपरिवाइया, नीससमाणी विव महाकंतार-विणिग्गय-परिस्संता परिणयवया अम्मया, सोयमाणी विव तव-चरण-खीण-परिभोगा चवणकाले देववरवहू, संचुण्णियकट्ट-कूवरा, भगमेडि-मोडिय-सहस्समाला, सूलाइय'-वंकपरिमासा', फलहंतर-तडतडंत-फुट्टंत-संधिवियलंत-लोहकीलिया', सव्वंग-वियंभिया, परिसडियरज्जुविसरंतसव्वगत्ता, आमगमल्ल-गभूया, अकयपुण्ण-जणमणोरहो विव चित्तिज्जमाणगुरुई" हाहाकय"-कण्णधार-नाविय-वाणियगजण-कम्मकर"-विलविया नाणाविह-रयण-पणिय-संपुण्णा बहूहि पुरिससएहि रोयमाणेहि कंदमाणेहि सोयमाणेहि तिप्पमाणेहि विलव-माणेहि एगं महं अंतोजलगयं गिरिसिहरमासाइत्ता संभग्गकूवतोरणा मोडियज्झयदंडा वलयसयखंडिया करकरस्स तत्थेव विद्वं उवगया ॥

११. तए णं तोए नावाए भिज्जमाणीए ते बहवे पुरिसा विपुल-पणिय-भंडमायाए अंतोजलंमि निमज्जाविया" यावि होत्था ॥

१२. तए णं ते मागंदिय-दारगा छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी" निउणसिप्पो-

१. अइयट्टि° (क, ख); अइवट्टि° (क्व) ।

२. कोट्टिम (क, ख, घ) ।

३. तेदूसए (क) ।

४. बीयी (क); बीतो (ख, ग) ।

५. ताडिता हि स्त्री वेदनया घूर्णयन्तीत्येव-मुपमानं द्रष्टव्यम् (वृ) ।

६. पतितेति गम्यते (वृ); क्वचित्तु 'गलितलं-बना' इत्येतावदेव इयते ।

७. °गंठि (घ) ।

८. सूलातित (वृपा) ।

९. °पारिमासा (क, ख) ।

१०. °खीलिया (क, ख, ग) ।

११. °गुरुती (ख, ग, घ) ।

१२. हाहाकय (क) ।

१३. कम्मगार (क); कम्मकार (ग, घ) ।

१४. निवज्जाविया (ख) ।

१५. मेहाविणो (क) ।

वगया बहसु^१ पोयवहण-संपराएसु कयकरणा लद्धविजया अमूढा अमूढहत्या एगं
महं फलगखंडं आसादेति ॥

रयणदीव-पदं

१३. जंसि^२ च णं पएसंसि से पोयवहणे विवण्णे तंसि^३ च णं पएसंसि एगे महं
रयणदीवे नामं दीवे होत्था—अणेगाइं जोयणाइं आयामविकखंभेणं अणेगाइं
जोयणाइं परिकखेवेणं नाणादुममंड-मंडिउदेसे सस्सिरीए पासाईए दरिसणिज्जे
अभिरूवे पडिरूवे ।
तस्स^४ बहुमज्झदेसभाए, एत्थ^५ णं महं एगे पासायवडेंसए 'यावि होत्था'^६—
अव्वभुगयमूसिय-पहसिए जाव^७ सस्सिरीयरूवे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे
पडिरूवे ।
तत्थ णं पासायवडेंसए रयणदीव-देवया नामं देवया परिवसइ—पावा चंडा
रुद्धा खुद्धा साहस्सिया^८ ।
तस्स णं पासायवडेंसयस्स चउट्ठिसि चत्तारि वणसंडा—किण्हा किण्होभासा^९ ॥
१४. तए णं ते माकंदिय-दारगा तेणं फलयखंडेणं 'ओवुज्झमाणा-ओवुज्झमाणा'^{१०}
रयणदीवतेणं संबूढा यावि होत्था ॥
१५. तए णं ते मागंदिय^{११}-दारगा थाहं लभंति,^{१२} मुहुत्ततरं आससंति, फलगखंडं
विसज्जेति, रयणदीवं उत्तरंति, फलाणं मग्गण-गवेसणं करंति, फलाइं आहारंति,
नालिएराणं मग्गण-गवेसणं करंति, नालिएराइं^{१३} फोडेंति, नालिएरतेत्तेणं^{१४}
अण्णमण्णस्स गायाइं अव्वभंतेति, पोक्खरणीओओगाहेति, जलमज्जणं करंति,^{१५}
पोक्खरणीओओ^{१६} पच्चुत्तरंति, पुढविसिलावट्टयंसि निसीयंति, निसीइत्ता
आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया चंपं नयरि अम्मापिउआपुच्छणं च लवण-
समुद्दोत्तारणं च कालियवायसम्मुच्छणं च पोयवहणविवत्ति च फलयखंडस्सा-

१. बहसु (ग, घ) ।

२. जेसि (क, ग, घ) ।

३. तेसि (ख, ग, घ) ।

४. तस्स णं (क, ख, घ) ।

५. तत्थ (क, ख) ।

६. होत्था (क); × (ख) ।

७. ना० १।१।८६ ।

८. रयणदीव (ख) ।

९. साहसिया (क्व०) ।

१०. पू०—ना० १।७।१३ ।

११. ओवु० २ (ग्व) ।

१२. माकंदिय (क्व) ।

१३. लहति (ख, ग) ।

१४. नालियराय (ख) ।

१५. ० तिल्लेणं (क); नालियर० (ख),

नालियरस्स (ग, घ) ।

१६. सं० पा०—करंति जाव पच्चुत्तरंति ।

सायणं च रयणदीवोत्तारं' च अणुचितेमाणा-अणुचितेमाणा ओह्यमणसंकप्पा'
°करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया° क्रियायन्ति ॥

रयणदीवदेवया-पदं

१६. तए णं सा रयणदीवदेवया ते मार्गदिय-दारए ओहिणा आभोएइ, असि-खेडग'-
वग्ग-हत्था सत्तट्ठतलप्पमाणं उड्ढं वेहासं उप्पयइ, उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए
जाव' देवगईए बीईवयमाणी-बीईवयमाणी जेणेव मार्गदिय-दारया तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरत्ता' ते मार्गदिय-दारए खर-फरुस-निट्ठुर-
वयणेहि एवं वयासी—हंभो मार्गदिय-दारया' ! जइ णं तुवभे मए सद्धि
विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरह, तो' भे अत्थि जीवियं । अहण्णं तुवभे
मए सद्धि विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा नो विहरह, तो' भे इमेणं नीलुप्पल-
गवलगुलिय'-°अयसिकुसुमप्पगासेणं° खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं
माउआहि उवसोहियाइं तालफलाणि° व सीसाइं° एगंते एडेमि ॥
१७. तए णं ते मार्गदिय-दारगा रयणदीवदेवयाए अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म
भीया करयल'°परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु° एवं वयासी—
जण्णं देवाणुप्पिया वइस्संति° तस्स आणा-उववाय-वयण-निहेसे चिट्ठिस्सामो ॥
१८. तए णं सा रयणदीवदेवया ते मार्गदिय-दारए गेण्हइ, जेणेव पासायवडेंसए
तेणेव उवागच्छइ, असुभपोगलावहारं करेइ, सुभपोगलपक्खेवं करेइ, तओ
पच्छा तेहि° सद्धि विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ, कल्लाकल्लिं च
अमयफलाइं उवणेइ ॥

रयणदीवदेवयाए मार्गदिय-पुत्ताणं निहेस-पदं

१९. तए णं सा रयणदीवदेवया सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा लवण-
समुद्वे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठेयव्वे त्ति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा

- | | |
|---|-----------------------------------|
| १. रयणदीवोत्तारं (क, ख) । | ७. ता (ग) । |
| २. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा जाव क्रिया-
यन्ति । | ८. ता (ग) । |
| ३. फलग (ख, ग, घ); वृत्तौ 'खेडग' शब्द-
स्यार्थः फलकोस्ति । उत्तरवर्त्यादर्शेषु 'फलक'
पदस्यैव मूलगठे स्वीकृतिर्जाता । | ९. सं० पा०—गवलगुलिय जाव खुरधारेणं |
| ४. राय० सू० १० । | १०. तालियफलाणि (क) । |
| ५. आसुरत्ता (क, ख) । | ११. छित्त्वेति वाक्यशेषः (वृ) । |
| ६. °दारया अप्पत्थियःस्थिया (क) । | १२. सं० पा०—करयल जाव एवं । |
| | १३. वत्तिस्सइ (ग) । |
| | १४. एहि (ग) । |

कयवरं^१ वा असुइ पूइयं^२ दुरभिगंधमचोक्खं, तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय
तिसत्तखुत्तो एगंते एडेयव्वं ति कट्ठु निजत्ता ॥

२०. तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए एवं वयासी—एवं खलु अहं
देवाणुप्पिया ! सक्कवयण-संदेमेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा तं चेव जाव^३
निजत्ता । तं जाव^४ अहं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे^५ *तिसत्तखुत्तो अणुपरि-
यट्ठित्ता जं किंचि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइ पूइयं दुरभि-
गंधमचोक्खं, तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगंते^६ एडेमि ताव तुब्भे
इहेव पासायवडंसाणं मुहंमुद्देणं अभिरममाणा चिट्ठह । जइ णं तुब्भे एयंसि
अंतरंसि उव्विग्गा वा 'उस्सुया वा उप्पुया'^७ वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे पुरत्थि-
मिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह । तत्थ णं दो उऊ सया साहीणा, तं जहा—पाउसे य
वासारत्ते य ।

गाहा --

तत्थ उ^८—कंदल - सिलिध - दंतो, निउर - वरपुप्फपीवरकरो ।

कुडयज्जुण-नीव-सुरभिदाणो, पाउसउऊ गयवरो साहीणो ॥१॥

तत्थ य—सुरगोवमणि - विचित्तो, ददुदुरकुलरसिय-उज्झररवो ।

वरहिणवंद^९-परिणद्धसिहरो, वासारत्तउऊ पव्वओ साहीणो ॥२॥

तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहूसु वावीसु य जाव^{१०} सरसरपंतियासु य बहूसु
आलीघरासु य मालीघरासु य जाव^{११} कुसुमघरासु य मुहंसुहेणं अभिरममाणा-
अभिरममाणा विहरिज्जाह । जइ णं तुब्भे तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा
उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे उत्तरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह । तत्थ णं दो
उऊ सया साहीणा, तं जहा—सरदो य हेमंतो य ।

गाहा—

तत्थ उ^{१२}—सण - सत्तिवण्ण - कउहो, नीलुप्पल - पउम - नलिण-सिगो ।

सारस - चक्काय - रवियघोसो, सरयउऊ गोवई साहीणो ॥३॥

तत्थ य—'सियकुंद-धवलजोण्हो'^{१३}, कुसुमिय-लोद्धवणसंड-मंडलतलो ।

तुसार-दगधार-पीवरकरो, हेमंतउऊ ससी सया साहीणो ॥४॥

१. केयवरं (क) ।

(वृ); उप्पुया वा उस्सुया (वृपा) ।

२. पूयं (ख) ।

७. य (क) ।

३. ना० १।६।१६ ।

८. °विद (ग) ।

४. जाव ताव (क) ।

९. राय० सू० १७४ ।

५. सं० पा०—लवणसमुद्दे जाव एडेमि ।

१०. राय० सू० १८२ ।

६. °उप्पुया (क); उप्पित्था वा उस्सुया ११. °जुण्हो (ख); सितकुंदविमलजोण्हो (वृपा) ।

तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहूसु वावीसु य' °जाव सरसरपंतियासु य बहूसु
आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरममाणा-
अभिरममाणा ° विहरिज्जाह । जइ णं तुब्भे तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा
उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह । तत्थ णं दो
उऊ सया साहीणा तं जहा—वसंते य गिम्हे य ।

गाहा—

तत्थ उ—सहकार - चारुहारो, किंसुय - कण्णियारासोगमउडो ।

ऊसियतिलग - बकुलायवत्तो, वसंतउऊ नरवई साहीणो ॥५॥

तत्थ य—पाडल - सिरीस - सलिलो, मह्लिया-वासंतिय-धवलवेलो ।

सीयलसुरभि-निल'-मगरचरिओ, गिम्हउऊ सागरो साहीणो ॥६॥

तत्थ णं बहूसु' °वावीसु य जाव सरसरपंतियासु य बहूसु आलीघरएसु य
मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा °
विहरेज्जाह । जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया
वा भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह ममं पडिवाले-
माणा-पडिवालेमाणा चिट्ठेज्जाह, मा णं तुब्भे दक्खिणिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह ।
तत्थ णं महं एगे उग्गविसे' चंडविसे घोरविसे' अइकाए' महाकाए' मसि-महिस'-
मूसा'-कालए नयणविसरोसपुण्णे' अंजणपुंज-नियरप्पगासे रत्तच्छे जमल-जुयल-
चंचल-चलंतजीहे धरणितल-वेणिभूए उक्कड-फुड-कुडिल-जडुल'-कक्खड'-
वियड-फडाडोव'-करणदच्छे लोहागर-धम्ममाण'-धमधमेंतघोसे अणागलिय-
चंडतिव्वरोसे 'समुहिय-तुरिय-चवलं'° धमंते' दिट्ठीविसे सप्पे परिवसइ । मा णं

१. सं० पा०—वावीसु य जाव विहरेज्जाह ।

गौशालकचरिते तथेहाध्येतव्यानीत्यर्थः । तानि

२. अनिल (क, ख, ग, घ); इह वा अनिल-

चैतानि—मसि-महिस ° ।

शब्दस्य अकारलोपः प्राकृतत्वात् (वृ) ।

८. महिसा (क, ख) ।

३. सं० पा०—बहूसु जाव विहरेज्जाह ।

९. मूस (घ) ।

४. भोगविसे (वृपा) ।

१०. पुण्णए (ख) ।

५. घोरविसे महाविसे (क) ।

११. जडिल (क्व०) ।

६. अइकाय (क, ख, ग, घ) ।

१२. कक्कड (क, ख) ।

७. °काए जहा तेयनिसग्गे (वृ); वृत्तिगत-

१३. फलाडोव (ख); फणाडोव (घ) ।

व्याख्यया इति प्रतीयते वृत्तिकारस्य

१४. लोहमितिगम्यते ।

सम्मुखे ये आदर्शा आसंस्तेषु 'जहा तेय-

१५. समुहिं तुरियचवलं (क, ग); समुहिं तुरिय

निसग्गे' इति संक्षिप्तः पाठः आसीत्,

चवलं (ख) ।

अतएव वृत्तिकृता लिखितम्—जहा

१६. धमधमंते (ग) ।

तेयनिसग्गेति—शेषविशेषणानि यथा

तुढं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ—ते मार्गदिय-दारए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदति, वदित्ता वेउड्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता ताए उक्किट्ठाए^१ देवगईए लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठेउं पयत्ता यावि होत्था ॥

मार्गदियपुत्ताणं वणसंडगमण-पदं

२१. तए णं ते मार्गदिय-दारया तओ मुहुत्तंतरस्स पासायवडेंसए सइं वा रइं वा धिइं वा अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! रयणदीव-देवया अम्हे एवं वयासी—एवं खलु अहं सक्कवयण-संदेमेणं सुट्ठिणं लवणा-हिवइणा^२ निउत्ता जाव^३ मा णं तुढं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ । तं मेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! पुरत्थिमिल्लं वणसंडं गमित्तए—अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति । नत्थ णं वावीसु य जाव^४ आलीघराएमु य जाव^५ सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरम-माणा विहरंति ॥
२२. तए णं ते मार्गदिय-दारया तत्थ वि सइं वा^६ •रइं वा धिइं वा° अलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति । तत्थ णं वावीसु य जाव^७ आली-घराएसु य^८ सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरंति ॥
२३. तए णं ते मार्गदिय-दारया तत्थ वि सइं वा^९ •रइं वा धिइं वा° अलभमाणा ° जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति । तत्थ णं वावीसु य जाव^{१०} आलीघराएसु य^{११} सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरंति ॥
२४. तए णं ते मार्गदिय-दारया तत्थ वि सइं वा^{१२} रइं वा धिइं वा° अलभमाणा अण्ण-मण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिणं लवणाहिवइणा^{१३} निउत्ता जाव^{१४} मा णं तुढं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ । तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं । तं सेयं खलु अम्हं दक्खिणिल्लं वणसंडं गमित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तओ णं गंधे निद्धाइ, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव^{१५} अणिट्ठतराए चेव^{१६} ॥

१. पू०—राय० सू० १० ।

२. पू०—ना० १।६।२० ।

३, ४, ५. ना० १।६।२० ।

६. सं० पा०—सइं वा जाव अलभमाणा ।

७. ना० १।६।२० ।

८. पू०—ना० १।६।२० ।

९. सं० पा०—सइं वा जाव जेणेव ।

१०. ना० १।६।२० ।

११. पू०—ना० १।६।२० ।

१२. सं० पा०—सइं वा जाव अलभमाणा ।

१३. पू०—ना० १।६।२० ।

१४. ना० १।६।२० ।

१५. ना० १।६।४२ ।

१६. पू०—ना० १।६।४२ ।

२५. तए णं ते मागंदिय-दारगा तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहि-सएहि उत्तरिज्जेहि आसाइं 'पिहेति, पिहेत्ता' जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवा-
गया । तत्थ णं महं एगं आघयणं' पासंति—अट्ठियरासि-सय-संकुलं भीम-दरिस-
णिज्जं । एगं च तत्थ सूलाइयं' पुरिसं कलुणाइं कट्ठाइं विस्सराइं कूवमाणं' पासंति,
भीया" •तत्था तसिया उव्विग्गा° संजायभया जेणेव से सूलाइए पुरिसे तेणेव
उवागच्छंति, उवागच्छत्ता तं सूलाइयं पुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणु-
प्पिया ! कस्साघयणे ? तुमं च णं के कम्मो वा इहं हव्वमागए ? केण' वा
इमेयारूवं आवयं पाविए" ?
२६. तए णं से सूलाइए पुरिसे ते मागंदिय-दारगे एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया !
रयणदीवदेवयाए आघयणे । अहं णं देवाणुप्पिया ! जंबुदीवाओ दोवाओ
भारहाओ वासाओ कागंदए' आसवाणियए विपुलं' पणियभंडमायाए पोयवहणेणं
लवणसमुद्धं ओयाए । तए णं अहं पोयवहण-विवत्तीए निव्वुडु-भंडसारे एगं
फलगखंडं आसाएमि । तए णं अहं ओवुज्झमाणे-ओवुज्झमाणे रयणदीवतेणं
संवूढे । तए णं सा रयणदीवदेवया ममं पासइ, पासित्ता ममं गेण्हइ, गेण्हित्ता
मए सद्धि विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ । तए णं सा रयणदीव-
देवया अणया कयाइ अहालहुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी ममं
एयारूवं आवयं" पावेइ । तं न नज्जइ णं देवाणुप्पिया ! तुव्वं पि इमेसि
सरारगणं का मण्णे आवई भविस्सइ ?
२७. तए णं ते मागंदिय-दारगा तस्स सूलाइगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म
वलियतरं भीया" •तत्था तसिया उव्विग्गा° संजायभया सूलाइयं पुरिसं एवं
वयासी—कहणं देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थि
नित्थरेज्जामो" ?
२८. तए णं से सूलाइए पुरिसे ते मागंदिय-दारगे एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया !

१. पेहेति २ (ख) ।

२. आह्वयणं (क); आवत्तेणं (ख, घ) ।

३. सूलाइयं (क); सूलाययं (ख), वृत्तौ
एकस्मिन्नादर्शे 'सूलाइयं' अपरस्मिन् च
'सूलाइयं' इति पाठ-संकेतो दृश्यते ।
शूलिकाभिन्नमिति च व्याख्यातमस्ति ।

४. कुव्वमाणं (ख, ग, घ) । वृत्तौ—कूजन्तव्यक्तं
शब्दायमानं, इति दृश्यते, ततः कुव्वमाणं
अशुद्धं प्रतिभाति ।

५. सं० पा०—भीया जाय संजायभया ।

६. केणइ (क); केणे (ख) ।

७. पाविएसि (क) ।

८. कागंदिए (घ); काकंदए (क्व) ।

९. विपुल (ख, घ); विउल (ग) ।

१०. आवइ (क, ख); आवति (ग, घ) ।

११. सं० पा०—भीया जाव संजायभया ।

१२. नित्थरिज्जामो (ख) ।

पुरत्थिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नामं आसख्वधारी जक्खे परिवसइ । तए णं से सेलए जक्खे चाउइसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगय-समए पत्तसमए महया-महया सट्ठेणं एवं वदइ—कं तारयामि ? कं पालयामि ? तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरत्थिमिल्लं वणसंडं मेलगस्स जक्खस्स महिरिहं पुप्फच्चाणियं करेह, करेत्ता जन्नुपायवडिया पंजलिउडा विणएणं पज्जुवासमाणा विहरह । जाहे णं से सेलए जक्खे आगयसमए पत्तसमए एवं वएज्जा—कं तारयामि ? कं पालयामि ? ताहे तुब्भे 'एवं वदह'—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि । सेलए भे जक्खे परं रयणदीवदेवयाए हन्थाओ साहत्थि निन्थारेज्जा । अण्णहा भे न याणामि इमेसि सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ ?

सेलगजक्ख-पदं

२९. तए णं ते मागंदिय-दारगा तस्स मूलाइयस्स पुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्मा सिग्घं चंडं चवलं तुरियं वेइयं जेणव पुरत्थिमिल्ले वणसंडे जेणव पोक्खरिणी तेणव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोक्खरिणि ओगाहेति, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेति, करेत्ता जाइ तत्थ उप्पलाइं जाव ताइं गण्हंति, गेण्हित्ता जेणव सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेति, करेत्ता महिरिहं पुप्फच्चाणियं करेति, करेत्ता जन्नुपायवडिया सुस्सूसमाणा नमंसमाणा पज्जुवासंति ॥
३०. तए णं से सेलए जक्खे आगयसमए पत्तसमए एवं वयासी—कं तारयामि ? कं पालयामि ?
३१. तए णं ते मागंदिय-दारगा उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता करयल °परिगग्हियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु ° एवं वयासी—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि ॥
३२. तए णं से सेलए जक्खे ते मागंदिय-दारए एवं वयासी—एवं खलु देवाणु-प्पिया ! तुब्भं मए सद्धि लवणसमुद्धं मज्झमज्झेणं वीईवयमाणाणं सा रयण-दीवदेवया पावा चंडा रुद्धा खुद्धा साहसिया बहूहि खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि उवसग्गं करेहिइ । तं जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं आढाह वा परियाणह वा अवयक्खह वा तो भे अहं पट्ठाओ विट्ठणामि ° । 'अह णं' ° तुब्भे

१. पंजलियडा (ख); अंजलिउडा (ग) ।

२. चिट्ठह (क) ।

३. वदह (क); वइज्जह (ख) ।

४. ना० १।२।१४ ।

५. °पडिया य (ग) ।

६. स० पा०—करयल ° ।

७. वदइ (क) ।

८. पट्ठतो (ख); पुट्ठाओ (घ) ।

९. विट्ठणामि (क); विट्ठणामि (ख) ।

१०. अहणं (ग) ।

रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो आढाह नो परियाणह नो अवयक्खह तो भे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थि नित्थारेमि ॥

३३. तए णं ते मागंदिय-दारगा सेलगं जक्खं एवं वयासी—जं णं देवाणुप्पिया वइस्संति' तस्स णं [आणा?] उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठिस्सामो ॥
३४. तए णं से सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सिरइ, दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता एगं महं आसरूवं विउव्वइ, विउवित्ता मागंदिय-दारए एवं वयासी—हं भो मागंदिय-दारया ! आरुहह णं देवाणुप्पिया ! मम पट्ठंसि ॥
३५. तए णं ते मागंदिय-दारया हट्ठा सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेति, करेत्ता सेलगस्स पट्ठं दुरूढा ॥
३६. तए णं से सेलए ते मागंदिय-दारए पट्ठे दुरूढे जाणित्ता सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उप्पयइ', उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए दिव्वाए देवगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुदीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव चंपा नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

रयणदीवदेवया-उवसग्ग-पवं

३७. तए णं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठइ, जं तत्थ तणं वा जाव' एगंते एडेइ, जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते मागंदिय-दारए पासायवडेंसए अपासमाणी जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छइ जाव' सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, करेत्ता तेसि मागंदिय-दारगाणं कत्थइ सुइं वा' *खुइं वा पउत्ति वा° अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले, एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहि पउजइ, ते मागंदिय-दारए सेलएणं सद्धि लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे पासइ, पासित्ता आसुरुत्ता असिखेडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्तट्ठ°तलप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं°उप्पयइ, उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए° देवगईए जेणेव मागंदिय-दारया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—हंभो मागंदिय-दारगा ! अपत्थियपत्थया ! किण्णं तुब्भे जाणह मम विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धि लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा ? तं एवमवि गए । जइ णं तुब्भे ममं

१. वतंति (ख); वतंति (ग, घ) ।

२. पाउप्पयइ (क) ।

३. ना० १।६।१६ ।

४. ना० १।६।२१ ।

५. सं० पा०—सुइ वा० ।

६. सं० पा०—सत्तट्ठ जाव उप्पयइ ।

७. पू०—ना० १।६।३६ ।

अवयक्खह तो भे अत्थि जीवियं । अहं णं नावयक्खह तो भे इमेणं नीलुप्पल-
गवल'गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेणं खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं माउ-
आहिं उवसोहियाइं तालफलाणि व सीसाइं एगंते° एडेमि ॥

३८. तए णं ते मागंदिय-दारगा रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म
अभीया अतत्था अणुविवग्गा अक्खुभिया असंभंता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो
आढंति' नो परियाणांति 'नो अवयक्खंति' अणाढामाणा अपरियाणमाणा
अणवयक्खमाणा सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुदं मज्झमज्झेणं वीईवयंति ॥

३९. तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए जाहे नो संचाएइ बहूहिं पडि-
लोमेहिं उवसग्गेहिं' चालित्तए वा 'लोभित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए
वा' ताहे महुरेहिं सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहिं' 'उवसग्गेउं पयत्ता'
यावि होत्था—हंभो मागंदिय-दारगा ! जइ णं तुब्भेहिं देवाणुप्पिया ! मए
सद्धिं हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कोलियाणि य हिंडियाणि य
मोहियाणि' य ताहे णं तुब्भे सव्वाइं अगणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं
सद्धिं लवणसमुदं मज्झमज्झेणं वीईवयह ॥

४०. तए णं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स मणं ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता
एवं वयासी—निच्चंपि य णं अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया
अमणुण्णा अमणामा । निच्चं मम जिणपालिए अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुण्णे
अमणामे । निच्चंपि य णं अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा ।
निच्चंपि य णं ममं जिणरक्खिए इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे । जइ णं ममं
जिणपालिए रोयमाणि कंदमाणि' सोयमाणि तिप्पमाणि' विलवमाणि नाव-
यक्खइ, किण्णं तुमंपि जिणरक्खिया ! ममं रोयमाणि'° कंदमाणि सोयमाणि

१. सं० पा०—गवल जाव एडेमि ।

२. आढायंति (क) ।

३. नावयक्खति (क) ।

४. अणाढायमाणा (क); अणाढेमाणा (ख);
अणाढामीणा (ग) ।

५. उवसग्गेहि य (ख, ग, घ) ।

६. लोभित्तए वा (क); खोभित्तए वा ११. × (ख, घ) ।

विपरिणामित्तए वा लोभित्तए वा (ख) ।

७. °सग्गेहि य (ख) ।

८. उवसग्गेहि य पत्ता (क); उवसग्गे उपयत्ता
(ख); उवसग्गेहि य उपयत्ता (ग) ।

९. एतच्च वाक्यं काक्वा व्याख्येयम्, ततः
उपालम्भः प्रतीयते (वृ) ।

१०. × (क) ।

११. × (ख, घ) ।

१२. सं० पा०—रोयमाणि जाव नावयक्खसि ।

तिप्पमाणि विलवमाणि ° नावयक्खसि' ?

१. अतोअे आदशेषु 'तए णं इति पदमस्ति । ततश्चाष्टौ श्लोकाः उल्लिखिताः सन्ति । वृत्त्यनुसारेण ते श्लोका वाचनान्तरवर्तिनः सन्ति, यथा—तए णं सा रयणदीवेत्यादि सूत्रं वाचनान्तरे रूपकविशेषेण द्वयं भ्रान्तिं करोति' (वृ) । तए णं सा रयणदीवेत्यस्मिन् सूत्रे 'जिणरक्खियस्स मणं ओहिणा आओएइ', इति वाक्यमस्ति,

'सा पवररयणदीवस्स, देवया ओहिणा जिणरक्खियस्स नाऊण ।'

वधनिमित्तं उर्वरि, मार्गदिय-दारगाण दोण्हं पि ॥१॥

दोसकलिया सललिय^१, नाणाविह-चुण्णवास-मीसं^२ दिब्बं ।

घाण-मण-निव्वुइकरं, सव्वोउय-सुरभिकुमुम-वुट्ठि पमुंचमाणी ॥२॥

नाणामणि-कणग-रयण-घटियल्लिखिणि नेउर-मेहल-भूसणरवेणं ।

दिसाओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं वेइ सा सकलुसा ॥३॥

होल ! वसुल ! गोल ! नाह ! दइत ! पिय ! रमण ! कंत ! सामिय ! निग्घण ! नित्थक्क !^४ ।

थिण्ण ! निक्किव^५ ! अकयण्णुय ! सिढिलभाव !, निल्लज्ज ! लुक्ख !

अकलुण ! जिणरक्खिय ! मज्झं ! हिययरक्खगा^६ ॥४॥

न हु जुज्जसि एक्कयं^७ अणाहं, अबंधवं तुज्झ चलण-ओवायकारियं^८ उज्झउमधनं ।

गुणसंकर ! हं तुमे विह्णा, न समत्था जीविउं खणपि ॥५॥

इमस्स उ अणेगभस्स-मगर-विविघसावय-सयाउलघरस्स रयणागरस्स मज्झे^९ ।

अप्पाणं बहेमि तुज्झ पुरओ, एहि नियत्ताहि जइ सि कुविओ खमाहि एगावराहं^{१०} मे ॥६॥

तुज्झ य 'विगयघण-विमलससिमंडलागार'^{११}—सस्सिरीयं,

सारयनवकमल-कुमुद-कुवल्य^{१२}—दलनिकरसरिस निभनयणं ।

वयणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउं जे,

अवल्लोएहि ता इओ ममं नाह ! जा ते पेच्छामि वयणकमलं ॥७॥

एव सप्पणय-सरल-महुराइं पुणो-पुणो कलुणाइं ।

वयणाइं जंपमाणी, सा पावा मग्गओ समण्णेइ पावहियया ॥८॥

एते श्लोकाः सन्ति अथवा गद्यभागोसौ इति

मुनिर्णीतं नासीत् । वृत्तिकृता एते श्लोकाः

इति मतं प्रदर्शितम्—पद्यबन्धं विना

तुकारादिनिपातानां पादपूर्णार्थानां निर्देशो न

घटते । अपरिमितानि च छन्दःशास्त्राणि

(वृ) ।

१. सा रयणदीवदेवता, ओहिणा जिणरक्खियस्स मणं नाऊण(क) ;

ज्ञात्वाभावमिति शेषः (वृ) । ५. निक्कव (ख) ।

२. सललियं (क) ; सलिलय (घ) । ६. ०रक्खग (ख) ।

३. मीसियं (क) । ७. एक्कियं (क, ग, घ) ।

४. नित्थक्क (क) । ८. उववायं (घ) ।

९. मज्झं [ग] । १०. एक्कां (क, ख, घ) ।

११. विगयघण-विमलं (ग), विगय-

घणविमलससिमंडल (वृपा) ।

१२. कुवल्य-विमल (क, ख) ;

कुवल्य-विमल (ग, घ) ; विमल

(वृपा) ।

जिणरक्खियविवत्ति-पदं

४१. तए णं से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेणं कण्णसुहमणहरेणं तेहि य सप्पणय-सरल-महुर-भणिएहिं संजाय-विउण-राए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुंदरथण-जहण'-वयण-कर-चरण-नयण-लावण'-रुव-जोवणसिंरिं च दिव्वं सरभस-उवगूहियाइं विव्वोय-विलसियाणि' य विहसिय-सकडक्खदिट्ठि'-निस्स-सिय-मलिय'-उवललिय'-थिय-गमण-पणयखिज्जिय-पसाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमती अवसे कम्मवसगए' अवयक्खइ मग्गतो सविलियं' ॥
४२. तए णं जिणरक्खियं समुप्पणकलुणभावं मच्चु-गलत्थल्ल'-णोल्लियमइं अवय-क्खंतं तहेव'' जक्खे उ सेलए जाणिऊण सणियं-सणियं'' उव्विहइ नियगपट्ठाहि विगयसद्धे'' ॥
४३. तए णं सा रयणदीवदेवया निस्संसा कलुणं जिणरक्खियं सकलुसा'' सेलगपट्ठाहि'' ओवयंतं—दास ! मओसिं त्ति जंपमाणी अपत्तं सागरसलिलं गेण्हिय वाहाहिं आरसंतं उड्ढं उव्विहइ अंवरत्ते ओवयमाणं च मंडलगणे पडिच्छित्ता नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगामेण'' असिवरेण खंडाखंडिं करेइ, करेत्ता तत्थेव'' विलवमाणं तस्स य सरस-वहियस्स घत्तूणं अंगमंगाइं सरुहिराइं उक्खित्तवलिं चउद्दिंसि'' करेइ, सा पंजली पहिट्ठा'' ॥
४४. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसयइ पत्थयइ पीह्इ अभिलसइ, से णं इहभवे चेव वहूणं समणाणं वहूणं समणीणं वहूणं सावयाणं वहूणं सावियाण य हीलणिज्जे जाव'' चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जा-भुज्जो अणुपरियट्ठिस्सइ—जहा व से जिणरक्खिए ।

१. जघण (ख) ।

नोपलभ्यते (वृपा) ।

२. लायण (क, ख) ।

१२. विगयसत्थे (वृ); विगयसद्धे (वृपा) ।

३. विलवियाणि (क, ख) ।

१३. अकलुणा (क) ।

४. कडक्ख ° (क, ख) ।

१४. °पुट्ठाहि (घ) ।

५. मणिय (वृपा) ।

१५. असोयप्पगासेण (ग) ।

६. ललिय (वृपा) ।

१६. तत्थ (ग, घ) ।

७. कम्मवसवेगनडिए (वृपा) ।

१७. चाउद्दिंसि (क) ।

८. सविलियं (ग) ।

१८. पहिट्ठा (क, ख) ।

९. गलत्थ (क); गल्लत्थल्ल (ख) ।

१९. ना० १।३।२४ ।

१०, ११. 'तहेव, सणियं' इत्येतत् पदद्वयं वाचनान्तरे

गाहा—

छलिओ अवयक्खंतो, निरवयक्खो' गओ अविग्घेणं ।
तम्हा पवयणसारे', निरावयक्खेण भवियव्वं ॥१॥
भोगे अवयक्खंता, पडंति संसारसागरे घोरे ।
भोगेहि निरवयक्खा, तरंति संसारकंतारं ॥२॥

जिणपालियस्स चंपागमण-पदं

४५. तए णं सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छइ, बहूहि अणुलो-
मेहि य पडिलोमेहि य खरएहि य मउएहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि
जाहे नो संचाएइ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे संता
तंता परित्तंता निव्विण्णा समाणा' जामेव दिसि' पाउब्भूया तामेव दिसि
पडिगया ॥
४६. तए णं से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धि लवणसमुद्धं मज्झमज्झेणं वीईवयइ,
वीईवइत्ता जेणेव चंपा नयरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चंपाए नयरीए
अग्गुज्जाणंसि जिणपालियं पट्टाओ ओयारेइ, ओयारेत्ता एवं वयासी—एस णं
देवाणुप्पिया ! चंपा नयरी दीसइ त्ति कट्ठु जिणपालियं पुच्छइ, जामेव दिसि
पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥
४७. तए णं से जिणपालिए चंपं नयरि अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे
जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे'
•कंदमाणे सोयमाणे तिप्पमाणे° विलवमाणे जिणरक्खिय-वावत्ति' निवेदेइ ॥
४८. तए णं जिणपालिए अम्मापियरो [य?] मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-संबंधि°
परियणेण सद्धि 'रोयमाणा कंदमाणा सोयमाणा तिप्पमाणा विलवमाणा'
बहूइ लोइयाइं मयक्किच्चाइं करेति, करेत्ता कालेण विगयसोया जाया ॥
४९. तए णं जिणपालियं अण्णया कयाइं सुहासणवरगयं अम्मापियरो एवं वयासी—
कहण्णं पुत्ता ! जिणरक्खिए कालगए ?
५०. तए णं से जिणपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्धोत्तारं च कालियवाय-संमुच्छणं
च पोयवहण-विवत्ति च फलहखंड'-आसायणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीव-

१. निरवेक्खो (ग) ।

२. °सारेण (ग); चारित्रे लब्धे सतीति
गम्यते (वृ) ।

३. समाणी (क) ।

४. दिसं (क) ।

५. सं० पा०—रोयमाणे जाव विलवमाणे

६. वावित्ति (ख, ग) ।

७. सं० पा०—नाइ जाव परियणेण ।

८. रोयमाणाइं (क, ख, ग, घ) ।

९. फलखंड (क) ।

देवया—गिण्हणं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवया-आघयणं च सूलाइयपुरिस-
दरिसणं च सेलगजक्खआरुहणं च रयणदीवदेवया-उवसगं च जिणरक्खिय-
वार्वत्तिं च लवणसमुद्दुत्तरणं च चंपागमणं च सेलगजक्खआपुच्छणं च”
जहाभूयमवितहमसंदिद्धं परिकहेइ ॥

५१. तए णं से जिणपालिए ‘अप्पसोगे [जाए ?] जाव” विपुलाइं भोगभोगाईं
भुजमाणे विहरइ ॥
५२. तेणं कालेणं तेणं समएणं ‘समणे भगवं महावीरे” समोसढे । जिणपालिए
धम्मं सोच्चा पव्वइए । एगारसंगवी । मासियाए संलेहणाए अप्पाणं भोसेत्ता,
सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए
उववण्णे । दो सागरोवमाइं ठिई । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव” सव्व-
दुक्खाणमंतं काहिइ ॥
५३. एवामेव समणाउसो ! • जो अम्हं निगंथो वा निगंथो वा आयरिय-उवज्झा-
याणं अंतिए मंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे • माणुस्सए
कामभोगे नो पुणरवि आसयइ पत्थयइ पीहेइ, मेणं इह भवे चेव बहूणं समणाणं
बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे जाव” चाउरंतं
संसारकंतारं वीईवइस्सइ—जहा व से जिणपालिए ॥

निकस्सेव-पुर्व

५४. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव”

१. अप्पाहणं (क, ख, ग, घ) । अत्र पूर्वक्रमानु-
सारेण ‘आघयणं’ इति पाठो युज्यते,
द्रष्टव्यम्—२५ सूत्रम् । सम्भवतो लिपिदोषेण
‘आघयणं’ इत्यस्य स्थाने ‘अप्पाहणं’ इति
जातम् । अत्र अस्मार्थोपि नावगम्यते ।
२. विवर्त्ति (क, ख, ग, घ) । ४७ सूत्रानुसारेण
अत्र परिवर्त्तनं कृतम् ।
३. सेलगजक्खआपुच्छणं च चंपागमणं च (क);
सेलगजक्खआपुच्छणं च (ग) ।
४. जाव अप्पसोगे जाव (क, ख, ग, घ);
अस्यैवाध्ययनस्य ४६ सूत्रे ‘विगयसोया
जाया’ इत्युल्लेखोस्ति । अत्र पुनरपि
‘अप्पसोगे’ इत्युल्लेखो विद्यते । द्वयोरपि
‘जाव’ पदयोः पूर्तिस्थलं एतत् तुल्यप्रकरणेषु

नोपलब्धम् । अत्र प्रथमं ‘जाव’ पदं अना-
वश्यकं प्रतिभाति । ‘अप्पसोगे जाए जाव’
यद्येवं पाठः परिकल्पेत तदा ‘जाव’ पदं न
पूर्तिसूचकं भवति ।

५. समणे भगवया महावीरेणं (क); समणे (ख,
ग,); समणे भगवं महावीरे जाव जेणेव चंपा
नयरी पुण्णभट्टे चेइए तेणेव समोसढे परिस्सा
निगगया कूणिओ वि राया निगगो (घ) ।
६. × (क, ख, ग) ।
७. ना० १।१।२१२ ।
८. सं० पा०—समणाउसो जाव माणुस्सए ।
९. ना० १।२।७३ ।
१०. ना० १।१।७ ।

सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं नवमस्स नायज्जयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्रता निगमनगाथा—

जह रयणदीवदेवी, तह एत्थं अविरई महापावा ।
 जह लाहत्थी वणिया, तह सुहकामा इहं जीवा ॥१॥
 जह तेहि भीएहि, दिट्ठो आघायमंडले पुरिसो ।
 संसारदुक्खभीया, पासति तहेव धम्मकहं ॥२॥
 जह तेण तेसि कहिया, देवी दुक्खाण कारणं घोरं ।
 तत्तो चिय नित्थारो, सेलगजक्खाउ नन्नत्तो ॥३॥
 तह धम्मकही भव्वाण, साहए दिट्ठअविरइसहावा ।
 सयलदुहहेउभूया, विसया विरयंति जीवा णं ॥४॥
 सत्ताण दुहत्ताणं, सरणं चरणं जिणिदपण्णत्तं ।
 आणंदरूव-निव्वाण-साहणं तह य दंसेइ ॥५॥
 जह तेसि तरियव्वो, रुदसमुदो तहेह संसारो ।
 जह तेमि सगिहगमणं, निव्वाणगमो तहा एत्थ ॥६॥
 जह सेलगपट्ठाओ, भट्ठो देवीए मोहियमई उ ।
 सावय-सहस्सपउरम्मि, सायरे पाविओ निहणं ॥७॥
 तह अविरईइ नडिओ, चरणचुओ दुक्खसावयाइण्णो ।
 निवडइ 'अगाह-संसार-सागरं अणंतमविकालं' ॥८॥
 जह देवीए अक्खोहो, पत्तो सट्ठाण-जीवियसुहाइं ।
 तह चरणठिओ साहू, अक्खोहो जाइ निव्वाणं ॥९॥

दसमं अज्झयणं

चंदिमा

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, दसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठं पणत्ते ?

परिहायमाण-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कान्हेणं तेणं समाणं रायगिहे नयरे' गोयमो एवं वयासी—
कहण्णं' भंते ! जीवा वड्डंति वा हायंति वा ?
गोयमा ! से जंहानामाणं बहुलक्खस्स पाडिवय'-चंदे पुण्णिमा-चंदं पणिहाय
हीणे वण्णेणं हीणे सोम्माए' हीणे निद्धयाए हीणे कंतीए एवं—दित्तीए जुत्तीए
छायाए पभाए ओयाए लेसाए' हीणे मंडलेणं ।
तयाणंतरं च णं वीयाचंदे पाडिवय'-चंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव
हीणतराए मंडलेणं ।
तयाणंतरं च णं तइया'-चंदे वीया'-चंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव हीण-
तराए मंडलेणं ।
एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे-परिहायमाणे जाव अमावसा-चंदे चाउद्दिसि-
चंदं पणिहाय नट्ठे वण्णेणं जाव नट्ठे मंडलेणं ॥

१. नयरे सामी समोसठे परिसा निग्गया (घ) । ५. लेस्साए (क, ख) ।
२. कहणं (ख, ग) । ६. पडिवयं (घ) ।
३. पडिवय (क); पडिवया (ख, घ); ७. ततिया (ख, ग, घ) ।
पाडिवया (ग) । ८. बितिया (क, ख, ग, घ)
४. सम्मेताए (क) ।

३. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा निगंथी वा' •आयरिय-उवज्झायाणं अंति ए मुंडे भवित्ता | अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे हीणे खंतीए एवं—मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेणं मद्देवेणं लाघवेणं सच्चेणं तवेणं चियाए अकिंचणयाए हीणे बंभचेरवासेणं ।
तयाणंतरं च णं हीणतराए खंतीए जाव हीणतराए बंभचेरवासेणं ।
एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे-परिहायमाणे नट्टे खंतीए जाव नट्टे बंभचेर-वासेणं ॥

परिवड्ढमाण-पदं

४. से जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवय'-चंदे अमावसा-चंदं पणिहाय अहिए वण्णेणं' •अहिए सोम्माए अहिए निद्धयाए अहिए कंतीए एवं—दित्तीए जुत्तीए छायाए पभाए ओयाए लेसाए° अहिए मंडलेणं ।
तयाणंतरं च णं वीया-चंदे पाडिवय-चंदं पणिहाय अहिययराए वण्णेणं जाव अहिययराए मंडलेणं ।
एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढमाणे-परिवड्ढमाणे जाव पुण्णिमा-चंदे चाउद्दिसि-चंदं पणिहाय पडिपुण्णे वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं ॥
५. एवामेव समणाउसो' ! •जो अम्हं निगंथो वा निगंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंति ए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे अहिए खंतीए' •एवं—मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेणं मद्देवेणं लाघवेणं सच्चेणं तवेणं चियाए अकिंचणयाए अहिए° बंभचेरवासेणं ।
तयाणंतरं च णं अहिययराए खंतीए जाव अहिययराए बंभचेरवासेणं ।
एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढमाणे-परिवड्ढमाणे पडिपुण्णे खंतीए जाव पडि-पुण्णे बंभचेरवासेणं ।
एवं खलु जीवा वड्ढंति वा हायंति वा ॥

निक्खेव-पदं

६. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

१. सं० पा०—निगंथी वा जाव पव्वइए ।
२. पाडिवया (क, ख); पडिवया (ग, घ) ।
३. सं० पा०—वण्णेणं जाव अहिए ।

४. सं० पा०—समणाउसो ! जाव पव्वइए ।
५. सं० पा०—खंतीए जाव बंभचेरवासेणं ।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह चंदो तह साहू, राहुवरोहो जहा तह पमाओ ।
वण्णाइगुणगणो जह, तहा खमाइसमणघम्मो ॥१॥
पुण्णोवि पइदिणं जह, हायंतो सब्बहा ससी नस्से ।
तह पुण्णचरित्तो वि हु, कुसीलसंसग्गिमाईहिं ॥२॥
जणिय-पमाओ साहू, हायंतो पइदिणं खमाईहिं ।
जायइ नट्टचरित्तो, ततो दुक्खाइ पावेइ ॥३॥
हीणगुणो वि हु होउं, सुहगुरुजोगाइ-जणियसंवेगो ।
पुण्णसरूवो जायइ, विवद्धमाणो ससहरोव्व ॥४॥

— — —

एककारसमं अज्भयणं

दावद्दे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, एककारसमस्स णं भंते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पणत्ते ?

देसविराहय-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे गोयमो एवं वयासी—
कहण्णं भंते ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति ?
गोयमा ! मे जहानामए एगसि समुद्कूलंसि दावद्दे नामं रुक्खा पणत्ता—
किण्हा जावं निउरंवभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा^१
सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।
जया णं दीविच्चगा^२ ईसि^३ पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति,
तया णं वहवे दावद्दे रुक्खा पत्तिया^४ •पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा
सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा^५ चिट्ठंति । अप्पेगइया दावद्दे
रुक्खा जुण्णा ऋडा^६ परिसडिय-पंडुपत्त-पुप्फ-फला सुक्करुक्खओ विव मिलाय-
माणा-मिलायमाणा चिट्ठंति ॥
३. एवामेव समणाउसो^७ ! जो अम्हं निगंथो वा निगंथी वा^८ •आयरिय-

१. कह णं (ख, ग, घ) ।

२. ना० १।७।१३ ।

३. रेरिज्जमाणा-रेरिज्जमाणा (क, ग) ।

४. दीविच्चगा (ख, ग, घ) ।

५. ईसि (क, घ) ।

६. सं० पा०—पत्तिया जाव चिट्ठंति ।

७. ज्मोडा (क, ख); ऋडा (ग) ।

८. समणातोसो (ग) ।

९. सं० पा०—निगंथी जाव पब्बइए ।

उवञ्जायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य सम्मं सहइ^१ ° खमइ तितिकखइ ° अहियासेइ, बहूणं अणउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहइ जाव नो अहियासेइ—एस णं मए पुरिसे देसविराहए पणत्ते ॥

देसाराहय-पदं

४. समणाउसो ! जया णं सामुद्गा^२ ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति, तया णं बह्वे दावद्वा रुक्खा जुण्णा भोडा^३ ° परिसडिय-पंडुपत्त-पुप्फ-फला सुक्करुक्खओ विव ° मिलायमाणा-मिलायमाणा चिट्ठंति । अप्पेगइया दावद्वा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया फलिया ° हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव ° उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥
५. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा निगंथो वा^४ ° आयरिय-उवञ्जायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइए समाणे बहूणं अणउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ खमइ तितिकखइ अहियासेइ, बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य नो सम्मं सहइ जाव नो अहियासेइ—एस णं मए पुरिसे देसाराहए पणत्ते ॥

सव्वविराहय-पदं

६. समणाउसो ! जया णं नो दीविच्चगा नो सामुद्गा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति, तया णं सव्वे दावद्वा रुक्खा जुण्णा भोडा परिसडिय-पंडुपत्त-पुप्फ-फला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा-मिलायमाणा चिट्ठंति । अप्पेगइया दावद्वा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्ज-माणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥
७. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा निगंथो वा आयरिय-उवञ्जायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं बहूणं अणउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहइ जाव^५ नो अहियासेइ—एस णं मए पुरिसे सव्व-विराहए पणत्ते ॥

सव्वाराहय-पदं

८. समणाउसो ! जया णं दीविच्चगा वि सामुद्गा वि ईसिं पुरेवाया पच्छावाया

१. सं० पा०—सहइ जाव अहियासेइ ।

२. समुद्गा (ख, घ) ।

३. सं० पा०—भोडा जाव मिलायमाणा ।

४. सं० पा०—फलिया जाव उवसोभेमाणा ।

५. सं० पा०—निगंथो वा जाव पव्वइए ।

६. ना० १।१।३ ।

मंदावाया महावाया वायंति, तथा णं सव्वे दावद्वा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

६. एवामेव समणाउसो ! जो अम्महं निग्गंथो वा निग्गंथो वा आयरिय-उवज्झायाणं अतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ खमइ तित्तिक्खइ अहियासेइ—एस णं मए पुरिसे सव्व-आराहए पणत्ते । एवं खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति ॥

निक्खेव-पदं

१०. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह दावद्द-‘तरुणो, एवं’ साहू जहेह दीविच्चा ।
 वाया तह समणा इय, सपक्ख-वयणाइं दुसहाइं ॥१॥
 जह सामुद्द-वाया, तहण्णत्तिथाइ-कडुयवयणाइं ।
 कुसुमाइं संपया जह, सिवमगाराहणा तह उ ॥२॥
 जह कुसुमाइ-विणासो, सिवमग-विराहणा तहा णेया ।
 जह दीववायु-जोगे, बहु इड्ढी ईसि य अणिड्ढी ॥३॥
 तह साहम्मिय-वयणाण, सहणमाराहणा भवे बहुया ।
 इयराणमसहणे, पुण सिवमग-विराहणा थोवा ॥४॥
 जह जलहिवाय-जोगे, थेविड्ढी बहुयरा अणिड्ढी य ।
 तह परपक्खक्खमणे, आराहणमीसि बहु इयरं ॥५॥
 जह उभयवाय-विरहे, सव्वा तरुसंपया विणट्ठत्ति ।
 अणिमित्तोभय-मच्छर-रूवेह विराहणा तह य ॥६॥
 जह उभयवाय-जोगे, सव्वसमिद्धी वणस्स संजाया ।
 तह उभयवयण-सहणे सिवमगाराहणा पुण्णा ॥७॥
 ता पुण्णसमणधम्माराहणचित्तो सया महापुण्णो^१ ।
 सव्वेण वि कीरंतं, सहेज्ज सव्वं पि पडिक्कूलं ॥८॥

बारसमं अज्झयणं

उवगणाए

उवखेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, बारसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी । पुण्णभट्ठे चेइए । जियसत्तू राया । धारिणी देवी । अदीणसत्तू कुमारे जुवराया वि होत्था । सुबुद्धी अमच्चे जाव' रज्जघुराचितए, समणोवासए ॥

फरिहोवग-पदं

३. तीसे णं चंपाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमेणं एगे फरिहोदए यावि होत्था—
मेय-वसा-रुहिर-मंस-पूय-पडल-पोच्चडे मयग-कलेवर-संछण्णे अमणुण्णे वण्णेणं^१
●अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे ° फासेणं, से जहानामए—अहिमडे
इ वा गोमडे इ वा जाव' मय-कुहिय-विणट्ठ-किमिण-वावण्ण-दुरभिगंधे किमि-
जालाउले संसत्ते असुइ-विगय-वीभच्छ-दरिसणिज्जे । भवेयारूवे सिया ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एत्तो अणिट्ठतराए चेव' ●अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव
अमणुण्णतराए चेव अमणामतराए चेव ° गंधेणं पण्णत्ते ॥

जियसत्तुणा पाणभोयणपसंसा-पदं

४. तए णं से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ ण्हाए कयवलिकम्मे जाव'

१. ना० १।८।४२ ।

४. सं० पा०—अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेणं ।

२. सं० पा०—वण्णेणं जाव फासेणं ।

५. ना० १।१।२७ ।

३. ना० १।८।४२ ।

अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहि ईसर' जाव' सत्थवाहपभिईहि सद्धि भोयणमंडवंसि भोयणवेलाए सुहासणवरगए विउलं असणं' °पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे एवं च णं ° विहरइ । जिमियभुत्तुत्तरागए' वि य णं समाणे आरयंते चोक्खे परम ° सुइभूए तंसि विपुलंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि जायविम्हए ते बह्वे ईसर जाव' सत्थवाहपभिइओ एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे वण्णेणं उववेए' °गघेणं उववेए रसेणं उववेए ° फासेणं उववेए अस्सायणिज्जे विसायणिज्जे 'पीणणिज्जे दीवणिज्जे' ° दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिहणिज्जे सव्विदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥

५. तए णं ते बह्वे ईसर जाव' सत्थवाहपभिइओ जियसत्तुं रायं एवं वयासी—तहेव णं सामी ! जणं तुम्हे' वयह—अहो णं इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे वण्णेणं उववेए जाव' ° सव्विदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥

सुबुद्धिस्स उवेहा-पदं

६. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे जाव' ° सव्विदियगाय-पल्हाय-णिज्जे ॥
७. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ' ° नो परियाणाइ ° तुसिणीए संचिट्ठइ ॥
८. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—अहो णं देवाणु-प्पिया सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे' ° असण-पाण-खाइम-साइमे जाव' ° सव्विदियगाय ° -पल्हायणिज्जे ॥
९. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रण्णा दोच्चंपि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे

१. राईसर (ग) ।

२. ना० १।७।६ ।

३. सं० पा०—असणं जाव विहरइ ।

४. सं० पा०—° भुत्तुत्तरागए जाव सुइभूए ।

५. ना० १।७।६ ।

६. सं० पा०—उववेए जाव फासेणं ।

७. दीवणिज्जे पीणणिज्जे (क, घ); दीवणिज्जे

(ख); वीयणिज्जे दीवणिज्जे परियणिज्जे

(ग) ।

८. ना० १।७।६ ।

९. तुम्हे (ख); तुम्हं (ग, घ) ।

१०. ना० १।१२।४ ।

११. ना० १।१२।४ ।

१२. सं० पा०—आढाइ जाव तुसिणीए ।

१३. सं० पा०—मणुण्णे तं चेव जाव पल्हाय-णिज्जे ।

१४. ना० १।१२।४ ।

जियसत्तुं रायं एवं वयासी—नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि मणुणंसि असण-
पाण-खाइम-साइमंसि केइ विम्हए ।

एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दा वि पोग्गला दुब्भिसद्दाए परिणमंति, दुब्भिसद्दा
वि पोग्गला सुब्भिसद्दाए परिणमंति । सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिण-
मंति, दुरूवा वि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति । सुब्भिगंधा वि पोग्गला
दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति, दुब्भिगंधा वि पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति ।
सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति, दुरसा वि पोग्गला सुरसत्ताए परिण-
मंति । सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमंति, दुहफासा वि पोग्गला
सुहफासत्ताए परिणमंति, पम्भोग-वीससा-परिणया वि य णं सामी ! पोग्गला
पण्णत्ता ॥

१०. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स
पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणइ तुसिणीए
संचिट्ठइ ॥

जियसत्तुणा फरिहोदयस्स गरंहा-पवं

११. तए णं से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ ण्हाए आसखंधवरगए महयाभड-
चडगर-आसवाहिणिआए' निज्जायमाणे तस्स फरिहोदयस्स अदूरसामंतेणं
वीईवयइ ॥
१२. तए णं जियसत्तू राया तस्स फरिहोदयस्स असुभेणं गंधेणं अभिभूए समाणे
सएणं उत्तरिज्जगेणं आसगं 'पिहेइ, पिहेत्ता' एगंतं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता
बहवे ईसर जाव' सत्थवाहपभियओ एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे
फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे फासेणं,
से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव' अमणामतराए चैव गंधेणं पण्णत्ते ॥
१३. तए णं ते बहवे ईसर' जाव' सत्थवाहपभियओ एवं वयासी—तहेव णं तं सामी !
जं णं तुब्भे' वयह—अहो णं इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं अमणुण्णे गंधेणं
अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे फासेणं, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव' अमणाम-
तराए चैव गंधेणं पण्णत्ते ॥
१४. तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—अहो णं सुबुद्धी ! इमे
फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे फासेणं,
से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव' अमणामतराए चैव गंधेणं पण्णत्ते ॥

१. °बाहणियाए (क) ।

२. पिहेइ (क) ।

३. ना० १।७।६ ।

४. ना० १।१२।३ ।

५. राईसर (क, ख, घ) ।

६. ना० १।७।६ ।

७. तुब्भे एवं (क, ख, ग, घ) ।

८, ९. ना० १।१२।३ ।

सुबुद्धिस्स उचेहा-पदं

१५. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे^१ •जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ • तुसिणीए संचिट्ठइ ॥
१६. तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्चं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—अहो णं^२ •सुबुद्धी ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे फासेणं, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव^३ अमणामतराए चेव गंधेणं पण्णत्ते • ॥
१७. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रण्णा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे एवं वयासी—नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए । एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दा वि पोग्गला दुब्भिसद्दाए परिणमंति^४, •दुब्भिसद्दा वि पोग्गला सुब्भिसद्दाए परिणमंति । सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति, दुरूवा वि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति । सुब्भिगंधा वि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति, दुब्भिगंधा वि पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति । सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति, दुरसा वि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति । सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमंति, दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति • । पओग-वीससा-परिणया वि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता ॥

जियसत्तुस्स विरोध-पदं

१८. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्चं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं च बहूणि य असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिनिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि ॥

सुबुद्धिणा जलसोधन-पदं

१९. तए णं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं जियसत्तू राया संते^५ तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते भावे नो^६ उवलभइ । तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूयाणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता पच्चइएहि पुरिसेहि सद्धि अंतरावणाओ^७

१. सं० पा०—अमच्चे जाव तुसिणीए ।

२. सं० पा०—अहो णं तं चेव ।

३. ना० १।१२।३ ।

४. सं० पा०—परिणमंति तं चेव ।

५. सच्चे (स) ।

६. नो सद्धइ (क) ।

७. अब्भितरावणाओ (क)

नवए घडए य पडए य गेण्हइ, गेण्हित्ता संभाकालसमयंसि विरलमणूसंसि निसंत-पडिनिसंतंसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं फरिहोदणं गेण्हावेइ, गेण्हावित्ता नवएसु पडएसु^१ गालावेइ^२, गालावेत्ता नवएसु घड-एसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता सज्जखारं पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता लंछिय-मुद्दिए कारावेइ^३, कारावेत्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ^४, परिवसावेत्ता दोच्चंपि नवएसु पडएसु^५ गालावेइ, गालावेत्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवा-वेत्ता सज्जखारं पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता लंछिय-मुद्दिए कारावेइ, कारावेत्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ^६, परिवसावेत्ता तच्चंपि नवएसु पडएसु^७ *गालावेइ, गाला-वेत्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता सज्जखारं पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता लंछिय-मुद्दिए कारावेइ, कारावेत्ता सत्तरत्तं ° संवसावेइ^८ । एवं खलु एएणं उवाएणं अंतरा गालावेमाणे अंतरा पक्खिवावेमाणे अंतरा य संवसा-वेमाणे^९ सत्तसत्तं य राइंदियाइं परिवसावेइ । तए णं से फरिहोदए सत्तमंसि^{१०} सत्तयंसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाए यावि होत्था—अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फालियवण्णाभे वण्णेणं उववेए गंधेणं उववेए रसेणं उववेए फामेणं उव-वेए आसायणिज्जे^{११} *विसायणिज्जे पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिहणिज्जे ° सव्विदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥

सुबुद्धिणा अलपेसण-पदं

२०. तए णं सुबुद्धी जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलंसि आसादेइ, आसादेत्ता तं उदगरयणं वण्णेणं उववेयं गंधेणं उववेयं रसेणं उववेयं फामेणं उववेयं आसायणिज्जे^{१२} *विसायणिज्जे पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिहणिज्जे ° सव्विदियगाय-पल्हायणिज्जे जाणित्ता हट्ठुट्ठे बहूहि

१. घडएसु (क, ख, ग, घ) । अस्मिन्नेव सूत्रे 'अंतरावणाओ नवए घडए य पडए य गेण्हइ' इति पाठोस्ति तथा 'गालावेइ' इति क्रियापदस्यार्थोऽपि 'पडए' इति पदेन सम्बद्धोस्ति, तेन 'घडएसु गालावेइ' इत्यस्य स्थाने सर्वत्र 'पडएसु गालावेइ' इति पाठो युज्यते । सम्भवतो लिपिदोषेण अत्र वर्ण-विपर्ययो जातः ।

२. गालावेइ (ख) ।

३. लंछिए (ख) ।

४. कारावेइ (ख) ।

५. परिवसावेइ (ख) ।

६. पडएसु (क, ख, ग, घ) ।

७. परिवसावेइ (ख) ।

८. सं० पा०—घडएसु जाव संवसावेइ । सर्वासु प्रतिषु 'घडएसु' इत्येव पाठो लभ्यते ।

९. पूर्वं 'परिवसावेइ' पाठो विद्यते, अत्र 'संव-सावेइ' पाठोस्ति । एतत् परिवर्तनं किमर्थं कृतमिति न ज्ञायते ।

१०. वसावेमाणे (ख, ग, घ) ।

११. सत्तम (ख) ।

१२. सं० पा०—आसायणिज्जे जाव सव्विदिय ° ।

१३. सं० पा०—आसायणिज्जे जाव सव्विदिय ° ।

उदगसंभारणिज्जेहिं दब्बेहिं संभारेइ, संभारेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो पाणिय-
घरियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया ! इमं उदगरयणं
गेण्हाहि, गेण्हित्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि ॥

जियसत्तुणा उदगरयणपसंसा-पदं

२१. तए णं से पाणिय-घरिए सुबुद्धिस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ', पडिसुणेत्ता तं उदगरयणं
गेण्हइ, गेण्हित्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ ॥
२२. तए णं से जियसत्तू राया तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसाएमाणे'
•विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे एवं च णं ° विहरइ । जिमियभुत्तु-
त्तरागए वि य णं ° समाणे आयंते चोक्खे ° परमसुइभूए तंसि उदगरयणंसि
जायविम्हए ते बह्वे राईसर जाव' सत्थवाहपभिइओ एवं वयासी—अहो णं
देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव' सव्विदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥
२३. तए णं ते बह्वे राईसर जाव' सत्थवाहपभिइओ एवं वयासी—तहेव णं सामी !
जणं तुब्भे वयह'—इमे उदगरयणे अच्छे जाव' सव्विदियगाय ° -
पल्हायणिज्जे ॥

जियसत्तुणा उदगाणयणपुच्छा-पदं

२४. तए णं जियसत्तू राया पाणिय-घरियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं
तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ' आसादिते ?
२५. तए णं से पाणिय-घरिए जियसत्तुं एवं वयासी—एस णं सामी ! मए
उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसादिते ॥
२६. तए णं जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—अहो णं
सुबुद्धी ! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुण्णे अमणामे जेणं
तुमं मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि ? तं एस णं
तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ उवलद्धे ?

सुबुद्धिस्स उत्तर-पदं

२७. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी—एस णं सामी ! से फरिहोदए ॥

१. पडिसुणाति (ख) ।

२. सं० पा०—आसाएमाणे जाव विहरइ ।

३. सं० पा०—य णं जाव परमसुइभूए ।

४. ना० १।७।६ ।

५. ना० १।१२।१६ ।

६. ना० १।७।६ ।

७. सं० पा०—जाव एवं चैव पल्हायणिज्जे ।

८. ना० १।१२।१६ ।

९. कत्तो (ख); कत्तो (ग) ।

२८. तए णं से जियसत्तु सुबुद्धि एवं वयासी—केणं कारणेणं सुबुद्धी ! एस से फरिहोदए ?

२९. तए णं सुबुद्धी जियसत्तु एवं वयासी—एवं खलु सामी ! तुम्हे तया मम एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहह । तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था—अहो णं जियसत्तु राया संते' *तच्चे तहिए अवितहे सम्भूए जिणपण्णत्ते ° भावे नो सद्दहह नो पत्तियइ नो रोएइ । तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो संताणं' *तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं ° सम्भूयाणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए -- एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता तं चेव जाव' पाणिय-घरियं सद्दावेमि, सद्दावेत्ता एवं वदामि—तुमं णं देवाणुप्पिया ! उदगरयणं जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेहि । तं एएणं कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए ॥

जियसत्तुणा जलसोधन-पदं

३०. तए णं जियसत्तु राया सुबुद्धिस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहह नो पत्तियइ नो रोएइ, असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! अंतरावणाओ नवए घडए पडए य गेण्हह जाव' उदगसंभारणिज्जेहि दव्वेहि संभारेह । तेवि तहेव संभारेंति, संभारेत्ता जियसत्तुस्स उवणेंति ॥

जियसत्तुस्स जिण्णासा-पदं

३१. तए णं से जियसत्तु राया तं उदगरयणं करयलंसि आसाएइ, आसाएत्ता आसायणिज्जं जाव' सव्विदियगाय-पल्हायणिज्जं जाणित्ता सुबुद्धि अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—सुबुद्धी ! एए णं तुमे संता तच्चा' तहिया अवितहा ° सम्भूया भावा कम्मो उवलद्धा ?

सुबुद्धिस्स उत्तर-पदं

३२. तए णं सुबुद्धी जियसत्तु एवं वयासी—एए णं सामी ! मए संता' *तच्चा तहिया अवितहा सम्भूया ° भावा जिणवयणाओ उवलद्धा ॥

१. सं० पा०—संते जाव भावे ।

५. ना० १।१२।४ ।

२. सं० पा०—संताणं जाव सम्भूयाणं ।

६. सं० पा०—तच्चा जाव सम्भूया ।

३. ना० १।१२।१६, २० ।

७. सं० पा०—संता जाव भावा ।

४. ना० १।१२।१६, २० ।

३३. तए णं जियसत्तू सुबुद्धि एवं वयासी—तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तव अंतिए जिणवयणं निसामित्तए ॥

जियसत्तूस्स समणोवासयत्त-पदं

३४. तए णं सुबुद्धी जियसत्तूस्स विचित्तं केवलिपणत्तं चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ^१ ।

३५. तए णं जियसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे सुबुद्धि अमच्चं एवं वयासी—सद्दहामि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं^२ । *पत्तियामि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं । रोएमि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं । अब्भुट्ठेमि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं देवाणुप्पिया ! तहमेयं देवाणुप्पिया ! अवितहमेयं देवाणुप्पिया ! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! * से जहेयं तुब्भे वयह । तं इच्छामि णं तव अंतिए 'चाउज्जामियं गिहिधम्मं'^३ उवसंपज्जिता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेह ॥

३६. तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए चाउज्जामियं^४ गिहिधम्मं पडिवज्जइ ॥

३७. तए णं जियसत्तू समणोवासए जाए—अहिगयजीवाजीवे जाव^५ पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

पव्वउजा-पदं

३८. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं । जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ^६ । सुबुद्धी धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी—जं नवरं—जियसत्तू आपुच्छामि^७ *तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं * पव्वयामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया !

३९. तए णं सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मए थेराणं अंतिए धम्मे निसंते । से वि य धम्मे 'इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए'^८ । तए णं अहं सामी ! संसारभउव्विग्गे भीए'^९ *जम्मण-

१. परिकहेइ तमाइक्खइ, जहा—जीवा बज्जंति जाव पंचाणुव्वयाइ । द्रष्टव्यम्—१।५।४५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

२. सं० पा०—पावयणं जाव से जहेयं ।

३. पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं जाव (क, ख, ग, घ) । द्रष्टव्यम्—१।५।४५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

४. पंचाणुव्वइयं जाव दुवालसविहं (क, ख, ग, घ) ।

द्रष्टव्यम्—१।५।४५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

५. ना० १।५।४७ ।

६. निग्गच्छति (क, ग) ।

७. पू०—ना० १।१।१०१ ।

८. सं० पा०—आपुच्छामि जाव पव्वयामि ।

९. इच्छिए पडिच्छिए ३ (क); इच्छियपडिच्छिए (ख, ग) ।

१०. सं० पा०—भीए जाव इच्छामि ।

जर-मरणाणं ° इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए' °समाणे थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं ° पव्वइत्तए ॥

४०. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं एवं वयासी—अच्छसु' ताव देवाणुप्पिया ! कइवयाइं वासाइं उरालाइं °माणुस्सगाइं भोगभोगाइं ° भुंजमाणा तओ पच्छा एगयो' थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता' °णं अगाराओ अणगारियं ° पव्वइस्सामो ॥

४१. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥

४२. तए णं तस्स जियसत्तुस्स रण्णो सुबुद्धिणा सद्धि विपुलाइं माणुस्सगाइं काम-भोगाइं' पच्चणुढभवमाणस्स दुवालस वासाइ वीइक्कंताइं ॥

४३. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं । जियसत्तू राया धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी—जं नवरं—देवाणुप्पिया ! सुबुद्धिं अमच्चं आमंतेमि, जेट्ठपुत्तं रज्जे ठावेमि', तए णं तुब्भण्णं °अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं ° पव्वयामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया !

४४. तए णं जियसत्तू राया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सुबुद्धिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु मए थेराणं अंतिए धम्मे निसंते जाव" पव्वयामि । तुमं णं किं करेसि" ?

४५. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं रायं एवं वयासी"—°जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विगा जाव" पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया ! के अण्णे आहारे वा आलंवे वा ? अहं वि य णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विगे जाव ° पव्वयामि" । तं जइ णं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वाहि । गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्तं" कुडुबे ठावेहि, ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणि सीयं दुरुहत्ता णं ममं अंतिए पाउब्भवउ । सो वि तहेव पाउब्भवइ ॥

१. सं० पा०—अब्भणुण्णाए जाव पव्वइत्तए ।

१०. ना० १।१२।३६ ।

२. तस्य (क); अच्छासु (ख, ग); अच्छ (घ) ।

११. पू०—ना० १।५।८६ ।

३. कतिवयांति (ख, ग) ।

१२. सं० पा०—वयासी जाव के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामि ।

४. सं० पा०—उरालाइं जाव भुंजमाणा ।

१३. ना० १।५।८६ ।

५. एगओ (ख, ग) ।

१४. पव्वामि (क, ग) ।

६. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइस्सामो ।

१५. °पुत्तं च (क, ख, ग) ।

७. जाव (क) ।

८. ठावेमि (ख, ग, घ) ।

९. तुब्भे णं (ख, घ); सं० पा०—तुब्भण्णं जाव पव्वयामि ।

४६. तए णं जियसत्तू राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्टवेह । ते वि तहेव उवट्टवेंति जाव' अभिसिच्चति' जाव' पव्वइए ॥
४७. तए णं जियसत्तू रायरिसी' एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता', बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता जाव' सिद्धे ॥
४८. तए णं सुबुद्धी एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता जाव' सिद्धे ॥

निक्खेव-पदं

४९. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं बारसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धता निगमनगाथा—

मिच्छत्त-मोहियमणा, पावपसत्ता वि पाणिणो विगुणा ।
फरिहोदगं व गुणिणो, हवन्ति वरगुरुपसायाओ ॥१॥

—

१. ना० १।५।६३, ६४ ।

२. अभिसिच्चति (क, ख, ग) ।

३. ना० १।५।६५-६६ ।

४. × (क, ख, ग) ।

५. अहिज्जिऊण (ख) ।

६. ना० १।५।१०५ ।

७. ना० १।५।१०५ ।

तेरसमं अज्झयणं

मंडुक्के

उक्खेव-पवं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं बारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तेरसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं 'रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । समोसरणं' । परिसा निग्गया ॥
३. तेणं कालेणं तेणं समएणं सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए दद्दुरंसि सीहासणंसि दद्दुरे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्ग-महिंसीहिं सपरिसाहिं एवं जहा सूरियाभे जाव' दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ । इमं च णं केवलकप्पं जंबुदीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे जाव' नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए, जहा—सूरियाभे ॥

गोयमस्स पुच्छा-पवं

४. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अहो णं भंते ! दद्दुरे देवे महिंझिए महज्जुईए महब्बले महायसे महासोक्खे महाणुभागे ॥
५. दद्दुरस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे कहिं गए ? कहिं अणुपविट्ठे ? गोयमा ! सरीरं गए सरीरं अणुपविट्ठे कूडागारदिट्ठंतो' ॥

१. 'घ' प्रती अत्र विस्तृतः पाठो विद्यते ।

३. राय० सू० ७-१२० ।

२. राय० सू० ७ ।

४. राय० सू० १२३ ।

६. दददुरेणं भंते! देवेणं सा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए' ?

भगवधो उत्तरे दददुरदेवस्स नंदभव-पवं

७. एवं खलु गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ॥

८. तत्थ णं रायगिहे नंदे नामं मणियारसेट्ठी—अड्ढे दित्ते' ॥

नंदस्स धम्मपडिवत्ति-पवं

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! समोसढे । परिसा निग्गया । 'सेणिए वि निग्गए' ॥

१०. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे पायविहारचारेणं जाव' पज्जुवासइ ॥

११. नंदे मणियारसेट्ठी धम्मं सोच्चा समणोवासए जाए ॥

१२. तए णंइहं रायगिहाओ पडिनिक्खंते बहिया जणवयविहारेणं' विहरामि ॥

मिच्छत्तपडिवत्ति-पवं

१३. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी अण्णया कयाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणाए य अण्णुसासणाए य असुस्सूसाणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं-परिहाय-माणेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं-परिवड्ढमाणेहिं मिच्छत्तं विप्पडिवण्णे जाए यावि होत्था ॥

१४. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी अण्णया कयाइ' गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलंसि मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ, परिगेण्हत्ता पोसहसालाए' •पोसहिए बंभचारी उमुक्क-मणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दब्भ-संथारोवगए° विहरइ ॥

पोक्खरिणी-निम्माण-पवं

१५. तए णं नंदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि तण्हाए' छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—घण्णा णं ते' •ईसरपभियओ, संपुण्णा णं ते ईसरपभियओ, कयत्था णं ते

१. पू०—राय० सू० ६६७ ।

२. पू०—ना० १।५।७ ।

३. सेणिए राया निग्गए (क); राया निग्गओ (ख); राया निग्गए (ग) ।

४. पायचारेणं (क, ख, ग) ।

५. उवा० १।२० ।

६. °विहारं (ख) ।

७. × (क, ख, ग) ।

८. सं० पा०—पोसहसालाए जाव विहरइ ।

९. तण्हा (ग) ।

१०. सं० पा०—घण्णा णं ते जाव ईसरपभियओ ।

ईसरपभियओ, कयपुण्णा णं ते ईसरपभियओ, कयलक्खणा णं ते ईसरपभियओ कयविभवा णं ते ° ईसरपभियओ, जेसि णं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरिणीओ ° दीहियाओ गुंजालियाओ सरपंतियाओ ° सरसरपंतियाओ, जत्थ णं बहुजणो 'ण्हाइ य पियइ य' पाणियं च संवहइ । तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सेणियं रायं आपुच्छित्ता रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे वेब्भारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढग-रोइयंसि भूमिभागंसि नंदं पोक्खरिणिं खणावेत्ताए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पोसहं पारेइ, पारेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे मित्त-नाइ' -°नियग-सयण-संवंधि-परियणेणं सद्धि ° संपरिवुडे महत्थं ° महग्घं महरिहं रायारिहं ° पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ जाव' पाहुडं उवट्ठवेइ, उवट्ठवेत्ता एवं वयासी—इच्छामि णं सामी ! तुव्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे रायगिहस्स बहिया ° उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे वेब्भारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढग-रोइयंसि भूमिभागंसि नंदं पोक्खरिणिं ° खणावेत्ताए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया !

१६. तए णं से नंदे मणियारमेट्ठी सेणिएणं रण्णा अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठुट्ठे रायगिहं नगरं मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता वत्थुपाढय-रोइयंसि भूमिभागंसि नंदं पोक्खरिणिं खणावेउं पयत्ते यावि होत्था ॥
१७. तए णं सा नंदा पोक्खरणी अणुपुव्वेणं खम्ममाणा-खम्ममाणा' पोक्खरणी जाया यावि होत्था—चाउक्कोणा' समतीरा अणुपुव्वं सुजायवप्पसीयलजला संछन्न'-पत्त-भिसमुणाला" बहुउप्पल-पउम-कुमुद-नलिण-सुभग-सोगंधिय-पुंडरीय-महा-पुंडरीय-सयपत्त-सहस्सपत्त-पप्फुल्लकेसरोववेया" परिहत्थ-भमंत-मत्तच्छप्पय"-

१. सं० पा०—पोक्खरिणीओ जाव सरसर- ७. सं० पा०—बहिया जाव खणावेत्ताए ।
पंतियाओ । ८. खणमाणा (घ) ।
२. ण्हायइ पियइ (क, ख) । ९. चउक्कोणा (क) ।
३. ना० १।१।२४ । १०. संछन्न (क, ख, ग, घ) ।
४. सं० पा०—नाइ जाव संपरिवुडे । ११. विस० (ख, ग) ।
५. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं रायारिहं १२. पुप्फल्लकेसरोविया (क); पुप्फल्लकेसरो-
(क, ख, ग, घ); पाहुडं रायारिहं— वविया (ख); फुल्लकेसरोववेया (घ) ।
अत्र लिपिदोषेण व्यस्ययो जात इति संभाव्यते । १३. महच्छप्पय (क) ।
६. ना० १।५।२० ।

अणेग-सउणगण-मिहुण-वियरिय-सद्दुन्नइय'-महुरसरनाइया पासाईया दरिस-
णिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

वणसंड-पदं

१८. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी नंदाए पोक्खरिणीए चउदिसि चत्तारि वणसंडे
रोवावेइ ॥
१९. तए णं ते वणसंडा अणुपुब्बेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्डिज्ज-
माणा य वणसंडा जाया—किण्हा जाव' महामेह-निउरंबभूया पत्तिया पुप्फिया'-
•फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव° उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा
चिट्ठंति ॥

चित्तसभा-पदं

२०. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी पुरत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्तसभं कारावेइ'-
अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं। तत्थ णं
बहूणि किण्हाणि य' •नीलाणि य लोहियाणि य हालिहाणि य° सुक्किलाणि
य कट्टकम्माणि य पोत्थकम्माणि य चित्त-लेप्प-गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमाइ'
उवदंसिज्जमाणाइ-उवदंसिज्जमाणाइ चिट्ठंति ।
तत्थ णं बहूणि आसणाणि य सयणाणि य अत्थुय-पच्चत्थुयाइं चिट्ठंति ।
तत्थ णं बहवे 'नडा य' नट्टा य' •जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहग-पवग-लासग-
आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिया य° दिन्नभइ-भत्त-वेयणा तालायर-
कम्मं करेमाणा-करेमाणा विहरंति ।
रायगिहविणिग्गाम्मो एत्थ' णं बहुजणो तेसु पुव्वन्तत्थेसु आसण-सयणेसु सण्णि-
सण्णो" य संतुयट्ठो य सुयमाणो य 'पेच्छमाणो य'" 'साहेमाणो य'" सुहंसुहेणं
विहरइ ॥

- | | |
|--|---------------------------------|
| १. सद्दुन्नइय (क, ग); सद्दुन्नइय (ख, घ) । | ७. संघात्तिम (क, ख, ग, घ) । |
| असी पाठः जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति (मुद्रित प्रति सू० | ८. × (ग, घ) । |
| ७४) राघारेण स्वीकृतः । | ९. सं० पा०—नट्टा य जाव दिन्न° । |
| २. ना० १।७।१३ । | १०. तत्थ (क) । |
| ३. सं० पा०—पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा । | ११. उक्कत्थुयसंनिसण्णो (क) । |
| ४. कारावेइ (ख) । | १२. × (ख, ग, घ) । |
| ५. पू०—ना० १।१।८६ । | १३. × (ख, ग); सोहेमाणो य (घ) । |
| ६. सं० पा०—किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि । | |

महाणससाला-पदं

२१. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी दाहिणिल्ले वणसंडे एगं महं महाणससालं कारावेइ—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव' पडिरूवं । तत्थ णं बह्वे पुरिसा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा' विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेंति, बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं परिभाएमाणा-परिभाएमाणा विहरंति ॥

तिगिच्छियसाला-पदं

२२. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं तिगिच्छियसालं कारावेइ—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव' पडिरूवं । तत्थ णं बह्वे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य 'जाणुया य जाणुयपुत्ता य' कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइ-भत्त-वेयणा बहूणं बाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छ-कम्मं करेमाणा-करेमाणा विहरंति । अण्णे य एत्थ बह्वे पुरिसा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा तेसिं बहूणं बाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं पडियारकम्मं करेमाणा विहरंति ॥

अलंकारियसभा-पदं

२३. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं कारावेइ—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव' पडिरूवं । तत्थ णं बह्वे अलंकारिय-मणुस्सा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा बहूणं समणाण य' अणाहाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य अलंकारियकम्मं करेमाणा-करेमाणा विहरंति ॥

नंदस्स पसंसा-पदं

२४. तए णं तीए नंदाए पोक्खरिणीए बह्वे सणाहा य अणाहा य पंथिया य पहिया य करोडिया' य तणहारा य पत्तहारा य कट्टहारा य—अप्पेगइया ण्हायंति अप्पे-गइया पाणियं पियंति अप्पेगइया पाणियं संवहंति" अप्पेगइया विसज्जियसेय-जल्ल-मल-परिस्सम-निद्द-खुप्पिवासा सुहंसुहेणं विहरंति । रायगिहविणिग्गओ"

१. ना० १।१।८६ ।

२. दिन्नभय० (ग) सर्वत्र ।

३. कारेइ (क, ग, घ) ।

४. ना० १।१।८६ ।

५. × (क) ।

६. करेइ (ख, ग); कारेति (घ) ।

७. ना० १।१।८६ ।

८. य माहणाण य सनाहाण य (क्व०) ।

९. करोडिकारवा (ख, ग) ।

१०. संवाहति (क, ख) ।

११. रायगिहनिग्गओ (ख, ग) ।

वि यत्थ' बहुजणो 'किं ते' जलरमण-विविहमज्जण-कयलिलयाहरय'-कुसुम-सत्थरय-अण्णसउणगण-कयरिभियसंकुलेसु सुहंसुहेणं अभिरममाणो-अभिरम-माणो' विहरइ ॥

२५. तए णं नंदाए पोक्खरिणीए' बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च' संबहमाणो य अण्णमण्णं एवं वयासी—धण्णे' णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियार-सेट्ठी, कयत्थे' ०णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयलक्खणे णं देवाणु-प्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कया णं लोया ! सुलद्धे माणुस्सए ० जम्मजीवियफले [नंदस्स मणियारस्स ?] ? जस्स णं इमेयारूवा नंदा पोक्खरिणी चाउक्कोणा जाव' पडिरूवा" जाव" रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सण्णिसण्णो य संतुयट्ठी य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ । तं धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कया णं लोया ! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स ?
२६. तए णं रायगिहे सिघाडग"-०तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेमु ० बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ - धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी सो चेव गमओ जाव सुहंसुहेणं विहरइ ॥
२७. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे 'धाराहत - कलंबगं विव'" समूसवियरोमकूवे परं सायासोक्खमणुभवमाणे विहरइ ॥

नंदस्स रोगुप्पत्ति-पदं

२८. तए णं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि सोलस रोगा-यंका" पाउब्भूया । [तं जहा—

१. जत्थ (क, ख); तत्थ (घ) ।
२. किं तत् 'यत् करोति' इति शेषः ।
३. ०धरय (क) ।
४. अभिरममाणे (क) ।
५. पुक्खरणीए (क); पोक्खरणीए (ख) ।
६. वा (क) ।
७. धण्णसि (क, घ) ।
८. सं० पा०—कयत्थे जाव जम्म० ।

९. ना० १।१३।१७ ।
१०. पडिरूवा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले तं चेव चउसु वि वणसंडेसु (क, ख, ग, घ) ।
११. ना० १।१३।१८-२४ ।
१२. सं० पा०—सिघाडग जाव बहुजणो ।
१३. धाराहयकलंबकं पिव (ख, ग); ०कयंबकं पिव (घ) ।
१४. रोगातंका (क); रोयायंका (ख) ।

गाहा—

सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले भगंदरे ।
अरिसा' अजीरए दिट्ठी-मुद्धसूले' अकारए ॥
अच्छिवेयणा कणवेयणा कंडू दउदरे' कोढे' ॥१॥]

तिगिच्छा-पदं

२६. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूए समाने कोडुविय-
पुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! रायगिहे
नयरे सिघाडग'-० तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह' पहेसु महया-महया
सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! नंदस्स
मणियारस्स सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउवभूया । [तं जहा—सामे जाव
कोढे'] । तं जो णं इच्छइ देवाणुप्पिया ! विज्जो वा विज्जपुत्तो वा जाणमो
वा जाणुअपुत्तो वा कुसलो वा कुसलपुत्तो वा नंदस्स मणियारस्स तेसि च णं
सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकां उवसामित्तए, तस्स णं नंदे मणियार-
सेट्ठी विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसणं' घोमेह,
घोसेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ॥

३०. तए णं रायगिहे नगरे इमेयारूवं घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे वेज्जा य' वेज्ज-
पुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य' कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया
य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसह-भेसज्जहत्थगया य सएहिं-
सएहिं गिहेहितो निक्खमंति, निक्खमिन्ता रायगिहं मज्झमज्झेणं जेणेव नंदस्स
मणियारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स
सरीरं' पासंति, पासित्ता तेसि रोगायंकाणं नियाणं पुच्छंति, पुच्छित्ता नंदस्स
मणियारसेट्ठिस्स बहूहि उव्वलणेहि" य उव्वट्टणेहि य सिणेहपाणेहि" य वमणेहि
य विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदहणेहि" य अवण्हावणेहि" य अणुवासणाहि" य
वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि" य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य

१. आयारो ६।८ सूत्रे षोडशरोगविवरणे भिन्नः
क्रमो विद्यते ।

२. मुद्धिसूले (क); पुट्टसूले (ग) ।

३. दओदरे (ख) ।

४. असी कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

५. सं० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

६. असी कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

७. उग्घोसणं (क)

८. सं० पा०—वेज्जा य जाव कुसलपुत्ता ।

९. सरीरं हस्स (क) ।

१०. उव्वलणेहि (ग) ।

११. सिणेहि य पाणेहि य (ख) ।

१२. अवट्टाणाहि (क); अववहणेहि (ख) ।

अवदवेयणाहि (ग) ।

१३. अवण्हावणाहि (क); अवण्हाणेहि (ख, घ) ।

१४. ० वासणेहि (घ) ।

१५. निरूवेहि (ख) ।

सिरावत्थीहि' य तप्पणाहि य पुडवाएहि य 'छल्लीहि य वल्लीहि य' मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य' इच्छंति तेसि सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए ॥

३१. तए णं ते बह्वे वेज्जा' य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य जाहे नो संचाएंति तेसि सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, ताहे संता तंता परितंता' •निव्विण्णा समाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं° पडिगया ॥

भगवओ उत्तरे दद्दुरवेवस्स दद्दुरभव-पदं

३२. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी तेहिं सोलसेहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे नंदाए पुक्खरिणीए मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउए बद्धपएसिए अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे कालमासे कालं किच्चा नंदाए पोक्खरिणीए दद्दुरीए कुच्छिसि दद्दुरत्ताए उववण्णे ॥
३३. तए णं नंदे' दद्दुरे' गब्भाओ विणिमुक्के समाणे उम्मुक्कवालभावे' विण्णय-परिणयमित्ते' जोव्वणगमणुप्पत्ते नंदाए पोक्खरिणीए अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ॥
३४. तए णं नंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य अण्णमण्णं' एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ— धन्ते णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारे, जस्स णं इमेयारूवा नंदा पुक्खरिणी— चाउक्कोणा जाव' पडिरूवा" ॥

दद्दुरस्स जाइसरण-पदं

३५. तए णं तस्स दद्दुरस्स तं अभिक्खणं-अभिक्खणं बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं

- | | |
|--|--|
| १. सिरावेहेहि (क); अवरहसिरावत्थीहि (ख); सिरावेहेहि य (ग) । | ७. नंदे जीवे (घ) । |
| २. छल्लीहि य (ख); वल्लीहि य छल्लीहि य (घ) । | ८. दद्दुरीए (घ) । |
| ३. य आसज्जेहि य (क, ग); आइज्जेहि य (घ) । | ९. उमुक्क° (ख, घ) । |
| ४. रोगातंक (क, ग) । | १०. विण्णाय° (घ) । |
| ५. त्रिज्जा (क, ख, ग) । | ११. अण्णमण्णस्स (क, ग, घ) । |
| ६. सं० पा०—परितंता जाव पडिगया । | १२. ना० १।१३।१७ । |
| | १३. पडिरूवा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसमा अण्णेगखंभ(क, ख, ग, घ); पू०— ना० १।१३।१८-२४ । |

सोच्चा निसम्म' इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्प-
ज्जित्था—कहिं' मन्ने मए इमेयारूवे सहे निसंतपुव्वे' त्ति कट्ठु सुभेण परिणामेण'
•पसत्थेण अज्झवसाणेण लेसाहिं विसुज्जमाणां हि तयावरणिज्जाणं कम्माणं
खमोवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सण्णिपुव्वे° जाईसरणे समु-
प्पण्णे, पुव्वजाइं सम्मं समागच्छइ ॥

३६. तए णं तस्स ददुदुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे
समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इहेव रायगिहे नयरे नंदे नामं मणियारं—अइहे' ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे । तए णं मए समणस्स
भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए—•दुवालसविहे
गिहिधम्मं° पडिवण्णे । तए णं अहं अणया कयाइ असाहुदंसणेण य जाव'
मिच्छत्तं विप्पडिवण्णे ।

तए णं अहं अणया कयाइं गिम्हकालसमयंसि जाव' पोसहं उवसंपज्जित्ता णं
विहरामि । एवं जहेव चित्ता । आपुच्छणा । नंदापुक्खरिणी । वणसंडा ।
सभाओ । तं चेव सव्वं जाव' नंदाए ददुदुरत्ताए उववण्णे । तं अहो णं अहं
अधण्णे" अपुण्णे" अकयपुण्णे निग्गंथाओ पावयणाओ नट्टे भट्टे परिव्वट्टे । तं सेयं
खलु ममं सयमेव पुव्वपडिवण्णाइं पंचाणुव्वयाइं" उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए—
एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता पुव्वपडिवण्णाइं पंचाणुव्वयाइं आरुहेइ", आरुहेत्ता इमेयारूवं
अभिगहं अभिगण्हइ—कप्पइ मे जावज्जीवं छट्ठंछट्टेणं अणिक्खित्तेणं तवो-
कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणगंसि कप्पइ मे
नंदाए पोक्खरिणीए परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएणं उम्मह्णालोलियाहि" य"
वित्ति कप्पेमाणस्स विहरित्तए—इमेयारूवं अभिगहं अभिगण्हइ, जावज्जीवाए
छट्ठंछट्टेणं" •अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

भगवओ रायगिहे समवसरण-पवं

३७. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! गुणसिलए समोसढे । परिसा निग्गया ॥

१. निसम्मा (ख, ग) ।

२. से कहिं (वव०) ।

३. °पुव्व (ख) ।

४. सं० पा०—परिणामेण जाव जाईसरणे ।

५. पू०—ना० १।५।७ ।

६, सं० पा०—सिक्खावइए जाव पडिवण्णे ।

७. ना० १।१३।१३ ।

८. ना० १।१३।१४ ।

९. ना० १।१३।१५-३२ ।

१०. अहन्ने (ख, ग) ।

११. अकयत्थे (घ) ।

१२. पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं (घ) ।

१३. आरुहइ (ख) ।

१४. उम्मह्णो° (क, ख, ग); उम्मह्णाइं लोलियाहि (घ) ।

१५. 'मट्टियाए' इति शेषः ।

१६. सं० पा०—छट्ठंछट्टेणं जाव विहरइ ।

३८. तए णं नंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो 'ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य' अण्णमण्णं^१ •एवमाइक्खइ—एवं खलु^२ समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे । तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया । समणं भगवं महावीरं वंदामो^३ •णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं^४ पज्जुवासामो । एयं णे इहभवे परभवे य हियाए^५ •सुहाए खमाए निस्सेयसाए^६ आणुगामियत्ताए भविस्सइ ॥

दद्दुरस्स समवसरणं पइ गमण-पदं

३९. तए णं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे समोसढे । तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि^१—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता नंदाओ पोक्खरिणीओ सणियं-सणियं पच्चुत्तरेइ^२, जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए^३ दद्दुरगईए वीईव-यमाणे-वीईवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४०. इमं च ण सेणिए राया भंभसारे^४ ण्हाए जाव^५ सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंध-वरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामरेहि य उद्धुव्व-माणेहिं महयाहय-गय-रह-भड-चडगर-[कलियाए ?] चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमागच्छइ ॥

दद्दुरस्स मच्छ-पदं

४१. तए णं से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेणं आसकिसोरएणं वामपाएणं अवकंते समाणे अंतनिग्घाइए कए यावि होत्था ॥

४२. तए णं से दद्दुरे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिप्पि कट्ठु एगंतमवक्कमइ, करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव^१ सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव^२ सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं

१. ण्हाइ ३ (क, ख, ग); ण्हाणे य ३ (घ) ।

असौ पाठः ३४ सूत्रेण पूरितः ।

२. सं० पा०—अण्णमण्णं जाव समणे ।

३. सं० पा०—वंदामो जाव पज्जुवासामो ।

४. हियाए (क, ख, ग) सं० पा०—हियाए जाव आणुगामियत्ताए ।

५. प०—ना० १।१३।३७ ।

६. उत्तरेइ, २ (ख) ।

७. उक्किट्ठाए ५ (क, ख) ।

८. भिभिसारे (क); भिभिसारे(ख); भिभासारे (घ) ।

९. ना० १।१।८१ ।

१०, ११. ओ० सू० २१ ।

संपाविउकामस्स । पुंविपि य णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए^१, *थूलए मुसावाए पच्चक्खाए, थूलए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए, थूलए मेहुणे पच्चक्खाए^२, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए । तं इयाणिं पि तस्सेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवं, सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं पच्चक्खामि जावज्जीवं । जंपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं जाव^३ मा णं विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु एयंपि य णं चरिमेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्ठु ॥

४३. तए णं से दददुरे कालमासे कालं किच्चा जाव^४ सोहम्मे कप्पे दददुरवडिसए विमाणे उववायसभाए दददुरदेवत्ताए उववण्णे । एवं खलु गोयमा ! दददुरेणं सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ॥

४४. दददुरस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पणत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पणत्ता । से णं दददुरे देवे महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ^५ *मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं^६ अंतं करेहिइ ॥

निकखेव-पदं

४५. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^७ संपत्तेणं तेरसमस्स नायज्जयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्रता निगमनगाथा—

संपन्नगुणो वि जम्भो^१, सुसाहु-संसग्गवज्जिओ पायं ।
पावइ गुणपरिहाणिं, दददुरजीवोव्व मणियारो ॥१॥

अथवा—

तिथ्यर-वंदणत्थं, चलिओ भावेण पावए सगं ।
जह दददुरदेवेणं, पत्तं वेमाणिय-सुरत्तं ॥२॥

—

१. सं० पा०—पच्चक्खाए जाव थूलए ।

२. ना० १।१।२०६ ।

३. ना० १।१।२११ ।

४. सं० पा०—बुज्झिहिइ जाव अंतं ।

५. ना० १।१।७ ।

६. जिओ (स, ग) ।

चोद्दसमं अज्झयणं

तेयली

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं तेरसमस्स नायज्झ-
यणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुरं नाम नयरं । पमयवणे
उज्जाणे । कणगरहे राया ॥
३. तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी ॥
४. तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते नामं अमच्चे—'साम-दंड'-●भेय-उवप्पयाण-
नीति-सुपउत्त-नयविहण्णू' विहरइ ॥
५. तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए होत्था—अड्ढे जाव' अपरिभूए ॥
६. तस्स णं भद्दा नामं भारिया ॥
७. तस्स णं कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया भद्दाए अत्तया' पोट्टिला नामं
दारिया होत्था—रूवेण य जोव्वणेण' य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ-
सरीरा ॥

पोट्टिलाए कीडा-पदं

८. तए णं सा पोट्टिला दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया
चेडिया-चक्कवाल-संपरिवुडा उप्पि पासायवरगया आगासतलगंसि कणग'-
तिद्दसएणं कीलमाणी-कीलमाणी विहरइ ॥

१. ना० १।१।७ ।

४. ना० १।५।७ ।

२. सं० पा०—साम-दंड० । असौ अपूर्णः

५. अत्तिया (क, ख, ग) ।

पाठः 'जाव' आदिपूर्तिसंकेत-रहितोस्ति ।

६. × (ग) ।

३. पू०—ना० १।१।१६ ।

७. कणगमयेण (घ) ।

तेयलिपुत्तस्स आसत्ति-पदं

६. इमं च णं तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखंधवरगए महया-भड-चडगर-आसवाह-णियाए निज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ ॥
१०. तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे पोट्टिलं दारियं उप्पि आगासतलगंसि कणग-तिदूसएणं कीलमाणि पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए दारियाए रुवे य जोव्वणे य लावण्णे य अज्जोववण्णे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया कि नामधेज्जा वा ?
११. तए णं कोडुंबियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी—एस णं सामी ! कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया—रुवेण य^१ जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ^२ सरीरा ॥

पोट्टिलाए वरण-पदं

१२. तए णं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिणियत्ते समाणे अम्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कलायस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारिय-त्ताए वरेह ॥
१३. तए णं ते अम्भितरठाणिज्जा पुरिसा तेयलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्टुट्ठा करयल^३ परिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अज्जलिं कट्ठु “एवं सामी” ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेंत्ता तेयलिस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता^४ जेणेव कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहे तेणेव उवागया ॥
१४. तए णं से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्टुट्ठे आसणाओ अम्भुट्ठेइ, अम्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ, उवणिमंतेत्ता आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ?
१५. तए णं ते अम्भितरठाणिज्जा पुरिसा कलायं मूसियारदारयं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो । तं जइ णं जाणसि^५ देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा

१. सं० पा०—रुवेण य जाव सरीरा ।

३. जाणासि (ग) ।

२. सं० पा०—करयल तहत्ति जेजेव ।

सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो वा दिज्जउ णं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स । तो' भण देवाणुप्पिया ! किं दलामो सुंक्' ॥

१६. तए णं कलाए मूसियारदारए ते अग्भिन्तरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी—एस चेव णं देवाणुप्पिया ! मम सुंके जण्णं तेयलिपुत्ते मम दारियानिमित्तं अणुग्गहं करेइ । ते अग्भिन्तरठाणिज्जे पुरिसे विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध'-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१७. [तए णं ते अग्भिन्तरठाणिज्जा पुरिसा' ?] कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनियत्तंति', जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छत्ता तेयलिपुत्तं अमच्चं एयमट्ठं निवेइंति' ॥

पोट्टिलाए विवाह-पदं

१८. तए णं कलाए मूसियारदारए अणया कयाइं सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि पोट्टिलं दारियं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं सीयं दुरुहेत्ता मित्त-नाइ'-
•नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धि° संपरिवुडे साम्रो गिहाओ पडिनिकखमइ, पडिनिकखमित्ता सव्विड्ढीए' तेयलिपुरं नयरं मज्झमज्झेणं जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ ॥

१९. तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठे पोट्टिलाए सद्धि पट्टयं दुरुहइ, दुरुहिता सेयापीएहि' कलसेहिं अप्पाणं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोमं कारेइ, कारेत्ता पाणिग्गहणं करेइ, करेत्ता पोट्टिलाए भारियाए' मित्त-नाइ"-•नियग-सयण-संबंधि°-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ'-•गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता° पडिविसज्जेइ ॥

२०. तए णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं" •माणु-स्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे° विहरइ ॥

१. ता (क, घ) ।

२. सुक्कं (घ) ।

३. जाव (ख, घ) ।

४. कोष्ठकान्तर्गतः पाठः प्रतिषु नोपलभ्यते ।

५. नियत्तंति २ (क, ख, ग); पडिनिकखमइ (घ) ।

६. निवेयंति (ख); निवेत्तेति (ग) ।

७. सं० पा०—नाइ० ।

८. पू०—ना० १।१।३३ ।

९. सेयपीएहिं (ग) ।

१०. भारियाए सद्धि (घ) ।

११. सं० पा०—नाइ जाव परियणं ।

१२. सं० पा०—वत्थ जाव पडिविसज्जेइ ।

१३. सं० पा०—उरालाइं जाव विहरइ ।

कणगरहस्स रज्जासत्ति-पर्व

२१. तए णं से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्टागारे य 'पुरे य' अंतेउरे य मुच्छिए गट्ठिए गिद्धे अज्झोववण्णे जाए, जाए पुत्ते वियंगेइ—अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिदइ, *अप्पेगइयाणं पायंगुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुट्ठए छिदइ, अप्पेगइयाणं कण्णसक्कुलीओ छिदइ, अप्पेगइयाणं० नासापुडाइं फालेइ, अप्पेगइयाणं अंगोवंगाइं वियत्तेइ' ॥

पउमावईए अमच्चेण मंतणा-पर्व

२२. तए णं तीसे पउमावईए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयांसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य* रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्टागारे य पुरे य अंतेउरे य मुच्छिए गट्ठिए गिद्धे अज्झोववण्णे जाए, जाए पुत्ते वियंगेइ—अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुट्ठए छिदइ, अप्पेगइयाणं कण्णसक्कुलीओ छिदइ, अप्पेगइयाणं नासापुडाइं फालेइ, अप्पेगइयाणं० अंगमंगाइं वियत्तेइ' । तं जइ णं अहं दारयं पयायामि, सेयं खलु मम तं दारयं कणगरहस्स रहस्सिययं' चेव सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता तेयलिपुत्तं अमच्चं सहावेइ, सहावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य* रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्टागारे य पुरे य अंतेउरे य मुच्छिए गट्ठिए गिद्धे अज्झोववण्णे जाए, जाए पुत्ते वियंगेइ—अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुट्ठए छिदइ, अप्पेगइयाणं कण्णसक्कुलीओ छिदइ, अप्पेगइयाणं नासापुडाइं फालेइ, अप्पेगइयाणं अंगोवंगाइं० वियत्तेइ' । तं जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारयं पयायामि, तए णं तुमं कणगरहस्स रहस्सिययं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे संवड्ढेहि । तए णं से

१. × (क, ख, ग, घ) । १।१।१६ सूत्रवद्

अत्रापि 'पुरे य' इति पाठो युज्यते ।

२. सं० पा०—एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठए वि कण्णसक्कुलीओ वि नासापुडाइं ।

३. वियंगेइ (क, घ) ।

४. सं० पा०—रज्जे य जाव वियंगेइ जाव

अंगमंगाइं ।

५. वियंगेइ (क, ख, ग, घ); २१ सूत्रानुसारेण अत्र 'वियत्तेइ' त्ति पाठेन भवितव्यम् । अतोऽस्माभिः स एव स्वीकृतः ।

६. रहस्सिगतं (क); रहस्सियं (ख, ग) ।

७. सं० पा०—रज्जे य जाव वियत्तेइ ।

दारए उम्मुक्कबालभावे' •विण्णय-परिणयमेत्ते° जोव्वणगमणुप्पत्ते 'तव मम य'^१ भिक्खाभायणे' भविस्सइ ॥

२३. तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे पउमावईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता पडिगए ॥

अवच्छ-परिवत्तण-पदं

२४. तए णं पउमावई देवी पोट्टिला य अमच्ची सममेव गवभं गेण्हंति, सममेव परिवहंति ॥

२५. तए णं सा पउमावई देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव' पियदंसणं सुखूं दारगं पयाया । जं रयणिं च णं पउमावई देवी दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिला वि अमच्ची नवण्हं मासाणं विणिहायमावन्नं दारियं पयाया ॥

२६. तए णं सा पउमावई देवी अम्मधाइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं अम्मो ! तेयलिपुत्तं रहस्सिययं' चेव सद्दावेहि ॥

२७. तए णं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता अंतेउरस्स अवदारेणं' निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव तेयलिस्स गिहे जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पउमावई देवी सद्दावेइ ॥

२८. तए णं तेयलिपुत्ते अम्मधाईए अतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठुट्ठे अम्मधाईए सद्धिं साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता अंतेउरस्स अवदारेणं रहस्सिययं चेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु° एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं' मए कायव्वं ॥

२९. तए णं पउमावई देवी तेयलिपुत्तं एवं वयासी—एवं खलु कणगरहे राया जाव'^२ पुत्ते वियगेइ । अहं च णं देवाणुप्पिया ! दारगं पयाया । तं तुमं णं देवाणुप्पिया ! एयं दारगं गेण्हाहि जाव'^३ तव मम य भिक्खाभायणे'^४ भविस्सइ त्ति कट्ठु तेयलिपुत्तस्स हत्थे दलयइ ॥

१. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावे जाव जोव्वण-गमणुप्पत्ते ।

२. तव य मम य (क); तव मम (ग, ब) ।

३. भिक्खायमातणे (ग) ।

४. ओ० सू० १४३ ।

५. रहस्सियं (क, ग) ।

६. अवदारेणं (ग) ।

७. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

८. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

९. देवाणुप्पिए (घ) ।

१०. ना० १।१४।२१ ।

११. ना० १।१४।२३ ।

१२. भिक्खायभायणे (ग) ।

३०. तए णं तेयलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेण्हइ, उत्तरिज्जेणं पिहेइ, अंतेउरस्स रहस्सिययं अवदारेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव साए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिलं एवं वयासी— एवं खलु देवाणुप्पिए ! कणगरहे राया जाव' पुत्ते वियंगेइ । अयं च णं दारए कणगरहस्स पुत्ते पउमावईए अत्ताए । तन्नं तुमं देवाणुप्पिए ! इमं दारगं कणगरहस्स रहस्सिययं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि य संगोवेहिं य संवड्ढेहि य । तए णं एस दारए उम्मुक्कवालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्ठु पोट्टिलाए पासे निक्खवइ, निक्खवित्ता पोट्टिलाए पासाओ तं विणिहायमावणियं दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहेत्ता अंतेउरस्स अवदारेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ जाव पडिनिग्गए ॥

दारियाए मयकिच्च-पदं

३१. तए णं तीसे पउमावईए देवीए अंगपडियारियाओ पउमावइं देवि विणिहाय-मावणियं च दारियं पयायं पासंति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलं *परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अञ्जलिं कट्ठु° एवं वयासी—एवं खलु सामी ! पउमावई देवी मएल्लियं दारियं पयाया ॥

३२. तए णं कणगरहे राया तीसे मएल्लियाए दारियाए नोहरणं करेइ, बहूइ लोगियाइं मयकिच्चाइं करेइ, करेत्ता कालेणं विगयसोए जाए ॥

अमच्चपुत्तस्स उत्सव-पद

३३. तए णं से तेयलिपुत्ते कल्लं कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चारगसोहणं *करेह जाव' ठिइण्डियं दसदेवसियं करेह, कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

३४. तेवि तहेव करंति, तहेव पच्चप्पिणंति° ॥

३५. जम्हा णं अम्मं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउ णं दारए नामेणं कणगज्झए जाव' अलंभोगसमत्थे जाए ॥

पोट्टिलाए अप्पियत्त-पदं

३६. तए णं सा पोट्टिला अण्णया कयाइ तेयलिपुत्तस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया

१. ना० १।१४।२१ ।

२. संगोवाहि (ख, ग, घ) ।

३. सं० पा०—करयल° ।

४. सं० पा०—चारगसोहणं जाव ठिइण्डियं ।

५. ना० १।१।७६-७८ ।

६. ना० १।१।८१-८८ ।

अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था—नेच्छइ णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा परिभोगं वा ?

३७. तए णं तीसे पोट्टिलाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं तेयलिस्स पुर्व्वि इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणि अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया । नेच्छइ णं तेयलिपुत्ते मम नाम^१ •गोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा^२ परिभोगं वा ? [ति कट्ठु ?] ओह्यमणसंकप्पा^३ •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया^४ • भियायइ ॥

पोट्टिलाए बाणसाला-पदं

३८. तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं ओह्यमणसंकप्पं^१ •करतलपल्हत्थमुहि अट्टज्झाणो-वगयं^२ • भियायमाणि पासइ, पासित्ता एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओह्यमणसंकप्पा^३ •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया^४ • भियाहि । तुमं णं मम महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहणं^५—अतिहि-किवणं-^६ वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी^७ य विहराहि ॥
३९. तए णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तेणं अमच्चेणं एवं वुत्ता समाणी^८ हट्ठा तेयलि-पुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कल्लाकल्लि महाणसंसि विपुलं असणं-^९ •पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि किवणं-वणीमगाणं देयमाणी य^{१०} दवावेमाणी य विहरइ ॥

अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियागमण-पदं

४०. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ इरियासमियाओ^१ •भासासमियाओ एसणासमियाओ आयाण-भंड-मत्त-णिकखेवणासमियाओ उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमियाओ मणसमियाओ वइसमियाओ कायसमियाओ मणगुत्ताओ वइगुत्ताओ कायगुत्ताओ गुत्ताओ गुत्तिदियाओ^२ • गुत्तवंभचारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुर्व्वि

१. सं० पा०—नाम जाव परिभोगं ।
 २. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा जाव भियायइ ।
 ३. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पं जाव भियाय-
 माणि ।
 ४. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा^३ ।
 ५. सं० पा०—माहण जाव वणीमगाणं ।

६. देवावेमाणी (क) ।
 ७. समाणा (ख, ग) ।
 ८. सं० पा०—असणं जाव दवावेमाणी ।
 ९. सं० पा०—इरियासमियाओ जाव गुत्तवंभ-
 चारिणीओ ।

चरमाणीओ जेणामेव तेयलिपुरे नयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता अहापडिरूवं ओगहं ओगिन्हति, ओगिन्हिता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति ॥

४१. तए णं तासि सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ', •बीयाए पोरिसीए भाणं भियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवल-मसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, भायणवत्थाणि पडिलेहेइ, भायणाणि पमज्जेइ, भायणाणि ओग्गाहेइ, जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए तेयलीपुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

४२. तए णं ताओ अज्जाओ सुव्वयाहिं अज्जाहिं अब्भणुण्णाया समाणीओ सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिस्सयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता अतुरियम-चवलमसंभंताए गतीए जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय सोहेमाणीओ तेयलीपुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं • अडमाणीओ तेयलिस्स गिहं अणुपविट्ठाओ ॥

पोट्टिलाए अमच्चपसायोवाय-पुच्छा-पवं

४३. तए णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्टुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं अज्जाओ ! तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स पुंवि इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणि अणिट्ठा' •अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया । नेच्छइ णं तेयलीपुत्ते मम नामगोयमवि सवणयाए, किं पुणं दंसणं वा परिभोगं वा ? तं तुब्भे णं अज्जाओ बहुनायाओ बहुसिक्खयाओ' बहुपडियाओ बहूणि गामागर'-•णगर - खेड-कव्वड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संबाह-सण्ण-वेसाइं • आहिडह, बहूणं राईसर'-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणा-वइ-सत्थवाहपभिईणं • गिहाइं अणुपविसह । तं अत्थियाइं भे अज्जाओ ! केइ कहिंचि चुण्णजोए वा 'मंतजोगे वा कम्मणजोए' वा 'कम्मजोए वा'

१. सं० पा०—करेइ जाव अडमाणीओ ।

५. सं० पा०—राईसर जाव गिहाइं ।

२. सं० पा०—अणिट्ठा जाव दंसणं ।

६. × (ग) ।

३. × (क) ।

७. × (क, ख) ।

४. सं० पा०—गामागर जाव आहिडह ।

हियउड्डावणे वा काउड्डावणे' वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले वा कंदे वा छल्ली वल्ली सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे, जेणाहं तेयलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा भवेज्जामि ?

अज्जा-संघाडगस्स उत्तर-पदं

४४. तए णं ताम्रो अज्जाओ पोट्टिलाए एवं वुत्ताओ समानीओ दोवि कण्णे ठएत्ति', ठवेत्ता पोट्टिलं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समणीओ निगंथीओ जाव' गुत्तबंभचारिणीओ । नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पगारं कण्णेहिं वि निसा-मित्तए, किमंग पुण उवदंसित्तए वा आयरित्तए वा ? अम्हे णं तव देवाणुप्पिए ! विचित्तं केवलपण्णत्तं धम्मं परिकहिज्जामो ॥

पोट्टिलाए साविया-पदं

४५. तए णं सा पोट्टिला ताम्रो अज्जाओ एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भं अंतिए केवलपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए ॥
 ४६. तए णं ताम्रो अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तं केवलपण्णत्तं धम्मं परिकहेत्ति ॥
 ४७. तए णं सा पोट्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठा एवं वयासी—सद्दहामि णं अज्जाओ ! निगंथं पावयणं जाव' से जहेयं तुब्भे वयह । इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए ।
 अहासुहं देवाणुप्पिए !
 ४८. तए णं सा पोट्टिला तासि अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव' गिहिधम्मं पडिवज्जइ, ताम्रो अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ ॥
 ४९. तए णं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव' *समणे निगंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुच्छणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं° पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

पोट्टिलाए पव्वज्जा-पदं

५०. तए णं तीसे पोट्टिलाए अणया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुंबजागरियं

१. कायउड्डावणे वा निण्हवणे वा (क, ख);

× (ग) ।

४. ना० १।१।१०१ ।

५. ना० १।१४।४७ ।

२. अंगुलियं ठावेत्ति (क्व); अंगुलियं छाएत्ति (क्व०) ।

६. ना० १।१।४७ । सं० पा०—जाया जाव पडिलाभेमाणी ।

३. ना० १।१४।४० ।

जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था—एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुब्बि इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणि अणिट्ठा' •अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया । नेच्छइ णं तेयलीपुत्ते मम नामगोयमवि सवणयाए किं पुण दंसणं वा ° परिभोगं वा ? तं सेयं खलु ममं सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्ताए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि मूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'- •परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! माए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मं निसंते', •मे वि य मे धम्मं इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं इच्छामि णं तुव्वेहिं° अज्झणुण्णाया पव्वइत्ताए ॥

५१. तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी—एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अण्णयग्गेम् देवलोणमु देवत्ताए उववज्जिहिमि । तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए ! ममं ताओ देवलोणाओ आगम्म केवलपण्णत्ते धम्मं वांहेहि, तो' हं विसज्जेमि । अहं णं तुमं ममं न संबोहेसि, तो ते न विसज्जेमि ॥

५२. तए णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥

५३. तए णं तेयलिपुत्ते विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-संवंधि-परियणं ° आमंतेइ जाव' सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पोट्टिलं ण्हायं' •सव्वालंकारविभूसियं ° पुरिससहस्स-बाहिणीयं सीयं दुरुहिता मित्त-नाइ'-•नियग-सयण-संवंधि-परियणेणं सद्धि° संपरिवुडे सव्विड्डीए जाव'° दुंदुहिनिग्घोसनाइय-रवेणं तेयलिपुरं मज्झमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता पोट्टिलं पुरओ कट्ठु जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणु-प्पिया ! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा । एस णं संसारभउव्विग्गा" •भीया जम्मण-जर-मरणाणं इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए

१. सं० पा०—अणिट्ठा जाव परिभोगं ।

७. ना० १।७।६ ।

२. ना० १।१।२४ ।

८. सं० पा०—ण्हायं जाव पुरिससहस्सबाहिणीयं ।

३. सं० पा०—करयल° ।

९. सं० पा०—नाइ जाव संपरिवुडे ।

४. सं० पा०—निसंते जाव अज्झणुण्णाया ।

१०. ना० १।१।३३ ।

५. ता (क, ख, ग) ।

११. सं० पा०—संसारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्ताए ।

६. सं० पा०—नाइ जाव आमंतेइ ।

मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं० पव्वइत्तए । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया !
सिस्सिणिभिक्खं ।

अहासुहं, मा पडिवंधं करेहि ॥

५४. तए णं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समानी हट्ठा उत्तरपुरत्थिमं
दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ,
ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव
उवागच्छइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं अज्जा !
लोए एवं जहा देवाणंदा जाव' एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूणि वासाणि
सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संनेहणाए अत्ताणं भोसेत्ता,
सट्ठि भत्ताइं अणसणेणं छेएत्ता आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं
किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा ॥

कणगरहस्स मच्चु-पदं

५५. तए णं से कणगरहे राया अण्णया कयाइ कालधम्मणा संजुत्ते यावि होत्था ॥
५६. तए णं ते ईसर^१—●तलवर-माडंबिय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-
पभिइणो रोयमाणा कंदमाणा विलवमाणा तस्स कणगरहस्स सरीरस्स महया
इड्ढी-सक्कार-समुदएणं० नीहरणं करेंति, करेत्ता अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं
खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव' मुच्छिए पुत्ते वियंगित्था ।
अम्हे णं देवाणुप्पिया ! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा । अयं च णं
तेयली अमच्चे कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेषु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्न-
वियारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था । तं सेयं खलु अम्हं तेयलिपुत्तं अमच्चं
कुमारं जाइत्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव
तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तं एवं वयासी—
एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव मुच्छिए पुत्ते वियंगित्था^२ ।
अम्हे णं देवाणुप्पिया ! रायाहीणा^३—● रायाहिट्ठिया० रायाहीणकज्जा । तुमं च
णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो सव्वठाणेषु^४ सव्वभूमियासु लद्धपच्चए
दिन्नवियारे० रज्जघुराचितए होत्था । तं जइ णं देवाणुप्पिया ! अत्थि केइ

१. भग० ६।१५२, १५४, १५५ ।

२. सं० पा०—ईसर जाव नीहरणं ।

३. ना० १।१४।२१ ।

४. वियंगेइ (क, ख, ग, घ) । यद्यपि सर्वासु प्रतिषु
अत्र 'वियंगेइ' इति पाठः उपलभ्यते ।
अस्मिन्नेव सूत्रे 'वियंगित्था' इति पाठः

वसंतं, तदनुसारेण स एव पाठः अस्माभिरत्र
स्वीकृतः ।

५. सं० पा०—रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा ।

६. सं० पा०—सव्वठाणेषु जाव रज्जघुरा-
चितए ।

कुमारे रायलक्खणसंपण्णे अभिसेयारिहे तण्णं तुमं अम्हं' दलाहि, जण्णं' अम्हे
महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिचामो ॥

कणगज्झयस्स रायाभिसेय-पदं

५७. तए णं तेयलिपुत्ते तेसिं ईसरपभिईणं एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कणगज्झयं
कुमारं ण्हायं जाव' सस्सिरीयं करेइ, करेत्ता तेसिं ईसरपभिईणं उवणेइ,
उवणेत्ता एवं वयासी —एस णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमा-
वईए देवीए अत्ताए कणगज्झए नामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपण्णे,
माए कणगरहस्स रण्णो रहस्सिययं संवट्ठिए" । एयं णं तुब्भे महया-महया
रायाभिसेएणं अभिसिचह । सव्वं च से' उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ ॥
५८. तए णं ते ईसरपभिइओ कणगज्झयं कुमारं महया-महया रायाभिसेएणं
अभिसिचंति ॥
५९. तए णं से कणगज्झए कुमारे राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-
महिदसारे जाव' रज्जं पसासेमाणे" विहरइ ॥

तेयलिपुत्तस्स सम्माण-पदं

६०. तए णं सा पउमावई देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस
णं पुत्ता ! तव रज्जे"० य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्टागारे य पुरे य ०
अंतंउरे य, तुमं च तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स पभावेणं" । तं तुमं णं तेयलिपुत्तं
अमच्चं आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि, इतं अम्भुट्ठेहि, ठियं
पज्जुवासेहि", वच्चंतं" पडिसंसाहेहि", अद्धासणेणं उवणिमंतंतेहि, भोगं च से
अणुवड्ढेहि ॥
६१. तए णं से कणगज्झए पउमावईए तहत्ति वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तेयलिपुत्तं
अमच्चं आढाइ" ०परिजाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ, इतं अम्भुट्ठेइ, ठियं पज्जुवा-
सेइ, वच्चंतं पडिसंसाहेइ, अद्धासणेणं उवणिमंतंतेइ", भोगं च से अणुवड्ढेइ ॥

१. × (ग, घ) ।

२. जाणं (ग, घ) ।

३. ओ० सू० ६३ ।

४. संचिट्ठिए (ग) ।

५. तेसिं (क, ख, ग) ।

६. वण्णओ जाव (क, ख, ग, घ) । ओ० सू०

१४ ।

७. पसाहेमाणे (क्व) ।

८. सं० पा०—रज्जे जाव अतेउरे ।

९. पहावेणं (क, घ) ।

१०. पज्जुवासाहि (ख, ग) ।

११. वयंतं (ग, घ) ।

१२. पडिसाहेहि (क, ख) ।

१३. सं० पा०—आढाइ जाव ओणं ।

पोट्टिलदेवेण तेयलिपुत्तस्स संबोह-पवं

६२. तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अभिक्खणं-अभिक्खणं केवलपण्णत्ते धम्मं संबोहेइ, नो चेव णं से तेयलिपुत्ते संबुज्झइ ॥
६३. तए णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाइ जाव' भोगं च से अणुवड्ढेइ', तए णं से तेयलिपुत्ते अभिक्खणं-अभिक्खणं संबोहिज्जमाणे वि धम्मं नो संबुज्झइ । तं सेयं खलु ममं कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विप्परिणा-मित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ ॥
६४. तए णं तेयलिपुत्ते कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाए' *कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल°-पाय-च्छित्ते आसखंधवरगए बहूहि पुरिसेहि सद्धि संपरिवुडे साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
६५. तए णं तेयलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसर-तलवर' *माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह° पभियओ' पासंति ते तहेव आढायंति परियाणंति अब्भुट्ठेति, अंजलिपग्गहं' करंति, इट्ठाहि कंताहि जाव' वग्गूहि 'आलवमाणा य संलवमाणा' य पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य' समणुगच्छंति ॥
६६. तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छइ ॥
६७. तए णं से कणगज्झए तेयलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ' नो परि-याणाइ नो अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे' अपरियाणमाणे अणव्भुट्ठेमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ ॥
६८. तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे कणगज्झयस्स रण्णो अंजलि करेइ । 'तओ य णं' से कणगज्झए राया अणाढायमाणे' अपरियाणमाणे अणव्भुट्ठेमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ ॥

१. ना० १।१४।६० ।

२. वड्ढेइ (क, ख, ग, घ) ।

३. ना० १।१२४ ।

४. सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।

५. सं० पा०—तलवर जाव पभियओ ।

६. पभितयो (क); पभिइओ (ग, घ) ।

७. °परिग्गहिए (क); °परिग्गहियं (घ); °परिग्गहं (ख, ग) ।

८. ना० १।१४८ ।

९. आलवमाणे य संलवमाणे (ग) ।

१०. य मग्गओ (क, ख, ग, घ) । अत्र 'मग्गओ य' इति पाठोऽतिरिक्तः सम्भाव्यते । 'पिट्ठओ य मग्गओ य' एते द्वे अपि पदे समानार्थके स्तः । अस्याध्ययनस्यैव ७० सूत्रे 'मग्गओ य' इति पाठो नोपलभ्यते ।

११. आयाणति (क) ।

१२. अणाययणमाणे ३(क); अणाढामीणे ३ (ग) ।

१३. तए णं (क, ख, घ) ।

१४. अणाढाइज्जमाणे ३ (क); अणाढामीणे (ख, ग); अणाडिज्जमाणे (घ) ।

६९. तए णं तेयलिपुत्ते कणगज्झयं रायं विप्परिणयं जाणित्ता भीए' •तत्थे तसिए उव्विग्गे° संजायभए एवं वयासी—रुट्ठे णं मम कणगज्झए राया । हीणे' णं मम कणगज्झए राया । अवज्झाए' णं मम कणगज्झए राया । तं न नज्जइ णं मम केणइ कु-मारेण मारेहिइ त्ति कट्ठु भीए तत्थे जाव सणियं-सणियं 'पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्किता' तमेव आसखंवं दुरूहइ, दुरूहिता तेयलिपुरं मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
७०. तए णं तेयलिपुत्तं जे जहा ईसर जाव' सत्थवाहपभियओ पासंति ते तहा नो आढायंति नो परियाणंति नो अब्भुट्ठे'ति नो अंजलिपग्गह करंति, इट्ठाइं जाव' वग्गूहि नो आलवंति नो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य समणु-गच्छंति ॥
७१. तए णं तेयलिपुत्ते अमच्चे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागाए । जा वि य से तत्थ वाहिरिया परिसा भवइ, तं जहा - दासे इ वा पेसे इ वा भाइत्तए इ वा, सा वि य णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ । जा वि य से अंभितरिया परिसा भवइ, तं जहा—पिया इ वा माया इ वा' •भाया इ वा भणिणी इ वा भज्जा इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वा° सुण्हा इ वा, सा वि य णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ ॥

तेलियपुत्तस्स मरणचेट्ठा-पदं

७२. तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयइ, निसीइत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ निग्गच्छामि तं चेव जाव' अंभितरिया परिसा नो आढाइ नो परिया-णाइ नो अब्भुट्ठेइ । तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियाओ ववरोवित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ । से य विसे नो कमइ ॥
७३. तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे नीलुप्पल'-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुर-घारं° असि खंधंसि ओहरइ । तत्थ वि य से धारा ओएत्ता" ॥
७४. तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासगं गीवाए बंधइ, बंधित्ता रुक्खं दुरूहइ, दुरूहिता पासगं रुक्खे बंधइ, बंधित्ता अप्पाणं मुयइ । तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना ॥

१. सं० पा०—भीए जाव संजायभए ।

२. प्रीत्येति गम्यते (वृ) ।

३. पाठान्तरेण दुर्घ्यातोहं (वृ) ।

४. पच्चोरुहइ २ (ग) ।

५. ना० १।१।६५ ।

६. ना० १।१।४८ ।

७. सं० पा०—माया इ वा जाव सुण्हा ।

८. ना० १।१।६४-७१ ।

९. सं० पा०—नीलुप्पल जाव असि ।

१०. ओइत्ता (ख); ओपत्ता (ग, घ); अवदीर्णा कुंठीभूता इत्यर्थः (वृ) ।

७५. तए णं से तेयलिपुत्ते महइमहालियं सिलं गीवाए बंधइ, बंधित्ता अत्थाहमतारम-
पोरिसीयंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ । तत्थ वि से थाहे जाए ॥
७६. तए णं से तेयलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिबइ, पक्खिवित्ता
अप्पाणं मुयइ । तत्थ वि य से अगणिकाए विज्झाए' ।

१. आवश्यकचूर्णो (पृष्ठ ४६६, ५००) समुद्धृते
प्रस्तुताध्ययने अरण्यगमनस्य निर्देशोऽस्ति ।
तथा अन्योपि क्रमभेदो वर्तते । स च अतीव
मननीयोऽस्ति, यथा—

ताहे तणकूडे अंगि दाहं पविट्ठो, तत्थवि न
इज्झति, ताहे अड्वि पविसति, तत्थ पुरतो
छिण्णगिरिसिहरकंदरप्पवाते पिट्ठतो कपेमा-
जेव्व भेदिणितलं आकइहंतव्व पादवगणे
बिकोडेमाणेव्व अंबरतलं सव्वतमोरासिव्व
पिडिते पच्चक्खमिव सतं कतंते भीमे भीमा-
रवं करंते महावारणे समुद्धृते, दोसु चक्खु-
निवातेसु पयंइधणुजुत्तविप्पमुक्को पुंखमेत्तव-
सेसा धरणिंतलपवेसाणि सराणि पतंति
हुतवहजावासहस्ससंकुलं समंततो पलित्तंव
वगधेति सव्वारण्णं, अइरुगतबालसूरगुंजइ-
पुंजनिगरप्पगासं भियाति इंगालभूतं गिहं,
ताहे चित्तेति—पोट्टिला जदि मे नित्थारेज्जति,
एवं बयासी—आउसो पोट्टिला ! आहता
आयाणाहि ।

ततेणं सा पोट्टिला पंचवण्णाइं सखिखिणीयाइं
जाव एवं बयासी—आउसो तेतलिपुत्ता !
एहि ता आदाणाहि, पुरतो छिण्णगिरिसिहर-
कंदरप्पवाते तं चेव जाव इंगालभूतं गिहं तं
आउसो तेतलिपुत्ता ! कहि बयामो ?

ततेणं से तेतली एवं बयासी—सद्धेतं खलु
भो समणा वयंति, सद्धेयं खलु भो माहणा
ववंति, अहमेणो असद्धेयं वदिस्सामि,
एवं खलु अहं सह पुत्तेहि अपुत्तो को मे तं
सद्धिस्सति ? एवं सह मित्तेहिं सह

दारेहिं सह वित्तेणं, सह परिग्गहेणं
सह दासेहिं जाव दाणमाणसक्कारोवयारसंग-
हिते तेतलिपुत्तस्स सयणपरियणेवि तगं गते
को मे तं सद्धिस्सति ?

एवं खलु तेतलिपुत्ते कणगज्झतेणं अबज्झा-
तके को मे तं सद्धिस्सति ?

कालक्कमणीतिसत्थविसारदे तेतलिपुत्ते
विसादं गतेति को मे तं सद्धिस्सति ?

ततेणं तेतलिपुत्तेणं तालपुडे विसे खइते सेविय
पडिहतेति को मे तं सद्धिस्सति ?

एवं असी वेहासे जले अग्गी जाव रण्णेवि
पुरतो पवाने एमादि को मे तं सद्धिस्सति ?
जातिकुलरूवविणओवयारसालिणी पोट्टिला
मुसिकारधूता मिच्छं विपडिवण्णा को मे तं
सद्धिस्सति ?

ताहे पोट्टिला भणति--एहि ता आदाणाहि,
भीतस्स खलु भो पवज्जा ताणं, आतुरस्स
भेसज्जं किच्चं अभिउत्तस्स पच्चयकरणं
संतस्स बाहणकिच्चं महाजले बाहणकिच्चं
माइस्स रहस्सकिच्चं उक्कंठितस्स देसगमण-
किच्चं छुहितस्स भोगणकिच्चं पिवासितस्स
पाणकिच्चं सोहातुरस्स जुवतिकिच्चं परं
अभियुजितुकामस्स सहायकिच्चं खंतस्स
दंतस्स गुत्तस्स जितेंदियस्स एत्तो एगमवि न
भवति । सुट्ठु-सुट्ठु तण्णं तुमं तेतलिपुत्ता ।
एयमट्ठं आदाणाहित्ति कट्ठु दोक्खं पि तक्खं पि
एवं वयति, वइत्ता जामेव दिंसि पाउब्भूया
तामेव दिंसि पडिगता ।

तेयलिपुत्तस्स विम्हयकरण-पदं

७७. तए णं से तेयलिपुत्ते एवं वयासी—सद्धेयं खलु भो ! समणा वयंति । सद्धेयं खलु भो ! माहणा वयंति । सद्धेयं खलु भो ! समण-माहणा वयंति । अहं एगो असद्धेयं वयामि । एवं खलु—

अहं सह पुत्तेहि अपुत्ते । को मेदं सद्धिस्सइ ?
 सह मित्तेहि अमित्ते । को मेदं सद्धिस्सइ ?
 'सह अत्थेणं अणत्थे । को मेदं सद्धिस्सइ ?
 सह दारेणं अदारे । को मेदं सद्धिस्सइ ?
 सह दासेहि अदासे । को मेदं सद्धिस्सइ ?
 सह पेसेहि अपेसे । को मेदं सद्धिस्सइ ?
 सह परिजणेणं अपरिजणे । को मेदं सद्धिस्सइ ? °

एवं खलु तेयलिपुत्तेणं अमच्चेणं कणगज्झाणं रण्णा अवज्झाणं समाणेणं तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते । से वि य नो कमइ । को मेयं सद्धिस्सइ ? तेयलिपुत्तेणं नीलुप्पल°-°गवलगुलिय-अयसि-कुमुमप्पगासे खुरधारे असी° खंधंसि ओहरिए । तत्थ वि य से धारा ओएत्ता । को मेयं सद्धिस्सइ ? तेयलिपुत्तेणं पासगं गीवाए बंधित्ता° °रुक्खं दुरूढे, पासगं रुक्खे बंधित्ता अप्पा मुक्के । तत्थ वि य से° रज्जु छिन्ना । को मेयं सद्धिस्सइ ? तेयलिपुत्तेणं महइमहालियं° °सिलं गीवाए बंधित्ता अत्थाहमतारमपोरिसीर्यंसि° उदगंसि अप्पा मुक्के । तत्थ वि य णं से थाहे जाए । को मेयं सद्धिस्सइ ? तेयलिपुत्तेणं सुक्कंसि तणकूडंसि° °अगणिकायं पक्खिवित्ता अप्पा मुक्के । तत्थ वि य से° अग्गी विज्झाए । को मेयं सद्धिस्सइ ?—ओहयमणसंकप्पे° °करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° भियायइ° ॥

पोट्टिलदेवस्स संवाद-पदं

७८. तए णं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता तेयलिपुत्तस्स अदूर-सामंते ठिच्चा एवं वयासी—हं भो तेयलिपुत्ता ! पुरओ पवाए, पिट्ठओ हत्थि-भयं, दुहओ अचक्खुफासे, मज्जे सराणि वरिसंति° । गामे पलित्ते रण्णे भियाइ, रण्णे पलित्ते गामे भियाइ । आउसो तेयलिपुत्ता ! कओ वयामो ?

१. सं० पा०—एव अत्थेणं दारेणं दासेहि पेसेहि परिजणेणं ।

२. सं० पा०—नीलुप्पल जाव खंधंसि ।

३. सं० पा०—बंधित्ता जाव रज्जु ।

४. सं० पा०—महालियं जाव बंधित्ता अत्थाह

जाव उदगंसि ।

५. सं० पा०—तणकूडे°

६. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पे जाव भियायइ ।

७. भियाति (क, ख, ग) ।

८. पतंति (वृ) ।

७६. तए णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी—भीयस्स खलु भो ! पव्वज्जा^१, उक्कंठियस्स सदेसगमणं, छुहियस्स^२ अन्नं, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं माइयस्स रहस्सं, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धानपरिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणकिच्चं, परं अभिउज्जिउकामस्स सहायकिच्चं । खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स एत्तो एगमवि न भवइ ॥
८०. तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी—सुट्ठु णं तुमं तेयलिपुत्ता ! एयमट्ठं आयाणाहि त्ति कट्ठु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसिं पाउव्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

तेयलिपुत्तस्स जाईसरणपुव्वं पव्वज्जा-पदं

८१. तए णं तस्स तेयलिपुत्तस्स सुभेणं परिणामेणं जाईसरणे समुप्पन्ने ॥
८२. तए णं तेयलिपुत्तस्स अयमेयारुवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इहेव जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावईए विजए पोंडरीगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था । तए णं हं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता^३ •पव्वइए सामाइयमाइयाइं^४ चोइसपुव्वाइं अहिज्जित्ता वहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए महासुक्के कप्पे ‘देवत्ताए उववण्णे’ । तए णं हं ताम्रो देवलोगाम्रो आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव तेयलिपुरे तेयलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए । तं सेयं खलु मम पुव्वुद्धिद्वाइं^५ महव्वयाइं^६ सयमेव उवसंपज्जित्ता णं विहरित्थिए—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता सयमेव महव्वयाइं^७ आरुहेइ, आरुहेत्ता जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्ठयंसि सुहंसिणस्स अणुचित्तेमाणस्स पुव्वाहीयाइं सामाइयमाइयाइं चोइसपुव्वाइं सयमेव अभिसमण्णागयाइं ॥

केवलगाव-पदं

८३. तए णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं^८ •पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं^९ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खमोवसमेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे ॥

१. सरणं इति गम्यते (वृ) ।

२. छायास्स (क, ख, ग) ।

३. सं० पा०—भवित्ता जाव चोइसपुव्वाइं ।

४. देवे (क, ख, ग) ।

५. पुव्वद्धिद्वाइं (ख) ।

६. पंच महव्वयाइं (घ) ।

७. पंच महव्वयाइं (घ) ।

८. सं० पा०—परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं ।

८४. तए णं तेयलिपुरे नयरे अहासन्निहिहं वाणमंतरेहि देवेहि देवीहि य देवदुंदु-
हीओ समाहयाओ, दसद्धवणे कुसुमे निवाइए, 'चेलुक्खेवे' दिव्वे गीयगंधव-
निनाए कए यावि होत्था ॥

कणगज्झयस्स सावगधम्म-पदं

८५. तए णं से कणगज्झए राया इमांसें कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं वयासी—एवं
खलु तेयलिपुत्ते मए अवज्झाए मुंडे भवित्ता पव्वइए । तं गच्छामि णं तेयलि-
पुत्त अणगारं वंदामि नमंसांमि, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो-
भुज्जो खामेमि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि जेणेव
पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेयलिपुत्ते अणगारे तंणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
तेयलिपुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं 'च णं' विणएणं भुज्जो-
भुज्जो खामेइ, खामेत्ता नच्चासण्णे' •नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणं पंजलिउडे
अभिमुहे विणएणं • पज्जुवासइ ॥

८६. तए णं से तेयलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रण्णो तीसे य महइमहालियाए
परिसाए धम्मं परिकहेइ ॥

८७. तए णं से कणगज्झए राया तेयलिपुत्तस्स केवलस्स अंतिए धम्मं सोच्चा
निसम्मा पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ,
पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे' ॥

तेयलिपुत्तस्स सिद्धि-पदं

८८. तए णं तेयलिपुत्ते केवली वहूणि वासाणि केवलपरियागं पाउणित्ता जाव
सिद्धे ॥

निक्खेव-पदं

८९. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं चौदसमस्स
नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जाव न दुक्खं पत्ता, माणब्भंसं च पाणिणो पायं ।

ताव न धम्मं गेण्हंति भावओ तेयलिसुयव्व ॥१॥

१. × (ग, घ) ।

२. इमीसे कहाए लद्धट्ठे कणगज्झए माताए समं
निगते सव्विद्धीए (आवश्यकचूणि पू०
५०१) ।

३. × (ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—नच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ।

५. पू०-ना० १।५।४७ ।

६. ना० १।१।७ ।

पण्णरसमं अज्झयण

नंदीफले

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं चोदसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पण्णरसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी होत्था । पुण्णभट्ठे चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. तत्थ णं चंपाए नयरीए घणे नामं सत्थवाहे होत्था—अड्ढे जाव' अपरिभूए ॥
४. तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम' नयरी होत्था—रिद्धत्थिमिय-समिद्धा वण्णओ' ॥
५. तत्थ णं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नामं राया होत्था—महया वण्णओ' ॥

घणस्स घोसणा-पदं

६. तए णं तस्स घणस्स सत्थवाहस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मम विपुलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नयारिं वाणिज्जाए गमित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च - चउव्विहं भंडं गेण्हइ, गेण्हत्ता सगडी-सागडं सज्जेइ, सज्जेत्ता सगडी-सागडं भरेइ, भरेत्ता कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए सिघाडग जाव' महापहपहेसु [उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा ?]

१. ना० १।५।७ ।

२. नामं (ख, घ) ।

३. ओ० सू० १ ।

४. ओ० सू० १४ ।

५. ना० १।१।६५ ।

एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! धणे सत्थवाहे विपुलं पणियं आदाय इच्छइ अहिच्छत्तं नयारिं वाणिज्जाए गमित्तए । तं जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुंडे वा पंडुरंगे वा गोयमे वा गोव्वतिए वा 'गिहिधम्ममे वा धम्मचित्तए' वा अविहद्ध-विहद्ध-बुद्धसावग-रत्तपड'-निगंथप्पभिई पासंडत्थे वा गिहत्थे वा धणेणं सत्थवाहेणं सद्धि अहिच्छत्तं नयारिं गच्छइ, तस्स णं धणे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलयइ, अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ, अकुंडियस्स कुंडियं दलयइ, अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ, अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ, अंतरा वि य से पडियस्स वा भगगुग्गस्स साहेज्जं दलयइ, सुहंसुहेण य अहिच्छत्तं संपावेइ त्ति कट्ठु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

७. तए णं ते कोडुंबियपुरिसां^१ धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठुट्ठा चंपाए नयरीए सिघाडग जाव^२ महापहपहेसु^३ एवं वयासी—हंदि सुणंतु भगवंतो ! चंपानयरीवत्थव्वा ! बह्वे चरगा ! वा जाव^४ गिहत्था ! वा, जो णं धणेणं सत्थवाहेणं सद्धि अहिच्छत्तं नयारिं गच्छइ, तस्स णं धणे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलयइ जाव^५ सुहंसुहेण य अहिच्छत्तं संपावेइ त्ति कट्ठु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेत्ता तमाणत्तियं^६ पच्चप्पिणंति ॥
८. तए णं तेसिं कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा चंपाए नयरीए बह्वे चरगा य जाव^७ गिहत्था य जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति ॥
९. तए णं धणे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव^८ गिहत्थाण य अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ जाव^९ अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ, दलयित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि ममं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह ॥
१०. तए णं ते चरगा य जाव^{१०} गिहत्था य धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा^{११} चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि धणं सत्थवाहं पडिवालेमाणा-पडिवाले-माणा^{१२} चिट्ठंति ॥

१. पंडुरंगे (क, ख); पंडुरागे (घ) ।

६. ना० १।१।६५ ।

२. गिहत्थधम्मचित्तए (क); गिहधम्मचित्तए (ख, ग) ।

७. सं० पा०—चरगा वा जाव पच्चप्पिणंति ।

३. रत्तपडी (क) ।

८. ना० १।१।६ ।

९, १०, ११, १२. ना० १।१।६ ।

४. घोसणयं (क); × (ख, ग); उग्घोसणं (घ) ।

१३. ना० १।१।६ ।

१४. सं० पा०—समाणा जाव चिट्ठंति ।

५. सं० पा०—कोडुंबियपुरिसा जाव एवं ।

धणस्स निहेस-पदं

११. तए णं धणे सत्थवाहे सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्तंसि विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ'-०नियग-सयण-संबंधि-परियणं० आमंतेइ, आमंतेत्ता भोयणं भोयावेइ, भोयावेत्ता आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सगडी-सागडं जोयावेइ', जोयावेत्ता चंपाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता नाइविप्पगिट्ठेहि अद्धाणेहि वसमाणे-वसमाणे सुहेहि वसहि-पायरा-सेहि अंगं जणवयं मज्झमज्झेणं जेणेव देसगं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडी-सागडं भोयावेइ, सत्थनिवेसं करेइ, करेत्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एयं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेसंसि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे आगामियाए' छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं वहवे नंदिफला नामं रुक्खा'—किण्हा जाव' पत्तिया पुप्फिया फलिया हरिया रेरिज्ज-माणा सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणा चिट्ठति—मणुण्णा वण्णेणं मणुण्णा गंधेणं मणुण्णा रसेणं मणुण्णा फासेणं मणुण्णा छायाए ।

तं जो णं देवाणुप्पिया ! तेसि नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ, छायाए वा वीसमइ, तस्स णं आवाए भद्दए भवइ । तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेति । तं मा णं देवाणुप्पिया ! केइ तेसि नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव हरियाणि वा आहरउ, छायाए वा वीसमउ, मा णं से वि अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सउ' । तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! अण्णेसि रुक्खाणं मूलाणि य जाव हरियाणि य आहारेह, छायासु वीसमह त्ति घोसणं घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव घोसणं घोसेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

१२. तए णं धणे सत्थवाहे सगडी-सागडं जोएइ, जोएत्ता जेणेव नंदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसि नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थनिवेसं करेइ, करेत्ता दोच्चंपि तच्चंपि कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेसंसि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एए णं देवाणुप्पिया ! ते नंदिफला रुक्खा किण्हा जाव' मणुण्णा छायाए ।

१. सं० पा०—नाइ० ।

२. जोएइ (क) ।

३. द्रष्टव्यम्—१।१८।४४ सूत्रम् ।

४. रुक्खा पणत्ता (क, ख, ग, घ) ।

५. ना० १।१३।१६ ।

६. ववरोविज्जिस्सइ (क, ख, ग) ।

७. ना० १।१५।११ ।

तं जो णं देवाणुप्पिया ! एएसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा वीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ जाव' अकाने चेव जीवियाओ ववरोवेइ । तं मा णं तुम्हे तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव आहारेह, छायाए वा वीसमह, मा णं अकाने चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सह', अण्णेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव' आहारेह, छायाए वा वीसमह त्ति कट्ठु घोसणं घोमेह, घोमेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तद्देव घोसणं घोमेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

निहसपालणस्स निगमण-पदं

१३. तत्थ णं अत्थेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति' •पत्तियंति • रोयंति, एयमट्ठं सद्दहमाणा पत्तियमाणा रोयमाणा तेसिं नंदिफलाणं दूरंदूरेण परिहरमाणा-परिहरमाणा अण्णेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव' आहारंति, छायासु वीसमंति । तेसिं णं आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा सुभरूवत्ताए' •सुभगंधत्ताए सुभरसत्ताए सुभफासत्ताए सुभछायत्ताए • भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ॥

१४. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा' •निगंथो वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे • पंचसु कामगुणेषु नो सज्जइ नो रज्जइ नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोव-वज्जइ, से णं इहभवे चेव वहूणं समणाणं वहूणं समणीणं वहूणं सावगाणं वहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे भवइ, परलोए' •वि य णं नो वहूणि हत्थेयणाणि य कण्णेयणाणि य नासाहेयणाणि य एवं—हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पा-यणाणि उल्लंबणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं • वीईवइस्सइ—जहा व ते पुरिसा ॥

निहसापालणस्स निगमण-पदं

१५. तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति, धणस्स एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव'

१. ना० १।१५।११ ।

२. ववरोविज्जिस्सति(क, ग); ववरोविस्संति(ख)।

३. ना० १।१५।११ ।

४. सं० पा०—सद्दहंति जाव रोयंति ।

५. ना० १।१५।११ ।

६. सं० पा०—सुभरूवत्ताए ।

७. सं० पा०—निगंथो वा जाव पंचसु ।

८. पू०—ना० १।२।७६ ।

९. सं० पा०—परलोए नो आगच्छइ जाव वीईवइस्सइ (क, ख, ग, घ) ।

१०. ना० १।१५।११ ।

आहारंति, छायासु वीसमंति । तेषि णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा' •अकाले चैव जीवियाओ • ववरोवेति ॥

१६. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा निगंथो वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचसु कामगुणेषु सज्जइ' •रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ अज्झोववज्जइ, सेणं इहभवे जाव' अणादियं च णं अणवयगं दीहमद्धं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो • अणुपरि-यट्ठिस्सइ—जहा व ते पुरिसा ॥

धणस्स अहिच्छत्ताऽ।गमण-पदं

१७. तए णं से धणे सत्थवाहे सगडी-सागडं जोयावेइ, जोयावेत्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ, करेत्ता सगडी-सागडं मोयावेइ ॥
१८. तए णं से धणे सत्थवाहे महत्थं महग्घं मह्रिहं रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुपुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयारि मज्झमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'•परिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु जएणं विजएणं • वद्धावेइ, वद्धावेत्ता तं महत्थं महग्घं मह्रिहं रायारिहं पाहुडं उवणेइ ॥
१९. तए णं से कणगकेऊ राया हट्ठुट्ठे धणस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं महग्घं मह्रिहं रायारिहं पाहुडं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता धणं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ, भंडविणिमयं करेइ, करेत्ता पडिभंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहंसुहेणं जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्त-नाइ' •नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धि • अभिसमण्णागए विपुलाइं माणुस्सगाइं' •भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणे • विहरइ ॥

धणस्स पव्वज्जा-पदं

२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं ॥
२१. धणे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठुपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता पव्वइए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहूणि वासाणि सामण्णपरियाणं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसेत्ता, अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे ।

१. सं० पा०—परिणममाणा जाव ववरोवेति ।

४. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेइ ।

२. सं० पा०—सज्जइ जाव अणुपरियट्ठिस्सइ ।

५. सं० पा०—नाइ० ।

३. ना० १।३।२४ ।

६. सं० पा०—माणुस्सगाइं जाव विहरइ ।

महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ^१ •बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ
सव्वदुक्खाण •मंतं करेहिइ ॥

निब्रह्मेव-पदं

२२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^२ संपत्तेणं पण्णरसमस्स
नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

चंपा इव मणुयगई, घणोव्व भयवं जिणो दएक्करसो ।
अहिच्छत्ता नयरिसमं, इह निव्वाणं मुणेयव्वं ॥१॥
घोसणया इव तित्थंकरस्स सिवमग्गदेसणमहग्घं ।
चरगाइणो व्व एत्थं, सिवसुहकामा जिया वहवे ॥२॥
नंदिफलाइ व्व इहं, सिवपहपडिपण्णगाण विसया उ ।
तब्भक्खणाओ मरणं, जह तह विसएहि संसारो ॥३॥
तव्वज्जणेण जह इट्ठपुरगमो विसयवज्जणेण तथा ।
परमानंदनिबंघण-सिवपुरगमणं मुणेयव्वं ॥४॥

सोलसमं अज्भयणं

अवरकका

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पण्णरसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सोलसमस्स णं भंते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था ॥
३. तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सुभूमिभागे नामं उज्जाणे होत्था ॥

नागसिरी-कहाणग-पदं

४. तत्थ णं चंपाए नयरीए तओ माहणा भायरो परिवसंति, तं जहा --सोमे सोमदत्ते सोमभूई—अड्ढा जाव' अपरिभूया रिउव्वेय-जउव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेय जाव' बंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिनिट्ठिया ॥
५. तेसि णं माहणाणं तओ भारियाओ होत्था, तं जहा—नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी—सुकुमालपाणिपायाओ जाव' तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ, तेहि माहणेहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणीओ विहरंति ॥

नागसिरीए तित्तालाउय-उक्खेव-पदं

६. तए णं तेसि माहणाणं अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाणं जाव' इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विउले

१. ना० १।१।७ ।

२. ना० १।५।७ ।

३. ना० १।६।१३६ ।

४. ना० १।१।१७ ।

५. पू०—ना० १।१।१७ ।

६. ना० १।३।७ ।

घण'-●कणग - रयण - मणि - मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार°-
सावएज्जे, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं
पकामं परिभाएउं । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! अण्णमण्णस्स गिहेसु
कल्लाकल्लि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेउं परिभुंजेमाणाणं
विहरित्तए । अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, कल्लाकल्लि अण्णमण्णस्स
गिहेसु' विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेति, परिभुंजेमाणा
विहरन्ति ॥

७. तए णं तीसे नागसिरीए माहणीए अण्णया कयाइ भोयणवारए जाए यावि
होत्था ॥

८. तए णं सा नागसिरी विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेइ, एगं महं
सालइयं तित्तालाउयं' बहुसंभारसंजुत्तं नेहावगाढं उवक्खडेइ', एगं विदुयं
करयलंसि आसाएइ', तं खारं कडुयं अखज्जं विसभूयं' जाणित्ता एवं वयासी—
धिरत्थु णं मम नागसिरीए अधन्नाए अपुण्णाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगनिबो-
लियाए', जाए णं मए सालइए तित्तालाउए बहुसंभारसंभिए नेहावगाढे उवक्ख-
डिए', सुबहुदव्वक्खा नेहक्खए य कए । तं जइ णं मम जाउयाओ जाणिस्सन्ति
तो' णं मम खिसिस्सन्ति । तं जाव' ममं जाउयाओ न जाणन्ति ताव मम सेयं
एयं सालइयं तित्तालाउयं 'बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं'" एगंते गोवित्तए, अण्णं
सालइयं महुरालाउयं'" ●बहुसंभारसंभियं ° नेहावगाढं उवक्खडित्तए—एवं
संपेहेइ, संपेहेत्ता तं सालइयं'" ●तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं एगंते °
गोवेइ, गोवेत्ता अण्णं सालइयं महुरालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं
उवक्खडेइ, उवक्खडेत्ता तेसि माहणाणं ण्हायाणं'" ●भोयणमंडवंसि ° सुहासण-
वरगयाणं तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं परिवेसेइ ॥

९. तए णं ते माहणा जिमियभुत्तुत्तरागया समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया
सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ॥

१०. तए णं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव'" विभूसियाओ तं विपुलं असण-पाण-

१. सं० पा०—घण जाव सावएज्जे ।

२. गिहे (ग) ।

३. तित्त ° (ग) ।

४. उवक्खडावेइ (क, ख, ग, घ) ।

५. आसाएइ (ग) ।

६. विसभूयमिति (क); विसभूयं (ख, ग) ।

७. दूभगनिबोलियाए (ग) ।

८. उवक्खडियाए (ख, ग) ।

९. ता (ख); ताओ (घ) ।

१०. जावताव (क, ख, घ) ।

११. बहुसंभारनेहकयं (क, ख, ग, घ) ।

१२. सं० पा०—महुरालाउयं जाव नेहावगाढं ।

१३. सं० पा०—सालइयं जाव गोवेइ ।

१४. सं० पा०—ण्हायाणं जाव सुहासण ° ।

१५. ना० १।१।८१ ।

खाइम-साइमं आहारेंति, जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता सकम्मसंपउत्ताओ जायाओ ॥

धम्मरुइस्स तित्तालाउय-वाण-पव

११. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा जाव' बहुपरिवारा जेणेव चंपा नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता अहापडि-रूवं' •ओग्गहं ओगिण्हिता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा ° विहरंति । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा पडिग्गया ॥
१२. तए णं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई' नामं अणगारे ओराले' •ओरे ओरगुणे ओरतवस्सी ओरवंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल °-तेयलेस्से मासंमासेणं खममाणे विहरइ ॥
१३. तए णं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए' सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए भाणं भियाइ, एवं जहा गोयमसामी तहेव' भायणाइं ओगाहेइ, तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ जाव' चंपाए नयरीए उच्च-नीअ-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अढमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे ॥
१४. तए णं सा नागसिरी माहणी धम्मरुई एज्जमाणं पासइ, पासित्ता तस्स सालइ-यस्स तित्तालाउयस्स' बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स एडणट्टयाए हट्टुट्टा उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं सालइयं 'तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं' धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि' सव्वमेव निसिरइ' ॥
१५. तए णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमिति कट्टु नागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव

१. ना० १।१४।४० ।

२. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरंति ।

३. धम्मरुती (ग) ।

४. सं० पा०—उराले जाव तेयलेस्से ।

५. पोस्सीए (क); पोरसीए (ख); पोरसी-याए (ग) ।

६. पू०—अण० २।१०७ ।

७. अण० २।१०७-१०६ ।

८. तित्तकडुयस्स (क, ख, ग, घ); पूर्ववर्तिसूत्रेषु 'तित्तालाउयं' इति पाठोऽस्ति । अस्मिन् सूत्रे तस्य परिवर्तनं जातम् । अत्रापि 'अला-उयं' पदमपेक्षितमस्ति, तेनात्र पूर्ववर्तिपाठ एव स्वीकृतः ।

९. तित्तकडुयं च बहुनेहावगाढं (क, ख, ग, घ) ।

१०. पडिग्गहणे (ख, ग); पडिग्गहए (घ) ।

११. नित्सरइ (घ) ।

उवागच्छइ, धम्मघोसस्स [धम्मघोसाणं ?] अदूरसामंते' अन्नपाणं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता अन्नपाणं करयलंसि पडिदंसेइ ॥

तित्तालाउय-परिट्ठावण-पदं

१६. तए णं धम्मघोसा थेरा तस्स सालइयस्स तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स गंधेणं अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ तित्तालाउयाओ बहुसंभारसंभियाओ नेहावगाढाओ एगं बिंदुयं गहाय करयलंसि आसादेंति', तित्तगं' खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं' विसभूयं' जाणित्ता धम्मरुई अणगारं एवं वयासी—जइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! एयं सालइयं' •तित्तालाउयं बहुसंभार-संभियं° नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरो-विज्जसि । तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालइयं' •तित्तालाउयं बहुसंभार-संभियं नेहावगाढं° आहारेसि, मा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरो-विज्जसि । तं गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभार-संभियं नेहावगाढं एगंतमणावाए अचित्ते थंडिले' परिट्ठवेहि, अण्णं फासुयं एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेहि ॥
१७. तए णं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिलं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता तओ' सालइयाओ तित्तालाउयाओ बहुसंभारसंभियाओ नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं' गहाय थंडिलंसि निसिरइ ॥
१८. तए णं तस्स सालइयस्स 'तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स'" गंधेणं बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउभूयाणि" । जा जहा य णं पिपीलिगा आहारेइ, सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ ॥

अहिंसदुठं तित्तालाउय-भक्खण-पदं

१९. तए णं तस्स धम्मरुइस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था - जइ ताव इमस्स सालइयस्स" •तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स° एगंमि बिंदुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाइं पिपीलिगासहस्साइं

- | | |
|---|--|
| १. अदूरसामंते इरियावहियं पडिक्कमइ (घ) । | ८. थंडिले (ख) । |
| २. आसाएंति (क) : आसाइति (घ) । | ९. ताओ (क, ख) । |
| ३. तित्तं (ख) । | १०. बिंदु (क, ख) । |
| ४. अपिज्जं (क) । | ११. तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाढस्स(क, ख, ग, घ)। |
| ५. विसभूयमिति (ख) । | १२. पाउ (क, ग, घ); पाउभूया (ख) । |
| ६. सं० पा०—सालइयं जाव नेहावगाढं । | १३. सं० पा०—सालइयस्स जाव एगंमि । |
| ७. सं० पा०—सालइयं जाव आहारेसि । | |

ववरोविज्जंति, तं जइ णं अहं एयं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं थंडिलंसि सव्वं निसिरामि तो' णं बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं वहकरणं भविस्सइ । तं सेयं खलु ममेयं सालइयं' *तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं' नेहावगाढं सयमेव आहारित्तए, ममं चेव एएणं सरीरणं निज्जाउ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ संपेहेत्ता मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, ससीसोवरियं कायं पमज्जेइ, तं सालइयं 'तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं' बिलमिव पल्लगभूएणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्टुगंसि पक्खिवइ ॥

धम्मरुइस्स समाहिमरण-पदं

२०. तए णं तस्स धम्मरुइस्स तं सालइयं' *तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं' नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला' *विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा' दुरहियासा ॥
२१. तए णं से धम्मरुइ अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे' अधारणिज्जमिति कट्टु आयारभंडगं एगंते ठवेइ, थंडिलं पडिलेहेइ, दब्भसंथारगं संथरेइ', दब्भसंथारगं दुरूहइ, पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव' सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं । पुंवि पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए' सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव' बहिद्धादाणे" [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?], इयाणि पि णं अहं तेसिं चेव भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव बहिद्धादाणं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जहा खंदओ जाव' चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए ॥

साहूहिं धम्मरुइस्स गवेसणा-पदं

२२. तए णं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिरगयं जाणित्ता समणे निग्गंथे सदावेत्ति, सदावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! 'धम्मरुइ अणगारे'"

१. ता (क, ग); तए (ख) ।

६. अंतियं (क) ।

२. सं० पा०—सालइयं जाव नेहावगाढं ।

१०. ना० १।५।५६ ।

३. तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं (क, ख, ग, घ) ।

११. परिग्गहे (क, ख, ग, घ) अत्रापि १।५।५६

४. सं० पा०—सालइय जाव नेहावगाढं ।

वत् पाठरचना समालोचनीयास्ति । द्रष्टव्यम्—

५. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।

१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

६. अपुरिसक्कार' (ग) ।

१२. भग० २।६८, ६९ ।

७. संथारेइ (ग) ।

१३. धम्मरुइस्स अणगारस्स (ख) ।

८. ओ० सू० २१ ।

मासक्खमणपारणगंसि सालइयस्स' *तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स °
नेहावगाढस्स निसिरणट्टयाए बहिया निग्गए चिरावेइ' । तं गच्छह णं तुभे
देवाणुप्पिया ! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेह ॥

साहूहि धम्मरुइस्स समाहिमरण-निवेदन-पदं

२३. तए णं ते समणा निग्गंथा' *धम्मघोसाणं थेराणं जाव' तहत्ति आणाए विणएणं
वयणं ° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति,
पडिनिक्खमिन्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणा
जेणेव थंडिले तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स
सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा अहो !
अकज्जमिति कट्ठु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सगं
करेंति, धम्मरुइस्स आयारभंडगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव
उवागच्छति, उवागच्छित्ता गमणागमणं पडिक्कमंति, पडिक्कमिन्ता एवं
वयासी—एवं खलु अम्हे तुभं अंतियाओ पडिनिक्खमामो, सुभूमिभागस्स
उज्जाणस्स परिपेरंतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ ° समंता मग्गण-
गवेसणं ° करेमाणा जेणेव थंडिले तेणेव उवागच्छामो जाव इहं हव्वमागया ।
तं कालगए णं भंते ! धम्मरुइ अणगारे । इमे से आयारभंडए ॥

धम्मरुइस्स सइसभा-पदं

२४. तए णं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति, समणे निग्गंथे निग्गंथीओ
य सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जो ! मम अंतेवासी धम्मरुइ
नामं अणगारे पगइभट्टए' *पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउ-
मद्व-संपण्णे अल्लीणे भट्टए ° विणीए मासंमासेणं अणिकित्तेणं तवोकम्मेषं
अप्पाणं भावेमाणे जाव' नागसिरीए माहणीए गिहं अणुपविट्ठे । तए णं सा
नागसिरी माहणी' जाव' *तं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं
धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव ° निसिरइ ।
तए णं से धम्मरुइ अणगारे अहापज्जत्तमिति कट्ठु नागसिरीए माहणीए
गिहाओ पडिनिक्खमइ जाव' 'समाहिपत्ते कालगए' ॥

१. सं० पा०—सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स ।

६. ना० १।१६।१४ ।

२. चिरादते (क); चिरगए (घ) ।

१०. ना० १।१६।१५-२१ ।

३. सं० पा०—निग्गंथा जाव पडिसुणेंति ।

११. अत्र 'कालं अणवकंसमाणे बिहरइ' इति

४. ना० १।१।२६ ।

पाठो लभ्यते, किन्तु जाव शब्दसमर्पिते २१

५. सं० पा०—सव्वओ जाव करेमाणा ।

सूत्रे 'समाहिपत्ते कालगए' इति पाठो

६. सं० पा०—पगइभट्टए जाव विणीए ।

वर्तते । तदनुसारेण अत्रास्माभिः स एव

७. ना० १।१६।१३ ।

पाठः स्वीकृतः ।

८. सं० पा०—माहणी जाव निसिरइ ।

से णं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणिता आलोइय-
पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उइठं जाव' सम्बट्टसिद्धे
महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरो-
वमाइं ठिई पणत्ता । तत्थ णं धम्मरुइस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई
पणत्ता । से णं धम्मरुई देवे ताम्मो देवलोगाम्मो' •आउक्खएणं ठिइक्खएणं
भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

नागसिरीए गरिहा-पदं

२५. तं धिरत्थु णं अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुण्णाए' •दूभगाए
दूभगसत्ताए दूभग°निबोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू साहूरूवे धम्मरुई
अणगारे मासक्खमणपारणगंसि सालइएणं' •तित्तालाउएणं बहुसंभारसंभिएणं °
नेहावगाढेणं अकाले चेव जीवियाम्मो ववरोविए ॥
२६. तए णं ते समणा निग्गंथा धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म'
चंपाए सिंघाडग-तिग'-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु ° बहुजणस्स
एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पणवेति एवं परूवेति—धिरत्थु णं
देवाणुप्पिया ! नागसिरीए जाव' दूभगनिबोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू
साहूरूवे धम्मरुई अणगारे सालइएणं' •तित्तालाउएणं बहुसंभारसंभिएणं °
नेहावगाढेणं अकाले चेव जीवियाम्मो ववरोविए ॥
२७. तए णं तेसिं समणाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म बहुजणो अणमणस्स
एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पणवेइ एवं परूवेइ—धिरत्थु णं नागसिरीए
माहणीए जाव' जीवियाम्मो ववरोविए ॥

नागसिरीए गिहनिष्वासण-पदं

२८. तए णं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म
आसुरुत्ता'° •रुट्ठा कुविया चंडिक्किया ° मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी
माहणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता नागसिरि माहणि एवं वयासी—
'हंभो नागसिरी ! अपत्थियपत्थिए ! दुरंतपंतलक्खणे ! हीणपुण्णचाउइसे !
[सिरि-हिरि-घिइ-कित्तिपरिवज्जिए ?] धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुण्णाए

१. ना० १।१।२११ ।

२. सं० पा०—देवलोगाम्मो जाव महाविदेहे ।

३. सं० पा०—अपुण्णाए जाव निबोलियाए ।

४. सं० पा०—सालइएणं जाव नेहावगाढेणं ।

५. निसम्मा (क, ख, ग) ।

६. सं० पा०—तिग जाव बहुजणस्स ।

७. ना० १।१६।२५ ।

८. सं० पा०—सालइएणं जाव नेहावगाढेणं ।

९. ना० १।१६।२६ ।

१०. सं० पा०—आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा ।

दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगनिबोलियाए, जाए णं तुमे तहारूवे साहू साहूरूवे धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइएणं तित्तालाउएणं जाव' जीवियाओ ववरोविए ।" उच्चावयाहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसंति, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसंति, उच्चावयाहिं निब्भञ्छणाहिं निब्भञ्छंति, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडंति, तज्जेति तालेंति, तज्जित्ता तालित्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभंति ॥

२६. तए णं सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणो चंपाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिसिज्जमाणी निदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी' धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी दंडीखंड-निवसणा' खंडमल्लय-खंडघडग-हत्थगया फुट्ट'-हडाहड-सीसा मच्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गा गेहंगेहेणं देहंबलियाए' वित्ति कप्पेमाणी विहरइ ॥

नागसिरीए भवभमण-पदं

३०. तए णं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलस रोगायंका' पाउवभूया ।
[तं जहा—

सासे कासे' जरे दाहे, जोणिसूले भगंदरे ।
अरिसा अजीरए दिट्ठी-मुद्धसूले अकारए ॥
अच्छिवेयणा कणवेयणा कंडू दउदरे ° कोढे' ॥१॥]

३१. तए णं सा नागसिरी माहणी सोलसेहिं रोगायंकेहिं अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा कालमासे कालं किच्चा छट्टाए पुढवीए उक्कोसं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ।
सा णं तओ अणंतरं उव्वट्ठित्ता मच्छेसु उववण्णा' । तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए 'उक्कोसं तेत्तीस-सागरोवमट्ठिइएसु' नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ।

१. ना० १।१६।२५ ।

२. १।१८।८ सूत्रे निब्भञ्छेइ ।

३. तालिज्जमाणी बहिज्जमाणी (ब) ।

४. वसणा (क, ख, ग) ।

५. फट्ट (ख) ।

६. देहबलियाए (क, ख, ग, घ); देहबलिका

तया, अनुस्वारो नैपातिकः (वृ) ।

७. रोगायंका (ख) ।

८. सं० पा०—कासे जोणिसूले जाव कोढे ।

९. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यातः प्रतीयते ।

१०. उववज्जइ (क, ख) ।

११. उक्कोससागरोवम ° (क, ख) ।

सा णं तन्नोणंतरं उव्वट्ठित्ता दोच्चंपि मच्छेसु उववज्जइ' । तत्थ वि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चंपि अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसं तेत्तीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जइ । सा णं तन्नोहिंतो' उव्वट्ठित्ता तच्चंपि मच्छेसु उववण्णा । तत्थ वि य णं सत्थवज्झा' •दाहवक्कंतीए • कालमासे कालं किच्चा दोच्चंपि छट्ठाए पुढवीए उक्कोसं' बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा । तन्नोणंतरं उव्वट्ठित्ता उरगेसु, एवं जहा गोसाले' तहा नेयव्वं जाव रयणप्पभाओ पुढवीओ उव्वट्ठित्ता 'सण्णीसु उववण्णा । तन्नो उव्वट्ठित्ता असण्णीसु उववण्णा । तत्थ वि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा । तन्नो उव्वट्ठित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं' जाव' अदुत्तरं च खरवायर-पुढविकाइयत्ताए, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो ॥

सुमालिया-कहाणग-पदं

३२. सा णं तन्नोणंतरं उव्वट्ठित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागर-दत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छंसि दारियत्ताए पच्चायाया ॥
३३. तए णं सा भद्दा सत्थवाही नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं' दारियं पयाया—सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं ॥
३४. तए णं तीसे णं दारियाए निव्वत्तवारसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारूवं गोणं गुणनिप्फणं नामधेज्जं करेति—जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाल-कोमलिया गयतालुयसमाणा, तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जं सुकुमालिया-सुकुमालिया ॥

१. अत्रापि पूर्वोक्तक्रमानुसारेण भूतकालक्रिया-प्रयोगो युज्यते, किन्तु भ्रादशेषु तथा नोप-लभ्यते ।

२. तन्नोहिंतो जाव (क, ख, ग, घ) । एतत् पदमनावश्यकं प्रतिभाति ।

३. सं० पा०—सत्थवज्झा जाव कालमासे ।

४. उक्कोसेणं (क, ख, ग, घ) ।

५. भग० १५।१८६ ।

६. सण्णीसु उववण्णा तन्नो उव्वट्ठित्ता जाइं

इमाइं खहयरविहाणाइं (क, ख, ग, घ) एष संक्षिप्तपाठोऽस्ति । भगवत्यनुसारेण अस्य स्थाने पाठः पूरितोऽस्ति । समर्पणसूत्रे प्रायः पाठस्य संक्षेपः कृतो लभ्यते । अत्रापि स एव क्रमः अनुसृतोऽस्ति, किन्तु संक्षिप्तवान-न्तरं खेवरयोनी जन्म नाभूत् । स्वीकृतपाठा-वलोकनेन एतत् स्पष्टं भवति ।

७. भग० १५।१८६ ।

८. पू०—ता० १।१६।१२४ ।

३५. तए णं तीसे दारियाए अम्मपियरो नामधेज्जं करेति सूमालियत्ति ॥
 ३६. तए णं सा सूमालिया दारिया पंचघाईपरिग्गहिया [तं जहा—खीरघाईए' *मज्जणघाईए मंडावणघाईए खेल्लावणघाईए अंकघाईए]' अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणी रम्मे मणिकोट्टिमतले० गिरिकंदरमल्लीणा इव चंपगलया निवाय'-निव्वाघायंसि' *सुहंसुहेणं० परिवड्डइ ॥

सूमालियाए सागरेण सद्धि बिवाह-पदं

३७. तए णं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबालभावा' *विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुत्ता० रुवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ।
 ३८. तत्थ णं चंपाए नयरीए जिणदत्ते नामं सत्थवाहे—अड्ढे ॥
 ३९. तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया—सूमाला इट्ठा' माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरइ ॥
 ४०. तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नामं दारए—सुकुमालपाणिपाए जाव' सुरूवे ॥
 ४१. तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ सयाओ' गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ । इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडिया-'चक्कवाल-संपरिवुडा' उप्पि आगासतलगंसि कणग-तिदूसएणं 'कीलमाणी-कीलमाणी' विहरइ ॥
 ४२. तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासइ, पासित्ता सूमालियाए दारियाए रुवे य जोव्वणे य लावण्णे य जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया ? किं वा नाम-धेज्जं से ?
 ४३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठुट्ठा करयल''*परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु० एवं वयासी - एस णं देवाणुप्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए भारियाए अत्तया

१. सं० पा०—खीरघाईए जाव गिरिकंदर- ६. इट्ठा जाव (ख, घ) ।
 मल्लीणा । ७. ना० १।१।१७ ।
 २. वसी कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यासः प्रतीयते । ८. सामो (क, ख, ग) ।
 ३. X (ख) । ९. संघपरिवुडा (ग) ।
 ४. सं० पा०—निव्वाघायंसि जाव परिवड्डइ । १०. कीलमाणी (ख, ग) ।
 ५. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावा जाव रुवेण । ११. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

सूमालिया नामं दारिया—सुकुमालपाणिपाया जाव' रुवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा ॥

४४. तए णं जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए मित्त-नाइ-परिवुडे चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागए ॥

४५. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अम्भुट्ठेइ, अम्भुट्ठेत्ता आसणेणं उवनिमंतेइ, उवनिमंतेत्ता आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी—भण देवाणुप्पिया ! किमागमण-पओयणं ?

४६. तए णं से जिणदत्ते सागरदत्तं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तियं सूमालियं सागरस्स^१ भारियत्ताए वरेमि । जइ णं जाणह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो, ता दिज्जउ णं सूमालिया सागरदारगस्स । तए णं देवाणुप्पिया ! भण किं दलयामो^२ सुकं^३ सूमालियाए ?

४७. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया एगा^४ एगजाया^५ इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा जाव^६ उंबरपुप्फं व दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं । तं जइ णं देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम घरजामाउए भवइ, तो णं अहं सागरस्स सूमालियं दलयामि ॥

४८. तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरगं^७ दारगं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे ममं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया—इट्ठा^८ कंता पिया मणुण्णा मणामा जाव^९ उंबरपुप्फं व दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं^{१०} । तं जइ णं सागरए दारए मम घरजामाउए भवइ, 'तो णं'^{११} दलयामि ॥

१. ना० १।८।६० ।

२. सागरदत्तस्स दारगस्स (ख, ग) ।

३. दलामो (क) ।

४. सुकं (ख); सुक्कं (घ) ।

५. मम एगा झूया (क)

६. एगा जाया (ख, घ) ।

७. ना० १।१।१०६ ।

८. सागरं (ग, घ) ।

९. सं० पा०—इट्ठा तं चेव ।

१०. ना० १।१।१०६ ।

११. जाव (ख, घ) ।

४६. तए णं से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाने तुसिणीए ॥
५०. तए णं' जिणदत्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ'-●नियग-सयण-संबंधि-परियणं० अमंतेइ, जाव' सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता सागरं दारगं ण्हायं जाव' सम्वालंकारविभूसियं करेइ, करेत्ता पुरिससहस्स-वाहिणीयं सीयं दुरुहावेइ', मित्त-नाइ'-●नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धि० परिवुडे सव्विद्धीए सयाओ' गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता चंपं नयारि मज्झमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स उवणेइ ॥
५१. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता जाव' सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए दारियाए सद्धि पट्टयं दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता सेयापीएहिं' कलसेहि मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोम' करावेइ, करावेत्ता 'सागरगं दारयं'" सूमालियाए दारियाए पाणि गेण्हावेइ ॥

सागरस्स पलायण-पदं

५२. तए णं सागरए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं 'पाणिफासं पडिसंवेदेइ'", से जहानामए—असिपत्ते इ वा" ●करपत्ते इ वा खुरपत्ते इ वा कलंबचीरिगा-पत्ते इ वा सत्तिअग्गे इ वा कोंतग्गे इ वा तोमरग्गे इ वा भिडिमालग्गे इ वा सूचिकलावए इ वा विच्छुयडंके इ वा कविकच्छू इ वा इंगाले इ वा मुम्मुरे इ वा अच्ची इ वा जाले इ वा अलाए इ वा सुद्धागणी इ वा भवे एयारूवे ? नो इणट्ठे समट्ठे । एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुणतराए चेव अमणामतराए चेव ० पाणिफासं संवेदेइ ॥
५३. तए णं से सागरए अकामए अवसवसे" मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥
५४. तए णं सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स अम्मापियरो मित्त-नाइ"-●नियग-सयण-

१. णं से (ख, घ) ।

२. सं० पा०—नाइ० ।

३. ना० १।१४।५३ ।

४. ना० १।१४।७ ।

५. दुरुहावेइ (क, ख) ।

६. सं० पा०—नाइ जाव पडिवुडे ।

७. सातो (क, ख, ग, घ) ।

८. ना० १।१६।५० ।

९. सीयापीयएहि (ख, ग); सीयापीएहि (घ) । १५. सं० पा०—नाइ० ।

१०. होमं (क, ख, ग, घ) ।

११. सागरस्स (क) ।

१२. संपडिवेदेति (ख); पाणि फासेति संपडिवेदेति (ग); संवेदेइ (घ) ।

१३. सं० पा०—असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव ।

१४. अवसवसे (ख, ग); अपस्ववसः अपगतात्म-तत्र इत्यर्थः (घ) ।

- संबंधि-परियणं ° विपुलेणं' असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ'-●गंध-मल्लालंकारेण य सब्कारेत्ता ° सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
५५. तए णं सागरए सूमालियाए सद्धि जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धि तलिमंसि' निवज्जइ ॥
५६. तए णं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, से जहानामए—असिपत्ते इ वा जाव' एत्तो अमणामतरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥
५७. तए णं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए अंगफासं असहमाणे अवसवसे' मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥
५८. तए णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जसि' निवज्जइ ॥
५९. तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समानी पइव्वया' पइमणुरत्ता पइं पासे अपस्समाणी तलिमाओ' उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ ॥
६०. तए णं से सागरदारए सूमालियाए दारियाए दोच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ जाव' अकामए अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥
६१. तए णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता वासघरस्स दारं विहाडेइ, विहाडेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

सूमालियाए चित्ता-पदं

६२. तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया' °पइमणु-रत्ता पइं पासे ° अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगरस्स सव्वओ समंता भगण-गवेसणं करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—गए णं से सागरए त्ति कट्ठु ओह्यमणसंकप्पा' °करतल-पल्हत्थमुही अट्ठज्झाणोवगया ° भियायइ ॥

१. विपुलं (क, ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—वत्थ जाव सम्माणेत्ता ।

३. तलिगंसि (ख, ग) ।

४. ना० १।१६।५२ ।

५. अवसव्वसे (क, ख, ग) ।

६. सयणीयंसि (क, ख, घ) ।

७. पतिव्वया (ख, ग, घ) ।

८. तलिगाओ (ख); तलियगतो (ग) ।

९. ना० १।१६।५२, ५३ ।

१०. सं० पा०—पतिव्वया जाव अपासमाणी ।
पतिव्वया० (ग, घ) ।

११. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा जाव भियायइ ।

६३. तए णं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए^१ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! बह्वरस्स मुहधोवणियं^२ उवणेहि ॥
६४. तए णं सा दासचेडी भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता मुहधोवणियं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं^३ *ओहयमणसंकप्पां^४ करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं^५ भियायमाणि पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पां^६ *करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया^७ भियाहि ?
६५. तए णं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडिं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! सागरए दारए ममं सुहपमुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता वासघरदुवारं अवंगुणेइ^८ *अवंगुणेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउव्भूए तामेव दिसिं^९ पडिगए । तए णं तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा^{१०} *पतिव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेमि सागरस्स दारगस्स सव्वओ समंता मगण-गवेसणं करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दारं^{११} विहाडियं पासामि, पासित्ता गए णं से सागरए ति कट्ठु ओहयमणसंकप्पां^{१२} *करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया^{१३} भियायामि ॥
६६. तए णं सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ ॥

सागरदत्तेण जिणदत्तस्स उवालभ-पव

६७. तए णं से सागरदत्ते दासचेडीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्कए भिसिमिसेमाणे जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! एयं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिसं वा जण्णं सागरए दारए सूमालियं दारियं अदिट्ठदोसवडियं^{१४} पइव्वयं^{१५} विप्पजहाय इहमागए ? बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंणियाहि^{१६} य उवालभइ ॥

१. पू०—ना० १।१।२४ ।

६. सं० पा०—पडिबुद्धा जाव विहाडियं ।

२. मुहसोवणियं (क); *सोहणियं (ख);
*सोयणियं (ग) ।

७. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव भियायामि ।

३. सं० पा०—दारियं जाव भियायमाणि ।

८. अदिट्ठदोसं (क, ग) ।

४. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव भियाहि ।

९. पइव्वयं (क, ख, ग, घ) ।

५. अवंगुणेइ (ग) । सं० पा०—अवंगुणेइ जाव पडिगए ।

१०. × (क); कंठणियाहि (ग); रुंणियाहि (घ) ।

सागरस्स पुणोगमण-व्वदास-पदं

६८. तए णं जिणदत्ते सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी—डुट्ठु णं पुत्ता ! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमागच्छंतेणं । तं गच्छह णं तुमं पुत्ता ! 'एवमवि' गए" सागरदत्तस्स गिहे ॥
६९. तए णं से सागरए दारए जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—अवियाइं अहं तामो ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसभक्खणं वा सत्थोवाडणं वा वेहाणसं वा गिद्धपट्ठं वा पव्वज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छेज्जा, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छेज्जा" ॥

सूमालियाए दमगेण सद्धि पुणव्विवाह-पदं

७०. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुडुंतरियाए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ, निसामेत्ता लज्जिए विलीए विड्डे जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडि-निक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता एवं वयासी—किण्णं तव पुत्ता ! सागरएणं दारएणं ? अहं णं तुमं तस्स दाहामि, जस्स णं तुमं इट्ठा" कंता पिया मणुण्णा ° मणामा भविस्ससि त्ति सूमालियं दारियं ताहि इट्ठाहि कंताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि वग्गूहि" समासासेइ, समासासेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
७१. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे अणण्या उप्पि आगासतलगंसि सुहनिसण्णे राय-मगं ओलोएमाणे-ओलोएमाणे चिट्ठइ ॥
७२. तए णं से सागरदत्ते एगं महं दमगपुरिसं पासइ—दंडिखंड-निवसणं" खंडमल्लग-खंडघडग-हत्थगयं 'फुट्ट-हडाहड-सीसं मच्छियासहस्सेहि" अग्निज्जमाणमगं ॥
७३. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुम्हे णं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं

१. हव्वमागए (ख, घ) ।

२. एयमवि (क) ।

३. इत्थमपिगते—अस्मिन् कार्ये (१।१६।२६६ सूत्रस्य वृत्तिः) ।

४. मरुप्पवेसं (क)

५. विहणसं (ख) ।

६. गेद्धपट्ठं (ख, ग) ।

७. अणुगच्छेज्जा (क) ।

८. दारएणं मुक्का (घ) ।

९. सं० पा०—इट्ठा जाव मणामा ।

१०. बहूहि वग्गूहि (घ) ।

११. वसणं (ख, ग) ।

१२. मच्छियासहस्सेहि जाव (क, ख, ग, घ) ।

आदर्शेषु पाठान्तररूपेण निर्दिशितः पाठः उपलभ्यते, किन्तु अस्मिन् 'जाव' पदस्य विपर्ययो जातः । हत्थगयं जाव' इति पाठ-रचना युक्तास्ति । प्रस्तुताध्ययनस्य २६ सूत्रावलोकनेन एतत् स्पष्टं जायते ।

पलोभेह', गिहं अणुप्पवेसेह', अणुप्पवेसेत्ता खंडमल्लगं खंडघडगं च से एगंते एडेह, एडेत्ता अलंकारियकम्मं करेह, ण्हायं कयबलिकम्मं' •कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्तं° सव्वालंकारविभूसियं करेह, करेत्ता मणुण्णं असण-पाण-खाइम-साइमं भोयावेह, मम अतियं उवणेह ॥

७४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव' पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं दमगं असण-पाण-खाइम-साइमेणं उवप्प-लोभेति', उवप्पलोभेत्ता सयं गिहं अणुप्पवेसंति, अणुप्पवेसेत्ता तं खंडमल्लगं खंडघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडेति ॥

७५. तए णं से दमगे तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एडिज्जमाणंसि महया-महया सहेणं आरसइ ॥

७६. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे तस्स दमगपुरिसस्स तं महया-महया आरसिय-सइं सोच्चा निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—किन्नं देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया-महया सहेणं आरसइ ?

७७. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा एवं वयंति—एस णं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एडिज्जमाणंसि महया-महया सहेणं आरसइ ॥

७८. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स तं खंड'•मल्लगं खंडघडगं च एगंते° एडेह, पासे से ठवेह जहा 'अपत्तियं न'° भवइ । ते वि तहेव ठवेति', ठवेत्ता तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति, करेत्ता सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेति, अब्भं-गिए' समाणे सुरभिणा गंधट्टएणं' गायं उव्वटेंति, उव्वट्टेत्ता उसिणोदग-गंधो-दएणं ण्हाणेंति, सीओदगेणं ण्हाणेंति, पम्हल-मुकुमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता हंसलक्खणं पडगसाडगं परिहेंति, सव्वालंकारविभूसियं करेंति, विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं भोयावेति, भोयावेत्ता सागरदत्तस्स उवणेति"॥

१. पडिलाभेह (घ) अणुदं प्रतिभाति ।

२. अणुपविसेह (ग) ।

३. सं० पा०—कयबलिकम्मं जाव सव्वालंकार-विभूसियं ।

४. ना० १।१।१२६ ।

५. उवलोभेति (क) ।

६. सं० पा०—खंड जाव एडेह ।

७. णं पत्तियं (ख, ग, घ) ।

८. ठवेति (ख, ग) ।

९. अब्भंगिए (ग) ।

१०. गंधोदुएणं (क, घ); गंधुदएणं (ख); गंध-दूएणं (ग); गंधवट्टएणं (क्व०) । अत्र लिपिदोषेण वर्णपरिवर्तनं जातम् । उद्वर्तन-प्रकरणे उद्वर्तकवस्तुनिर्देशो युज्यते । अतः एवात्र 'गंधट्टएणं' इति पाठः स्वीकृतः । स्थानाङ्गे (३।८७) पि एतत् तुल्यप्रकरणे असौ पाठ उपलभ्यते ।

११. समीवे उवणेति (क्व) ।

७६. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं ण्हायं जाव' सव्वालंकारविभू-
सियं करेत्ता तं दमगपुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! मम धूया इट्ठा
कंता पिया मणुणा मणामा । एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलयामि', भदियाए
भद्वओ भवेज्जासि' ॥

दमगस्स पलायण-पदं

८०. तए णं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सूमालियाए
दारियाए सद्धि वासघरं अणुपविसइ, सूमालियाए दारियाए सद्धि तलिमंसि
निवज्जइ ॥
८१. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमेयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ', *से जहा-
नामए—असिपत्ते इ वा जाव' एत्तो अमणामतरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भव-
माणे विहरइ ॥
८२. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए दारियाए अंगफासं असहमाणे अवसवसे
मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥
८३. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारि-
याए पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता सयणिज्जंसि निवज्जइ ॥
८४. तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समानी पइव्वया
पइमणुरत्ता पइं पासे अपस्समाणी तलिमाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव से सयणिज्जे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दमगपुरिस्स पासे णुवज्जइ ॥
८५. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए दारियाए दोच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं
पडिसंवेदेइ जाव' *अकामए अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥
८६. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता ° सयणिज्जाओ
'अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता' वासघराओ निगगच्छइ, निगगच्छित्ता खंडमल्लगं खंड-
घडगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं
पडिगए ॥

सूमालियाए पुणोच्चिता-पदं

८७. तए णं सा सूमालिया' *दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया पइमणु-

१. ना० १।१।४७ ।

२. दलयामि (क) ।

३. भवेज्जाहि (ग) ।

४. सं० पा०—सेसं जहा सागरस्स जाव सय-
णिज्जाओ ।

५. ना० १।१६।५२ ।

६. ना० १।१६।५२, ५३ ।

७. पब्भुट्ठेइ २ (क, ग) ।

८. दिसं (क, ख) ।

९. सं० पा०—सूमालिया जाव गए

रत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्टेइ, दमगपुरिसस्स सब्बओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी०—गए णं से दमगपुरिसे त्ति कट्ठु ओह्यमणसंकप्पा' •करतल-पल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया० भियायइ ॥

८८. तए णं सा भद्दा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं' •वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! बहूवरस्स मुहधोवणियं उवणेहि ॥

८९. तए णं सा दासचेडी भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ता समानी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता मुहधोवणियं गेण्हइ, गेण्हत्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं ओह्यमणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहि अट्टज्झाणोवगयं भियायमाणि पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओह्यमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भियाहि ?

९०. तए णं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडिं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिए ! दमगपुरिसे ममं सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्टेइ, उट्टेत्ता वासघरदुवारं अवंगुणेइ, अवंगुणेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए । तए णहं तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्टेमि, दमगपुरिसस्स सब्बओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडियं पासामि, पासित्ता गए णं से दमगपुरिसे त्ति कट्ठु ओह्यमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भियायामि ॥

९१. तए णं सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता० सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ ॥

सूमालियाए बाणसाला-पवं

९२. तए णं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाने जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता एवं वयासी—अहो णं तुमं पुत्ता ! पुरापोराणाणं' •दुच्चिण्णाणं दुप्परक्कंताणं कडाणं पावाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं० पच्चणुब्भवमाणी विहरसि । तं मा णं तुमं पुत्ता ! ओह्यमणसंकप्पा' •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया० भियाहि ।

१. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा जाव भिया-यइ ।

२. पू०—ना० १।१।२४ ।

३. सं० पा०—एवं जाव सागरदत्तस्स ।

४. सं० पा०—पुरापोराणाणं जाव पच्चणुब्भव-माणी ।

५. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा जाव भियाहि ।

तुमं णं पुत्ता ! मम महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं '●उवक्खडा-वेहि, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य० परिभाएमाणी विहराहि ॥

६३. तए णं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता [कल्लाकल्लि ?] महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं '●उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य० परिभाएमाणी' विहरइ ॥

अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियागमण-पदं

६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं गोवालियाओ अज्जाओ' बहुस्सुयाओ '●बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणीओ जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिख्वं ओगहं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावे-माणीओ विहरंति ।
६५. तए णं तासि गोवालियाणं अज्जाणं एगे संघाडए' जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोवालियाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं तुभेहि अग्गणुण्णाए चंपाए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥
६६. तए णं ताओ अज्जाओ गोवालियाहिं अज्जाहिं अग्गणुण्णाया समाणीओ' भिक्खायरियं अडमाणीओ सागरदत्तस्स गिहं अणुप्पविट्ठाओ ।

सूमालियाए सागरपसायोवाय-पुच्छा-पदं

६७. तए णं सूमालिया ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठा आसणाओ अग्गुट्ठेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ०, पडिलाभेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा' ●अकंता अप्पिया अमणुण्णा० अमणामा ! नेच्छइ णं सागरए दारए मम नामं●गोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा० परिभोगं वा ?

१. सं० पा०—जहा पोट्टिला जाव परिभाए-माणी ।

२. सं० पा०—साइमं जाव परिभाएमाणी ।

३. दलयमाणी (क, ग); दलमाणी (ख, घ) ।

४. पू०—ना० १।१४।४० ।

५. सं० पा०—एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया ।

६. पू०—ना० १।१४।४१ ।

७. पू०—ना० १।१४।४२ ।

८. सं० पा०—अणिट्ठा जाव अमणामा ।

९. सं० पा०—नामं वा जाव परिभोगं ।

जस्स-जस्स वि य णं देज्जामि' तस्स-तस्स वि य णं अणिट्ठा' *अकंता अप्पिया
अमणुणा° अमणामा भवामि ।

तुब्भे य णं अज्जाओ ! बहुनायाओ' *बहुसिक्खियाओ बहुपढियाओ बहूणि
गामागर-णगर - खेड-कव्वड - दोणमुह-मडंव-पट्टण-आसम-निगम-संबाह-सण्ण-
वेसाइं आहिडह, बहूणं राईसर-तलवर-माडंविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-
सत्थवाहपभिईणं गिहाइं अणुपविसह । तं अत्थियाइं भे अज्जाओ ! केइ
कहिंचि चुण्णजोए वा मंतजोगे वा कम्मणजोए वा कम्मजोए वा हियउड्ढावणे
वा काउड्ढावणे वा आभिओगिण वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भइकम्मे
वा मूले वा कंदे वा छल्ली वल्ली सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे
वा° उवलद्धपुव्वे, जेणं अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता' *पिया मणुणा
मणामा° भवेज्जामि ?

अज्जा-संघाडगस्स उत्तर-पदं

६८. "तए णं ताओ अज्जाओ सूमालियाए एवं वुत्ताओ समानीओ दोवि कण्णे
ठएंति, ठएत्ता सूमालियं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समानीओ
निगंथीओ जाव' गुत्तवंभचारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पगारं कण्णेहिं
वि निसामित्तए, किमंग पुण उवदंसित्तए वा आयरित्तए वा अम्हे णं तव
देवाणुप्पिए ! विचित्तं केवलपण्णत्तं धम्मं परिकहिज्जामो ॥

सूमालियाए साविया-पदं

६९. तए णं सा सूमालिया ताओ अज्जाओ एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ !
तुब्भं अंतिए केवलपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए ॥

१००. तए णं ताओ अज्जाओ सूमालियाए विचित्तं केवलपण्णत्तं धम्मं परिकहेंति ॥

१०१. तए णं सा सूमालिया धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठा एवं वयासी—सद्दहामि णं
अज्जाओ ! निगंथं पावयणं जाव' से जहेयं तुब्भे वयह । इच्छामि णं अहं
तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिब-
ज्जित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिए !

१०२. तए णं सा सूमालिया तासि अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव' गिहिधम्मं
पडिबज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता पडिबिसज्जेइ ॥

१. देज्जाहि (क) ।

साविया जाया तहेव चित्ता तहेव सागरदत्तं

२. सं० पा०—अणिट्ठा जाव अमणामा ।

आपुच्छति ।

३. सं० पा०—बहुनायाओ एवं जह्वा पोट्टिला
जाव उवलद्धे ।

६. ना० १।१४।४० ।

७. ना० १।१।१०१ ।

४. सं० पा०—कंता जाव भवेज्जामि ।

८. ना० १।१४।४७ ।

५. सं० पा०—अज्जाओ तहेव अणति तहेव

१०३. तए णं सा सूमालिया समणोवासिया जाया जाव' समणे निग्गंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिगगह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

सूमालियाए पव्वज्जा-पवं

१०४. तए णं तोसे सूमालियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सागरस्स पुब्बि इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणि अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा । नेच्छइ णं सागरए मम नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा परिभोगं वा ? जस्स-जस्स वि य णं देज्जामि तस्स-तस्स वि य णं अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा भवामि । तं सेयं खलु ममं गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिगगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु० एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं इच्छामि णं तुब्भेहि अम्भणुण्णाया पव्वइत्तए जाव' गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइया ॥

१०५. तए णं सा सूमालिया अज्जा जाया—इरियासमिया जाव' गुत्तबंभयारिणी बहूहि चउत्थ-छट्ठुम'-●दसम दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि अप्पाणं भावेमाणी० विहरइ ॥

सूमालियाए आतावणा-पवं

१०६. तए णं सा सूमालिया अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहि अम्भणुण्णाया समाणी चंपाए नयरीए बाहि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठुछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए ॥

१०७. तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी—अम्हे णं

१. ना० १।५।४७ ।

४. ना० १।१४।४० ।

२. ना० १।१।२४ ।

५. सं० पा०—छट्ठुम जाव विहरइ ।

३. ना० १।१४।५३, ५४ ।

अज्जो ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव' गुत्तबंभचारिणीओ ।
नो खलु अम्हं कप्पइ बहिया गामस्स वा जाव' सण्णिवेसस्स वा छट्ठंछट्ठेण'
•अणिकिखत्तेणं तवोकम्मेणं सुराभिमुहीणं आयावेमाणीणं° विहरित्तए । कप्पइ
णं अम्हं अंतोउवस्सयस्स वइपरिकिखत्तस्स संघाडिबद्धियाए णं समतलपइयाए'
आयावेत्तए ॥

१०८. तए णं सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठं नो सइहइ नो पत्तियइ नो रोएइ,
एयमट्ठं असइहमाणी अपत्तियमाणी अरोयमाणी सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स
अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं° •अणिकिखत्तेणं तवोकम्मेणं सुराभिमुही आयावेमाणी°
विहरइ ॥

सूमालियाए नियाण-पदं

१०९. तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोट्टी परिवसइ-‘नरवइ-दिन्न-पयारा’° अम्मापिइ° -
नियण-निप्पिवासा वेसविहार-कय-निकेया° नाणाविह-अविणयप्पहाणा अड्डा
जाव' बहुजणस्स अपरिभूया ॥
११०. तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नामं गणिया होत्था—सूमाला जहा अंड-नाए" ॥
१११. तए णं तीसे ललियाए गोट्टीए अणया कयाइ पंच गोट्टिल्लगपुरिसा देवदत्ताए
गणियाए सडि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स" उज्जाणसिंरि पच्चणुब्भवमाणा
विहरंति ॥
११२. तत्थ णं एगे गोट्टिल्लगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छंगे घरेइ, एगे पिट्ठओ आयवत्तं
घरेइ, एगे पुप्फपूरणं रएइ, एगे पाए रएइ", एगे चामरुक्खेवं करेइ ॥
११३. तए णं सा सूमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं" पंचहि गोट्टिल्लपुरिसेहिं सडि
उरालाई माणुस्सगाई भोगभोगाई भुंजमाणिं" पासइ, पासित्ता इमेयारूवे
संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमा इत्थिया पुरापोराणाणं" •सुचिण्णाणं
सुपरवकंताणं कडाणं कल्लाणाणं कम्माणं कल्लाणं फलवित्तिविसेसं पच्च-

१. ना० १।१४।४० ।

निकिया (ग) ।

२. ना० १।१।११८ ।

६. ना० १।५।७ ।

३. सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरित्तए ।

१०. ना० १।३।८ ।

४. समतलपइयाए (क); °पत्तियाए (ख, घ);
°वत्तियाए (ग) ।

११. × (ख, घ) ।

५. सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ ।

१२. पाठान्तरे पाए रोवेइत्ति घृतजलाभ्यां
आद्रयति (वृ) ।

६. नरवइविदिणवियारा (क, ख) ।

१३. एहिं (क) ।

७. अम्मापिई° (क, ख, ग) ।

१४. भुंजमाणी (क, ख, घ, ङ) ।

८. निकेया (क); विकिया (ख);

१५. सं० पा०—पुरापोराणाणं जाव विहरइ ।

णुव्वमवमाणी० विहरइ । तं जइ णं केइ इमस्स सुचरियस्स तव-नियम-
बंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि, तो णं अहमवि आगमिस्सेणं
भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं' •माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी०
विहरिज्जामि त्ति कट्ठु नियाणं करेइ, करेत्ता आयावणभूमीओ' पच्चोरुभइ ॥

सूमालियाए बाउसियत्त-पदं

११४. तए णं सा सूमालिया अज्जा सरीरवाउसिया' जाया यावि होत्था—अभिकखणं-
अभिकखणं हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ,
कक्खंतराइं धोवेइ, गुज्झंतराइं धोवेइ, जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा
चेएइ, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं
वा निसीहियं वा चेएइ ॥
११५. तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी --एवं खलु
अज्जे ! अम्हे समणीओ निग्गंधीओ इरियासमियाओ जाव' वंभचेरधारिणीओ ।
नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरवाउसियाए' होत्तए । तुमं च णं अज्जे !
सरीरवाउसिया' अभिकखणं-अभिकखणं हत्थे धोवेसि', •पाए धोवेसि, सीसं
धोवेसि, मुहं धोवेसि, थणंतराइं धोवेसि, कक्खंतराइं धोवेसि, गुज्झंतराइं धोवेसि,
जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएसि, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं
अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा० चेएसि । तं तुमं णं
देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि' •निंदाहि गरिहाहि पडिक्कमाहि
विउट्ठाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठेहि, अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं०
पडिवज्जाहि ॥
११६. तए णं सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ,
'अणाढायमाणी अपरियाणमाणी' विहरइ ॥
११७. तए णं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिकखणं-अभिकखणं हीलेति' •निंदेति
खिसेति गरिहंति० परिभवन्ति, अभिकखणं-अभिकखणं एयमट्ठं निवारंति ॥

१. सं० पा०—उरालाइं जाव विहरिज्जामि ।

२. •भूमीए (ख, ग, घ) ।

३. •बाउसा (क); •पाउसा (ख, ग);
पाउसिया (घ) ।

४. ना० ११४।४० ।

५. •पाउसिया (ख, ग, घ) ।

६. पाउसिया (ख, घ) ।

७. सं० पा०—धोवेसि जाव चेएसि ।

८. सं० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि ।

९. अणाढाइमाणा अपरियाणमाणा (क, घ);
अणाढायमाणा अपरियाणमाणा (ख);
अपरियाणमाणा (ग) ।

१०. सं० पा०—हीलेति जाव परिभवन्ति ।

सूमालियाए पुढोविहार-पदं

११८. तए णं तीसे सूमालियाए समणीहि निगंथीहि हीलिज्जमाणीए' •निदिज्ज-
माणीए खिसिज्जमाणीए गरिहिज्जमाणीए परिभविज्जमाणीए अभिक्खणं-
अभिक्खणं एयमट्ठं° निवारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए' •चिनिए पत्थिए
मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जया णं अहं अगारमज्जे' वसामि', तया
णं अहं अप्पवसा । जया णं अहं मंडा भवित्ता पव्वडया, तया णं अहं परवसा ।
पुंवि च णं ममं समणीओ आढंति परिजाणंति, इयाणि नो आढंति नो परिजा-
णंति । तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए' उट्ठियम्मि मूरे सहस्स-
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते गोवालियाणं अज्जाणं अतियाओ पडिनिक्ख-
मित्ता पाडिक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्ताए त्ति कट्ठं एवं संपेहेइ,
संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि मूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे
तेयसा जलंते गोवालियाणं अज्जाणं अतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता
पाडिक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

११९. तए णं सा सूमालिया अज्जा अणाहट्ठिया' अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं-
अभिक्खणं हत्थे धोवेइ', •पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराई
धोवेइ, कक्खंतराई धोवेइ, गुज्झंतराई धोवेइ, जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा
निसीहियं वा चेएइ, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अवभुक्खेत्ता तओ पच्छा
ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा° चेएइ ।

तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारिणी ओसन्ना ओसन्नविहारिणी कुसीला
कुसीलविहारिणी संसत्ता संसत्तविहारिणी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं
पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं ओसेत्ता, तीसं भत्ताई
अणसणाए छेएत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोडयपडिक्कंता कालमामे कालं किच्चा
ईसाणे कप्पे अण्णयरंसि विमाणंसि देवगणियत्ताए उववण्णा । तत्थेगइयाणं'
देवीणं नवपलिओवमाइं ठिई पणत्ता । तत्थ णं सूमालियाए देवीए नवपलि-
ओवमाइं ठिई पणत्ता ॥

दोवई-कहाणग-पदं

१२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु
कंपिल्लपुरे नामं नयरे होत्था--वण्णओ' ॥

१. सं० पा०—हीलिज्जमाणीए जाव निवा-
रिज्जमाणीए ।

२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

३. अगारवास° (ख) ।

४. परिवसामि (क) ।

५. पू०—ना० १।१।२४ ।

६. अणाहट्ठिया (ख, घ) ।

७. सं० पा०—धोवेइ जाव चेएइ ।

८. तत्थगतियाणं (क, ग) ।

९. ओ० सू० १ ।

१२१. तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था—वण्णम्भो' ॥
 १२२. तस्स णं चुलणी देवी । घट्टज्जुणे कुमारे जुवराया ॥
 १२३. तए णं सा सूमालिया देवी ताम्भो देवलोगाम्भो आउक्खएणं' •ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं° चइत्ता इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स' रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिसि दारिय-त्ताए पच्चायाया' ॥
 १२४. तए णं सा चुलणी देवी नवण्हं मासाणं' •बहुपडिपुण्णाणं अट्ठमाण य राइं-दियाणं वीइक्कंताणं सुकुमाल-पाणिपायं जाव'° दारियं पयाया ॥
 १२५. तए णं तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इमं एयारूवं नामं—जम्हा णं एसा दारिया दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया, तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामघेज्जे' दोवई ॥
 १२६. तए णं तीसे अम्मापियरो इमं एयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामघेज्जं करेति—दोवई-दोवई ॥
 १२७. तए णं सा दोवई दारिया पंचघाईपरिगगहिया जाव' गिरिकंदरमल्लीणा इव चंपगलया निवाय'-निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ ॥
 १२८. तए णं सा दोवई रायवरकण्णा उम्मुक्कबालभावा' •विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुप्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा° उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥
 १२९. तए णं तं दोवई रायवरकण्णं अण्णया कयाइ अंतेउरियाम्भो ण्हायं जाव'' सव्वालंकारविभूसियं करेति, करेत्ता दुवयस्स रण्णो पायवंदियं पेसेति ॥
 १३०. तए णं सा दोवई रायवरकण्णा जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेइ ॥

दोवईए सयंबर-संकप्प-पवं

१३१. तए णं से दुवए राया दोवई दारियं अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता दोवईए रायवर-कण्णाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य जायविम्हए दोवई रायवरकण्णं एवं वयासी—जस्स णं अहं तुमं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए

१. ओ० सू० १४ ।

२. सं० पा०—आउक्खएणं जाव चइत्ता ।

३. दुपयस्स (ख, ग) ।

४. पयाया (क) ।

५. सं० पा०—मासाणं जाव दारियं ।

६. ना० १।१।२० ।

७. नामघेज्जं (ख, घ) ।

८. ना० १।१६।३६ ।

९. निव्वाय (क) ।

१०. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा ।

११. ना० १।१।४७ ।

सयमेव दलइस्सामि, तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुहिया वा भवेज्जासि । तए णं मम जावज्जीवाए हिययदाहे भविस्सइ । तं णं अहं तव पुत्ता ! अज्जयाए सयंवरं वियरामि । अज्जयाए णं तुमं दिन्नसयंवरा । जं णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि, से णं तव भत्तारे भविस्सइ त्ति कट्ठु ताहिं इट्ठाहिं' °कंताहि पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं ° आसासेइ, आसासेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

वारवईए दूयपेसण-पदं

१३२. तए णं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! वारवइं नयारि । तत्थ णं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्विजयपामोक्खे दस दसारे, बलदेवपामोक्खे पंच महावीरे, उगसेणपामोक्खे सोलस रायसहस्से, पज्जुन्नपामोक्खाओ अद्दट्ठाओ कुमारकोडीओ, संबपामोक्खाओ सट्ठि दुइंत-साहस्सीओ, वीरसेणपामोक्खाओ एक्कवीसं वीरपुरिससाहस्सीओ', महासेण-पामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ, अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिइओ करयलपरिगहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु जएणं विजएणं वद्धावेहि, वद्धावेत्ता एवं वयाहिं—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णे धूयाए, चूलणीए अत्तयाए, धट्टज्जुणकुमारस्स' भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ । तं णं तुव्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा' अकालपरिहीणं' चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह ॥

१३३. तए णं से दूए करयल'°परिगहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं ° कट्ठु दुवयस्स रण्णे एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह । 'ते वि तहेव उवट्ठवेति' ॥

१३४. तए णं से दूए ण्हाए जाव'° अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे चाउग्घटं आसरहं

१. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव आसासेइ ।

२. रायवरवीर ° (ख, ग); वीरसाहस्सीणं (१।५।६) ।

३. वयह (क) ।

४. धिट्ठ ° (ग) ।

५. ते (ख) ।

६. अणुगिण्हेमाणा (क, ग, घ) ।

७. °परिहीणा (ख, घ) ।

८. सं० पा०—करयल जाव कट्ठु ।

९. सो वि तहेव उवट्ठवेति (क, ख, ग, घ); 'कोडुंबियपुरिसे' तथा 'उवट्ठवेह' एते क्रियापदे बहुवचनान्ते स्तः, तेनात्रापि बहुवचनान्ते क्रियापदे युज्येते । एवं प्रतीयते पाठपूरणे कश्चिद् विपर्ययो जातः ।

१०. ना० १।१।२७ ।

दुरुहइ, दुरुहिता बहूहि पुरिसेहि—सण्णइ'-●बद्ध-वम्मिय-कवएहि उप्पीलिय-सरासण-पट्टिएहि पिणइ-गेविज्जेहि आविद्ध-विमल-वरचिध-पट्टेहि ° गहियाउह-पहरणेहि—सद्धि संपरिवुडे कंपिल्लपुरं नयरं मज्झमज्झेणं निगच्छइ, पंचाल-जणवयस्स मज्झमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स' मज्झमज्झेणं जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता बारवइं नयारि मज्झमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसत्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघटं आसरहं ठावेइ, ठावेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता मणुस्स-वग्गुरापरिक्खत्ते पायचारविहारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हं वासुदेवं, समुद्विजयपामोक्खे य दस दसारे जाव' 'छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ' करयल'●परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धयाए, चुलणीए अत्तयाए, धट्टज्जुणकुमारस्स भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे अत्थि । तं णं तुम्हे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे ° समोसरह ॥

१३५. तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्टुट्ठु'-
●चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण °-हियए
तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

कण्हस्स पत्थाण-पवं

१३६. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेहि ॥

१३७. तए णं से कोडुंबियपुरिसे करयल'●परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए
अंजलि ° कट्टु कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव
सभाए सुहम्माए सामुदाइया' भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाइयं
भेरिं महया-महया सद्देणं तालेइ ॥

१३८. तए णं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्विजयपामोक्खा दस

१. सं० पा०—सण्णइ जाव गहिया ° ।

२. सुरट्ठु ° (क, घ) ।

३. ना० १।१६।१३२ ।

४. १३२ सूत्रानुसारेणाऽत्र 'सत्यवाहृप्पमिइओ'

इति पाठः संगच्छते ।

५. सं० पा०—करयल तं चेव जाव समोसरह ।

६. सं० पा०—हट्टुट्ठु जाव हियए ।

७. सं० पा०—करयल ° ।

८. सामुदाणिया (ख, घ) ।

दसारा जाव' 'महासेणपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ' ण्हाया जाव' सव्वालंकारविभूसिया जहाविभवइड्डिसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया ह्यगया' •एवं गयगया रह-सीया-संदमाणीगया • अप्पेगइया पायविहारचारेणं' जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल' •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठुं ° कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं वद्धावेति ॥

१३६. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी — खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं' हत्थिरयणं पडिकप्पेह ह्य-गय'- •रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव ° पच्चप्पिणंति ॥

१४०. तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समत्तजालाकुलाभिरामे' •विचित्तमणि-रयणकुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंड-वंसि णाणामणि-रयण-भत्ति-चित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहणिसण्णे सुहोदएहिं गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुद्धोदएहिं पुणो-पुणो कल्लाणग-पवर मज्जणविहीए मज्जिए जाव' ° अंजणगिरिकूडसन्निभं गयवइं नरवई दुरूढे ॥

१४१. तए णं से कण्हे वासुदेवे समुद्धविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव' •अणंग-सेणपामोक्खाहिं अणंगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सच्चिद्धीए जाव' •दुंदुहि-निग्घोसनाइयरवेणं वारवइं नयारिं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचालजणवयस्स मज्झमज्झेणं जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

हत्थिणाउरे दूयपेसण-पवं

१४२. तए णं से दुवए राया दोच्चं पि दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं' नयरं । तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्तयं—

१. ना० १।१६।१३२ ।

२. १३२ सूत्रानुसारेणाऽत्र 'सत्थवाहप्पमिइओ' इति पाठः संगच्छते ।

३. ना० १।१।४७ ।

४. सं० पा०—ह्यगया जाव अप्पेगइया ।

५. पायवारविहारेणं (क, ख, ग) ।

६. सं० पा०—करयल जाव कण्हं ।

७. अभिसेक्कं (क, ख, घ) ।

८. सं० पा०—ह्यगय जाव पच्चप्पिणंति ।

९. सं० पा०—समत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरि० ।

१०. ओ० सू० ६३ ।

११. ना० १।५।६ ।

१२. ना० १।१।३३ ।

१३. हत्थिणपुरं (ख, घ) ।

जुहिट्टिलं' भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं, दुज्जोहणं भाइसय'-समगं, गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणिं कीवं आसत्थामं करयलं^१ परिगगहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अज्जलिं कट्ठु जएणं विजएणं वद्धावेहि, वद्धावेत्ता एव वयाहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए घट्टज्जुणकुमारस्स भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ । तं णं तुब्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे^२ समोसरह ॥

१४३. तए णं से दूए^३ जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव पंडुराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुरायं सपुत्तयं—जुहिट्टिलं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं, दुज्जोहणं भाइसय-समगं, गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणिं कीवं आसत्थामं^४ एवं वयइ—एवं खलु देवाणुपिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए, घट्टज्जुणकुमारस्स भइणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे अत्थि । तं णं तुब्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह ॥

१४४. तए णं से पंडुराया जहा वासुदेवे नवरं—भेरी नत्थि जाव^५ जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

दूयपेसण-पवं

१४५. एएणेव कमेणं—

तच्चं दूयं^६ एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! चंपं नयरि । तत्थ णं

१. जुहिट्टिलं (घ) ।

२. आयसय^० (ख, घ) ।

३. सं० पा०—करयल जाव कट्ठु तहेव जाव समोसरह ।

४. सं० पा०—तए णं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव;

पू०—ना० १।१६।१३३, १३४ ।

५. पू०—ना० १।१६।१३४ ।

६. ना० १।१६। १३५-१४१ ।

७. सं० पा०—तच्चं दूयं चंपं नयरि । तत्थ णं तुमं कण्णं अंगरायं सत्तं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह । चउत्थं दूयं सोत्तिमइं नयरि । तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमपोससुयं पंचभाइसयसंपरिवुडं करयल तहेव जाव

समोसरह । पंचम दूयं हत्थिसीसं नयरि । तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल जाव समोसरह । छट्ठं दूयं महुरं नयरि । तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह । सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं । तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासंधसुयं करयल जाव समोसरह । अट्ठमं दूयं कोडिणं नयरं । तत्थ णं तुमं रुप्पि भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह । नवमं दूयं विराटं नयरि । तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसयसमगं करयल जाव समोसरह । दसमं दूयं अबसेसेसु गामागर-नगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह । तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर तहेव जाव समोसरह ।

तुमं कण्णं' अंगरायं, सल्लं नंदिरायं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह' ।
 चउत्थं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सोत्तिमइं नयरिं ।
 तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसय-संपरिवुडं एवं वयाहि—
 कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह' ।
 पंचमं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिसीसं नयरिं । तत्थ
 णं तुमं दमदंतं रायं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह' ।
 छट्ठं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! महुरं नयरिं । तत्थ णं
 तुमं धरं रायं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह' ।
 सत्तमं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! रायगिहं नयरिं । तत्थ
 णं तुमं सहदेवं जरासंधसुयं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह' ।
 अट्ठमं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! कोडिणं नयरं । तत्थ
 णं तुमं रुप्पि भेसगसुयं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह' ।
 नवमं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! विराटं नयरं । तत्थ णं
 कीयगं भाउसय-समगं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह' ।
 दसमं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! अवसेसेसु गामागर-
 नगरेसु । तत्थ णं तुमं अणेगाइं रायसहस्साइं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे०
 समोसरह' ।

रायसहस्साणं पत्थाणं-पवं

१४६. तए णं ते" बहवे रायसहस्सा पत्तेयं-पत्तेयं ण्हाया सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-

१. कण्हं (क्व) ।

२. शेष १३२-१३४ सूत्रवत् पूरणीयम् ।

३-८. शेष १३२-१३४ सूत्रवत् पूरणीयम् ।

९. शेष १३२-१३४ सूत्रवत् पूरणीयम् । अन्ति-
 मात् 'समोसरह' इति पदादग्रे निम्नलिखितः
 पाठो लभ्यते, किन्तु पूर्वक्रमानुसारेण असी
 संक्षिप्तपाठपद्धतावेव गमितोस्ति, तेना-
 त्रास्माभिः पाठान्तररूपेण स्वीकृतः । 'तए
 णं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर-
 नगराइं जेणेव अणेगाइं रायसहस्साइं तेजेव
 उवागच्छइ, उवागच्छत्ता एवं वयासी—
 कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह । तए णं ताइं
 अणेगाइं रायसहस्साइं तस्स दूयस्स अंतिए
 एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठा तं दूयं सक्का-

रेंति सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता
 पडिविसज्जेति' [ख, ग, घ] । १३४ सूत्र-
 १४५ सूत्रपर्यन्तं 'क' प्रती एनावान् एव पाठः
 उपलभ्यते - गच्छह णं तुमं देवाणु रायगिहं
 नयरं । तत्थ णं तुमं सहदेवं रायाणं अण्णे य
 जाव बहवे जाव बद्धवेत्ता एवं वयह—एवं
 खलु देवाणुप्पिया । कंपिल्लपुरे जाव समो-
 सरह । एवं महुराए उगेणं उगसेण वा
 रायं । हत्थिण्णउरे पंडुं सपुत्तयं । वइराडए
 णगरे दुज्जोहणं भाइसतसमगं सड्ढणि
 सल्लणि च जयइहं दोणं आसत्थामं अण्णे य ।
 दंतपुरी दंतवक्को । चंपाए पउमराया । तए
 णं से दूए तहत्ति जाव पडिसुणेइ ।

१०. ते वासुदेवपामोक्खा [क, ख, ग, घ] ।

कवया' हत्थिखंधवरगया' हय-गय-रह'-० पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ता० सएहि-सएहि नगरेहितो अभिनिग्गच्छति, अभिनिग्गच्छित्ता जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

बुवयस्स आतित्थ-पव

१४७. तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानईए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह—अणेगखंभ-सयसन्निविट्ठं लीलट्टिय-सालिभंजियागं जाव' पासाईयं दरिसणिज्जं अरिरूवं पडिरूवं—करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ॥
१४८. तए णं से दुवए राया [दोच्चंपि ?] कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ॥
१४९. तए णं से दुवए राया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आगमणं जाणेत्ता पत्तेयं-पत्तेयं हत्थिखंध'०वरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्ज-माणेणं सेयवरचामराहि वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरि-क्खित्ते० अग्घं च पज्जं च गहाय सव्विड्डीए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइं वासुदेवपामोक्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं पत्तेयं-पत्तेयं आवासे वियरइ ॥
१५०. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थिखंधेहितो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं-पत्तेयं खंधावार-निवेसं करेति, करेत्ता सएसु-सएसु आवासेसु अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता सएसु-सएसु आवासेसु आसणेसु य सयणेसु य सन्निषण्णा य संतुयट्ठा य बहूहि गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवनच्चिज्जमाणा य विहरंति ॥
१५१. तए णं से दुवए राया कंपिल्लपुरं नयरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता विपुलं

वासुदेवस्य प्रस्थानविषयकं सूत्रं पूर्वं साक्षात्
उल्लिखितमस्ति, तथैव पाण्डुराजस्यापि,
तेनासी पाठः पाठान्तररूपेण स्वीकृतः ।

१. पू०—ना० १।१६।१३४ ।

२. पू०—ना० १।५।५७; १।१६।१५३ ।

३. सं० पा०—रह महया ।

४. ना० १।१ ८६ ।

५. × (ग, घ) ।

६. सं० पा०—हत्थिखंध जाव परिवुडे ।

७. आवासेसु य (क, ख, ग, घ) ।

असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसन्नं च सुवहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं च वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु साहरह । तेवि साहरंति ॥

१५२. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा तं विपुलं असण'-●पाण-खाइम-साइमं सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च० पसन्नं च आसाएमाणा विसादेमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा विहरंति । जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा' ●परमसुइभूया० सुहासणवरगया बहूहि गंधवेहि य' ●नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवनच्चिज्जमाणा य० विहरंति ॥

दोवईए सयंवर-पदं

१५३. तए णं से दुवए राया पच्चावरण्ह'-कालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कंप्पिल्लपुरे सिंघाडग'-●तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह०-पहेसु वासुदेवपामोक्खाणं रायसह-स्साणं आवासेसु हत्थिखंधवरगया महया-महया सदेणं उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए देवीए अत्तियाए, घट्टज्जुणस्स भगिणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्संड । तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव' सव्वालंकारविभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरेंट'●मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्ज-माणेणं सेयवरचामराहि वीइज्जमाणा हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरं-गिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विद० परिकिखत्ता जेणेव सयंवरांमंडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं-पत्तेयं नामंकिएसुं आसणेसु निसीयह, निसीइत्ता दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह त्ति'० घोसणं घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

१५४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव' पच्चप्पिणंति ॥

१. सं० पा०—असण जाव पसन्नं ।

७. ना० १।१४७ ।

२. सं० पा०—चोक्खा जाव सुहासणवरगया ।

८. सं० पा०—सकोरेंट० सेयचामर हय-गय-

३. सं० पा०—गंधवेहि य जाव विहरंति ।

रह-महयाभडचडगरेण जाव परिकिखत्ता ।

४. पुच्चावरण्ह (ख, ग, घ) ।

९. नामंकेसु (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

१०. × (क, ख, ग) ।

६. पू०—ना० १।१२४ ।

११. ना० १।१६।१५३ ।

१५५. तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सहावेइ, सहावेत्ता एवं वयासी—गच्छह
णं तुभे देवाणुप्पिया ! सयंवरमंडवं आसिय-संमज्जिओवलितं पंचवण्ण^१-
पुप्फोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क^२-^३धूव-डज्भंत-सुरभि-
मघमघंत-गंधुद्धयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं^४ गंधवट्ठिभूयं मंचाइमंचकलियं
करेह कारवेह, करेत्ता कारवेत्ता वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं-
पत्तेयं नामंकियाइ^५ आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं रएह, रएत्ता एयमाणत्तियं
पच्चप्पिणह । तेवि जाव पच्चप्पिणंति ॥
१५६. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए^६
उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाया जाव^७ सव्वालंकार-
विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं
सेयवरचामराहि वीइज्जमाणा हय-गय^८-^९रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए
सेणाए सद्धि संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खत्ता^{१०} सव्वि-
ड्डीए जाव^{११} दुंदुहि-निग्घोस-नाइयरवेणं जेणेव सयंवरामंडवे तेणेव उवागच्छंति,
उवागच्छित्ता अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता पत्तेयं-पत्तेयं नामंकिएसु^{१२}
आसणेसु निसीयंति दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठंति ॥
१५७. तए णं से दुवए राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए^{१३} उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाए जाव^{१४} सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंध-
वरगए सकोरेंट^{१५} मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहि
वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि
संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खत्ते^{१६} कंपिल्लपुरं नगरं
मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, जेणेव सयंवरामंडवे जेणेव वासुदेवपामोक्खा बहवे
रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसि वासुदेवपामोक्खाणं करयल^{१७}-
^{१८}परिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु जएणं विजएणं वद्धावेइ^{१९},
वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठइ ॥
१५८. तए णं सा दोवई रायवरकण्णा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए^{२०} उट्ठियम्मि सूरे

१. सुगंध-वरगंधियं पंचवण्ण (क ख, ग, घ) ।

८. नामंकेसु (ख, घ) ।

२. सं० पा०—तुरुक्क जाव गंधवट्ठिभूयं ।

९. पू०—ना० १।१।२४ ।

३. नामंकाइं (क, ख, ग, घ) ।

१०. ना० १।१।४७ ।

४. पू०—ना० १।१।२४ ।

११. सं० पा०—सकोरेंट हयगय ।

५. ना० १।१।४७ ।

१२. सं० पा०—करयल वद्धावेत्ता ।

६. सं० पा०—हयगय जाव परिवुडा ।

१३. पू०—ना० १।१।२४ ।

७. ना० १।१।३३ ।

सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव मज्जणघरे तेणेव उव छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता जिणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ, करेत्ता जिणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥

१५६. तए णं तं दोवई रायवरकणं अंतेउरियाओ सब्बालंकारविभूसियं करंति । 'किं ते' ? वरपायपत्तनेउरा जाव' चेडिया-चक्कवाल-'महयरग-विद'-परिक्खित्ता अंतेउराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किड्ढावियाए लेहियाए सद्धि चाउग्घंटे आसरहं दुरूहइ ॥

१६०. तए णं से धट्ठजुणे कुमारे दोवईए रायवरकण्णाए सारत्थं करेइ ॥

१६१. तए णं सा दावई रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नयरं मज्झमज्झेणं जेणेव सयंवरा-मंडवे' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चो-रुहित्ता किड्ढावियाए लेहियाए सद्धि सयंवरामंडवं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयल'परिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठुं तेसि वासुदेव-पामोक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेइ ॥

१६२. तए णं सा दोवई रायवरकण्णा एगं महं सिरिदामगंडं—किं ते ? पाडल-

जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ त्ति एकस्यां वाचनायामेतावदेव द्ययते (वृ) । वाचनान्तरे तु—ण्हाया जाव सब्बालंकारविभूसिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ जेणामेव जिण-घरे तेणामेव उवागच्छति जिणघरं अणुपवि-सइ, अणुपविसित्ता जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ, करेत्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता एवं जहा सूरियाभे जिणपडिमाओ अच्चेति तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ २ वामं जाणुं अंचेइ, दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्ठुं तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसइ [निमेइ (क, ग); निसीयइ (घ); निवाडेइ (राय० सू० २६२)] ईसि पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता करयलपरिगहियं अंजलि मत्थए

कट्ठु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ नमंसइ नमंसित्ता जिण-घराओ पडिनिक्खमइ (वृपा, क, ख, ग, घ) ।

२. किं तत्त 'यत् करोति' इति शेषः ।

३. ना० १।१।३३ ।

४. मयहरिग० (क); मयहरग० (ख, घ); मयहरयंद (ग); यद्यपि पाठसंशोधन-प्रयुक्तेषु आदर्शेषु 'मयहरग०' इतिपाठो लभ्यते किन्तु 'ओवाइयं' ७० सूत्रे 'महत्तरवंद' इति पाठो-स्ति, तदनुसारेण 'महयरगवंद' इति पाठोऽ-स्माभिः स्वीकृतः । लिपिदोषेण यकार-हकारयोर्विपर्ययः संजातः इति संभाव्यते ।

५. सयंवरमंडवे (क, ख, ग, घ) ।

६. सं० पा०—करयल० ।

मल्लिय-चंपय जाव' सत्तच्छयाईहिं' गंधद्वणिं मुयंतं परमसुहपासं दरिसणिज्जं —
गेण्हइ ॥

१६३. तए णं सा किड्ढाविया सुरूवा' •साभावियघंसं वोद्दहजणस्स उस्सुयकरं विचित्त-
मणि-रयण-बद्धच्छरुहं° वामहत्थेणं चिल्लगं दप्पणं गहेऊण सललियं दप्पण-
संकंतिबिबं-संदंसिए' य से दाहिणेणं हत्थेणं दरिसए' पवररायसीहे । फुडविसय-
विसुद्ध-रिभिय-गंभीर-महुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं' पत्थिवाणं अम्मापिउ-
वंस-सत्त-सामत्थ-गोत्त-विक्कंति-कंति'-बहुविहआगम-माहप्प-रूव - कुलसीलजा-
णिया कित्तणं करेइ । पढमं ताव वणिहपुंगवाणं दसारवरं'-वीरपुरिस-तेलोकक-
बलवगाणं", सत्तु"-सयसहस्स-माणवमद्गाणं" 'भवसिद्धिय-वरपुंडरीयाणं"'
चिल्लगाणं बल-वीरिय-रूव-जोवण-गुण-लावणकित्तिया कित्तणं करेइ ।
तओ पुणो उग्गसेगमाईणं" जायवाणं भणइ—सोहगगरूवकलिए वरेहि
वरपुरिसगंधहत्थीणं जो हु ते होइ हियय-दइओ ॥

दोवईए पंडव-वरण-पदं

१६४. तए णं सा दोवई रायावरकण्णगा बहूणं रायवरसहस्साणं मज्झमज्झेणं
समइच्छमाणी-समइच्छमाणी" पुव्वकयनियानेणं चोइज्जमाणी-चोइज्जमाणी
जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ते पंच पंडवे तेणं दसद्ध-
वण्णेणं कुसुमदामेणं आवेढियपरिवेढिए करेइ, करेत्ता एवं वयासी—एए णं मए
पंच पंडवा वरिया ॥
१६५. तए णं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूणि रायसहस्साणि महया-महया सद्देणं
उग्घोसेमाणाइं-उग्घोसेमाणाइं एवं वयंति—सुवरियं खलु भो ! दोवईए
रायवरकण्णाए त्ति कट्ठु सयंवरमंडवाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता
जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति ॥
१६६. तए णं घट्टज्जुणे कुमारे पंच पंडवे दोवई च'" रायवरकण्णं चाउग्घंटां आसरहं

१. ना० १।८।३० ।

२. १।८।३० सूत्रे 'सत्तच्छयाईहिं' इति पाठो
नोपलभ्यते तथा येषां पदानामपि क्रमभेदो
वर्तते ।

३. सं० पा०—सुरूवा जाव वामपत्थेणं ।

४. °बिबं (ख, ग) ।

५. दंसिए (घ) ।

६. दरिसीएइ (ख); दरसिए (घ) ।

७. सव्व (क, ख, ग) ।

८. कित्ति (वृपा) ।

९. दसदसार (ग) । पूर्णपाठः अस्याध्ययनस्य

१३२ सूत्रे द्रष्टव्यः ।

१०. तिल्लोक० (क) ।

११. सक्क (घ) ।

१२. माणोवमद्गाणं (ख, घ) ।

१३. भवसिद्धिपवर० (क्व) ।

१४. °माइयाणं (क) ।

१५. समतिच्छमाणी (ख, ग, घ) ।

१६. × (ग) ।

‘दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता’ कंपिल्लपुरं नयरं मज्झमज्झेणं” •उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता ° सयं भवणं अणुपविसइ ॥

पाणिगहण-पदं

१६७. तए णं से दुवए राया पंच पंडवे दोवइं च’ रायवरकण्णं पट्टयं ‘दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता’ सेयापीयएहि कलसेहि मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोमं करावेइ’, पंचण्हं पंडवाणं दोवईए य पाणिगहणं कारावेइ’ ॥
१६८. तए णं से दुवए राया दोवईए रायवरकण्णाए इमं एयारूवं पीइदाणं दलयइ, तं जहा—अट्ट हिरणकोडीओ जाव” पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्णं च विपुलं धण-कणग’-•रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं ° दलयइ ॥
१६९. तए णं से दुवए राया ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूइं रायसहस्साइं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध’-•मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्मा-णेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता ° पडिविसज्जेइ ॥

पंडुरायस्स निमंतण-पदं

१७०. तए णं से पंडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं करयल’-•परिगहियं दसण्हं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु ° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवईए य देवीए कल्लाण-कारे” भविस्सइ । तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं अणुगिण्हमाणा अकालपरि-हीणं चेव समोसरह ॥
१७१. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहूवे रायसहस्सा पत्तेयं-पत्तेयं” •ण्हाया सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया” हत्थिखंधवरगया जाव” जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव • पहारेत्थ गमणाए ॥

१. दुरुहेइ २ (क, ख, ग, घ) । अस्मिन्नर्थप्रसंगे प्रेरणार्थकं क्रियापदं युज्यते । आदर्शेषु तथा नोपलभ्यते । १।१६।५१ सूत्रस्य संदर्भेण एतत् क्रियापदं मूलपाठे स्वीकृतम् ।

२. सं० पा०—मज्झमज्झेणं जाव सयं ।

३. × (ख, ग) ।

४. दुरुहेइ २ (क, ख, ग, घ) । द्रष्टव्यम्—१६६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

५. करेइ (ख, घ); कारवेइ (ग) ।

६. कारेइ (क, घ); करेइ (ग) ।

७. ना० १।१।६१ टिप्पणगाथा ।

८. सं० पा०—कणग जाव दलयइ ।

९. सं० पा०—गंध जाव पडिविसज्जेइ ।

१०. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

११. कल्लाणकारी (क); कल्लाणकारे (घ) ।

१२. सं० पा०—पत्तेयं जाव पहारेत्थ ।

१३. पू०—ना० १।१६।१३४ ।

१४. ना० १।१६।१४६ ।

पंडुरायस्स आतिथ-पदं

१७२. तए णं से पंडू राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया । हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं पंच पासायवडिसए कारेह—अभुगयमूसिय जाव' पडिरूवे ॥
१७३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा पडिसुणेंति जाव कारवेंति ॥
१७४. तए णं से पंडू राया पंचहिं पंडवेहिं दोवईए देवीए सद्धि हय-गय'-●रह-पवर-जोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे महयाभडचडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खत्ते ° कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ॥
१७५. तए णं से पंडू राया तेसि वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स वहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे—अणेगखंभ-सयसण्णिविट्ठे' कारेह, कारेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ॥
१७६. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ॥
१७७. तए णं से पंडू राया ते वासुदेवपामोक्खे' ●बहवे रायसहस्से ° उवागए' जाणित्ता हट्ठुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जहा दुवए जाव' जहारिहं आवासे दलयइ ॥
१७८. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति तहेव जाव' विहरंति ॥
१७९. तए णं से पंडू राया हत्थिणाउरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं' आवासेसु उवणेह । तेवि तहेव उवणंति ॥
१८०. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसाएमाणा तहेव जाव' विहरंति ॥

कल्लाणकार-पदं

१८१. तए णं से पंडू राया ते पंच पंडवे दोवइं च देवि पट्टयं 'दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता'° सेया-

१. वण्णओ जाव(क, ख, ग, घ); ना० १।१।८६ । ७. ना० १।१६।१५० ।

२. सं० पा०—हयगय संपरिवुडे । ८. पू०—ना० १।१६।१५१ ।

३. पू०—ना० १।१।८६ । ९. ना० १।१६।१५२ ।

४. सं० पा०—वासुदेवपामोक्खे जाव उवागए । १०. दुरुहेइ २(क, ख, ग, घ)। द्रष्टव्यम्—१६६

५. भागए (ग) । सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

६. ना० १।१६।१४६ ।

पीण्हि' कलसेहिं ण्हावेइ, ण्हावेत्ता कल्लाणकारं' करेइ', करेत्ता ते वासुदेवपामोक्खे बह्वे रायसहस्से विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्ला-लंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१८२. तए णं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूइं' • रायसहस्साइं पंडूणं रण्णा विसज्जिया समाना जेणेव साइं-साइं रज्जाइं जेणेव साइं-साइं नगराइं तेणेव • पडिगयाइं' ॥
१८३. तए णं ते पंच पंडवा दोवईए देवीए सद्धि कल्लाकल्लि वारंवारेणं उरालाइं भोगभोगाइं' • भुंजमाणा • विहरंति ॥

नारदस्स आगमण-पदं

१८४. तए णं से पंडू राया अणया कयाइं पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए' देवीए दोवईए य सद्धि अंतोअंतेउरपरियालसद्धि संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ ॥
१८५. इमं च णं 'कच्छुल्लनारए—दंसणेणं अइभद्दए विणीए अंतो-अंतो य कलुस हियए 'मज्झत्थं-उवत्थिए' य अल्लीण-सोमपियदंसणे सुखे अमइल-सगल-परिहिए कालमियचम्म-उत्तरासंग-रइयवच्छे दंड-कमंडलु-हत्थे जडामउड-दित्तिसिए जन्नोवइय-गणेतिय-मुंजमेहला-वागलधरे हत्थकय-कच्छभीए' पियगंधवे धरणिगोयरप्पहाणे संवरणावरणि-ओवयणुप्पयणि-लेसणीसु य संकाणि-आभिओगि"-पण्णत्ति-गमणि"-थंभिणीसु य बहूसु विज्जाहमुरी" विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्न-पईव-संव-अनिरुद्ध-निसड-उम्मुय-सारण-गय-सुमुह-दुम्मुहाईणं" जायवाणं अद्धट्ठाणं य कुमारकोडोणं हियय-दइए संथवए कलह-जुद्ध-कोलाहलपिए" भंडणाभिलासी बहूसु य समर-सयसंपराएसु दंसणरए समंतओ कलहं सदक्खिणं अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसारवर"-वीरपुरिस-तेलोककबलवगाणं आमंतेऊणं तं भगवइं पक्कमणि गगण-गमणदच्छं उप्पइओ गगणमभिलंघयंतो गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मंडव-दोणमुह-पट्टण-संवाह-सहस्समंडियं थिमियमेइणीयं" निम्भर"-जणपदं वसुहं

१. सीया • (क, ख, ग) ।

पाठोऽपि लभ्यते ।

२. कल्लाणालंकारं (क) कल्लाणलंकारं (ख); १०. अभिओग (क, ख, ग, घ) ।

कल्लाणकरं (घ) ।

११. गमण (ख); गमणी (घ) ।

३. कारेइ (ख) ।

१२. × (ख) ।

४. सं० पा०—बहूइं जाव पडिगयाइं ।

१३. दुमुहा • (घ) ।

५. परिगयाइं (क) ।

१४. कोउहल • (ख) ।

६. सं० पा०—भोगभोगाइं जाव विहरंति ।

१५. पूर्णपाठः अस्याध्ययनस्य १३२ सूत्रे द्रष्टव्यः ।

७. कुंतीए (ख) ।

१६. थिमियमेयणीतलं (ग) ।

८. मज्झत्थोवत्थिए (ग) ।

१७. निम्भय (ख) ।

९. एकस्यां हस्तलिखितवृत्तौ 'कच्छभीए' इति

ओलोइते रम्मं हत्थिणाउरं उवागए पंडुरायभवनंसि' 'भक्ति-वेगेण' समो-
वइए ॥

१८६. तए णं से पंडू राया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता पंचहिं पंडवेहिं
कुंतीए य देवीए सद्धिं आसणाओ अम्भुट्टेइ, अम्भुट्टेत्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठ-
पयाइं पच्चुग्गच्छइ, पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता
वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता महरिहेणं 'अग्घेणं पज्जेणं' आसणेण य उवनि-
मंतेइ ॥
१८७. तए णं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए
निसीयइ, निसीइत्ता पंडुरायं रज्जे य° •रट्ठे य कोसे य कोट्टागारे य बले य
वाहणे य पुरे य° अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ ॥
१८८. तए णं से पंडू राया कोंती देवी पंच य पंडवा कच्छुल्लनारयं आढंति° •परिया-
णंति अम्भुट्टेति° पज्जुवासंति ।
१८९. तए णं सा दोवई देवी कच्छुल्लनारयं 'अस्संजयं अविरयं अप्पड्हियपच्चखाय-
पावकम्मंति' कट्ठु नो आढाइ नो परियाणइ नो अम्भुट्टेइ नो पज्जुवासइ ॥
१९०. तए णं तस्स कच्छुल्लनारयस्स इमेयारूवे अज्जभत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए
संकप्पे समुप्पज्जित्था -- अहो णं दोवई देवी रूवेण य° •जोव्वणेण य° लावण्णेण
य पंचहिं पंडवेहिं अवत्थद्धा° समाणी ममं नो आढाइ° •नो परियाणइ नो
अम्भुट्टेइ° नो पज्जुवासइ । तं सेयं खलु मम दोवईए देवीए विप्पियं करेत्तए
त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता पंडुरायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता उप्पयणि°
विज्जं आवाहेइ, आवाहेत्ता ताए उक्किट्ठाए° •तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए
उद्धुयाए जइणाए छेयाए° विज्जाहरगईए लवणसमुदं मज्झंमज्झेणं पुरत्थाभि-
मुहे वीईवइउं पयत्ते यावि होत्था ।

नारदस्स अवरकंका-गमण-पदं

१९१. तेणं कालेणं तेणं समएणं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्ध-दाहिणड्ढ-भरह्वासे अवर-
कंका नामं रायहाणी होत्था ॥

१. कच्छुल्लनारए जाव पंडुस्स रण्णो भवणंसि
(क) अस्य संक्षिप्तपाठस्य परम्पराया
उल्लेखो वृत्तावपि लभ्यते, यथा—इह
क्वचिद् यावत् करणादिदं दृश्यम् (व) ।

२. अइवेगेणं (ख, ग, घ) ।

३. × (ग, घ) ।

४. सं० पा०—रज्जे य जाव अंतेउरे ।

५. खं० पा०—आढंति जाव पज्जुवासंति ।

६. अस्सजय-अविरय-अप्पड्हियअपच्चखायपाव-
कम्मंति (क, ग) ।

७. सं० पा०—रूवेण य जाव लावण्णेण ।

८. अट्ठुद्धा (ख) ।

९. सं० पा०—आढाइ जाव नो पज्जुवासइ ।

१०. उप्पणि (ख, ग) ।

११. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए ।

१६२. तत्थ णं अवरकंकाए रायहाणीए पउमनाभे नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ' ॥
१६३. तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सत्त देवीसयाइं ओरोहे होत्था ॥
१६४. तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नामं पुत्ते जुवरायावि होत्था ॥
१६५. तए णं से पउमनाभे राया अंतोअंतेउरंसि ओरोह-संपरिवुडे सीहासणवरगए विहरइ ॥
१६६. तए णं से कच्छुल्लनारए जेणेव अवरकंका रायहाणी जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि भत्ति-वेगेण समोवइए ॥
१६७. तए णं से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अट्ठुट्टेइ, अट्ठुट्टेत्ता अग्घेणं °पज्जेणं° आसणेणं उवनिमंतेइ ॥
१६८. तए णं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ', °निसीइत्ता पउमनाभं रायं रज्जे य रट्ठे य कोसे य कोट्टागारे य बले य वाहणे य पुरे य अंतेउरे य° कुसलोदंतं आपुच्छइ ।
१६९. तए णं से पउमनाभे राया नियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लनारयं एवं वयासी—तुमं देवाणुप्पिया ! बहूणि° °गामागर-नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-सण्णिवेसाइं आहिंडसि, बहूण य राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इव्व-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईणं° गिहाइं अणुपविससि, तं अत्थि-याइं ते कंहिचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठुपुव्वे, जारिसए णं मम ओरोहे ?
२००. तए णं से कच्छुल्लनारए पउमनाभेणं एवं वुत्ते समाणे ईसिं विहसियं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—सरिसे णं तुमं पउमनाभा ! तस्स अगडददुुरस्स । के णं देवाणुप्पिया ! से अगडददुुरे ? °पउमनाभा ! से जहानामए अगडददुुरे सिया । सेणं तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्णं अगडं वा तलागं वा दहं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे मण्णइ—अयं चैव अगडे वा तलागे वा दहे वा सरे वा सागरे वा । तए णं तं कूवं अण्णे सामुद्दए ददुुरे हव्वमागए । तए णं से कूवददुुरे तं सामुद्दयं ददुुरं एव वयासी—से के तुमं देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ? तए णं से सामुद्दए ददुुरे तं कूवददुुरं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सामुद्दए ददुुरे ।

१. ओ० सू० १४ ।

२. सं० पा०—अग्घेणं जाव आसणेणं ।

३. सं० पा०—निसीयइ जाव कुसलोदंतं ।

४. सं० पा०—बहूणि गामाणि जाव गिहाइं ।

५. सं० पा०—एवं जहा मल्लिणाए ।

तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुहयं दद्दुरं एवं वयासी—केमहालए णं देवाणुप्पिया !
से समुद्दे ?

तए णं से सामुहए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी—महालए णं देवाणुप्पिया !
समुद्दे ।

तए णं से कूवदद्दुरे पाएणं लीहं कड्ढेइ, कड्ढेत्ता एवं वयासी—एमहालए णं
देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे । महालए णं से समुद्दे ।

तए णं से कूवदद्दुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्पिडित्ता णं पच्चत्थिमिल्लं
तीरं गच्छइ, गच्छित्ता एवं वयासी—एमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे । एवामेव तुमं पि पउमनाभा ! अण्णेसि बहूणं राईसर जाव'
सत्थवाहप्पभिईणं भज्जं वा भगिणिं वा धूयं वा सुण्हं वा अपासमाणे जाणसि
जारिसए मम चेव णं ओरोहे, तारिसए णो अण्णेसि° ।

एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नयरे दुपयस्स
रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया
दोवई नामं देवी रूवेण यं °जोवण्णेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा° उक्किट्ठ-
सरीरा । दोवईए णं देवीए छिन्नस्सवि पायंगुट्ठस्स अयं तव ओरोहे सयंपि कलं
न अगघइ त्ति कट्ठु पउमनाभं आपुच्छइ', °आपुच्छित्ता जामेव दिसि पाउब्भूए
तामेव दिसि° पडिगए ॥

दोवईए साहरण-पवं

२०१. तए णं से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म
दोवईए देवीए रूवे य जोवण्णे य लावण्णे य मुच्छिए गट्ठिए गिद्धे अज्झोववण्णे
जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं° °अणुप्पविसइ,
अणुप्पविसित्ता पुव्वसंगइयं देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ॥

२०२. तए णं पउमनाभस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पुव्वसंगइओ देवो
जाव' आगओ ।

भणंतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं ॥

२०३. तए णं से पउमनाभे° पुव्वसंगइयं देवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया !
जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे' °नयरे दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए
देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई नामं देवी रूवेण य

१. ना० १।५।६ ।

२. सं० पा०—रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा ।

३. सं० पा०—आपुच्छइ जाव पडिगए ।

४. सं० पा०—पोसहसालं जाव पुव्वसंगइयं ।

५. ना० १।१।५४-५७ ।

६. सं० पा०—हत्थिणाउरे जाव सरीरा ।

जोवण्णेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ °सरीरा । तं इच्छामि णं देवाणु-
प्पिया ! दोवइं देवि 'इह हव्वमाणीयं' ॥

२०४. तए णं से पुव्वसंगइए देवे पउमनाभं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया । एवं
भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पंडवे मोत्तूणं अण्णेणं
पुरिसेणं सद्धि उरालाईं °माणुस्सगाईं भोगभोगाईं भुंजमाणी ° विहरिस्सइ ।
तहावि य णं अहं तव पियट्ठयाए दोवइं देवि इहं हव्वमाणेमि त्ति कट्ठु पउम-
नाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए °तुरियाए चवलाए चंडाए
जवणाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए ° देवगईए लवणसमुद्धं मज्झमज्झेणं जेणेव
हत्थिणाउरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

२०५. तेणं कालेणं तेणं समाएणं हत्थिणाउरे नयरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईए देवीए सद्धि
उप्पि आगासतलगंसि मुहप्पमुत्ते यावि होत्था ॥

२०६. ताए णं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोवणिं दलयइ, दलइत्ता दोवई
देवि गिण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए °तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए
सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए ° देवगईए जेणेव अवरकंका ° जेणेव पउमनाभस्स
भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमनाभस्स भवणंसि असोगवणियाए
दोवई देवि ठावेइ, ठावेत्ता ओसोवणिं अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमनाभे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! मए
हत्थिणाउराओ दोवई देवी इहं हव्वमाणीया तव असोगवणियाए चिट्ठइ । अओ
परं तुमं जाणसि त्ति कट्ठु जामेव दिसिं पाउव्भूए तामेव दिसिं पडिगाए ॥

दोवईए चित्ता-पदं

२०७. ताए णं सा दोवइ देवी तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवणं असोगवणियं
च अपच्चभिजाणमाणी एवं वयासी—नो खलु अम्हं 'एसे सए भवणे' नो खलु
एसा अम्हं सगा असोगवणिया । तं न नज्जइ णं अहं केणइ देवेण वा दाणवेण
वा किण्णरेण वा किपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधवेण वा अण्णस्स रण्णो
असोगवणियं साहरिय त्ति कट्ठु ओहयमणसंकप्पा ° करतलपल्हत्थमुही अट्ट-
ज्झाणोवगया ° भियायइ ॥

१. माणीयं (क, ख, ग) ।

२. सं० पा०— उरालाईं जाव विहरिस्सइ ।

३. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए ।

४. ओसोवणियं (ख) ।

५. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए ।

६. अवरकंका (ख, ग, घ) ।

७, ८. दिसं (क) ।

९. इमे सए पासाए (घ) ।

१०. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव भियायइ ।

पउमनाभस्स आसासण-पदं

२०८. तए णं से पउमनाभे राया ण्हाए जाव' सव्वालंकारविभूसिए अंतेउर-परियाल-संपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता दोवई देवि ओह्यमणसंकप्पं' *करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगयं° भियायमाणि पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किन्नं तुमं देवाणुप्पिए ! ओह्य-मणसंकप्पा' *करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° भियाहि' ? एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! मम पुव्वसंगइएणं देवेणं जंबुदीवाओ दोवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्टिलस्स रण्णो भवणाओ साहरिया । तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओह्यमणसंकप्पा' *करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° भियाहि । तुमं णं मए सद्धि विपुलाइं भोगभोगाइ' *भुंजमाणी° विहराहि ॥
२०९. तए णं सा दोवई देवी पउमनाभं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबुदीवे दीवे भारहे वासे बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे मम पियभाउए परिवसइ । तं जइ णं से छण्हं मासाणं मम कूवं नो हव्वमागच्छइ, तए णं अहं' देवाणुप्पिया ! जं तुमं वदसि, तस्स आणा-ओवाय-वयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामि ॥
२१०. तए णं से पउमनाभे दोवईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता दोवई देवि कण्णतेउरें ठवेइ' ॥
२११. तए णं सा दोवई देवी छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिल-परिग्गहिएणं'° तवो-कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥

दोवईए गवेसणा-पदं

२१२. तए णं से जुहिट्टिल्ले राया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धे समाने दोवई देवि पासे अपासमाने सयणज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, करेत्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्ति वा अलभ-माने जेणेव पंडू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुं रायं एवं वयासी—एवं खलु ताओ ! ममं आगासतलगंसि सुहपमुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा 'किण्णरेण वा किंपुरिसेण'° वा महोरगेण

१. ना० १।१।४७ ।

२. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पं जाव भियाय-माणि ।

३. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा जाव भियाहि ।

४. भियासि (क) ।

५. सं० पा०—ओह्यमणसंकप्पा जाव भियाहि ।

६. सं० पा०—भोगभोगाइं जाव विहराहि ।

७. हं (क, ख) ।

८. कण्णतेउरंसि (क) ।

९. ठावेइ (ग) ।

१०. पग्गहिएणं (ग) ।

११. किंपुरिसेण वा किन्नरेण (ख, ग, घ) ।

वा गंधव्वेण वा हिया वा निया वा अवक्खित्ता वा । तं इच्छामि णं ताम्भो !
दोवईए देवीए सव्वम्भो समंता मग्गण-गवेसणं करित्तए' ॥

२१३. तए णं से पंडू राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह
णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-
चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—
एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्टिलस्स' रण्णो आगासतलगंसि सुहपमुत्तस्स पासाओ
दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण' वा किपुरिसेण
वा महोरणेण वा गंधव्वेण वा हिया वा निया वा अवक्खित्ता' वा । तं जो णं
देवाणुप्पिया ! दोवईए देवीए सुइं वा खुइं वा पवत्ति वा परिकहेइ, तस्स णं
पंडू राया विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ त्ति कट्ठु घोसणं घोसावेह, घोसावेत्ता
एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

२१४. तए णं ते कोडुवियपुरिसा जाव' पच्चप्पिणंति ॥

२१५. तए णं से पंडू राया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा' *खुइं वा पवत्ति वा°
अलभमाणे कांति देवि सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणु-
प्पिए ! वारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं निवेदेहि—कण्हे णं'
वासुदेवे दोवईए मग्गण-गवेसणं करेज्जा, अण्णहा न नज्जइ दोवईए देवीए
'सुइं वा खुइं वा पवत्ति वा' ॥

२१६. तए णं सा कोंती देवी पंडुणा एवं वुत्ता समाणी जाव' पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता
ण्हाया कयवलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउरं' नयरं मज्झमज्झेणं
निगच्छइ, निगच्छित्ता कुरुजणवयस्स' मज्झमज्झेणं जेणेव सुरट्ठाजणवए जेणेव
वारवई नयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ
पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! वारवइं नयरिं', *जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स
गिहे तेणेव° अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल'°परिग्गहियं
दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु° एवं वयह—एवं खलु सामी ! तुब्भं

१. कयं (ख, ग) ।

२. जुहिट्टिलस्स (घ) ।

३. किनरेण (ग, घ) ।

४. अवक्खित्ता (क, ख, ग, घ) । २२० सूत्रा-
नुसारी पाठः स्वीकृतः ।

५. ना० ११६।२१३ ।

६. सं० पा०—सुइं वा जाव अलभमाणे ।

७. णं परं (क, ग, घ) ।

८. सुइं वा खुइं वा पवत्ति वा उवलभेज्जा (क,
ख, घ) ।

९. ना० ११५।१३ ।

१०. हत्थिणउरं (घ) ।

११. कुरुजणवयं (ग, घ) ।

१२. सं० पा०—नयरिं अणुपविसह ।

१३. सं० पा०—करयल° ।

पिउच्छा कौंती देवो हत्थिणाउराओ नयराओ इहं हव्वमागया तुब्भं दंसणं कंखइ ॥

२१७. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव' कहेंति ॥

२१८. तए णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे हत्थिखंधवरगए^१ बारवईए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव कौंती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता कौंतीए देवीए पायग्गहणं करेइ, करेत्ता कौंतीए देवीए सद्धि हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहिता बारवईए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुप्पविसइ ॥

२१९. तए णं से कण्हे वासुदेवे कौंति देवि ण्हायं कयवलिकम्मं जिमियभुत्तुत्तरागयं^२ *वि य णं समाणि आयंतं चोक्खं परमसुइभूयं^३ सुहासणवरगयं एवं वयासी—संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ?

२२०. तए णं सा कौंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणा-उरे नयरे जुहिट्ठिलस्स रण्णो आगासतलए सुहप्पसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ अवहिया^४ *निया^५ अवक्खित्ता वा । तं इच्छामि णं पुत्ता ! दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं कयं ॥

२२१. तए णं से कण्हे वासुदेवे कौंति पिउच्छं एवं वयासी—जं नवरं—पिउच्छा ! दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा^६ *खुइं वा पवत्ति वा^७ लभामि, तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ वा अद्धभरहाओ वा समंतओ दोवइं देवि साहत्थि उवणेमि त्ति कट्ठु कौंति पिउच्छं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

२२२. तए णं सा कौंती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

२२३. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बारवईए^८ *नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिलस्स रण्णो आगासतलगंसि

१. ना० १।१६।२१६ ।

२. *वरगए ह्यगय (क); *वरगए ह्यगय जाव (ख, घ) । पूर्णपाठः अस्याध्ययनस्य १५७ सूत्रे द्रष्टव्यः ।

३. सं० पा०—जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहा-सण० ।

४. सं० पा०—अवहिया वा जाव अवक्खित्ता ।

५. सं० पा०—सुइं वा जाव लभामि ।

६. सं० पा०—बारवइं एवं जहा पंडू तथा षोसणं षोसावेइ जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा ।

सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नियम वा अबक्खित्ता वा । तं जो णं देवाणुप्पिया ! दोवईए देवीए सुइं वा खुइं वा पवत्ति वा परिकहेइ, तस्स णं कण्हं वासुदेवे विउलं अत्थमंपयाणं दलयइ त्ति कट्ठु घोसणं घोसावेह, घोसावेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

२२४. तए णं ते कोडुंवियपुरिसा जाव'० पच्चप्पिणंति ॥

२२५. तए णं से कण्हं वासुदेवे अण्णया अंतोअंतेउरगए ओरोह'०-संपरिवुडे सीहासण-वरगए ० विहरइ ॥

दोवईए उवलद्धि-पदं

२२६. इमं च णं कच्छुल्लनारए जाव' भुत्ति-वेगेण समोवइए' ॥

२२७. *तए णं से कण्हं वासुदेवे कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टेत्ता अग्घेणं पज्जेणं आसणेणं उवनिमंतेइ ॥

२२८. तए णं कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ ०, निसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ ॥

२२९. तए णं से कण्हं वासुदेवे कच्छुल्लनारयं एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया ! वहूणि गामागर'-०-नगर-खेड-कव्वड-दोणमुह-मडंव-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-सण्णिवेसाइं आहिंडसि, वहूण य राईसर-तलवर-माडंविय-कोडुंविय-इव्वभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईणं गिहाइं ० अणुपविससि, तं अत्थियाइं ते कहिंत्ति दोवईए देवीए सुइं वा' *खुइं वा पविस्ती वा ० उवलद्धा ?

२३०. तए णं से कच्छुल्लनारए कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अण्णया घायइसंडदीवे पुरत्थिमद्धं दाहिणड्ढ-भरहवासं अवरकंका'-रायहाणि गए । तत्थ णं मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई-देवी-जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था ॥

२३१. तए णं कण्हं वासुदेवे कच्छुल्लनारयं एवं वयासी—तुव्वं चेव णं देवाणुप्पिया ! एयं पुव्वकम्मं ॥

२३२. तए णं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयाणि विज्जं आवाहेइ, आवाहेत्ता जामेव दिसि पाउव्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

१. ना० १।१६।२२३ ।

२. सं० पा०—ओरोह जाव विहरइ ।

३. ना० १।१६।१८५ ।

४. सं० पा०—समोवइए जाव निसीइत्ता ।

५. सं० पा०—गामागर जाव अणुपविससि ।

६. सं० पा०—सुइं वा जाव उवलद्धा ।

७. अवरकंका (ग) ।

सपंडवस्स कण्हस्स पयाण-पदं

२३३. तए णं से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुपं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं नयरं पडुस्स रण्णो एयमट्ठं निवेएहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! घायइसंडदीवे पुरत्थिमद्धे दाहिणद्ध-भरहवासे अवरकंकाए रायहाणीए पउमनाभभवणंसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा, तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थिम-वेयालीए ममं पडिवाले-माणा चिट्ठंतु ॥

२३४. तए णं से दूए भणइ जाव' पडिवालेमाणा चिट्ठह । तेवि जाव' चिट्ठंति ॥

२३५. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुभे देवाणुप्पिया ! सन्नाहियं भेरिं तालेह । तेवि तालेंति ॥

२३६. तए णं तोए सन्नाहियाए भेरीए सद्दं सोच्चा समुद्धविजयपामाक्खा दस दसारा जाव' छप्पन्नं वलवगसाहस्सोओ सण्णद्ध-बद्ध'-●वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिध-पट्टा° गहियाउह-पहरणा अप्पेगइया ह्यगया अप्पेगइया गयगया जाव' पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल'●परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जाणं विजाणं° वद्धावेंति ॥

कण्हस्स देवाराधण-पदं

२३७. तए णं से कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्ज-माणेणं सेयवर'●चामराहिं वीइज्जमाणे ह्य-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरि-क्खित्ते° वारवईए नयरीए मज्झमज्झेणं निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलइ, मिलित्ता खंधावारनिवेसं करेइ, करेत्ता पोसहसालं' अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता मुट्ठियं देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ॥

२३८. तए णं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि मुट्ठिओ जाव' आगओ । 'भणंतु णं' देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं ॥

१,२. ना० १।१६।२३३ ।

३. ना० १।१६।१३२ ।

४. सं० पा०—सण्णद्धबद्ध जाव गहियाउह ।

५. ओ० सू० ५२ ।

६. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेंति ।

७. सं० पा०—सेयवर ह्यगय महया भडचडगर-पहकरेणं ।

८. पोसहसालं करेइ, करेत्ता पोसहसालं (ग,घ) ।

९. ना० १।१।५४-५७ ।

१०. भण (ख, ग, घ) ।

कण्हस्स मग्गजायणा-पदं

२३६. तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! दोवई देवी' *घायईसंडदीवे पुरत्थिमद्धे दाहिणङ्ग-भरह्वामे अवरकंकाए रायहाणीए° पउमनाभभवणंसि' साहिया' तण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम पंचहि पंडवेहि सद्धि अप्पच्छट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्धे मग्गं वियराहि, जेणाहं' 'अवरकंकां रायहाणि'° दोवईए कूवं गच्छामि ॥
२४०. तए णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगइएणं देवेणं दोवई देवी' *जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ° साहिया, तहा चेव दोवइं देविं घायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ' *वासाओ अवरकंकाओ रायहाणीओ पउमनाभस्स रण्णो भवणाओ° हत्थिणाउरं साहरामि ? उदाहु--पउमनाभं रायं सपुरवलवाहणं लवणसमुद्धे पक्खिवामि ?
२४१. तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी—मा णं तमं देवाणुप्पिया' ! *जहा चेव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगइएणं देवेणं दोवई देवी जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ साहिया, तहा चेव दोवइं देविं घायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ अवरकंकाओ रायहाणीओ पउमनाभस्स रण्णो भवणाओ हत्थिणाउरं° साहराहि । तुमं णं देवाणुप्पिया ! मम लवणसमुद्धे पंचहि पंडवेहि सद्धि अप्पच्छट्ठस्स छण्हं रहाणं मग्गं वियराहि । सयमेव णं अहं दोवईए कूवं गच्छामि' ॥
२४२. तए णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं होउ । पंचहि पंडवेहि सद्धि अप्पच्छट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्धे मग्गं वियरइ ॥

कण्हेण द्वयपेसण-पदं

२४३. तए णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणिं सेणं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता पंचहि पंडवेहि सद्धि अप्पच्छट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्धं मज्झमज्झेणं वीईवयइ, वीईवइत्ता जेणेव अवरकंका रायहाणी जेणेव अवरकंकाए रायहाणीए अग्गुज्जाणे

१. सं० पा०—देवी जाव पउमनाभ° ।

२. नाभस्स भवणंसि (ख, ग, घ) ।

३. साहरिया (घ) ।

४. जेण अहं(ख) जाणं हं(ग); जण्णं अहं(घ) ।

५. अवरकंका° (क); अवरकंका रायहाणी (ख) ।

६. सं० पा०—देवी जाव साहिया ।

७. सं० पा०—भारहाओ जाव हत्थिणाउरं ।

८. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव साहराहि ।

९. गच्छिस्सामि (ख) ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! अवरकंकं रायहाणि अणुप्पविसाहि, अणुप्पविसित्ता पउमनाभस्स रण्णो वामेणं पाएणं पायपीढं अक्कमित्ता^१ कुंतगेणं लेहं पणामेहि, पणामेत्ता तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुढे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे एवं वयाहि—हंभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरि-हिरि-घिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! अज्ज न भवसि । किण्णं तुमं न याणासि^२ कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवइं देवि इहं हव्वमाणमाणे^३ ? तं 'एवमवि गए' पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवइं देवि कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे निग्गच्छाहि । एस णं कण्हे वासुदेवे पंचहि पंडवेहि सद्धि अप्पच्छट्ठे दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए ॥

२४४. तए णं से दारुए सारही कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्टुत्तुट्ठे^४ पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता अवरकंकं रायहाणि अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणव पउमनाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल^५ परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ,^६ वद्धावेत्ता एवं वयासी—एस णं सामी ! मम विणयपडिवत्ती, इमा अण्णा मम सामिस्स समुहाणत्ति^७ त्ति कट्टु आसुरुत्ते^८ वामपाएणं पायपीढं अक्कमइ^९, अक्कमित्ता कुंतगेणं लेहं पणामेइ, पणामेत्ता^{१०} *तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुढे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे एवं वयासी—हंभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरि-हिरि-घिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! अज्ज न भवसि । किण्णं तुमं न याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवइं देवि इहं हव्वमाणमाणे ? तं एवमवि गए पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवइं देवि कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे निग्गच्छाहि । एस णं कण्हे वासुदेवे पंचहि पंडवेहि सद्धि अप्पच्छट्ठे दोवईए देवीए^{१०} कूवं हव्वमागए ॥

पउमनाभेण दूयस्स अवमाण-पदं

२४५. तए णं से पउमनाभे दारुएणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुढे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी—

१. अक्कमित्ता (ख); अक्कमित्ता (घ) ।

२. याणासि (ख, घ) ।

३. हव्वमाणमाणे (क, ख); हव्वमाणीते (घ) ।

४. द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

५. हट्टुजाव (क) ।

६. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता ।

७. स्वमुखाऽज्ञप्तिः (वृ) ।

८. आसुरुत्ते ५ (क) ।

९. अक्कमइ (ख, घ) ।

१०. सं० पा०—पणामेत्ता जाव कूवं ।

णप्पिणामि' णं अहं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वामुदेवस्स दोवइं । एस णं अहं सयमेव जुज्झसज्जे निग्गच्छामि त्ति कट्ठु दारुयं सारहिं एवं वयासी—केवलं भो ! रायसत्थेसु दूए अवरज्जे त्ति कट्ठु असक्कारिय असम्माणिय अवदारेणं निच्छुभावेइ ॥

दूयस्स पुणो आगमण-पदं

२४६. तए णं से दारुए सारही पउमनाभेणं रण्णा असक्कारियं *असम्माणिय अवदारेणं ° निच्छूहे समाणे जेणेव कण्हे वामुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता करयलं *परिगहियं दसणहं सिग्गमावन्नं मत्थए अज्जलि कट्ठु जाएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता ° कण्हं वामुदेवं एवं वयासी—एवं खलु अहं सामी ! तुभं वयणेणं अवरकंकां रायहाणि गए जाव' अवदारेणं निच्छुभावेइ ॥

पउमनाभस्स पंडवेहि जुद्ध-पदं

२४७. तए णं से पउमनाभे वलवाउयं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिमेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह । तयाणंतं च णं छेयायरिय-उवदेस-मइं °-कप्पणा-विकप्पेहिं मुणिउणेहिं उज्जल-णेवत्थि-हत्थि-परिवत्थियं मुमज्जं जाव' आभिमेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेइ, पडिकप्पेत्ता ° उवणंति ॥

२४८. तए णं से पउमनाहे सण्णद्ध'-*वद्ध-वम्मिय-कवाए उप्पोलिय-सरासण-पट्टिए पिणद्ध-गेविज्जे आविद्ध-विमल-वरचिध-पट्टे गहियाउह-पहरणे ° 'आभिसेक्कं हत्थिरयणं', दुरुहइं, दुरुहित्ता हय-गय'-*रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडं महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खित्ते ° जेणेव कण्हे वामुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

२४९. तए णं से कण्हे वामुदेवे पउमनाभं रायं" एज्जमाणं पासइ, पासित्ता ते पंच

१. अप्पिणामि (ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—असक्कारिय जाव निच्छूहे ।

३. सं० पा०—करयलं ° ।

४. ना० १।१६।२४४-२४६ ।

५. सं० पा०—मइविकप्पणाहिं जाव उवणंति ।

आदर्शेषु 'मइविकप्पणाहिं' इति पाठो लभ्यते ।

वृत्ती 'मइविगप्पणाविगप्पेहिं' इति पाठ

उल्लिखितोस्ति, किन्तु व्याख्यायां 'कल्पना-

विकल्पाः' इति दृश्यते, तेन कप्पणा-विकप्पेहिं,

इति स्वीकृतः पाठः समीचीनः प्रतिभाति ।

६. ओ० सू० ५७ ।

७. सं० पा०—सण्णद्ध ° ।

८. अभिसेयं (क, ख, ग, घ) ।

९. दुरुहइ (ग) ।

१०. सं० पा०—हय गय ° ।

११. रायाणं (ख, ग) ।

पंडवे एवं वयासी—हंभो दारगा ! किण्णं तुब्भे पउमनाभेणं सद्धिं जुज्झहिह' उदाहु' पेच्छिहिह' ?

२५०. तए णं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—अम्हे णं सामी ! जुज्झामो, तुब्भे पेच्छह ॥

२५१. तए णं ते पंच पंडवा सण्णद्ध'-●बद्ध-वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिधपट्टा गहियाउह°-पहरणा रहे दुरुहंति, दुरुहिता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता एवं वयासी—अम्हे वा पउमनाभे वा राय त्ति कट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलगा यावि होत्था ॥

पंडवाणं पराजय-पदं

२५२. तए णं से पउमनाभे राया ते पंच पंडवे खिप्पामेव ह्य-महिय-'पवरवीर-घाइय-विवडियचिध-घय'-पडागे' ●किच्छोवगयपाणे° दिसोदिसि पडिसेहेह ॥

२५३. तए णं ते पंच पंडवा पउमनाभेणं रण्णा ह्य-महिय-पवर°●वीर-घाइय-विवडिय-चिध-घय-पडागा किच्छोवगयपाणा दिसोदिसि° पडिसेहिया समाणा अत्थामा' ●अबला अवीरिया अपुरिसक्कारपरक्कमा° आधारणिज्जमिति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति ॥

कण्हेण पराजय-हेउ-कहणपुब्बं जुज्झ पदं

२५४. तए णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच-पंडवे एवं वयासी—कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमनाभेणं रण्णा सद्धिं संपलगा ?

२५५. तए णं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहि अम्भणुण्णाया समाणा सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया' रहे दुरुहामो, दुरुहेत्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छिता एवं वयामो—अम्हे वा पउमनाभे वा रायत्ति कट्टु" ●पउमनाभेणं सद्धिं संपलगा । तए णं

१. जुज्झहिह (क, ख); जुज्झिह (ग); जुज्झि-हेह (घ) ।

२. उयाहु (ग, घ) ।

३. पेच्छिहिह(क);पिच्छिह(ख);पेच्छिहिह (घ) ।

४. सं० पा०—सण्णद्ध जाव पहरणा ।

५. पवरपवडियघयचिध (क); पवरविडिय° (ख, ग, घ) । असौ लेखनपद्धती पाठसंक्षेपः कृतोस्ति । १।८।१६५ सूत्रे असौ पूर्णः पाठः उपलभ्यते । अत्रासौ समनुसृत्य पूर्णतां नीतः

वृत्तिकारेण अष्टमाध्ययने पूर्णः पाठो व्याख्यातः । अत्र च आदर्शेषु यथा पाठसंक्षेपो लब्धस्तथैव व्याख्यातः ।

६. सं० पा०—पडागे जाव दिसोदिसि ।

७. सं० पा०—पवरविडिय जाव पडिसेहिया ।

८. सं० पा०—अत्थामा जाव आधारणिज्ज° । अयामा° (ग, घ) ।

९. पूर्णपाठः अस्याध्ययनस्य २५१ सूत्रे द्रष्टव्यः ।

१०. सं० पा०—कट्टु जाव पडिसेहेह ।

से पउमनाभे राया अम्हं खिप्पामेव ह्य-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिध-
घय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसि ° पडिसेहेइ ॥

२५६. तए णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी —जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया !
एवं वयंता—‘अम्हे’ णो पउमनाभे रायत्ति कट्ठु पउमनाभेणं सद्धि संपलग्गंता
तो णं तुब्भे नो पउमनाभे ह्य-महिय-पवर’●वीर-घाइय-विवडियचिध-घय-
पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसि ° पडिसेहित्था । तं पेच्छहं णं तुब्भे
देवाणुप्पिया ! ‘अहं’ णो पउमनाभे रायत्ति कट्ठु पउमनाभेणं रण्णा सद्धि
जुज्झामि [त्ति ?] रहं दुरुहइ, दुरुहिता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवा-
गच्छइ, उवागच्छित्ता सेयं’ गोखीरहार-धवलं तणसोल्लिय-सिंदुवार-कुदेंदु-
सण्णिगासं निययस्स बलस्स हरिस-जणणं रिउमेण्ण-विणासणकरं पंचजण्णं
संखं परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ ॥

२५७. तए णं तस्स पउमनाभस्स तेणं संखसद्देणं वल-तिभाए ह्य-‘●महिय-पवरवीर-
घाइय-विवडियचिध-घय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसि ° पडिसेहिए ॥

२५८. तए णं से कण्हे वासुदेवे’

●अइरुग्गयवालचंद-इंदधणु-सण्णिगासं,
वरमहिस-दरिय-दप्पिय-दढघणसिगगरइयसारं,
उरगवर-पवरगवल-पवरपरहुय-भमरकुल-नीलि-निद्ध-धंत-धोय-पट्टं,
निउणोविय-मिसिमिसित-मणिरयण-धंटियाजालपरिक्खित्तं,
तडितरणकिरण-तवणिज्जवद्धचिधं,
ददरमलयगिरिसिहर-केसरचामरवाल-अद्धचंदचिधं,
काल-हरिय-रत्त-पीय-सुक्किल-बहुण्हारुणि-संपिण्णद्धजीवं,
जीवियंतकरं ° धणुं परामुसइ, परामुसित्ता धणुं पूरेइ, पूरेत्ता धणुसद्दं करेइ ॥

२५९. तए णं तस्स पउमनाभस्स दोच्चे वल-तिभाए तेणं धणुसद्देणं ह्य-महिय°

१. सं० पा०—‘अवर जाव पडिसेहित्था ।

२. पेच्छंतु (क) ।

३. वृत्तौ शङ्खविशेषणानि पाठान्तरत्वेन उल्लि-
खितानि सन्ति, यथा — शङ्खविशेषणानि स्व-
चिद दृश्यन्ते — ‘सेयं’ ° ।

४. पंचयणं (क, ख); पंचजण (ग) ।

५. सं० पा० —हए जाव पडिसेहिए ।

६. सं० पा०—व सुदेवे धणुं परामुसइ वेडो ।

विस्तृतः पाठो वृत्त्यनुसारेण स्वीकृतः । मूल-

पाठे अस्य सूचना ‘वेडो’ इति पदेन प्रदत्ता-
स्ति । वृत्तिकारेणापि सूचितमिदम्, यथा —
वेष्टन एकवस्तुविषय पदपद्धतिः । स चेह
धनुविषयो जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिप्रसिद्धोऽध्येतव्यः,
तद्यथा —अइरुग्गय ° (वृ) । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ते-
स्तृतीये वक्षस्कारे मागधनीर्थकुमारसाधने
वृत्तिकारसूचितः पाठो लभ्यते । सोपि वृत्ति-
व्याख्यातपाठसंवादी एव ।

७. सं० पा०—ह्यमहिय जाव पडिसेहिए ।

●पवरवीर-घाइय-विवडियच्चिध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिंसि०
पडिसेहिए ॥

पउमनाभस्स पत्तायण-पदं

२६०. तए णं से पउमनाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे' अवले अवोरिए अपुरि-
सक्कारपरक्कमे अघारणिज्जमिति कट्टु सिग्घं तुरियं चवलं चडं जइणं वेइयं
जेणेव अवरकंका' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अवरकंकां रायहाणि अणु-
पविसइ, अणुपविसित्ता बाराइ' पिहेइ, पिहेत्ता रोहासज्जे चिट्ठइ ॥

कण्हस्स नरसिंहरूव-पदं

२६१. तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव अवरकंका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहं
ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ'
एगं महं नरसीह-रूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता महया-महया सद्देणं पायदहरियं
करेइ ॥

२६२. तए णं कण्हेणं वासुदेवेणं महया-महया सद्देणं पायदहरएणं कएणं समाणेणं
अवरकंका रायहाणी संभग्ग-पागार'-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थिय-
पवरभवण-सिरिधरा सरसरस्स धरणियले सण्णिवइया ॥

पउमनाभस्स सरण-पदं

२६३. तए णं से पउमनाभे राया अवरकंकां रायहाणि संभग्ग'-●पागार-गोउराट्टालय-
चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिधरं सरसरस्स धरणियले सण्णिवइयं०
पासित्ता भीए दोवइं देवि सरणं उवेइ ॥

२६४. तए णं सा दोवइं देवी पउमनाभं रायं एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिया !
नं जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ? 'ममं इहं
हव्वमाणेमाणे' तं 'एवमवि गए' गच्छ' णं तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपड-
साडाए ओचूलगवत्थनियत्थे अंतेउर-परियालसंपरिवुडे" अग्गाइं वराइं रयणाइं
गहाय ममं पुरओकाउं कण्हं वासुदेवं करयल"●परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं
मत्थए अंजलि कट्टु० पायवडिए सरणं उवेहि । पणिवइय-वच्छला णं देवाणु-
प्पिया ! उत्तमपुरिसा ॥

१. अत्थामे (ग, घ) ।

२. अवरकंका (क) ।

३. दाराइं (ख) ।

४. समोहणइ (क, ख, घ) ।

५. पायार (क, घ); पगार (ख) ।

६. सं० पा०—संभग्गं जाव पासित्ता ।

७. × (क, ख, ग) ।

८. × (ज, ग, घ) ।

९. द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

१०. गच्छइ (ग, घ) ।

११. परियालं० (क) ।

१२. सं० पा०—करयल० ।

२६५. तए णं से पउमनाभे दोवईए देवीए 'एवं वुत्ते समाने' प्हाए^१ *उल्लपडसाडए
ओचूलगवत्थनियत्थे अंतेउर-परियालसंपरिवुडे अग्गाइ वराइ रयणाइ गहाय
दोवइं देवि पुरओकाउं कण्हं वासुदेवं करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं
मत्थए अंजलि कट्टु पायवडिए सरणं उवेइ, उवेत्ता^२ एवं वयासी—दिट्ठा णं
देवाणुप्पियाणं इड्डी^३ *जुई जसो वलं वीरियं पुरिसक्कार^४—परक्कमे । तं
खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! *खंतुमरहंति णं देवाणु-
प्पिया ! ° नाइ^५ भुज्जो एवंकरणयाए त्ति कट्टु पंजलिउडे पायवडिए कण्हस्स
वासुदेवस्स दोवइं देवि साहत्थि उवणेइ ॥

सदोवई-पंडवस्स कण्हस्स पच्चावट्टण-पदं

२६६. तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमनाभं एवं वयासी—हंभो पउमनाभा ! अपत्थिय-
पत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरि-हिरि-धइ-कित्ति-
परिवज्जिया ! किण्णं तुमं न^६ जाणसि मम भगिणि दोवइं देवि इहं हव्वमाणे-
माणे ? तं 'एवमवि गए' नत्थि ? ते ममाहितो इयाणि भयमत्थि ? त्ति
कट्टु पउमनाभं पडिविसज्जेइ, दोवइं देवि गण्हइ, गण्हित्ता रहं दुरुहेइ, दुरुहित्ता
जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचण्हं पंडवाणं दोवइं देवि
साहत्थि उवणेइ ॥

२६७. तए णं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धि अप्पच्छट्टे छहिं रहंहिं लवणसमुदं
मज्झमज्झेणं जेणेव जंबुद्वीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

वासुदेव-जुयलस्स संखसद्देण मिलण-पदं

२६८. तेणं कालेणं तेणं समाणं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धे भारहे वासे चंपा नामं
नयरी होत्था । पुण्णभद्दे चेइए ॥

२६९. तत्थ णं चंपाए नयरीए कविले नामं वासुदेवे राया होत्था—महताहिमवतं-
महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ^७ ॥

२७०. तेणं कालेणं तेणं समाणं मुणिसुव्वए अरहा^८ चंपाए पुण्णभद्दे समोसडे । कविले
वासुदेवे धम्मं सुणेइ ॥

१. एयमट्टं पडिसुणेइ २ (ख, ग, घ) ।

६. × (ग, घ) ।

२. सं० पा०—प्हाए जाव सरणं उवेइ २ करयल
एवं व ।

७. हव्वमाणे (ख, ग, घ) ।

८. द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

३. सं० पा०—इड्डी जाव परक्कमे ।

९. अभयमत्थि (घ) ।

४. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव नाइ ।

१०. ओ० सू० १४ ।

५. नाहं (क, ख, ग, घ) । एतत् पदं १।५।१२३

११. अरिहा (क) ।

सूत्रस्याधारेण स्वीकृतम् ।

२७१. तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतिए धम्मं सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स संखसद्दं सुणेइ ॥
२७२. तए णं तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—किमण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे, जस्स णं अयं संखसद्दे ममं पिव मुहवायपूरिए वियंभइ' ? कविला वासुदेवा भद्दाइ' ! मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी—से नूणं कविला वासुदेवा ! ममं अंतिए धम्मं निसामेमाणस्स (ते ?) संखसद्दं अकण्णिता' इमेयारूवे अज्झत्थिए' •चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—किमण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे, जस्स णं अयं संखसद्दे ममं पिव मुहवायपूरिए^० वियंभइ ? से नूणं कविला वासुदेवा ! अट्ठे समट्ठे ?
हंता ! अत्थि । तं नो खलु कविला ! एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं एगखेत्ते एगजुगे एगसमए णं दुवे अरहंता वा चक्कवट्ठी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।
एवं खलु वासुदेवा ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ पंडुस्स रण्णो सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगइएणं देवेणं अवरककं नयारिं साहरिया । तए णं से कण्हं वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सिद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अवरककं रायहाणि दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए । तए णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमनाभेणं रण्णा सिद्धिं संगामं संगामेमाणस्स अयं संखसद्दे तव 'मुहवायपूरिए इव'^१ वियंभइ ॥
२७३. तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—गच्छामि णं अहं भंते ! कण्हं वासुदेवं उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं^२ पासामि ॥
२७४. तए णं मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं अरहंता वा अरहंतं पासंति, चक्कवट्ठी वा चक्कवट्ठिं पासंति, बलदेवा वा बलदेवं पासंति, वासुदेवा वा वासुदेवं

१. वियंभेइ (क) ।

२. सद्दाति (ख); सद्दाइ सुणेइ (घ) ।

३. अकिण्णिता (ख) ।

४. सं० पा०—अज्झत्थिए किमण्णे जाव वियंभइ ।

५. मुहवायाइट्ठे इव (क); मुहवायइट्ठे एवं ६. × (क) ।

(ख); मुहवायइट्ठे कंते इहेव (ग); मुहवाया इव (घ); अस्मिन्नेव सूत्रे कपिलवासुदेवचित्तनसमये 'ममं पिव मुहवायपूरिए' इति पाठोस्ति । तस्याधारेणवासी पाठः स्वीकृतः ।

पासंति । तहवि य णं तुमं कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुदं मज्झमज्झेणं वीईवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं' पासिहिसि ॥

२७५. तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुध्वयं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता हत्थिखंघं दुरुहइ, दुरुहिता 'सिग्घं तुरियं चवलं चंडं जइणं वेइयं' जेणेव वेलाउले' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुदं मज्झमज्झेणं वीईवयमाणस्स सेयार्प.याइं धयग्गाइं पासइ, पासित्ता एवं वयइ — एस णं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुदं मज्झमज्झेणं वीईवयइ त्ति कट्ठु पंचयण्णं संखं परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ ॥

२७६. तए णं से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स संखसइं 'आयण्णेइ, आयण्णेत्ता' पंचयण्णं^१ *संखं परामुसइ, परामुसित्ता मुहवाय^२ पूरियं करेइ ॥

२७७. तए णं दोवि वासुदेवा संखसइ-सामायारि' करेति ॥

कविलेण पउमनाभस्स निव्वासण-पवं

२७८. तए णं से कविले वासुदेवे जेणेव अवरकंका रायहाणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अवरकंका रायहाणि संभग्ग'-*पागार-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघरं सरसरस्स घरणियले सण्णिवइयं^३ पासइ, पासित्ता पउमनाभं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! एसा अवरकंका राय-हाणी संभग्ग'-*पागार-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरि-घरा सरसरस्स घरणियले^४ सण्णिवइया ?

२७९. तए णं से पउमनाभे कविलं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! जंबुदी-वाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुभे परिभूय अवरकंका' *रायहाणी संभग्ग-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थिय-पवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स घरणियले^५ सण्णिवइया" ॥

२८०. तए णं से कविले वासुदेवे पउमनाभस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमनाभं एवं वयाणी—हंभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीण-पुण्णचाउइसा ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! किण्णं तुमं न" जाणसि मम सरिसपुरिस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ?—आसु-रुत्ते" *रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निलाडे साहट्ठु^६

१. धयाइं (घ) ।

२. सिग्घं (क, घ) ।

३. वेलाकूले (कव) ।

४. आकण्णेइ २ (क) ।

५. सं० पा०—पंचयण्णं जाव पूरियं ।

६. समायारि (स, ग) ।

७. सं० पा०—संभग्ग तोरण जाव पासइ ।

८. सं० पा०—संभग्ग जाव सण्णिवइया ।

९. सं० पा०—अवरकंका जाव सण्णिवइया ।

१०. सण्णिवइया (घ) ।

११. × (क, ग, घ) ।

१२. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव पउमनाभं ।

पउमनाभं निव्विसयं आणवेइ, पउमनाभस्स पुत्तं अवरकंकाए रायहाणीए
महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिचइ', •अभिसिचित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए
तामेव दिसिं ° पडिगए ॥

अपरिक्खणीयपरिक्खा-पदं

२८१. तए णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुदं मज्झंमज्झेणं 'वीईवयमाणे-वीईवयमाणे
गंगं उवागए' [उवागम्म ?] ते पंच पंडवे एवं वयासी- गच्छह णं तुभे
देवाणुप्पिया ! गंगं महानइं उत्तरह जाव ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं
पासामि ॥
२८२. तए णं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगा महानदी
तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए' मग्गण-गवेसणं करंति, करेत्ता
एगट्ठियाए गंगं महानइं उत्तरंति, उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति—पहू णं
देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगं महानइं वाहाहि उत्तरित्ते, उदाहू नो
पहू उत्तरित्ते ? त्ति कट्ठु एगट्ठियं 'णूमेति, णूमेत्ता' कण्हं वासुदेवं पडिवाले-
माणा-पडिवालेमाणा चिट्ठंति ॥
२८३. तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासइ, पासित्ता जेणेव गंगा महानइं
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं
करेइ, करेत्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए वाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ,
एगाए वाहाए गंगं महानइं वासट्ठि जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिणं उत्तरिउं
पयत्ते यावि होत्था ॥
२८४. तए णं से कण्हे वासुदेवे गंगाए महानइंए वहुमज्झदेसभाए संपत्ते समाणे संते
तंते परितंते वद्धसेए जाए यावि होत्था ॥
२८५. तए णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स इमेयारुवे अज्झत्थिए' •चित्तिए पत्थिए
मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अहो णं पंच पंडवा महाबलवगा जेहिं गंगा
महानइं वासट्ठि जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिणा वाहाहि उत्तिणा ।

१. सं० पा०—अभिसिचइ जाव पडिगए ।

२. वीईवइ २ (क, ख, ग); वीईवयइ गंग°
(घ) ।

३. एगट्ठियाए नावाए (क, ख, ग, घ) । वृत्ती
'एगट्ठियंति नोः' इति व्याख्यानमस्ति ।
अस्यानुसारेण 'एगट्ठिया' पदं नो वाचकमस्ति ।
प्रतिषु 'नावाए' इति पदस्यापि उल्लेखो

लभ्यते । स च बहुषु स्थानेषु सारल्यार्थं
परिवर्तितपदवद् विद्यते ।

४. एगट्ठियाओ (ग) ।

५. ण मुयंति (क); ण मुचति (ख); मुस्संति २
(घ) ।

६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

७. वावट्ठि (क, ग) ।

इच्छंतएहि' ण पंचहिं पंडवेहिं पउमना भे हय-महिय'-●पवरवीर-घाइय-विवडिय-चिध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं ° नो पडिसेहिए ॥

२८६. तए णं गंगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं' °चित्थियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं ° जाणित्ता थाहं वियरइ ॥

२८७. तए णं से कण्हे वासुदेवे मुहुत्ततरं समासासेइ, समासासेत्ता गंगं महानदिं वासट्ठिं' °जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णं वाहाए ° उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच पंडवे एवं वयासी —अहो णं तुब्भे देवाणु-प्पिया ! महावलवगा, जेहिं णं तुब्भेहिं गंगा महानई वासट्ठिं' °जोयणाइं अद्ध-जोयणं च वित्थिण्णा वाहाहिं ° उत्तिण्णा । इच्छंतएहिं णं तुब्भेहिं पउमनाहे' °हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसो-दिसिं ° नो पडिसेहिए ॥

२८८. तए णं ते पंच पंडवा कण्हेण वासुदेवेण एवं वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी —एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गण गवेसणं करेमो, °करेत्ता एगट्ठियाए गंगं महानई उत्तरेमो, उत्तरेत्ता अण्णमण्णं एवं वयामो—पहू णं देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगं महानई बाहाहिं उत्तरित्तए, उदाहु नो पहू उत्तरित्तए ? त्ति कट्ठु एगट्ठियं ° णूमेमो, तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो ॥

कण्हेण पंडवाणं निव्वसण-पदं

२८९. तए णं से कण्हे वासुदेवे तेसिं पंचपंडवाणं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरत्ते' °रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडि निडाले साहट्ठु ° एवं वयासी—अहो णं जया मए लवणसमुदं दुवे जोयणसयसहस्सवित्थिण्णं वीईवइत्ता पउमनाभं हय-महिय'-●पवरवीर-घाइय-विवडियचिध-धय-पडागं किच्छोवगय-पाणं दिसोदिसिं ° पडिसेहित्ता अवरकंका संभग्गा, दोवई साहत्थि उवणीया, तया णं तुब्भेहिं मम माहप्पं न विण्णायं, इयाणि जाणिस्सह त्ति कट्ठु लोहदंडं परामुसइ, पंचण्हं पंडवाणं रहे सुसूरेइ', सुसूरेत्ता [पंच पंडवे ?] निव्विसए आणवेइ । तत्थ णं रहमद्वणे नामं कोट्ठे निविट्ठे ॥

१. इत्थंतएहि (ख, घ); एत्थंतएहि (ग) ।

२. सं० पा०—हयमहिय जाव नो पडिसेहिए ।

३. सं० पा०—अज्झत्थियं जाव जाणित्ता ।

४. सं० पा०—वासट्ठि जाव उत्तरइ ।

५. सं० पा०—वासट्ठि जाव उत्तिण्णा ।

६. सं० पा०—पउमनाहे जाव नो पडिसेहिए ।

७. सं० पा०—करेमो तं चेव जाव णूमेमो ।

८. सं० पा०—आसुरत्ते जाव तिवलियं एवं ।

९. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहित्ता ।

१०. सुसुचूरेइ (ख); सुसुसूरेइ (ग) चूरेइ (घ) ।

२६०. तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएणं खंधावारेणं सद्धिं अभिसमण्णागए यावि होत्था ॥
२६१. तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता [सयं भवणं ?] 'अणुप्पविसइ ॥
२६२. तए णं ते पंच पंडवा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जेणेव पंडू राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल' *परिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु° एवं वयासी—एवं खलु तामो ! अम्हे कण्हेणं निव्विसया आणत्ता ॥
२६३. तए णं पंडू राया ते पंच पंडवे एवं वयासी—कहणं पुत्ता ! तुम्हे कण्हेणं वासुदेवेणं निव्विसया आणत्ता ?
२६४. तए णं ते पंच पंडवा पंडुं रायं एवं वयासी—एवं खलु तामो ! अम्हे अवरकं कामो पडिनियत्ता लवणसमुद्धं दोण्णि जोयणसयसहस्साइं वीईवइत्था । तए णं से कण्हे वासुदेवे अम्हे एवं वयइ—गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! गंगं महानइं उत्तरह जाव ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि, एवं तहेव जाव' चिट्ठामो ॥
२६५. तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं दट्ठूण जेणेव गंगा महानइं तेणेव उवागच्छइ, तं चेवं सव्वं नवरं कण्हस्स चित्ता न बुज्झइ' जाव' निव्विसए आणवेइ ॥
२६६. तए णं से पंडू राया ते पंच पंडवे एवं वयासी—दुट्ठु णं' पुत्ता ! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहि ॥
२६७. तए णं से पंडू राया कांति देवि सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! बारवइं नयरि कण्हस्स वासुदेवस्स एवं' निवेएहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुमे पंच पंडवा निव्विसया आणत्ता । तुमं च णं देवाणुप्पिया ! दाहिणङ्गभरहस्स सामी । तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया । ते पंच पंडवा कयरं देसं वा दिसं वा 'विदिसं वा' गच्छंतु ?
२६८. तए णं सा कोंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणी हत्थिखंधं दुरुहइ, जहा हेट्ठा जाव' संदिसंतु णं पिउच्छा ! किमागमणपप्पोयणं ?
२६९. तए णं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु तुमे पुत्ता ! पंचपंडवा निव्विसया आणत्ता । तुमं च णं दाहिणङ्गभरहस्स' *सामी । तं

१. द्रष्टव्यम्—अस्यैवाच्ययनस्य १६६ सूत्रम् ।

२. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

३. ना० १।१६।२८२ ।

४. बुच्चइ (व) ।

५. ना० १।१६।२८३, २८४, २८६-२९० ।

६. णं तुमं (क) ।

७. × (क, ग, घ) ।

८. × (क, ख, ग) ।

९. ना० १।१६।२१६-२१९ ।

१०. सं० पा०—दाहिणङ्गभरहस्स जाव दिसं ।

संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! ते पंच पंडवा कयरं देसं वा ° दिसं वा विदिंसि वा गच्छंतु ?

३००. तए णं से कण्हे वासुदेवे कीर्तिं देवि एवं वयासी—अपूइवयणा' णं पिउच्छा ! उत्तमपुरिसा—वासुदेवा बलदेवा चक्कवट्टी । तं गच्छंतु णं पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेयालिं तत्थ पंडुमहुरं निवेसंतु, ममं अदिट्ठसेवगा भवंतु त्ति कट्ठु कीर्तिं देवि सक्कारेइ सम्माणेइ', °सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता ° पडिविसज्जेइ ॥
३०१. तए णं सा कीर्ती देवी' °जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ° पंडुस्स एयमट्ठं निवेएइ ॥
३०२. तए णं पंडू राया पंच पंडवे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेयालिं । तत्थ णं तुब्भे पंडुमहुरं निवेसेह ॥

पंडुमहुरा-निवेसण-पदं

३०३. तए णं ते पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो' °एयमट्ठं ° तहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सबलवाहणा हय-गय'-°रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विदपरिक्खित्ता ° हत्थिणाउराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरि' निवेसंति । तत्थवि' णं ते विपुलभोग-समिति-समण्णागया यावि होत्था ॥

पंडुसेण-जम्म-पदं

३०४. तए णं सा दोवई देवी अण्णया कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि' होत्था ॥
३०५. तए णं सा दोवई देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव' सुखं दारगं पयाया—सूमाल' °कोमलयं गयतालुयसमाणं ॥
३०६. तए णं तस्स णं दारगस्स निव्वत्तबारसाहस्स अम्मापियरो इमं एयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति ° जम्हा णं अम्हं एस दारए पंचण्हं पंडवाणं पुत्ते दोवईए देवीए अत्तए, तं होउ णं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं 'पंडुसेणे-पंडुसेणे' ॥

१. अपूइवयणा (ख, ग) ।

२. सं० पा०—सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ ।

३. सं० पा०—देवी जाव पंडुस्स ।

४. सं० पा०—रण्णो जाव तहत्ति ।

५. सं० पा०—हयगय जाव हत्थिणाउराओ ।

६. नगरं (ख) ।

७. तत्थ (ग, घ) ।

८. वि (ख, घ) ।

९. ओ० सू० १४३ ।

१०. सं० पा०—सूमालं निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं । सर्वास्वपि प्रतिषु एतावानेव पाठो विद्यते, किन्तु १।१६।३३, ३४ सूत्रानुसारेण अस्य प्रतिः कृता ।

११. पंडुसेणे (ग) ।

३०७. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेति' पंडुसेणत्ति ॥
 ३०८. *तए णं तं पंडुसेणं दारयं अम्मापियरो साइरेगट्ठवासजायगं चेव सोहणंसि तिहि-करण-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति ॥
 ३०९. तए णं से कलायरिए पंडुसेणं कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुय-पज्जवसाणाओ बावत्तरि कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खावेइ ° जाव' अलंभोगसमत्थे जाए । जुवराया जाव' विहरइ ॥

पंडवाणं दोवईए य पट्ठज्जा-पदं

३१०. थेरा समोसढा । परिसा निग्गया । पंडवा निग्गया । धम्मं सोच्चा एवं वयासी— जं नवरं— देवाणुप्पिया ! दोवइं देवि आपुच्छामो । पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो । तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता' ° णं अगाराओ अणगारियं ° पव्वयामो' ।
 अहासुहं देवाणुप्पिया !
 ३११. तए णं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दोवइं देवि सदावेत्ति, सदावेत्ता एवं वयासी— एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे निसंते जाव' पव्वयामो । तुमं णं देवाणुप्पिए ! किं करेसि ?
 ३१२. तए णं सा दोवई ते पंच पडवे एवं वयासी—जइ णं तुव्भे देवाणुप्पिया ! संसार-भउव्विग्गा जाव' पव्वयह, मम के अण्णे आलवे वा ° आहारे वा पडिबंधे वा ° भविस्सइ ? अहं पि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धि पव्वइस्सामि ॥
 ३१३. तए णं ते पंच पंडवा" ° कोडुंवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! पंडुसेणस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महुरिहं विउलं रायाभिसेहं उवट्ठवेह ° । पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव'" राया जाए जाव'" रज्जं पसाहेमाणे विहरइ ॥
 ३१४. तए णं ते पंच पंडवा दोवई य देवी अण्णया कयाइ पंडुसेणं रायाणं आपुच्छंति ॥
 ३१५. तए णं से पंडुसेणे राया कोडुंवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—

१. कयं (क); × (ख, ग) ।

७. ना० १।५।८६ ।

२. सं० पा०—बावत्तरि कलाओ जाव अलंभोग-समत्थे ।

८. ना० १।५।९० ।

३. ना० १।१।८५-८८ ।

९. सं० पा०—आलवे वा जाव भविस्सइ ।

४. राय० सू० ६७४ ।

१०. सं० पा०—पंडवा ° ।

५. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामो ।

११. ना० १।१।१७-११९ ।

६. पव्वामो (क, ग) ।

१२. ओ० सू० १४ ।

खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिमेयं करेह जाव' पुरिससहस्स-
वाहिणीओ सिबियाओ उवट्टवेह जाव' सिबियाओ पच्चोरुहंति', जेणेव थेरा'
●भगवंतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता थेरं भगवंतं निक्खुत्तो आयाहिण-
पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी०—
आलित्ते णं भंते ! लोए जाव' समणा जाया, चोदस्स पुव्वाइ अहिज्जंति,
अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठम-दसम-दुवालमेहि मासद्धमासखमणेहि
अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

३१६. तए णं सा दोवई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ जाव' पुव्वइया । सुव्वयाए अज्जाए
सिस्सिणियत्ताए दलयंति,* एक्कारस अंगाइ अहिज्जइ, बहूणि वासाणि छट्ठम-
दसम-दुवालमेहि मासद्धमासखमणेहि अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥

३१७. तए णं ते थेरा भगवंतो अण्णया कयाइ पंडुमहुराओ नयरीओ सहस्संववणाओ'
उज्जाणाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति ॥

अरिट्टनेमिस्स निव्वाण-पदं

३१८. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्टनेमी जेणेव सुरट्टाजणवाए तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्टाजणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे
विहरइ ॥

३१९. तए णं बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एवं खलु
देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्टनेमी सुरट्टाजणवाए' ●संजमेणं तवसा अप्पाणं
भावेमाणे० विहरइ ॥

३२०. तए णं ते जुहिद्विलपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा
अण्णमण्णं सदावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा
अरिट्टनेमी पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे"●सुहंमुहेणं विहरमाणे
सुरट्टाजणवाए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे० विहरइ । तं सेयं खलु अम्हं
[थेरे भगवंते ?] आपुच्छित्ता अरहं अरिट्टनेमि वंदणाए गमित्तए, अण्णमण्णस्स
एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

१. ना० १।१।१२१-१२६ ।

२. ना० १।१।१३०-१४४ ।

३. द्रष्टव्यम्—ना० १।१।१४५-१४८ सूत्रम् ।

४. सं० पा०—थेरा जाव आलिते ।

५. ना० १।१।१४६ ।

६. ना० १।१६।३१५ ।

७. दलयइ (क, ख, ग, घ) ।

८. सहसंब० (ख, ग) ।

९. सं० पा०—सुरट्टाजणवाए जाव विहरइ ।

१०. सं० पा०—दूइज्जमाणे जाव विहरइ ।

इच्छामो णं तुम्हेहि अन्नभणुणाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमि' *वन्दणाए°
गमित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया !

३२१. तए णं ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहि अन्नभणुणाया समाणा थेरे
भगवन्ते वदन्ति नमंसन्ति, वदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमन्ति,
पडिनिक्खमित्ता मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गमाणुगामं दूइज्ज-
माणा' *सुहंसुहेणं विहरमाणा° जेणेव हत्थकप्पे' नयरे तेणेव उवागच्छन्ति,
उवागच्छित्ता हत्थकप्पस्स बहिया सहस्संबवणे उज्जाणे' *संजमेणं तवसा
अप्पाणं भावेमाणा° विहरन्ति ॥

३२२. तए णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासक्खमणपारणए पढमाए पोरि-
सीए सज्झायं करेंति, बीयाए भाणं भायन्ति एवं जहा गोयमसामी', नवरं—
जुहिट्ठिलं आपुच्छन्ति जाव' अडमाणा बहुजणसह निशामेति —एवं खलु देवाणु-
प्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जंतसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं
पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए' *सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे
परिनिब्बुडे सव्वदुक्खं प्पहीणे ॥

पंडितानि निष्वाण-पवं

३२३. तए णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा
निसम्म हत्थकप्पाओ नयराओ पडिनिक्खमन्ति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहस्संब-
वणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिले अणगारे तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता
भत्तपाणं पच्चुवेक्खन्ति', पच्चुवेक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमन्ति, पडिक्क-
मित्ता अणवकंसमाणाणं आलोएन्ति, अस्सोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसन्ति, पडिदंसत्ता
एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया' ! *अरहा अरिट्ठनेमी उज्जंतसेलसिहरे
मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं° कालगए । तं
सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुज्जं
पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहित्तए, संलेहणा-भूसणा-भोसियाणं कालं अणवेक्ख-
माणाणं'° विहरित्तए त्ति कट्ठु अणमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तं
पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति, परिट्ठवेत्ता जेणेव सेत्तुज्जे" पव्वए तेणेव

१. सं० पा०—अरिट्ठनेमि जाव गमित्तए ।

२. सं० पा०—दूइज्जमाणा जाव जेणेव ।

३. हत्थीकप्पे (क) ।

४. सं० पा०—उज्जाणे जाव विहरन्ति ।

५. अ० २।१०७ ।

६. अ० २।१०८, १०९ ।

७. सं० पा०—कालगए जाव प्पहीणे ।

८. पच्चुवेक्खइन्ति (ख); पच्चक्खन्ति (घ) ।

९. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव कालगए ।

१०. अणवकंसमाणाणं (घ) ।

११. सेत्तुजे (घ) ।

उवागच्छन्ति, उवागच्छिता सेतुज्जं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहंति^१, *दुरुहिता सेलेहणा-भूसणा-भोसिया ° कालं अणवकंखमाणा विहरन्ति ॥

३२४. तए णं ते जुहिट्टिलपामोक्खा पंव अणगारा सामाइयमाइयाइं चोइसपुव्वाइं अहिज्जिता, बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं भोसेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव^२ तमट्टमाराहेति, माराहेत्ता अणंतं^३ *केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धा बुद्धा मुत्ता अंतगडा परिनिव्वुडा सब्बदुक्खप्पहीणा ° ॥

दोवईए देवत्त-पवं

३२५. तए णं सा दोवई अज्जा सुव्वयाणं अज्जियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जिता^४ बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए [अत्ताणं भोसेत्ता ?] आलोइय-पडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववण्णा । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं दुवयस्स वि देवस्स दससागरोवमाइं ठिई ॥

३२६. से णं भंते ! दुवए देवे ताम्रो^५ *देवलोगाम्रो आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्ख-एणं अणंतरं चयं चइत्ता जाव^६ महाविदेहे वासे सिज्झिहइ बुज्झिहइ मुच्चि-हिइ परिनिव्वाहिइ सब्बदुक्खाणं ° अंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पवं

३२७. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव^७ सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं सोलसमस्स नायज्जयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।
—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

सुबहू वि तव-किलेसो, नियाण-दोसेण दूसिओ संतो ।
न सिवाय दोवईए, जह किल सूमालिया-जम्मे ॥१॥

अथवा—

अमणुण्णमभत्तीए, पत्ते दाणं भवे अणत्थाय ।
जह कडुय-तुंब-दाणं, नागसिरि-भवम्मि दोवईए ॥२॥

१. सं० पा०—दुरुहंति जाव कालं ।

२. ओ० सू० १५४ ।

३. सं० पा०—अणंते णाणे समुप्पण्णे जाव सिद्धा ।

४. अहिज्जइ २ (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—ताओ जाव विदेहे वासे जाव अंतं

६. ना० १।१।२१२ ।

७. ना० १।१।७ ।

सत्तरसमं अज्भयणं

आइण्णे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सोलसमस्स नायज्भ-
यणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तरसमस्स णं भंते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नामं नयरे होत्था—
वण्णओ' ॥
३. तत्थ णं कणगकेऊ नामं राया होत्था—वण्णओ' ॥
४. तत्थ णं हत्थिसीसे नयरे बह्वे संजत्ता'-नावावाणियगा परिवसंति—अट्ठु
जाव' बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था ॥

कालियदीव-जत्ता-पदं

५. तए णं तेसिं 'संजत्ता-नावावाणियगाणं' अण्णया कयाइ एगयओ' •सहियाणं
इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—सेयं खलु अम्हं गणिमं च धरिमं
च मेज्जं च परिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुदं पोयवहणेणं ओगाहेत्तए
त्ति कट्ठु° जहा अरहन्नए जाव' लवणसमुदं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा
यावि होत्था ॥
६. तए णं तेसिं •संजत्ता-नावावाणियगाणं लवणसमुदं अणेगाइं जोयणसयाइं

१. ना० १।१।७ ।

२. ओ० सू० १ ।

३. ओ० सू० १४ ।

४. संजुत्ता (ग) ।

५. ना० १।५।७ ।

६. संजुत्ता वाणियगाणं (ख, ग) ।

७. सं० पा०—एगयओ जहा अरहन्नए जाव
लवणसमुदं ।

८. ना० १।८।६६-७० ।

९. सं० पा०—तेसिं जाव बहूणि ।

ओगाढाणं समाणाणं ° बहूणि उप्पाइयसयाइं ° पाउवभूयाइं, तं जहा -अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसहे ° कालियवाए यं समुत्थिए ॥

७. तए णं सा नावा तेणं कालियवाएणं आहुणिज्जमाणी-आहुणिज्जमाणी संचालिज्जमाणी-संचालिज्जमाणी संखोहिज्जमाणी-संखोहिज्जमाणी ° तत्थेव परिभमइ ॥

८. तए णं से निज्जामए नट्टमईए नट्टसुईए नट्टसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था—न जाणइ कयरं देसं वा दिसं वा 'विदिसं वा' ° पोयवहणे 'अवहिए त्ति' ° कट्ठु ओह्यमणसंकप्पे ° करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगाए ° भियायइ ॥

९. तए णं ते बह्वे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गवभेल्लगा य संजत्ता-नावा-वाणियगा य जेणेव से निज्जामए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओह्यमणसंकप्पे ° करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगाए ° भियायसि ?

१०. तए णं से निज्जामए ते बह्वे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गवभेल्लगा य संजत्ता-नावावाणियगा य एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! नट्टमईए ° नट्टसुईए नट्टसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था—न जाणइ कयरं देसं वा दिसं वा विदिसं वा पोयवहणे ° अवहिए त्ति कट्ठु नओ ओह्यमणसंकप्पे ° करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगाए ° भियामि ॥

११. तए णं से कुच्छिधारा य कण्णधारा य गवभेल्लगा य संजत्ता-नावावाणियगा य तस्स निज्जामयस्संतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा ण्हाया कयवलिकम्मा करयल ° परिग्गहियं दसण्हं सिरसावत्तं मत्थाए अंजलि कट्ठु ° बहूणं इंदाण य खंघ्राण य ° रुद्दाण य सिवाण य वेसमणाण य नागाण य भूयाण य जक्खाण य अज्ज-कोट्टकिरियाण य बहूणि उवाइय-सयाणि ° उवायमाणा °-उवायमाणा चिट्ठंति ॥

१२. तए णं से निज्जामए तओ मुहुत्तंतरस्स लद्धमईए लद्धसुईए लद्धसण्णे अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था ॥

१. सं पा०—जहा मार्कदियदारगणं जाव कालियवाए ।

२. यत्थ (ग, घ) ।

३. अणुत्तिज्जमाणी (ख); आघुलिज्जमाणी (ग); आहुणियमाणी (घ) ।

४. संखोभेज्जमाणी (क) ।

५. × (क) ।

६. अवहिति (क); अवहिति त्ति (ख) ।

७. सं पा०—ओह्यमणसंकप्पे जाव भियायइ ।

८. सं पा०—ओह्यमणसंकप्पे जाव भियायसि ।

९. सं पा०—नट्टमईए जाव अवहिए ।

१०. सं पा०—ओह्यमणसंकप्पे जाव भियामि ।

११. सं पा०—करयल ° ।

१२. सं पा०—जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा ।

१३. उवाइमाणा (१।८।७२)

१३. तए ण स निज्जामए ते बह्वे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य संजत्ता-
नावावाणियगा य एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! लद्धमईए'
•लद्धसुईए लद्धसण्णे ° अमूढदिसाभाए जाए । अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कालिय-
दीवन्तेणं सच्छूढा' । एस णं कालियदीवे आलोककइ' ॥

कालियदीवे आस-पेच्छण-पवं

१४. तए णं ते कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य संजत्ता-नावावाणियगा य
तस्स निज्जामगस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठुट्ठा पयक्खिणाणुकुलेणं वाएणं
जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेति, लंबेत्ता
एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरंति । तत्थ णं बह्वे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य
रयणागरे य वइरागरे य, बह्वे तत्थ आसे पासंति, किं ते ?—
हरिरेणू-सोणिमुत्तग-^१सकविल-मज्जार-पायकुक्कुड-वोंडसमुगयसामवण्णा ।
गोहूमगोरंग-गोरपाडल-गोरा, पवालवण्णा य धूमवण्णा य केइ ॥१॥
तलपत्त - रिट्ठवण्णा य, सालिवण्णा य भासवण्णा य केइ ।
जंपिय-तिल-कीडगा य, सोलोय-रिट्ठगा य पुंड-पइया य कणग पिट्ठा य केइ ॥२॥
चक्कागपिट्ठवण्णा, सारसवण्णा य हंसवण्णा य केइ ।
केइत्थ अट्ठभवण्णा, पक्कतल' - मेघवण्णा य बाहुवण्णा' केइ ॥३॥
संभाणुरागसरिसा, सुयमुह - गुंजद्धराग- सरिसत्थ केइ ।
एलापाडल - गोरा, सामलया - गवलसामला पुणो केइ ॥४॥
बह्वे अण्णे अणिद्देसा, सामा कासीसरत्तपीया, अच्चंतविमुद्धा वि य णं आइण्णग-
जाइ-कुल-विणीय-गयमच्छरा ।
हयवरा जहोवएस-कम्मवाहिणो वि य णं ।
सिक्खा विणीयविणया,
लंघण-वगण-धावण-घोरण-तिवई जईण-सिक्खिय-गई ।
किं ते ? मणसा वि उब्बिहंताइं अणेगाइं आससयाइं पासंति ° ॥

१५. तए णं ते आसा' वाणियए पासंति, तेसिं गंधं आघायंति', आघाइत्ता भीया

१. सं० पा०—लद्धमईए जाव अमूढदिसायाए ।

२. संबूढा (ख); संबूढा (ग) ।

३. ओलोकिज्जइ (घ) ।

४. सं० पा०—आइण्णवेढो । विस्तृतः पाठो
वृत्त्यनुसारेण स्वीकृतः । मूलपाठे अस्य सूचना
'आइण्णवेढो' इति पदेन प्रदत्तास्ति । वृत्ति-

कारेणापि सूचितमिदम् यथा—वेढो ति
वर्णनार्था वाक्यपद्धतिः (वृ) ।

५. पविरल (वृपा) ।

६. बह्व ° (वृपा) ।

७. आसा ते(क, घ);आसाए(ग);आसाओ(ङ)।

८. अघायंति (ख, ग) ।

तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उव्वमंति । ते णं तत्थ पउर-गोयरा पउर-तणपाणिया निव्वया' निव्विग्गा' सुहंसुहेणं विहरंति ॥

संजत्तियाणं पुणरागमण-पदं

१६. तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा अणमण्णं एवं वयासी—किण्णं अम्हं देवाणु-प्पिया ! आसेहि ? इमे णं वह्वे हिरण्णागरा य सुवण्णागरा य रयणागरा य वइरागरा य । तं सेयं खलु अम्हं हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य पोयवहणं भरित्तए त्ति कट्ठु अणमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेत्ति, पडिसुणेत्ता हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य तणस्स य कट्ठस्स य अन्नस्स य पाणियस्स य पोयवहणं भरंति, भरेत्ता पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लवंति, लंबेत्ता सगडी-सागडं सज्जेत्ति, सज्जेत्ता तं हिरण्णं *च सुवण्णं च रयणं च ° वइरं च एगट्ठियाहि पोयवहणाओ संचारेत्ति, संचारेत्ता सगडी-सागडं संजोएत्ति, जेणेव हत्थिसीसए नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थिसीसयस्स नयरस्स वहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेसं करंति, करेत्ता सगडी-सागडं मोएत्ति, मोएत्ता महत्थं *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं ° पाहुडं गेण्हंति, गेण्हित्ता हत्थिसीसयं नयरं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव से कणगकेऊ राया तेणेव उवा-गच्छंति, उवागच्छित्ता तं महत्थं *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं ° पाहुडं उवणंति ॥

आसाण आणयण-पदं

१७. तए णं से कणगकेऊ राया तेसि संजत्ता-नावावाणियगाणं तं महत्थं *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं ° पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते संजत्ता-नावा-वाणियगे एवं वयासी—तुव्वे णं देवाणुप्पिया ! गामागरं *नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंव-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-सण्णिवेसाइं ° आहिइह, लवणसमुद्धं च अभिक्खणं-अभिक्खणं पोयवहणेणं ओगाहेह । तं अत्थियाइं च केइ भे" कहिंचि अच्छेरए दिट्ठुप्पवे ?

१. निव्वया निव्वेया (ग) ।

२. निउव्विग्गा (ख) ।

३. दक्खिणाणु° (ख, ग) ।

४. गंभीर (ख, ग, घ) ।

५. पोयवहणपट्टणे (ग) ।

६. सं° पा०—हिरण्णं जाव वइरं ।

७. जोएत्ति (क, ख, घ) ।

८. हत्थिसीसे (घ) ।

९. सं° पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

१०. सं° पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

११. सं° पा०—महत्थं जाव पडिच्छइ ।

१२. सं° पा०—गामागर जाव आहिइह ।

१३. हे (ग) ।

१८. तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा कणगकेउं एवं वयासी—एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो तं चेव जाव' कालियदीवतेणं संछूढा । तत्थ णं बह्वे हिरण्णागरे य' •सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य°, बह्वे तत्थ' आसे पासामो' ।
किं ते ? हरिरेणु जाव' अम्हं गंधं आघायंति, आघाइत्ता भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तम्पो अणेगाइं जोयणाइं उव्वभंति । तए णं सामी ! अम्हेहि कालियदीवे 'ते आसा' अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ॥
१९. तए णं से कणगकेऊ तेसिं संजत्ता-नावावाणियगाणं अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ते संजत्ता-नावावाणियए एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धि कालियदीवाओ ते आसे आणेह ॥
२०. तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा' एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति ॥
२१. तए णं से कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संजत्ता-नावावाणियएहिं सद्धि कालियदीवाओ मम आसे आणेह । तेवि पडिसुणेंति ॥
२२. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सगडी-सागडं सज्जेति, सज्जेत्ता तत्थ णं बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छट्ठभामरीण य चित्तवीणाण य अण्णेसिं च बहूणं सोइदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति । बहूणं किण्हाण य' •नीलाण य लोहियाण य हालिदाण य° सुक्किलाण य कट्टकम्माण य चित्तकम्माण य पोत्थकम्माण य लेप्पकम्माण य गंथिमाण य वेढिमाण य पूरिमाण य संघाइमाण य अण्णेसिं च बहूणं चक्खिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति । बहूणं कोट्टपुडाण य' •पत्तपुडाण य चोयपुडाण य तगरपुडाण य एलापुडाण य हिरिवेरपुडाण य उसीरपुडाण य चंपगपुडाण य मरुयगपुडाण य दमगपुडाण य जातिपुडाण य जुहियापुडाण य मल्लियापुडाण य वासंतियापुडाण य केयइपुडाण य कप्पूरपुडाण य पाडलपुडाण य° अण्णेसिं च बहूणं घाणिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं

१. ना० १।१७।४-१३ ।

२. सं० पा०—हिरण्णागरे य जाव बह्वे;
हिरण्णागरा° (ख, ग) ।

३. यत्थ (ख); अत्थि (घ) ।

४. एतत् क्रियापदं १४ सूत्रानुसारेण स्वीकृतम् ।

५. ना० १।१७।१४, १५ ।

६. नावावाणियगा कणगकेउं एवं वयासी (क,

ख, ग, घ) । यद्यपि सर्वेष्वपि आदर्शेषु असौ पाठो विद्यते, तथापि अर्थमीमांसया नासौ सगच्छते । एतादृशप्रसंगे तथा अदर्शनात् ।
द्रष्टव्यम्—१।८।१०४ सूत्रम् । तेनासौ पाठः पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः ।

७. सं० पा०—किण्हाण य जाव सुक्किलाण ।

८. सं० पा०—कोट्टपुडाण य जाव अण्णेसिं ।

भरेति । बहुस्स खंडस्स य गुलस्स य 'सक्कराए य मच्छंडियाए य' पुप्फुत्तर-
पउमुत्तराए अण्णेसिं च जिब्भदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेति ।
बहूणं कोयवाणं य कंबलाण य पावाराण य नवतयाण य 'मलयाण य' मसूराण
य 'सिलावट्टाण य जाव हंसगम्भाण य' अण्णेसिं च फासिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं
सगडी-सागडं भरेति, भरेत्ता सगडी-सागडं जोयंति, जोइत्ता जेणेव गंभीरए
पोयट्टाणे तेणेव उवागच्छंति, सगडी-सागडं मांएति, मांएत्ता पोयवहणं सज्जेति,
सज्जेत्ता तेसिं उक्किट्टाणं सद्-फरिस-रस-रुव-गंधाणं कट्टस्स य 'तणस्स य'
पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव' अण्णेसिं च बहूणं
पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेति, भरेत्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएणं जेणेव
कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेति, लंबेत्ता ताइं
उक्किट्टाइं सद्-फरिस-रस-रुव-गंधाइं, एगट्टियाहिं कालियदीवं उत्तरेति ।

जहिं-जहिं च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्ठंति वा तहिं-
तहिं च णं ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तवीणाओ य अण्णाणि
य बहूणि सोइंदिय-पाउग्गाणि य' दव्वाणि समुदीरेमाणा-समुदीरेमाणा ठवेति,
तेसिं च परिपेरंतेणं पासए' ठवेति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया
चिट्ठंति ।

जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा' •सयंति वा चिट्ठंति वा • तुयट्ठंति वा तत्थ-
तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा बहूणि किण्हाणि य नीलाणि य लोहियाणि य
हालिहाणि य सुक्किलाणि य कट्टकम्माणि य जाव संधाइमाणि य अण्णाणि य
बहूणि चक्खिदिय-पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेति, तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेति,
ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति ।

जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्ठंति वा तत्थ-तत्थ
णं ते कोडुंबियपुरिसा तेसिं बहूणं कोट्टपुडाण य जाव पाडलपुडाण य अण्णेसिं

१. सक्करा तणस्स य पाणियस्स य गोरसस्स य
तंदुलाण य समियस्स य जाव अण्णेसिं च
पोयवहणपाओग्गाण य (क); •मुच्छंडियाए
य तणस्स य पाणियस्स य गोरसस्स य तंदुलाण
य समियस्स य जाव अण्णेसिं च पोयवहण-
पाओग्गाण य (ख) ।

२. कोयगाण (वृ); कोयहा (वा ?) णि
(आयारचूला ५।१४) ।

३. मसगाण य (वृषा) ।

४. 'सिलावट्टाण य जाव हंसगम्भाण य' अस्स

पूतिस्थलं नोपलभ्यते । प्रज्ञापनायाः प्रथमपदे
हंसगम्भ इति पदं मध्यवर्ति विद्यते । अन्तिमं
पदं 'मूरकंते' अस्ति । उत्तराध्ययनस्य ३६
अध्ययनेषि एवमेव ।

५. × (ख, ग, घ) ।

६. ना० १।८।६६ ।

७. × (ख, घ) ।

८. पासे (ख, घ) ।

९. सं० पा०—आसयंति वा जाव तुयट्ठंति ।

च बहूणं घाणिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य नियरे य करेति, करेत्ता तेसिं परिपेरंतेणं^१ *पासए ठवेति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया^२ चिट्ठंति ।

जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्ठंति वा तत्थ-तत्थ णं ते कोडुबियपुरिसा गुलस्स जाव पुप्फुत्तर-पउमुत्तराए अण्णेसि च बहूणं जिम्भिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य नियरे य करेति, करेत्ता वियरए खणंति, खणित्ता गुलपाणगस्स 'खंडपाणगस्स बोरपाणगस्स'^३ अण्णेसि च बहूणं पाणगाणं वियरए भरेति, भरेत्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेति^४, *ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया^५ चिट्ठंति ।

जहि-जहि च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्ठंति वा तहि-तहि च णं ते कोडुबियपुरिसा बह्वे 'कोयवया जाव सिलावट्ठया'^६ अण्णाणि य फासिदिय-पाउग्गाइं अत्थुय-पच्चत्थुयाइं ठवेति, ठवेत्ता तेसिं परिपेरंतेणं^७ *पासए ठवेति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया^८ चिट्ठंति ॥

२३. तए णं ते आसा जेणेव ते उक्किट्ठा सद्-फरिस-रस-रूव-गंधा तेणेव उवागच्छंति ॥

अमुच्छिद्य-आसाणं सायस-विहार-पदं

२४. तत्थ णं अत्येगइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्-फरिस-रस-रूव-गंधंति^९ कट्ठु तेसु उक्किट्ठेसु सद्-फरिस-रस-रूव-गंधेसु अमुच्छिद्या अगढिया अगिद्धा अणज्झोववण्णा तेसिं उक्किट्ठाणं सद्-^{१०}फरिस-रस-रूव-^{११}गंधाणं दूरंदूरेण अवक्कमंति । ते णं तत्थ पउर-गोयरा पउर-तणपाणिया निव्वभया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति ॥

निगमण-पदं

२५. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा^{१२} *निगंथो वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे^{१३} सद्-फरिस-रस-रूव-गंधेसु नो सज्जइ नो रज्जइ नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोववज्झइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं य अच्चणिज्जे जाव^{१४} चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ ॥

१. सं० पा०—परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति ।

संक्षेपीकरणेऽस्य विपर्ययो जातः ।

२. खंडपाणगस्स पोरपाणगस्स (क); बोरपाण-गस्स य खंडपाणगस्स य (ख): खडपाणगस्स (ग) ।

५. सं० पा०—परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति ।

६. गंधाति (ख, घ) ।

७. सं० पा०—सद् जाव गंधाणं ।

८. सं० पा०—निगंथो वा^{१०} ।

३. सं० पा०—ठवेति जाव चिट्ठंति ।

९. ना० १।२।७६ ।

४. जत्थ सूत्रस्य पूर्वपाठापेक्षया 'कोयवया जाव इंसग्गा' एवं पाठो युज्यते । संभवतः

मुच्छिय-आसाणं परायत्त-पदं

२६. तत्थ णं अत्थेगइया आसा जेणेव उक्किट्ठा सद-फरिस-रस-रूव-गंधा तेणेव उवागच्छंति । तेसु उक्किट्ठेसु सद-फरिस-रस-रूव-गंधेसु मुच्छिया गढिया गिद्धा अज्झोववण्णा आसेविउं पयत्ता यावि होत्था ॥
२७. तए णं ते आसा ते उक्किट्ठे सद-फरिस-रस-रूव-गंधे आमेवमाणा तेहि बहूहि कूडेहि य पासेहि य गलएसु य पाएसु य वज्झंति ॥
२८. तए णं ते कोडुंवियपुरिसा ते आसे गिण्हंति, गिण्हत्ता एगट्ठियाहि पोयवहणे संचारेति, कट्टस्स य^१ •तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव^२ अण्णेसि च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं • भरेति ॥
२९. तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा दक्खिणाणुकूणेण वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लवंति, लवंत्ता ते आसे उत्तारेति, उत्तारेत्ता जेणेव हत्थिसीसे नयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल^३ परिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं • बद्धावेति ते आसे उवणंति ॥
३०. तए णं से कणगकेऊ राया तेसि संजत्ता-नावावाणियगाणं उस्सुक्कं^४ वियरइ, सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
३१. तए णं से कणगकेऊ राया कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
३२. तए णं से कणगकेऊ राया आसमद्दए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम आसे विणएह ॥
३३. तए णं ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता ते आसे बहूहि मुहवंधेहि य कण्णबंधेहि य नासाबंधेहि य वालबंधेहि य खुरबंधेहि य 'कडगबंधेहि य खलिणबंधेहि य'^५ ओवीलणाहि^६ य 'पडयाणेहि य'^७ अंकणाहि य वेत्तप्पहारेहि^८ य लयप्पहारेहि^९ य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयंति, विणइत्ता कणगकेउस्स रण्णो उवणेंति ॥
३४. तए णं से कणगकेऊ राया ते आसमद्दए सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१. सं० पा०—कट्टस्स य जाव भरेति ।

२. ना० १।८।६६ ।

३. सं० पा०—करयल जाव बद्धावेति ।

४. उस्सुक्कं (क, ग, घ) ।

५. × (क); •खलीणं (ख, ग) ।

६. अधिलानेहि (क); आबलनेहि (ख); अहिलानबंधेहि (ग); अहिलानेहि (घ, वृपा) ।

७. × (क); पलियाणेही य (ख) ।

८. वित्तं • (ख, ग, घ) ।

९. × (ख, ग) ।

३५. तए णं ते आसा बहूहि मुहबंघेहि य जाव' छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीर-
माणसाइं दुक्खाइं पावेति ॥

निगमण-पदं

३६. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा' •निगंथो वा आयरिय-उवज्झायाणं
अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्-फरिस-
रस-रूव-गंधेसु सज्जइ रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ अज्झोववज्झइ, से णं इहलोए
चेव बहूणं समणाणं° •बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं° सावियाण य
हीलणिज्जे जाव' चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्ठिस्सइ ।

गाहा -

कल-रिभिय-महुर-तंती-तल-ताल-वंस-कउहाभिरामेसु' ।
सट्ठेसु रज्जमाणा', रमंति सोइंदिय - वसट्ठा ॥१॥
सोइंदिय-दुद्धंतत्तणस्स अह 'एत्तिओ हवइ'° दोसो ।
दीविग-रयमसहंतो', वहबंघं तित्तिरो पत्तो ॥२॥
थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्विय-विलासियगईसु' ।
रूवेसु रज्जमाणा, रमंति चक्खिदिय-वसट्ठा ॥३॥
चक्खिंदिय-दुद्धंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं'° जलणंमि जलंते, पडइ पयंगो अबुद्धीओ ॥४॥
अगरुवर-पवरधूवण - उउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।
गंधेसु रज्जमाणा, रमंति घाणिदिय-वसट्ठा ॥५॥
घाणिदिय-दुद्धंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं ओसहिगघेणं, विलाओ निद्धावई उरगो ॥६॥
तित्त-कडुयं'° कसायं, महुरं'° बहुखज्ज-पेज्ज-लेज्झेसु ।
आसायंमि'° उ गिद्धा, रमंति जिब्भिदिय-वसट्ठा ॥७॥
जिब्भिदिय-दुद्धंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं गललगुक्खित्तो, फुरइ थलविरेल्लिओ'° मच्छो ॥८॥

१. ना० १।१७।३३ ।

२. सं० पा०—निगंथो वा पव्वइए ।

३. सं० पा०—समणाणं जाव सावियाण ।

४. ना० १।३।२४ ।

५. कडुहा° (क); ककुहा° (ख); ककुदा°
(घ, वृ) ।

६. रयमाणा (ख) ।

७. तत्तियो हवति (क, ग); हवइ एत्तिओ (ख) ।

८. भयमसहंतो (ग); खमसहंतो (घ, वृ) ।

९. °मईसु (क) ।

१०. सं (क) ।

११. कट्टय (घ) ।

१२. अविलमहुरं (घ) ।

१३. आसायंति (ख) ।

१४. °विरिल्लिओ (क, ख, ग); °विरिल्लिओ(घ) ।

उउ-भयमाणसुहेसुं य, सविभव-हिययमण-निव्वुइकरेसुं ।
 फासेसु रज्जमाणा, रमंति फासिदिय-वसट्ठा ॥९॥
 फासिदिय-दुहंतत्तणस्स अह एत्तिआ हवइ दोसो ।
 जं खणइ मत्थयं कुंजरस्स लोहंकुसो तिकखो ॥१०॥
 कल-रिभिय-महुर-तंती-तल-ताल-वंस-कउहाभिरामेसु ।
 सहेसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरण ॥११॥
 थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्विय-विलासियगईसु ।
 रूवेसु जे न रत्ता, वसट्टमरणं न ते मरण ॥१२॥
 अगखवर - पवर - धूवण - उउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।
 गंधेसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरण ॥१३॥
 तित्त-कडुयं, कसायं, महुरं बहुखज्ज-पेज्ज-लेज्जेसु ।
 आसायंमि 'न गिद्धा', वसट्टमरणं न ते मरण ॥१४॥
 उउ-भयमाणसुहेसु य, सविभव-हिययमण-निव्वुइकरेसुं ।
 फासेसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरण ॥१५॥
 सहेसु य भइय-पावएसु सोयविसयमुवगएसु ।
 तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं ॥१६॥
 रूवेसु य भइय-पावएसु चक्खुविसयमुवगएसु ।
 तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं ॥१७॥
 गंधेसु य भइय-पावएसु घाणविसयमुवगएसु ।
 तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं ॥१८॥
 रसेसु य भइय-पावएसु जिह्वविसयमुवगएसु ।
 तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं ॥१९॥
 फासेसु य भइय-पावएसु कायविसयमुवगएसु ।
 तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं ॥२०॥

१. °सुहेहि (क, ख) ।

२. सविहव (क, ग) ।

३. °करेहि (क, ख, ग) ।

४. °मईसु (ग) ।

५. घाणेसु (ख) ।

६. अगिद्धा (क, ख, ग) ।

७. णेव्वुय° (क) ।

८. भहेसु य (ख) ।

९. भइय (क, ग) ।

१०. होउव्वं (ग) ।

११. एतद् गाथा-विशतिकं वृत्तिकृता प्रस्तुतवाच
 नायां न स्वीक्रियते—यथा—अथेन्द्रियासंवृ
 तानां स्वरूपस्य इन्द्रियासंवरदोषस्य चाभि
 धायकं गाथाकदंबकं वाचनान्तरेऽधिकमुप
 लभ्यते ।

३७. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सो कालियदीवो, अणुवमसोक्खो तहेव जइ-धम्मो ।
 जह आसा तह साहू, वणियव्व अणुकूलकारिजणा ॥१॥
 जह सद्दाइ-अगिद्धा, पत्ता नो पासबंधणं आसा ।
 तह विसएसु अगिद्धा, वज्झंति न कम्मणा साहू ॥२॥
 जह सच्छंदविहारो, आसाणं तह इहं वरमुणीणं ।
 जर-मरणाइ-विवज्जिय, सायत्ताणंदनिव्वाणं ॥३॥
 जह सद्दाइसु गिद्धा, वद्धा आसा तहेव विसयरया ।
 पावेंति कम्मबंधं, परमासुह-कारणं घोरं ॥४॥
 जह ते कालियदीवा, णीया अण्णत्थ दुह्गणं पत्ता ।
 तह धम्म-परिव्वभट्ठा, अधम्मपत्ता इहं जीवा ॥५॥
 पावेंति कम्म-नरवइ-वसया संसारवाहियालीए^१ ।
 आसप्पमद्दएहिं व, नेरइयाईहिं दुक्खाइं ॥६॥

— — —

अट्टारसमं अज्झयणं

सुंसुमा

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्टारसमस्स णं भंते नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समाएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था—वण्णओ' ॥
३. तत्थ णं धणे नामं सत्थवाहे । भद्दा भारिया ॥
४. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था, तं जहा—धणे धणपाले' धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए ॥
५. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुंसुमा नामं दारिया होत्था—सूमालपाणिपाया ॥

चिलाय-दासचेडस्स विग्गह-पदं

६. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चिलाए नामं दासचेडे होत्था—अहीणपंचिदिय-सरीरे मंसोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था' ॥
७. तए णं से दासचेडे सुंसुमाए दारियाए बालगाहे जाए यावि होत्था, सुंसुमं दारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हत्ता बहूहिं दारएहिं य दारियाहिं य डिभएहिं य डिभियाहिं य कुमारएहिं य कुमारियाहिं य सद्धिं अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ॥
८. तए णं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारयाण य दारियाण य डिभयाण य

१. ना० १।१।७ ।

३. धणवाले (क, ख) ।

२. ओ० सू० १ ।

४. होत्था सूमालपाणिपाया (ख, ग) ।

डिभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अप्पेगइयाणं खुल्लए' अवहरइ',
 •अप्पेगइयाणं वट्टए अवहरइ, अप्पेगइयाणं आडोलियाओ' अवहरइ,
 अप्पेगइयाणं तिदूसए अवहरइ, अप्पेगइयाणं पोत्तुल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाणं
 साडोल्लए अवहरइ, ° अप्पेगइयाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरइ, अप्पेगइए
 आउसइ अवहसइ निच्छोडेइ निब्भच्छेइ तज्जेइ तालेइ ॥

६. तए णं ते बह्वे दारगा य दारिया य डिभया य डिभिया य कुमारया य कुमारिया
 य रोयमाणा य कंदमाणा य सोयमाणा य तिप्पमाणा य विलवमाणा य साणं-
 साणं अम्मापिऊणं निवेदंति ॥

चिलायस्स गिहाओ निक्कासण-पदं

१०. तए णं तेसि बहूणं दारयाण य दारियाण य डिभयाण य डिभियाण य कुमारयाण
 य कुमारियाण य अम्मापियरो जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति,
 उवागच्छित्ता धणं सत्थवाहं बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटाणाहि य उवलभणाहि'
 य खिज्जमाणा य रुंटाणा य उवलंभमाणा' य धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं
 निवेदंति ॥
११. तए णं से धणे सत्थवाहे चिलायं दासचेडं एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो निवारेइ, नो
 चेव णं चिलाए दासचेडे उवरमइ ॥
१२. तए णं से चिलाए दासचेडे तेसि बहूणं दारयाण य दारियाण य डिभयाण
 य डिभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ'
 अप्पेगइयाणं वट्टए अवहरइ, अप्पेगइयाणं आडोलियाओ अवहरइ, अप्पेगइयाणं
 तिदूसए अवहरइ, अप्पेगइयाणं पोत्तुल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाणं साडोल्लए
 अवहरइ, अप्पेगइयाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरइ, अप्पेगइए आउसइ
 अवहसइ निच्छोडेइ निब्भच्छेइ तज्जेइ ° तालेइ ॥
१३. तए णं ते बह्वे दारगा य दारिया य डिभया य डिभिया य कुमारया य
 कुमारिया य रोयमाणा य' •कंदमाणा य सोयमाणा य तिप्पमाणा य
 विलवमाणा य साणं-साणं ° अम्मापिऊणं निवेदंति ॥
१४. तए णं ते आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चडिक्किया मिसिमिसेमाणा जेणेव धणे
 सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता बहूहिं खिज्जणाहि य' •रुंटाणाहि य

१. खल्लए (ग) ।

२. सं० पा० — एवं वट्टए आडोलियाओ तिदूसए
 पोत्तुल्लए साडोल्लए ।

३. अप्पोडियाओ (ख) आलोडियाओ (क्व) ।

४. उवलंभणियाहि (ख); उवलंभणायाहि (ग) ।

५. उवलभमाणा (क); उवलभमाणा (ख, ग) ।

६. सं० पा० — अवहरइ जाव तालेइ ।

७. सं० पा० — रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं ।

८. सं० पा० — खिज्जणाहि य जाव एयमट्ठ ।

उवलंभणाहि य खिज्जमाणा य हंटमाणा य उवलंभमाणा य धणस्स सत्थवाहस्स ° एयमट्ठं निवेदेति ॥

१५. तए णं से घणे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं दारियाणं डिभयाणं डिभियाणं कुमार-याणं कुमारियाणं अम्मापिऊण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणं चिलायं दासचेडं उच्चावयाहि आउसणाहि आउसइ उडंसइ निब्भच्छेइ निच्छोडेइ तज्जेइ उच्चावयाहि तालणाहि तालेइ साओ गिहाओ निच्छुभइ ॥

चिलायस्स दुब्बसण-पवत्ति-पवं

१६. तए णं से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूडे समाणे रायगिहे नयरे सिंघा-डग°-°तिग-चउक्क चच्चर-चउम्मुह-महापह° पहेसु देवकुत्तेसु य सभामु य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरएसु य पाणघरएसु य सुहंसुहेणं परिवट्ठइ° ॥
१७. तए णं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए° अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी 'मज्जप्पसंगी चोज्जप्पसंगी'° जूयप्पसंगी वेसप्पसंगी परदारप्पसंगी जाए यावि होत्था ॥

चोरपल्ली-पवं

१८. तए णं रायगिहस्स नयरस्स अद्वारसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था—विसम-गिरिकडग-कोलब°-सण्णिविट्ठा 'वंसो कलंक-पागार°-परिविखत्ता छिण्णसेल-विसमप्पवाय°-फरिहोवगूढा एगदुवारा अणेग-खंडी विदितजण-निग्गमप्पवेसा अम्भितरपाणिया सुदुल्लभजल-पेरंता सुवहुस्सवि कूवियवलस्स आगयस्स दुप्पहंसा यावि होत्था° ॥
१९. तत्थ णं सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए नामं चोरसेणावई परिवसई—अहम्मिए° °अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अहम्माणुए अहम्मपलोई अहम्मपलज्जणे अहम्मसील-समुदायारे अहम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणे विहरइ । हण-छिंद-भिद-वियत्ताए लोहियपाणी चंडे रुहे खुहे साहस्सिए उक्कंचण-वंचण-माया-नियडि-कवड-कूड-साइ-संपओग-बहुले निस्सीले निव्वए निग्गुणे निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे बहूणं

१. × (ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

३. परिवड्ठइ (घ) ।

४. अणोहट्टिए (ख); अणाहट्टिए (घ); अणोहट्टिए (वृ) ।

५. चोज्जप्पसंगी मंसप्पसंगी (घ) ।

६. कोडंब (ग) ।

७. वंशीकृतप्राकाराः (वृपा) ।

८. °प्पवेस (ख) ।

९. वाचनान्तरे पुनरेवं पठ्यते—जत्थ चउरंग-बलनिउत्तावि कुविय-बलाहय-महिय-पवर-वीरघाइय-विवडिय-चिच्चज्जयपडागा कीरंति (वृ) ।

१०. सं० पा०—अहम्मिए जाव अहम्मकेऊ ।

- दुप्पय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सरिसिवाणं घायाए वहाए उच्छायणयाए °
 अहम्मकेऊ समुट्ठिए बहुनगर-निग्गय-जसे सूरे दढप्पहारी साहसिए सहवेही ॥
२०. से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं ° पोरेवच्चं
 सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे °
 विहरइ ॥
२१. तए णं से विजए 'तक्कर-सेणावई' बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेय-
 गाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारोण य अणधारगाण य
 वालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अण्णेसिं च
 बहूणं छिण्ण-भिण्ण-वाहिराहयाणं कुडंगे यावि होत्था ॥
२२. तए णं से विजए चोरसेणावई' रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमं जणवयं बहूहि
 गामघाएहि य नगरघाएहि य गोगहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकुट्टणेहि य
 खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे-उवीलेमाणे विद्धंसेमाणे-विद्धंसेमाणे नित्थाणं °
 निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥

चिलायस्स चोरपल्ली-गमण-पदं

२३. तए णं से चिलाए दासचेडए रायगिहे बहूहि अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभि-
 संकीहि° य दागाभिसंकीहि य धणिएहि° य जूयकरेहि° य परब्भवमाणे-परब्भव-
 माणे रायगिहाओ नगराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विजयं चोरसेणावई उवसंपज्जित्ता णं
 विहरइ ॥
२४. तए णं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्ग-असिलट्टिग्गाहे
 जाए यावि होत्था । जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा°
 °नगरघायं वा गोगहणं वा बंदिग्गहणं वा° पंथकोट्टि वा काउं वच्चइ" ताहे
 वि य णं से चिलाए दासचेडे सुवहंपि कूवियवलं हय-महिय"°-पवर वीर-
 घाइय-विवडियचिध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसिं ° पडिसेहेइ, पडि-
 सेहेत्ता पुणरवि लद्धट्टे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लि हव्वमागच्छइ ॥

१. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ ।

२. तक्करे चोरसेणावइ (घ) ।

३. तक्करसेणावइ (क) ।

४. × (ग) ।

५. कोट्टणेहि (क) ।

६. निद्धाणं (क) ।

७. चोरा° (घ) ।

८. धणिएहि (ख) ।

९. जुइ° (ख, ग) ।

१०. सं० पा०—गामघायं वा जाव पंथकोट्टि ।

११. वयइ (घ) ।

१२. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहेइ ।

२५. तए णं से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्करं बहूओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ य चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ ॥

विजयस्स मच्चु-पदं

२६. तए णं से विजए चोरसेणावई अण्णया कयाइ कालधम्मणा संजुत्ते यावि होत्था ॥

२७. तए णं ताइं पंचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया-महया इट्ठी-सक्कार-समुदणं नीहरणं करंति, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करंति, करेत्ता' •कालेणं• विगयसोया जाया यावि होत्था ॥

चिलायस्स चोरसेणावइत्त-पदं

२८. तए णं ताइं पंचचोरसयाइं अण्णमण्णं सदावेत्ति, सदावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्मं देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मणा संजुत्ते । अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूओ चोरविज्जाओ य' •चोरमंते य चोरमायाओ य चोरनिगडीओ य • सिक्खाविए । तं सेयं खलु अम्मं देवाणु-प्पिया ! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचि-त्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणंति, पडिसुणत्ता चिलायं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचंति ॥

२९. तए णं से चिलाए चोरसेणावई जाए—अहम्मिए' •अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाइं अहम्माणुए अहम्मपलोइ अहम्मपलज्जणे अहम्मसीलसमुदायारे अहम्मेण चैव वित्ति कप्पेमाणे • विहरइ ॥

३०. तए णं से चिलाए चोरसेणावई चोरनायगे' •बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणघार-गाण य बालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अण्णेसि च बहूणं छिण्ण-भिण्ण-बाहिराहयाणं • कुडगे यावि होत्था ॥

३१. से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं •आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगतं आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥

३२. तए णं से चिलाए चोरसेणावई • रायगिहस्स नयरस्स दाहिणपुरत्थिमिल्लं जणवयं' •बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोगहणेहि य बंदिगहणेहि य

१. सं० पा०—करेत्ता जाव विगयसोया ।

२. सं० पा०—चोरविज्जाओ य जाव सिक्खा-विए ।

३. सं० पा०—अहम्मिए जाव विहरइ ।

४. सं० पा०—चोरनायगे जाव कुडगे ।

५. सं० पा०—एवं जहा विजओ तहेव सब्ब जाव रायगिहस्स ।

६. सं० पा०—जणवयं जाव नित्थाणं ।

पंथकुट्टणेहि य खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे-उवीलेमाणे विद्धंसेमाणे-विद्धंसेमाणे °
नित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥

चिलायस्स घणस्स गिहे चोरिय-पदं

३३. तए णं से चिलाए चोरसेणावई अण्णया कयाइ विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उक्खडावेत्ता ते पंच चोरसए आमंतेइ तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे भोयणमंडवंसि तेहि पंचहि चोरसएहि सद्धि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं सुरं च' °मज्जं चं मंसं च सीधुं च ° पसन्नं च आसाएमाणे विसाएमाणे परि-भाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ, जिमियभुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विपुलेणं धूव-पुप्फ-गंध-मल्लालंकारेणं' सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! रायगिहे नयरे घणे नामं सत्थवाहे अइडे । तस्स णं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजाइया संसुमा नाम दारिया'—अहीणा जाव' सुरूवा । तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! घणस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुपामो । तुवभं विपुले घण-कणग'-°रयण-मणि-मोत्तिय-संख °-सिल-प्पवाले ममं संसुमा दारिया ॥

३४. तए णं ते पंच चोरसया चिलायस्स [एयमद्वं ?] पडिसुणेंति ॥

३५. तए णं ते चिलाए चोरसेणावई तेहि पंचहि चोरसएहि सद्धि अल्लं' चम्मं दुरुहइ, दुरुहिता पच्चावरण्ह'-कालसमयंसि पंचहि चोरसएहि सद्धि सण्णद्ध'-°बद्ध-वम्मिय-कवए उप्पीलिय-सरासणपट्टिए पिणद्ध-गेविज्जे आविद्ध-विमल-वरचिघपट्टे ° गहियाउह-पहरणे माइय-गोमुहिएहि फलएहि, निक्किट्ठाहि असिलट्टीहि', अंसगएहि' तोणेहि, सज्जीवेहि धणूहि, समुक्खित्तेहि सरेहि, समुल्लालियाहि दाहाहि', ओसारियाहि ऊरुघंटियाहि, छिप्पतूरेहि' वज्जमाणेहि महया-महया उक्किट्ट-सीहनाय'-°वोल-कलकलरवेणं पक्खुभिय-महा °समुद-रवभूयं पिव करेमाणा सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिकखमंति, पडिनिकखमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता रायगिहस्स अदूरसामंते

१. सं० पा०—सुरं च जाव पसन्नं ।

२. द्रष्टव्यम्—१।७।६ सूत्रम् ।

३. दारिया होत्या (क, ख, ग, घ) ।

४. ना० १।१।१७ ।

५. सं० पा० कणग जाव सिलपावाले । अस्या-

ध्ययनस्य ३८ सूत्रे 'कणग जाव सावएज्ज'

इति पाठोस्ति । अत्रापि तथैव युज्यते, किन्तु

संक्षेपीकरणे संभवतः पदभिन्नता जाता ।

६. अल्ल (ख, ग, घ) ।

७. पुव्वावरण्ह (ग, घ) ।

८. सं० पा०—मण्णद्ध जाव गहिया० ।

९. असोहि (क); असिलट्टेहि (ख) ।

१०. अंसगएहि (क); अंस गएहि (ग) ।

११. दावाहि (क) एतत् प्रहरणं बंगभाषायां 'दाव' इति उच्यते ।

१२. छिप्पंतरेहि (क); छिप्पत्तरेहि (ग) ।

१३. सं० पा०—सीहनाय जाव समुदरवभूयं ।

एगं महं गहणं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता दिवसं खवेमाणे चिट्ठंति ॥

३६. तए णं से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्त-कालसमयंसि 'निसंत-पडिनिसंतंसि' पंचहिं चोरसएहिं सद्धि माइय-गोमुहिण्हिं फलएहिं जाव' मूइयाहिं ऊरुषंटियाहिं जेणेव रायगिहे नयरे पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उदगवत्थि परा-मुसइ आयते चोक्खे परमसुइभूए तालुग्घाडणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहेत्ता रायगिहस्स दुवारकवाडे उदणं अच्छोडेइ, अच्छोडेत्ता कवाडं विहाडेइ, विहा-डेत्ता रायगिहं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणे-उग्घोसेमाणे एवं वयासी—एवं खलु अहं देवानुप्पिया ! चिलाए नामं चोर-सेणावई पंचहिं चोरसएहिं सद्धि सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इहं हव्वमागए घणस्स सत्थवाहस्स गिहं घाउकामे । तं जे णं नवियाए माउयाए दुद्धं पाउकामे, से णं निगच्छउ त्ति कट्ठु जेणेव घणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता घणस्स गिहं विहाडेइ ॥

३७. तए णं से घणे चिलाएणं चोरमेणावइणा पंचहिं चोरसएहिं सद्धि गिहं घाइज्ज-माणं पासइ, पासित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए पंचहिं पुत्तेहिं सद्धि एगंतं अव्वकमइ ॥

३८. तए णं से चिलाए चोरमेणावई घणस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ, घाएत्ता सुबहुं घण-कणगं-•रयण-मणि-मोत्तिय - संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार°-साव-एज्जं सुसुमं च दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिनिक्खमई, पडिनिक्ख-मित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

नगरगुत्तिएहिं चोरनिग्गह-पवं

३९. तए णं से घणे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबहुं घण-कणगं सुसुमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं गहाय जेणेव नगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवानुप्पिया ! चिलाए चारसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इहं हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धि मम गिहं घाएत्ता सुबहुं घण-कणगं सुसुमं च दारियं गहाय •रायगिहाओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव ° पडिगए । तं इच्छामो

१. निसण्णपडिनिसण्णंसि (क) ।

२. ना० १।१८।३५ ।

३. सं० पा०—कणग जाव सावएज्जं ।

४. असौ पाठः ३८ सूत्रस्य संक्षेपोस्ति ।

५. चोरसेणावई ५ (ख, ग) ।

६. असौ पाठः ३८ सूत्रस्य संक्षेपोस्ति ।

७. सं० पा०—गहाय जाव पडिगए ।

णं देवानुप्पिया ! सुंसुमाए दारियाए कूवं गमित्तए । तुब्भं णं देवानुप्पिया !
से विपुले घण-कणगे, ममं सुंसुमा दारिया ॥

४०. तए णं ते नगरगुत्तिया घणस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सण्णद्ध-बद्ध-
वम्मिय-कवया जाव' गहियाउहपहरणा महया-महया उक्किट्ठ'-०सीहनाय-बोल-
कलकलरवेणं पक्खुभिय-महा०समुद्-रवभूयं पिव करेमाणा रायगिहाओ
निगगच्छंति, निगगच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरसेणावई तेणेव उवागच्छंति,
उवागच्छित्ता चिलाएणं चोरसेणावइणा सद्धि संपलगा यावि होत्था ॥
४१. तए णं ते नगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावइं हय-महिय'-०पवरवीर-घाइय-
विवडियचिध-घय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसिं० पडिसेहेंति ॥
४२. तए णं ते पंच चोरसया नगरगुत्तिएहिं हय-महिय'-०पवरवीर-घाइय-विवडिय-
चिध-घय-पडागा किच्छोवगयपाणा दिसांदिसिं० पडिसेहिया समाणा तं विपुलं
घण-कणगं विच्छड्डुमाणा य विप्पकिरमाणा य सव्वओ समंता विप्पलाइत्था ॥
४३. तए णं ते नगरगुत्तिया तं विपुलं घण-कणगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव रायगिहे
नगरे तेणेव उवागच्छंति ॥

चिलायस्स चोरपल्लीतो पलायण-पदं

४४. तए णं से चिलाए तं चोरसेल्लं तेहिं नगरगुत्तिएहिं हय-महिय-पवर'-०वीर-
घाइय-विवडियचिध-घय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसिं पडिसेहियं
[पासित्ता ?]० भीए तत्थे' सुंसुमं दारियं गहाय एगं महं अगामियं' दीहमद्धं
अडविं अणुप्पविट्ठे ॥
४५. तए णं से घणे सत्थवाहे सुंसुमं दारियं चिलाएणं अडवीमुहिं' अवहीरमाणिं
पासित्ता णं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पच्छट्ठे सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवए' चिलायस्स
पयमग्गविहिं 'अणुगच्छमाणे अभिगज्जंते' हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जे-
माणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ ॥
४६. तए णं से चिलाए तं घणं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पच्छट्ठं सण्णद्ध-बद्ध-
वम्मिय-कवयं' समणुगच्छमाणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले अवीरिए
अपुरिसक्कारपरक्कमे जाहे नो संचाएइ सुंसुमं दारियं निव्वाहित्तए ताहे संते

१. ना० १।१८।३५ ।

२. सं० पा०—उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयं ।

३. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहेंति ।

४. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहिया ।

५. सं० पा०—पवर जाव भीए ।

६. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३७ सूत्रम् ।

७. आगामियं (ख, ग, घ) ।

८. अडवीमुहं (घ) ।

९. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३५ सूत्रम् ।

१०. अभिगज्जंते अणुगिज्जमाणे (ख, ग) ।

११. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३५ सूत्रम् ।

तंते परितंते' नीलुप्पल'-●गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं° असि परामुसइ, परामुसित्ता सुसुमाए दारियाए उत्तमंगं छिदइ, छिदित्ता तं गहाय तं अगामियं' अडवि अणुप्पविट्ठे ॥

४७. तए णं से चिलाए तीमे अगामियाए अडवीए तण्हाए [छुहाए ?] अभिभूए समाणे पम्हट्टु-दिसाभाए सीहगुहं चोरपल्लि असंपत्ते अंतरा चेव कालगाए ॥

निगमण-पदं

४८. एवामेव समणाउसो' ! ●जो अम्हं निगंथो वा निगंथो वा आयरिय-उवज्झा-याणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स खेलासवस्स सुक्कासवस्स सोणिया-सवस्स' ●दुरुय-उस्सास-निस्सासस्स दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णस्स उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सांणियसंभवस्स अधुवस्स अणितियस्स असासयस्स सडण-पडण-विद्धसणधम्मस्स पच्छा पुरं च णं अवस्स-विप्पजहणिज्जस्स° वण्णहेउं वा' ●रूवहेउं वा वलहेउं वा विसयहेउं वा आहारं° आहारेइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणोणं बहूणं सावयाणं बहूणं साविद्याणं य हीलणिज्जे जाव' चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरि-यट्ठिस्सइ—जहा व से चिलाए तक्करे ॥

घणस्स सुसुमाकए कंदण-पदं

४९. तए णं से घणे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं [सद्धि ?] अप्पच्छट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणे-परिधाडेमाणे संते तंते परितंते नो संचाएइ चिलायं चोरसेणावइं साहत्थि गिण्हित्ताए । से णं तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसुमा चिलाएणं जीवियाओ ववरो-विया' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुसुमं दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ, पासित्ता परसुनियत्ते व्व चंपगपायवे° ●निव्वत्तमहे व्व इंदलट्ठी विमुक्क-संधिबंधणे धरणितलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति पडिए° ॥

५०. तए णं से घणे सत्थवाहे [पंचहिं पुत्तेहिं सद्धि ?] अप्पच्छट्ठे आसत्थे कूवमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया-महया सहेणं कुहुकुहुस्स परुन्ने सुचिरकालं वाहप्पमोक्खं" करेइ ॥

१. परितंते (ख, ग) ।

२. सं० पा०—नीलुप्पल° ।

३. आगामियं (ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—समणाउसो जाव पव्वइए ।

५. सं० पा०—सोणियासवस्स जाव विद्धसण-

६. सं० पा०—वण्णहेउं वा जाव आहारेइ ।

७. ना० १।३।२४ ।

८. ववरोविएल्लिया (ग, घ) ।

९. सं० पा०—चंपगपायवे° ।

१०. बाह्मोक्ख (क, ग, घ) ।

धम्मस्स ।

घणेणं अडवि-संघणट्ठं सुया-मंससोणियाहार-पढं

५१. तए णं से घणे सत्थवाहे पंचहि पुत्तेहि [सद्धि ?] अप्पच्छट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणे' तण्हाए छुहाए य परब्भाहते' समाणे तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणे' संते तंते परित्तंते निव्विण्णे तीसे अगामियाए अडवीए' उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुंसुमा जीवियाओ ववरोविएल्लिया' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेट्ठं पुत्तं घणं' सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! सुंसुमाए दारियाए अट्टाए चिलायं तक्करं सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणा नो चेव णं उदगं आसादेमो । तए णं उदगं अणासा-एमाणा नो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए । तण्णं तुब्भे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मम मंसं च सोणियं च आहारेह, तेणं आहारेणं अवथद्धा' समाणा तओ पच्छा इमं अगामियं अडवि नित्थरिहिह', रायगिहं च संपावेहिह', मित्त-नाइ'-●नियग-सयण-संबंधि-परियणं ° अभिसमागच्छिहिह', अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ॥

५२. तए णं से जेट्ठे पुत्ते घणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे घणं सत्थवाहं एवं वयासी—तुब्भे णं ताओ ! अम्हं पिया गुरुजणया देवयभूया ठवका पइट्ठवका संरक्खगा संगोवगा । तं कहणं अम्हे ताओ ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो ? तं तुब्भे णं ताओ ! 'ममं जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, अगामियं'¹¹ अडवि नित्थरिहिह', °रायगिहं च संपावेहिह, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं अभिसमा-गच्छिहिह °, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ॥

१. परिधावेमाणे (घ) ।

दोषान् 'घणे' इति जातमिति संभाव्यते ।

२. परिब्भमने (क); परब्भने (ख, घ); परब्भए (घ) । द्रष्टव्यम्—१।१।१८४ ।

७. अववद्धा (ख) ।

८. नित्थरिहह (क); नित्थरेहिह (ग) ।

३. करेइ (क, ख, ग, घ) !

९. संपावेहह (क) ।

४. × (क, ख, ग); अडवीए उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणे नो चेव णं उदगं आसाएइ तए णं (घ) ।

१०. सं० पा०—नाइ ° ।

११. अभिसमागच्छिहह (क, ख, घ) ।

५. ववरोविया (घ) ।

१२. चिन्हाङ्कितपाठः ५१ सूत्रात् किञ्चित् संक्षिप्तोऽस्ति ।

६. घणे (क, ख, ग, घ); यद्यपि सर्वासु प्रतिषु 'घणे' इति पाठः उपलभ्यते, परं ज्येष्ठपुत्रस्य विशेषणत्वेन 'घणं' इत्येव उपयुज्यते । लिपि-

१३. नित्थरेह (क); नित्थरह (ख, ग) । सं० पा०—तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स ।

५३. तए णं धणं सत्थवाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी—मा णं ताओ अम्हे जेट्टं भायरं गुरुदेवयं जीवियाओ ववरोवेमो, तस्स णं मंसं च सोणियं च आहारेमो । तं तुब्भे णं ताओ ! ममं जीवियाओ ववरोवेह', *मंसं च सोणियं च आहारेह, अगामियं अडवि नित्थरिहिह, रायगिह च संपावेहिह, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य ° आभागी भविस्सह । एवं जाव पचमे पुत्ते ॥
५४. तए णं से धणे सत्थवाहे पंचपुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता ते पंचपुत्ते एवं वयासी—मा णं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो । एस णं सुसुमाए दारियाए सरीरे निप्पाणे' *निच्चेट्टे ° जीवविप्पजडे । त सेयं खलु पुत्ता ! अम्हं सुसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेत्ताए । तए णं अम्हे तेणं आहारेणं अवथद्धा समाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो ॥
५५. तए णं ते पंचपुत्ता धणेणं सत्थवाहेण एवं वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति ॥
५६. तए णं धणे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करेत्ता सरण करेइ, करेत्ता सरणं अरणिं महेइ, महेत्ता अग्गि पाडेइ, पाडेत्ता अग्गि संधुक्केइ' संधुक्केत्ता दारुयाइं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गि पज्जालेइ, सुसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेइ । तेणं आहारेणं अवथद्धा समाणा रायगिहं नयरं संपत्ता मित्त-नाइ'-*नियग-सयण-संबंधि-परियणं ° अभिसमण्णागया, तस्स य विउलस्स धण-कणग-रयण'-*मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जस्स ° आभागी जाया' ॥
५७. तए णं से धणे सत्थवाहे सुसुमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं' *मयकिच्चाइं करेइ, करेत्ता कालेणं ° विगयसोए जाए यावि होत्था ॥
५८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए समोसडे ॥
५९. तए णं धणे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं सोच्चा पव्वइए । एककारसंगवी । मासियाए संलहणाए सोहम्मे कप्पे उववण्णे । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निगमण-पदं

६०. जहा वि य णं जंबू ! धणेणं सत्थवाहेणं नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो

१. सं० पा०—ववरोवेह जाव आभागी ।

५. सं० पा०—रयण जाव आभागी ।

२. सं० पा०—निप्पाणे जाव जीवविप्पजडे ।

६. जाया यावि होत्था (ख, ग) ।

३. संधुक्केइ २ (क) ।

७. सं० पा०—लोइयाइं जाव विगयसोए ।

४. सं० पा०—नाइ ° ।

बलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुंसुमाए दारियाए मंससोणिए आहारिए, नन्नत्थ' एगाए रायगिह' संपावणट्टयाए ॥

६१. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा निगंथी वा' •आयरिय-उवज्झयाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे ° इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स [खेलासवस्स ?] सुक्कासवस्स सोणियासवस्स' •दुरुय-उस्सास-निस्सासस्स दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णस्स उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणियसंभवस्स अधुवस्स' अणितियस्स असासयस्स सडण-पडण-विद्धंसणधम्मस्स पच्छा पुरं च णं ° अवस्सविप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा आहारं आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमण-संपावणट्टयाए, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे जाव' चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ — जहा व से सपुत्ते धणे सत्थवाहे ॥
६२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सो चिलाइपुत्तो सुंसुमगिद्धो अकज्ज-पडिबद्धो ।
 धण-पारद्धो पत्तो, महाडवि वसण-सयकलियं ॥१॥
 तह जीवो विसय-मुहे, लुद्धो काऊण पावकिरियाओ ।
 कम्मवसेणं पावइ, भवाडवीए महादुक्खं ॥२॥
 धणसेट्ठी विव गुरुणो, पुत्ता इव साहवो भवो अडवी ।
 सुयमंसमिवाहारो, रायगिहं इह सिवं नेयं ॥३॥
 जह अडवि-नियर-नित्थरण-पावणत्थं तएहिं सुयमंसं ।
 भुत्तं तहेह साहू, गुरुण आणाइ आहारं ॥४॥
 भव-लंघण-सिव-साहणहेउं भुंजंति ण गेहीए ।
 वण्ण-वल-रूव-हेउं, च भावियप्पा महासत्ता ॥५॥

—

१. अणत्थ (ख, ग) ।

२. रायगिहं (क्व) ।

३. सं० पा०—निगंथी वा ।

४. सं० पा०—सोणियासवस्स जाव अवस्स ° ।

५. ना० १।२।७६ ।

६. ना० १।१।७ ।

एगूणवीसइमं अज्भयणं

पुंडरीए

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टारसमस्स नायज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एगूणवीसइमस्स णं भंते ! नायज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे पुव्वविदेहे, सीयाए महानईए उत्तरिल्ले कूले, नीलवंतस्स [वासहरपव्वयस्स ?] दाहिणेणं, उत्तरिल्लस्स सीयामुह्वणसंडस्स पच्चत्थिमेणं, एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं पुक्खलावई नामं विजए पण्णत्ते ॥
३. तत्थ णं पुंडरीगिणी' नामं रायहाणी पण्णत्ता—नवजोयणवित्थिणा दुवांस जोयणायामा जाव' पच्चक्खं देवलोगभूया पासईया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा ॥
४. तीसे णं पुंडरीगिणीए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए नलिणिवणे नामं उज्जाणे ॥
५. तत्थ णं पुंडरीगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था ॥
६. तस्स णं पउमावई नामं देवी होत्था ॥
७. तस्स णं महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, तं जहा—पुंडरीए य कंडरीए य—सुकुमालपाणिपाया' । पुंडरीए जुवराया ॥

कंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं । महापउमे राया निग्गए । धम्मं सोच्चा

१. ना० १।१।७ ।

३. ना० १।५।२ ।

२. पुंडरिगिणी (क, ख, ग) ।

४. पू०—ओ० सू० १४३ ।

पुंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए । पुंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया । महा-
पउमे अणगारे चोदसपुव्वाइं अहिज्जइ ॥

६. तए णं थेरा वहिया जणवयविहारं विहरंति ॥

१०. तए णं से महापउमे बहूणि वासाणि सामण्णपरियाणं पाउणित्ता जाव' सिद्धे ॥

११. तए णं थेरा अण्णया कयाइ पुणरवि पुंडरीगिणीए' रायहाणीए नलिण [णि ?]
वणे उज्जाणे समोसढा । पुंडरीए राया निग्गए । कंडरीए महाजणसहं सोच्चा
जहा महाबलो जाव' पज्जुवासइ । थेरा धम्मं परिकहेति । पुंडरीए समणोवासए
जाए जाव' पडिगए ॥

१२. तए णं कंडरीए' •थेराणं अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ,
उट्ठेत्ता थेरे तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता
नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गथं पावयणं जाव'° से जहेयं
तुब्भे वयह । जं नवरं—पुंडरीयं रायं आपुच्छामि' । •तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं
अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया !

१३. तए णं से कंडरीए' थेरे वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ
पडिनिक्खमइ, तमेव चाउग्घटं आसरहं दुरुहइ' •महयाभड-चडगर-पहकरेण
पुंडरीगिणीए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता चाउग्घटाओ आसरहाओ° पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव
पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'°परिग्गहियं दसणहं
सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! माए
थेराणं अंतिए धम्मे निसंते, से'° •वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ।
तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे थेराणं अंतिए
मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

१४. तए णं से पुंडरीए राया कंडरीयं एवं वयासी—मा णं तुमं भाउया ! इयाणि

१. ना० १।५।८४ ।

२. पुंडरगिणीए (ग) ।

३. अण० ११।१६४-१६६ ।

४. उवा० १।५२ ।

५. सं० पा०—कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेत्ता
जाव से जहेयं ।

६. ना० १।१।१०१ ।

७. सं० पा०—आपुच्छामि तए णं जाव पव्व-
यामि ।

८. कंडरीए जाव [क, ख, ग, घ] ।

९. सं० पा०—दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ ।

१०. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

११. सं० पा०—से धम्मे अभिरुइए । तए णं
देवा जाव पव्वइत्तए ।

मुंडे' •भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं • पव्वयाहि । 'अहं णं' तुमं महाराया-
भिसेएणं' अभिसिचामि ॥

१५. तए णं से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ' •नो परियाणाइ' •
तुसिणीए संचिट्ठइ ॥
१६. तए णं से पुंडरीए राया कंडरीयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी'—•मा णं तुमं
भाउया ! इयाणि मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयाहि । अहं णं
तुमं महारायाभिसेएणं अभिसिचामि ॥
१७. तए णं से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ' •
तुसिणीए संचिट्ठइ ॥
१८. तए णं पुंडरीए कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएइ वहुहिं आघवणाहि य पणव-
णाहि य सणवणाहि य विणवणाहि य आघवित्तए वा पणवित्तए वा सण-
वित्तए वा विणवित्तए वा ताहे अकामए चेव एयमट्ठं अणुमन्नित्था जाव'
निक्खमणाभिसेएणं अभिसिचइ जाव' •थेराणं सीसभिव्खं दलयइ । पव्वइए ।
अणगारे जाए । एक्कारसंगवी ॥
१९. तए णं थेरा भगवंतो अण्णया कयाइ पुंडरीगिणीओ नयरीओ नलिणिवणाओ
उज्जाणाओ पडिनिक्खमंति, वहिया जणययविहारं विहरंति ॥

कंडरीयस्स वेयणा-पदं

२०. तए णं तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य '•तुच्छेहि य
लूहेहि य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालाइकंतेहि य पमा-
णाइकंतेहि य निच्चं पाणभांयणेहि य पयइसुकुमालस्स सुहोचियस्स सरीरगंसि
वेयणा पाउढभूया—उज्जला विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा दुरहियासा ।
पित्तज्जर-परिगयसरीरे' • दाहवक्कंतीए' यावि विहरइ ॥
२१. तए णं थेरा अण्णया कयाइ जेणेव पोंडरीगिणी नयरी तेणेव उवागच्छंति,
उवागच्छित्ता नलिणीवणे समोसढा । पुंडरीए निग्गए । धम्मं सुणेइ ॥

कंडरीयस्स तिगिच्छा-पदं

२२. तए णं पुंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ,

१. सं० पा०—मुंडे जाव पव्वयाहि ।

७. ना० १।५।२८ ।

२. अहण्णं (ग) ।

८. ना० १।५।३० ।

३. महयामहया रायाभिसेएणं (ख, ग) ।

९. सं० पा०—जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए ।

४. सं० पा०—आढाइ जाव तुसिणीए ।

१०. शेलकाध्ययने 'कंडु-दाह-पित्तज्जर-परिगय-
सरीरे' इति पाठो लभ्यते ।

५. द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम् ।

६. सं० पा०—वयासी जाव तुसिणीए ।

- उवागच्छित्ता कंडरीयं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोगं पासइ, पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते ! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज'-भत्त-पाणेहिं ° तेगिच्छं आउंटामि । तं तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह ॥
२३. तए णं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स [एयमट्ठं ?] पडिसुणेंति', °पडिसुणेंत्ता जेणेव पुंडरीयस्स रण्णो जाणसाला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता फासु-एसणिज्जं पीढ-फल-सेज्जा-संधारणं ° उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ॥
२४. तए णं पुंडरीए राया °तेगिच्छिए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स फासु-एसणिज्जेणं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेणं तेगिच्छं आउट्टेह ॥
२५. तए णं ते तेगिच्छिया पुंडरीएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्टुट्टा कंडरीयस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति, मज्जपाणणं च से उवदिसंति ॥
२६. तए णं तस्स कंडरीयस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहिं मज्जपाणएण य से रोगायंके उवसंते यावि होत्था—हट्टे बलियसरीरे° जाए ववगयरोगायंके ° ॥

कंडरीयस्स पमत्तविहार-पदं

२७. तए णं थेरा भगवंतो 'पुंडरीयं रायं आपुच्छंति, आपुच्छित्ता'° बहिया जणवय-विहारं विहरंति ॥
२८. तए णं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुणंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि मुच्छिए गिद्धे गट्टिए अज्जभोववण्णे नो संचाएइ पुंडरीयं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं° °जणवयविहारेणं ° विहरित्तए तत्थेव ओसन्ने जाए ॥

पुंडरीएण पडिबोह-पदं

२९. तए णं से पुंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे ण्हाए अंतेउर-परियाल'-संपरिवुडे जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवाच्छइ, उवागच्छित्ता

१. अहापत्तेहि (ख); अहावत्तेहि (ग); अहा-पवित्तेहि (घ) ।
 २. सं० पा०—भेसज्जेहिं जाव तेगिच्छं ।
 ३. सं० पा०—पडिसुणेंति जाव उवसंपज्जित्ता ।
 ४. सं० पा०—जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए ।
 ५. १।५।११६ सूत्रे 'गल्लसरीरे' इति पाठोस्ति ।
 ६. पुंडरीयं पुच्छंति २ (ख, ग) ।
 ७. सं० पा०—अबभुज्जएणं जाव विहरित्तए ।
 ८. परियाल सद्धि (क, घ) ।

कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी—धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे । सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले जे णं तुमं रज्जं च' •रट्ठं च कोसं च कोट्टागारं च वलं च वाहणं च पुरं च° अंतेउरं च विच्छहेत्ता विगोवइत्ता,° •दाणं च दाइयाणं परिभायइत्ता, मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए, अहण्णं अधन्ने अकयत्थे अकयपुण्णे अकयलक्खणे रज्जे य' •रट्ठे य कोसे य कोट्टागारे य वले य वाहणे य पुरे य° अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए' •गिद्धे गट्ठिए° अज्झोववण्णे नो संचाएमि जाव° पव्वइत्ताए । तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया' ! •कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे° । सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले ॥

३०. तए णं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं नो आढाइ' •नो परियाणाइ' तुसिणीए° संचिट्ठइ ॥
३१. तए णं से कंडराए अणगारे पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे-अकामए अवसवसे° लज्जाए गारवण य पुंडरीयं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहि सद्धिं वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कंडरीयस्स पव्वज्जा-परिच्चाय-पदं

३२. तए णं से कंडरीए थेरेहि सद्धिं कंचि कालं उगंउग्गेणं विहरित्ता तओ पच्छा समणत्तण-परितंतं समणत्तण-निव्विण्णे समणत्तण-निव्वभच्छिए समणगुण-मुक्क-जोगी थेराणं अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसवकइ, पच्चोसविकत्ता जेणेव पुंडरीगिणी नयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवणियाए असांगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि निसीयइ, नीसी-इत्ता आह्यमणसंकप्पे'° •करतलपत्तहत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° भियायमाणे संचिट्ठइ ॥
३३. तए णं तस्स पोंडरीयस्स अम्मघाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि ओह्यमणसंकप्पं जाव'° भियायमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव पुंडरीए राया

१. सं० पा०— रज्जं च जाव अंतेउरं ।

२. सं० पा०— विगोवइत्ता जाव पव्वइए ।

३. सं० पा०— रज्जे य जाव अंतेउरे ।

४. सं० पा०— मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे ।

५. राय० सू० ६६५ ।

६. सं० पा०— देवाणुप्पिया जाव सुलद्धे ।

७. सं० पा०— आढाइ जाव संचिट्ठइ ।

८. द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम् ।

९. अवसवसे (ग) ।

१०. सं० पा०— ओह्यमणसंकप्पे जाव भियाय-माणे ।

११. ना० १।१६।३२ ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुंडरीय रायं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तव पियभाउए' कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवर-पायवस्स अहे पुढविसिलापट्टे ओह्यमणसंकप्पे जाव भियायइ ॥

३४. तए णं से पुंडरीए अम्मघाईए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता अंतेउर-परियालसंपरिवडे जेणेव असोगवणिया' *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ° कंडरीयं अणगारं तिक्खुत्तो' *आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ° एवं वयासी—धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया' ! *कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले जाव' अगाराओ अणगारियं ° पव्वइए, अहं णं अधन्ने अकयत्थे अकयपुण्णे अकयलक्खणे जाव' नो संचाएमि' पव्वइत्तए । तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव' सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले ॥

३५. तए णं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ । दोच्चंपि तच्चंपि' *पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाण तुसिणीए ° संचिट्ठइ ॥

३६. तए णं पुंडरीए कंडरीयं एवं वयासी—अट्ठो भंते" ! भोगेहि ? हंता ! अट्ठो ॥

३७. तए णं से पुंडरीए राया कोडुंवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थं" *महग्गं महरिहं विउलं ° रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव" रायाभिसेएणं अभिसिचति ॥

पुंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं

३८. तए णं से पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—कप्पइ मे थेरे वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं तओ पच्छा आहारं आहारित्तए त्ति कट्ठइ इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता णं पुंडरीगिणीए" पडिणिक्खमइ, पडि-णिक्खमित्ता पुव्वाणुपुर्व्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भग-वंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

१. पिउभाउए (ख, ग); भाउए (घ) ।

२. सं० पा०—असोगवणिया जाव कंडरीयं ।

३. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव एवं ।

४. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव पव्वतिए ।

५, ६. ना० १।१६।२६ ।

७. द्रष्टव्यम्—२६ सूत्रम् ।

८. ना० १।१६।२६ ।

९. सं० पा०—तच्चं पि जाव संचिट्ठइ ।

१०. हंते (ग) ।

११. सं० पा०—महत्थं जाव रायाभिसेयं ।

१२. ना० १।१।१७, ११८ ।

१३. पोंडरिगिणीए (क, ख) ।

कंडरीयस्स मक्खु-पदं

३९. तए णं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समानस्स अइजागरएण य अइभोय'-प्पसंगेण य से आहारे नो सम्मं परिणमइ' ॥
४०. तए णं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्ता-वरत्तकालसमयंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला विउला' *कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा° दुरहियासा । पित्तज्जर-परिगय-सरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरइ ॥
४१. तए णं से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य' *माणुस्सएमु य कामभोगेमु मुच्छिए गिद्धे गढिए° अण्णोववण्णे अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवसवमे कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कांसकालट्टिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

निगमण-पदं

४२. एवामेव समणाउसो' ! *जो अम्हं निगंथो वा निगंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाने पुणरवि माणुस्सए कामभोए आसाएइ' *पत्थयइ पीहेइ अभिलसइ, से णं इह भवे चेव वट्ठणं समणाण वट्ठणं समणीणं वट्ठणं सावयाणं वट्ठणं साविआण य होलणिज्जे निदणिज्जे खिसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे, पगलोए वि य णं आगच्छइ वट्ठणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य तालणाणि य जाव' चाउरंतं मंसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो° अणुपरियट्टिस्सइ जहा व मे कंडरीए राया ॥

पुंडरीयस्स आराहणा-पदं

४३. तए णं से पुंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते बंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चंवि चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए भाण भियाइ, तइयाए पोरिसीए जाव' उच्च-नीय-मज्झि-माइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोयणं पडिगाहेइ, पडिगाहेत्ता अहापज्जत्तमिति कट्ठु पडिनियत्तइ, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदसेइ, पडिदसेत्ता थेरेहि भगवतेहि अण्णुण्णाए समाने अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अण्णोववण्णे

१. भोय (ख, ग) । ५. सं० पा०—समणाउसो जाव पव्वइए ।
 २. परिणए (ख, ग, घ) । ६. सं० पा०—आसाएइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ ।
 ३. सं० पा०—विउला पगाढा जाव दुरहियासा । ७. ना०—१।३।२४ ।
 ४. सं० पा०—अंतेउरे य जाव अण्णोववण्णे । ८. ना० १।१६।१३ ।

- बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं' तं फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं सरीरकोट्टुगंसि पक्खिवइ ॥
४४. तए णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइक्कतं अरसं विरसं सीयलुक्खं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे नो सम्मं परिणमइ ॥
४५. तए णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया -उज्जला' *विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा° दुरहियासा । पित्तज्जर-परिगय-सरीरे दाहवक्कतीए विहरइ ॥
४६. तए णं से पुंडरीए अणगारे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे करयल'°परिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु° एवं वयासी — नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव' सिद्धिगइणामधेज्ज ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं । पुंवि पि य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव' बहिद्धादाणे' पच्चक्खाए', *इयाणि पि णं अहं तेसिं चेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव बहिद्धादाणं पच्चक्खामि । सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । जपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं तं पि य णं चरिमेहिं उस्सास-नीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्ठु° आलोइय-पडिक्कते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठुसिद्धे उववण्णे । तस्मा अणंतं उव्वट्ठित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ' *बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ° सव्वदुक्खाणमतं काहिइ ॥

निगमण-पदं

४७. एवामेव समणाउसो' ! *जो अम्हं निगंथो वा निगंथो वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं

१. अत्तणेणं (ख) ।

२. सं० पा० —उज्जला जाव दुरहियासा ।

३. सं० पा० —करयल जाव एवं ।

४. ओ० सू० २१ ।

५. ना० १।५।५६ ।

६. मिच्छादंसणसल्ले (क, ख, ग, घ) अस्या-

ध्ययनस्य ३८, ४३ सूत्रे 'चाउज्जामं धम्मं

पडिन्नज्जइ' इति पाठोस्ति । उपलब्धपाठश्च

अस्य विसंवादी वतंते । मेघकुमाराधिकारात् पूरितोसौ पाठः तेनात्रापि विसंवादो जातः ।

द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

७. सं० पा०—पच्चक्खाए जाव आलोइय० ।

चिह्नान्कितः पाठः १।१।२०६ सूत्रेण पूरितः ।

८. पू०—ना० १।१।२०६ ।

९. सं० पा० —सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाण ।

१०. सं० पा०—समणाउसो जाव पव्वइए ।

कामभोगेहि नो सज्जइ नो रज्जइ' नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोवज्झइ °
नो विप्पडिघायमावज्जइ', से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं
बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाणं य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे [नमंसणिज्जे ?]
पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं [विण-
एणं ?] पज्जुवासणिज्जे' भवइ,
परलोए वि य णं नो आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य
तालणाणि य जाव' चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ—जहा व से पुंडरीए
अणगारे ॥

निक्खेव-पवं

४८. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं
जाव' सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे
पण्णत्ते ॥

वृत्तिकृता समुद्धता निगमनगाथा—

वाससहस्संपि जइ, काऊणं संजमं सुविउलंपि ।
अंते किलिट्ठभावो, न विसुज्झइ कंडरीउ व्व ॥१॥
अप्पेण वि कालेणं, केइ जहा गहिय-सील-सामण्णा ।
साहंति नियय-कज्जं, पुंडरीय-महारिसि व्व जहा ॥२॥

४९. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स
पढमस्स सुयखंधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।

परिसेसो

एयस्स' सुयखंधस्स एगूणवीसं अज्झयणाणि' एक्कासरगाणि' एगूणवीसाए
दिवसेसु समप्पंति ।

१. सं० पा०—रज्जइ जाव नो विप्पडिघाय० ।

२. विणिग्घाय० (क) ।

३. 'पज्जुवासणिज्जे' इति पदानन्तरं सर्वासु
प्रतिषु 'त्ति कट्ठु' इति पाठोस्ति, किन्तु
[१।२।७३] सूत्रानुसारं अत्र 'भवइ' इति
पाठो युज्यते ।

४. ना० १।३।२४ ।

५. ना० १।१।७ ।

६. ना० १।१।७ ।

७. तस्स णं (ख, ग) ।

८. नायज्झयणाणि (क) ।

९. एक्कारसाणि (ख), एक्करसगाणि (ग)

बीओ सुयक्खंधो

पढमो वग्गो

पढम अज्झयण

काली

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था—वण्णओ' ॥
२. तस्स णं रायगिहस्स नयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ' णं गुण सिलए नामं चेइए होत्था—वण्णओ' ।
३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मा नामं थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा कुलसंपण्णा जाव' चोइसपुव्वी चउनाणोवगया पंचहि अणगारसएहि सद्धि संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव रायगिहे नयरे जेणेव गुणसिलए चेइए' •तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता • संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा जामेव दिसि पाउब्भूया, तामेव दिसि पडिगया ॥
४. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स [जेट्ठे ?] अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे' जाव' •अज्जसुहम्मस्स थेरस्स नच्चासण्णे नाइदूरे

१. ओ० सू० १ ।

२. तत्थ (ख, ग) ।

३. ओ० सू० २-१३ ।

४. ना० १।१।४ ।

५. सं० पा०—चेइए जाव संजमेणं ।

६. सं० पा०—अणगारे जाव पज्जुवासमाणे ।

७. ना० १।१।६, ७ ।

सुत्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं० पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स नायाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स धम्मकहाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

५. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पण्णत्ता तं जहा —

१. चमरस्स अग्गमहिंसीणं पढमे वग्गे ।

२. वलिस्स वइरोयणिदस्स' वइरोयणरण्णो अग्गमहिंसीणं वीए वग्गे ।

३. असुरिदवज्जियाणं दाहिणिल्लाणं 'इंदाणं अग्गमहिंसीणं' तईए वग्गे ।

४. उत्तरिल्लाणं अमुरिदवज्जियाणं भवणवासि'-इंदाणं अग्गमहिंसीणं चउत्थे वग्गे ।

५. दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिंसीणं पंचमे वग्गे ।

६. उत्तरिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिंसीणं छट्ठे वग्गे ।

७. चंदस्स अग्गमहिंसीणं सत्तमे वग्गे ।

८. सूरस्स अग्गमहिंसीणं अट्ठमे वग्गे ।

९. सक्कस्स अग्गमहिंसीणं नवमे वग्गे ।

१०. ईसाणस्स य अग्गमहिंसीणं दसमे वग्गे ।

६. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

७. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा—काली, राई, रयणी, विज्जू', मेहा ॥

८. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

९. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । चेल्लणा देवी । सामी समोसढे । परिसा निग्गया जाव' परिसा पज्जुवासइ ॥

१, २, ३. ना० १।१।७ ।

४. × (क, ख, ग) ।

५. × (क, ख, ग) ।

६. भवणवइ (क) ।

७, ८, ९. ना० १।१।७ ।

१०. विज्जा (क, ग) ।

११, १२. ना० १।१।७

१३. ओ० सू० ५२ ।

कालीदेवी-पदं

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं कालो देवी चमरचंचाए रायहाणोए कालिवडेंसगभवणे कालंसि सीहासणसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महयरियाहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं य बहूहिं कालिवडिसयं'-भवणवासीहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महयाहयं'-●नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवादियरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी० विहरइ। इमं च णं केवलकप्पं जंबुदीवं दीवं विउलेणं ओहिणा 'आओएमाणी-आओएमाणी' पासइ ॥

कालीए भगवओ बंधण-पदं

११. एत्थं समणं भगवं महावीरं जंबुदीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ, पासित्ता हट्टतुट्ट-चित्तमाणंदिया पीइमणा' ●परमसोमणस्सिया हरिस-वस-विसप्पमाण०-हियया सीहासणाओ अम्भुट्टेइ, अम्भुट्टेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ट पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं घरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं घरणियलंसि निवेसेइ', ईसि पच्चुन्नमइ; पच्चुन्नमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ साहरइ, साहरित्ता करयल' ●परिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि० कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव' सिद्धिगइनामघेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव' सिद्धिगइनामघेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स । वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगया, पासउ मे समणे भगवं महावीरे तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्था-भिमुहा निसण्णा ॥

१२. तए णं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे" ●अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे० समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्तए"

१. मयहरियाहिं (क, ख, ग, घ); महरियाहिं (बब) । ८. सं० पा०—करयल जाव कट्टु ।

द्रष्टव्यम्—१।१६।१५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् । ९. १०. ओ० सू० २१ ।

२. ० बडेंसय (ख, ग) ।

११. सं० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

३. सं० पा०—महयाहय जाव विहरइ ।

१२. वंदित्ता (क, ख, ग, घ); सं० पा०—वंदि-

४. आओएमाणी (क, ख, ग, घ) ।

त्तए जाव पज्जुवासित्तए । असौ पाठः 'राय-

५. जत्थ (क, घ); यत्थ (ग) ।

पसेणइय' सूत्रस्य वृत्त्यनुसारेण पूरितः ।

६. सं० पा० पीइमणा जाव हियया ।

द्रष्टव्यम्—'रायपसेणइय' वृत्ति पृ० ५१, ५२ ।

७. निमेइ (क, ग) ।

●नमंसित्तए सक्कारित्तए सम्माणित्तए कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं०
पज्जुवासित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आभिघोगिए देवे सद्दावेइ,
सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे'
विहरइ एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव' दिव्वं सुरवराभिगमण-
जोगं करेह' ●य कारवेह य करेत्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव एवमाणत्तियं०
पच्चप्पिणह । ते वि तहेव करेत्ता जाव' पच्चप्पिणंति, नवरं—जोयणसहस्स-
वित्थिण्णं जाणं । सेसं तहेव । तहेव नामगोयं साहेइ, तहेव नट्टविहि उवदसेइ
जाव' पडिगया ॥

गोयमस्स पसिण-पदं

१३. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता
एवं वयासी—कालीए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई
दिब्बे देवाणुभाए कहिं गाए ? कहिं अणुप्पविट्ठे ?
गोयमा ! सरोरं गए सरोरं अणुप्पविट्ठे । कूडागारसाला दिट्ठंतो' ।
अहो णं भंते ! काली देवी महिड्ठिया महज्जुइया महब्बला महायसा महासोक्खा
महाणुभागा ॥
१४. कालीए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिब्बे देवाणुभागे
किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए' ?

भगवघो उत्तरे काली-पदं

१५. ●गोयमाति ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी—
एवं० खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे
आमलकप्पा नामं नयरी होत्था—वण्णओ' । अंबसालवणे चेइए । जियसत्तू राया ॥
१६. तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहावई होत्था—अइडे जाव'
अपरिभूए ॥
१७. तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी नामं भारिया होत्था—सुकुमाल-
पाणिपाया जाव' सुरूवा ॥
१८. तस्स णं कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली नामं

१. पू०—राय० सू० ६ ।

२. राय० सू० ६ ।

३. सं० पा०—करेह करेत्ता जाव पच्चप्पिणह ।

४. राय० सू० १०-४६ ।

५. राय० सू० ४७-१२० ।

६. राय० सू० १२३ ।

७. पू०—राय० सू० ६६७ ।

स० पा०—एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं ।

८. ओ० सू० १ ।

९. ना० १।५।७ ।

१०. ना० १।१।१७ ।

दारिया होत्था—बड्डा बड्डकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी'
निव्विण्णवरा वरगपरिवज्जिया' वि होत्था ॥

कालीए पव्वज्जा-पदं

१६. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे' *तित्थगरे
सहसंबुद्धे पुरिसोत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी
अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए जीवदए दीवो ताणं सरणं गई पड्डा
धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्ठी अप्पडिहय-वरनाणदंसणधरे वियट्ठच्छउमे अरहा
जिणे केवली जिणे जाणए तिण्णे तारए मुत्ते मोयए बुद्धे बोहए सव्वण्णू सव्व-
दरिसी नवहत्थस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जग्गिसहनारायसंघयणे जल-
मल्लकलंकसेयरहियसरीरे सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावत्तगं
सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे' सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए
अज्जियासाहस्सीहिं सद्धि संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं
दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे आमलकप्पाए नयरीए बहिया ° अंवसालवणे
समोसढे । परिसा निग्गया जाव' पज्जुवासइ ॥

२०. तए णं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ' *तुट्ठ-चित्तमाणंदिया
पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण ° हियया जेणेव अम्मपियरो
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल' *परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं
मत्थए अंजलि कट्ठु ° एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा
पुरिसादाणीए आइगरे' *तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव
आमलकप्पाए नयरीए अंवसालवणे अहापडिखुवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं
तवसा अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुव्भेहिं
अब्भणुण्णाया समाणी पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया
गमित्तए ।

अहामुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं करेहि ॥

२१. तए णं सा काली दारिया अम्मपिईहिं अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठ' *तुट्ठ-चित्त-
माणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण ° हियया ण्हाया
कयवलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं

१. °पुत्तथणी (ग) ।

२. वरपरिवज्जिया (घ); वरवज्जिया (वृ) ।

३. सं० पा०—जहा बद्धमाणसामी नवरं नव-
हत्थस्सेहे ° (क, ख, ग, घ) ।

४. पू०—ओ० सू० १६ ।

५. ओ० सू० ५२ ।

६. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

७. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

८. सं० पा०—आइगरे जाव विहरइ ।

९. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडिया-चक्कवाल-परिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिता जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता धम्मियं जाणप्पवरं दुरुह्वा ॥

२२. तए णं सा काली दारिया धम्मियं जाणप्पवरं दुरुह्वा समाणी एवं जहा देवई' तहा' पज्जुवासइ ॥

२३. तए णं पासं अरहा पुरिसादारणाए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालियाणं परिसाए धम्मं कहेइ ॥

२४. तए णं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ'•तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्वहामि णं भंते ! निगंथं पावयणं, जाव' से जहेयं तुब्भे वयह । जं नवरं—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए'•मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं० पव्वयामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिए !

२५. तए णं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ'•तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं हियया पासं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अबसालवणाओ चइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आमलकप्पं नयारि मज्झमज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! मए पासस्स अरहओ अंतिए धम्मे निसंते । से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए' । तए णं अहं अम्मयाओ' ! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मण-मरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहि

१. दोवइ (क, घ) ।

२. अंत० ३।८।१५ ।

३. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

४. ना० १।१।१०१ ।

५. सं० पा०—अंतिए जाव पव्वयामि ।

६. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

७. अभिरुतिए (ख); अभिरुतिते (ग); अभिरुचिए (घ) ।

८. अम्मापियातो (ग) ।

अबभणुण्णाया समानी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगा-
रियं पव्वइत्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंघं करेहि ॥

२६. तए णं से काले गाहावई विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ,
उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ, आमंतेत्ता
तओ पच्छा ण्हाए जाव' विपुलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ
सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-
परियणस्स पुरओ कालिं दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ, ण्हावेत्ता सव्वा-
लंकार-विभूसियं करेइ, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहेइ, दुरूहेत्ता
मित्तनाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्डीए जाव' दुंदुहि-
निग्घोस-नाइयरवेणं आमलकप्पं नयारिं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता
जेणेव अबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताईए तित्थगराइ-
सए पासइ, पासित्ता सीयं ठवेइ, ठवेत्ता कालिं दारियं सीयाओ पच्चोरुहेइ' ॥

२७. तए णं तं कालिं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा-
दाणीए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमं-
सित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्हं धूया
इट्ठा कंता जाव' उंबरपुप्फं पिव दुल्लहा सवणयाए, किमं पुण पासणयाए ?
एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा
भवित्ता' ० णं अगाराओ अणगारियं ० पव्वइत्तए । तं एयं णं देवाणुप्पियाणं
सिस्सिणिभक्खं दलयामो । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभक्खं ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

२८. तए णं सा काली कुमारी पासं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तर-
पुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं
ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासं अरहं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ,
करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते ! लोए'

१. ना० १।७।६ ।

२. ना० १।१।३३ ।

३. पच्चोरुहेइ (क, ख, ग, घ) ।

४. ना० १।१।४५ ।

५. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए ।

६. 'लोए' अतोअे "एवं जहा देवाणंवा जाव"

समर्पणवाक्यमस्ति, किन्तु भगवतीसूत्रे
(६।१५२) देवाणंदा-प्रकरणे समर्पितः पाठः
संक्षिप्तोस्ति, तेन एतद्वाक्यं पाठान्तररूपेण
स्वीकृतमस्माभिः । अस्य प्रतिस्यलनिर्देशः
प्रस्तुतसूत्रादेव कृतः ।

- जाव' तं इच्छामि णं देवाणुप्पिएहिं सयमेव पव्वावियं' जाव' धम्ममाइक्खियं ॥
२६. तए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सि-
णियत्ताए दलयइ ॥
३०. तए णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं कुमारिं सयमेव पव्वावेइ' जाव' °धम्म-
माइक्खइ ॥
३१. तए णं सा काली पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं
सम्मं ° उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥
३२. तए णं सा काली अज्जा जाया—इरियासमिया जाव' गुत्तबंभयारिणी ॥
३३. तए णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस
अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ'-°छट्टट्टम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं
अप्पाणं भावेमाणी ° विहरइ ॥

कालीए बाउसियत्त-पदं

३४. तए णं सा काली अज्जा अणया कयाइ सरीरबाउसिया जाया यावि' होत्था ।
अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंत-
राणि धोवेइ, कक्खंतराणि धोवेइ, गुज्झंतराणि धोवेइ, जत्थ-जत्थ वि य णं
ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तं पुव्वामेव अब्भुक्खित्ता तन्नो पच्छा
आसयइ वा सयइ वा ॥
३५. तए णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं वयासी—नो खलु कप्पइ देवाणु-
प्पिए ! समणीणं निग्गंथीणं सरीरबाउसियाणं होत्तए । तुमं च णं देवाणुप्पिए !
सरीरबाउसिया' जाया अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवसि', °पाए धोवसि, सीसं
धोवसि, मुहं धोवसि, थणंतराणि धोवसि, कक्खंतराणि धोवसि, गुज्झंतराणि
धोवसि, जत्थ-जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएसि, तं पुव्वामेव
अब्भुक्खित्ता तन्नो पच्छा ° 'आसयसि वा सयसि' वा । तं तुमं देवाणुप्पिए !
एयस्स ठाणस्स आलोएहिं जाव' पायच्छित्तं पडिवज्जाहि' ॥

१. ना० १।१।१४६ ।

२. पव्वाविउ (ख, ग) ।

३. ना० १।१।१४६ ।

४. सं० पा०—पव्वावेइ जाव उवसंपज्जित्ता ।

५. ना० १।१।१५० ।

६. ना० १।१४।४० ।

७. सं० पा०—चउत्थ जाव विहरइ ।

८. X (ख) ।

९. °पाउसिया (ख, ग, घ) ।

१०. सं० पा—धोवसि जाव आसयसि ।

११. आसयाहि वा सयाहि (क, ख, ग, घ);
आदर्शेषु तुवाद्यर्थवाचकं क्रियापदमस्ति, किन्तु
प्रसंगापातेनात्र तिवाद्यर्थवाचकं क्रियापदं
युज्यते, तेन तथा परिगृहीतम् ।

१२. ना० १।१६।११५ ।

१३. पडिवज्जेहि (ख); पडिवज्जिहि (ग)

३६. तए णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाइ' *नो परिया-
णाइ° तुसिणीया संचिट्ठइ ॥

३७. तए णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालि अज्जं अभिक्खणं-अभिक्खणं हीलेति
निदंति खिसंति गरहति अवमन्नंति अभिक्खणं-अभिक्खणं एयमट्ठं निवारंति ॥

कालीए पुढोविहार-पदं

३८. तए णं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं निगंथीहिं अभिक्खणं-अभिक्खणं
हीलिज्जमाणीए जाव' निवारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए' *चित्थिए
पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जया णं अहं अगारमज्जे' वसित्था
तया णं अहं सयंवसा, जप्पभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं
पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवासा' जाया । तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्प-
भायाए रयणीए' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते
पाडिक्कयं' उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए त्ति कट्ठु एवं सपेहेइ,
सपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे
तेयसा जलंते पाडिक्कं उवस्सयं गेण्हइ । तत्थ णं अणिवारिया अणोहट्ठिया
सच्छंदमई अभिक्खणं - अभिक्खणं हत्थे धोवेइ', *पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ,
मुहं धोवेइ, थणंतराणि धोवेइ, कक्खंतराणि धोवेइ, गुज्जंतराणि धोवेइ, जत्थ-
जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तं पुव्वामेव अब्भुक्खित्ता
तओ पच्छा° आसयइ वा सयइ वा ॥

कालीए मच्चु-पदं

३९. तए णं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसन्ता ओसन्नविहारी
कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि
वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए
अप्पाणं भूसेइ, भूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स
अणालोइयपडिक्कंता" कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालि-
वडिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स
'असंखेज्जाए भागमेत्ताए'" ओगाहणाए कालीदेवित्ताए उववण्णा ॥

१. सं० पा०—आढाइ जाव तुसिणीया ।

एक्कयं (घ) ।

२. ना० २।१।३७ ।

८. पू०—ना० १।१।२४ ।

३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

९. सं० पा०—धोवेइ जाव आसयइ ।

४. अगारवासा° (ख, ग, घ) ।

१०. अपडिक्कंता (ख) ।

५. परव्वसा (क, ख, घ) ।

११. असंखेज्जए० (ख); असंखेज्जए भागमेत्ताए

६. पू०—ना० १।१।२४ ।

(ग); असंखेज्जइ° (घ) ।

७. पाडिक्कं (क); पडिक्कयं (ख, ग); पाडि-

४०. तए णं सा काली देवी अहुणोववण्णा^१ समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए^२ °पज्जत्तभावं गच्छति [तं जहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणपाण-पज्जत्तीए ° भासमणपज्जत्तीए^३] ॥
४१. तए णं सा काली देवी चउण्हं सामाणिय-साहस्सीणं जाव^४ सोलसण्हं आयरक्ख-देवसाहस्सीणं अण्णेसिं च वहुणं कालिवडेंसगभवणवासीणं असुरकुमाराणं देवाणं य देवीणं य आहेवच्चं^५ कारेमाणी जाव^६ विहरइ ॥
४२. एवं खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा देविट्ठो दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ॥
४३. कालीए णं भंते ! देवीए केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥
४४. काली णं भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं उव्वट्ठित्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वामे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं अंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

४५. एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^१ संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

—

१. सं० पा०—जहा सूरियाओ जाव भासमण-पज्जत्तीए ।

२. असौ कोष्ठकर्त्तृपाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

३. ना० २।१।१० ।

४. द्रष्टव्यम्—१।१।११८ सूत्रम् ।

५. ना० १।१।११८ ।

६. ना० १।१।७ ।

बीअं अज्भयणं

राई

४६. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, बिइयस्स णं भंते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
४७. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए । सामी समोसढे । परिसा निग्गया जाव' पज्जुवासइ ॥
४८. तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली तहेव' आगया, नट्टविहि उवदसित्ता पडिगया ॥
४९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पुव्वभवपुच्छा' ॥
५०. *गोयमाति ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमतेत्ता एवं वयासी० --- एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा नयरी अंबसालवणे चेइए । जियसत्तू राया । राई गाहावई । राइसिरी भारिया । राई दारिया । पासस्स समोसरणं । राई दारिया जहेव काली तहेव' निक्खंता ॥
५१. *तए णं सा राई अज्जा जाया' ॥
५२. तए णं सा राई अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ' ॥

१,२. ना० १।१।७ ।

३. ओ० सू० ५२ ।

४. ना० २।१।१०-१२ ।

५. सं० पा०—पुव्वभवपुच्छा एवं । पू०—ना० २।१।१३, १४ ।

६. ना० २।१।१८-३१ ।

७. सं० पा०—तहेव सरीरबाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं ।

८. पू०—ना० २।१।३२ ।

९. पू०—ना० २।१।३३ ।

५३. तए णं सा राइ अज्जा अण्णया कयाइ सरीरबाउसिया जाया या वि हांत्था' ॥
 ५४. तए णं सा राई अज्जा पासत्था' तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए रायवंडिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स असंखेज्जाए भागमेत्ताए ओगाहणाए राईदेवित्ताए उववण्णा जाव'० अंतं काहिइ ॥
 ५५. एवं खलु जंबू ! 'समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स विइयज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

तइयं अज्झयणं

रयणी

५६. जइ णं भंते ! 'समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स विइयज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ०
 ५७. एवं खलु जंबू ! रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । 'सामी समोसढे' ॥
 ५८. तेणं कालेणं तेणं समएणं रयणी देवी चमरचंचाए रायहाणीए आगया' ॥
 ५९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पुव्वभवपुच्छा" ॥
 ६०. गोयमाति ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी— एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं ० आमलकप्पा नयरी । अंबसालवणे चेइए । जियसत्तू राया । रयणे गाहावई । रयणसिरी भारिया । रयणी दारिया । सेसं तहेव जाव" अंतं काहिइ ॥

१. पू०—ना० २।१।३४-३८ ।

२. पू०—ना० १।१।३९ ।

३. ना० २।१।४०-४४ ।

४. सं० पा०—विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ।

५. ना० १।१।७ ।

६. सं० पा०—तइयज्झयणस्स उक्खेवओ ।

७. सं० पा०—एवं जहेव राई तहेव रयणी वि

८. पू०—ना० २।१।४७ ।

९. पू०—ना० २।१।४८ ।

१०. पू०—ना० २।१।४९ ।

११. ना० २।१।५०-५४ ।

चउत्थं अउभयणं

विज्जू

६१. एवं विज्जू वि—आमलकप्पा नयरी । विज्जू गाहावई । विज्जूसिरी भारिया ।
विज्जू दारिया । सेसं तहेव' ॥
-

पंचमं अउभयणं

मेहा

६२. एवं मेहा वि—आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई । मेहसिरी भारिया । मेहा
दारिया । सेसं तहेव' ॥
६३. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं धम्मकहाणं
पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पणत्ते ॥
-

वीओ वगो

पढमं अज्भयणं

सुंभा

१. जइ णं भंते ! समणेणं '●भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? °
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्भयणा पण्णत्ता, तंजहा - सुंभा, निमुंभा, रंभा, निरंभा, मदणा ॥
३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्भयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सामी समोसढे । परिसा निग्गया जाव' पज्जुवासइ ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुंभा देवी वलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेंसाए भवणे सुंभंसि सीहासणंसि' विहरइ । काली गमएणं जाव' नट्टविहि उवदमेत्ता पडिगया ॥
६. पुव्वभवपुच्छा ॥
७. सावत्थी नयरी । कोट्टए चेइए । जियसत्तू राया । सुंभे गाहावई । सुंभसिरी भारिया । सुंभा दारिया । सेसं जहा कालीए' नवरं अद्धट्ठाइं पलिओवमाइं ठिई ॥
८. एवं खलु जंबू ! '●समणेणं भगवया महावीरेणं दोच्चस्स वग्गस्स पढमज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

२-५ अज्भयणाणि

९. एवं' -सेसा वि चत्तारि अज्भयणा । सावत्थीए । नवरं - माया पिया धूया-सरिनामया ।
१०. एवं खलु जंबू ! '●समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं बिइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ °

१. स० पा० - दोच्चस्स वग्गस्स उवक्खेवओ ।

२. ओ० सू० ५२ ।

३. पू० - ना० २।१।१० ।

४. ना० २।१।११, १२ ।

५. ना० २।१।१८-४४ ।

६. सं० पा० - निक्खेवओ अज्भयणस्स ।

७. ना० २।२।१-८ ।

८. सं० पा० - निक्खेवओ बिइयवग्गस्स ।

तइयो वग्गो

पढमं अज्झयणं

अला

१. '●जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं घम्मकहाणं बिइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तइयस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? °
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा—पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे ॥
३. जइ णं भंते समणेणं भगवया महावीरेणं घम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव' पज्जुवासइ ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं अला देवी घरणाए रायहाणीए अलावडेंसए भवणे अलंसि सीहासणंसि एवं कालीगमएणं जाव' नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया ॥
६. पुव्वभवपुच्छा ॥
७. वाणारसीए नयरीए काममहावणे चेइए । अले गाहावई । अलसिरी भारिया । अला दारिया । सेसं जहा कालीए", नवरं—धरणअग्गमहिसित्ताए उववाओ । साइरेणं अट्ठपलिओवमं ठिई सेसं तहेव ॥
८. एवं खलु जंबू ! '●समणेणं भगवया महावीरेणं तइयस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ।

१. सं० पा०—उक्खेवओ तइयवग्गस्स ।

४. ना० २।१।१८-४४ ।

२. ओ० सू० ५२ ।

५. सं० पा०—निक्खेवओ पढमज्झयणस्स ।

३. ना० २।१।१०-१२ ।

२-६ अज्झयणाणि

६. एवं^१—कमा^२, सतेरा, सोयामणी^३, इंदा, घणविज्जुया वि सव्वाम्मो एयाम्मो घरणस्स अग्गमहिंसीम्मो ।

७-१२ अज्झयणाणि

१०. एए^४ छ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा ।

१३-५४ अज्झयणाणि

११. एवं^५—*हरिस्स अग्गिसिहस्स पुण्णस्स जलकंतस्स अभियगतिस्स वेलंवस्स ° घोसस्स वि एए^६ चेव छ-छ अज्झयणा । एवमेते दाहिणिल्लाणं चउपण्णं अज्झयणा भवन्ति । सव्वाम्मो वि वाणारसीए काममहावणे चेइए ।
१२. *एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

— — —

१. ना० २।३।१-८ ।

२. सक्का (ठाणं ६।५५, भ० १०।७६) ।

३. सोयमणी (क, ख); सोयमाणी (ग, घ);
सोतामणी (ठाणं ६।५५) ।

४. ना० २।३।१-८ ।

५. सं० पा०—एवं जाव घोसस्स ।

६. ना० २।३।१-८ ।

७. सं० पा०—तइयवग्गस्स निक्खेवज्जो ।

चउत्थो वग्गो

पढमं अज्झयणं

रूया

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?'
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं चउत्थस्स वग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा—पढमे अज्झयणे जाव चउप्पण्णइमे अज्झयणे ॥
३. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं चउत्थस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?'
४. एवं खलु जंबू ! तेण कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव' परिस्ता पज्जुवासइ ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं रूया देवी भूयाणंदा रायहाणो रूयगवडंसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए' तहा, नवरं—पुव्वभवे चंपाए पुण्णभट्ठे चेइए रूयगगाहावई रूयगसिरी भारिया रूया दारिया । सेसं तहेव, नवरं—भूयाणंद-अग्गमहिसित्ताए उववाओ । देसूणं पलिआवमं ठिई ॥
६. 'एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि० ॥

१. सं० पा०—चउत्थस्स उक्खेवओ ।

३. ओ० सू० ५२ ।

२. × (क, ख, ग, घ) । पूर्वक्रमेण एतत् सूत्रं युज्यते ।

४. ना० २।१।१०-४४ ।

५. सं० पा०—निक्खेवओ ।

२-६ अज्झयणाणि

७. एवं^१— सुरूयावि, रूयंसावि, रूयगावईवि, रूयकंतावि, रूयप्पभावि ॥

७-५४ अज्झयणाणि

८. एयाओ^२ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं^३—●वेणुदालिस्स हरिस्सहस्स अग्गिमा-
णवस्स विसिट्ठस्स जलप्पभस्स अमितवाहणस्स पभंजणस्स महाघोसस्स
भाणियब्बाओ ॥ ०

९. ●एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण धम्मकहाणं चउत्थस्स वग्गस्स
अयमट्ठे पणत्ते ० ॥

— — —

१. एवं खलु (क, ख, ग, घ) । ना० २।४।१-६ ।

२. ना० २।४।१-६ ।

३. सं० पा०—भाणियब्बाओ जाव महाघोसस्स ।

४. सं० पा०—निक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ।

पंचमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

कमला

१. "जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स वग्गस्स^० बत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

१. कमला २. कमलप्पभा चेव, ३. उप्पला य ४. सुदंसणा ।
५. रूववई ६. वहुरुवा, ७. सुरुवा ८. सुभगावि य ॥१॥
९. पुण्णा १०. वहुपुत्तिया^१ चेव, ११. उत्तमा १२. तारयावि^२ य ।
१३. पउमा १४. वसुमई चेव, १५. कणगा १६. कणगप्पभा^३ ॥२॥
१७. वडेंसा १८. केउमई चेव, १९. 'वइरसेणा २०. रइप्पिया"^४ ।
२१. रोहिणी २२. नवमिया चेव, २३. हिरी २४. पुप्फवईवि य ॥३॥
२५. 'भुयगा २६. भुयगावई'^५ चेव, २७. महाकच्छा २८. फुडा इय ।
२९. सुघोसा ३०. विमला चेव, ३१. सुस्सरा य ३२. सरस्सई ॥४॥

३. "जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं पंचमस्स वग्गस्स बत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?^०
४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव^६ परिसा पज्जुवासइ ॥

१. सं० पा०—पंचम वग्गस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! जाव बत्तीसं ।
२. वहुपुण्णिया (क, ख, घ) ।
३. भारियावि (क, घ) ।
४. रतणप्पभा (ठाणं ४।१६५) ।
५. रतसेणा रतिप्पभा (ठाणं ४।१६७); रतिसेणा रइप्पिया (म० १०:८६) ।
६. सुभगा सुभगावती (ख) ।
७. सं० पा०—उक्खेवेओ पढमज्झयणस्स ।
८. ओ० सू० ५२ ।

५. तेणं कालेणं तेणं समाणं कमला देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसाए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए नहेव', नवरं - पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरोए भारियाए कमला दारिया पासस्स अंतिए निक्खंता । कालस्स पिमायकुमारिदस्स अग्गमहिंसी । अद्दपलिओवमं ठिई ।

२-३२ अज्झयणाणि

६. एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं इंदाणं भाणियव्वाओ । नागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे । मायापियरो धूया—सरिनामया । ठिई अद्दपलिओवमं ।

छट्ठो वग्गो

१-३२ अज्झयणाणि

१. छट्ठो वि वग्गो पंचमवग्ग-सरिओ, नवरं—महाकालाईणं' उत्तरिल्लाणं इंदाणं' अग्गमहिंसीओ । पुव्वभवे सागेए नगरे । उत्तरकुरु-उज्जाणे । मायापियरो धूया—सरिनामया । सेसं तं चेव ॥

सत्तमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

सूरप्पभा

१. '●जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स वग्गस्स० चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा - सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा ॥
३. '●जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं सत्तमस्स वग्गस्स चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, सत्तमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ०

१. ना० २।१।१०-४४ ।

२. ठाणं २।३६४-३७० ।

३. महाकायाई णं (ख) ।

४. ठाणं २।३६४-३७० ।

५. सं० पा०—सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं

खलु जंबू जाव चत्तारि ।

६. सं० पा० -- पढमज्झयणस्स उक्खेवओ ।

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव' परिसा पज्जुवासइ ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभा देवी सूरंसि' विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि । सेसं जहा कालीए तहा', नवरं—पुव्वभवो अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया । सूरस्स अगमहिंसी । ठिई अट्ठपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं । सेसं जहा कालीए ॥

२-४ अज्झयणाणि

६. एवं—●आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा ° । सव्वाओ अरक्खुरीए नयरीए ॥

अट्ठमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

चंदप्पभा

१. ●जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स वग्गस्स ° चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—चंदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा ॥
३. ●जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं अट्ठमस्स वग्गस्स चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, अट्ठमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °
४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव' परिसा पज्जुवासइ ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि । सेसं जहा कालीए, नवरं—पुव्वभवो महुराए नयरीए मंडिवडेंसए

१. ओ० सू० ५२ ।

२. २।८।५ सूत्रपद्धत्या अत्रापि 'सूरप्पभंसि' इति पाठो युज्यते ।

३. ना० २।१।१०-४४ ।

४. सं० पा०—एवं सेसाओवि ।

५. सं० पा०—अट्ठमस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू जाव चत्तारि ।

६. सं० पा०—पढमज्झयणस्स उक्खेवओ ।

७. ओ० सू० ५२ ।

८. ना० २।१।१०-४४ ।

उज्जाणे । चंदप्पभे गाहावई । चंदसिरी भारिया । चंदप्पभा दारिया । चंदस्स अग्गमहिस्सी । ठिई अट्ठपलिओवमं पण्णासत्ताससहस्सेहि अट्ठभट्ठियं ॥

२-४ अज्झयणाणि

६. एवं—●दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा °, महुराण नयरीण । मायापियरो धूया-सरिसनामा ॥

नवमो वग्गो

१-८ अज्झयणाणि

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं अट्ठमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं नवमस्स वग्गस्स ° अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

गाहा —

१. पउमा २. सिवा^१ ३. सई^२ ४. अंजू,
५. रोहिणी ६. नवमिया^३ इ य ।
७. अयला^४ ८. अच्छरा ॥

३. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं नवमस्स वग्गस्स अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, नवमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °
४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव^५ परिसा पज्जुवासइ ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमंसि सीहासणंसि जहा कालीए^६ ॥

१. सं० पा० — एवं सेसाओवि ।

२. सं० पा० — नवमस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ ।

३. सिया (क, ग) ।

४. सुती (क, ख, ग); सची (ठाणं ८।२७) ।

५. नमिया (घ) ।

६. अमला (ठाणं ८।२७; भ० १०।६२) ।

७. सं० पा० — पढमज्झयणस्स उक्खेवओ ।

८. ओ० सू० ५२ ।

९. ना० २।१।१०-४४ ।

६. एव अट्ठ वि अज्झयणा काली-गमएणं नायव्वा, नवरं—सावत्थीए दोजणीओ । हत्थिणाउरे दोजणीओ । कंप्पिल्लपुरे दोजणीओ । साएए दोजणीओ । पउमे पियरो विजया मायराओ । सव्वाओ वि पासस्स अंतियं पव्वइयाओ । सक्कस्स अगमहिंसीओ । ठिई सत्त पलिओवमाइं । महाविदेहे वासे अंतं काहिति ॥

दसमो वग्गो

१-८ अज्झयणाणि

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं नवमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पणत्ते, दसमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पणत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स वग्गस्स ° अट्ठ अज्झयणा पणत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. कण्हा य २. कण्हराई, ३. रामा तह ४. रामरक्खिया ।
 ५. वसू या ६. वसुगुत्ता ७. वसुमिक्ता ८. वसुंधरा चैव ईसाणं ॥१॥
३. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं दसमस्स वग्गस्स अट्ठ अज्झयणा पणत्ता, दसमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पणत्ते ? °
४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जावं परिंसा पज्जुवासइ ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि, सेसं जहा कालीए ॥
६. एवं अट्ठ वि अज्झयणा काली-गमएणं नायव्वा, नवरं—पुव्वभवो वाणारसीए नयरीए दोजणीओ । रायगिहे नयरे दोजणीओ । सावत्थीए नयरीए दोजणीओ । कोसंबीए नयरीए दोजणीओ । रामे पिया धम्मा माया । सव्वाओ वि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ । पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए । ईसाणस्स

१. सं० पा०—दसमस्स उक्खेवओ । एवं खलु २. सं० पा०—पढमस्स उक्खेवओ ।
 जंबू जाव अट्ठ । ३. ओ० सू० ५२ ।

अग्गमहिंसीओ । ठिई नवपलिओवमाइं । महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति बुज्झि-
हिंति मुच्चिहिंति सव्वदुक्खाणं अंतं काहिंति ॥

७. एवं खलु जंबू ! 'समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं दसमस्स वग्गस्स
अयमट्ठे पणत्ते' ० ॥
८. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं
पुरिसोत्तमेणं पुरिससीहेणं जाव^१ सिद्धिगइ नामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं धम्मकहाणं
अयमट्ठे पणत्ते ।

परिसेसो

धम्मकहा-सुयक्खंधो सम्मत्तो ।

दसहिं वग्गेहिं नायाधम्मकहाओ समत्ताओ ॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर—२२६६४३ ।

अनुष्टुप् श्लोक—७०६१, अक्षर ३१ ।

—

उवासगदसाञ्चो

पढमं अज्झयणं

आणंदे

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समाएणं चंपा नामं नयरी होत्थां—वण्णओ^१ ॥
२. पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ^२ ॥
३. तेणं कालेणं तेणं समाएणं^३ •समणस्स भगवओ महावीरस्स अनेवासी अज्जसुहम्मे नामं थेरे जातिसंपण्णे कुलसंपण्णे वलसंपण्णे रुवसंपण्णे विणयसंपण्णे नाणसंपण्णे दंसणसंपण्णे चरित्तसंपण्णे लज्जासंपण्णे लाघवसंपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जियणिदे जिइदिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहप्पहाणे निच्छयप्पहाणे अज्जवप्पहाणे मद्वप्पहाणे लाघवप्पहाणे खंतिप्पहाणे गुत्तिप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे विज्जप्पहाणे मंत्तप्पहाणे वंभप्पहाणे वेयप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से चउदसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहि अणगारसएहि सद्धि संपरिवुडे पुव्वानुपुव्वि चरमाणे गामागुणामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, चंपानयरीए वहिया

१. नामं (ख) ।

२. हुत्था (ग) ।

३. ओ० सू० १ ।

४. ओ० सू० २-१३ ।

५. सं० पा०—समाएणं अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव जंत्तु अज्जवासमाणे । असौ बिन्दुमध्य-

वर्ती पाठः क्रमशः; रायपसेणइय-ओवाइय-सूत्राभ्यां पूरितः । प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'नायाधम्मकहाओ' सूत्रात् पूरणस्य सूचना कृतास्ति । अस्माभिः पूरिते पाठे ततः किञ्चिद् भेदो विद्यते, नास्ति क्वचिद् मौलिको भेदः ।

- पुण्णभदे चेइए अहापडिरुवं ओगहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
४. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स थेरस्स जेट्ठे अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे कासव' गोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वइररिसहणाराय-संघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे भाणकोट्टोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
५. तए णं से अज्जजंबू नामं अणगारे जायसड्ढे जायसंसाए जायकोऊहल्ले, उप्पणसड्ढे उप्पणसंसाए उप्पणकोऊहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसाए संजाय-कोऊहल्ले, समुप्पणसड्ढे समुप्पणसंसाए समुप्पणकोऊहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जसुहम्मं थेरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे० पज्जुवासमाणं' एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं' छट्ठस्स अंगस्स नायाधम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! अंगस्स उवासगदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
६. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दस अज्जयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

आणंदे कामदेवे य, गाहावतिचुलणीपिता ।
सुरादेवे चुल्लसयए, गाहावइकुंडकोलिए ॥
सद्दालपुत्ते महासतए, नंदिणीपिया लेइयापिता' ॥१॥

१. व्या० वि०—विभक्तिरहितं पदम् ।
२. पज्जुवासइ (क) ।
३. ना० १।१।७ ।
४. सपाविउकामेणं (समावओ १।२) ।
५, ६. ना० १।१।७ ।
७. लेतियापिया (क, ग); सालेइणीपिया (ख) ।
उवासगदसाणं दस अज्जयणा पण्णत्ता, तं जहा—
आणंदे कामदेवे अ, गाहावतिचुलणीपिता ।

सुरादेवे चुल्लसतए, गाहावतिकुंडकोलिए ॥
सद्दालपुत्ते महासतए नदिणीपिया सालेइया-पिता । (स्थानांग १०।११२) । स्थानांग-सूत्रे दशमाध्ययनस्य नाम 'सालेइयापिता' लभ्यते । अत्र एकस्यां प्रती 'सालेइणीपिया' नाम उपलब्धमस्ति, किन्तु 'सालइयापिता' नाम नोपलभ्यते । स्यादसौ वाचनाभेदः अथवा लिपिदोषेणासौ विपर्ययो जातः ; इति अनुसंधेयमस्ति ।

७. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दस अञ्जयणा पणत्ता, पठमस्स णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते ?

आणंदगाहावइ-पदं

८. एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समाणं वाणियगामे नामं नयरे होत्था — वण्णओ' ॥
९. तस्स वाणियगामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं दूइपलासए नामं चेइए' ॥
१०. तत्थ णं वाणियगामे नयरे जियसत्तू राया होत्था—वण्णओ' ।
११. तत्थ णं वाणियगामे नयरे आणंदे नामं गाहावई परिवसइ—अट्ठे' •दित्ते वित्ते विच्छिण्णविउलभवण-सयणासण-जाणवाहणे बहुधण-जायरूव-रयए आओग-पओगसंपउत्ते विच्छिड्डियपउरभत्तपाणे बहुदासी-दास-गो-महिस्स-गवेलगप्पभूए बहुजणस्स ° अपरिभूए ॥
१२. तस्स णं आणंदस्स गाहावइस्स चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, 'चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्डिपउत्ताओ' चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थर-पउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
१३. से णं आणंदे गाहावई वहूणं राईसर'-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इव्वभ-सेट्ठि-सेणावेइ ° सत्थवाहाणं बहूंसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु' य मंतेसु य गुज्भेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं 'कुडुंबस्स मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए'° सव्वकज्जवड्ढावए" यावि होत्था ॥

१,२. ना० १।१।७ ।

३. ओ० सू० १४ ।

४. चेतिते (क); चेइए होत्था (घ) ।

५. ओ० सू० १४ ।

६. सं० पा०—अट्ठे जाव अपरिभूए ।

७. × (क) ।

८. ईसर (क,ख,ग); ईसराणं (घ); राईसर

(ओ० सू० १८) । सं० पा०—राईसर

जाव सत्थवाहाणं ।

९. यद्यपि सर्वास्वपि प्रतिषु 'मंतेसु य कुडुंबेसु

य' इति पाठो लभ्यते, किंतु अर्थसंगत्या

'कुडुंबेसु य मंतेसु य' इति पाठ उपयुक्तोस्ति ।

ज्ञाता (१।१६) सूत्रे तथा रायपत्तेणइय

(६७५) सूत्रेपि इत्थमेवपाठो विद्यते ।

ज्ञातावृत्तौ अर्थसंगतिरित्थं कृतास्ति—कुटुम्बेषु

च स्वकीयपरकीयेषु विषयभूतेषु च मंत्रादयो

निश्चयान्तास्तेषु आप्रच्छनीयः ।

१०. कुडुंबस्स मेढीभूए (क,ग); कुडुंबस्स मेढी-

भूए जाव (ख) ।

११. मेढीभूते सव्व ° (घ) ।

१४. तस्स णं आणंदस्स गाहावइस्स सिवणंदा' नामं भारिया होत्था—अहीण'-
 •पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा लक्खण-वज्जण-गुणोववेया माणुस्माण-प्पमाण-
 पडिपुण्ण-मुजाय-सव्वंग-सुंदरंगी ससि-सोमाकार-कंत-पिय-दंसणा° सुरूवा,
 आणंदस्स गाहावइस्स इट्ठा, आणंदेणं गाहावइणा सद्धि अणुरत्ता अविरत्ता,
 इट्ठे' •सद्-फरिस-रस-रूव-गंधे° पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी
 विहरइ ॥
१५. तस्स णं वाणियगामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरित्थमे दिसीभाए, एत्थ णं
 कोल्लाए' नामं सण्णिवेसे होत्था—रिद्धित्थमिए' जाव' पासादिए, दरिसणिज्जे
 अभिरूवे पडिरूवे ॥
१६. तत्थ णं कोल्लाए सण्णिवेसे आणंदस्स गाहावइस्स बहवे' मित्त-नाइ-नियग-
 सयण-संबंधि-परिजणे परिवसइ—अड्ठे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥

महावीर-समवसरण-पदं

१७. तेणं कावेणं तेणं समाणं समणे भगवं महावीरे' जाव' •जेणेव वाणियगामे
 नयरे जेणेव दूइपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं
 ओगगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ° ॥
१८. परिसा निग्गया ॥
१९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
२०. तए णं मे आणंदे गाहावई इमोसे कहाए लद्धट्ठे समाणं—“एवं खलु समणे”
 •भगवं महावीरे” पुब्बाणुपुब्बि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए
 इह संपत्ते इह समोसठे इहेव वाणियगामस्स नयरस्स बहिया दूइपलासए चेइए
 अहापडिरूवं ओगगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।”
 तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं
 णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-
 पज्जुवासणयाए ? एगस्सवि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग
 पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं

१. सिवानदा (ख,घ) ।

२. सं० पा०—अहीण जाव सुरूवा ।

३. सं० पा०—इट्ठे जाव पंचविहे ।

४. कोलाते (क,ग) ।

५. रिद्धित्थमिए (ख) ।

६. ओ० सू० १ ।

७. बहुवे (ग) ।

८. उवा० १।११ ।

९. सं० पा०—महावीरे जाव समोसरिए ।

१०. ओ० सू० १६, २२ ।

११. ओ० सू० ५३-६६ ।

१२. सं० पा०—समणे जाव विहरइ तं महा-
 फलं गच्छामि णं जाव पज्जुवासामि ।

१३. पू०—ओ० सू० ५२ ।

भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लानं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहिता ण्हाए' °कयवलिकम्मे कय-कोउय मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं 'पवर परिहिए' °अप्पमहग्घा-भरणालंकियरीरे 'सयाओ गिहाओ' पडिणिक्वमइ, पडिणिक्वमिक्का सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापखित्ते पादविहार-चारेणं 'वाणियगामं नयरं' मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव दूइपलासए' चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ' °वदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे मुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडं° पज्जुवासइ ॥

२१. तए णं समणे भगवं महावीरे आणंदस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥
 २२. परिसा पडिगया, राया य गए' ॥

आणंदस्स गिहियम्म-पडिवत्ति-पदं

२३. तए णं मे आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं मोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ'-°चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हस्सिवस-विसप्पमाणहियाए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वदित्ता णमंसित्ता° एवं वयासी—सइहामि णं' °भंते ! निग्गयं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गयं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गयं पावयणं, अट्ठभूट्टेमि णं भंते ! निग्गयं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अविनहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! ° हेयं तुडभे वदह' । जहा ण देवाणुप्पियाण अतिए

१. सं० पा०—ण्हाए सुद्धप्पावेसा अप्प° ।

७. ओ० सू० ७१-७३ ।

२. अत्र नायाधम्मकहाओ (१।१।३३) सूत्रे

८. पडिगओ (क); गया (ख) ।

'पवर परिहियाओ' पाठो विद्यते । तत्र

९. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी ।

वृत्ती—प्रवरमिहानुस्वारलोपो दुश्यः, इति

१०. सं० पा०—सइहामि णं जाव से जहेयं ।

व्याख्यातमस्ति । एतत् उपयुक्तं प्रतिभाति ।

११. वदह त्ति (क); वदह त्ति कट्टु (ख, ग, घ);

३. सयातो गिहातो (ग) ।

रायपसेणइयसूत्रे (६६५) अत्र किञ्चि-

४. वाणियागामं नगरं (क) ।

दधिकः पाठो लभ्यते—त्ति कट्टु वंदइ

५. °पलासे (क, ग) ।

नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

६. सं० पा०—णमंसइ जाव पज्जुवासइ ।

बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-मेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तथा संचाएमि मुंडे' •भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं^१ पडि-वज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि' ॥

२४. तए णं से आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महाबोरस्स अतिए तप्पढमयाए^२ थूलयं^३ पाणाइवायं पच्चक्खाइ^४ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा ॥
२५. तयाणंतरं^५ च णं थूलयं^६ मुसावायं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा ॥
२६. तयाणंतरं च णं थूलयं^७ अदिण्णादाणं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं—न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा ॥
२७. तयाणंतरं च णं सदारसंतोसोए^८ परिमाणं करेइ—नन्तत्थ एक्काए सिवनंदाए भारियाए, अवसेसं^९ सव्वं मेहुणविहिं^{१०} पच्चक्खाइ ॥
२८. तयाणंतरं च णं इच्छापरिमाणं करेमाणे—
(१) हिरण्ण-सुवण्णविहिपरिमाणं^{११} करेइ—नन्तत्थ चउहिं हिरण्णकोडीहिं निहाणपउत्ताहिं, चउहिं वड्ढिपउत्ताहिं, चउहिं पवित्थरपउत्ताहिं, अवसेसं सव्वं हिरण्ण-सुवण्णविहिं पच्चक्खाइ^{१२} ।

१. सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइत्तए । ३. करेह (घ) ।
२. गिहिघम्मं (क,ख,ग,घ) । दिग्गत-शिक्षाव्रता- ४. °मताते (ग) ।
- नामतिचारनिरूपणप्रसंगे वृत्तिकारेण समा- ५. थूलं (क) ।
- लोक्ष्यपाठः समुद्धृतोस्ति । तत्र व्रतग्रहण- ६. पच्चक्खामि (ख,ग,घ) ।
- संकल्पावसरे व्रतग्रहणानन्तरं च उभयत्रापि ७. तदा ° (ग) ।
- 'सावगधम्मं' इति पाठो विद्यते, यथा— ८. थूलं (क) ।
- 'कथमन्यथा प्रागुक्त दुवालसविहं सावगधम्मं ९. थूलं (क,ग); थूलगं (घ) ।
- पडिबज्जिस्सामीति ? कथं वा वक्ष्यति— १०. °संतोसिए (क,ख); °संतोसिते(ग,घ); ३५
- दुवालसविहं सावगधम्मं पडिबज्जति त्ति" सूत्रे इकारस्य दीर्घत्वं लभ्यते ।
- (वृ), अग्रिमस्थलेषु 'गिहिघम्मं' इत्येवपाठः ११. असेसं (क) ।
- प्रतिषु लभ्यते । तत्र वृत्तौ नास्ति काचिद् १२. मेथुन ° (क); मेथुण ° (घ) ।
- व्याख्या, तेन क्वचित्-क्वचित् गिहिघम्मं १३. सुवण्णपरिमाणं (ग,घ) ।
- पाठोऽपि स्वीकृतः । नानयोः कश्चिद् अर्थ- १४. पच्चक्खामि (ख,ग) अग्रे सर्वत्रापि ।
- भेदोस्ति ।

- (२) तयाणंतरं च णं चउप्पयविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ चउहि वएहि^१ दसगोसाहस्सिएणं वएणं^२, अवसेसं सव्वं चउप्पयविहि पच्चक्खाइ ।
- (३) तयाणंतरं च णं खेत्त-वत्थुविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ पंचहि हलसएहि नियत्तणसतिएणं हलेणं, अवसेसं सव्वं खेत्त-वत्थुविहि पच्चक्खाइ ।
- (४) तयाणंतरं च णं सगडविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ पंचहि सगडसएहि^३ दिसायत्तिएहि, पंचहि सगडसएहि संबहणिएहि, अवसेसं सव्वं सगडविहि^४ पच्चक्खाइ ।
- (५) तयाणंतरं च णं वाहणविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ चउहि वाहणेहि दिसायत्तिएहि, चउहि वाहणेहि संबहणिएहि^५, अवसेसं सव्वं वाहणविहि^६ पच्चक्खाइ ॥
२६. तयाणंतरं च णं उवभोग-परिभोगविहि पच्चक्खायमाणे—
- (१) उल्लणियाविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ 'एगाए गंधकासाईणं', अवसेसं सव्वं उल्लणियाविहि पच्चक्खाइ ।
- (२) तयाणंतरं च णं दंतवणविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ एगेणं अल्ललट्ठीमहु-एणं^७, अवसेसं सव्वं दंतवणविहि पच्चक्खाइ ।
- (३) तयाणंतरं च णं फलविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ एगेणं खीरामलएणं, अवसेसं सव्वं फलविहि पच्चक्खाइ ।
- (४) तयाणंतरं च णं अब्भंगणविहिपरिमाणं^८ करेइ—नन्तत्थ सयपागसहस्स-पागेहि तेल्लेहि^९, अवसेसं सव्वं अब्भंगणविहि पच्चक्खाइ ॥
- (५) तयाणंतरं च णं उव्वट्टणाविहिपरिमाणं^{१०} करेइ—नन्तत्थ एगेणं सुरभिणा गंधट्टएणं^{११}, अवसेसं सव्वं उव्वट्टणाविहि पच्चक्खाइ ।
- (६) तयाणंतरं च णं मज्जणविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ अट्ठहि उट्टिएहि^{१२}

१. वतेहि (ग) ।

१०. अन्नि० (घ) ।

२. वतेणं (ग) ।

११. तिल्लेहि (घ) ।

३. सगडसागडेहि (क); सगडीसएहि (ख) ।

१२. उव्वट्टण (घ) ।

४. सगडविहं (घ) ।

१३. गंधवट्टएणं (क,ख,घ) । एतत् परिवर्तनं संभवतो लिपिदोषेण जातम् । वृत्तो अस्य मौलिकं रूपं सुरक्षितमस्ति, यथा—गन्ध-द्रव्याणामुपलकुडादीनाम्, 'अट्टो' ति चूर्णं गोधूमचूर्णं वा गन्धयुक्तम् । स्थानांगे (३।८७) पि 'गंधट्टएणं' इति प्रयोगो लभ्यते ।

५. संवा० (ख) ।

६. वहण० (क) ।

७. एगाते गंधकासातीते (क,ग) ।

८. अल्लल्लट्ठी० (ग) ।

९. × (क,ग) । अनयोरादशंयोरग्रे सर्वत्रापि

'सव्वं' पाठो नास्ति । अत्र लिपेः संक्षेपी-करणमेव कारणं संभाव्यते ।

१४. उव्वट्टिएहि(क) । उद्वर्तितैः इति विशेषणं अरघट्टपरिवर्तिभिः उदकघटैः इत्यर्थः सूच्यते ।

- 'उदगस्स घडेहि', अवसेसं सव्वं मज्जणविहिं पच्चक्खाइ ।
- (७) तयाणंतरं च णं वत्थविहिपरिमाणं करेइ—'नन्तत्थ एगेणं' 'खोमजुयलेणं, अवसेसं सव्वं वत्थविहिं पच्चक्खाइ ।
- (८) तयाणंतरं च णं विलेवणविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ अगुरु'-कुंकुम-चंदणमादिएहि', अवसेसं सव्वं विलेवणविहिं पच्चक्खाइ ।
- (९) तयाणंतरं च णं पुप्फविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ एगेणं सुद्धपउमेणं मालइकुसुमदामेणं वा, अवसेसं सव्वं पुप्फविहिं पच्चक्खाइ ।
- (१०) तयाणंतरं च णं आभरणविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ मट्टकण्णेज्जएहि नाममुद्दाए य, अवसेसं सव्वं आभरणविहिं पच्चक्खाइ ।
- (११) तयाणंतरं च णं धूवणविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ अगुरु'-तुरुक्क-धूवमादिएहि, अवसेसं सव्वं धूवणविहिं पच्चक्खाइ ।
- (१२) तयाणंतरं च णं भोयणविहिपरिमाणं करेमाणे—
- (क) पेज्ज-विहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ एगाए कट्टपेज्जाए, अवसेसं सव्वं पेज्जविहिं पच्चक्खाइ ।
- (ख) तयाणंतरं च णं भक्खविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ एगेहिं घयपुण्णेहिं खंडखज्जएहि वा, अवसेसं सव्वं भक्खविहिं पच्चक्खाइ ।
- (ग) तयाणंतरं च णं ओदणविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ कलमसालि-ओदणेणं, अवसेसं सव्वं ओदणविहिं पच्चक्खाइ ।
- (घ) तयाणंतरं च सूवविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ कलायसूवेणं वा 'मुग्गसूवेण वा माससूवेणं' वा अवसेसं सव्वं सूवविहिं पच्चक्खाइ ।
- (ङ) तयाणंतरं च णं घयविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ सारदिएणं गोघय-मंडेणं, अवसेसं सव्वं घयविहिं पच्चक्खाइ ।
- (च) तयाणंतरं च णं सागविहिपरिमाणं करेइ—नन्तत्थ वत्थुसाएणं वा तुंबसाएण वा सुत्थियसाएणं वा मंडुक्कियसाएण वा, अवसेसं सव्वं सागविहिं पच्चक्खाइ ॥

१. उदगघडेहि (क) ।

२. नन्तत्थेक्केणं (क, ग) ।

३. अगुरु (क, घ) ।

४. °मातिर्तेहि (क); माइतेहि (घ) ।

५. मालई ° (घ) ।

६. अगुरु (क, घ) ।

७. भक्खण ° (ख) ।

८. भक्खण ° (क, ख) ।

९. सूय ° (क, ग, घ) ।

१०. कालाय ° (क) ।

११. मुग्गमाससूवेण (क) ।

१२. तुसातेण (क); वत्थुसातेण (ग); चुच्चुसाएण (घ) ।

१३. सुत्थिया ° (ग); सूवत्थिय ° (घ) ।

(छ) तयाणंतरं च णं माहुरयविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ एगेणं पालंकामाहुरएणं^१, अवसेसं सव्वं माहुरयविहि पच्चक्खाइ ।

(ज) तयाणंतरं च णं तेमणविहिपरिमाणं^२ करेइ—नन्नत्थ सेहंब-दालियंविहि, अवसेसं सव्वं तेमणविहि पच्चक्खाइ ।

(झ) तयाणंतरं च णं पाणियविहिपरिमाणं^३ करेइ—नन्नत्थ एगेणं अंतलिक्खोदएणं, अवसेसं सव्वं पाणियविहि पच्चक्खाइ ।

(ञ) तयाणंतरं च णं मुहवासविहिपरिमाणं करेइ—नन्नत्थ पंचसोगंधि-एणं^४ तंबोलेणं, अवसेसं सव्वं मुहवासविहि पच्चक्खाइ ॥

३०. तयाणंतरं च णं चउव्विहं अणट्टादंडं^५ पच्चक्खाइ, तं जहा—१. अवज्झाणाचरितं^६ २. पमायाचरितं^७ ३. हिसप्पयाणं^८ ४. पावकम्मोवदेसे ॥

अतियार-पदं

३१. आणंदाइ^९ ! समणे भगवं महावीरे आणंदं समणोवासगं एवं वयासी—एवं खलु आणंदाइ ! समणोवासएणं^{१०} अभिगयजीवाजीवेणं^{११} *उवलद्धपुण्णपावेणं आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसलेणं असहेज्जेणं, देवासुर-गाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-क्किणर-किपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहि देवगणेहि निग्गंथाओ पावयणाओ^{१२} अणइक्कमणिज्जेणं सम्मत्तस्स पंच 'अतियारा पेयाला'^{१३} जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. संका २. कंखा ३. वित्तिगिच्छा^{१४} ४. परपासंडपसंसा ५. परपासंडसंथवो^{१५} ॥

३२. तयाणंतरं च णं थूलयस्स पाणाइवायवेरमणस्स^{१६} समणोवासएणं 'पंच अतियारा

१. *माचुरतेणं (क); *माधुरतेणं (ग) ।

२. जेवणं (क); जेमणं (ख, ग, घ) । 'तेमण'

इति पाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृतः । 'ग' प्रतौ वारद्वयमपि 'जेमण' शब्दस्य जकारोपरि सूक्ष्माक्षरेण 'ते' इति लिखितमस्ति ।

३. पाणितं (ग) ।

४. *सोगंधितेणं (ग); *सोगंधेणं (घ) ।

५. अनत्थं (ख) ।

६. *यरियं (ख) ।

७. *यरियं (क, ख) ।

८. *दि (क); *ति (ग) ।

९. *वासतेणं (ग, घ) ।

१०. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवेणं जाव अण-इक्कमणिज्जेणं ।

११. अतियारपेयाला (क, ग); अतिचारा पेयाला (घ) । पेयालति साराः प्रधानाः स्थूलत्वेन शक्यव्यपदेशत्वात् (उवासगदसाओ वृत्ति); पेयालं पेज्जल पमाणम्मि (देशीनाममाला ६।५७) ।

१२. *गिच्छा (क) ।

१३. शङ्काकाङ्क्षाविचिकित्साऽन्यदृष्टिप्रशंसा-संस्तबाः सम्यग्दृष्टेरतिचाराः (तत्त्वार्थसूत्र ७।१८) ।

१४. पाणादिवायं (क); पाणादिवायं (ग) ।

पेयाला" जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा — १. बंधे २. बहे ३. छविच्छेदे' ४. अतिभारे' ५. भत्तपाणवोच्छेदे" ॥

३३. 'तयाणंतरं च ण थूलयस्स मुसावायवेरमणस्स' समणोवासएणं 'पंच अतियारा' जाणियव्वा', न समायरियव्वा, तं जहा — १. सहसाभक्खाणे' २. रहस्सभक्खाणे' ३. 'सदारमंतभेए ४. मोसोवएसे'" ५. कूडलेहकरणे ॥"
३४. तयाणंतरं च ण थूलयस्स अदिण्णादाणवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा — १. तेणाहडे २. तक्करप्पभोगे'" ३. विरुद्धरज्जातिककमे ४. कूडतुल"-कूडमाणे ५. तप्पडिरुवगववहारे ॥
३५. तयाणंतरं च णं सदारसंतोसोए समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा — १. इत्तरियपरिग्गहियागमणे'" २. अपरिग्गहियागमणे ३. अणंगकिट्टा'" ४. परवीवाहकरणे'" ५. 'कामभोगे तिब्बाभिलासे'" ॥
३६. तयाणंतरं च णं इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पंच" अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा — १. खेत्तवत्थुपमाणातिककमे २. हिरणसुवण्ण-पमाणातिककमे ३. धणधणपमाणातिककमे ४. दुपयचउप्पयपमाणातिककमे ५. कुवियपमाणातिककमे ॥

१. पंचतियारपेयाला (क), पंचतियारा पेयाला (घ) ।
२. °च्छेए (क,ख,घ) ।
३. अयि ° (क), अइ ° (ख,घ) ।
४. °वोच्छेए (क,ख); °वोच्छेए (घ) ।
५. थूलगमुसावाय ° (क,ग,घ) ।
६. पंचतियारा (क,ग,घ) । अस्मिन् सूत्रे तथा उत्तरवर्तिअतिचारसूत्रेषु 'पेयाला' शब्दः साक्षात् लिखितो नास्ति ।
७. थूलगमुसावायस्स पंचविहे पणस्से, तंजहा — कण्णालियं, गोवालियं, भोमालियं, णासा-बहारो, कूडसक्खेज्जं संधिकरणे । थूलगमुसा-वायस्स पंच अतियारा जाणियव्वा (स) ।
८. सहसभक्खाणे (क)
९. रहसभक्खाणे (क); रहसाभक्खाणे (ख,घ) ।
१०. मोसोवएसे सदारमंतभेए (क) ।
११. वाचनान्तरे तु - कन्नालीयं, गवालीयं, भूमा-लियं, नासावहारं, कूडसक्खेज्जं संधिकरणे त्ति पठ्यते । "भावश्यकादौ पुनरिमे स्थूलमृषा-वादभेदा उक्ताः" ततोयमर्थः संभाव्यते— एत एव प्रमादसहसाकाराज्जाभोगैरभिधीय-माना मृषावादविरतेरतिचारा भवन्त्याकुट्या च भंगा इति (वृ) ।
१२. तक्करपभोगे (क,घ) ।
१३. कूडतुल्ल (घ) ।
१४. इत्तरिय ° (क,ग) ।
१५. °कीडा (ख,घ) ।
१६. परविवाह ° (क) ।
१७. कामभोगे तिब्बाभिनिवेसे (क); कामभोगेसु तिब्बाभिनिवेसे (ख) ।
१८. इमे पंच (क) ।

३७. 'तयाणंतरं च णं दिसिद्वयस्स' समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा १. उड्ढदिसिपमाणातिक्कमे २. अहोदिसिपमाणा-
तिक्कमे ३. तिरियदिसिपमाणातिक्कमे ४. खेत्तवुड्ढी ५. सत्तिअंतरद्धा" ॥
३८. तयाणंतरं च णं उवभोगपरिभोगे दुविहे पणत्ते, तं जहा—'भोयणओ कम्मओ
य" ॥
- भोयणओ' समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं
जहा—१. सच्चित्ताहारे २. सच्चित्तपडिबद्धाहारे ३. अप्पउलिओसहिभक्खणया"
४. दुप्पउलिओसहिभक्खणया ५. तुच्छोसहिभक्खणया ।
- कम्मओ णं समणोवासएणं पण्णरस कम्मादाणाइं जाणियव्वाइं, न समायरि-
यव्वाइं, तं जहा—१. इंगालकम्मे २. वणकम्मे ३. 'साडीकम्मे ४. भाडीकम्मे
५. फोडीकम्मे' ६. दंतवाणिज्जे ७. लक्खवाणिज्जे ८. रसवाणिज्जे ९. विस-
वाणिज्जे १०. केसवाणिज्जे ११. जंतपीलणकम्मे १२. निल्लच्छणकम्मे १३. दव-
ग्गिदावणया १४. सरदहतलागपरिसोसणया" १५. असतीजणपोसणया" ॥
३९. तयाणंतरं च णं अणट्ठादंडवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा,
न समायरियव्वा, तं जहा—१. कंदप्पे २. कुक्कुडए" ३. मोहरिए ४. संजुत्ताहि-
करणे ५. उवभोगपरिभोगातिरित्ते" ॥

१. वृत्तिकृता अत्र एकं महत्त्वपूर्णं सूचनं कृत-
मस्ति—दिग्गतं शिक्षाव्रतानि च यद्यपि पूर्वं
नोक्तानि तथापि तत्र तानि द्रष्टव्यान्यति-
चारभणनम्यान्यथा निरवकाशता स्यादिहेति,
कथमन्यथा प्रागुक्तम्—दुवालमविहं सावग-
धम्मं पडिबज्जिस्सामीति ? कथं वा
वक्ष्यति—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिबज्ज-
इति, अथवा सामायिकादीनामिस्वरकालीन-
त्वेन प्रतिनियतकालकरणीयत्वात् न
तदैव तान्यसौ प्रतिपन्नवान्, दिग्गतं च
विरतेरभावात् उचित्तावसरे तु प्रतिपत्स्यते
इति भगवतस्तदतिचारवर्जनोपदेशनमुप-
पन्नम् । यच्चोक्तं द्वादशविधं गृहिधर्मं प्रति-
पत्स्ये, यच्च वक्ष्यति द्वादशविधं श्रावकधर्मं
प्रतिपद्यते, तद् यथा कालं तत्करणाभ्युपग-
मादनवधमवसेयम् (वृ) ।
२. दिसि विदिसि (ख, घ) ।
३. उड्ढदिसाइक्कमे (गुपा) ।
४. सइ° (ख, घ) ।
५. भोयणओ य कम्मओ य (क); भोयणतो
कम्मतो (ख) ।
६. तत्थ णं भोयणओ (ख) ।
७. व्या० वि०—अप्पउलि + ओसहि° = अप्प-
उलिओसहि° ।
८. साडीकम्मे य भाडीकम्मे य फोडीकम्मे
य (ख) ।
९. 'दंतवाणिज्जे' इत्यनन्तरं पाठभिल्लता इत्यते—
°केसवाणिज्जे विसवाणिज्जे (क); रस-
वाणिज्जे लक्खवाणिज्जे (ग); केसवाणिज्जे
रसवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे विसवाणिज्जे (घ) ।
१०. °तलाय° (क); तलायसोसणया (ख);
तलावसोसणया (घ) ।
११. असति° (क, ग); असइ° (घ) ।
१२. कुक्कुटिए (क) ।
१३. °भोगाहरित्ते (क) ।

४०. तयाणंतरं च णं सामाइयस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. मणदुप्पणिहाणे २. वइदुप्पणिहाणे ३. कायदुप्पणिहाणे ४. सामाइयस्स सतिअकरणया ५. सामाइयस्स अणवट्टियस्स करणया ॥
४१. तयाणंतरं च णं देसावगासियस्स^१ समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. अणवणप्पओगे २. पेस[सा ?]णवणप्पओगे^२ ३. सहाणुवाए ४. रुवाणुवाए ५. बहियापोग्गलपक्खेवे^३ ॥
४२. तयाणंतरं च णं पोसहोववासस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-सिज्जासंधारे^४ २. अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-सिज्जासंधारे ३. अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-उच्चारपासवणभूमी ४. अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-उच्चारपासवणभूमी ५. पोसहोववासस्स^५ सम्मं^६ अणणुपालणया ॥
४३. तयाणंतरं च णं अहासंविभागस्स समणोवासएणं पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. सच्चित्तनिक्खेवणया^७ २. सच्चित्तपिहणया^८ ३. कालातिकम्मे^९ ४. परववदेसे^{१०} ५. मच्छरियया^{११} ॥
४४. तयाणंतरं च णं अपच्छिममारणंतियसलेहणाभूसणाराहणाए^{१२} पंच अतियारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा—१. इहलोगासंसप्पओगे २. परलोगासंसप्पओगे ३. जीवियासंसप्पओगे ४. मरणासंसप्पओगे ५. कामभोगासंसप्पओगे ॥

आणंद-अभिगह-पदं

४५. तए णं से आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता समणं

१. वय^० (घ) ।

२. ^०कासियस्स (ग) ।

३. क, ख, घ, आदर्शेषु 'पेसवण' इति पाठो लभ्यते, किन्तु 'पेसवण' शब्दस्यार्थो दुरधिगमोस्ति । प्रेषणस्यार्थः 'पेसण' शब्देनापि सूचितो भवेत् । 'ग' आदर्श 'पेसणवण' इति पाठो विद्यते । वृत्त्यनुसारेण अत्रापि आनयनस्यार्थोस्ति, यथा—“बलाद् विनियोज्यः प्रेक्ष्यस्तस्य प्रयोगो यथाऽभिगृहीतप्रविचारदेशव्यतिक्रमभयात् त्वयाऽवश्यमेव तत्र गत्वा मम शवाद्यानेयम्” (वृ) तेनात्र 'पेसणवण' इति

पाठः समीचीनः प्रतिभाति ।

४. ^०पोग्गलक्खेवे (क) ।

५. ^०संधारए (ग) ।

६. पोसहस्स (ग) ।

७. वृत्तौ 'सम्म' शब्दो न उक्त्यातो दृश्यते ।

८. ^०निक्खवणयाए (क) ।

९. ^०पिहणयाए (क); ^०पेहणया (ख, घ) ।

१०. कालातिकम्मदाणे (ख) ।

११. परओवदेसे (ख) ।

१२. मच्छरया (ख) ।

१३. ^०राहणयाते (क) ।

भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—तो खलु मे भंते ! कप्पइ अज्जप्पभिइं अण्णउत्थिए वा अण्णउत्थिय-देवयाणि वा अण्ण-उत्थिय-परिग्गहियाणि वा अरहंतचेइयाइं वंदित्ते वा नमंसित्ते वा, पुब्बि अणालत्तेणं आलवित्ते वा संलवित्ते वा, तेसि असणं वा पाणं वा खाइम वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पदाउं वा, नन्नत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तिकंतारेणं ।

कप्पइ मे समणे निग्गंथे 'फासु-एसणिज्जेणं' असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुच्छणेणं पीढ-फल-सेज्जा-संधारएणं ओसह-भेसज्जेणं य पडिलाभेमाणस्स विहरित्ते—त्ति कट्टु इमं ग्याख्वं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, अभिगिण्हित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठाइं आदियइ, आदित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव वाणियगामे नयरे, [जेणेव सए गिहे जेणेव सिवणंदा भारिया ?] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिवणंदं भारियं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! माए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते । से वि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं गच्छाहि" णं तुमं देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीरं वंदाहि" •णमंसाहि सक्कारेहि सम्माणेहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं • पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि ॥

सिवणंदाए वंदणट्ठ-गमण-पदं

४६. तए णं सा सिवणंदा भारिया आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठुट्ठु"-

- | | |
|--|--|
| १. अज्जप्पभिइए (ख); अज्जपभिइं (घ) । | ५. •प्पिया (घ) । |
| २. •उत्थिया (ग, घ) । | ६. मते (ग) । |
| ३. चेइयाइं (क, ख, ग); कोष्ठकसंकेतितामु | १०. अभिरुतिते (ग) । |
| तिसृप्पवि प्रतिषु 'अरहंतचेइयाइं' पाठस्य | ११. गच्छ (क, ख, घ); गच्छह (ग) । |
| स्थाने केवलं 'चेइयाइं' इति पाठो लभ्यते । | १२. सं० पा०—वंदाहि जाव पज्जुवासाहि । |
| वृत्ती 'अरहंत' शब्दो व्याख्यातोऽस्ति । | १३. सं० पा०—हट्ठुट्ठु कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, |
| ४. विसी० (क, ग) । | २त्ता एवं वयासी—खिप्पामेव लहुकरण जाव |
| ५. फासुत्तेसणिज्जेणं (क); फासुएणं एसणिज्जेणं | पज्जुवासइ । प्रस्तुतसंक्षिप्तपाठस्य सूचकचिन्हं |
| (ख) । | नोपलभ्यते । अस्य पूतिः औपपातिकस्य |
| ६. सप्तमाध्ययनानुसारेण असी पाठः उपयुक्तः | (मू० ८०), प्रस्तुतसूत्रवतिसप्तमाध्ययनस्य |
| प्रतिभाति । | (७।३३) तथा भगवत्याः (६।१४१-१४६) |
| ७. सिवणंदा (क), सिवणंदं (घ) । | आधारेण कृतास्ति । |

●चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिगगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं सामि ! त्ति आणंदस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ ॥

४७. तए णं से आणंदे समणोवासए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइयं समसुरवालिहाण-सम-
लिहियसिगएहिं जंबूणयामयकलावजुत्त-पइविसिट्ठएहिं रययामयघंट-सुत्तरज्जुग-
वरकंचणखचियनत्थपगगहोग्गहियएहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं
नाणामणिकणग-घटियाजालपरिगयं सुजायजुगजुत्त-उज्जुग-पसत्थसुविरइय-
निम्मियं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता
मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

४८. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-
चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया
करयलपरिगगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं सामि ! त्ति आणाए
विणएणं वयणं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जोइयं जाव'
धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

४९. तए णं सा सिवणंदा भारिया ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगलपायच्छित्ता
सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा
चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहिता वाणियगामं
नयरं मज्झंमज्झेणं निगगच्छइ, निगगच्छित्ता जेणेव दूइपलासए चेइए तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता
चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता
णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे मुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहे विणएणं
पंजलियडा० पज्जुवासइ ॥

५०. 'तए णं' समणे भगवं महावीरे सिवणंदाए तीसे य' महइमहालियाए' परिसाए
जाव' धम्मं परिकहेइ' ॥

सिवणंदाए गिहिधम्म-पडिबत्ति-पवं

५१. तए णं सा सिवणंदा भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं
सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-●चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-

१. उवा० १।४७ ।

२. ततो (क, ख) ।

३. × (क) ।

४. महति० (क) ।

५. ओ० सू० ७१-७७ ।

६. कहेइ (क, ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव गिहिधम्मं ।

विसप्पमाणहियया उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं तिकखुत्तो
आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—
सट्ठहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं,
रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अट्ठभट्टेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।
एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अबितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छिय-
मेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! मे जहेयं तुब्भे
वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बह्वे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-
इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभि इया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं
पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं
पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—
दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

५२. ताए णं सिवणंदा भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं
सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं० गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणं
भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं
दुरुहइ, दुरुहिता जामेव दिसं पाउब्भूया, तामेव दिसं पडिगया ॥

गोयमपुच्छा-पवं

५३. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता
एवं वयासी—पहू णं भंते ! आणंदे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे'
•भवित्ता अगाराओ अणगारियं० पव्वइत्तए' ?

नो इणट्ठे' समट्ठे ।

गोयमा ! आणंदे णं समणोवासए बहूइ वासाइं समणोवासगपरियाणं' पाउणि-
हितं, पाउणित्ता' •एककारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता,
मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलो-
इय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा० सोहम्मं कप्पे अरुणाभे
विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं अत्येगइयाणं देवाणं चत्तारि

१. दिसि (ख, घ) ।

२. दिसि (क, ख, घ) ।

३. सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइत्तए ।

४. पव्वसित्तते (ग) ।

५. तिणट्ठे (क, घ) ।

६. ०परियायं (घ) ।

७. पाहुणीहिति (क) ।

८. सं० पा०—पाउणित्ता जाव सोहम्मं ।

पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता' । तत्थ णं आणंदस्स वि समणोवासगस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता' [भविस्सई ?] ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

५४. तए णं समणे भगवं महावीरे 'अण्णदा कदाइ' •वाणियगामाओ नयरओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमिता बहिया जणवयविहारं • विहरइ ॥

आणंदस्स समणोवासग-चरिया-पदं

५५. तए णं से आणंदे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे' •उवलद्वपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसले असहेज्जे, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देव-गणेहिं निगंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निगंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ते, अयमाउसो ! निगंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउर-परघरदार-प्पवेसे चाउदसट्ठमुद्धिट्ठ-पुण्णमासिणीसु पडिपुण्ण पोसहं सम्मं अणुपालेत्ता समणे निगंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं • पडिलाभे-माणे विहरइ ॥

सिवणंदाए समणोवासिय-चरिया-पदं

५६. तए णं सा सिवणंदा भारिया समणोवासिया जाया'—•अभिगयजीवाजीवा उवलद्वपुण्णपावा आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्खकुसला असहेज्जा, देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निगंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, निगंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ता, अयमाउसो ! निगंथे

१. अतोप्रवर्ती 'पण्णत्ता' पर्यन्तः पाठः अत्र अनावश्यकः प्रतीयते, असौ चतुरशीतितमे सूत्रे प्रासंगिकोऽस्ति । किन्तु सर्वासु प्रतिषु कथमपि समागतोऽसौ लभ्यते ।

२. पूर्ववाक्ये 'उववज्जिहति' इति भविष्यत्-कालीनं क्रियापदं युज्यते ।

३. सं० पा० — अण्णदा कदाइ बहिया जाव विहरइ । •कयायि (क); अन्नया कयाइ (ख); अन्नया कयाइ (घ) ।

४. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव पडि-लाभेमाणे ।

५. सं० पा०—जाया जाव पडिलाभेमाणी ।

पावयणे अट्टे अयं परमट्टे सेसे अणट्टे ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्तंतेउर-
परघरदार-प्पवेसा चाउइसट्टमुहिट्टपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपा-
लेत्ता समणे निगगंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-
कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिणं य पीढ-फलग-सेज्जा-संधार-
एणं० पडिलाभेमाणी बिहरइ ॥

आणंदस्स धम्मजागरिया-पदं

५७. तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं 'सोल-व्वय-गुण'-वेरमण-
पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोइस संवच्छराइं वीइक्कं-
ताइं । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरे' वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-
वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए
पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणियगामे नयरे बहूणं
राईसर'-●तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाणं बहूसु
कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्जेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य
ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे०, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स' ●मेढी
पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए
चक्खुभूए सब्बकज्जवड्ढावए०, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स
भगवओ महावीरस्स अंतियं' धम्मपण्णात्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए । तं
सेयं खलु ममं' कल्लं' ●पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलि-
यम्मि अहं पंडुरे पहाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्वारागसरिसे कमला-
गरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरं सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा० जलंते विपुलं'
असण-पाण-खाइम-साइमं' ●उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-
परिजणं आमंतेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं विपुलेणं असण-
पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंधमल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव
मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स पुरओ० जेट्टपुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता,
तं मित्त'-●नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं० जेट्टपुत्तं च आपुच्छित्ता,

१. ० वतेहि (ग) ।

२. सोलगुणव्वय (क) ।

३. अंतरे (क, ग) ।

४. सं० पा०—राईसर जाव सयस्स ।

५. सं० पा०—कुडुंबस्स जाव आधारे तं ।

६. अंतियं (ग) ।

७. मम (ब) ।

८. सं० पा०—कल्लं जाव जलंते ।

९. विडलं (ख) ।

१०. सं० पा०—साइमं जहा पूरणो जाव जेट्टपुत्तं ।

११. सं० पा०—मित्त जाव जेट्टपुत्तं ।

‘कोल्लाए सण्णिवेसे’ नायकुलंसि’ पोसहसालं पडिलेहिता, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जिता णं विहरित्तए—एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्लं’ •पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ° विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्ख-डावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं आमंतेइ, आमंतेत्ता ततो पच्छा ण्हाए’ •कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए ° अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे भोयणवेलाए भोयण-मंडवंसि सुहासणवरगए, तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं सद्धिं तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसादेमाणे विसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ । जिमियभुत्तुत्तरागए णं आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए, तं मित्त-’-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंधमल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स ° पुरओ जेट्ठपुत्तं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! अहं वाणियगामे नयरे बहूणं’ •जाव’ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव’ सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्म-पण्णत्ति उवसंपज्जिता णं ° विहरित्तए । तं सेयं खलु मम इदाणिं तुमं सयस्स कुडुंबस्स मेढि पमाणं आहारं आलंबणं चक्खुं ठावेत्ता’, •तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं तुमं च आपुच्छित्ता कोल्लाए सण्णिवेसे नायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहिता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जिता णं ° विहरित्तए ॥

५८. तए णं [से ?] जेट्ठपुत्ते आणंदस्स समणोवासगस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति ॥

५९. तए णं से आणंदे समणोवासए तस्सेव मित्त-’-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स ° पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुंबे” ठावेति, ठावेत्ता एवं वयासी—मा णं

१. कोल्लागसण्णि ° (ग) ।

पुरओ ।

२. नातकुलंसि (ग) ।

६. सं० पा०—बहूणं राईसर जहा अंतियं जाव विहरित्तए ।

३. सं० पा०—कल्लं विउलं असणं । कल्लं विउलं तद्देव जिमियभुत्तुत्तरागए (क, ख) ।

७, ८. उवा० १।१३ ।

४. सं० पा०—ण्हाए जाव अप्पमहग्घा ° ।

९. सं० पा०—ठावेत्ता जाव विहरित्तए ।

५. सं० पा०—तं मित्त जाव विउलेणं पुक्क ५

१०. सं० पा०—मित्त जाव पुरओ ।

सक्कारेइ सम्माणेइ, २ता तस्सेव मित्त जाव

११. कुडुंबे (ग); कुडुंबे (घ) ।

देवाणुप्पिया ! तुम्हे अज्जप्पमिइं केइ ममं बहूसु कज्जेसु^१ य^२ कारणेसु य^३ मंतेसु य^४ कुडुबेसु य^५ गुज्जेसु य^६ रहस्सेसु य^७ निच्छएसु य^८ ववहारेसु य^९ । आपुच्छउ वा पडिपुच्छउ वा, ममं अट्टाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडेउ वा उवक्करेउ वा ॥

६०. तए णं से आणंदे समणोवासए जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं^१ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे, जेणेव नायकुले, जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं दुरुहइ^२, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए^३ । बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्त-सत्थमुसले एगे अब्बीए^४ । दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

आणंदस्स उवासगपडिमा-पडिबत्ति-पदं

६१. तए णं से आणंदे समणोवासए पठमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥
 ६२. [तए णं से आणंदे समणोवासए^१ ?] पठमं उवासगपडिमं^२ अहासुत्तं अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
 ६३. तए णं से आणंदे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एककारसमं^३ । उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ^४ । आराहेइ ॥
 ६४. तए णं से आणंदे समणोवासए इमेणं एयाख्वेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के^५ । लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्वे किडिकिडिया-भूए^६ । किसे धमणिसंतए जाए ॥

आणंदस्स अणसण-पदं

६५. तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता^१ । वरत्तकाल-

१. सं० पा० — कज्जेसु य आपुच्छउ वा ।

२. मज्झं मज्झं (क) ।

३. इहति (क) ।

४. सं० पा० — पोसहिए^३ ।

५. भगवती (२।५६) सूत्रानुसारेण कोऽकान्त-
 गंतपाठक्रमः संभाव्यते ।

६. उपासकप्रतिमानां विवरणं ज्ञातुं द्रष्टव्या
 दशाश्रुतस्कन्धस्य सप्तमीदशा ।

७. सं० पा० — एककारसमं जाव आराहेइ ।

८. सं० पा० — सुक्के जाव किसे ।

९. सं० पा० — पुव्वरत्ता जाव धम्मजगरिवं ।

समयंसि० धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोवद्दं सुंक्खे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं^१ ० एयारुवेणं ओरालेणं विउलेणं पयस्सेणं^२ कण्हिणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे ० कण्हिसंतए जाए । तं अत्थि ता^३ मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सज्जा-विद्द-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सज्जा-विद्द-संवेगे, जाव 'य मे'^४ धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे^५ सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव^६ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरत्स्सिम्मि दिणयरे तेयसा-जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरत्स्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतिय^७ संलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए ० कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

आणंदस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पदं

६६. तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं^१ परिणामेणं, लेसाहिं विमुज्झमाणीहिं, तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमे णं लवणसमुद्दे^२ पंचजोयणसयाइ^३ खेत्तं जाणइ पासइ । १० दक्खिणे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइ^४ खेत्तं जाणइ पासइ । पच्चत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइ^५ खेत्तं जाणइ पासइ ० । उत्तरे णं जाव चुल्लहिमवंतं वासधरपव्वयं जाणइ पासइ । उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणइ पासइ । अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुत्तं^६ नरयं चउरासीतिवाससहस्सट्ठितियं जाणइ पासइ ॥

गोयमस्स आगमण-पदं

६७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए ॥

६८. परिसा निग्गया जाव^१ पडिगया ॥

१. सं० पा०—इमेणं जाव धम्मणिसंतए ।

२. जा (ग) ।

३. सयमेव (क) ।

४. णो (क) ।

५. उवा० १।५७ ।

६. सं० पा०—मारणंतिय जाव कालं ।

७. सुहेणं (क); सोभणेणं (ग) ।

८. ० समुद्दे ण (क) ।

९. ० सतियं (क, ख); ० सइयं (ग) ।

१०. सं० पा०—एवं दक्खिणे णं पच्चत्थिमे णं च ।

११. लोलुयं अच्चुत्तं (ख) ।

१२. ओ० सू० ५२, ७८-८० ।

६६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे^१ अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे गोयमसगोत्ते णं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसह-
नारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे
ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-
विउलतेयलेस्से छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं
भावेमाणे विहरइ ॥
७०. तए णं से भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ,
बिइयाए पोरिसीए आणं क्रियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते
मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइ, पडिलेहेइ पडिलेहेत्ता भाय-
णाइ^२ पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइ उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं
महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ,
वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए
[समाणे ?] छट्ठक्खमणपारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्च-नीच-मज्झिमाइं
कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।
अहासुंह देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेह ॥
७१. तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स
भगवओ महावीरस्स अतियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडि-
णिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठोए पुरओ रियं^३
सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव वाणियगामे नयरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं
अडइ ॥
७२. तए णं से भगवं गोयमे वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घर-
समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेत्ता वाणियगामाओ नयराओ पडिणिग्गच्छइ, पडिणिग्गच्छित्ता
कोल्लायस्स सण्णिवेसस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे बहुणसइं निसामेइ ।
बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ—
एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं
समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिमं^४ मारणंतिय-संलेहणा-भूसणा-भूसिए,
भत्तपाणपडियाइक्खिए कालं^० अणवकंसमाणे विहरइ ॥

१. जेट्ठे जहा पण्णत्तीए तहा भिक्खायरियाए

३. इरिय (क्व) ।

जाव अडमाणे (क, ग) ।

४. सं० पा०—अपच्छिम जाव अणवकंसमाणे ।

२. भायणवत्थाइं (क्व) ।

७३. तए णं तस्स गोयमस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं^१ सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे^२ अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—तं गच्छामि णं आणंदं समणोवासयं पासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे 'जेणेव पोसहसाला, जेणेव आणंदे समणोवासए', तेणेव उवागच्छइ ॥
७४. तए णं से आणंदे समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठं^३—'चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^४ हियए भगवं गोयमं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अहं इमेणं ओरालेणं^५ •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मणेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे^६ •धमणिसंतए जाए, णो संचाएमि देवाणुप्पियस्स अतियं पाउव्ववित्ता णं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादे (सु ?) अभिवंदित्तए । 'तुव्वे णं भंते ! इच्छाक्कारेणं^७ अणभिओएणं^८ इओ चेव एह, जेणं देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदामि णमंसामि ॥
७५. तए णं से भगवं गोयमे जेणेव आणंदे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ॥

आणंद-गोयम-संवाद-पदं

७६. तए णं से आणंदे समणोवासए भगवओ गोयमस्स तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदइ णमंसइ, वदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! गिहिणो गिहमज्जावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ ?
हंता अत्थि ।
जइ णं भंते ! गिहिणो^९ •गिहमज्जावसंतस्स ओहिणाणे^{१०} समुप्पज्जइ, एवं खलु भंते ! मम वि गिहिणो गिहमज्जावसंतस्स ओहिणाणे^{११} समुप्पण्णे—पुरत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं^{१२} •खेत्तं जाणामि पासामि । दक्खिणे णं लवणसमुद्दे पंच जोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि । पच्चत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंच जोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि । उत्तरे णं जाव चुल्लहिमवतं वासधरपव्वयं जाणामि पासामि । उट्ठं जाव सोहम्मं कप्पं जाणामि पासामि ।

१. एवं (ख) ।

२. अयमेयारूवे (क); अय इमेयारूवे (ख) ।

३. जेणेव आणंदे समणोवासए जेणेव पोसहसाला (क, ख, ग, घ); महाशतकाध्ययने—'जेणेव महासयणस्स समणोवासणस्स गिहे जेणेव महासयए समणोवासए' अयं क्रमो विद्यते । अत्राप्यसौ क्रमो युज्यते ।

४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठं जाव हियए ।

५. सं० पा०—उरालेणं जाव धमणिसंतए ।

६. इच्छाक्कारेणं (घ) ।

७. अणभिओणेणं (क, ख) ।

८. जा णं (क, ख, ग); जहा णं (घ) ।

९. सं० पा०—गिहिणो जाव समुप्पज्जइ ।

१०. ओहिणाणे (ग) ।

११. सं० पा०—पंचजोयणसयाइं जाव ओलुय-चुयं ।

अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए० लोलुयच्चुतं नरयं जाणामि पासामि ॥

७७. तए णं से भगवं गोयमे आणंदं समणोवासयं एवं वयासी—अत्थि णं आणंदा ! गिहिणो० *गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे० समुपज्जइ । नो चेव णं एमहालए । तं णं तुमं आणंदा ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि० *पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणाए अब्भुट्टाहि अहारिहं पायच्छित्तं० तवोकम्मं पडिवज्जाहि ॥

७८. तए णं से आणंदे समणोवासाए भगवं गोयमं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! जिणवयणे संताणं० तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं आलोइज्जइ० *निदिज्जइ गरिहिज्जइ विउट्टिज्जइ विसोहिज्जइ अकरणयाए अब्भुट्टिज्जइ पडिक्कमिज्जइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं० पडिवज्जिज्जइ ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

जइ णं भंते ! जिणवयणे संताणं० *तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं० भावाणं नो आलोइज्जइ० *नो पडिक्कमिज्जइ नो निदिज्जइ नो गरिहिज्जइ नो विउट्टिज्जइ नो विसोहिज्जइ अकरणयाए नो अब्भुट्टिज्जइ अहारिहं पायच्छित्तं० तवोकम्मं० नो पडिवज्जिज्जइ, तं णं भंते ! तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएहं० *पडिक्कमेह निंदेह गरिहेह विउट्टेह विसोहेह अकरणाए अब्भुट्टेह अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं० पडिवज्जेह० ॥

७९. तए णं से भगवं गोयमे आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छसमावण्णे० आणंदस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दूइपलासे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे०, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणा-गमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता

१. लोलुयं अच्चुतं (ख) ।

२. सं० पा०—गिहिणो जाव समुप्पज्जइ ।

३. सं० पा०—आलोएहि जाव तवोकम्मं । अत्र स्थानांगे प्रस्तुतवृत्तौ च किञ्चित् पाठभेदो विद्यते—गयच्छित्तं तवोकम्मं (स्थानांग ३।३३८) तवोकम्मं पायच्छित्तं (वृत्ति अध्ययन ३) प्रतिषु 'आलोएहि जाव तवो-कम्मं' इति पाठसंक्षेपो लभ्यते, तेन स्थाना-गानुसारी पाठ एव भूले स्वीकृतः ।

४. सच्चाणं (क), संभासे (ख) ।

५. सं० पा०—आलोइज्जइ जाव पडिवज्जि-ज्जइ ।

६. सं० पा०—संताणं जाव भावाणं; सच्चाणं (ग); संभासे (ख) ।

७. सं० पा०—आलोइज्जइ जाव तवोकम्मं ।

८. तवे० (क) ।

९. सं० पा०—आलोएह जाव पडिवज्जेह ।

१०. पडिवज्जह (क, ख, घ) ।

११. वितिगिच्छ० (क); वितिगिच्छा० (ख, घ) ।

१२. महावीरे जाव भत्तपाणं (ग) ।

एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अहं तुभेहि ऋभणुण्णाए' *समाणे वाणियगामे नयरे भिक्खायरियाए ऋडमाणे ऋहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिग्गाहेमि, पडिग्गाहेत्ता वाणियगामाओ नयराओ पडिणिग्गच्छामि, पडिणिग्गच्छित्ता कोल्लायस्स सण्णिवेसस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि । बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महारवीस्स अंतेवासी आणंदे नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणंतियसनेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ।

तए णं मम बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—तं गच्छामि णं आणंदं समणोवासयं पासामि—एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे, जेणेव पोसहसाला, जेणेव आणंदे समणोवासए तेणेव उवागच्छामि ।

तए णं से आणंदे समणोवासए ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए ममं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी --एवं खलु भंते ! अहं इमेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए, णो संचाएमि देवाणुप्पियस्स अंतियं पाउभवित्ता णं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादे [सु ?] अभिवंदित्तए । तुभे णं भंते ! इच्छक्कारेणं अणभिओगेणं इओ चेव एह, जेणं देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदामि णमंसामि ।

तए णं अहं जेणेव आणंदे समणोवासए, तेणेव उवागच्छामि । तए णं से आणंदे समणोवासए ममं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ ?

हता अत्थि ।

जइ णं भंते ! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ, एवं खलु भंते ! मम वि गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पण्णे—पुरत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि । दक्खिणे णं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणामि पासामि । पच्चत्थिमे णं लवणसमुद्दे पंचजोयण-सयाइं खेत्तं जाणामि पासामि । उत्तरे णं जाव चुल्लहिमवतं वासघरपव्वयं जाणामि पासामि । उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणामि पासामि । अहे जाव

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीतिवासमहस्सट्ठितियं जाणामि पासामि ।

तए णं अहं आणंदं समणोवासयं एवं वइत्था—अत्थि णं आणंदा ! गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ । नो चेव णं एमहालाए । तं णं तुमं आणंदा ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव' अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि ।

तए णं से आणंदे ममं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! जिणवयणे संताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं आलोइज्जइ जाव' अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जिज्जइ ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

जइ णं भंते ! जिणवयणे संताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं नो आलोइज्जइ जाव' अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं नो पडिवज्जिज्जइ, तं णं भंते ! तुव्भे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएह जाव' अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेह । ॥

८०. तए णं अहं आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे मंकिए कंखिए वित्ति-
गिच्छसमावण्णे आणंदस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पडिणिक्खमामि,
पडिणिक्खमित्ता जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए । 'तं णं' भंते ! किं आणंदेणं
समणोवासएणं तस्स ठाणस्स आलोएयव्वं' *पडिक्कमेयव्वं निदेयव्वं गरिहेयव्वं
विउट्ठेयव्वं विसोहेयव्वं अकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं
पडिवज्जेयव्वं ? उदाहु मए ?

भगवओ उत्तर-पदं

८१. गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एव वयासी—गोयमा ! तुमं
चेव णं तस्स ठाणस्स आलोएहि' जाव' *अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं
पडिवज्जाहि, आणंदं च समणोवासयं एयमट्ठं खामेहि ॥

गोयमस्स खामणा-पदं

८२. तए णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहं त्ति एयमट्ठं विणएणं
पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स ओलाएइ' *पडिक्कमइ निदइ गरिहइ

१. उवा० १।७७ ।

२, ३, ४. उवा० १।७८ ।

५. तए णं (क); ते णं (घ) ।

६. सं० पा०—आलोएयव्वं जाव पडिवज्जेयव्वं ।

७. सं० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि ।

८. उवा० १।७७ ।

९. सं० पा०—आलोएइ जाव पडिवज्जइ ।

विउट्टइ विसोहइ अकरणयाए अम्भुट्टइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं^०
पडिवज्जइ, आणंदं च समणोवासयं एयमट्टं खामेइ ॥

भगवन्नो जणवयविहार-पदं

८३. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ बहिया जणवयविहारं^१ विहरइ ॥

आणंदस्स समाहिमरण-पदं

८४. तए णं से आणंदे समणोवासए बहूहि सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-
पोसहोववासेहि अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता,
एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए
अत्ताणं^२ भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ^३ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिवकंते,
समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसगस्स^४ महा-
विमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे णं 'अरुणाभे विमाणे'^५ देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं
अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पणत्ता । तत्थ णं आणंदस्स
वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पणत्ता ।

८५. आणंदे^६ णं भंते ! देवे ताओ^७ देवलोगाओ^८ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं
अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं
काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

८६. 'एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं पढमस्स
अज्झयणस्स अयमट्टे पणत्ते^९ ॥

— — —

१. जणवतं विहारं (घ) ।

२. अप्पाणं (ग) ।

३. भत्ताति (क, ग) ।

४. °वडेंसगस्स (घ) ।

५. अरुणे विमाणे (क); अरुणेहि विमाणेहि (ख) ।

६. तत्थ णं आणंदे (क) ।

७. ततो (ख) ।

८. देवलोगलोगाओ (क) ।

९. सं० पा—निक्खेवो पढमस्स ।

वीअं अजभयणं

कामदेवे

उक्तेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं पढमस्स अजभयणस्स' अयमद्वे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अजभयणस्स के अद्वे पण्णत्ते ?

कामदेवगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी । पुण्णभदे चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. 'तत्थ णं चंपाए नयरीए कामदेवे नामं गाहावई परिवसइ—अइहे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं कामदेवस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्डिपउत्ताओ', छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. से णं कामदेवे गाहावई बहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१. ना० १।१।७ ।

२. वग्गस्स (क) ।

३. सं० पा०—कामदेवे गाहावई । अद्दा भारिया ।

छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वड्डि-

पउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ व्वया

दसगोसाहस्सिएणं वएणं ।

४. उवा० १।११ ।

५. बुद्धि० (ख,घ) ।

६. उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

६. तस्स णं कामदेवस्स गाहावइस्स भद्दा नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा जाव' माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

महावीर-समवसरण-पदं

७. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव' जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
८. परिसा निग्गया ॥
९. कूणिए राया जहा, तथा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
१०. तए णं से कामदेवे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाने—“एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुब्बाणुपुण्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव चंपाए नयरीए बहिया पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।” तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स घम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणा-लंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकांरेंटमल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं चंपं नयारि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्ससमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥
११. तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥
१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

१. उवा० १।१४ ।

३. ओ० सू० १६, २२ ।

२. सं० पा०—समोसरणं जहा आणंदो तथा निग्गयो । तहेव सावयधम्मं पडिज्जइ । सा चेव वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्तं ।

४. ओ० सू० ५३-६६ ।

५. ओ० सू० ७१-७७ ।

कामदेवस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं कामदेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुत्तु-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासो—सद्धहामि णं भंते ! निगगंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निगगंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निगगंथं पावयणं, अब्भुट्टेमि णं भंते ! निगगंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवित्तहमेयं भंते ! असदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! मे जहेयं तुव्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इव्वभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहामुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

१४. तए णं से कामदेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए^१ सावयधम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ चंपाए नयरीए पुण्णभद्दाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कामदेवस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से कामदेवे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव^२ समणे निगगंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुच्छणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा संधारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

भद्दाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा भद्दा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव^३ समणे निगगंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-

१. पू०—उवा० १।२४-५३ ।

३. उवा० १।५६ ।

२. उवा० १।५५

कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पोढ-फलग-सेज्जा-संधार-
एणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

कामदेवस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स उच्चावएहि सील-व्वय-गुण-वेरमण-
पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संबच्छराइ वीइक्कं-
ताइ । पण्णरसमस्स संबच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-
वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए
पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं चंपाए नयरीए बहूणं
जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव'
सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ
महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए' ॥
१९. तए णं से कामदेवे समणोवासए° जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-
परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता° सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ,
पडिणिक्खमित्ता चंपं नयरि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव
पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता
उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंधारयं संधरेइ, संधरेत्ता
दब्भसंधारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी उम्मुक्कमणि-
सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबोए दब्भसंधारो-
वगए° समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ ॥

कामदेवस्स पिसायरूव-कय-उवसग-पदं

२०. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे
मायी मिच्छदिट्ठी° अंतियं पाउब्भूए ॥
२१. तए णं से देवे एगं महं पिसायरूवं विउव्वइ । तस्स णं दिव्वस्स° पिसायरूवस्स
इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते—सोसं से गोकिलंज-संठाण-संठिय°, सालि-

१,२. उवा० १।१३ ।

३. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

४. सं० पा०—आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला
तेणेव उवागच्छइ, २ ता जहा आणंदो जाव
समणस्स ।

५. मिच्छा° (क,घ) ।

६. देवस्स (ख,घ) ।

७. पुस्तकान्तरे विशेषणांतरमुपलभ्यते—
'विगयकप्पयनिमं', क्वचित्, 'वियडकोप्पर-
निमं' (वृ) ।

भसेल्ल-सरिसा से केसा कविलतेएणं दिप्पमाणा, 'उट्टिया-कमल्ल-संठाण-संठियं'
निडालं, मुगुंसपुच्छं व तस्स भुमकाओ' फुमफुमाओ' विगय-बीभत्स'-
दंसणाओ, सीसघडिविणिग्गयाइं अच्छीणि विगय-बीभत्स'-दंसणाइं, कण्णा
जहं सुप्प-कत्तरं चेव विगय-बीभत्स'-दंसणिज्जा, उरवमपुडसंनिभा' से नासा,
भुसिरा जमल-चुल्ली-संठाण-संठिया दो वि तस्स नासापुडया", 'घोडयपुच्छं'
व तस्स मंसूइं कविल-कविलाइं विगय-बीभत्स'-दंसणाइं", 'उट्टा उट्टस्स चेव
लंबा", फालसरिसा से दंता, जिम्मा जहं सुप्प-कत्तरं चेव 'विगय-बीभत्स'-
दंसणिज्जा", हल-कुडाल"-संठिया से हणुया, गल्ल-कडिल्लं व तस्स खड्डु"
फुट्टं 'कविलं फरुसं महल्लं", मुइंगाकारोवमे से खंधे, पुरवरकवाडोवमे से वच्छे,
कोट्टिया-संठाण-संठिया दो वि तस्स बाहा, निसापाहाण-संठाण-संठिया दो वि
तस्स अग्गहत्था, निसालोढ-संठाण-संठियाओ हत्थेसु भंगुलीओ, सिप्पि-पुडग-
संठिया से नक्खा", ण्हाविय-पसेवओ" व्व उरम्मि" लंबंति दो वि तस्स थणया,
पोट्टं अयकोट्टओ व्व वट्टं, 'पाण-कलंद'"-सरिसा से नाही", सिक्कग-संठाण-
संठिए से नेत्ते, किण्णपुड-संठाण-संठिया दो वि तस्स वसणा, जमल-कोट्टिया-

- | | |
|--|---|
| १. कविला तेएण (क,ग,घ) । | (वृपा) । |
| २. महल्लउट्टिया ° (क,ख,ग); महल्लउट्टिया-
कमल्लसरिसां वमं (वृपा) । | १५. वृत्तावन्न अतिरिक्तपाठस्य उल्लेखोस्ति,
पाठान्तरे—'हिगुलयघाउकंदरबिलं व तस्स
वयणं' । |
| ३. भुमगाओ (ख); भुमकाओ (घ) । | |
| ४. फगुपुमाओ (क); जडिलजडिलाओ, जडिल
कुडिलाओ (वृपा) । | १६. कुडा (क); कुडाल (ख); कूडा (ग);
कुडाल (घ) । |
| ५. बीभच्छ (ख,घ) । | १७. खंडं (क,ख) । |
| ६. बीभच्छ (ख,घ) । | १८. कविलफरुसं महल्लं (क,ग); कविलफरिस-
महल्लं (घ) । |
| ७. जहा (ख) । | |
| ८. बीभच्छ (ख,घ) । | १९. नक्खा (ख); नक्खा (ग,घ); वाचनान्तरे तु
इदमपरमधीयते—अडिवालसंठिओ उरो
तस्स रोमगुबिलो (वृ) । |
| ९. हुप्पपुडसंठाणसंठिया (वृपा) । | |
| १०. वृत्तावन्न अतिरिक्तपाठस्य उल्लेखोस्ति,
वाचनान्तरे—महल्लकुण्ड [कुच्छ] संठिया दो
वि से कबोला । | २०. पसेवउ (क) । |
| ११. °पुच्छं (वव) । | २१. उरंसि (ख,घ) । |
| १२. बीभच्छ (ख,घ) । | २२. पाणालंद (क,ग) । |
| १३. घोडयपुच्छं व तस्स कविलफरुसाओ उड्डलो-
माओ दाडियाओ (वृपा) । | २३. नाभी (क,घ); वाचनान्तरेऽभीतं—अग्गकडी
विगयबंकपिट्ठी असरिसा दो वि तस्स
फिक्कणा (वृ) । |
| १४. उट्टा से घोडयस्स जहं दोवि विसंबवाणा | |

संठाण-संठिया दो वि तस्स ऊरु, 'अज्जुण-गुट्टं' व तस्स जाणूइं कुडिल-कुडि-
लाइं विगय-बीभत्स-दंसणाइं, जंघाओ कक्खडीओ लोमेहि उवचियाओ, अहरी-
संठाण-संठिया दो वि तस्स पाया, अहरी-लोढ-संठाण-संठियाओ पाएसु अंगु-
लीओ, सिप्पि-पुडसंठिया से नखा' ॥

२२. लडह-मडह-जाणुए', विगय-भग-भुग-भुमए', अवदालिय-वयण-विवर-
नित्तालियग्गजाहे', सरड-कयमालियाए 'उंदुरमाला-परिणद्ध-सुकयाचिंधे,
नउल'-कयकण्णपूरे, सप्प-कयवेगच्छे', अप्फोडंते, अभिगज्जंते, भीम-मुक्कट्ट-
हासे', 'नाणाविह-पंचवण्णेहि लोमेहि उवचिए' एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-
अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असि गहाय जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे
समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता आसुरत्ते' रुट्टे कुविए चंडिकिए
मिसिमिसीयमाणे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हभो ! कामदेवा !
समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया' ! दुरंत'-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्-
सिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया !
सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया !
मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया !
मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं' वयाइं वेरम-
णाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा
भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं"
•वयाइं वेरमणाइ पच्चक्खाणाइं° पोसहोववासाइं न छड्डेसि" न भंजेसि",
'तो तं'" अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल'-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण
खुरधारेण° असिणा खंडाखंडि करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया' ! अट्ट-दुहट्ट-

- | | |
|---|---------------------------------------|
| १. अज्जुणागुट्टं (क) । | ८. भीममुक्कट्टहासे (ख, घ) । |
| २. नक्खा (ग, घ) । | ९. × (क) । |
| ३. जण्णुए (क) । | १०. आसुरत्ते (क) । |
| ४. इह अन्यदपि विशेषणचतुष्टयं वाचनान्तरे तु अभिधीयते—मसिमूसगमहिसकालए भरिय-
मेहवन्ने लंबोट्टे निगयदंते (बु) । | ११. °पत्थया (क) । |
| ५. निदालिय अग्गजीहे (ख) । | १२. दुरंत ४ जाव परिवज्जिया (क, ग) । |
| ६. नेउल (क) । | १३. जं सीलाइं (क्व) । |
| ७. पाठान्तरेण—सप्पकयवेगच्छे मूसगकयभूभ-
लए विच्चुयकयवेयच्छे सप्पकयजण्णोवईए
अभिन्निमुहणयणनखवरवरघचित्तकत्तिनियंसणे
(बु) । | १४. सं० पा०—सीलाइं जाव पोसहोववासाइं । |
| | १५. छड्डेसि (ख); छंडेसि (घ) । |
| | १६. भंजसि (क) । |
| | १७. तो ते (क, ग, घ); तो (ख) । |
| | १८. सं० पा०—नीलुप्पल जाव असिणा । |
| | १९. × (क, ख) । |

वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२३. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं^१ पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

२४. तए णं से दिव्वे^१ पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं^२ •अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं^३ धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव^४ जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं^५ वयाइं वेरमणाइं, पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छडेसि न भंजेसि, तो तं अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडा-खंडिं करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव^६ जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२५. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव^४ विहरइ ॥

२६. तए णं से दिव्वे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव^४ पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे तिवलियं^७ भिउडि निडाले साहट्टु कामदेवं समणोवासयं नीलुप्पल^८-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण^९ असिणा खंडाखंडिं करेइ ॥

२७. तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं^{१०} •विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं^{११} दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ^{१२} •खमइ तित्तिक्खइ^{१३} अहियासेइ ॥

कामदेवस्स हत्थिरूव-कय-उवसग्ग-पवं

२८. तए णं से दिव्वे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं^२ •अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं^३ विहरमाणं पासइ, पासित्ता जाहे^४ नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे संते तंते परितंते सणियं-

१. देवेण (ख,घ) ।

२. देवेणं (ख,घ) ।

३. सं० पा०—अभीयं जाव धम्मज्झाणोवगयं ।

४. उवा० २।२२ ।

५. सं० पा०—सीलाइं वयाइं न छडेसि तो जीवियाओ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. तित्तिडियं (क) ।

९. सं० पा०—नीलुप्पल जाव असिणा ।

१०. सं० पा०—उज्जलं जाव दुरहियासं ।

११. सं० पा०—सहइ जाव अहियासेइ ।

१२. सं० पा०—अभीयं जाव विहरमाणं ।

१३. जाव (ग,घ,) अशुद्धं प्रतिभासि ।

सणियं पच्चोसवकइ, पच्चोसविकत्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्ख-
मिक्ता दिव्वं पिसायरूवं विप्पजहइ', विप्पजहिक्ता एगं महं दिव्वं हत्थिरूवं
विउव्वइ—सत्तंगपइट्ठियं सम्मं संठियं सुजातं पुरतो' उदग्गं पिट्ठतो वराहं'
अयाकुच्छि अलंबकुच्छि' पलंब-लंबोदराधरकरं अब्भुग्गय-मउल-मल्लिया-
विमल-धवलदंतं कंचणकोसी-पविट्ठदंतं आणामिय'-चाव-ललिय-संवेत्तियग्ग-
सोडं कुम्म-पडिपुण्णचलणं वीसतिनखं' अत्थीण-पमाणजुत्तपुच्छं मत्तं मेहमिव
गुलुगुलेंतं' मण-पवण-जइणवेगं—दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वित्ता जेणेव पोसह-
साला, जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काम-
देवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया !
●अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउइसिया ! सिरि-हिरि-
धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया !
मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकं-
खिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवा-
सिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं
पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झि-
त्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं
पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्ढेसि ° न भंजेसि, तो' तं 'अहं अज्ज'°
सोडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढं वेहासं उव्वि-
हामि, उव्विहिक्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणि-
तलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लौलेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ठ-दुहट्ठ-वसट्ठे
अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२६. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं हत्थिरूवेणं एवं वुत्ते समाणे
अभीए" ●अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणो-
वगए ° विहरइ ॥

३०. तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं" ●अतत्थं अणुव्विग्गं

१. विप्पहयंति (क) सर्वत्र; विप्पयहती (ग) ७. गुलुगुलेंतं (घ)

सर्वत्र ।

८. सं० पा०—समणोवासया तहेव मणइ जाव
न भंजेसि ।

२. पुरओ (क) ।

३. वसहं (ग) ।

९. × (क, ख, ग, घ) ।

४. × (क, ग); अइया (अजिया) कुच्छी

(ना० १।१।१५६) ।

१०. अज्ज अहं (क, ख, ग, घ) ।

११. सं० पा०—अभीए जाव विहरइ ।

५. अणोमिय (क) ।

१२. सं० पा०—अभीयं जाव विहरमाणं ।

६. °नक्खं (ग) ।

अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं ° विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! °समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववामाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अज्ज अहं सोंडाए गेण्हामि, गेण्हत्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्डं वेहासं उव्विहामि, उव्विहत्ता तिकखेहि दंतमुसलेहि पडिच्छामि, पडिच्छेत्ता अहे घरणितलंसि तिकखुत्तो पाएसु लोनेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३१. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं हत्थिरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाने अभीए जाव' ° विहरइ ॥
३२. तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्टे कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे कामदेवं समणोवासयं सोंडाए गेण्हेति', गेण्हत्ता उड्डं वेहासं उव्विहइ', उव्विहत्ता तिकखेहि दंतमुसलेहि पडिच्छइ, पडिच्छत्ता अहे घरणितलंसि तिकखुत्तो पाएसु लोनेइ ॥
३३. तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं ° विउलं कक्कमं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिकखइ ° अहियासेइ ॥

कामदेवस्स सप्परूव-कय-उव्वसग्ग-पव

३४. तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुविग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ' °कामदेवं समणोवासयं निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे संते तंते परित्तं ° सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं हत्थिरूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ—उग्गविसं चंडविसं घोरविसं महाकायं मसीमूसाकालगं नयणविसरोसपुण्णं अज्जणपुंज-निगरप्पगासं रत्तच्छं लोहियलोथणं जमलजुयल-चंचलचलंतजीहं' धरणीयलवेणिभूयं उक्कड-फुड-कुडिल-जडिल-कक्कस-वियड-

१. सं० पा—कामदेवा तहेव जाव सो वि विहरइ ।

२. उवा० २।२२ ।

३. उवा० २।२३ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. गिण्हइ (ख,घ) ।

६. उव्वहइ (क) ।

७. सं० पा०—उज्जलं जाव अहियासेइ ।

८. सं० पा०—संचाएइ जाव सणियं ।

९. उग्गविसं दिट्ठिविसं जाव सप्परूवं (क,ग);

उग्गविसं दिट्ठिविसं (घ) ।

१०. चंचलजीहं (ख) ।

फडाडोवकरणदच्छं लोहागर-धम्ममाण-धमधमेंतघोसं अणागलियदिब्बपचंडरोसं-
दिब्बं सप्परूवं विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे समणोवासए,
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो !
कामदेवा ! समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा !
हीणपुण्णचाउद्दसिया । सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया !
पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया !
सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया !
सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया !
सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए
वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुम
अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि ° न
भंजेसि', तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहिता पच्छिमेणं
भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं दाढाहिं उरंसि
चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव
जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३५. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिब्बेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए°
•अतत्थे अणुव्विगगे अखुभिण् अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए°
विहरइ ॥

३६. '•तए णं से दिब्बे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं अनत्थं अणुव्विगगं
अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ,
पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा । समणोवासया !
जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं
न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहिता
पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहिं विसपरिगताहिं
दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे
अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३७. तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिब्बेणं सप्परूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं
वुत्ते समाणे अभीए जाव° विहरइ ॥

१. सं० पा० - समणोवासया जाव न भंजेसि ।

२. भंजसि (क, ग) ।

३. विसमपरिगताइं (क) ।

४. सं० पा०—अभीए जाव विहरइ ।

५. सं० पा०—सो वि दोच्चं पि तच्चं पि

भणइ, कामदेवो वि जाव विहरइ ।

६. उवा० २।२२ ।

७. उवा० २।२३ ।

३८. तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता भासुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे कामदेवस्स सरसरस्स कायं दुरुहइ, दुरुहिता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेइ, वेढित्ता तिक्खाहि विसपरिगताहि दाढाहि उरसि चैव निकुट्टेइ ॥
३९. तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं' •विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ° अहियासेइ ॥

देवरूव-विउव्वण-पदं

४०. तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं' •अतत्थं अणुव्विगं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं भम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं° पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निगंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे संते तंते परित्तंते सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्किता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं सप्परूवं विप्पजहइ, विप्पजहिता एगं महं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ — हार-विराइय-वच्छं' •कडग-तुडिय-थंभियभुयं अंगय-कुंडल-मट्ट-गंड-कण्णपीढ-धारि विचित्तहत्थाभरणं विचित्तमाला-मउलि-मउडं कल्लाणग-पवरवत्थपरिहियं कल्लाणगपवरमल्लाणुवेवणं भासुरवोदिं पलंववणमालघरं दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संधाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्डीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए नेसाए° दसदिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं पासाईयं' 'दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं—दिव्वं देवरूवं विउव्वित्ता' कामदेवस्स समणोवासयस्स पोसहसालं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता अंतलक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइ पंचवण्णाइ वत्थाइ पवर परिहिए कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! घण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! पुण्णेसि° •णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयलक्खणेसि णं तुमं देवाणुप्पिया !° सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले, जस्स णं तव निगंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।

१. उवा० २।२४ ।

२. सं० पा०—उज्जलं जाव अहियासेइ ।

३. सं० पा०—अभीयं जाव पासइ ।

४. सं० पा०—हारविराइयवच्छं जाव दस-दिसाओ ।

५. पासति (ख) ।

६. × (ख) ।

७. संपुण्णे (क,ग) । सं० पा०—पुण्णे कयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे ।

एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया' •वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कऊ सहस्सक्खे मघवं पागसासणे दाहिणडुलोगाहिवई बत्तीस-विमाण-सयसहस्सा-हिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबर-वत्थघरे आलइय-मालमउडे नव-हेम-चारु-चित्त-चंचल-कुंडल-विलिहिज्जमाणगंडे भासुरबोंदी पलंबवणमाले सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सोहम्माए •सक्कंसि सीहासणंसि चउरासीईए सामाणियसाहस्सीण', •तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, अट्टण्हं अग्गमहिंसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउण्हं चउरासीणं आयरक्ख-देवसाहस्सीणं •, अण्णेसि च बहूणं देवाण य देवीण य मज्झगए एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ—एवं खलु देवा ! जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए कामदेवे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी' •उम्मुक्क-मणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अब्बीए दब्भसंधारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । नो खलु से सक्के' केणइ देवेण वा 'दाणवेण वा' जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधब्बेण वा निग्गंधाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्ताए वा । तए णं अहं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एयमट्ठं असहहमाणे अपत्तियमाणे ओरोएमाणे इहं हव्वमागए । तं ओहो णं देवाणुप्पियाणं इड्डी जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।' तं दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्डी' •जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते • अभिसमण्णागए । तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति' णं देवाणुप्पिया ! नाइं भुज्जो करणयाए त्ति कट्ठु पायवडिए पंजलिउडे' एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, खामेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ॥

कामदेवस्स पडिमा-पारण-पदं

४१. तए णं से कामदेवे समणोवासए निरुवसग्गमिति कट्ठु पडिमं पारेइ ॥

- | | |
|---|--|
| १. देवराया सतक्कतु जाव सक्कंसि (क); देव-राया सतक्कतं जाव सक्कंसि (ग); सं० पा० --देवराया जाव सक्कंसि । | ५. दाणवेण वा जा गंधब्बेण वा (क); दाणवेण वा गंधब्बेण वा (ग) । |
| २. सं० पा०—साहस्सीणं जाव अण्णेसि । | ६. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (क्व) । |
| ३. सं० पा०—बंभचारी जाव दब्भसंधारोवगए । | ७. सं० पा०—इड्डी जाव अभिसमण्णागए । |
| ४. सक्का (क, ख, ग, घ) । | ८. •मरुहंती (क) । |
| | ९. पंजलियडे (क) । |

कामदेवस्स भगवओ पज्जुवासणा-पदं

४२. तेणं कालेणं तेणं समाणं समणे भगवं महावीरे' •जाव' जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभदे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिख्वं ओगगहं ओगिणिहत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे • विहरइ ॥
४३. ताए णं से कामदेवे समणोवासए इमीसे कहाए लद्धे समाणे — “एवं खलु समणे भगवं महावीरे' •पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव चंपाए नयरीए वहिया पुण्णभदे चेइए अहापडिख्वं ओगगहं ओगिणिहत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे • विहरइ ।” तं सेयं खलु मम समणं भगवं महावीरं वदित्ता नमंसित्ता ततो पडिणियत्तस्स पोसहं पारेत्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता [पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता ?] सुद्धप्पावेसाइ मंगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमित्ता चंप' नयरि मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभदे चेइए, •जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए • पज्जुवासइ ॥

१. सं० पा० — महावीरे जाव विहरइ ।
२. ओ० सू० १६, २२ ।
३. सं० पा० — महावीरे जाव विहरइ ।
४. 'संपेहेत्ता' इति पाठस्याग्रे कोष्ठकान्तर्गतपाठो युज्यते । १६ सूत्रे — सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता चंप नयरि मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, इति पाठोस्ति, तेन अत्रापि 'पोसहसालाओ पडिणिक्खमित्ता' एष पाठः आवश्यकोस्ति । भगवती (१२।१५) सूत्रेपि इत्यमेव पाठयोजना विद्यते — पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुद्धप्पावेसाइ मंगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ ।
५. सुद्धप्पा अप्प मणुस्सवग्गुरा (क); सुद्धप्पावेसाइ अप्पमहग्गवा मणुस्सवग्गुरा (ख, घ); सुद्धप्पावेसाइ वत्थाइ अप्पमहग्गवाइ जाव अप्प-

मणुस्सवग्गुरा (ग); प्रतिपु ऊर्ध्वमुद्वर्तितः पाठो विद्यते, किन्तु नासौ प्रसंगानुसारी प्रतिभाति । कामदेवः संप्रति पोषधिको वर्तते । अत्रएव 'अप्पमहग्गवाभरणालकियसरीरे' नासौ पाठः पोषधावस्थायां संगच्छते । शंखध्रावकेणापि पोषधावस्थायां भगवतो दर्शनं कृतम् । तत्र 'सुद्धप्पावेसाइ मंगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए', (भगवती १२।१५) एतावान् एव पाठो विद्यते । भगवतीवृत्तावपि एतावतः, पाठस्यैव व्याख्या समुपलभ्यते । प्रस्तुताध्ययने (सू० १६) 'उम्पुक्कमणिसुवण्णे' एव पाठोस्ति, तदा आभरणालकरणं कथं प्रासंगिकं स्यात् ? असावत्र प्रवाहरूपेण आयातः इति संभाव्यते ।

६. चंपा (ल) ।

७. सं० पा० — चेइए जहा संखे जाव पज्जुवासइ ।

४४. तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य' •महइमहा-
लियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ° ॥

भगवया कामदेवस्स उवसग्ग-वागरण-पदं

४५. कामदेवाइ ! समणे भगवं महावीरे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—से
नूणं कामदेवा ! तुब्भं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए ।
तए णं से देवे एगं महं दिव्वं पिसायरूवं' विउव्वइ, विउव्वित्ता आसुरत्ते रुट्ठे
कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल'-•गवलगुलिय-अयसि-
कुसुमप्पगासं खुरधारं° असि गहाय तुमं एवं वयासी हंभो ! कामदेवा !
•समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खा-
णाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अज्ज अहं इमेणं नीलुप्पल-
गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडि करेमि, जहा
णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव° जीवियाओ ववरो-
विज्जसि ।

तुमं तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरसि ।

•तए णं से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि
तच्चं पि तुमं एवं वयासी--हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं
तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि
न भंजेसि, तो तं अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण
खुरधारेण असिणा खंडाखंडि करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-
वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे
अभीए जाव' विहरसि ।

तए ण से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे
कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तिवलियं भिउडि निडाले साहट्टु तुमं

- | | |
|--|---------------------------------------|
| १. सं० पा० — तीसे य जाव धम्म रुहा सम्मत्ता । | ८. सं० पा० — एवं वण्णगरहिया तिणि वि |
| २. ओ० सू० ७१-७७ । | उवसग्गा तहेव पडिउच्चारयेव्वा जाव देवो |
| ३. पिसातरूवं (ग) । | पडिगओ । |
| ४. सं० पा० — नीलुप्पल जाव असि । | ९. उवा० २।२४ । |
| ५. सं० पा० — कामदेवा जाव जीवियाओ । | १०. उवा० २।२२ । |
| ६. उवा० २।२२ । | ११. उवा० २।२३ । |
| ७. उवा० २।२३ । | १२. उवा० २।२४ । |

नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेण असिणा खंडाखंडि करेइ ।

तए णं तुमे तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहसि खमसि तित्तिक्खसि अहियामेसि । तए णं से दिव्वे पिसायरूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ, तुमं निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे संते तंते परितंतं सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्किता पोसह-सालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं पिसायरूवं विप्पजहइ, विप्प-जहित्ता एगं महं दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव तुमे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं एवं वयासी—हंभो ! काम-देवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अहं अज्ज सोंडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणेत्ता उड्ढं वेहासं उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं हत्थिरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरसि । तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि तुमं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो तं अज्ज अहं सोंडाए गेण्हामि, गेण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, निणित्ता उड्ढं वेहासं उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छामि, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं देवाणु-प्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं हत्थिरूवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरसि ।

तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे तुमं सोंडाए गेण्हति, गेण्हित्ता उड्ढं वेहासं उव्विहइ, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता अहे धरणि-तलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेइ ।

१. उवा० २।२७ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. उवा० २।२२ ।

४. उवा० २।२३ ।

५. उवा० २।२४ ।

६. उवा० २।२२ ।

७. उवा० २।२३ ।

८. उवा० २।२४ ।

तए णं तुमे तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि ।
 तए णं से दिव्वे हत्थिरूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएति
 निगंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे
 संते तंते परित्तंते सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्किता पोसहसालाओ
 पडिणक्खमइ, पडिणक्खमित्ता दिव्वं हत्थिरूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं
 महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला, जेणेव तुमं, तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवा-
 सया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं
 पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि,
 दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गोवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहि विसपरि-
 गताहि दाढाहि उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्ट-दुहट्ट-
 वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरसि ।
 तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि
 तुमं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं
 अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न
 भंजेसि, तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेणं
 भाएणं तिक्खुत्तो गोवं वेढेमि, वेढित्ता तिक्खाहि विसपरिगताहि दाढाहि
 उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ
 ववरोविज्जसि ।

तए णं तुमे तेणं दिव्वेणं सप्परूपेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए
 जाव' विहरसि ।

तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आमुरत्ते रुट्टे
 कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे तुब्भं सरसरस्स कायं दुरुहइ, दुरुहित्ता
 पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गोवं वेढइ, वेढित्ता तिक्खाहि विसपरिगताहि
 दाढाहि उरंसि चेव निकुट्टेइ ।

तए णं तुमे तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि ।
 तए णं से दिव्वे सप्परूवे तुमं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ

१. उवा० २।२७ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. उवा० २।२२ ।

४. उवा० २।२३ ।

५. उवा० २।२४ ।

६. उवा० २।२२

७. उवा० २।२३

८. उवा० २।२४

९. उवा० २।२७

१०. उवा० २।२४

तुमं निगंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा, ताहे संते तंते पारितंते सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्किता पोसह-सालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दिव्वं सप्परूवं विप्पजहइ, विप्पजहिता एगं महं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता पोसहसालं अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता अंतलक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइ पंचवण्णाइ वत्थाइ पवर परिहिए तुमं एवं वयासी—हंभो ! कामदेवा ! समणोवासया ! धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! पुण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयलक्खणेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले, जस्स णं तव निगंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।

एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविदे देवराया जाव' एवमाइक्खइ, एवं भासइ, एवं पणवेइ, एवं परूवेइ एवं खलु देवा ! जंबुद्वीवे दीवे भारहे वामे चंपाए नयरीए कामदेवे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंधचारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दट्ठसंथा-रोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । नो खलु मे सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा निगंथाओ पावय-णाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामेत्तए वा ।

तए णं अहं सक्कस्स देविदस्स देवरणो एयमट्ठं असहहमाणे अपत्तियमाणे अरोग्माणे इहं हव्वमागए । तं अहो णं देवाणुप्पियाणं इड्डी जुई जसो वलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए । तं दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्डी जुई जसो वलं वीरियं पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए । तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति णं देवाणु-प्पिया ! नाइ भुज्जो करणयाए त्ति कट्ठु पायवडिए पंजलिउडे एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, खामेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए^० । से नूनं कामदेवा ! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि ॥

भगवया कामदेवस्स पसंसा-पदं

४६. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे बहवे समणे निगंथे य निगंथोओ य आमं-तेत्ता एवं वयासी—जइ ताव अज्जो ! समणोवासगा गिहिणो गिहमज्झावसंता दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहंति^० *खमंति तितिक्खंति^०

अहियासेति, सबका पुणाइं अज्जो ! समणेहिं निगंथेहिं दुवालसंगं गणिपिडगं
अहिज्जमाणेहिं दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणेण उवसग्गे सम्मं सहित्तए' *खमि-
त्तए तित्तिक्खित्तए ° अहियासित्तए ॥

४७. ततो ते बहुवे समणा निगंथा य निगंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स
तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥

कामदेवस्स पडिगमण-पदं

४८. तए णं से कामदेवे समणोवासए हट्ठुट्ठ'-●चित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमण-
स्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए ° समणं भगवं महावीरं पसिणाइं पुच्छइ,
अट्ठमादियइ, समणं भगं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ,
करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं
पडिगए ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

४९. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ चंपाओ नयरीओ पडिणिक्खमइ,
पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कामदेवस्स उवासगपडिमा-पडिवत्ति-पदं

५०. तए' णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ' ॥
५१. ●तए ण से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं
अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
५२. तए णं से कामदेवे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं,
पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एककारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं
अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ
आराहेइ ॥
५३. तए णं से कामदेवे समणोवासए इमेणं एयारुवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं
पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए
किसे धमणिसंतए जाए ॥

कामदेवस्स अणसण-पदं

५४. तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-

१. सं० पा०—सहित्तए जाव अहियासित्तए ।

३. तओ (क, ग, घ) ।

२. सं० पा०—हट्ठुट्ठ जाव समण ।

४. सं० पा०—विहरइ तएणं ।

समयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—‘एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्के निम्मंमे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडि-याभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोव-एसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव’ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणतियसलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥ °

कामदेवस्स समाहिमरण-पदं

५५. ताए णं से कामदेवे समणोवासए वट्ठहिं ° सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं ° भावेत्ता दीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते, समाहि-पत्ते, कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मं कप्पे सोहम्मवडिम्मगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे णं अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । कामदेवस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

५६. से णं भंते ! कामदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

५७. °एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं दोच्चस्स अज्झ-यणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

१. उवा० १।५७ ।

४. तओ चेव (ख) ।

२. सं० पा०—वट्ठहिं जाव भावेत्ता ।

५. सं० पा०—निक्खेवो ।

३. अप्पाणं (क, ख, ग, घ) ।

तइयं अज्भयण चुलणीपिता

उक्खेव-पदं

१. '●जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दोच्चस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, तच्चस्स णं भंते ! अज्भयणस्स के अट्ठे पणत्ते ? °

चुलणीपियगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी । कोट्ठए' चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. '●तत्थ णं वाणारसीए नयरीए चुलणीपिता' नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं चुलणीपियस्स गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. से णं चुलणीपिता गाहावई बहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य ण कुडुंबस्स मेढी जाव' सब्बकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. क्वचित् कोष्ठकं चैत्यमधीतं क्वचिन्महा-
कामधनमिति (वृ) ।

४. सं० पा०—तत्थ णं वाणारसीए चुलणिपिया
नामं गाहावई परिवसई अड्ढे सामा भारिया
अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ

वड्ढिय ° अट्ठ पवित्थरप ° । अट्ठ वया दसगो-
साहस्सिएणं वएणं जन्हा आणदो ईसर जाव
सब्बकज्जवड्ढावए यावि होत्था ।

५. चुलणिपिता (ग, घ) ।

६. उवा० १।११ ।

७, ८. उवा० १।१३ ।

६. तस्स णं चुलणीपियस्स गाहावइस्स सामा' नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा जाव' माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ° ॥

महावीर-समवसरण-पदं

७. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव' जेणेव वाणारसी नयरी जेणेव कोट्टए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
८. परिसा निग्गया ॥
९. कूणिणं राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
१०. तए णं से चुलणीपिया गाहावई इमीसे कहाए लद्धे समणे—“एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव वाणारसीए नयरीए वहिया कोट्टए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।”
- तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसांमि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासांमि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्प-महग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-चारेणं वाणारसि नयारि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्टए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥

१. सोमा (ख) ।

२. उवा० १।१४ ।

३. सं० पा०—सामी समोसढे । चुलणीपिया वि जहा आणंवे तहा निग्गओ । तहेव गिहिष्मं

पडिवज्जइ । गोयमपुच्छा । तहेव सेसं जहा

कामदेवस्स जाव पोसहसालाए ।

४. ओ० सू० १६, २२ ।

५. ओ० सू० ५३-६६ ।

११. तए णं समणे भगवं महावीरे चुलणीपियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहा-
लियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

चुलणीपियस्स गिहिधम्म-पडिबत्ति-पदं

१३. तए णं से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं
सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु-चित्तमाणंदिए पोइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-
विसप्पमाणहियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं तिकखुत्तो आया-
हिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एव वयासी —
सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं,
रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्टेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।
एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असदिद्धमेयं भंते ! इच्छिय-
मेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं
तुब्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-
कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खा-
वइयं — दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

१४. तए णं से चुलणीपिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए' सावय-
धम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्टयाओ
चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

चुलणीपियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव' समणे
निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-
पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं
पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

सामाए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा सामा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव' समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

चुलणीपियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोमहोववामेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोहस संवच्छराइ वीइक्कंताइं । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जिथा—एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए वट्ठणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुवस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवट्ठावए, तं एतेण वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए' ॥

१९. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडि-णिक्खमित्ता वाणारसिं नयारि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दव्वभसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दव्वभसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता° पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी°
•उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दव्वभसंथारोवगाए° समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

चुलणीपियस्स देव-कय-उवसग-पदं

२०. तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि एगे देवे' अंतिय पाउव्भूए ॥

•जेट्ठपुत्त

२१. तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल°-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं°

१. उवा० १।५६ ।

२,३. उवा० १।१३ ।

४. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

५. सं० पा०—बंभयारी समणस्स ।

६. द्वितीयाध्ययनस्य विंशतितमे सूत्रे अस्याग्रे 'मायी मिच्छदिट्ठो' एतद् विशेषणद्वयं विद्यते ।

७. सं० पा०—नीलुप्पल जाव अस्ति ।

- असि गहाय चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! •अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्ण-चाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्ग-पिवासिया ! मोक्खापिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुद्देसि न० भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं 'साओ गिहाओ' नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि', अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि', जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
२२. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए •अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिए अचलए असंभते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए० विहरइ ॥
२३. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं •अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं० विहरमाण पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया ! •जाव" जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुद्देसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
२४. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव"० विहरइ ॥

१. सं० पा०—समणोवासया जहा कामदेवो जाव न भंजेसि ।
 २. ततो (क); तओ (ख) ।
 ३. सातो गिहातो (क, ग); सयातो गिहाओ (घ) ।
 ४. ततो (क) ।
 ५. द्दहेमि (ख) ।
 ६. आसिचामि (ख, ग) ।

७. सं० पा०—अभीए जाव विहरइ ।
 ८. सं० पा०—अभीयं जाव पासइ ।
 ९. सं० पा०—समणोवासया ! तं चेव भणइ सो जाव विहरइ ।
 १०. उवा० २।२२ ।
 ११. उवा० २।२३ ।

२५. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविणं चंडिकिणं मिमिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणो-
वासयस्स जेट्ठपुत्तं गिहाओ' नीणेइ, नीणेत्ता अगगओ घाणइ, घाणत्ता तओ
मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता
चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिणं य आइंचइ ॥

२६. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तं उज्जलं' °विउलं कक्कसं पगाढं चंडं
दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तित्तिक्खइ ° अहियामेइ ॥

° मज्झिमपुत्त

२७. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चुलणी-
पियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव'
जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुड्डेसि
न भंजेसि, 'तो ते' अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता
तव अगगओ घाणमि, घाणत्ता' °तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि
कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिणं य आइंचामि,
जहा णं तुमं अट्ठ-दुहट्ठ-वसट्ठे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२८. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव
विहरइ ॥

२९. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं
पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी— हंभो ! चुलणीपिया ! समणो-
वासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं
पोसहोववासाइं न छुड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ
गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगगओ घाणमि, घाणत्ता तओ मंससोल्ले करेमि,
करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य

१. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२४ ।

२. यत्र उत्तमपुरुषक्रियाप्रयोगस्तत्र सर्वत्रापि
'साओ गिहाओ' इतिपाठो लभ्यते । यत्र च
प्रथमपुरुषक्रियाप्रयोगोस्ति तत्र केवलं
'गिहाओ' पाठो लभ्यते, किन्तु यत्र अमणो-
पासकाः घटितघटनां मनसि चिन्तयन्ति श्राव-
यन्ति च तत्र 'साओ गिहाओ' पाठो युज्यते ।

५. उवा० २।२२ ।

६. ततो ते (क); ततो (ख) ।

७. सं० पा०— घाणत्ता जहा जेट्ठपुत्तं तद्देव भणइ,
तद्देव करेइ । एवं कणीयसंपि जाव अहियासेइ ।

८. उवा० २।२३ ।

९. उवा० २।२४ ।

३. सं० पा०— उज्जलं जाव अहियासेइ ।

१०. उवा० २।२२ ।

सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३०. तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
३१. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स मज्झिमं पुत्त गिहाओ नीणेइ, नाणेत्ता अगगओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अइहेइ, अइहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ ॥
३२. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

० कणीयसपुत्त

३३. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चुलणापियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगगआ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अइहेमि, अइहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
३४. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
३५. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नाणेमि, नीणेत्ता तव अगगओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अइहेमि, अइहेत्ता तव गायं मंसेण

१. उवा० २।२३ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. उवा० २।२७ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२२ ।

य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

३६. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
३७. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आमुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिविकए मिसिमिसीयमाणे चुलणीपियस्स समणोवासयस्स कणी-यसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अगगओ घाणइ, घाणत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अइहेइ, अइहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ ॥
३८. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिवखइ° अहियासेइ ॥

° भद्दा सत्थवाही

३९. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चउत्थं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणो-वासया ! जाव' जइ णं तुमं °अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववामाइं न छडुंसि° न भंजेसि, 'तो ते' अहं अज्ज जा इमा' माया भद्दा सत्थवाही देवतं 'गुरु-जणणी' 'दुक्कर-दुक्करकारिया'° तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगगओ घाणमि, घाणत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अइहेमि, अइहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरो-विज्जसि ॥
४०. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥

१. उवा० २।२३ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. उवा० २।२७ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. सं० पा०—तुमं जाव न भंजेसि ।

७. तओ (ख, ग) ।

८. इमा तव (क्व) ।

६. गुरुजणणी (क); गुरु' जणणी (ख, ग) ।

१०. दुक्करकारिया (ग) ।

११. तं ते (क, ख, ग, घ); डा० ए० एफ० रुडोल्फ होरनल द्वारा प्रस्तुतसूत्रस्य पाठ-संशोधनप्रयुक्तादर्शेषु एकस्मिन् आदर्शे 'ते' पाठो नोपलभ्यते । तदाधारेण अस्माभिरत्र तस्याग्रहणं कृतम् ।

१२. उवा० २।२३ ।

४१. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिता ! समणोवासया' ! •जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्हेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा माया भद्दा सत्थवाही देवतं गुरु-जणणी दुक्कर-दुक्करकारिया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीविशाओ° ववरो-विज्जसि ॥

चुलणीपियस्स कोलाहल-पवं

४२. तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स तेण देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे° •अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति', 'जे णं' ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता° •तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं° गायं मंसेण य सोणिण य आइंचइ, 'जे णं ममं' मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ° •नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य° सोणिण य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ° •नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य° आइंचइ, जा वि य णं इमा'' ममं माया भद्दा सत्थवाही देवतं 'गुरु-जणणी'° दुक्कर-दुक्करकारिया, तं पि य णं इच्छइ'' साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए—तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हत्तए

१. उवा० २।२४ ।

२. सं० पा०—समणोवासया तहेव जाव ववरो-विज्जसि ।

३. उवा० २।२२ ।

४. सं० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

५. समातरति (क, ग); समायरइ (ख, घ) ।

६. जेण (ग) ।

७. सं० पा०—घाएत्ता जहा कयं तहा विचित्तेइ जाव गायं ।

८. जेणेव मम (क, ख, ग, घ) ।

९. सं० पा०—गिहाओ जाव सोणिण ।

१०. सं० पा०—गिहाओ तहेव जाव आइंचइ ।

११. इमं (ख) ।

१२. गुरु' जणणीं (क, ख, ग, घ) ।

१३. इच्छेति (ग) ।

त्ति कट्टु उद्धाविण्', से वि य आगासे उप्पइए, तेण च' खंमे आसाइए, महया-
महया सद्देणं कोलाहले कए ॥

भद्दाए पत्तिण-पदं

४३. तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव चुलणीपिया
समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ', उवागच्छिता चुलणीपियं समणोवासयं एवं
वयासी—किण्णं पुत्ता ! तुमं महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ?

चुलणीपियस्स उत्तर-पदं

४४. तए णं से चुलणीपिया समणोवासए अम्मयं भद्दं सत्थवाहि एवं वयासी—एवं
खलु अम्मो ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते' रुद्धे कुविए चंडिकिए
मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल'-●गवलगुलिय-अयसिकुमुमप्पगासं खुर-
धारं° अंसि गहाय ममं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया' !
जाव' जइ णं तुमं° ●अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववा-
साइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्टुपुत्तं साम्भो गिहाम्भो नीणेमि,
नीणेत्ता तव अगम्भो घाएमि, घाएत्ता तम्भो मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाण-
भरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइं-
चामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ° ववरोविज्जसि ।
तए णं अहं तेणं पुरिसेणं° एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव" विहरामि ।
तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव" पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि
एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया"° ! ●जाव" जइ णं तुमं
अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न
भंजेसि, तो जाव" तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

१. उद्धाइए (ख); उट्टाएइत्ते (घ); डा० ए० ६. समणोवासया अपत्थिय-पत्थिया ! ४ (क) ।
- एफ० रुडोल्फ होरनल संपादिते पुस्तके ७. उवा० २।२२ ।
- प्रस्तुतसूत्रे 'उट्टाइए' इति पाठः स्वीकृतोऽस्ति, ८. सं० पा०—तुमं जाव ववरोविज्जसि ।
- लिपिजनितभ्रमकारणेन बहुषु आदर्शेषु मुद्रित- ९. देवेणं (क, ख, ग, घ); अस्मिन् सूत्रे सर्वत्र ।
- पुस्तकेषु च 'उद्धा' स्थाने 'उट्टा' एव लभ्यते । १०. उवा० २।२३ ।
- अग्रे 'भगवए' इति पाठस्य व्याख्यायां वृत्ति- ११. उवा० २।२४ ।
- कारेणापि 'उद्धावनात्' इति उल्लिखितमस्ति । १२. सं० पा०—समणोवासया तद्देव जाव गायं
२. य (घ) । आइंचइ ।
३. उवागते (क) । १३. उवा० २।२२ ।
४. आसुरत्ते (ग, घ) । १४. उवा० २।२२ ।
५. सं० ५७०—नीलुप्पल जाव अंसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' बिहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुद्धे कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य० आइंचइ ।

तए णं अहं तं उज्जलं' •जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तित्तिक्खामि० अहियासेमि ।

•एवं मज्झिमं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तित्तिक्खामि अहियासेमि ।

एवं कणीयसं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तित्तिक्खामि० अहियासेमि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया' ! जाव" •जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि० न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा माया देवतं गुरु"-•जणणी दुक्कर-दुक्करकारिया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचामि, जहा णं तुम अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट अकाले चेव जोवियाओ० ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव" बिहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव" पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—हंभो ! चुलणीपिया ! समणोवासया ! जाव" जइ णं तुमं अज्ज" •सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न

१. उवा० २।२३ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. सं० पा०—उज्जलं जाव अहियासेमि ।

४. उवा० २।२७ ।

५. सं० पा०—एवं तहेव उच्चारयेव्वं सब्बं जाव कणीयसं जाव आइंचइ । अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि ।

६. उवा० ३।२७-३२ ।

७. उवा० ३।३३ ३८ ।

८. उवा० २।२४ ।

९. सं० पा०—समणोवासया अप्पत्थियपत्थिया जाव न भंजेसि ।

१०. उवा० २।२२ ।

११. सं० पा०—गुरु जाव ववरोविज्जसि ।

१२. उवा० २।२३ ।

१३. उवा० २।२४ ।

१४. उवा० २।२२ ।

१५. सं० पा०—अज्ज जाव ववरोविज्जसि ।

भंजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाने चेव जोवियाओ० ववरो-विज्जसि ॥

तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए' *अणारियवुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं० समाचरति, जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ' *नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंमेण य सोणिणं य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंमेण य सोणिणं य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंमेण य सोणिणं य० आइंचइ, तुम्हे वि य णं इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्ता, तं मेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिहत्ताए त्ति कट्ठु उद्धाविए । से वि य आगामे उप्पइए माए वि य खंभे आसाइए, महया-महया सदेणं कोलाहले काए ॥

पायच्छित्त-पदं

४५. तए णं सा भद्दा सत्थवाही चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—नो खलु केइ पुरिसे तव' *जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव० कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवसगं करेइ, एस णं तुमे विदरिसणे' दिट्ठे । तं णं तुमं इयाणिं भग्गवाए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि । 'तं णं' तुमं पुत्ता ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि' *पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्ठाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं० पडिवज्जाहि ॥

४६. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए अम्माए' भद्दाए सत्थवाहीए तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ' *पडिक्कमइ

१. सं० पा०—अणारिए जाव समाचरति ।

५. तण्ण (क); तेणं (घ) ।

२. सं० पा०—गिहाओ तद्देव जाव कणीयसं जाव आइंचइ ।

६. सं० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि ।

७. अम्मगाते (ग, घ) ।

३. सं० पा०—तव जाव कणीयसं ।

८. सं० पा०—आलोएइ जाव पडिवज्जइ ।

४. विहरिसणे (ग) ।

निदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अम्भुट्टेइ अहारिहं पायच्छित्तं
तवोकम्मं ° पडिवज्जइ ॥

चुलणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं

४७. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ ॥
४८. 'तए णं से चुलणीपिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं
अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
४९. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं,
पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं
अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ
आराहेइ ° ॥
५०. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए तेणं 'ओरालेणं' °विउलेणं पयत्तेणं
पग्गहिणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए
किसे धमणिसंतए जाए ॥

चुलणीपियस्स अणसण-पदं

५१. तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-
समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए
संकप्पे समुप्पज्जित्था - एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं
पयत्तेणं पग्गहिणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडि-
किडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वने वीरिए
पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वने
वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए
धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं
पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरु सहुस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा
जलंते अपाच्छिम्ममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-
यस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं
पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरु सहुस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा

१. सं० पा०—पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं ४ जहा आणंदो जाव एक्कारस वि । ३. सं० पा०—ओरालेणं जहा कामदेवे जाव सोहम्मे ।
२. अस्य स्थाने १।६४ सूत्रे 'इमेणं एयारूवेणं' ४. उवा० १।५७ । पाठो विद्यते ।

जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए
कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

चुलणीपियस्स समाहिमरण-पदं

५२. तए णं से चुलणीपिता समणोवासए वहूहिं सोल-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-
पोसहाववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वोसं वासाइं समणोवासगपरियाणं
पार्जणत्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए
संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-
पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा० मोह्ममे कण्णे सोह्ममवडिस-
गस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे णं अरुणप्पभं विमाणे देवत्ताए उववण्णे ।
चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पणत्ता । महाविदेहे वासे सिज्झिहइ बुज्झिहइ
मुच्चिहइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

५३. '०एव खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं तच्चस्स
अज्भयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ० ॥

चउत्थं अज्झयणं

सुरादेवे

उक्खेव-पदं

१. '●जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ° ?

सुरादेवगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी । कोट्टए' चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. '●तत्थ णं वाणारसीए नयरीए सुरादेवे नामं गाहावइ परिवसइ- अइडे जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं सुरादेवस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्डिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. से णं सुरादेवे गाहावई बहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. कामधनम् (वृषा) ।

४. सं० पा०—सुरादेवे गाहावइ अइडे । छ

हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगोसाहस्सि-

एणं वएणं तस्स धन्ना भारिया सामी समो-

सडे । जहा आणंदो तहेव पडिवज्जइ गिहि-

धम्मं । जहा कामदेवो जाव समणस्स ।

५. उवा० १।११ ।

६. उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

६. तरस णं सुरादेवस्स गाहावइस्स धन्ना नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा जाव' माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

महावीर-समवसरण-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जावं जेणेव वाणारसी नयरी जेणेव कोट्टए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
८. परिसा निग्गया ॥
९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
१०. तए णं से सुरादेवे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समणे—“एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुट्ठाणुपुट्ठि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसठे इहेव वाणारसीए नयरीए वहिया कोट्टए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।”
- तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगरस वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पम-हग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-चारेणं वाणारसिं नयारिं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्टए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुत्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलि-उडे पज्जुवासइ ॥
११. तए णं समणे भगवं महावीरे सुरादेवस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥
१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

सुरादेवस्स गिहिधम्म-पडिबस्सि-पदं

१३. तए णं से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्धामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अम्भुट्टेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

१४. तए णं से सुरादेवे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए' सावयधम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ वाणारसीए नयरीए कोट्टयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

सुरादेवस्स समणोवासग-वरिया-पदं

१६. तए णं से सुरादेवे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव' समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिगह-कंबल-पायपुच्छणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

धम्माए समणोवासिय-वरिया-पदं

१७. तए णं सा धम्मा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव' समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिगह-

कंबल-पायपुच्छणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिणं य पीढ-पलग-सेउजा-
संथारणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

सुरादेवस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-
पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कं-
ताइं । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-
वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अङ्गत्थिए चित्तिए
पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणारमीए नयरीए
वहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुवस्स मेढी
जाव' सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो मंचाएमि समणस्स भगवओ
महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए' ॥

१९. तए णं सुरादेवे समणोवासए जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवंधि-परिजणं
च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणक्खमइ, पडिणक्खमित्ता
वाणारसिं नयारिं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला,
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-
पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथा-
रयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे
ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए °
समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

सुरादेवस्स देव-कय-उवसग-पदं

२०. तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे
अंतियं पाउब्भवित्था ॥

° जेट्टपुत्त

२१. तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल'-° गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं °
असिं गहाय' सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणो-
वासया ! अप्पत्थियपत्थिया' ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया !

१. उवा० १।१३ ।

२. उवा० १।१३ ।

३. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

४. सं० पा०—नीलुप्पल जाव असि ।

५. द्वितीयाध्ययनस्य द्वाविंशतितमे सूत्रे निम्न-

लिखितः पाठोतिरिक्तो विद्यते—'जेणेव पोसह-
साला जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरत्ते रुद्धे कुविए
चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे कामदेवं' ।

१. °पत्थिया ४ (क, ख, ग, घ) ।

सि रि-हिरि-घिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्ग-
कामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया !
मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया !
मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरम-
णाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा
भंजित्तए वा उज्जित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं'
●वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छडुंसि ° न भंजेसि, तो
ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि,
घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि,
अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण य आइंचामि, जहा णं तुमं 'अट्ट-दुहट्ट-
वसट्टे' अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

२२. '●तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाने अभीए अतत्थे
अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥
२३. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अच-
लियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं
पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणो-
वासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं
पोसहोववासाइं न छडुंसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ
नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता
आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण
य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरो-
विज्जसि ॥
२४. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाने
अभीए जाव' विहरइ ॥
२५. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते
रुट्ठे कुबिए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं
गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता
आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं
मंसेण य सोणिण य आइंचइ ॥

१. सं० पा०—सीलाइं जाव न भंजेसि ।

चुलणीपियस्स, नवरं एक्केक्के पंच सोल्लया

२. × (क, ख, ग, घ) ।

४. उवा० २।२२ ।

३. सं० पा०—एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्के-

५. उवा० २।२३ ।

क्के पंच सोल्लया । तद्देव करेइ, जहा

६. उवा० २।२४ ।

२६. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तं उज्जलं विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं
दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

० मज्झिमपुत्त

२७. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता सुरादेवं
समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ
णं तुमं अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छडुसि
न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साम्मो गिहाम्मो नीणेमि, नीणेत्ता
तव अग्गम्मो घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि
कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण य आइंचामि, जहा
णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाम्मो ववरोविज्जसि ॥

२८. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव'
विहरइ ॥

२९. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि
तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवा-
सया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोस-
होववासाइ न छडुसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साम्मो गिहाम्मो
नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गम्मो घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता
आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण य
आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाम्मो ववरो-
विज्जसि ॥

३०. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे
अभीए जाव' विहरइ ॥

३१. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता
आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमसीयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स
मज्झिमं पुत्तं गिहाम्मो नीणेइ, नीणेत्ता अग्गम्मो घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले
करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता सुरादेवस्स
समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिण य आइंचइ ॥

३२. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ
तितिक्खइ अहियासेइ ॥

१. उवा० २।२४ ।

२. उवा० २।२२ ।

३. उवा० २।२३ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२७ ।

० कणीयसपुत्त

३३. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
३४. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समणे अभीए जाव' विहरइ ॥
३५. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
३६. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समणे अभीए जाव' विहरइ ॥
३७. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमिसोयमाणे सुरादेवस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सुरादेवस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ ॥
३८. तए णं से सुरादेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ ० अहियासेइ ॥

१. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

२. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

३. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२७ ।

० सोलसरोगायकं

३९. तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पामइ, पामित्ता चउत्थं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जावं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायके पक्खिवामि, [तं जहा—१. सासे २. कामे ३. *जरे ४. दाहे ५. कुच्छिमूले ६. भगंदरे ७. अरिसए ८. अजीरण ९. दिट्ठिसूले १०. मुद्धसूले ११. अकारिए १२. अच्छिवेयणा १३. कण्णवेयणा १४. कडुण १५. उदरे १६. कोडे ।] जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

४०. तए णं से सुरादेवे समणोवासए *तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीण जाव' ० विहरइ ॥

४१. *तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं अभीयं जाव' पामइ, पामित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणो-वासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायके पक्खिवामि जाव' जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

सुरादेवस्स कोलाहल-पदं

४२. तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए *अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं ० समाचरति, जे णं ममं जेट्ठपुत्तं *साम्मो गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अगगओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाण-

१. उवा० २।२४ ।

भणइ जाव ववरोविज्जमि ।

२. उवा० २।२२ ।

१०. उवा० २।२४ ।

३. परिच्चयसि (क, ख, ग, घ) ।

११. उवा० २।२२ ।

४. सरीरस्स (क, ख, ग, घ) ।

१२. उवा० ४।३६ ।

५. सं० पा०—कासे जाव कोडे ।

१३. सं० पा०—अणारिए जाव समाचरति ।

६. असौ कोष्ठकवर्तिपाठः व्याख्याशः प्रतीयते ।

१४. सं० पा०—जेट्ठपुत्तं जाव कणीयस जाव

७. सं० पा०—समणोवासए जाव विहरइ ।

आइंइ ।

८. उवा० २।२३ ।

१५. मंससोल्लया (क, ख, ग, घ) ।

९. सं० पा०—एवं देवो दोच्चं पि तच्चं पि

भरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साम्मो गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साम्मो गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण्ण य० आइंचइ, जे वि य इमे सोलस रोगायका, ते वि य इच्छइ मम सरीरंसि' पक्खवित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्घाविए, से वि य आगासे उप्पइए, तेण य खभे आसाइए, महया-महया सदेणं कोलाहले कए ॥

धन्नाए पसिण-पदं

४३. तए णं सा धन्ना भारिया कोलाहलसद्' सोच्चा निसम्म जेणेव सुरादेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—किण्ण' देवाणुप्पिया ! तुब्भे णं महया-महया सदेणं कोलाहले कए ?

सुरादेवस्स उत्तर-पदं

४४. तए णं से सुरादेवे समणोवासए धन्नं भारियं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! न याणामि के वि पुरिसे' *आसुरत्ते रुढे कुविए चंडिकए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असि गहाय ममं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छडेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्टुपुत्तं साम्मो गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि । तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासिता ममं दोच्चं पि तच्चं पि

१. सरीरंसि (क) ।

२. कोलाहलं (क, ख, ग, घ); ३।४३ सूत्रे 'कोलाहलसद्' इति पाठो विद्यते । अत्रापि तथैव युज्यते । आदर्शेषु संक्षिप्तलेखने 'कोलाहलं' पाठो जातः इति प्रतीयते ।

३. किण्णं पुमं (ग) ।

४. सं० पा०—पुरिसे तहेव कहेइ जहा चुलणी-पिया धन्ना वि पडिअणइ जाव कणीयसं ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तए णं अहं तेणं पुरिमेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि ।

तए णं से पुरिमे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आमुरत्तं रुट्टे कुविणं चंडिकिणं मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्टपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता ममं अगगओ घाणइ, घाणत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं ममेण य सोणिणं य आइंचइ । तए णं अहं तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

एवं मज्झिमं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि । एवं कणीयस्सं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

तए णं से पुरिमे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंके पक्खिवामि जाव' जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिमेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—हंभो ! सुरादेवा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंके पक्खिवामि जाव' जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे

१. उवा० २।२२ ।

२. उवा० २।२३ ।

३. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२७ ।

५. उवा० ४।२७-३२ ।

६. उवा० ४।३३-३८ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२२ ।

९. उवा० ४।३६ ।

१०. उवा० २।२३ ।

११. उवा० २।२४ ।

१२. उवा० २।२२ ।

१३. उवा० ४।३६ ।

अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिणय य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिणय य आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता पंच मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिणय य आइंचइ, जे वि य इमे सोलस रोगायंका, ते वि य इच्छइ मम सरीरंसि पक्खिवित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिह्मित्तए त्ति कट्ठु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ॥

पायच्छित्त-पदं

४५. तए णं सा धन्ना भारिया सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी—नो खलु केइ पुरिसे तव जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं के वि पुरिसे सरीरंसि जमगसमगं सोलस रोगायंके पक्खिवइ, एस णं के वि पुरिसे तुब्भं उवसगं करेइ, एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे । तं णं तुमं इयाणि भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि । तं णं तुमं पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्ठाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहि ॥

४६. तए णं से सुरादेवे समणोवासए धन्नाए भारियाए तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्ठइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ ॥

१. यद्यपि 'तुब्भे, तुब्भं' इत्यादिबहुवचनान्ताः प्रयोगा व्याकरणे दृश्यन्ते, तथापि प्रस्तुतागमे एकवचनान्ता अपि प्रयुक्ताः सन्ति । महाशत-काव्ययने २७ सूत्रे 'तुब्भं, तुमं, विहरसि' एते प्रयोगाः एकस्मिन्नेव प्रसङ्गे प्राप्ताः सन्ति ।

२. सरीरगंसि (क) ।

३. सं० पा० — करेइ । सेसं जहा चुलणीपियस्स तहा भइ। भणइ । एवं सेसं जहा चुलणी-पियस्स निरवसेसं जाव सोइम्मे ।

सुरादेवस्स उवासगपडिमा-पदं

४७. तए णं से सुरादेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥
४८. तए णं से सुरादेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
४९. तए णं से सुरादेवे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
५०. तए णं मे सुरादेवे समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किमे धमणिसंतए जाए ॥

सुरादेवस्स अणसण-पदं

५१. तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयमि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किमे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मावणसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थो विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एव संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्प-भायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

सुरादेवस्स समाहिमरण-पदं

५२. तए णं से सुरादेवे समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियाणं पाउणित्ता, एक्कारसं य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए

अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते
समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा° सोहम्मे कप्पे अरुणकते विमाणे
उववण्णे । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ
मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

५३. °एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं चउत्थस्स
अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ° ॥

पचमं अज्भयण

चुल्लसयए

उक्खेव-पदं

१. '●जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं चउत्थस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! अज्भयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ° ?

चुल्लसययगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया' नामं नयरी । संखवणे उज्जाणे । जियसत्तू राया ॥
३. "●तत्थ णं आलभियाए नयरीए चुल्लसयए नामं गाहावई परिवसइ—अइडे जाव" बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं चुल्लसययस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. से णं चुल्लसयए गाहावई बहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव" सव्वकज्जवट्ठावए यावि होत्था ॥
६. तस्स णं चुल्लसययस्स गाहावइस्स बहुला नामं भारिया होत्था—अहीण-

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

साहस्सिएणं बहुला भारिया ।

२. ना० १।१।७ ।

५. उवा० १।११ ।

३. आलंभिया (क, घ) ।

६. उवा० १।१३ ।

४. सं० पा०—चुल्लसयए गाहावई अइडे जाव

७. उवा० १।१३ ।

छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगो-

पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा जाव' माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी
विहरइ ० ॥

महावीर-समवसरण-पदं

७. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव' जेणेव आलभिया नयरी जेणेव संखवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
८. परिसा निग्गया ॥
९. कुणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
१०. तए णं से चुल्लसयए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे- "एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुब्बाणुपुब्बि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसडे इहेव आलभियाए नयरीए बहिया संखवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।" तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णाम-गोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसारि सक्कारेभि सम्माणेभि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि-एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्प-महग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहार-चारेणं आलभियं नयरि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव संखवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥
११. तए णं समणे भगवं महावीरे चुल्लसययस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालि-याए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥
१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

१. उवा० २।२४ ।

३. ओ० सू० १६, २२ ।

२. सं० पा०-सामी समोसडे जहा आणंदो तहा गिहिधम्मं पडिबज्जइ । सेसं जहा कामदेवो जाव धम्मपण्णत्ति ।

४. ओ० सू० ५३-६६ ।

५. ओ० सू० ७१-७७ ।

चुल्लसययस्स गिहिधम्म-पडिबत्ति-पदं

१३. तए णं चुल्लसयए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! मे जहेयं तुब्भं वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इभ-मेट्ठि-सेणावइ सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावग-धम्मं पडिबज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबधं करेहि ॥

१४. तए णं से चुल्लसयए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सावय-धम्मं पडिबज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ आलभियाए नयरीए संखवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

चुल्लसययस्स समणोवासग-वरिया-पदं

१६. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव' समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुच्छणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फल-सेज्जा-संथारएण पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

बहुलाए समणोवासिय-वरिया-पदं

१७. तए णं सा बहुला भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव' समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-

कंबल-पायपुच्छणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधार-
एणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

चुल्लसयय-धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स चुल्लसययस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-
पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कं-
ताइं । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-
वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए
पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं आलभियाए नयरीए
बहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी
जाव' सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ
महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए' ॥

१९. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-
परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्ख-
मित्ता आलभियं नयरि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसह-
साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता
उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंधारयं संथरेइ, संथरेत्ता
दब्भसंधारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी उम्मुक्कमणि-
सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अवीए दब्भसंधा-
रोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं ° धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ ॥

चुल्लसयगस्स देव-कय-उवसग्ग-पदं

२०. तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे
देवे अंतियं ° पाउब्भूए ॥

° जेपुट्ठस

२१. तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं °
असि गहाय एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया° ! °अप्पत्थिय-
पत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! ह्रीणपुण्णचाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-
कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्ख-

१. उवा० १।१३ ।

२. उवा० १।१३ ।

३. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

४. सं० पा०—अंतियं जाव असि ।

५. सं० पा०—समणोवासया जाव न भं जेसि

कामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया !
धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया !
नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं
पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तइ वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झि-
त्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खा-
णाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि° न भंजेसि, तो ते [अहं ?] अज्ज जेट्टुपुत्तं
साम्मो गिहाम्मो नीणेमि', °नीणेत्ता तव अग्गम्मो घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्लं
करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण
य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवि-
याम्मो ववरोविज्जसि ॥

२२. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समणे अभोए अतत्थे
अणुव्विग्गे अखुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥
२३. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं
अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता
दोच्चं पि तच्चं पि चुल्लसययं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा !
समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खा-
णाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्टुपुत्तं साम्मो
गिहाम्मो नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गम्मो घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि,
करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य
सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चैव जीवियाम्मो
ववरोविज्जसि ॥
२४. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते
समणे अभोए जाव' विहरइ ॥
२५. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते
रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स जेट्टुपुत्तं
गिहाम्मो नीणेइ, नीणेत्ता अग्गम्मो घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता
आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स
गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ ॥
२६. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तं उज्जलं विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं
दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

१. सं० पा० — नीणेमि, एवं जहा चुल्लणीपियं, २. उवा० २।२२ ।
नवरं एक्केक्के सत्त मंससोल्लया जाव कणी- ३. उवा० २।२३ ।
यसं जाव आइंचामि । ४. उवा० २।२४ ।

० मज्झिमपुत्त

२७. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चुल्ल-
सयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव'
जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न
छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साम्रो गिहाओ नीणेमि,
नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाण-
भरियंसि कडाहयंसि अद्देहमि, अद्देहत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आइं-
चामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
२८. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव'
विहरइ ॥
२९. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि
तच्चं पि चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयया ! समणो-
वासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं
पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साम्रो
गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि,
करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देहमि, अद्देहत्ता तव गायं मंसेण य सोणि-
एण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरो-
विज्जसि ॥
३०. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते
समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
३१. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते
रुद्धे कुविए चंडिक्कए मिसिमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स
मज्झिमं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले
करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देहत्ता चुल्लसयगस्स
समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आइंचइ ॥
३२. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ
तितिवस्सइ अहियासेइ ॥

१. उवा० २।२४ ।

२. उवा० २।२२ ।

३. उवा० २।२३ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. उवा० २।२७ ।

० कणीयसपुत्त

३३. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चुल्ल-
सयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया !
जाव' जइ णं तुमं अज्ज ! सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोव-
वासाइं न छडुंसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं सामो गिहाओ
नीणेमि, नीणेत्ता तव अगगओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता
आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देहिमि, अद्देहिता तव गायं मंमेण य सोणिण य
आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरो-
विज्जसि ॥
३४. तए णं मे चुल्लसया, समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव'
विहरइ ॥
३५. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं
पि तच्चं पि चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा !
समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खा-
णाइं पोसहोववासाइं न छडुंसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं
सामो गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगगओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले
करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देहिमि, अद्देहिता तव गायं
मंमेण य सोणिण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव
जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
३६. तए णं मे चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते
समाण अभीए जाव' विहरइ ॥
३७. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते
रुद्धं कुविए चंडिकिए मिसोमिसीयमाणे चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स कणी-
यसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अगगओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले
करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देहि, अद्देहिता चुल्लसयगस्स
समणोवासयस्स गायं मंमेण य सोणिण य० आइंचइ ॥
३८. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए ० तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ
तितिकखइ० अहियासेइ ॥

१. उवा० २।२४ ।

२. उवा० २।२२ ।

३. उवा० २।२३ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. उवा० २।२२ ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. सं० पा०—समणोवासए जाव अहियासेइ ।

९. उवा० २।२७ ।

० हिरण्णकोडी-विप्पकिरण

३६. तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चउत्थं पि चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासिया' !
 •जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि ° न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिघाडग'-•तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेसु सव्वओ समंता विप्पइरामि', जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरो-विज्जसि ॥

४०. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥

४१. तए णं से देवे चुल्लसयग समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि' •एवं वयासी-- हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाण-पउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता विप्पइरामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ° ॥

चुल्लसयगस्स कोलाहल-पदं

४२. तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए' •अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता

१. उवा० २।२४ ।

२. सं० पा०—समणोवासया जाव न भंजेसि ।

३. उवा० २।२२ ।

४. सं० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

५. विप्पयिरामि (क, ग) ।

६. उवा० २।२३ ।

७. उवा० २।२४ ।

८. सं० पा०—तच्चं पि तहेव भणइ जाव ववरोविज्जसि ।

९. उवा० २।२२ ।

१०. सं० पा०—अणारिए जहा चुलणीपिया तथा चित्थेइ जाव कणीयसं जाव आइंचइ ।

मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आईचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य आईचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिएण य । आईचइ, जाओ वि य णं इमाओ ममं छ हिरण्णकोडीओ निहाण-पउत्ताओ, छ हिरण्णकोडाओ वड्डुपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउ-त्ताओ, ताओ वि य णं इच्छइ ममं साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिधाडग'-०तिय-चउवक-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता० विप्प-इरित्तए, तं मेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हत्तए त्ति कट्ठु उद्धाविए', ०से वि य आगासं उप्पइए, तेण य खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ॥

बहुलाए पसिण-पवं

४३. तए णं सा बहुला भारिया त कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव चुल्लसयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! तुभे णं महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ?

चुल्लसयगस्स उत्तर-पवं

४४. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए बहुलं भारियं एवं वयासी—एवं खलु बहुले ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे एगं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असि गहाय ममं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइ वयाइ वेरमणाइ पच्चक्खाणाइ पोसहोववासाइ न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्टुपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आईचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्ठे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि ।

१. सं० पा०—सिधाडग जाव विप्पइरित्तए । चुलणीपियस्स जाव सोहम्मे ।

२. सं० पा०—उद्धाविए जहा सुरादेवो । तहेव ३. उवा० २।२२ ।

भारिया पुच्छइ, तहेव कहेइ । सेसं जहा ४. उवा० २।२३ ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छडुंसे न भंजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समणे अभीए जाव' विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अइहेइ, अइहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिणं य आइंचइ ।

तए णं अहं तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तित्तिक्खामि अहियासेमि ।

एवं मज्झिमं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तित्तिक्खामि अहियासेमि । एवं कणीयसं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तित्तिक्खामि अहियासेमि । तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छडुंसे न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्डिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सब्बओ समंता विप्पइरामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं देवेणं एवं वुत्ते समणे अभीए जाव' विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—हंभो ! चुल्लसयगा ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छडुंसे न भंजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

१. उवा० २।२४

२. उवा० २।२२

३. उवा० २।२३

४. उवा० २।२४

५. उवा० २।२७

६. उवा० ५।२७-३२ ।

७. उवा० ५।३३-३८ ।

८. उवा० २।२४ ।

९. उवा० २।२२ ।

१०. उवा० २।२३ ।

११. उवा० २।२४ ।

१२. उवा० २।२२ ।

तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स अयमेयारूवे
अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिमे
अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं ममं
जेट्ठं पुत्तं साम्मो गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त
मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं
गायं मंसेण य सोणिणएण य आइंचइ, जे णं ममं मज्झिमं पुत्तं साम्मो गिहाओ
नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता
आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिणएण य
आइंचइ, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साम्मो गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ
घाएइ, घाएत्ता सत्त मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ,
अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिणएण य आइंचइ, जाओ वि य णं इमाओ ममं छ
हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्डिपउत्ताओ, छ हिरण्ण-
कोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, ताओ वि य णं इच्छइ ममं साम्मो गिहाओ नीणेत्ता
आलभियाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु
सव्वओ समंता विप्पइरित्ताए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्ताए त्ति कट्ठ
उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खंभे आसाइए, महया-महया
सदेणं कोलाहले कए ॥

पायच्छित्त-पवं

४५. तए णं सा बहुला भारिया चुल्लसयगं समणोवासयं एवं वयासी - नो खलु
केइ पुरिसे तव जेट्ठपुत्तं साम्मो गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ,
नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमं पुत्तं साम्मो गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता
तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयसं पुत्तं साम्मो गिहाओ
नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं के वि पुरिसे
तव छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्डिपउत्ताओ, छ
हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, साम्मो गिहाओ नीणेत्ता आलभियाए
नयरीए सिंघाडग-तिय - चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु सव्वओ समंता
विप्पइरइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवसगं करेइ, एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे,
तं णं तुमं इयारिणं भग्गवए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि । तं णं तुमं पिया !
एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निंदाहि गरिहाहि विउट्ठाहि विसोहेहि
अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोक्कमं पडिवज्जाहि ॥

४६. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए बहुलाए भारियाए तह त्ति एयमट्ठं विणएणं
पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ

विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अम्भुट्टेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ ॥

चुल्लसयगस्स उवासगपडिमा-पदं

४७. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥
४८. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
४९. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
५०. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

चुल्लसयगस्स अणसण-पदं

५१. तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्ला पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसं जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

चुल्लसययस्स समाहिमरण-पदं

५२. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते, समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा ° सोहम्मे कप्पे अरुणसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । °तत्थ णं अत्येगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पणत्ता । चुल्लसयगस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पणत्ता ॥

५३. से णं भंते ! चुल्लसयए ताम्पो देवलोगाम्पो आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे ° सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सब्बदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

५४. °एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ° ॥

छट्ठ अज्झयणं

कुंडकोलिए

उक्खेव-पदं

१. •‘जइ णं भंते समणेणं भगवया महावीरेणं जाव’ संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °

कुंडकोलियगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं कपिल्लपुरे नयरे’ । सहस्संबवणे उज्जाणे । जियसत्तू राया ॥
३. •‘तत्थ णं कपिल्लपुरे नयरे कुंडकोलिए नामं गाहावई परिवसइ—अट्ठे जाव’ बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं कुंडकोलियस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छव्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. से णं कुंडकोलिए गाहावई बहूणं जाव’ आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुंडुबस्स मेढी जाव’ सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

छ वड्ढिपउत्ताओ, छ पवित्थरपउत्ताओ,

२. ना० १।१।७ ।

छव्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं ।

३. अस्यानन्तरमतिरिक्तपाठः—‘पुढविसिलापट्टए चेइए’ (ग) ।

५. उवा० १।११ ।

६. उवा० १।१३ ।

४. सं० पा०—कुंडकोलिए गाहावई । पूसा भारिया छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ,

७. उवा० १।१३ ।

६. तस्स णं कुंडकोलियस्स गाहावइस्स पूसा नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा जाव' माणुस्सए कामभोए वञ्चणुभवयाणी विहरइ ॥

महावीर-समवसरण-पदं

७. *तेणं कालेणं तेणं समाएणं समणे भगवं महावीरे जाव' जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
८. परिसा निगया ॥
९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निगच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
१०. तए णं से कुंडकोलिये गाहावई इमीसे कहाए लद्धे समणे—“एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुब्बाणुपुब्बि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव कंपिल्लपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्संबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।”

तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि भारियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं-महावीरं वंदामि णमंसांमि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कगबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घा-भरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमिता सकोरेंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं कंपिल्लपुरं नयरं मज्झमज्झेणं निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणामेव सहस्संबवणे उज्जाणं, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तां आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुत्तूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥

११. तए णं समणे भगवं महावीरे कुंडकोलियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहा-लियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥

१. उवा० १।१४ ।

३. ओ० सू० १६, २२ ।

२. सं० पा०—सामी समोसढे । जहा कामदेवो

४. ओ० सू० २३-६६ ।

तहा सावयधम्मं पडिवज्जइ सा सन्नेव

५. ओ० सू० ७१-७७ ।

वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ।

१२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

कुंडकोलियस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

१३. तए णं कुंडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्प-माणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—सइहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं, भंते ! अवित्तहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहुवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तथा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावग-धम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

१४. तए णं से कुंडकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए' सावय-धम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ कंपिल्लपुराओ नयराओ सहस्संब-वणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कुंडकोलियस्स समणोवासग-वरिया-पदं

१६. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव' समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फल्लग-सेज्जा-संधारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

पूसाए समणोवासिय-वरिया-पदं

१७. तए णं सा पूसा भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा

जाव' समणे निगंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-
पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-
सेज्जा-संधारएणं° पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

देवेण नियतिवाद-समत्थण-पदं

१८. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए अण्णदा कदाइ पच्चावरण्हकालसमयंसि°
जेणेव असोगवणिया, जेणेव' पुढविसिलापट्टए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
नाममुद्दं च उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता समणस्स भगवओ
महावीरस्स अतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥
१९. तए णं तस्स कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स एगे देवे अतियं पाउव्ववित्था ॥
२०. तए णं से देवे नाममुद्दं च उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हइ,
गेण्हित्ता 'अंतलिक्खपडिवण्णे सखिखिणियाइ' पंचवण्णाइ वत्थाइ पवर परिहिए
कुंडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी हंभो ! कुंडकोलिया ! समणोवासया !
सुंदरी णं देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्ठाणे
इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा नियता°
सव्वभावा', मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि
उट्ठाणे इ वा° °कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार°-परक्कमे
इ वा अणियता° सव्वभावा ॥

कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पदं

२१. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया !
सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती°—नत्थि उट्ठाणे इ वा° °कम्मे
इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा° नियता सव्वभावा,
मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्ठाणे इ वा°
°कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा° अणियता

१. °उवा १।५६ ।

मूलपाठः २।४० सूत्रानुसारी स्वीकृतः ।

२. पुव्वा° (ख, घ) ।

८. नियया (ख, घ) ।

३. जेणामेव (क) ।

९. सव्वेभावा (ग) ।

४. नामामुद्दं (क, ख, ग) ।

१०. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे ।

५. नाममुद्दं (क, ख, घ); नामामुद्दं (ग) ।

११. अणियता (क, घ); अणियया (ख) ।

६. उत्तरिज्जं (ख, ग, घ) ।

१२. °पण्णत्ति (ग) ।

७. सखिखिणिं अंतलिक्खपडिवण्णे (क, ख, ग,

१३. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव नियता ।

घ); पाठसंश्लेषकरणेनात्र परिवर्तनं जातम् । १४. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव अणियता ।

सर्वभावा, तुमे णं देवाणुप्पिया ! इमा एयारूवा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किण्णा' लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? किं उट्ठाणेणं' °कम्मेणं बलेणं वीरिएणं °पुरिसक्कार-परक्कमेणं ? उदाहु अणुट्ठाणेणं' °अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं ° अपुरिसक्कारपरक्कमेणं ?

देवेण नियतिवाद-समत्थण-पद

२२. तए णं से देवे कुंडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए इमा एयारूवा' दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेणं' अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कारपरक्कमेणं 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए' ॥

कुंडकोलिएण नियतिवाद-निरसण-पदं

२३. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया ! तुमे 'इमा एयारूवा' दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्ठाणेणं' °अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं ° अपुरिसक्कारपरक्कमेणं 'लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए', जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे इ वा' °कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार °-परक्कमे इ वा, ते किं न देवा' ? 'अह तुब्भे' इमा एयारूवा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे उट्ठाणेणं' °कम्मेणं बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कार °-परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो जं वदसि सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्ठाणे इ वा' °कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा ° णियता सर्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-

१. किणा (क) ।

परक्कमेणं ।

२. सं० पा०—उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमेणं ।

६. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (क, ख, ग, घ) ।

३. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं ।

१०. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे ।

४. इमेयारूवा (क, ख, ग, घ) ।

११. 'क' प्रती अस्थानन्तरं—'अह ते एवं भवति, तो जं वदसि' ° एवं पाठो विद्यते । 'ग' प्रती 'अह तुब्भे इमा एयारूवा दिव्वा देविद्धी इ उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं लद्धा इ । तं ते एवं न भवति, तो जं वदसि' ° ।

५. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं ।

६. लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया (क्व) ।

१२. अह णं देवाणुप्पिया तुमे (ख, घ) ।

७. इमेयारूवा (क, घ); इमे एयारूवा (ग) ।

१३. सं० पा०—उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं ।

८. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार-

१४. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव णियता ।

पण्णत्ती — अत्थि उट्ठाणे इ वा' °कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिस-
क्कार-परवकमे इ वा° अणियता सव्वभावा, तं ते मिच्छा ॥

वेवस्स पडिगमण-पदं

२४. तए णं से देवे कुंडकोल्लिएणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समणे संकिए' कंखिए
वित्तिगिच्छासमावण्णे कलुससमावण्णे नो संचाएइ कुंडकोल्लियस्स समणोवास-
यस्स किञ्चि पमोक्खमाइक्खित्तए, नाममुद्दगं च उत्तरिज्जयं च पुढविशिलापट्टए
ठवेइ', ठवेत्ता जामेव दिसं पाउभूए, तामेव दिसं पडिगए ॥

महावीर-समवसरण-पदं

२५. तेणं कान्हेणं तेणं समएणं सामी समोसढे ॥

२६. तए णं से कुंडकोल्लिए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे° °समाणे—“एवं
खलु समणे भगवं महावीरे पुब्बाणुपुब्बि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे
इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव कंप्पिल्लपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्संब-
वणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं
भावेमाणे विहरइ ।”

तं सेयं खलु मम समणं भगवं महावीरं वंदित्ता णमंसित्ता ततो पडिणियत्तस्स
पोसहं पारेत्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता [पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ,
पडिणिक्खमित्ता ?] सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए मणुस्स-
वग्गुरापपरिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता कप्पिल्लपुरं
नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्संबवणं उज्जाणं,
जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो
आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिबिहाए
पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

२७. तए णं समणे भगवं महावीरे कुंडकोल्लियस्स समणोवासयस्स तीसे य महइ-
महालियाए परिसाए जाव° धम्मं परिकहेइ° ॥

महावीरेण पुब्बवुत्तं-परवण-पदं

२८. कुंडकोल्लियाइ ! समणे भगवं महावीरे कुंडकोल्लियं समणोवासयं एवं वयासी—

१. सं० पा० —उट्ठाणे इ वा जाव अणियता ।

वर्णने नास्ती उपलभ्यते । सं० पा—लद्धट्ठे

२. संकिए जाव कलुससमावण्णे (ग) ।

जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ जाव पज्जु-

३. ठावेइ (घ) ।

वासइ । धम्मकहा ।

४. लद्धट्ठे हट्ठ (क, ख, ग, घ); अत्र 'हट्ठ' शब्दः

५. ओ० सू० ७१-७७ ।

किमर्थमुल्लिखितः, इति न ज्ञायते । कामदेव-

से नूनं कुंडकोलिया ! कल्लं' तुभं पच्चावरण्हकालसमयंसि' असोगवणियाए एगे देवे अंतियं पाउव्ववित्था ।

तए णं से देवे नाममुद्दगं च' •उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हइ, गेण्हत्ता अंतलिव्वपडिवण्णे सखिखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए तुमं एवं वयासी—हंभो ! कुंडकोलिया ! समणोवासया ! सुंदरी णं देवाणुप्पिया ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती - नत्थि उट्टाणे इ वा कम्मं इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा नियता सव्व-भावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्टाणे इ वा कम्मं इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा अणियता सव्वभावा ।

तए ण तुमं तं देवं एवं वयासी - जइ णं देवाणुप्पिया ! सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्टाणे इ वा जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा नियता सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-पण्णत्ती—अत्थि उट्टाणे इ वा जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा अणियता सव्वभावा, तुमे णं देवाणुप्पिया ! इमा एयारूवा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? किं उट्टाणेणं जाव पुरिसक्कार-परक्कमेणं ? उदाहु अणुट्टाणेणं जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेणं ?

तए णं से देवे तुमं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए इमा एयारूवा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्टाणेणं जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।

तए णं तुमं तं देवं एवं वयासी जइ णं देवाणुप्पिया ! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे अणुट्टाणेणं जाव अपुरिसक्कार-परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, जंसि णं जीवाणं नत्थि उट्टाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा, ते किं न देवा ?

अह तुब्भे इमा एयारूवा दिव्वा देविद्धी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे उट्टाणेणं जाव परक्कमेणं लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तो जं वदसि सुंदरी णं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती—नत्थि उट्टाणे इ वा जाव नियता सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती—अत्थि उट्टाणे इ वा जाव अणियता सव्वभावा, तं ते मिच्छा । तए णं से देवे तुमं एवं वुत्ते समाने संकिए कंखिए वित्तिगिच्छासमावण्णे कलुससमावण्णे नो

१. × (ख) ।

२. पुच्चावरण्ह° (ख, व) ।

३. सं० पा०—नामुद्दगं च तद्देव जाव पडिगए ।

संचाएइ तुब्भे किंचि पमोक्खमाइक्खित्तए, नाममुद्दं च उत्तरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ।
से नूनं कुंडकोलिया ! अट्टे समट्टे ?
हंता अत्थि' ॥

महावीरेण कुंडकोलियस्स पसंसा-पवं

२६. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे [बहवे ?] 'समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी—जइ ताव अज्जो ! गिहिणो गिहिमज्झावसंता' अण्णउत्थिए अट्टेहि य हेऊहि य पसिणंहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ट-पसिणवागरणे करेति, सक्का पुणाइं अज्जो ! समणेहि निग्गंथेहि दुवालसंगं गणिपिडंगं अहिज्जमाणेहि अण्णउत्थिया अट्टेहि य' 'हेऊहि य पसिणंहि य कारणेहि य वागरणेहि य' निप्पट्ट-पसिणवागरणा करेत्तए ॥
३०. तए णं [ते बहवे ?] 'समणा निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥
३१. 'तए ण से कुंडकोलिये समणोवासए समण भगवं महावीरं वदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्टमादियइ, अट्टमादित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

भगवओ जणवयविहार-पवं

३२. सामी बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कुंडकोलियस्स धम्मजागरिया-पवं

३३. तए णं तस्स कुंडकोलियस्स समणोवासयस्स बहूहि' 'सोल-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं' भावेमाणस्स चोइस संवच्छराइं

१. हंता अत्थि अस्य पाठस्यानन्तरमेतावान् पाठः उलभ्यते, यथा—त धन्ने सि णं तुमं जहा कामदेवो तहा पससिओ (क);
त धन्नेसि णं तुमं जहा कामदेवो (ख, घ);
तं धन्ने सि णं तुमं जहा कामदेवो जाव पडिगता (ग);
असी अच अप्रासंगिकः प्रतीयते । कामदेवाध्ययने 'तं धन्नेसि णं तुमं' इत्यादि वाक्यानि देवो ब्रवीति (सू० २।४०) ।
अत्र च भगवतो महावीरस्य सवादप्रसंगे असी पाठोस्ति, किन्तु कामदेवाध्ययने 'हंता अत्थि'

- इति पाठस्यानन्तरं—'अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे' इति सूत्रमस्ति (सू० २।४६)
अत्रापि इत्थमेव युज्यते ।
२. महावीरे बहवे (२।४६) ।
३. गिहिमज्जे वसता (क, ग); 'वसंता णं (ख, घ) ।
४. सं० पा०—अट्टेहि य जाव निप्पट्टं ।
५. ते बहवे समणा (२।४७) ।
६. २।४८ सूत्रस्य क्रमः अस्माद् भिन्नोस्ति ।
७. सं० पा०—बहूहि जाव भावेमाणस्स ।

वीइक्कंताइं । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ'
 •पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणरस इमेयारुवे
 अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं
 कंप्पिल्लपुरे नयरे बहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं
 कुडुंबस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि
 समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं
 विहरित्तए' ॥

३४. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-
 परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्ख-
 मित्ता कंप्पिल्लपुरं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसह-
 साला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता
 उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंधारयं संधरेइ, संधरेत्ता
 दब्भसंधारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंधयारी उम्मुक्कमणि-
 सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अब्बीए दब्भसंधा-
 रोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं • धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता
 णं विहरइ ॥

कुंडकोलियस्स उवासगपडिमा-पवं

३५. •तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं
 विहरइ ॥
 ३६. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं
 अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
 ३७. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं,
 पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं
 अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ
 आराहेइ ॥
 ३८. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए इमेणं एयारुवेणं ओरालेणं विउलेणं

१. सं० पा०—कदाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ट-
 पुत्तं ठवेत्ता तहा पोसहसालाए जाव धम्म-
 पण्णत्ति ।

२. उवा० १।१३।

३. उवा० १।१३।

४. पू०—उवा० १।५७-५९।

५. सं० पा०—एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ ।
 तहेव जाव सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे
 जाव अंतं काहिइ ।

पयत्तेणं पग्गहिणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

कुंडकोलियस्स अणसण-पदं

३९. तए णं तस्स कुंडकोलियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं आरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । त अत्थि ता मे उट्ठाणं कम्मे बले वारिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे उट्ठाणं कम्मे बले वारिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवाणसए समणे भगवं महावीरे जिणे मुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

कुंडकोलियस्स समाहिमरण पदं

४०. तए णं से कुंडकोलिए समणोवासए बहूहि सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियाणं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएण फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलाइय-पडिक्कते, समाहिपत्त, कालमासे काल किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिसगस्स महा-विमाणस्स उत्तरपुरत्थिमे णं अरुणज्झए विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पणत्ता ॥

४१. से णं भंते ! कुंडकोलिए ताम्पो देवलागाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहि गमिहिइ ? कहि उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणं अंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

४२. •एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ॥

सत्तमं अज्झयणं

सद्दालपुत्ते

उक्खेव-पदं

१. °जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

सद्दालपुत्त-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं° पोलासपुरं नामं नयरं । सहस्संबवणं उज्जाणं । जियसत्तू राया ॥
३. तत्थ णं पोलासपुरे नयरे सद्दालपुत्ते नामं कुंभकारे' आजीविओवासए' परिवसइ । आजीवियसमयंसि लढट्ठे गहियट्ठे पृच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमज्जेमाणुरागरत्ते । “अयमाउसो ! आजीवियसमए अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे” त्ति' आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
४. तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एक्का हिरण्णकोडी निहाणपउत्ताओ एक्का हिरण्णकोडी बड्ढिपउत्ताओ, एक्का हिरण्णकोडी पवित्थरपउत्ताओ, एक्के वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं ॥
५. तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स अग्गिमित्ता नामं भारिया होत्था ॥
६. तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया पंच कुंभारावणसया' होत्था ॥

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

(ग); आजीवियओवासणे (घ) ।

२. ना० १।१।७ ।

५. ति एवं (ग) ।

३. कुंभकारे इड्ठे (ज) ।

६. कुंभकारा° (झ, ञ) ।

४. आजीवितोवासते (क); आजीवितोवासए

७. तस्स' णं बह्वे पुरिसा दिण्ण-भइ-भत्तवेयणा कल्लाकल्लि' वह्वे करए य वारए य पिहडए' य घडए य अद्धघडए य कलसए य अलिजरए य जंबूलए य उट्टियाओ य करेंति । अण्णे य से बह्वे पुरिसा दिण्ण-भइ-भत्तवेयणा कल्लाकल्लि' तेहि बहूहि करएहि य' •वारएहि य पिहडएहि य घडएहि य अद्धघडएहि य कलसएहि य अलिजरएहि य जंबूलएहि य' उट्टियाहि य रायमगंसि वित्ति कप्पेमाणा विहरंति ॥

सद्दालपुत्तस्स देवदेसंस-पवं

८. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अण्णदा कदाइ पच्चावरण्हकाल-समयंसि' जेणेव असोगवणिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जिता णं विहरइ ॥
९. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एक्के' देवे अंतियं पाउब्भवित्था ॥
१०. तए णं से देवे अतलिकखपडिवण्णे सखिखिणियाइ' •पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर' परिहिए सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—एहिइ' णं देवाणुप्पिया ! कल्लं इहं महामाहणे उप्पण्णणाणदंसणघरे तीयप्पडुपण्णाणागयजाणए' अरहा जिणे केवलो सव्वणू सव्वदरिसी तेलोककचहिय'—महिय-पूइए' सदेवमणुया-सुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे' वंदणिज्जे' •णमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं' पज्जुवासणिज्जे तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते । तं णं तुमं वंदेज्जाहि' •णमंसेज्जाहि सक्कारेज्जाहि सम्माणेज्जाहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं' पज्जुवासेज्जाहि, पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएणं उवनिमंतेज्जाहि । दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयइ', वइत्ता जामेव दिसं' पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ॥

१. डा०होर्नलसंपादितपुस्तके 'तस्थ' पाठो लभ्यते । १०. तीयपञ्चुपण्णाणागय' (क); तीयपडुपण्णा-
२. कल्लाकल्लं (क, ख, ग) । गय' (ख) ।
३. हेमशब्दानुशासन (१।२०१) 'पिठरे हो ११. प्राचीनलिप्यां बकार-चकारयोः साहचर्यात्
वारइच डः' । केषुचिदादशेषु 'वहिय' इति पाठोपि लभ्यते ।
४. कल्लाकल्लं (ग) । १२. पूतिते (क) ।
५. सं० पा०—करएहि य जाव उट्टियाहि । १३. × (क, ख, ग) ।
६. पुब्बा' (ख, घ) । १४. सं० पा०—वंदणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे ।
७. एगे (ख) । १५. सं० पा०—वंदेज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि ।
८. सं० पा०—सखिखिणियाइ जाव परिहिए । १६. वयासी (ग, घ) ।
९. एहीति (क, ग); एही (ख, घ) । १७. वित्ति (ख, घ) ।

सद्दालपुत्तस्स संकप्प-पदं

११. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तेणं देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु ममं धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते—से णं महामाहणे उप्पण्ण-णाणदंसणधरे' •तीयप्पडुपण्णाणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णु सव्वदरिसी तेलोककचहिय-महिय-पूइए सदेवमणूयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वंदणिज्जे णमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जे ° तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते, से णं कल्लं इह हव्वमागच्छिस्सति । तए णं तं अहं वंदिस्सामि' •णमंसिस्सामि सक्कारेस्सामि सम्माणेस्सामि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं ° पज्जुवासिस्सामि पाडिहारिएणं' •पीढ-फल-सेज्जा-संधारएणं ° उवनिमंतिस्सामि ॥

महावीर-समवसरण-पदं

१२. तए णं कल्लं' •पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियमि अह पंडुरे पहाए रत्तासोगप्पगास-किसुय-सुयमुह-गूंजद्धरागसरिसे कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा ° जलते समणे भगवं महावीरे' जाव' •जेणेव पोलासपुरे नयरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओगगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ° ॥
१३. परिसा निग्गया ॥
१४. •कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' ° पज्जुवासइ ॥
१५. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे—“एवं खलु समणे भगवं महावीरे' •पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसठे इहेव पोलासपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्संबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओगगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ ।” तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि" •णमंसांमि सक्कारेमि सम्माणेमि

१. सं० पा०—उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव तच्च-कम्मसंपया ।

२. सं० पा०—वदिस्सामि जाव पज्जुवासि-स्सामि ।

३. सं० पा०—पाडिहारिएणं जाव उवनिमंति-स्सामि ।

४. सं० पा०—कल्लं जाव जलते ।

५. सं० पा०—महावीरे जाव समोसरिए ।

६. ओ० सू० १६, २२ ।

७. सं० पा०—जाव पज्जुवासइ ।

८. ओ० सू० ५३-६६ ।

९. सं० पा०—महावीरे जाव विहरइ ।

१०. सं० पा०—वंदामि जाव पज्जुवासामि ।

कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं ° पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए' °कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल °पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं °मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए ° अप्पमहग्घाभरणालंक्रियसरीरे मणुस्सवग्गुरापरिगए साओ' गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पोलासपुरं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णममित्ता °णच्चामण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे ° पज्जुवासइ ॥

१६. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य महइ'- °महालियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ° ॥

महावीरस्स देवसंदेस-निरुवण-पवं

१७. सद्दालपुत्ताइं ! समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी से नूणं सद्दालपुत्ता ! कल्लं तुमं पच्चावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणियां, °तेणेव उवागच्छमि, उवागच्छित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता ण ° विहरसि । तए णं तुभं एगे देवे अतियं पाउब्भवित्था ।

तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवण्णे ° सखिखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए तुमं ° एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता" ! °एहिइ णं देवानुप्पिया ! कल्लं इहं महामाहणे जाव" तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते । तं णं तुमं वदेज्जाहि णमसेज्जाहि सक्कारेज्जाहि सम्माणेज्जाहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवा-सेज्जाहि, पाडिहारिएणं पीढ-फल-सेज्जा-संथारएणं उवनिमतेज्जाहि । दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं पडिगए ।

तए णं तुभं तेणं देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु मम धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते—से णं महामाहणे जाव" तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते, से णं

१. सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।

८. पुब्बा ° (ख, घ) ।

२. सं० पा०—सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घा ।

९. सं० पा०—असोगवणिया जाव विहरसि ।

३. सयाओ (घ) ।

१०. सं० पा०—अंतलिक्खपडिवण्णे एवं वयासी ।

४. सं० पा०—णमसित्ता जाव पज्जुवासइ ।

११. सं० पा०—सद्दालपुत्ता त चेव सच्च जाव

५. सं० पा०—महइ जाव धम्मकहा समत्ता ।

पज्जुवासित्तामि ।

६. ओ० सू० ७१-७७ ।

१२. उवा० ७।१० ।

७. °दि (ग) ।

१३. उवा० ७।११ ।

कल्लं इह हव्वमागच्छिस्सति । तए णं तं अहं वंदिस्सामि णमंसिस्सामि सक्का-
रेस्सामि सम्माणेस्सामि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासिस्सामि, पाडिहारि-
एणं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं उवनिमंतिस्सामि ० । से नूणं सद्दालपुत्ता !
अट्ठे समट्ठे ?
हंता अत्थि ।
तं नो खलु सद्दालपुत्ता ! तेणं देवेणं गोसालं मंखलिपुत्तं पणिहाय एवं वुत्ते ॥

सद्दालपुत्तस्स निवेदन-पदं

१८. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासयस्स समणेणं भगवया महावीरेणं
एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे
समुप्पण्णे एस णं समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पण्णणाणदंसणधरे'
•तीयप्पडुपण्णाणागयजाणए अरहा जिणे केवली सब्वण्णू सब्वदरिसी तेलोक्क-
चहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयामुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वंदणिज्जे
णमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवास-
णिज्जे ० तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते । तं सेयं खलु ममं समणं भगवं महावीरं
वंदित्ता णमंसित्ता पाडिहारिएणं पीढ-फलग' •सेज्जा-संधारएणं ० उवनिमंते-
त्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ
णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! मम पोलासपुरस्स
नयरस्स बहिया पंच कुंभारावणसया । तत्थ णं तुब्भे पाडिहारियं पीढ'-•फलग-
सेज्जा ०-संधारयं ओगिण्हित्ता' णं विहरइ ॥

महावीरेण सद्दालपुत्त-संबोधण-पदं

१९. तए णं से समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स अजीविओवासगस्स एयमट्ठं
पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स 'पंचसु कुंभारावण-
सएसु" फासु-एसणिज्जं पाडिहारियं पीढ-फलग'-•सेज्जा ०-संधारय ओगिण्हित्ता
णं विहरइ ॥

२०. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अण्णदा कदाइ वाताहतयं कोलालभंडं
अंतो सालाहितो बहिया नीणेइ, नीणेत्ता आयवंसि' दलयइ ॥

१. सं० पा०—उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव
तच्चकम्मसंपया ।

२. सं० पा०—पीढ-फलग जाव उवनिमंतेत्तए ।

३. सं० पा०—पीढ जाव संधारयं ।

४. तुगिण्हित्ता (क) ।

५. पंचकुंभ ० (ख, घ) ।

६. सं० पा०—फलग जाव संधारयं ।

७. वायाहतयं (क, ग); वायाहययं (ख) ।

८. आयवंसि (ख) ।

२१. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—
सद्दालपुत्ता ! एस णं कोलालभंडे कहं कतो ?
२२. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—
एस णं भंते ! पुब्बि मट्ठिया आसी, तओ पच्छा उदएणं तिम्मिज्जइ',
तिम्मिज्जिता छारेण य करिसेण य एगयओ मीसिज्जइ, मीसिज्जिता चक्के
आरुभिज्जति', तओ बह्वे करगा य' •वारगा य पिहडगा य घडगा य अद्घ-
घडगा य कलसगा य अलिजरगा य जंबूलगा य° उट्ठियाओ य कज्जंति ॥
२३. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—
सद्दालपुत्ता ! एस णं कोलालभंडे कि उट्ठाणेणं° •कम्मेणं बलेणं वीरिएणं°
पुरिसक्कार-परक्कमेणं कज्जंति, उदाहु अणुट्ठाणेणं° •अकम्मेणं अबलेणं अवीरि-
एणं° अपुरिसक्कारपरक्कमेणं कज्जंति ?
२४. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—
भंते ! अणुट्ठाणेणं° •अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं° अपुरिसक्कारपरक्कमेणं ।
नत्थि उट्ठाणे इ वा° •कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा° पुरिसक्कार-
परक्कमे इ वा, नियता सव्वभावा ॥
२५. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी—
सद्दालपुत्ता ! जइ णं तुभं केइ पुरिसे वाताहतं वा पक्केल्लयं वा कोलालभंडं
अवहरेज्ज' वा विक्खरेज्ज वा भिदेज्ज वा अच्छिदेज्ज' वा परिट्ठवेज्ज वा,
अग्निमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरेज्जा,
तस्स णं तुमं पुरिसस्स कं" दंडं वत्तेज्जासि ?
भंते ! 'अहं णं'" तं पुरिसं आओसेज्ज वा हणेज्ज वा बंधेज्ज वा महेज्ज" वा

१. × (क, ख, ग) प्रायो बहुषु आदर्शेषु केवलं
'कतो' पाठो लभ्यते, उत्तरसूत्रे 'कज्जंति'
इति प्रयोगो विद्यते, तेन प्रश्नसूत्रे 'कहं कतो'
इति पाठः उपयुज्यते ।
२. निमिज्जइ (ख); तिम्मिज्जइ (ग); निमिज्जइ
(घ); आर्द्धीकरणार्थे 'तिम्म' चातुर्विद्यते ।
तेन 'तिम्मिज्जइ' पाठः स्वीकृतः । 'त-न'
वर्णयोः प्राचीनलिप्यां सादृश्येन परिवर्तनं
जातमिति प्रतीयते ।
३. आरोहिज्जइ (ख); आरोहिज्जति (घ) ।
४. सं० पा०—करणा य जाव उट्ठियाओ ।
५. सं० पा०—उट्ठाणेण जाव पुरिसक्कार ।
६. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार ।
७. सं० पा०—अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कार ।
८. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव पुरिसक्कार ।
९. 'ख, ग' प्रत्योः 'उत्र' स्थाने सर्वत्र 'उज्जा'
विद्यते ।
१०. विच्छेदेज्ज (वृषा) ।
११. कि (ख, घ) ।
१२. अहणं (न, घ) ।
१३. गहेज्ज (ग) ।

तज्जेज्ज वा तालेज्ज वा निच्छोडेज्ज वा निब्भच्छेज्ज वा, अकाले चेव जीवि-
याओ ववरोवेज्जा ॥

२६. सद्दालपुत्ता ! नो खलु तुब्भं केइ पुरिसे वाताहतं वा पक्केल्लयं वा कोलाल-
भंडं अवहरइ वा° विक्खिरेइ वा भिदेइ वा अच्छिदेइ वा° परिट्ठवेइ वा;
अग्गिमित्ताए भारियाए सद्धि विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ; नो
वा तुमं तं पुरिसं आओसेसि वा हणेसि वा° बंधेसि वा महेसि वा तज्जेसि
वा तालेसि वा निच्छोडेसि वा निब्भच्छेसि वा° अकाले चेव जीवियाओ
ववरोवेसि, जइ नत्थि उट्ठाणे इ वा° कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा
पुरिसक्कार°-परक्कमे इ वा, नियता° सव्वभावा । 'अहं णं'° तुब्भं केइ पुरिसे
वाताहतं वा° पक्केल्लयं वा कोलालभंडं अवहरेइ वा विक्खिरेइ वा भिदेइ वा
अच्छिदेइ वा° परिट्ठवेइ वा, अग्गिमित्ताए वा° भारियाए सद्धि विउलाइं
भोगभोगाइं भुंजमाणे° विहरइ; तुमं वा तं पुरिसं आओसेसि वा° हणेसि
वा बंधेसि वा महेसि वा तज्जेसि वा तालेसि वा निच्छोडेसि वा निब्भच्छेसि
वा, अकाले चेव जीवियाओ° ववरोवेसि, तो जं वदसि नत्थि उट्ठाणे इ वा°
°कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा°, नियता
सव्वभावा, तं ते मिच्छा ॥

२७. एत्थ णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए संबुद्धे ॥

सद्दालपुत्तस्स गिहिघम्म-पडिवत्ति-पव

२८. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ,
वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी --इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए घम्मं निसा-
मेत्तए ॥
२९. तए णं समणे भगवं महावारे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तोसे य
महइमहालियाए परिसाए जाव" घम्मं परिकहेइ ॥
३०. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए
घम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठु" °चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए

१. पक्केल्लयं (ग, घ) ।

२. सं० पा०—अवहरइ वा जाव परिट्ठवेइ ।

३. आतोससि (क, ग) ।

४. सं० पा०—हणेसि वा जाव अकाले ।

५. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे ।

६. निःया (क); णितिया (ग) ।

७. अहणं (क, ग, घ) ।

८. सं० पा०—वाताहतं वा जाव परिट्ठवेइ ।

९. सं० पा०—अग्गिमित्ताए वा जाव विहरइ ।

१०. सं० पा०—आओमेसि वा जाव ववरोवेसि ।

११. सं० पा०—उट्ठाणे इ वा जाव नियता ।

१२. ओ० सू० ७१-७७ ।

१३. सं० पा०—हट्ठुट्ठु जाव हियए जहा आणंदो

तहा गिहिघम्मं पडिवज्जइ, नवरं एणा

हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं
तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता
एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं
पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अम्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं
पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते !
इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से
जहेयं तुम्हे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडं-
बिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खा-
वइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

३१. तए णं से सद्दालपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए' पंचाणुव्वइयं
सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता° समणं
भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव पोलासपुरे नयरे',
जेणेव सए गिहे, जेणेव अग्गिमित्ता भारिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
अग्गिमित्तं भारियं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए' ! °मए समणस्स
भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते । से वि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए
अभिरुइए° । तं गच्छाहि णं तुमं समणं भगवं महावीरं वंदाहि' °णमंसाहि
सक्कारेहि सम्माणेहि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासाहि, समणस्स
भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं
गिहिधम्मं° पडिवज्जाहि ॥

३२. तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया सद्दालपुत्तस्स समणोवासगस्स तह त्ति एयमहुं
विणएणं पडिसुणेइ ॥

हिरण्णकोडो निहाणपउत्ता एगा हिरण्णकोडो
वट्ठिपउत्ता एगा हिरण्णकोडो पविस्थरपउत्ता
एगे वए दसगोसाहस्सिएणं जाव समणं ।

१. पू०—उवा० १।२४-४५ ।
२. नयरे तेणेव उवागच्छइ. उवागच्छित्ता पोला-
सपुरं नयरं मज्झमज्झेणं (क, ख, ग, घ);
प्रथमाध्ययनस्य ४५ सूत्रानुसारेण असौ पाठः
अनावश्यकः प्रतिभाति । नास्त्यार्थसंगतिरपि
विद्यते ।

३. सं० पा०—देवाणुप्पिए समणे भगवं महावीरे
जाव समोसठे तं । अस्य पाठस्य पूर्तिः
प्रथमाध्ययनस्य ४५ सूत्रेण जायते । तत्र
'समणे भगवं महावीरे जाव समोसठे' एता-
दृशः पाठो नास्ति । संभवतः पाठस्य संक्षेपी-
करणे किञ्चित् परिवर्तनं जातम् ।

४. सं० पा०—वंदाहि जाव पज्जुवासाहि ।

५. गिधिधम्म (ग) ।

अग्निमित्ताए बंङ्गणट्ट-गमण-पवं

३३. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइयं^१ समखुरवालि-हाण-समलिहियंसिगएहिं जंबूणयामयकलावजुत्त-पइविसिद्धएहिं रययामयघंट-सुत्तरज्जुग-वरकंचणखचियं^२-नत्थपग्गहोग्हियएहिं^३ नीलुप्पलकयामेलएहिं^४ पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिकणग-घंटियाजालपरिगयं सुजायजुगजुत्त-उज्जुग-पसत्थसुविरइयनिम्मियं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्प-वरं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥
३४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा^५ *सद्दालपुत्तेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिगहियं सिरसावत्तं मत्थए भंजलिं कट्ठु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणंता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त-जोइयं जाव^६ धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं^७ पच्चप्पिणंति ॥
३५. तए णं सा अग्निमित्ता भारिया ण्हाया^८ *कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल^९ पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं^{१०} *मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया^{११} अप्पमहग्घा-भरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहिता पोलासपुरं नयरं मज्झमंज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाप्पो जाणप्प-वराप्पो पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिवस्सुतो^{१२} *आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता^{१३} वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे^{१४} *सुत्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहे विणएणं^{१५} पंजलियडा^{१६} ठिइया चेव पज्जुवासइ ॥
३६. तए णं समणे भगवं महावीरे अग्निमित्ताए तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव^{१७} धम्मं परिकहेइ ॥

१. पुस्तकान्तरे यानवर्णको ह्यते (वृ) ।

२. °खइय (ख) ।

३. नत्थापग्गहो° (ख, ग) ।

४. °कयामलएहिं (ख); °कयमालएहिं (ग) । १०. सं० पा०—णाइदूरे जाव पंजलियडा ।

५. सं० पा०—कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति । ११. पंजलिउडा (ख, घ) ।

६. उवा० १।५७ ।

१२. ओ० सू० ७१-७७ ।

७. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

८. सं० पा०—सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्प-महग्घा° ।

९. सं० पा०—तिवस्सुतो जाव वंदइ ।

अग्निमित्ताए गिहिघम्म-पडिवत्ति-पदं

३७. तए णं सा अग्निमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठु' *चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-
विसप्पमाणहियया उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता° समणं भगवं महावीरं तिकखुत्तो
आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं
वयासी—सट्ठहामि णं भंते ! निगंथं पावयणं', *पत्तियामि णं भंते ! निगंथं
पावयणं, रोएमि णं भंते ! निगंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निगंथं
पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते । अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते !
इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से°
जहेयं तुब्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बह्वे उग्गा भोगा' *राइण्णा
खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई अण्णं य बह्वे राईसर-
तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-मेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता
अगाराओ अणगारियं° पव्वइया. नो खलु अहं तथा संचाएमि देवाणुप्पियाणं
अंतिए मुंडा भवित्ता' *अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए° । अहं णं देवाणु-
प्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिघम्मं
पडिवज्जिस्सामि' ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

३८. तए णं सा अग्निमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए
पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिघम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता
समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता तमेव धम्मियं
जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया, तामेव दिसं पडिगया ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

३९. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ पोलासपुराओ नगराओ
सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवय-
विहारं विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स समणोवासग-वरिया-पदं

४०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे' जाव' *समणे

१. सं० पा०—हट्ठुट्ठु समणं ।

५. पडिवज्जामि (क, ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—पावयणं जाव जहेयं ।

६. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ ।

३. सं० पा०—भोगा जाव पव्वइया ।

७. उवा० १।५५ ।

४. सं० पा०—भवित्ता जाव अहं ।

निगंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

अग्निमित्ताए-समणोवासिय-वरिया-पवं

४१. तए णं सा अग्निमित्ता भारिया समणोवासिया जाया-अभिगयजीवाजीवा जाव' समणे निगंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं पडिलाभेमाणी० विहरइ ॥

गोसालस्स आगमण-पवं

४२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते इमीसे कहाए लद्धे समणे—एवं खलु सद्दालपुत्ते आजीवियसमयं वमिता समणाणं निगंथाणं दिट्ठि पवण्णे', तं गच्छामि णं सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं समणाणं निगंथाणं दिट्ठि वामेत्ता पुणरवि आजीवियदिट्ठि गेण्हावितए त्ति कट्ठु—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आजीवियसध-परिवुडे जेणेव पोलासपुरे नयरे, जेणेव आजीवियसभा, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडगनिक्खेवं करेइ, करेत्ता कतिवएहि' आजीविएहि सद्धि जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ॥

४३. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाति' नो परिजाणति', अणाढामाणे' अपरिजाणमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

गोसालेण महावीरस्स गुणकित्तण-पवं

४४. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तेणं समणोवासएणं अणाढिज्जमाणे अपरिजाणिज्जमाणे पीढ-फलग-सेज्जा-संधारट्टयाए समणस्स भगवओ महा-वीरस्स गुणकित्तणं करेइ—आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महामाहणे ?

४५. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—के णं देवाणुप्पिया ! महामाहणे ?

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—समणे भगवं महावीरे महामाहणे ।

१. उवा० १।५६ ।

२. पडिक्खणे (क, घ) ।

३. कतिवतेहि (क); कइवएहि (ख, घ) ।

४. अढाति (क, ग) ।

५. परिजाणाति (घ) ।

६. अणाढामीणे (क); अणाढायमाणे (ख, घ) ।

७. करेमाणे सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी

(कव) ।

से केणट्टेणं देवाणुप्पिया ! एवं बुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महामाहणे ?
एवं खलु सदालपुत्ता ! समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पण्णणानंदसणघरे'
•तीयप्पडुपण्णणागवजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्क-
चहिय-महिय-पूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्जे वंदणिज्जे
नमंसणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लानं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवास-
णिज्जे० तच्च-कम्मसंपया-संपउत्ते । से तेणट्टेणं देवाणुप्पिया ! एवं बुच्चइ—
समणे भगवं महावीरे महामाहणे ॥

४६. आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महागोवे ?

के णं देवाणुप्पिया ! महागोवे ?

समणे भगवं महावीरे महागोवे ।

से केणट्टेणं देवाणुप्पिया' ! •एवं बुच्चइ -समणे भगवं महावीरे० महागोवे ?
एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे ससाराडवीए बह्वे जीवे
नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे
धम्ममएणं दंडेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे निव्वानमहावाडं साहत्थि संपावेइ ।
से तेणट्टेणं सदालपुत्ता ! एवं बुच्चइ -समणे भगवं महावीरे महागोवे ॥

४७. आगए' णं देवाणुप्पिया ! इहं महासत्थवाहे ?

के' णं देवाणुप्पिया ! महासत्थवाहं ?

सदालपुत्ता ! समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे ।

से केणट्टेणं देवाणुप्पिया ! एवं बुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे ?
एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बह्वे जीवे
नस्समाणे विणस्समाणे' •खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे०
विलुप्पमाणे उम्मगगपडिवण्णे' धम्ममएणं' पथेणं' सारक्खमाणे निव्वानमहा-
पट्टेणं' साहत्थि संपावेइ । से तेणट्टेणं सदालपुत्ता ! एवं बुच्चइ—समणे भगवं
महावीरे महासत्थवाहे ॥

४८. आगए' णं देवाणुप्पिया ! इहं महाधम्मकही ?

१. सं० पा०—उप्पण्णणानंदसणघरे जाव महि-
यपूइए जाव तच्च ।

२. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव महागोवे ।

३. आगदे (क) ।

४. से के (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे ।

६. X (क) ।

७. धम्ममतेणं (क, ग) ।

८. पथेणं (घ) ।

९. निव्वानमहापट्टणाभिमुहे (ख, घ) ।

१०. महासार्वबाहालापकानन्तरं पुस्तकान्तरे
इदमपरमधीयते—वृत्तावस्थोत्सेखस्यानुसारेण
'महाधम्मकही' इत्यासापकः पाठान्तररूपेण
स्वीकृतोऽस्ति ।

के' णं देवाणुप्पिया ! महाधम्मकही ?

समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ।

से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ?
एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे महइमहालयंसि संसारंसि बहवे
जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे
विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवण्णे सप्पहविप्पणट्ठे मिच्छत्तबलाभिभूए षट्ठविहकम्म-
तमपडल^१-पडोच्छण्णे बहूहि अट्ठेहि य^२ *हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य
वागरणेहि य निप्पट्ठ-पसिण^३ वागरणेहि य चाउरंताओ संसारकंताराओ
साहत्थि नित्थारेइ । से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं
महावीरे महाधम्मकही ॥

४६. आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महानिज्जामए ?

के' णं देवाणुप्पिया ! महानिज्जामए ?

समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए ।

से केणट्ठेणं *देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे भगवं महावीरे महानिज्जा-
मए ? *

एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसारमहासमुदे बहवे जीवे
नस्समाणे विणस्समाणे *खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे *
विलुप्पमाणे बुड्डमाणे निबुड्डमाणे उप्पियमाणे^४ धम्ममईए^५ नावाए निव्वाण-
तीराभिमुहे साहत्थि संपावेइ । से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—समणे
भगवं महावीरे महानिज्जामए ॥

विवाद-पट्टवणा-पसिण-पदं

५०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—तुब्भे^६ णं
देवाणुप्पिया ! इयच्छेया^७ इयदच्छा इयपट्ठा^८ इयनिउणा इयनयवादी इयउव-
एसलद्धा^९ इयविण्णाणपत्ता । पभू णं^{१०} तुब्भे मम धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं
समणेणं भगवया महावीरेणं सद्धि विवादं करेत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।

१. से के (क, ख, ग, घ) ।

२. पडल (क) ।

३. सं० पा०—अट्ठेहि य जाव वागरणेहि ।

४. से के (क, ख, घ) ।

५. सं० पा०—केणट्ठेणं एवं ।

६. सं० पा०—विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे ।

७. उप्पियमाणे (क) ।

८. धम्ममतीते (क, ग) ।

९. तुब्भं (ग) ।

१०. इयच्छेयाओ (ख) ।

११. इयपत्तट्ठा (वृपा) ।

१२. अस्यानन्तरं वृत्ती 'इयमेधाविणो' अस्य
पाठान्तरस्य उल्लेखोस्ति ।

१३. णं भंते ! (क, ग) ।

से केणट्टेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ—नो खलु पभू तुब्भे मम धम्मायरिएणं^१
 •धम्मोवएसएणं समणेणं भगवया ° महावीरेणं सद्धि विवादं करेतए ?
 सद्दालपुत्ता ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जुगवं^२ •बलवं अप्पायंके
 थिरगहत्थे पडिपुण्णपाणिपाए पिट्ठंतरोरुसंधायपरिए घणनिच्चियवट्टवलिय-
 खंधे लंघण-वगगण-जयण-वायाम-समत्ये चम्मेट्ट-दुघण-मुट्टिय-समाहय-निच्चिय-
 गत्ते उरस्सबलसमन्नागए तालजमलजुयलवाहू छेए दक्खे पत्तट्टे ° निउणसिप्पो-
 वगए एगं महं अयं वा एलयं वा सूयरं वा कुक्कुडं वा तित्तरं^३ वा वट्टयं वा लावयं
 वा कवोयं वा कविजलं^४ वा वायमं वा सेणयं^५ वा, हत्थंसि वा पायंसि वा
 खुरंसि वा पुच्छंसि वा पिच्छंसि वा सिगंसि वा विसाणंसि वा रोमंसि वा
 जहि-जहि गिण्हइ, तहि-तहि निच्चलं निप्पदं^६ करेइ, एवामेव^७ समणे भगवं
 महावीरे ममं वरूहिं अट्टेहि य हेऊहि यं^८ •पसिणेहि य कारणेहि य ° वागरणेहि
 य जहि-जहि गिण्हइ, तहि-तहि निप्पट्ट-पसिणवागरणं करेइ । से तेणट्टेणं सद्दाल-
 पुत्ता ! एवं वुच्चइ—नो खलु पभू अहं तव धम्मायरिएणं^९ •धम्मोवएसएणं
 समणेणं भगवया ° महावीरेणं सद्धि विवादं करेतए ॥

५१. तए णं से सद्दालपुत्ते ! समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—जम्हा
 ण 'देवाणुप्पिया ! तुब्भे'^{१०} मम धम्मायरिस्स^{११} •धम्मोवएसगस्स समणस्स
 भगवओ ° महावीरस्स संतेहि तच्चेहि तहिएहि सभूएहि भावेहि गुणकित्तणं
 करेह^{१२}, तम्हा णं अहं तुब्भे पाडिहारिएणं पीढ^{१३}—•फलग-सेज्जा °—संधारएणं
 उवनिमंतेमि, नो चेव णं धम्मो त्ति वा तवो त्ति वा । तं गच्छह णं तुब्भे मम
 कुंभारावणेषु पाडिहारियं पीढ-फलग^{१४}—•सेज्जा-संधारयं ° ओगिण्हत्ता णं^{१५}
 विहरह ॥

५२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ,

१. सं० पा०—धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं ।

२. सं० पा०—जुगवं जाव निउणसिप्पोवगए ।

३. तित्तरं (घ) ।

४. कविजलि (घ) ।

५. सण्हं (क); सेणयं (ख) ।

६. निप्पदं (क) ।

७. घरेइ (क, ख, ग) ।

८. एवमेव (ख, ग) ।

९. सं० पा०—हेऊहि य जाव वागरणेहि ।

१०. सं० पा०—धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं ।

११. तुब्भे देवाणुप्पिया (क) ।

१२. सं० पा०—धम्मायरिस्स जाव महावीरस्स ।

१३. करेसि (ख) ।

१४. सं० पा०—पीढ जाव संधारएणं ।

१५. सं० पा०—फलग जाव ओगिण्हत्ता ।

१६. णं उवसंपज्जित्ता णं (क, ख, ग, घ) ।

पडिसुणेत्ता कुंभारावणेसु पाडिहारियं पीढ'-० फलग-सेज्जा-संधारयं ० ओगि-
ण्हित्ता णं विहरइ ॥

५३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं जाहे नो संचाएइ बहूहि
आधवणाहि य पणवणाहि य सणवणाहि य विणवणाहि य निग्गंथाओ
पावयणाओ चालित्ते वा खोभित्ते वा विपरिणामेत्ते वा, ताहे संते तंते
परितंते पोलासपुराओ नयराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया
जणवयविहारं विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स घम्मजागरिया-पदं

५४. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स बहूहि सील'-० व्वय-गुण-वेरमण-
पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अप्पाणं ० भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छरा वीइ-
क्कंता । पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स 'अण्णदा कदाइ'
पुव्वरत्तावरत्तकाल'-० समयसि घम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झ-
त्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपपज्जित्था—एवं खलु अहं पोलासपुरे
नयरे बहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स
मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स
भगवओ महावीरस्स अंतियं घम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्ते ॥
५५. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं
च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता
पोलासपुरं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवण-
भूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंधारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंधारयं दुरुहइ,
दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंधयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-
वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अब्बीए दब्भसंधारोवगए ० समणस्स
भगवओ महावीरस्स अंतियं घम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

१. सं० पा०—पीढ जाव ओगिण्हित्ता ।

२. विपरिणावित्ते (ग) ।

३. सं० पा०—सील जाव भावेमाणस्स ।

४. × (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसह-
सालाए समणस्स । संक्षेपीकरणपद्धतौ प्रायो
नैककृपता लभ्यते । क्वचित् 'जाव' शब्दा-
न्तरं संक्षिप्तपाठस्य अन्तिमशब्दो निविद्यते

क्वचिच्च पूर्ववर्तिशब्दः । अत्रापि इत्यमेव
विद्यते । तेन द्वितीयाध्ययनस्याधारेणात्र
'दब्भसंधारोवगए' इति पर्यन्तं पाठः पूरितः ।

६. उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

८. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

९. घम्मं (क) ।

सद्दालपुत्तस्स देवकव-कय-उवसग्ग-पदं

५६. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउव्वित्था ॥

• जेट्ठपुत्त

५७. तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल'-●गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्द-सिया ! सिरि-हिरि-धिद्द-कित्ति-परिवज्जिया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सग्गकामया ! मोक्खकामया ! धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सग्गकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवासिया ! पुण्णपिवासिया ! सग्गपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! सीलाइं वयाइं वेरम-णाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिणं य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

५८. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अखुभिं अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

५९. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं अतत्थं अणुव्विग्गं अखुभियं अचलियं असंभंतं तुसिणीयं धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खा-णाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिणं य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥

१. सं० पा०—नीलुप्पल एवं जहा चुलणीपियस्स घाएइ, २ ता जाव आइंचइ ।
तद्देव देवो उवसग्गं करेइ नवरं एक्केक्के पुत्ते २. उवा० २।२२ ।
नव मंससोल्लेए करेइ जाव कणीयव

५०६

६०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव^१ विहरइ ॥
६१. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव^१ पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अगगओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गायं मसेण य सोणिणं य आइंचइ ॥
६२. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तं उज्जलं विउलं कक्कसं पगाढं चंडं दुक्खं दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ खमइ तित्तिक्खइ अहियासेइ ॥

० मज्झिमपुत्त

६३. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव^१ पासइ, पासित्ता सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव^१ जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगगओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मसेण य सोणिणं य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ठ-दुहट्ठ-वसट्ठे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
६४. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव^१ विहरइ ॥
६५. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव^१ पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव^१ जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगगओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मसेण य सोणिणं य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ठ-दुहट्ठ-वसट्ठे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
६६. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव^१ विहरइ ॥

१. उवा० २।२३ ।

२. उवा० २।२४ ।

३. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२२ ।

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।

७. उवा० २।२२ ।

८. उवा० २।२३ ।

६७. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते
 रुद्धे कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स मज्झिमं
 पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ,
 करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवास-
 यस्स गायं मंसेण य सोणिणं य आइंचइ ॥
६८. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ
 तितिकलइ अहियासेइ ॥

० कणीयसपुत्त

६९. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता सद्दालपुत्तं
 समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ
 णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुडुंसि
 न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं सामो गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव
 अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडा-
 हयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिणं य आइंचामि, जहा णं
 तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ॥
७०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव'
 विहरइ ॥
७१. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि
 तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणो-
 वासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं
 पोसहोववासाइं न छुडुंसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज कणीयसं पुत्तं सामो
 गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि,
 करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य
 सोणिणं य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ
 ववरोविज्जसि ॥
७२. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते
 समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥

१. उवा० २।२४ ।

२. उवा० २।२७ ।

३. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२२ ।

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।

७. उवा० २।२२ ।

८. उवा० २।२३ ।

७३. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुद्धे कुविए चंडिकिए मिसीमिसीयमाणे सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स कणीयसं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अगगओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयसि अद्देइ, अद्देत्ता सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिण य ° आइंचइ ॥
७४. 'तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहइ खमइ तितिकखइ अहियासेइ ॥

° अग्गिमित्ताभारिया

७५. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता चउत्थं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया' ! जाव' °जइ णं तुमं अज्ज सोलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छुट्टेसि ° न भंजेसि, 'तो ते' अहं अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया, तं साओ' गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगगओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्लए करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयसि अद्देमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट'-°वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ° ववरोविज्जसि ॥
७६. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरइ ॥
७७. तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणो-

१. उवा० २।२४ ।

२. पूर्ववति क्रमानुसारेण (३।३८) स्वीकृतं सूत्र-
मत्र युज्यते, किन्तु आदर्शेषु नास्य संकेतः
प्राप्तोस्ति । संभवतः संक्षेपीकरणे परित्यक्त-
मिदमभूत् । अस्य स्थाने आदर्शेषु निम्नप्रकारं
सूत्रं लभ्यते—'तए णं से सद्दालपुत्ते समणो-
वासए अभीए जाव विहरइ' । नैतद् अत्र
उपयुक्तमस्ति ।

३. उवा० २।२७ ।

४. उवा० २।२४ ।

५. सं० पा०—समणोवासिया अप्पत्थियपत्थिया
जाव न भंजसि ।

६. उवा० २।२२ ।

७. तओ (क, ख, ग, घ) ।

८. तं ते (क, ख, ग, घ) ।

९. × (क, ख, ग, घ) ।

१०. सं० पा०—दुहट्ट जाव ववरोविज्जसि ।

११. उवा० २।२३ ।

१२. उवा० २।२४ ।

वासया' ! *जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छट्ठेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया, तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अगगओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ° ॥

सद्दालपुत्तस्स कोलाहल-पदं

७८. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था'—*अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, ° जे णं ममं जेट्टं पुत्तं, जे णं ममं मज्झिमयं पुत्तं, जेणं ममं कणीयसं पुत्तं *साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अगगओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अट्टहेइ, अट्टहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण्ण य ° आइंचइ, जा वि य णं ममं इमा अग्गिमित्ता भारिया' *धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता ° समसुहदुक्खसहाइया', तं पि य इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता ममं अगगओ घाएत्तए । तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हत्तए त्ति कट्टु उट्ठाविए', *से वि य आगासे उप्पइए, तेण च खंभे आसाइए, महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ॥

अग्गिमित्ताए पसिण-पदं

७९. तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया तं कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! तुभे णं महया-महया सद्देणं कोलाहले कए ?

सद्दालपुत्तस्स उत्तर-पदं

८०. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए अग्गिमित्तं भारियं एवं वयासो—एवं खलु देवाणुप्पिए ! न याणामि के वि पुरिसे आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चंडिकिए

१. सं० पा०—समणोवासया त चेव भणइ ।

२. उवा० २।२२ ।

३. सं० पा०—समुप्पज्जित्था एवं जहा चुलणी-पिया तहेव चित्तेइ ।

४. सं० पा०—पुत्तं जाव आइंचइ ।

५. सं० पा०—भारिया जाव सम ° ।

६. ममसुहदुक्ख ° (ख) ।

७. सं० पा०—उट्ठाविए जहा चुलणीपिया तहेव सब्बं अणियब्बं । नवरं अग्गिमित्ता भारिया कोलाहलं सुणित्ता भणइ । सेसं जहा चुलणी-पिया वत्तब्बया सब्बा नवरं अहणच्चए विमाणे उववातो जाव महाविदेहे ।

मिसिमिसीयमाणे एणं महं नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं
असिं गहाय ममं एवं वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव'
जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न
छट्ठेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जेट्ठपुत्तं साम्मो गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता
तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि
कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि,
जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तए णं
अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव' विहरामि । तए णं से पुरिसे
ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता ममं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—
हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं
वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छट्ठेसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज
जेट्ठपुत्तं साम्मो गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव
मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव
गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले
चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

तए णं अहं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव'
विहरामि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए
चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे ममं जेट्ठपुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ
घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि
अद्दहेइ, अद्दहेत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ ।

तए णं अहं तं उज्जलं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि
अहियासेमि ।

एवं मज्झिमं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

एवं कणीयसं पुत्तं जाव' वेयणं सम्मं सहामि खमामि तितिक्खामि अहियासेमि ।

तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' पासइ, पासित्ता ममं चउत्थं पि एवं
वयासी—हंभो ! सद्दालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज

१. उवा० २।२२ ।

२. उवा० २।२३ ।

३. उवा० २।२४ ।

४. उवा० २।२२ ।

५. उवा० २।२३ ।

६. उवा० २।२४ ।

७. उवा० २।२७ ।

८. उवा० ७।६२-६७ ।

९. उवा० ७।६८-७३ ।

१०. उवा० २।२४ ।

११. उवा० २।२२ ।

सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छडुसि न भंजेसि, तो ते अहं अज्ज जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेमि करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देहिमि, अद्देत्ता तव गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचामि, जहा णं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

ताए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामि ।

ताए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव' दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वयासी—हंभो ! सदालपुत्ता ! समणोवासया ! जाव' जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं न छडुसि न भंजेसि, तो जाव तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

ताए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चं पि तच्चं पि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्जभत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धो अणारियाइं पावाइं कम्माइं समाचरति, जे णं ममं जेट्टपुत्तं, जे णं ममं मज्झिमयं पुत्तं, जे णं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता मम अग्गओ घाएइ, घाएत्ता नव मंससोल्ले करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्देइ, अद्देत्ता ममं गायं मंसेण य सोणिण्ण य आइंचइ, तुमं पि य णं इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्टु उद्धाविए, से वि य आगासे उप्पइए, मए वि य खंभे आसाइए, महया-महया सदेणं कोलाहले कए ॥

पायच्छित्त-पदं

८१. ताए णं सा अग्गिमित्ता भारिया सदालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी—नो खलु केइ पुरिसे तव जेट्टपुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव मज्झिमयं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, नो खलु केइ पुरिसे तव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवसग्गं करेइ, एस णं तुमं विदरिसणे दिट्ठे । तं णं तुमं इयाणि भग्गवए भग्नियमे भग्गपोसहे विहरसि । तं णं तुमं पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि पडिक्कमाहि निदाहि गरिहाहि विउट्ठाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिबज्जाहि ॥

८२. ताए णं से सदालपुत्ते समणोवासए अग्गिमित्ताए भारियाए तह त्ति एयमट्ठं

विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ पडिक्कमइ निंदइ गरिहइ विउट्टइ विसोहेइ अकरणयाए अण्भुट्टेइ अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जइ ॥

सद्दालपुत्तस्स उवासगपडिमा-पदं

८३. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥
८४. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामगं अहातच्च सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
८५. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
८६. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ॥

सद्दालपुत्तस्स अणसण-पदं

८७. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स अण्णदा कदाइ, पुब्बरत्तावरत्ताकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरि-सक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिम-मारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तापाणपडियाइक्खियस्स, कालं अणव-कंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतिय-संलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तापाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

सद्दालपुत्तस्स समाहिमरण-पदं

८८. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए बह्महिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खान-पोसहोववासेहि अप्पाणं भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता,

एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए
अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते समाहि-
पत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणच्चए विमाणे देवत्ताए उववण्णे ।
चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पणत्ता । ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ
मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

८६. '°एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं सत्तमस्स
अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ° ॥

अट्ठमं अज्झयणं

महासतए

उक्खेव-पदं

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °

महासतयगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ॥
३. तत्थ णं रायगिहे नयरे महासतए' नामं गाहावई परिवसइ—अट्ठे °जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं महासतयस्स गाहावइस्स अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ वड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. से णं महासतए गाहावई बहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ° ॥
६. तस्स णं महासतयस्स गाहावइस्स रेवतीपामोक्खाओ तेरस भारियाओ होत्था—

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. महासतने (क); महासययं (ख) ।

४. सं० पा०—अट्ठे जहा आणंदो नवरं अट्ठ

हिरण्णकोडीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ

अट्ठ हि वड्ढि अट्ठ हि सकंसाओ पवि अट्ठवया

दसगोसाहस्सिएणं वएणं ।

५. उवा० १।११ ।

६,७. उवा० १।१३ ।

८. रेवई° (क, घ) ।

अहीण'-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीराओ जाव' माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणीओ विहरंति ० ॥

७. तस्स णं महासतयस्स रेवतीए भारियाए कोलहरियाओ' अट्ट हिरण्णकोडीओ, अट्ट वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था । अबसेसाणं दुवालसण्हं भारियाणं कोलहरिया' एगमेगा हिरण्णकोडी, एगमेगे य वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥

महावीर-समवसरण-पदं

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे ॥

९. परिसा निग्गया ॥

१०. 'कूणिए राया जहा, तहा सेणिओ निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥

११. तए णं से महासतए गाहावई इमीसे कहाए लढ्ढे समाणे—“एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमाणे इह संपत्ते इह समोसढे इहेव रायगिहस्स नयरस्स वहिया गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।” तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घा-भरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापारिखित्ते पादविहार-चारेणं रायगिहं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुत्तूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥

१. सं० पा०—अहीण जाव सुरूवाओ ।

२. उवा० १।१५ ।

३. कोलहरिवाओ (ल) ।

४. कोलहरिया (क, ल, व, ण) ।

५. सं० पा०—जहा आणंदो तहा निग्गच्छइ तहेव सावयधम्मं पडिबज्जइ ।

६. ओ० सू० ५३-६६ ।

१२. तए णं समणे भगवं महावीरे महासतयस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥

१३. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

महासतयस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पवं

१४. तए णं महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी--सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

१५. तए णं से महासतए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए^१ सावयधम्मं पडिवज्जइ, नवरं—अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ^२ । अट्ठ वया । रेवतीपामोक्खाहिं तेरसहिं भारियाहिं अवसेसं मेहुणविहिं पच्चक्खाइ^३ । इमं च णं एयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हति—कल्लाकल्लि 'च णं'^४ कप्पइ मे वेदोणियाए^५ कंसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए ॥

महासतयस्स समणोवासग-वरिया-पवं

१६. तए णं से महासतए समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे^६ जाव' •समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंदल-पायपुंछणेणं ओसहमेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फल-सेज्जा-संधारएणं पडिलाभेमाणे^७ विहरइ ॥

१. ओ० सू० ७१-७७ ।

२. पू०—उवा० २४-४५ ।

३. सकंसाओ उच्चारिति (क, ख, ग) ।

४. पच्चक्खाइ सेसं सब्बं तहेव (क, ख, ग, घ) ।

५. × (ख) ।

६. वेदोणि० (क) ।

७. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ ।

८. उवा० १।५५ ।

भगवन्तो जणवयविहार-पदं

१७. तए णं समणे भगवं महावीरे बहिया जणवयविहारं विहरइ' ॥

रेवतीए चिता-पदं

१८. तए णं तीसे रेवतीए गाहावइणीए अण्णदा कदाइ' पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुवं' जागरियं जागरमाणीए० इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमांसि दुवालसण्हं सपत्तीणं' विघातेणं' नो संचाएमि' महासनएणं समणोवासएणं सद्धि ओरालाई माणुस्सयाई भोगभोगाई भुंजमाणी विहरित्तए । ते सेयं खलु ममं एयाओ दुवालस वि सवत्तीओ' अग्गिपओगेण वा सत्थप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्ता एतासि' एगमेगं हिरण्णकोडि एगमेगं वयं सयमेव उवसंपज्जित्ता णं महासनएणं समणोवासएणं सद्धि ओरालाई' •माणुस्सयाई भोगभोगाई भुंजमाणी० विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता तासि दुवालसण्हं सवत्तीणं अंतराणि य छिद्दाणि य 'विरहाणि य' पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

रेवतीए सवत्तो-उद्दवण-पदं

१९. तए णं सा रेवती गाहावइणी अण्णदा कदाइ तासि दुवालसण्हं सवत्तीणं अंतरं जाणित्ता छ सवत्तीओ सत्थप्पओगेणं' उद्दवेइ, छ सवत्तीओ विसप्पओगेणं उद्दवेइ, उद्दवेत्ता तासि दुवालसण्हं सवत्तीणं कोलघरियं एगमेगं हिरण्णकोडि, एगमेगं वयं सयमेव पडिवज्जित्ता महासतएणं समणोवासएणं सद्धि ओरालाई माणुस्सयाई भोगभोगाई भुंजमाणी विहरइ ॥

रेवतीए मंसमज्जासायण-पदं

२०. तए णं सा रेवती गाहावइणी मंसलोलुया मंसमुच्छिया' •मंसगढिया मंसगिद्धा

- | | |
|---|--|
| १. प्राक्तेपु अय्यनेपु भगवतो विहारसूत्रं पूर्वं तदुत्तरं च श्रावकभवनसूत्रं लभ्यते । इह च पूर्वं श्रावकभवनसूत्रं तदुत्तरं च भगवतो विहारसूत्रं वर्तते । असौ क्रमः समीचीनः प्रतिभाति । | ७. सवत्तीयाओ (ख) । |
| २. कयाई (घ) । | ८. एताणं (क); एयांसि (ख, घ) । |
| ३. सं० पा०—कुडुवं जाव इमेयारूवे । | ९. सं० पा०—उरालाई जाव विहरित्तए । |
| ४. पत्तीणं (क); सवत्तीणं (ख) । | १०. विहराणि य विहराणि य (क); विहराणि य (ख) । |
| ५. विघाएणं (ख, घ) । | ११. सत्थप्पतोतेणं (क, ग) । |
| ६. संबादेमि (ख) । | १२. सं० पा०—मंसमुच्छिया जाव अज्झोववण्णा । मंससु मुच्छिया (क, ख, घ); मंससमुच्छिया (ग) । |

मंस °अज्भोववण्णा बहुविहेहिं मंसेहिं' सोल्लेहि य तलिएहि य' भज्जिएहि य'
'सुरं च महं च मेरुं च मज्जं च सीधुं च पसणं च'° आसाएमाणी विसाएमाणी
परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरइ ॥

अमाघाय-पदं

२१. तए णं रायगिहे नयरे अण्णदा कदाइ अमाघाए घुट्ठे यावि' होत्था ॥
२२. तए णं सा रेवती गाहावइणी मंसलोलुया मंसमुच्छिया मंसगढिया मंसगिद्धा
मंसअज्भोववण्णा कोलघरिए पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— तुम्हे
देवानुप्पिया ! ममं कोलहरिएहितो' वएहितो कल्लाकल्लिं दुवे-दुवे गोणपोयए
उद्देवेह, उद्देत्ता ममं उवणेह ॥
२३. तए णं ते कोलघरिया पुरिसा रेवतीए गाहावइणीए तह त्ति एयमट्ठं विणएणं
पडिसुणंति, पडिसुणित्ता रेवतीए गाहावइणीए कोलहरिएहितो' वएहितो
कल्लाकल्लिं दुवे-दुवे गोणपोयए' वहेति,' वहेत्ता रेवतीए गाहावइणीए
उवणेति ॥
२४. तए णं सा रेवती गाहावइणी तेहि गोणमसेहिं' सोल्लेहि य तलिएहि य
भज्जिएहि सुरं च महं च मेरुं च मज्जं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणी
विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरइ ॥

महासतगस्स धम्मजागरिया-पदं

२५. तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील-व्वय'-°गुण-वेरमण-
पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं ° भावेमाणस्स चोइस्स संवच्छरा
वीइक्कंता" । °पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ
पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्भत्थिए
चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं रायगिहे नयरे
बहूणं जाव" आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुबस्स मेढी
जाव" सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ
महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णात्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए" ॥

१. मंसेहि य (क, ख, ग, घ) ।

२. × (क, ग, घ) ।

३. × (घ) ।

४. सुरं च पसन्नं च (क) ।

५. वि (क) ।

६. कोलघरिए (क) ।

७. कोल्ल ° (घ) ।

८. गोणपोतलए (क) ।

९. उवहंति (ख); वहिति (ग, घ) ।

१०. गोमंसेहि (क, ग) ।

११. सं ° पा०—सीलव्वय जाव भावेमाणस्स ।

१२. सं ° पा०—वीइक्कंता एवं तहेव जेट्ठपुत्तं
ठवेइ जाव पोसहसत्ताए धम्मपण्णात्ति ।

१३. उवा० १।१३ ।

१४. उवा० १।१३ ।

१५. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

२६. तए णं से महासतए समणोवासए जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबधि-परि-
जणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता
रायगिहं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला,
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-
पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंथारयं
दुरुहइ, दुरुहिता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे
ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए
समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं० धम्मपण्णात्ति उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ ॥

महासतगस्स धणुकूल-उवसग-पदं

२७. तए णं सा रेवती गाहावइणी मत्ता लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जयं 'विकट्टु-
माणी-विकट्टुमाणी' जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोहुम्मायजणणाइं सिगारियाइं इत्थिभावाइं उवदंसे-
माणी'-उवदंसेमाणी महासतयं समणोवासयं एवं वयासी-हंभो ! महासतया !
समणोवासया ! धम्मकामया ! पुण्णकामया ! सगगकामया ! मोक्खकामया !
धम्मकंखिया ! पुण्णकंखिया ! सगगकंखिया ! मोक्खकंखिया ! धम्मपिवा-
सिया ! पुण्णपिवासिया ! सगगपिवासिया ! मोक्खपिवासिया ! 'किं णं'
तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं
तुम मए सद्धि ओरालाइं 'माणुस्सयाइं भोगभोगाइं० भुंजमाणे नो विहरसि ?
२८. तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ नो
परियाणाइ, अणाढायमाणे' अपरियाणमाणे' तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए
विहरइ ॥
२९. तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतयं समणोवासयं दोच्चं पि तच्चं पि एवं
वयासी-हंभो ! 'महासतया ! समणोवासया' ! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया !
धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुम मए सद्धि ओरालाइं
माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे नो विहरसि ?

१. कट्टिज्जमाणी-कट्टिज्जमाणी (क); विकट्ट-

(ख, ग, घ) ।

माणी-विकट्टमाणी (ख) ।

६. अपरियाणिज्जमीणे (क); अपरियाणिज्जमाणे

(ख, ग, घ) ।

२. दंसेमाणी २ (ख) ।

३. किण्णं (घ) ।

७. सं० पा०—हंभो ! तं चेव अणइ सो वि तहेव

जाव अणाढायमाणे ।

४. सं० पा०—उरालाइं जाव भुंजमाणे ।

५. अणाढाइज्जमीणे (क); अणाढाइज्जमाणे

८. पू०—उवा० ॥ २७ ।

३०. तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ °, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे विहरइ ॥
३१. तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतएणं समणोवासएण अणाढाइज्जमाणी अपरियाणिज्जमाणी जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

महासतगस्स उवासगपडिमा-पदं

३२. तए णं से महासतए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।
३३. 'तए णं से महासतए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
३४. तए णं से महासतए समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ° ॥
३५. तए णं से महासतए समणोवासए तेणं ओरालेणं ° विउलेणं पयत्तेणं पग्गहि-एणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए ° किसे धमणिसंतए जाए ॥

महासतगस्स अणसण-पदं

३६. तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासयगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समु-प्पज्जित्था एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं ° विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं तवो-कम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परकम्मे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-

१. सं० पा०—पढम अहासुत्त जाव एक्कारस्स वि ।

२. सं० पा०—उरालेणं जाव किसे ।

३. सं० पा०—उरालेण तवोकम्मेण जहा आणंदो तहेव अपच्छिम ° ।

४. उवा० १।५७ ° ।

भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ° ‘अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसिए’ भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

महासतगस्स ओहिनाणुप्पत्ति-पदं

३७. तए णं तस्स महासतगस्स समणोवासगस्स सुभेणं अज्झवसाणणं ° सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं, तदावरणिज्जाणं कम्माणं ° खओवसमेणं ओहिणाणे समुप्पण्णे पुरत्थिमे णं लवणसमुद्धे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ, ° दक्खिणे णं लवणसमुद्धे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ, पच्चत्थिमे णं लवणसमुद्धे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ ° उत्तरे णं जाव चुल्लहिमवंतं वासहरपव्वयं जाणइ पासइ, [उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणइ पासइ ?] ° अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीइवाससहस्सट्ठियं जाणइ पासइ ॥

महासतगस्स पुणरवि अणुकूल-उवसग-पदं

३८. तए णं सा रेवती गाहावइणी अण्णदा कदाइ मत्ता ° लुलिया विइण्णकेसी ° उत्तरिज्जयं विकड्डुमाणी-विकड्डुमाणी ‘जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए’, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासतयं ° समणोवासयं एवं वयासी—हंभो ! महासतया ! समणोवासया ! किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धि ओरालाई माणुस्सयाई भोगभोगाई भुंजमाणे नो विहरसि ?

३९. तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ नो

१. ° संलेहणाए भूसियसरीरे (क,ख,ग,घ) ।

२. सं० पा०—अज्झवसाणेणं जाव खओवसमेणं ।

३. सं० पा०—एवं दक्खिणे णं पच्चत्थिमे णं उत्तरे ण ।

४. कोष्ठकान्तर्वर्ती पाठः प्रयुक्तादर्शेषु कस्मिन्नपि नोपलभ्यते । ‘अहे इमीसे रयणप्पभाए’ ‘जाणइ पासइ’ एष पाठः ‘क’ प्रती नास्ति । संभवतः सक्षिप्तलिपिपद्धत्या परिवर्तनमिदं जातम् । अत्र द्वावपि पाठौ युज्येते ।

५. सं० पा०—मत्ता जाव उत्तरिज्जय ।

६. जेणेव महासतए समणोवासए जेणेव पोसहसाला (क,ख,ग,घ) । अत्र संभवतो लिपिदोषेण क्रमपरिवर्तनं जातम् । किन्तु पूर्वसूत्रस्य (सू. २६) अनुसारेण स्वीकृतपाठ एव उपयुज्यते ।

७. सं० पा०—महासतयं तहेव भणइ जाव दोक्खं पि तक्खं पि एवं वयासी—हंभो ! तहेव ।

८. पू०—उवा० ८।२७ ।

परियाणाइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥

४०. तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतयं समणोवासयं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो ! महासतया ! समणोवासया ! किं णं तुभं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धि ओरालाइ माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे नो विहरसि ? °

महासतगस्स विक्खेव-पवं

४१. तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते^१ रुद्धे कुविए चंडिकए मिसिमिसीयमाणे ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवतिं गाहावइणिं एवं वयासी—हंभो ! रेवती ! अप्पत्थियपत्थिए ! दुरंत-पंत-लक्खणे ! हीणपुण्ण-चाउइसिए ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए ! एवं खलु तुमं अंत सत्तरत्तस्स अलसएणं^२ वाहिणा अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा असमाहि-पत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि ॥
४२. तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतएणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणी^३—रुद्धे णं ममं महासतए समणोवासए ! हीणे णं ममं महासतए समणोवासए ! अवज्झाया णं अहं महासतएणं समणोवासएणं, न नज्जइ णं^४ अहं केणावि^५ कु-मारेणं मारिज्जिस्सामि—त्ति कट्टु मीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजाय-भया सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहयमणसंकप्पा^६ °चित्तासोगसागरसंपविट्ठा करयल-पल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठिया ° भियाइ ॥
४३. तए णं सा रेवती गाहावइणी अंतो सत्तरत्तस्स अलसएणं^७ वाहिणा अभिभूया अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुय-च्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ॥

१. पू०—उवा० ८।२७ ।

२. आसुरत्त (क, ख, ग, घ) ।

३. आलस्सएणं (क); आलस्सएणं (ख) ।

४. समाणी एवं च (क, ग, घ); समाणी एवं वयासी (ख); किन्तु प्रकरणानुसारेण नैवं युज्यते ।

५. × (ग, घ) ।

६. केणत्ति (क); केण वि (ख, घ) ।

७. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव भियाइ ।

८. आलस्सएण (क); आलसएणं (ख); अलस्सएणं (घ) ।

महावीर-समवसरण-पदं

४४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए ॥

४५. परिता पडिगया ॥

महासतगस्स अंतिए गोतम-वेसण-पदं

४६. गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी- एवं खलु गोयमा ! इहेव रायगिहे नयरे ममं अंतैवासी महासतए नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणंतियसंलेहणाए भूसियसरीरे भत्तपाण-पडियाइ-क्खिए, कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

तए णं तस्स महामतगस्स समणोवासगस्स रेवती गाहावइणी मत्ता^१ •लुलिया विइणकेसी उत्तरिज्जयं^२ • विकड्डुमाणी-विकड्डुमाणी जेणेव पोसहसाला, जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता मोहुम्मायं^३ •जणणाइं सिगारियाइं इत्थिभावाइं उवदंसेमाणी-उवदंसेमाणी महासतयं समणोवासयं एवं वयासी-—हंभो ! महामनया ! समणोवामया^४ ! किं णं तुव्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जं णं तुमं मए सद्धि ओरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे नो विहरसि ?

तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ । तए णं सा रेवती गाहावइणी महासतयं समणोवासयं^५ • दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी ।

तए णं से महासतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते रुट्ठं कुविए चंडिकिए मिसिमिसीयमाणे ओहि पउंजइ, पउंजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवति गाहावइणि एव वयासी^६—हंभो ! रेवता ! अप्पत्थियपत्थिए ! दुरंत-पंत-लक्खणे ! हीणपुण्ण-चाउइसिए ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए ! एवं खलु तुमं अतो सत्त-रत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूया समाणी अट्ठ-दुहट्ठ-वसट्ठा असमाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीतिवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए^७ • उववज्जिहिसि ।

नो खलु कप्पइ गोयमा ! समणोवासगस्स अपच्छिमं^८ •मारणंतियसंलेहणा-

१. सं० पा०—मत्ता जाव विकड्डुमाणी ।

३. पू०—उवा० = २७ ।

२. सं० पा०—मोहुम्माय जाव एवं वयासी
तहेव जाव दोच्चं पि ।

४. सं० पा०—वयासी जाव उववज्जिहिसि ।

५. सं० पा०—अपच्छिम जाव भूसियस्स ।

भूसणा°-भूसियस्स' भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स' परो संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं
सब्भूएहिं' अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं
वागरित्तए । तं गच्छ णं देवाणुप्पिया ! तुमं महासतयं समणोवासयं एवं
वयाहि—नो खलु देवाणुप्पिया ! कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिम'°मारणंतिय-
संलेहणा-भूसणा-भूसियस्स° भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स परो संतेहिं'
°तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणा-
मेहिं वागरणेहिं° वागरित्तए तुमे य णं देवाणुप्पिया ! रेवती गाहावइणी
संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकंतेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं
अमणामेहिं वागरणेहिं वागरिया । तं तुमं एयस्स ठाणस्स आलोएहिं'°पडिक्क-
माहिं निंदाहिं गरिहाहिं विउट्ठाहिं विसोहेहिं अकरणयाए अब्भुट्ठाहिं° अहारिहं°
पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जाहिं ॥

गोतमस्स आगमण-पदं

४७. तए णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं
पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नयरं
मज्झमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव महासतगस्स समणोवासगस्स
गिहे' जेणेव महासतए समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ ॥

महासतगस्स बंदण-पदं

४८. तए णं से महासतए समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता
हट्ठे'°तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण°
हियए भगवं गोयमं बंदइ नमंसइ ॥

महावीरुत्तस्स कहण-पदं

४९. तए णं से भगवं गोयमे महासतयं समणोवासयं एवं वयासी—एवं खलु
देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खइ भासइ पणवेइ परूवेइ—
नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणोवासगस्स अपच्छिम'°मारणंतियसंलेहणा-

१. भूसियस्स सरीरस्स (ख, ग, घ) ।

२. पडिगयाइक्खित्तस्स (क) ।

२. × (ग) ।

४. सं० पा०—अपच्छिम जाव भत्तपाण ।

५. सं० पा०—संतेहिं जाव वागरित्तए ।

६. सं० पा०—आलोएहिं जाव अहारिहं ।

७. जहारिहं (क, ख, ग, घ) ।

८. अस्यानन्तरं 'जेणेव पोसहसाला' इति पाठः
अपेक्ष्यते । किन्तु कस्मिन्नप्यादर्शे नोपलब्धो-
स्ति ।

९. सं० पा०—हट्ठ जाव हियए ।

१०. सं० पा०—अपच्छिम जाव वागरित्तए ।

भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स परो संतेहि तच्चेहि तहिण्हि सब्भ-
एहि अणिट्ठेहि अकंतेहि अप्पिएहि अमणुण्णेहि अमणामेहि वागरणेहि°
वागरित्ताए । तुमे णं देवाणुप्पिया ! रेवती गाहावइणी संतेहि' °तच्चेहि तहिण्हि
सब्भएहि अणिट्ठेहि अकंतेहि अप्पिएहि अमणुण्णेहि अमणामेहि वागरणेहि°
वागरिया । तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि' °पडिक्कमाहि
निदाहि गरिहाहि विउट्ठाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठाहि अहारिहं
पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जाहि ॥

महासतगस्स पायच्छित्त-पवं

५०. तए णं से महासतए समणोवासए भगवओ गोयमस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं
पडिमुणेइ', पडिमुणेतता तस्स ठाणस्स आलोएइ' °पडिक्कमइ निदइ गरिहइ
विउट्ठइ विसोहेइ अकरणयाए अब्भुट्ठइ° अहारिहं' पायच्छित्तं तवोकम्मं
पडिवज्जइ ॥

गोयमस्स पडिणिक्खमण-पवं

५१. तए णं से भगवं गोयमे महासतगस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पडिणिक्खमइ,
पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव
समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं
वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पवं

५२. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ रायगिहाओ नयराओ पडिणि-
क्खमइ, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

महासतगस्स अणसण-पवं

५३. तए णं से महासतए समणोवासए बहूहि सील-ब्बय'-°गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-
पोसहोववामेहि अप्पाणं° भावेत्ता वोसं वासाइं समणोवासगपरियायं
पाउणित्ता एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए
संनेहणाए अप्पाणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कते
समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणवडंसए' विमाणे

१. सं० पा०—संतेहि जाव वागरिया !

२. सं० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि ।

३. पडिच्छति (क) ।

४. सं० पा०—आलोएइ जाव अहारिहं ।

५. जहारिहं (क, ख, ग, घ) ।

६. सं० पा०—सीलब्बयगुणेहि जाव भावेत्ता ।

७. °वडिसए (ख, ग, घ) ।

देवत्ताए उववण्णे । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । महाविदेहे वासे
सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

५४. 'एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं अट्टमस्स
अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

—

नवमं अञ्जयणं

नंदिणीपिया

उक्त्वेव-पदं

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अट्टमस्स अञ्जयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते ! अञ्जयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? •

नंदिणीपियगाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी । कोट्टए चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए नंदिणीपिया नामं गाहावई परिवसइ—अइडे' 'जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं नंदिणीपियस्स गाहावइस्स ° चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थर-पउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. 'से णं नंदिणीपिया गाहावई बहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१. सं० पा०—उक्त्वेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. सं० पा०—अइडे । चत्तारि ।

४. उवा० १।११ ।

५. सं० पा०—अस्सिणी भारिया । सामी

समोसडे बहू आणंदो तहेव गिहिषम्मं

पडिवज्जइ । सामी बहिया बिहरइ ।

६. उवा० १।१३ ।

७. उवा० १।१३ ।

६. तस्स णं नंदिणीपियस्स गाहावइस्स अस्सिणी नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा जाव' माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

महावीर-समवसरण-पवं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे ॥
 ८. परिसा निगया ॥
 ९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निगच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
 १०. तए णं से नंदिणीपिया गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे —“एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुब्बाणुपुब्बि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए नयरीए बहिया कोट्टुए चेइए अहापडि-रूवं ओग्गहं ओगिणिहत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।”
 तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि — एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घा-भरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरेंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापारिखित्ते पादविहारचारेणं सावत्थि नयारिं मज्झमज्झेणं निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणामेव कोट्टुए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिव्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ ॥
 ११. तए णं समणे भगवं महावीरे नंदिणीपियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहा-लियाए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥
 १२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

नंदिणीपियस्स गिहिधम्म-पडिबत्ति-पवं

१३. तए णं से नंदिणीपिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं

निसम्म हटुतुटु-चित्तमाणंदिणं पोइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-
हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेता समणं भगवं महावीरं तिकखुत्तो आयाहिण-
पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी —सइहामि
णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं
भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते !
तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते !
पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! मे जहेयं तूभे वदह ।
जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बह्वे राईसर-तलवर-माडंविण-कांडुविण-इवभ-
सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया,
नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्ताए ।
अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं
सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥

१४. तए णं मे नंदिणीपिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए' सावय-
धम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ सावत्थीए नयरीए कोट्टयाओ
चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं° विहरइ ॥

नंदिणीपियस्स समणोवासगच्चरिया-पदं

१६. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए जाए'—●अभिगयजीवाजीवे जाव'
समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-
कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलन-सेज्जा-
संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

अस्सिणीए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा अस्सिणी भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव'
समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-
कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलन-सेज्जा-
संथारएणं पडिलाभेमाणी° विहरइ ॥

१. पू०—उवा० १।२४-५३ ।

२. सं० पा०—जाए जाव विहरइ ।

३. उवा० १।५५ ।

४. उवा० १।५६ ।

नंदिणीपियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स नंदिणीपियस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील-व्वय-गुण'-●वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं ° भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कं-ताइं', ●पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्ता-वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सावत्थीए नयरीए बहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुड्दंस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेण वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्ताए' ॥
१९. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्ख-मित्ता सावत्थि नयारि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंधारयं संथरेइ, संथरेत्ता दब्भसंधारयं दुरुहइ, दुरुहिता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिमुवण्णे ववगय-मालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंधारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

नंदिणीपियस्स उवासगपडिमा-पदं

२०. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥
२१. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तोरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
२२. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं, पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, एक्कारसमं उवासगपडिमं अहामुत्तं अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ।
२३. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए तेणं ओरालेणं विउत्तेणं पयत्तेणं पग्गहिण्णं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए ।

१. सं० पा०—गुण जाव भावेमाणस्स ।

विदेहे वासे सिज्झिहिइ ।

२. सं० पा०—वीइक्कंताइं तहेव जेट्टपुत्तं ठवेइ । धम्मपण्णत्ति । बीसं वासाइं परियाणं नाणत्तं अरुणगवे विमाणे उववाओ महा-

३. उवा० १।१३ ।

४. उवा० १।१३ ।

५. पू०—उवा० १।५७-५९ ।

नंदिणीपियस्स अणसण-पदं

२४. तए णं तस्स नंदिणीपियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिणं तवोकम्मणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकि-डियाभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोव-एसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थो विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्प-भायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिम-मारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

नंदिणीपियस्स समाहिमरण-पदं

२५. तए णं से नंदिणीपिया समणोवासए ब्रह्महिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएण फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमामे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणगवे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । नंदिणीपि-यस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

२६. से णं भंते ! नंदिणीपिया ताम्रो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्ख-एणं अणंतरं चयं चइत्ता कहि गमिहिइ ? कहि उववज्जिहिइ ? गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२७. '°एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं नवमस्स अज्झय-णस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ° ॥

दसमं अज्झयणं

लेइयापिता

उक्खेव-पदं

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं नवमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं भंते अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °

लेइयापितागाहावइ-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी । कोट्टए चेइए । जियसत्तू राया ॥
३. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए लेतियापिता' नामं गाहावई परिवसइ—अइडे' °जाव' बहुजणस्स अपरिभूए ॥
४. तस्स णं लेइयापियस्स गाहावइस्स ° चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥
५. 'से णं लेइयापिता गाहावई बहूणं जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी जाव' सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

१. सं० पा०—उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. सालिहीयापिया (ख) ।

४. सं० पा—अइडे । चत्तारि ।

५. उवा० १।११ ।

६. सं० पा०—फण्णुणी भारिया । सामी समोसडे ।

जहा आणंदो तहेव गिहिघम्मं पडि-

वज्जइ । जहा कामदेवो तहा जेट्ठं पुत्तं

ठवेत्ता पोसहसालाए । समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । नवरं निरुवसण्णो एक्कारस्स वि उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वओ । एवं कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे ।

७. उवा० १।१३ ।

८. उवा० १।१३ ।

६. तस्स णं लेटियापियस्स गाहावइस्स फग्गुणी नामं भारिया हात्था—अहीण-
पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा जाव' माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

महावीर-समवसरण-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे ॥
 ८. परिसा निग्गया ॥
 ९. कूणिए राया जहा, तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव' पज्जुवासइ ॥
 १०. तए णं से लेटियापिता गाहावई इमीमे कहाए लद्धे समणे —“एवं खलु समणे
 भगवं महावीरे पुब्बाणुपुब्बि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए
 इह संपत्ते इह समोसढे इहंवा सावत्थीए नयरीए वहिया कोट्टए चेइए अहापडिरूवं
 ओग्गहं ओगिण्हिता संजमेणं तवसा अण्णाणं भावेमाणे विहरइ ।”
 तं महप्फलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णाम-
 गोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-
 पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए,
 किमंग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं देवाणुप्पिया ! समणं
 भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं
 चेइयं पज्जुवासामि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-
 मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घा-
 भरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमिक्खिता सकोरेंट-
 मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते पादविहारचारेणं
 सावत्थि नयारि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव कोट्टए चेइए, जेणेव
 समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं
 तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता
 णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्ससमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे
 पज्जुवासइ ॥
 ११. तए णं समणे भगवं महावीरे लेटियापियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालि-
 याए परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥
 १२. परिसा पडिगया, राया य गए ॥

लेटियापियस्स निहिधम्म-पडिबत्ति-पदं

१३. तए णं से लेटियापिया गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं
 सोच्चा निसम्म हट्टुत्तु-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-

विसप्पमाणहियए उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं तिवल्लुत्तो आया-
हिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—
सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं,
रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्टेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।
एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छिय-
मेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे
वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहुवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-
इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं
पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं
पव्वइत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—
दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

१४. तए णं से लेतियापिता गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए' सावय-
धम्मं पडिवज्जइ ॥

भगवओ जणवयविहार-पदं

१५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ सावत्थीए नयरीए कोट्टयाओ
चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

लेतियापियस्स समणोवासग-चरिया-पदं

१६. तए णं से लेतियापिता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव' समणे
निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-
पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारएणं
पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

फग्गुणीए समणोवासिय-चरिया-पदं

१७. तए णं सा फग्गुणी भारिया समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव'
समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-
कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संधार-
एणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

लेतियापियस्स धम्मजागरिया-पदं

१८. तए णं तस्स लेतियापियस्स समणोवासगस्स बहूहि सील-व्वय-गुण-वेरमण-

पच्चक्खण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वीइक्कं-
ताइं पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्त-
कालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए
पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सावत्थीए नयरीए बहूणं
जाव' आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे सयस्स वि य णं कुडुवस्स मेढी जाव'
सव्वकज्जवड्ढावए, तं एतेणं वक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ
महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए' ॥

१६. तए णं से लेतियापिता समणोवासए जेट्टपुत्तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-
परिजणं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणि-
क्खमित्ता सावत्थि नयारि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव
पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता
उच्चार-पासवणभूमि पडिनेहेइ, पडिनेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता
दब्भसंथारयं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिण्णं वंभयारी उम्मुक्कमणि-
सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अब्बीए दब्भसंथारो-
वगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ ॥

लेतियापियस्स उवासगपडिम-पदं

२०. तए णं से लेतियापिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ ॥
२१. तए णं से लेतियापिता समणोवासए पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं
अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥
२२. तए णं से लेतियापिता समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं, चउत्थं,
पंचमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं एक्कारसमं उवासगपडिमं अहासुत्तं
अहाकप्पं अहामगं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ
आराहेइ ॥
२३. तए णं से लेतियापिता समणोवासए तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं
पग्गहिण्णं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए
किसे धमणिसंतए जाए ॥

लेतियापियस्स अणसण-पदं

२४. तए णं तस्स लेतियापियस्स समणोवासगस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-

समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडि-याभूए किसे धमणिसंतए जाए । तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खि-यस्स, कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-भूसणा-भूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

लेतियापियस्स समाहिमरण-पवं

२५. तए णं से लेतियापिता समणोवासए बहूहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियायं पाउणित्ता, एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाणं संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा० सोहम्मे कप्पे अरुणकीले विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । लेतियापियस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥
२६. से णं भंते ! लेतियापिता ताओ देवलोगाओ आउक्खाएणं भवक्खाएणं ठिइक्खाएणं अणंतरे चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पवं

२७. एवं खलु जंबू ! समणे णं भगवया महावीरेणं उवासगदसाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

१. उवा० १।५७ ।

२. अध्ययननिगमनानन्तरमादर्शेषु पाठान्तररूपेण स्वीकृतं संग्रहवाक्यमुपलभ्यते । वृत्त्यनुसारेण नैतत् संभाव्यते—दसण्ह वि पण्णरसमे

संवच्छरे वट्टमाणे णं चित्ता । दसण्ह वि वीसं वासाइं समणोवासयपरियाओ (क, ख, ग, घ) ।

२८. 'एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं
अयमट्ठे पणत्ते' ॥

परिसेसो

उवासगदसाणं सत्तमस्स अंगस्स एगो सुयखंधो । दसं ब्रह्मयणा एवकसरगा दससु
चेव दिवसेसु उद्दिस्संति । तओ सुयखंधो समुद्दिस्सइ । तओ सुयखंधो अणुण-
विज्जइ दोसु दिवसेसु अंगं तहेव ॥

ग्रन्थ-परिमाण

अक्षर परिमाण—८७८१२

अनुष्टुप् श्लोक-परिमाण—२७४४

१. आदर्शेषु एतद् निगमनवाक्यं नोपलभ्यते, किन्तु वृत्ती अस्योल्लेखो विद्यते—'एवं खलु जंबू' ! इत्यादि उपामकदशानिगमनवाक्यम-
ध्येयमिति । २. अतोऽग्रे एताः संग्रहगाथा आदर्शेषु नोप-
लभ्यन्ते । वृत्ती पुस्तकान्तरप्राप्तेरुल्लेखोऽस्ति,
यथा—पुस्तकान्तरे संग्रहगाथा उपलभ्यन्ते
तावन्माः—

वाणियगामे चंपा, दुवे य वाणारसीए नयरीए ।
आलभिया य पुरवरी, कम्पिल्लपुरं च बोद्धव्वं ॥१॥
पोलासं रायगिहं, सावत्थीए पुरीए दोन्नि भवे ।
एए उवासगाणं, नयरा खलु होंति बोद्धव्वा ॥२॥
सिवनन्द-भद्द-सामा, धन्न-बहुला पूस-अग्गिमित्ता य ।
रेवइ-अस्सिणि तह, फग्गुणी य भज्जाण नामाई ॥३॥
ओहिण्णाण-पिसाए, माया वाहि-धण-उत्तरिज्जे य ।
भज्जा य सुव्वया, दुव्वया निरुवसग्गया दोन्नि ॥४॥
अरुणे अरुणाभे खलु, अरुणप्पह-अरुणकंत-सिट्ठे य ।
अरुणउभए य छट्ठे, भूय-वडिसे गवे कीले ॥५॥

अंतगडदसाओ

पढमो वग्गो

पढमं अज्जभयणं

गोयमे

उक्खेव-पर्व

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं' नयरी । पुण्णभदे चेइए' --वण्णओ' ॥
२. तेण कालेणं तेणं समएणं अज्जमुहम्मस्स समोसरिए । परिसा निग्गया' । *धम्मो कहिओ । परिसा जामेव दिसिं पाउव्भूया तामेव दिसिं ° पडिगया ॥
३. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जमुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू जाव' पज्जुवास-माणे' एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिकरेणं जाव' संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! अंगस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
४. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठ वग्गा पण्णत्ता ॥
५. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठ वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्जभयणा पण्णत्ता ?

१. नाम (क, ख) ।

२. चेतिते (क); चेतिए वणसंडे (ख) ।

३. ओ० मू० २-१३ ।

४. सं० पा०—निग्गया जाव पडिगया ।

५. ना० १।१।६, ७ ।

६. पज्जुवासइ (क, ख, ग); ना० १।१।७

सूत्रानुमारेण अयं पाठः स्वीकृतः ।

७. १।१।७ ।

८, ९. ना० १।१।७ ।

६. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. गोयम २. समुद् ३. सागर, ४. गंभीरे चेव होइ ५. थिमिए य ।

६. अयले ७. कंपिल्ले खलु, ८. अक्खोभ ९. पसेणई १०. विण्हू ॥१॥

७. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्टे पण्णत्ते ?

गोयम-पदं

८. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नामं नयरी होत्था—दुवालस-जोयणायामा नवजोयणवित्थिण्णा धणवति-मइ'-णिम्मया चामीकर-पागारा नाणामणि-पंचवण्ण-कविसीसगमंडिया सुरम्मा अलकापुरि-संकासा' पमुदिय-पक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडि-रूवा ॥

९. तीसे णं बारवईए' णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ' णं रेवयए नामं पव्वए होत्था—वण्णओ' ॥

१०. तत्थ णं रेवयए पव्वए नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था - वण्णओ' ॥

११. [तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए ?] सुरप्पिए नामं जक्खायतणे होत्था - [चिराइए पुव्वपुरिस-पण्णत्ते ?] पोराणे ॥

१२. से णं एगेणं वणसंडेणं [सव्वओ समंता संपरिक्खत्ते ?] ॥

१३. [तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे ?] असोगवरपायवे ॥

१४. तत्थ णं बारवईए णयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ—मह्याराय-वण्णओ' ।

से णं तत्थ समुद्धविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं' पंचण्हं महावीराणं'', पज्जुण्णपामोक्खाणं अट्ठुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं

१,२. ना० १।१।७ ।

३. × (क) ।

४. समा (क) ।

५. बारवती (क) ।

६. तत्थ (ख) ।

७. ना० १।५।३ ।

८. ना० १।५।४ ।

९. ओ० सू० १४ ।

१०. °पामुक्खाणं (ख) ।

११. नायाधम्मकहाओ १।५।६ सूत्राए अस्य क्रमो भिन्नोस्ति ।

सट्ठीए दुइंतसाहस्सीणं, महासेणपामोक्खाणं' छप्पण्णाए' बलवगसाहस्सीणं',
वीरसेणपामोक्खाणं एगवीसाए वीरसाहस्सीणं, उगसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं
रायसाहस्सीणं, रुप्पिणीपामोक्खाणं 'सोलसण्हं देवीसाहस्सीणं' अणंगमेणा-
पामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं', अण्णेसिं च वहुणं, ईसर'-●तलवर-
माडंविद्य-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-मेणावइ °-सत्थवाहाणं बारवईए नयरीए अद्ध-
भरहस्स य समंनस्स' आहेवच्चं' ●पोरेवच्चं सामित्तं भट्ठित्तं महत्तरगतं आणा-
ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे ° विहरइ ॥

१५. तत्थ णं बारवईए नयरीए अंधगवण्ही' नामं राया परिवसइ --महयाहिमवंत-
महंत-मलय-मंदर-मंहिदसारे वण्णओ' ॥

१६. तस्स णं अंधगवण्हस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था—वण्णओ' ॥

१७. तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि जाव'
नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा । एवं जहा" महब्बले",
नवरं—गोयमो नामेणं । अट्ठण्हं रायवरकण्णाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति ।
अट्ठुओ दाओ ॥

१८. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी आदिकरे जाव" संजमेणं तवसा
अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । चउव्विहा देवा आगया । कण्हे वि निग्गए ॥

१९. तए णं तस्स गोयमस्स कुमारस्स" ●तं महाजणसइ च जणकलकलं च सुणेत्ता
य पासेत्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्प-
ज्जित्था ° । जहा मेहे" तहा णिग्गए । घम्मं सोच्चा" ●निसम्म हट्ठुट्ठे ° जं

१. महसेण ° (क, ख) ।

२. छप्पण्णाय (ग) ।

३. बलवय ° (कव) ।

४. बत्तीसाए महिन.साहस्सीणं (ना० १।५।६) ।

५. गणिता० (ख) ।

६. सं० पा०—ईसर जाव सत्थवाहाणं ।

७. समत्थस्स (कव) ।

८. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ ।

९. ° पिण्ह (घ) ।

१०. ओ० सू० १४ ।

११. ओ० सू० १५ ।

१२. भ० ११।१३३ ।

१३. भ० ११।१३३-१६१ ।

१४. अतोमे संग्रहणीगाथा नम्यते—

सुमिण्हंसण-कहणा,

जम्मं बालत्तणं कलाओ य ।

जोव्वण-पाणिगहणं, कण्णा पासायभोगा य ॥

(क, ख, ग, घ) ।

अस्याः संग्रहर्णः-गाथायाः केचिद् विषया मूल-

पाठे एव समायाताः, तेन पुनरुक्तेर्निवारणाय

नासी मूले गृहीता ।

१५. ना० १।५।१० ।

१६. सं० पा०—कुमारस्स ।

१७. ना० १।१।६५-६६ ।

१८. सं० पा०—सोच्चा ।

- नवरं—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि' । *तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि ° ॥
२०. तए णं से गोयमे कुमारे एवं जहा मेहे जाव' अणगारे जाए—इरियासमिए' जाव' इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरइ ॥
२१. तए णं से गोयमे अणया कयाइ अरहओ अरिट्टनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइ अहिज्जइ', अहिज्जिता बहूहि चउत्थ'-*छट्ठम-दसम-दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि विविहेहि तवोकम्महि अप्पाणं ° भावेमाणे विहरइ ॥
२२. 'तए णं' अरहा' अरिट्टनेमी अणया कयाइ बारवईओ नयरीओ नंदणवणाओ पडिणिक्खमइ, वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥
२३. तए णं से गोयमे अणगारे अणया कयाइ जेणेव अरहा अरिट्टनेमी तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्टनेमि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुव्भेहि अन्नभणुणाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्ताए । एवं जहा खंदओ' तहा बारस भिक्खुपडिमाओ फासेइ । गुणरयणं पि तवोकम्मं तहेव फामेइ निरवसेसं । जहा' खंदओ तहा' चित्तेइ । तहा आपुच्छइ । तहा थेरेहि सद्धि सेत्तुजं' दुरूहइ ॥
२४. "तए णं से गोयमे अणगारे बारस वासाइं" सामण्णपरियाणं पाउणिन्ता मासि-याए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव'" केवलवरणाणदंसणं समुप्पाडित्ता तओ पच्छा ° सिद्धे ॥

निक्खेव-पदं

२५. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव'" संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

१. सं० पा०—आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं ।

६. भग० २।५७-६८ ।

२. ना० १।१।१४६-१५१ ।

१०. जघा (ख) ।

३. रियासमिए (क); इरियासमिते (ख); इरियासमिए (ग) ।

११. तघा (ख, ग) ।

१२. सेत्तुज्जं (क, ख, ग) ।

४. ना० १।१।१६४ ।

१३. सं० पा०—मासियाए संलेहणाए बारस-वासाइं परियाए जाव सिद्धे ।

५. अहिज्जेइ (ख, ग) ।

१४. वरिसाइं (ख); वरिसा य (ग) ।

६. सं० पा०—चउत्थ जाव भावेमाणे ।

१५. भ० ६।१५१ ।

७. ता (क); ते (ख) ।

१६. ना० १।१।७ ।

८. अरिहा (ख, ग) ।

२-१० अज्झयणाणि

समुदादि-पदं

२६. एवं जहा गोयमो' तहा सेसा । अंधगवण्ही' पिया, धारिणी माया । समुदे, सागरे, थिमिए, गंभीरे, अयने, कंपिल्ले, अक्खोभे, पसेणई, विण्हू एए एगगमा ॥

बीओ वगो

१-८ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१. जइ' ०णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढ-मस्स वगस्स अयमट्ठे पणत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वगस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पणत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं दोच्चस्स वगस्स अट्ठ अज्झयणा पणत्ता, तं जहा ० —

संगहणी-गाहा'

१. अक्खोभ २. सागरे खलु, ३. समुद् ४. हिमवंत ५. अचलनामे य ।
६. धरणे य ७. पूरणे य, ८. अभिचंदे चेव अट्टमए ॥ १ ॥

अक्खोभादि-पदं

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं 'बारवई नामं नयरी होत्था' । अंधगवण्ही पिया । धारिणी माया । जहा पढमे वगो तहा सव्वे अट्ठ अज्झयणा । गुणरयणं तवो-कम्मं । सोलस वासाइं परियाओ । सेत्तुंजे मासियाए संलेहणाए सिद्धा ॥

१. अं० १।६-२५ ।

२. वण्ह (क, ख, ग); अंधगवण्ह (घ) ।

३. सं० पा० — जइ दोच्चस्स वगस्स उक्खेवओ ।

४. तृतीयवर्गक्रमतोऽसौ गाथा 'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इति सूत्रात् प्राग् गृहीता । आदर्शेषु

असौ गाथा 'धारिणी माया' इति पाठानन्तर-मुल्लिखितमस्ति ।

५. बारवईए नयरीए (क, ख, ग, घ) । अस्य पाठस्य परिवर्तनं १।८ आचारेणकृतम् ।

तइओ वग्गो

पढमं अज्झयणं

अणीयसे

उक्खेव-पदं

१. जइ' ०णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ०
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—१. अणीयसे २. अणंतसेणे अजियसेणे ४. अणिहयरिऊ ५. देवसेणे ६. सत्तुसेणे ७. सारणे ८. गए ९. समुद्धे १०. दुम्मुहे ११. कूवए १२. दारुए १३. अणाहिट्ठे ॥
३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

अणीयसादि-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ" ॥
५. तस्स णं भद्दिलपुरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सिरिवणे नामं उज्जाणे होत्था—वण्णओ" । जियसत्तू राया ॥

१. स० पा०—ज १ तच्चस्स उक्खेवओ ।

४. ओ० सू० १ ।

२. देवजसे (क) ।

५. ना० १।५।४ ।

३. अणाहिट्ठे (क) ।

६. तत्थ णं भद्दिलपुरे नयरे नागे नामं गाहावई होत्था—अइठे जाव' अपरिभूए ॥
७. तस्स णं नागस्स गाहावइस्स सुलसा नामं भारिया होत्था—सूमाला जाव' सुरूवा ॥
८. तस्स णं नागस्स गाहावइस्स पुत्ते सुलमाए भारियाए अत्तए अणीयसे' नामं कुमारं होत्था—सूमाले जाव' सुरूवे पंचघाइपरिक्खित्ते जहा दढपइण्णे जाव' गिरिकंदरमल्लीणे विव चंपगवरपायवे णिव्वाघायंसि सुहंमुहेणं परिवड्डइ ॥
९. ताए णं तं अणीयसं कुमारं सातिरेगअट्टवासजायं [जाणित्ता ?] अम्मापियरो कलायरियस्स उवणेंनि जाव' भोगममत्थे जाए यावि होत्था ॥
१०. ताए णं तं अणीयसं कुमारं उम्मुक्कवालभावं जाणित्ता अम्मापियरो सरिसियाणं °सरिव्वयाणं सरित्तयाणं सरिसलावण्ण-रूव-जोवण्ण-गुणोववेयाणं सरिस-एहितो इब्भकुलेहितो आणिल्लियाणं ° वत्तीसाए इब्भवरकण्णगाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति ॥
११. ताए णं मे नागे गाहावई अणीयसस्स कुमारस्स इमं एयारूवं पीइदाणं दलयइ, तं जहा-वत्तीस हिरण्णकोडीओ जहा महब्बलस्स जाव' उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं भोगभोगाईं भुंजमाणे विहरइ ॥
१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्टनेमी' °जेणेव भद्दिलपुरे नयरे जेणेव सिरिवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ । परिसा निग्गया ॥
१३. ताए णं तस्स अणीयसस्स कुमारस्स तं महा' °जणसइं च जणकलकलं च सुणेत्ता य पासेत्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्प-ज्जित्था । जहा गोयमे" तहा अणगारे जाए °, नवरं—सामाइयमाइयाईं चोइस-पुव्वाइं अहिज्जइ । वीसं वासाइं परियाओ । सेसं तहेव जाव'" सेत्तुंजे पव्वए मासियाए संलेह्णाए" °अत्ताणं भूसित्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव केवलवरणाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा ° सिद्धे ॥

१. ना० १५७ ।

२. ओ० सू० १५ ।

३. अणीयसेणे (क) ।

४. ओ० सू० १४३ ।

५. राय० सू० ८०४ ।

६. राय० सू० ८०६-८०६ ।

७. सं० पा०—सरिसियाणं जाव वत्तीसाए ।

८. अ० ११।१५६-१६१ ।

९. सं० पा०—समोसठे सिरिवणे उज्जाणे अहा जाव विहरइ । पू०—ना० १।५।१० ।

१०. सं० पा०—तं महा जहा गोयमे तहा ।

११. अं० १।१६, २० ।

१२. अं० १।२१-२४ ।

१३. सं० पा०—संलेह्णाए जाव सिद्धे ।

१४. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

२-६ अज्झयणाणि

१५. एवं जहा अणीयसे । एवं सेसा वि । अज्झयणा एवकगमा । बत्तीसओ दाओ । वीसं वासा परियाओ । चोद्दस पुव्वा । सेत्तुजे सिद्धा ।

सत्तमं अज्झयणं

सारणे

सारण-पदं

१६. तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए, जहा पढमे, नवरं—वसुदेवे राया । धारिणी देवी । सीहो सुमिणे । सारणे कुमारे । पण्णासओ दाओ । चोद्दस पुव्वा । वीसं वासा परियाओ । सेसं जहा गोयमस्स जाव^१ सेत्तुजे सिद्धे ।

अट्ठमं अज्झयणं

गए

उक्खेव-पदं

१७. जइ^२ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स तच्चस्स वग्गस्स सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । अट्टमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ०
१८. एवं खलु जंबू तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए, जहा पढमे जाव^३ अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे ॥

छण्हं अणगाराणं तव-संकप्प-पदं

१९. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतेवासी छ अणगारा भायरो^४ सहोदरा होत्था—सरिसया सरित्तया सरिव्वया नीलुप्पल-गवल-गुलिय-^५

१. पुब्बी (ग) ।

२. अ० १।२१-२४ ।

३. सं० पा०—जइ उक्खेवओ अट्टमस्स ।

४. अ० ३।१२ ।

५. भायरा (क, ख, ग) ।

अयसिकुसुमप्पगासा सिरिवच्छंक्रिय-वच्छा कुसुम^१-कुंडलभट्टलया नलकूबर^२-समाणा ॥

२०. तए णं ते छ अणगारा जं चेव दिवसं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, तं चेव दिवसं अरहं अरिट्टणेमि वंदंति णमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं भंते ! तुभेहि अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खत्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं^३ तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरित्तए ॥

अहामुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेह ॥

२१. तए णं ते छ अणगारा अरहया^४ अरिट्टणेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं^५ अणिक्खत्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा^६ विहरंति ॥

छण्हं पि देवईए गिहे पवेस-पव्वं

२२. तए णं ते छ अणगारा अणया कयाई छट्टक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करंति, 'अबीयाए पोरिसीए आणं भियायंति, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंता मुहपोत्तियं पडिलेहंति, पडिलेहित्ता भायणवत्थाइं पडिलेहंति, पडिलेहित्ता भायणाइं पमज्जंति, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेंति उग्गाहेत्ता जेणेव अरहा अरिट्टनेमी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्टनेमि वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं भंते ! छट्टक्खमणस्स पारणए तुभेहि अब्भणुण्णाया समाणा तिहि संघाडएहि बारवईए नयरीए^७ उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए^८ अडित्तए ॥

२३. तए णं ते छ अणगारा अरहया अरिट्टणेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा अरहं अरिट्टनेमि वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता अरहओ अरिट्टनेमिस्स अंतियाओ सहसंबवणाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता तिहि संघाडएहि अतुरियम^९ चवलमसंभंता जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणा-सोहेमाणा जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता बारवईए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं^{१०} अडंति ।

२४. तत्थ णं एगे संघाडए बारवईए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं

१. दग्गकुसुम (वृषा) ।

२. नलकुम्बर (क, ख, ग) ।

३. × (ख, ग) ।

४. अरहा ख, ग) ।

५. सं० पा०—छट्टुट्टेणं जाव विहरंति ।

६. सं० पा०—जहा गोयमो जाव इच्छामो ।

७. सं० पा०—नयरीए जाव अडित्तए ।

८. सं० पा०—अतुरियं जाव अडंति ।

घरसमुदाणस्स^१ भिक्खायरियाए अडमाणे^२ वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे^३ अणुप्पविट्ठे ॥

२५. तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठ^४•तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण^५•हियया आसणाओ अम्भुट्ठेइ, अम्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइं अणुगच्छइ, तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीह्केसराणं मोयगाणं थालं भरेइ, ते अणगारे पडिलाभेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ ॥

२६. तयाणंतरं च णं दोच्चे संघाडए बारवईए^६ •नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे अणुप्पविट्ठे ॥

२७. तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अम्भुट्ठेइ, अम्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइं अणुगच्छइ, तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीह्केसराणं मोयगाणं थालं भरेइ, ते अणगारे पडिलाभेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता^७ पडिविसज्जेइ ॥

२८. तयाणंतरं च णं तच्चे संघाडए बारवईए नगरीए उच्च^८•नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गेहे अणुप्पविट्ठे ॥

देवईए पुणरागमणसंका-पवं

२९. तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अम्भुट्ठेइ, अम्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पदाइं अणुगच्छइ, तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया सीह्केसराणं मोयगाणं थालं भरेइ, ते अणगारे^९ पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता एव वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए जाव^{१०} पच्चक्खं देवलोगभूयाए समणा निग्गंथा उच्च^{११}•नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए^{१२} अडमाणा

१. °समुदाणस्स (ख, ग, घ) ।

२. अडमाणे २ (क) ।

३. गिहं (ख, ग) ।

४. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

५. सं० पा०—बारवईए उच्च जाव पडिवि-सज्जेइ ।

६. सं० पा०—उच्च जाव पडिलाभेइ ।

७. अं० १।५ ।

८. सं० पा०—उच्च जाव अडमाणा ।

भत्तपाणं नो लभंति, जण्णं ताइं चेव कुलाइं भत्तपाणाए भुज्जो-भुज्जो
अणुप्पविसंति ?

संका-समाधान-पदं

३०. तए णं ते अणगारा देवइं देवि एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिए ! कण्हस्स
वासुदेवस्स इमीसे बारवईए नयरीए जावं देवलोगभूयाए समणा निग्गथा
उच्चं-^१नीय मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायारियाए^२ अडमाणा
भत्तपाणं णो लभंति, णो चेव णं ताइं^३ चेव कुलाइं दोच्चं पि तच्चं पि
भत्तपाणाए अणुपविसंति ।

एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे भद्दिलपुरे नगरे नागस्स गाहावइस्स पुत्ता सुलसाए
भारियाए अत्तया छ भायरो सहोदरा सरिमया^४ सरित्तया सरिव्वया नालुप्पल-
गवल-गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासा सिरिवच्छंकिय-वच्छा कुसुम-कुंडलभद्दलया^५
नलकूबर-समाणा अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए धम्मं सोच्चा संसारभउव्विग्गा
भीया जम्मणमरणाणं मुंडा^६ भवित्ता अगाराओ अणगारियं^७ पव्वइया ।

तए णं अम्हे जं चेव दिवसं पव्वइआ तं चेव दिवसं अरह अरिट्ठनेमि वंदामो
नमंसामो, इमं एयारूवं अभिग्गहं ओगिण्हामो^८—इच्छामो णं भंते ! तुब्भेहिं
अब्भणुण्णाया समाणा^९ जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिकखत्तेणं तवाकम्मेणं
संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरित्ते^{१०} ।

अहासुहं ।

तए णं अम्हे अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए
छट्ठंछट्ठेणं जावं विहरामो । तं अम्हे अज्ज छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए
पोरिसीए^{११} सज्झायं करेत्ता, बीयाए पोरिसीए भाणं भियाइत्ता, तइयाए
पोरिसीए^{१२} अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा तिहिं संघाडएहिं
बारवईए नयरीए उच्चं-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायारि-
याए^{१३} अडमाणा तव गेहं अणुप्पविट्ठा । तं णो खलु देवाणुप्पिए ! ते चेव णं
अम्हे । अम्हे णं अण्णे—देवइं देवि एवं वदंति, वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया
तामेव दिसं पडिगया ॥

१. तेणं (घ) ।

२. अं० १।८ ।

३. सं० पा०—उच्चं जाव अडमाणा ।

४. ताइं ताइं (क) ।

५. सं० पा०—सरित्तया जाव नलकूबरसमाणा । ११. पू०—अं० ३।२२ ।

६. सं० पा०—मुंडा जाव पव्वइया ।

७. गिण्हामो (क) ।

८. सं० पा०—समाणा जाव अहासुहं ।

९. अं० ३।२० ।

१०. सं० पा०—पोरिसीए जाव अडमाणा ।

पुस्त-बोह-पदं

३१. तए णं तीसे देवईए देवीए अयमेयारूवे अजभत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अतिमुत्तेणं कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिआ—तुमणं देवाणुप्पिए ! अट्ट पुत्ते पयाइस्ससि^१ सरिसए जाव^२ नलकूबर-समाणे, नो चेव णं भरहे^३ वासे अण्णाओ अम्मयाओ तारिसए पुत्ते पयाइस्संति । तं णं मिच्छा । इमं णं पच्चक्खमेव दिस्सइ—भरहे वासे अण्णाओ वि अम्मयाओ खलु^४ एरिसए^५ पुत्ते पयायाओ । तं गच्छामि णं अरहं अरिट्ठणेमि वंदामि, वंदित्ता इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छिस्सामीत्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—^६“खिप्पा-मेव भो देवाणुप्पिया ! धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह । ते वि तहेव^७ उवट्ठवेंति । जहा देवाणंदा जाव^८ पज्जुवासइ ॥
३२. तए णं अरहा अरिट्ठणेमी देवइं देवि एवं वयासी—से नूणं तव देवई ! इमे छ अणगारे पासित्ता अयमेयारूवे अजभत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अट्टमुत्तेणं कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिआ तं चेव जाव^९ निगच्छित्ता मम^{१०} अंतियं हव्वमागया । से नूणं देवई ! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि ॥
३३. एवं खलु देवाणुप्पिए ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे नयरे नागे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे ॥
३४. तस्स णं नागस्स गाहावइस्स सुलसा नामं भारिया होत्था ॥
३५. तए णं सा सुलसा गाहावइणी बालत्तणे चेव नेमित्थिएणं वागरिया—एस णं दारिया णिदू भविस्सइ ॥
३६. तए णं सा सुलसा बालप्पभिइं चेव^{११} हरि-णेगमेसिस्स पडिमं करेइ, करेत्ता कल्लाकल्लि ण्हाया^{१२} “कयवलिकम्मा कयकोउय-मंगल^{१३} -पायच्छित्ता उल्लपड-साडया महरिहं पुप्फच्चणं^{१४} करेइ, करेत्ता जण्णुपायपडिया पणामं करेइ, करेत्ता तओ पच्छा आहारेइ वा नीहारेइ वा चरइ^{१५} वा ॥

१. पयाइसिसि (घ) ।

२. अं० ३।१६ ।

३. भरहे, (ख, ग, घ) ।

४. × (क) ।

५. एरिसए जाव (क, ख, ग, घ) ।

६. सं०पा०—लट्ठकरणजाणपवरं जाव उवट्ठवेंति । १२. पुप्फच्चणियं (क) ।

७. अं० ६।१४४, १४६ ।

८. अं० ३।३१ ।

९. जेजेव मम (क, ख, ग, घ) ।

१०. चेव, हरिणेगमेसी देवभत्ता यावि होत्था (ग, घ) ।

११. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

१२. पुप्फच्चणियं (क) ।

१३. वरइ (क) ।

३७. तए णं तीसे सुलसाए गाहावइणीए भत्तिबहुमाणसुस्सूसाए हरि-णेगमेसी देवे आराहिए यावि होत्था ॥
३८. तए णं से हरि-णेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्टयाए सुलसं गाहावइणिं तुमं च' दो वि समउउयाओ' करेइ ॥
३९. तए णं तुम्हे दो वि समामेव' गम्भे गिण्हह, समामेव गम्भे परिवहह, समामेव दारए पयायह' ॥
४०. तए णं सा सुलसा गाहावइणी विणिहायमावण्णे दारए पयायइ' ॥
४१. तए णं से हरि-णेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्टयाए' विणिहाय-मावण्णे' दारए करयल-संपुडेणं गेण्हइ, गेण्हत्ता तव अंतियं' साहरइ । तं समयं च णं तुमं पि नवहं मासाणं सुकुमालदारए पसवसि । जे 'वि य णं' देवाणु-प्पिए ! तव पुत्ता ते वि य तव अंतिआओ करयल-संपुडेणं गेण्हइ, गेण्हत्ता सुलसाए गाहावइणीए अंतिए साहरइ । तं तव चेव णं देवई ! एए पुत्ता । णो सुलसाए गाहावइणीए ॥

देवईए-हरिस-पवं

४२. तए णं सा देवई देवी अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म' हट्ठुट्ठ'-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण'-हियया अरहं अरिट्ठणेमि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते छप्पि अणगारे' वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता आगयपण्हया' पप्पुयलोयणा' कंचुयपरिक्खित्तया' दरियवल्लय-बाहा धाराहय-कलंब'-पुप्फगं विव समूससिय'-रोमकूवा ते छप्पि अणगारे' अणिमि-साए दिट्ठीए पेहमाणी-पेहमाणी सुच्चिरं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता वंदइ नमंसइ,

१. च णं (ग, घ) ।

२. समुदुयाओ (क); समामेव समगम्भाओ (ख); सगम्भयाओ (ग, घ) ।

३. सममेव (ख) ।

४. पयाह (क) ।

५. पयाति (क, ख) ।

६. °कंपणट्टाए (क, ख, ग) ।

७. °मावण्णए (क) ।

८. अंतियाओ (क) ।

९. वि अण्णे (क, ख, ग) ।

१०. निसम्मा (क, ख, ग) ।

११. सं० पा०—हट्ठुट्ठ जाव हियया ।

१२. अणगारा (ख, ग, घ) ।

१३. पण्हया(क, ख); पण्हयाए (ग); पण्हवा(घ) ।

१४. पप्फुल्ल° (घ) ।

१५. °पडिक्खित्तिया (क, ख, ग); °पडिणिक्खित्तिया (घ) ।

१६. कयंब (वृ) ।

१७. समूसविय (क, ख, ग) ।

१८. अणगारा (ख, ग, घ) ।

वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव अरहा' अरिट्टणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्टणेमि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ', दुरुहित्ता जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बारवइं नयारि अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागया, धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव सए वासघरे' जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागया सयंसि सयणिज्जंसि निसीयइ ॥

देवईए पुत्ताभिलासा-पदं

४३. तए णं तीसे देवईए देवीए अयं अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं सरिसए जाव' नलकूवर-समाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चेव णं मए एगस्स वि वालत्तणए' समणुब्भूए' । एस वि य णं कण्हे वासुदेवे छण्हं-छण्हं मासाणं ममं अंतियं पायवंदए हव्वमागच्छइ । तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, पुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, जासि मण्णे णियग-कुच्छि-संभूयाइ' थणदुद्ध-लुद्धयाइं महु-समुल्लावयाइं मम्मण-पजंपियाइं' 'थण-मूला' कक्खदेस-भाग अभिसरमाणाइं' मुद्धयाइं' पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगे' णिवेसियाइं देति समुल्लावए सुमहुरे पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए । अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा अकयलक्खणा एत्तो एक्कतरमवि ण पत्ता—ओहय' 'मणसंकप्पा' करयलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया ° भियायइ ॥

कण्हस्स चित्ताकारणपुच्छा-पदं

४४. इमं च णं कण्हे वासुदेवे ण्हाए' °कयवलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकार° विभूसिए देवईए देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ ॥

४५. तए णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देवि पासइ, पासित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ, करेत्ता देवइं देवि एवं वयासी—अण्णया णं अम्मो ! तुब्भे ममं पासेत्ता

१. अरिहा (क) ।

२. द्रुहि (क) ।

३. वासघरे (ख, ग) ।

४. अं ३।१६ ।

५. बालत्तए (ख) ।

६. समुब्भूए (ख, ग, घ) ।

७. संभूययाइं (ख, ग) ।

८. पजंपिराइं (क) ।

९. थणमूल (क, ग, घ) ।

१०. अतिसरमाणाइं (क, ख, ग, घ) ।

११. भवन्तीति गम्यते (वृ); मुद्धयाइं थणियं पियंति (ना० १।२।१२); पण्हयं पियंति (उ०४।६०) ।

१२. उच्छंग (ख, ग) ।

१३. सं० पा०—ओहय जाव भियायइ ।

१४. °संकप्पा भूमिगयदिट्ठीया (वृ) ।

१५. सं० पा०—ण्हाए जाव विभूसिए ।

हट्टुट्टा जाव' भवह, किण्णं अम्मो ! अज्ज तुब्भे ओहयमणसंकप्पा जाव' भियायह ?

देवईए चिंताकारण-निवेदन-पदं

४६. तए णं सा देवई देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु अहं पुत्ता ! सरिसए जाव' नलकूबर-समाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चेव णं मए एगस्स वि बालत्तणे अणुब्भूए । तुमं पि य णं पुत्ता ! छण्हं-छण्हं मासाणं ममं अंतियं पायवंदए हव्वमागच्छसि । तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव' भियामि ।

कण्हस्स देवाराहण-पदं

४७. तए णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देवि एवं वयासी—मा णं तुब्भे अम्मो ! ओहयमणसंकप्पा जाव' भियायह । अहण्णं तहा घत्तिस्सामि जहा णं ममं सहोदरे कणीयसे भाउए भविस्सति त्ति कट्टु देवइं देवि ताहि इट्ठाहि वग्गहि समासासेइ । तओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता *पोसहसालं पमज्जइ, उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, दब्भसंथारणं दुरुहइ, दुरुहिता अट्टमभत्तं पणिण्हइ, पणिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए वंभयारी हरि-णेगमेसि देवं मणसीकरेमाणे-मणसी-करेमाणे चिट्ठइ ॥

४८. तए णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स अट्टमभत्तं परिणममाणे हरि-णेगमेसिस्स देवस्स आसणं चलइ जाव' अहं इहं हव्वमागए । संदिसाहि णं देवाणुप्पिया ! किं करेमि ? किं दलयामि ? किं पयच्छामि ? किं वा ते हियइच्छियं ?

४९. तए णं से कण्हे वासुदेवे तं हरि-णेगमेसिं देवं अंतिलिक्खपडिवण्णं पासित्ता हट्टुट्टु पोसहं पारेइ, पारेत्ता करयलपरिगहियं सिरसावत्तं मत्थए ° अंजलिं कट्टु एवं वयासी—इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सहोदरं कणीयसं भाउयं विदिण्णं ॥

५०. तए णं से हरि-णेगमेसी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—होहिइ णं देवाणुप्पिया ! तव देवलोयचुए सहोदरे कणीयसे भाउए । से णं उम्मुक्क ° बालभावे विण्णय-

१. अ० ३।२५ ।

२. अ० ३।४३ ।

३. अ० ३।१६ ।

४. अ० ३।४३ ।

५. अ० ३।४३ ।

६. जत्तिस्सामि (ग); वत्तिस्सामि (ब); बइ-
स्सामि (मुद्रित वृ) ।

७. पू०—अ० ३।५१ ।

८. सं० पा०—जहा अभओ । नवरं हरिणेगमे-
सिस्स अट्टमभत्तं पणेण्हइ जाव अंजलि ।

९. पू०—ना० १।१।५३ ।

१०. ना० १।१।५५-५७ ।

११. सं० पा०—उम्मुक्क जाव अणुप्पत्ते ।

परिणयमेते जेव्वणग ° मणुप्पत्ते अरहम्मो अरिट्टणेमिस्स अंतियं मुंडे' ° भवित्ता
अगाराम्मो अणगारियं ° पव्वइस्सइ—कण्हं वासुदेवं दोच्चं पि तच्चं पि एवं
वदइ, वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ।

कण्हेव देवईए आसासण-पदं

५१. तए णं से कण्हे वासुदेवे पोसहसालाम्मो पडिणिवत्तइ, पडिणिवत्तित्ता जेणेव
देवई' देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ,
करेत्ता एवं वयासी—होहिइ णं अम्मो ! मम सहोदरे कणीयसे भाउए त्ति
कट्टु देवइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताइं पियाहिं मण्णुणाहिं मणामाहिं वग्गूहिं
आसासेइ, आसासेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

गयसुकुमालस्स जम्म-पदं

५२. तए णं सा देवई देवी अण्णया कयाइं तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव' सीहं
सुमिणे पासित्ता पडिबुद्धा जाव' गम्भं परिवहइ ॥

५३. तए णं सा देवई देवी नवण्हं मासाणं जासुमण-रत्तबंधुजीवय-लक्खारस-
सरसपारिजातक-तरुणदिवायर-समप्पभं सव्वणयणकंत-सुकुमालपाणिपाय'
जाव' सुरूबं गयतालुसमाणं दारयं पयाया । जम्मणं जहा मेहकुमारे जाव' जम्हा
णं अम्मं इमे दारए गयतालुसमाणे', तं होउ णं अम्मं एयस्स दारगस्स नामघेज्जे
गयसुकुमाले' ॥

५४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामं कयं—गयसुकुमालो त्ति । सेसं जहा
मेहे जाव' अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥

सोमिलधूयाए कण्णतेउर-पवखेव-पदं

५५. तत्थ णं बारवईए नयरीए सोमिले नाम माहणे परिवसइ—अड्ढे । रिउव्वेय
जाव' बंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिए यावि होत्था ॥

५६. तस्स सोमिल-माहणस्स सोमसिरी नामं माहणी होत्था—सूमालपाणिपाया ॥

५७. तस्स णं सोमिलस्स धूया सोमसिरीए माहणीए अत्तया सोमा नामं दारिया

१. सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइस्सइ ।

२. देवती (क, ख) ।

३. जावपाठया (क) । भ० ११।१३३ ।

४. भ० ११।१३३-१४५ ।

५. सूमालं (वृ) ।

६. भो० सू० १४३ ।

७. ना० १।१।७४-८१ ।

८. गयतालुय० (क) ।

९. गयसुकुमाले, गयसुकुमाले (क, ख)

१०. ना० १।१।८२-८८ ।

११. भो० सू० ६७ ।

होत्था—सूमालपाणिपाया जाव' सुरूवा, रूवेण' •जोव्वणेणं • लाव्वणेणं उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था ॥

५८. तए णं सा सोमा दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया जाव' विभूसिया, बह्णिं खुज्जाहि जाव' महत्तरविद-परिक्खित्ता सयाओ गिहाम्पो पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायमग्गंसि कणगतिदूसएणं कीलमाणी चिट्ठइ ॥

५९. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे । परिसा निग्गया ॥

६०. तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लढट्ठे समाणे ण्हाए जाव' विभूसिए गयसुकुमालेणं कुमारेणं सद्धि हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहि उद्दुव्वमाणीहि बारवईए नयरीए मज्झमज्झेणं अरहओ अरिट्ठणेमिस्स पायवंदए निग्गच्छमाणे सोमं दारियं पासइ, पासित्ता सोमाए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लाव्वणेण य जायविम्हए कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुभे देवाणुप्पिया ! सोमिलं माहणं जायित्ता सोमं दारियं गेण्हह, गेण्हित्ता कण्णतेउरंसि पक्खिवह । तए णं एसा गयसुकुमालस्स कुमारस्स भारिया भविस्सइ । तए णं कोडुबिय-पुरिसा तहेव पक्खिवन्ति ॥

६१. तए णं से कण्हे वासुदेवे बारवईए नयरीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे' •जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणंव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुत्सूसमाणे नमंसमाणे पंजलिउडे अभिमुहे विणएणं • पज्जुवासइ ॥

धम्मवेसणा-पवं

६२. तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हस्स वासुदेवस्स गयसुकुमालस्स कुमारस्स तीसे य' •महत्तिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जाम धम्मं कहेइ, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहातो वेरमणं । • कण्हे पडिगए ॥

१. ओ० सू० १५ ।

२. सं० पा०—रूवेणं जाव लाव्वणेणं ।

३. अं० ३।४४ ।

४. ओ० सू० ७० ।

५. अं० ३।४४ ।

६. जायविम्हए तएणं कण्हे वासुदेवे (व) ।

७. सं० पा०—उज्जाणे जाव पज्जुवासइ ।

पू०—मा० १।१।९९ ।

८. सं० पा०—तीरे य धम्मकम् ।

गयसुकुमालस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं

तए णं से गयसुकुमाले अरहओ अरिट्टुनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा' •निसम्म हट्ठुट्ठे अरहं अरिट्टुनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुभे वयह । नवरि देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि । तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

गयसुकुमालस्स अम्मापिरुणं निवेदन-पदं

६४. तए णं से गयसुकुमाले अरहं अरिट्टुनेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणामेव हत्थिरयणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधवरगए महयाभड-चडगर-पहकरेणं बारवईए नयरोए मज्झमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिरुणं पायवडणं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! मए अरहओ अरिट्टुनेमिस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ॥
६५. तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अम्मापियरो एवं वयासी—घन्नोसि तुमं जाया ! संपुण्णोसि तुमं जाया ! कयत्थोसि तुमं जाया ! कयलक्खणोसि तुमं जाया ! जणं तुमे अरहओ अरिट्टुनेमिस्स अंतिए धम्मे निसंते से वि य ते धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ॥
६६. तए णं से गयसुकुमाले अम्मापियरो दोच्चं पि एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! मए अरहओ अरिट्टुनेमिस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुभेहि अब्भणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्टुनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥

१. सं० पा०—मोच्चा जं नवरं अम्मापियरो आपुच्छामि जहा मेहो महेलियावज्जं जाव वड्ढियकुले ।

देवईए सोगाकुलवसा-पदं

६७. तए णं सा देवई देवी तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुण्णं अमणामं असुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा निसम्म इमेणं एयारुवेणं मणोमाणसिएणं महया पुत्तदुक्खेणं अभिभूया समानी सेयागयरोमकूवपगलंत-च्चिलिणगाया सोयभर-पवेवियंगी नित्तेया दीण-विमण-वयणा करयल-मलिय व्व कमलमाला तक्खणओलुग-दुब्बलसरीरलावणसुन्न-निच्छाय-गयसिरीया पसिढिलभूमण-पडंतवुम्मिय-संचुण्णियधवलवलय-पदभट्ट-उत्तरिज्जा सूमालविकिण्ण-केसहत्था मुच्छावस-नट्टचेय-गरुई परसुनियत्त व्व चंपगलया निव्वत्तमहे व्व इंदलट्ठी विमुक्कसंधि-बंधणा कोट्टिमतलसि सव्वंगेहि वसत्ति पडिया ॥

देवईए गयसुकुमालस्स य परिसंवाद-पदं

६८. तए णं सा देवई देवी ससंभमोवत्तियाए तुरियं कंचणाभिगारमुहविणिग्गय-सीयल-जलविमलधाराए परिसिच्चमाणनिव्वावियगायलट्ठी उक्खेवय-नालविट-वीयणग-जणियवाएणं सफुसिएणं अतेउर-परिजणेणं आसासिया समानी मुत्तावलि-सन्निगास-पवडंत-अमुधाराहि सिच्चमाणो पओहरे, कलुण-विमण-दीणा रोय-माणी कंदमाणो तिप्पमाणो सोयमाणो विलवमाणो गयसुकुमालं कुमारं एवं वयासी—तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामं थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासिए हियय-णंदि-जणणे उंवरपुप्फं व दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए । तं भुंजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो । तओ पच्छा अम्हेहि कालगएहि परिणयवाए वडिडय-कुलवंसतंतु-कज्जम्म निरावयक्खे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ॥

६९. तए णं से गयसुकुमाले अम्मापिऊहि एवं वुत्ते समणे अम्मापियरो एवं वयासी—तहेव णं तं अम्मो ! जहेव णं तुब्भे ममं एवं वयह—“तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासिए हियय-णंदि-जणणे उंवरपुप्फं व दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए । तं भुंजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो । तओ पच्छा अम्हेहि

१. देवक्या अग्नेषां पुत्राणां बालत्वं नानुभूतम् ।

तेन 'एगे' इति विशेषणस्य संगतिर्भविष्यति ।

केवलं गजसुकुमालस्यैव लालन-पालनं कृतम् ।

कालगएहिं परिणयवए वड्डिय-कुलवंसतंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे अरह्मो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।”

एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सए भवे अधुवे अणितिए असासए वसणसओव-द्वामिभूते विज्जुलयाचंचले अणिच्चे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलविदुसन्निभे संक्कभरागसरिसे सुविणदंसणोवमे सडण-पडण-विद्धंसण-धम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्वि गमणाए के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अरह्मो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्व-इत्तए ॥

७०. तए णं तं गयसुकुमालं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमे य ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहु हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्त-माओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं । तं अणुहोही ताव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्डिसक्कारसमुदयं । तओ पच्छा अणुभूय-कल्लाणे अरह्मो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ॥

७१. तए णं से गयसुकुमाले अम्मापियरं एवं वयासी—तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वयह—‘इमे ते जाया ! अज्जग-पज्जग-पिउपज्जयागए सुबहु हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं । तं अणुहोही ताव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्डि-सक्कारसमुदयं । तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे अरह्मो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।”

एवं खलु अम्मयाओ ! हिरण्णे य जाव सावएज्जे य अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए मच्चुसाहिए, अग्गिसामण्णे चोरसामण्णे रायसामण्णे दाइयसामण्णे मच्चुसामण्णे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्स-विप्पजहणिज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्वि गमणाए के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अरह्मो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥

७२. तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति गयसुकुमालं कुमारं बहूहि विसयाणुलोमाहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेयकारियाहिं पण्णवणाहिं पण्णवेमाणा एवं

वयासी—एस णं जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगंतदिट्ठिए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गंगा इव महानई पडिसोय-गमणाए, महासमुद्धो इव भुयाहिं दुत्तरे, तिक्खं कमियव्वं, गरुअं लंबेयव्वं, असिधारव्वयं चरियव्वं । नो खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निग्गंधाणं आहा-कम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुट्ठिभक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वट्ठलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा ।

तुमं च णं जाया ! सुहसमुच्चिए नो चेव णं दुहसमुच्चिए, नालं सीयं नालं उण्हं नालं खुहं नालं पिवासं नालं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइए विविहे रोगा-यंके, उच्चावए गामकंटए, बावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्मं अहियासित्तए । भुंजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे । तम्मो पच्छा भुत्तभोगी अरहम्मो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ॥

७३. तए णं से गयसुकुमाले कुमारे अम्मपिऊहि एवं वुत्ते समणे अम्मपियरं एवं वयासी—तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं णं तुब्भे मम एवं वयह—“एस णं जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगंतदिट्ठिए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुया-कवले इव निरस्साए, गंगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्धो इव भुयाहिं दुत्तरे, तिक्खं कमियव्वं, गरुअं लंबेयव्वं, असिधारव्वयं चरियव्वं । नो खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निग्गंधाणं आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुट्ठिभक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वट्ठलियाभत्ते वा गिलाण-भत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरिय-भोयणे वा भोत्तए वा पायए वा ।

तुमं च णं जाया ! सुहसमुच्चिए नो चेव णं दुहसमुच्चिए, नालं सीयं नालं उण्हं नालं खुहं नालं पिवासं नालं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइए विविहे रोगा-यंके, उच्चावए गामकंटए बावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्मं अहियासित्तए । भुंजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे । तम्मो पच्छा भुत्तभोगी अरहम्मो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।”

एवं खलु अम्मयाओ ! निग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोग-पडिबद्धाणं परलोगनिप्पिवासाणं दुरणुचरे पाययजणस्स, नो चेव णं धीरस्स । निच्छियववसियस्स एत्थ किं दुक्करं करणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ !

तुभेहि अभणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्टनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ° ॥

७४. तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे जेणेव गयसुकुमाले तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गयसुकुमालं आलिंगइ, आलिंगित्ता उच्छंगे निवेसेइ', निवेसेत्ता एवं वयासी—'तुमं णं ममं' सहोदरे कणीयसे भाया । तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! इयाणि अरहओ' °अरिट्टनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वाहि' । अहण्णं तुमे वारवईए नयरीए महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिचिस्सामि ॥

७५. तए णं से गयसुकुमाले कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

७६. तए णं से गयसुकुमाले कण्हं वासुदेवं अम्मापियरो य दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! माणुस्सया काम'°भोगा असुई वंतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा दुर्य-उस्सास-नीसासा दुर्य-मुत्त-पुरीस-पूय-वहुपडिपुण्णा उच्चार-पासवण-खेल-सिघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणियसंभवा अधुवा अणितिया असासया सडण-पडण-विद्धंसणधम्मा पच्छा पुरं च णं अवस्स ° विप्पजहणिज्जा । से के णं जाणइ देवाणुप्पिया ! के पुव्वि गमणाए के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुभेहि अभणुण्णाए समाणे अरहओ अरिट्टनेमिस्स अंतिए' °मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइत्तए ॥

गयसुकुमालस्स एगदिवसरज्ज-पवं

७७. तए णं तं गयसुकुमालं कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य जाहे नो संचाएइ बहु-याहि' °विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य ° आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामाईं चेव गयसुकुमालं कुमारं एवं वयासी—तं इच्छामो णं ते जाया ! एगदिवसमवि रज्जसिरि पासित्तए ॥

७८. °तए णं गयसुकुमाले कुमारं कण्हं वासुदेवं अम्मापियरं च अणुवत्तमाणे तुसि-णीए संचिट्ठइ ॥

१. गेण्हति २ (क) ।

२. तुमं ममं (क, ख) ।

३. सं० पा०—अरहओ मुंडे जाव पव्वाहि ।

४. पव्वयाहि (क्व) ।

५. सं० पा०—कामा खेलासवा जाव विप्पजहि-यव्वा ।

६. सं० पा०—अंतिए जाव पव्वइत्तए ।

७. सं० पा०—बहुयाहि अणुलोमाहि जाव आघ-वित्तए ।

८. सं० पा०—निक्खमणं जहा महब्बलस्स जाव तमाणाए तहा जाव संजमइ ।

७६. तए णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! गयसुकुमालस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं
रायाभिसेयं उवट्ठवेह ॥
८०. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा गयसुकुमालस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं
विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेति ।
८१. तए णं से कण्हे वासुदेवे' गयसुकुमालं कुमारं' महया-महया रायाभिसेएणं
अभिसिचइ, अभिसिचित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए
अजलिं कट्ठु एवं वयासी—जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा ! जय-जय
नंदा भद्दं ते, अजियं जिणाहि, जियं पालयाहि, जियमज्जे वसाहि,
इंदो इव देवाणं चमरो इव असुराणं धरणो इव नागाणं चंदो इव ताराणं
भरहो इव मणुयाणं बारवईए नयरीए अण्णेसि च वहुणं गामागर-नगर-वेड-
कव्वड-दोणमुह-मडंव-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-मण्णिवेसाणं आदेवच्चं
पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-मेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे
महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं
विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराहि त्ति कट्ठु जय-जय-सइं पउंजंति ॥
८२. तए णं से गयसुकुमाले राया जाए जाव' रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥
८३. तए णं तं गयसुकुमालं रायं कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य एवं वयासी—
भण जाया ! किं दलयामो ? किं पयच्छामो ? किं वा ते हिय-इच्छिए
सामत्थे ?

गयसुकुमालस्स पव्वज्जा-पदं

८४. तए णं से गयसुकुमाले राया कण्हं वासुदेवं अम्मापियरो य एवं वयासी—
इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहं च आणियं
कासवियं च सद्दावियं । निक्खमणं जहा महव्वलस्स' ॥
८५. तए णं से गयसुकुमाले कुमारे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए इमं एयारूवं
घम्मियं उवएसं सम्मं पडिवज्जइ—तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ, तह
निसीयइ, तह तुयट्ठइ, तह भुंजइ, तह भासइ, तह उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं
जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं° संजमइ ॥
८६. तए णं से गयसुकुमाले अणगारे जाए—इरियासमिए जाव' गुत्तबंभयारी ॥
८७. तए णं से गयसुकुमाले जं चेव दिवसं पव्वइए तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्ह-
कालसमयंसि' जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं

१,२. पू०—ना० १।१।११८ ।

५. ना०—१।१।११४ ।

३. ना०—१।१।११६ ।

६. पुव्वावरण्ह° (ख, ग, घ) ।

४. भग० १।१।१६८; ना० १।१।१२२-१५० ।

अरिट्टणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्ताए ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

गयसुकुमालस्स महापडिमा-पवं

८८. तए णं से गयसुकुमाले अणगारे अरहया अरिट्टणेमिणा अब्भणुण्णाए समाणे अरहं अरिट्टणेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अरहओ अरिट्टणेमिस्स अंतिए सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव महाकाले सुसाणे तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता थंडिल्लं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता ईसि पडभारगएणं काएणं^१ *वग्घारिय-पाणी अणिमिसनयणे सुक्कपोगलं-निरुद्धदिट्ठी^२ ° दो वि पाए साहट्ठु एगराइं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

सोमिलकय-उवसग्ग-पवं

८९. इमं च णं सोमिले माहणे सामिधेयस्स अट्ठाए बारवईओ नयरीओ बहिया पुव्वणिग्गए । समिहाओ य दब्भे य कुसे य पत्तामोडं^३ य गेण्हइ, गेण्हित्ता तओ पडिणियत्तइ^४, पडिणियत्तित्ता महाकालस्स सुसाणस्स अदूरसामंतेणं वीईवय-माणे-वीईवयमाणे संभाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि^५ गयसुकुमालं अणगारं पासइ, पासित्ता तं वेरं सरइ, सरित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमि-सेमाणे एवं वयासी—एस णं भो ! से गयसुकुमाले कुमारे अपत्थियं^६ ° पत्थिए, दुरंत-पंत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउइसिए, सिरि-हिरि-घिइ-कित्ति °-परिवज्जिए, जेणं मम धूयं सोमसिरीए भारियाए अत्तयं सोमं दारियं अदिट्ठदोसपत्तियं कालवत्तिणिं विप्पजहेत्ता मुंडे जाव^७ पव्वइए । तं सेयं खलु मम गयसुकुमालस्स कुमारस्स वेरनिज्जायणं करेत्ताए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता दिसापडिलेहुणं करेइ, करेत्ता सरसं मट्ठियं^८ गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव गयसुकुमाले अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गयसुकुमालस्स^९ अणगारस्स मत्थए मट्ठियाए^{१०} पालिं

१. सं० पा०—काएणं जाव दो वि पाए ।

२. एग० (अ० ३।१०५) ।

३. निविट्ठ० (अ० ३।१०५) ।

४. पत्तामोडयं (वृ) ।

५. पडिनिक्खमति (क) ।

६. °माणूसंसि (क) ।

७. सं० पा०—अपत्थिय जाव परिवज्जिए ।

८. अ० ३।२० ।

९. मत्तियं (ख, ग) ।

१०. °सुमालस्स (क, ख) ।

११. × (क); मट्ठिया (ख) ।

बंधइ, बंधिता जलंतीओ चिययाओ फुल्लियकिंसुयसमाणे खइरिगाले कहल्लेणं' गेण्हइ, गेण्हिता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए तओ खिप्पामेव अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

गयसुकुमालस्स सिद्धि-पदं

६०. तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स सरीरयंसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला' •विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा ° दुरहियासा ॥
६१. तए णं से गयसुकुमाले अणगारे सोमिलस्स माहणस्स मणसा वि अप्पदुस्समाणे तं उज्जलं जाव' दुरहियासं वेयणं अहियासेइ ॥
६२. तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स तं उज्जलं जाव' दुरहियासं वेयणं अहियासेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थज्भवसाणेणं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुप्पविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे' •निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे ° केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे । तओ पच्छा सिद्धे' •बुद्धे मुत्ते अंतयडे परिनिव्वुए सब्बदुक्ख °-प्पहीणे ॥
६३. तत्थ णं 'अहासंनिहिण्हि देवेहि सम्मं आराहिण' त्ति कट्ठु दिव्वे सुरभिगंधोदए वुट्ठे; दसद्धवण्णे कुसुमे निवाडिण; चेलुक्खेवे कए; दिव्वे य गीयगंधव्वणिणाए कए यावि होत्था ॥

कण्हेण बुद्धस्स साहिज्जकरण-पदं

६४. तए णं से कण्हे वासुदेवे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाए जाव' विभूसिए हत्थिखंधवरणए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणीहि महयाभड-चडगर-पहकरवंद-परिक्खित्ते बारवइं नयारि मज्झमज्झेणं जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥
६५. तए णं से कण्हे वासुदेवे बारवईए नयरीए मज्झमज्झेणं निगच्छमाणे एक्कं पुरिसं—जुणं जरा-जज्जरिय-देहं' •आउरं भूसियं पिवासियं दुब्बलं ° किलंतं

१. कभल्लेणं (ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।

३. अ० ३।६० ।

४. अ० ३।६० ।

५. सं० पा०—अणुत्तरे जाव केवल ° ।

६. सं० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे ।

७. ना० १।१।२४ ।

८. अ० ३।४४ ।

९. पुरिसं पासइ (क, ख, ग, घ) ।

१०. सं० पा०—देहं जाव किलंतं ।

महइमहालयाओ इट्टगरासीओ एगमेगं इट्टगं गहाय बहिया रत्थापहाओ
अंतोगिहं अणुप्पविसमाणं^१ पासइ ॥

६६. तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुकंपणट्ठाए हत्थिखंधवरगए चेव
एगं इट्टगं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पवेसेइ ॥

६७. तए णं कण्हेणं वासुदेवेणं एगाए इट्टगाए गहियाए समाणीए अणेगेहिं^२
पुरिससएहिं से महालए इट्टगस्स रासी बहिया रत्थापहाओ अंतोघरंसि
अणुप्पवेसिए ॥

कण्हस्स गयसुकुमाल-दंसणाभिलासा-पदं

६८. तए णं से कण्हे वासुदेवे बारवईए नयरीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता
जेणेव अरहा अरिट्टनेमी तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता^३ *अरहं अरिट्टनेमि
तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता^४ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता
गयसुकुमालं अणगारं अपासमाणे अरहं अरिट्टणेमि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता
नमंसित्ता एवं वयासी—कहि णं भंते ! से ममं सहोदरे कणीयसे भाया गय-
सुकुमाले अणगारे 'जं णं'^५ अहं वंदामि नमंसामि ?

गयसुकुमालस्स सिद्धि-सूयणा-पदं

६९. तए णं अरहा अरिट्टनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—साहिए णं कण्हा !
गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे ॥

१००. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्टनेमि एवं वयासी—कहण्णं^६ भंते !
गयसूमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे ?

१०१. तए णं अरहा अरिट्टनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्हा !
गयसुकुमालेणं अणगारेणं ममं कल्लं पच्चावरण्हकालसमयंसि^७ वंदइ नमंसइ,
वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं^८ *भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए
समाणे महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए
जाव^९ एगराइं महापडिमं^{१०} उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

तए णं तं गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासइ, पासित्ता आसुरत्ते^{११}
*गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए मट्ठियाए पालि वंधइ, बंधित्ता जलंतीओ

१. अणुपविसमाणं (ख, ग) ।

२. अणेहिं (क) ।

३. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव वंदइ ।

४. जा णं (क, ख, ग); जेणं (ग) ।

५. कह णं (क, ख, ग) ।

६. पुब्बावरण्हं^० (ग, घ) ।

७. सं० पा०—इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ता ।

८. अं० ३।८८ ।

९. सं० पा०—आसुरत्ते जाव सिद्धे । पू०—

३।८९ ।

चिययाओ फुल्लियकिंसुयसमाणे खइरिगाले कहल्लेणं गेण्हइ, गेण्हत्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए तओ खिप्पामेव अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जामेव दिसं पाउव्वभूए तामेव दिसं पडिगए ।

तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स मरीरयंसि वेयणा पाउव्वभूआ—उज्जला विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा दुरहियासा ।

तए णं से गयसुकुमाले अणगारे तस्स पुरिसस्स मणसा वि अप्पदुस्समाणे तं उज्जलं जाव दुरहियासं वेयणं अहियामेइ ।

तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स तं उज्जलं जाव दुरहियासं वेयणं अहियासेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पमत्थज्भवसाणेणं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुप्पविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाधाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंमणे समुप्पण्णे । तओ पच्छा° सिद्धे । तं एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे ॥

१०२. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमि एवं वयासी—केसं^१ णं भंते ! से पुरिसे अपत्थियपत्थिए^२, •दुरंत-पंत-लक्खण, हीणपुण्णचाउट्ठसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति°-परिवज्जिए, जेणं ममं सहोदरं कर्णीयसं भायरं गयसुकुमालं अणगारं अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ ?

१०३. तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—मा णं कण्हा ! तुमं तस्स पुरिसस्स पदासमावज्जाहि । एवं खलु कण्हा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जे दिण्णे ।

कहण्णं भंते ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जे दिण्णे ?

१०४. तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—से नूणं कण्हा ! तुमं ममं पायवंदए हव्वमागच्छमाणे बारवईए नयरीए एगं पुरिसं—•जुण्णं जरा-जज्जरिय-देहं आउरं भूसियं पिवासियं दुव्वलं किलंतं महइमहालयाओ इट्ठगरासीओ एगमेगं इट्ठगं गहाय बहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पविसमाणं पाससि । तए णं तुमं तस्स पुरिसस्स अणुकंपणट्ठाए हत्थिखंधवरगए चेव एगं इट्ठगं गेण्हसि, गेण्हत्ता बहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पवेससि । तए णं तुमे एगाए इट्ठाए गहियाए समाणीए अणेगेहिं पुरिससएहिं से महलाए इट्ठगस्स रासी बहिया रत्थापहाओ अंतोघरंसि° अणुपवेसिए । जहा णं

१. से के णं (घ) ।

२. सं०पा०—अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए ।

३. सं० पा०—पुरिसं पाससि जाव अणुपवेसिए ।

कण्हा ! तुमे तस्स पुरिसस्स साहिज्जे दिण्णे, एवामेव कण्हा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स अणेगभव-सयसहस्स-संचियं कम्मं उदीरेमाणेणं बहुकम्मणिज्जरत्थं साहिज्जे दिण्णे ॥

१०५. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमि एवं वयासी—से णं भंते ! पुरिसे मए कहं जाणियव्वे ?
१०६. तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—जे णं कण्हा ! तुमं बारवईए नयरीए अणुप्पविसमाणं पासेत्ता ठियए' चेव ठिइमेएणं कालं करिस्सइ, तण्णं तुमं जाणिज्जासि 'एस णं से पुरिसे' ॥
१०७. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव आभिसेयं हत्थिरयणं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थि दुहइ', दुहत्तित्ता जेणेव बारवई नयरी जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

सोमिलस्स अकालमच्चु-पवं

१०८. तए णं तस्स सोमिलमाहणस्स कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमि पायवंदए निग्गए । तं नायमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, सिट्ठमेयं अरहया भविस्सइ कण्हस्स वासुदेवस्स । तं न नज्जइ णं कण्हे वासुदेवे ममं केणइ' कु-मारेणं मारिस्सइ त्ति कट्ठु भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ । कण्हस्स वासुदेवस्स बारवइं नयारि अणुप्पविसमाणस्स पुरओ सपक्खि सपडिदिसि' हव्वमागए ॥
१०९. तए णं से सोमिले माहणे कण्हं वासुदेवं सहसा पासेत्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए ठियए चेव ठिइमेयं' कालं करेइ, धरणितलंसि सव्वंगेहि 'धस' त्ति सण्णिवडिए ॥
११०. तए णं से कण्हे वासुदेवे सोमिलं माहणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—एस णं भो ! देवाणुप्पिया ! से सोमिले माहणे अपत्थियपत्थिए जाव' सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिए, जेणं ममं सहोयरे कणीयसे भायरे गयसुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए त्ति कट्ठु सोमिलं माहणं पाणेहि कड्ढावेइ,

१. ठित्ते (क, घ) ।

२. द्रुति (क) ।

३. पू०—ना० १।१।२४ ।

४. केणवि (ख, घ) ।

५. °दिस' (क, घ) ।

६. ६० सूत्रे 'ठिइमेएणं' इति पाठोस्ति । अत्र सम्भवतः कालस्य विशेषणं कृतं स्यात् ।

७. अं० ३।८६ ।

कट्ठावेत्ता तं भूमिं पाणिणं अम्भोक्खावेइ, अम्भोक्खावेत्ता जेणेव सए गिहे
तेणेव उवागए । सयं गिहं अणुप्पविट्ठे ॥

निक्खेव-पदं

१११. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स
अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अट्ठमज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ॥

६-१३ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

११२. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स तच्चस्स वग्गस्स
अट्ठमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते । नवमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स
अंतगडदसाणं के अट्ठे पणत्ते ? °

सुमुहादि-पदं

११३. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवईए नयरीए कण्हे नामं वासु-
देवे राया जहा पढमए जाव' विहरइ ॥

११४. तत्थ णं वारवईए वलदेवे नामं राया होत्था—वण्णओ' ॥

११५. तस्स णं वलदेवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था—वण्णओ' ॥

११६. तए णं सा धारिणी' °देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि जाव'
नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा ° । जहा गोयमे, नवरं—
सुमुहे कुमारे । पण्णासं कण्णाओ । पण्णासओ दाओ । चोइस पुव्वाइं अहिज्जइ ।
वीसं वासाइं परियाओ । सेसं तं चेव जाव' सेत्तुजे सिद्धे ॥

११७. निक्खेवओ ॥

११८. एवं—दुम्मुहे वि । कूवए वि । तिण्णि वि वलदेव-धारिणी-सुया ।

दारुए वि एवं चेव, नवरं—वसुदेव-धारिणी-सुए ।

एवं—अणाहिट्ठी वि वसुदेव - धारिणी - सुए ॥

१. ना० १।१।७ ।

२. सं० पा०—नवमस्स उक्खेवओ ।

३. अं० १।१४ ।

४. ओ० सू० १४ ।

५. ओ० सू० १५ ।

६. सं० पा०—धारिणी । सीहं सुमिजे ।

७. अं० ११।१३३ ।

८. अं० ११७-२४ ।

चउत्थो वग्गो

१-१० अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पणत्ते, चउत्थस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पणत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. जालि २. मयालि ३. उवयाली, ४. पुरिससेणे ५. वारिसेणे य ।
६. पज्जुण्ण ७. संबं ८. अणिरुद्ध ९. सच्चणेमि य १०. दढणेमी ॥१॥
३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पणत्ता, पढमस्स णं अज्झयणस्स के अट्ठे पणत्ते ?

जालिपभित्ति-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवई नयरी । तीसे णं वारवईए नयरीए जहा पढमे जाव' कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव' कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥
५. तत्थ णं वारवईए नगरीए वसुदेवे राया । धारिणी देवी—वण्णओ' जहा गोयमो', नवरं—जालिकुमारे । पण्णासओ दाओ । वारसंगी । सोलस वासा परियाओ । सेसं जहा गोयमस्स जाव' सेत्तुजे सिद्धे ॥

१,२,३. ना० १।१।७ ।

६. ओ० सू० १५ ।

४. अ० १।६-१४ ।

७. अ० १।१७ ।

५. अ० १।१४ ।

८. अ० १।१७-२४ ।

६. एवं—मयाली उवयाली पुरिससेणे य वारिसेणे य ।
 एवं—पज्जुण्णे वि, नवरं—कण्हे पिया^१, रुप्पिणी माया^२ ।
 एवं—संवे वि, नवरं—जंववई माया ।
 एवं—अणिरुद्धे वि, नवरं—पज्जुण्णे पिया, वेदव्भी माया ।
 एवं—सच्चणेमी, नवरं—समुद्दविजए पिया, सिवा माया ।
 एवं—दढणेमी वि^३ सव्वे एगगमा ॥

निक्खेव-पदं

७. '०एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाण
 चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पणत्ते^० ॥

१. से पिया (क्व, ग, घ) ।

२. से माया (क्व, ग, घ) ।

३. सं० पा० — चउत्थस्स वग्गस्स निक्खेववो ।

पंचमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

पउमावई

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. पउमावई य २. गोरी, ३. गंधारी ४. लक्खणा ५. सुसीमा य ।
६. जंबवइ ७. सच्चभामा, ८. रुप्पिणी ९. मूलसिरि १०. मूलदत्ता वि ॥१॥
३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

पउमावई-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नगरी । जहा पढमे जाव' कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव' कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥
५. तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावई नाम देवी होत्था—वण्णओ' ॥

१,२,३. ना० १।१।७ ।

५. अ० १।१४ ।

४. अ० १।५-१४ ।

६. ओ० सू० १५ ।

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे जाव' संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेभाणे विहरइ । कण्हे वासुदेवे निग्गाए जाव' पज्जुवासइ ॥
७. तए णं सा पउमावई देवी इमीसे कहाए लढट्ठा समाणी हट्ठुट्ठा जहा देवई देवी जाव' पज्जुवासइ ॥
८. तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावईए य' •देवीए तीसे महत्तिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं कहेइ, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णा-दाणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहातो वेरमणं° । परिसा पडिगया ॥
९. तए णं कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इमीसे णं भंते ! बारवईए नगरीए नवजोयणवित्थिण्णाए जाव' देवलोगभूयाए किमूलाए विणासे भविस्सइ ?
१०. कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्हा ! इमीसे बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए जाव' देवलोगभूयाए सुरग्गि-दीवायणमूलाए विणासे भविस्सइ ॥
११. कण्हस्स वासुदेवस्स अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयं सोच्चा निसम्म अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—घण्णा णं ते जालि-मयालि-उवयालि-पुरिससेण-वारिसेण-पज्जुण-संव-अणिरुद्ध-‘दढणेमि-सच्च-णेमि’-प्पभियओ कुमारा जे णं चइत्ता हिरणं जाव' दाणं दाइयाणं परिभाएत्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतियं मुंडां •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्व-इया । अहणं अघणं अकयपुणं रज्जे य' •रुद्धे य कोसे य कोट्टागारे य बले य वाहणे य पुरे य° अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेमु मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववणं नो संचाएमि अरहओ अरिट्ठणेमिस्स" •अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥
१२. कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—से नूणं कण्हा ! तव अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—घण्णा णं ते

१. अं० १।१८ ।

२. अं० ३।६१ ।

३. अं० ३।३१ ।

४. सं० पा०—पउमावईए य धम्मकहा ।

५. अं० १।८ ।

६. अं० १।८ ।

७. चतुर्थबर्ग-प्रथमाध्ययनस्य वायातश्चात्र द्वयो
र्नाम्नो व्यत्ययोस्ति ।

८. ना० १।५।४५ ।

९. सं० पा०—मुंडा जाव पव्वइया ।

१०. सं० पा०—रज्जे य जाव अंतेउरे ।

११. सं० पा०—अरिट्ठणेमिस्स जाव पव्वइत्तए ।

जालिप्पाभइकुमारा जाव' पव्वइया । अहणं अधणो जाव' नो संचाएमि अरहमो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्ताए । से नूणं कण्हा ! अत्थे समत्थे ?

हंता अत्थि । तं नो खलु कण्हा ! एतं भूतं वा भव्वं वा भविस्सइ वा जण्णं वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं जाव' पव्वइस्संति ॥

१३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'न एतं भूतं वा' • भव्वं वा भविस्सइ वा जण्णं वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं जाव' • पव्वइस्संति ?

१४. कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्हा ! सव्वे वि य णं वासुदेवा पुव्वभवे निदाणकडा । से एतेणट्ठेणं कण्हा ! एवं वुच्चइ 'न एतं भूतं' • वा भव्वं वा भविस्सइ वा जण्णं वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं जाव' • पव्वइस्संति ॥

१५. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमि एवं वयासी—अहं णं भंते ! इतो कालमासे कालं किच्चा कंहि गमिस्सामि ? कंहि उववज्जिस्सामि ?

१६. तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु कण्हा ! तुमं बारवईए नयरीए सुरग्गि'-दीवायण-कोव-निदड्ढाए' अम्मापिइ-नियग-विप्पहूणे रामेण बलदेवेण सद्धिं दाहिणवेयालिं अभिमुहे जुहिट्ठिल्लपामोक्खाणं पंचण्हं पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं पासं पंडुमहुरं संपत्थिअ कोसंबवणकाणणे' नग्गोहवर-पायवस्स अहे पुढविसिजापट्टए पीयवत्थ-पच्छाइय-सरीरे जराकुमारेणं तिकखेणं कोदंड-विप्पमुक्केणं' उमुणा वामे पादे विद्धे समाने कालमासे कालं किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उज्जल्लिए नरए नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि ॥

१७. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहमो अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ओहय' • मणसंकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए • भियाइ ॥

१८. कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणु-प्पिया ! ओहयमणसंकप्पे जाव' • भियाइ । एवं खलु तुमं देवाणुप्पिया ! तच्चाओ पुढवीओ उज्जल्लियाओ नरयाओ अणंतं उव्वट्ठित्ता इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए पंडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे

१. अं० ५।११ ।

२. अं० ५।११ ।

३. ना० १।५।४५ ।

४. सं० पा०—भूतं वा जाव पव्वइस्संति ।

५. सं० पा०—भूतं जाव पव्वइस्संति ।

६. सुरदीवायण (क, ख, ग) ।

७. निदड्ढाते (ख, ग) ।

८. कोसंबकाणणे (क, ख, ग, घ, वृपा)

९. मुक्केणं (क) ।

१०. सं० पा०—ओहय जाव भियाइ ।

११. अं० ५।१७ ।

बारसमे अममे नामं अरहा भविस्ससि । तत्थ तुमं बहूइं वासाइं केवलि-
परियागं पाउणेत्ता सिज्झिहिसि बुज्झिहिसि मुच्चिहिसि परिनिव्वाहिसि सव्व-
दुक्खाणं अंतं काहिसि ॥

१६. तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म
हट्ठतुट्ठे जाव' अप्फोडेइ, अप्फोडेत्ता वग्गइ, वग्गित्ता निवईं छिदइ, छिदित्ता
सीहणायं करेइ, करेत्ता अरहं अरिट्ठणेमि वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता
तमेव आभिसेक्कं हत्थि दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव वारवईं नयरी जेणेव सए गिहे
तेणेव उवागए । आभिसेयहत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव
बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सए सीहासणे तेणं उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निमीइत्ता कोडुवियपुरिमे सदावेइ,
सदावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! वारवईए नयरीए
सिंघाडगं^१ तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु हत्थिअंधवरगया महया-
महया सहेणं^२ उग्घोसेमाणा-उग्घोमेमाणा एवं वयह—एवं खनु देवाणुप्पिया !
वारवईए नयरीए नवजोयणविच्छिण्णाए जाव' देवलोगभूयाए मुरग्गि-दीवायण-
मूलाए विणासे भविस्सइ; तं जो णं देवाणुप्पिया ! इच्छइ वारवईए नयरीए
राया वा जुवराया^३ वा ईसरे वा तलवरे वा माडविय-कोडुविय-इदंभ-मेट्ठी वा
देवी^४ वा कुमारो वा कुमारी वा अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए मुंडे^५ भवित्ता
अगाराओ अणगारियं^६ पव्वइत्ताए, तं णं कण्हे वासुदेवे विसज्जेइ । पच्छानुरस्स
वि य सेअहापवित्तं विंत्ति अणुजाणइ । महया इड्डिसक्कारसमुदएणं य से निक्ख-
मणं करेइ । दोच्चं पि तच्चं पि घोसणयं घोमेह, घोमेत्ता ममं एयं पच्चप्पिणह ॥

२०. तए णं ते कोडुबिया जाव' पच्चप्पिणंति ॥

२१. तए णं सा पडमावई देवी अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म
हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव' हरिसवस-विसप्पमाणहियया अरहं अरिट्ठणेमि
वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भने ! निगंथं
पावयण', से जहेयं तुब्भे वयह । जं नवरं—देवाणुप्पिया ! कण्हं वासुदेवं
आपुच्छामि । तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा^७ भवित्ता अगाराओ
अणगारियं^८ पव्वयामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबधं करेहि ॥

१. अं० ३।२५ ।

२. सं० पा०—सिंघाडग जाव उग्घोसेमाणा ।

३. अं० १।८ ।

४. जुगराया (क, ख) ।

५. × (क, ख) ।

६. सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइत्ताए ।

७. अं० ५।१६ ।

८. अं० ३।२५ ।

९. पू—ना० १।१।१०१ ।

१०. सं० पा०—मुंडा जाव पव्वयामि ।

२२. तए णं सा पउमावई देवी धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहिता जेणेव बारवई नयरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता धम्मियाओ जाण-प्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता करयल'●परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं० कट्टु कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा' अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अतिए मुंडा' ●भवित्ता अगाराओ अणगारियं० पव्वइत्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

२३. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुबियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! पउमावईए देवीए महत्थं महग्घं महरिहं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

२४. तए णं ते कोडुबियपुरिसा जाव' तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

२५. तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमावई देविं पट्टयं' दुरुहेइ, अट्टसएणं सोवण्णकलसाणं जाव' महाणिक्खमणाभिसेएणं अभिसिच्चइ, अभिसिचित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सिवियं दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता बारवईए नयरीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छिता जेणेव रेवयए पव्वए जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सीयं ठवेइ, 'पउमावई देवि' सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अरहं अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एस णं भंते ! मम अग्गमहिंसी पउमावई नामं देवी इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणाभिरामा जाव' उंबरपुप्फं पिव दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तण्णं अहं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं दलयामि । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेह ॥

२६. तए णं सा पउमावई उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव

१. सं० पा०—करयल ।

प्रतीयते ।

२. समाणी (घ) ।

४. अं० ५।२३ ।

३. सं० पा०—मुंडा जाव पव्वयामि । अत्र

५. पट्टयंसि (घ) ।

'पव्वयामि' इति क्रियापदं अशुद्धं प्रतिभाति ।

६. राय० सू० २८० ।

'इच्छामि' क्रियापदस्य योगे सर्वत्रापि 'पव्व-इत्तए' इति पाठो दृश्यते । अर्थदृष्ट्याप्यसौ

७. पउमावई देवी (क, ख, ग, घ) ।

८. ना० १।१।१४५ ।

युक्तः । अत्र लिपिदोषेण परिवर्तनं जातमिति

आभरणालंकारं ओमुयइ, ओमुयित्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठणेमि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते ! लोए जाव' तं इच्छामि णं देवाणुप्पिएहि' धम्ममाइक्खिय ॥

२७. तए णं अरहा अरिट्ठणेमी पउमावइं देवि सयमेव पव्वावेइ, पव्वावेत्ता सयमेव जक्खिणीए अज्जाए सिस्सिणित्ताए दलयइ ॥

२८. तए णं सा जक्खिणी अज्जा पउमावइं देवि सयमेव पव्वावेइ' •सयमेव मुंडावेइ सयमेव सेहावेति' धम्ममाइक्खइ—एवं देवाणुप्पिए ! गंतव्वं जाव' संजमेणं • संजमियव्वं ॥

२९. तए णं सा पउमावइं देवी' तमाणाए तह चिट्ठइ जाव' संजमेणं संजमइ ॥

३०. तए णं सा पउमावइं अज्जा जाया । इरियासमिया जाव' गुत्तबंभयारिणी ॥

३१. तए णं सा पउमावइं अज्जा जक्खिणीए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहि मासद्ध-मासखमणेहि विविहेहि तवोकम्मिहि अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥

३२. तए णं सा पउमावइं अज्जा बहुपडिपुण्णाइं वीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं भूसेइ, भूसेत्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे जाव' तमट्ठं आराहेइ, चरिमुस्सामेहि सिद्धा ॥

२-८ अज्झयणाणि

गोरिपभित्ति-पदं

३३. तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नयरी । रेवयए पव्वए । उज्जाणे नंदणवणे ॥

३४. तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे वासुदेवे ॥

३५. तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स गोरी देवी—वण्णओ" ॥

३६. अरहा समोसढे । कण्हे णिग्गए । गोरी जहा पउमावई तहा" निग्गया । धम्म-कहा । परिसा पडिगया । कण्हे वि ॥

१. ना० १।१।१४६ ।

२. पू०—ना० १।१।१४६ ।

३. सं० पा०—पव्वावेइ जाव संजमियव्वं ।

४. पू०—ना० १।१।१५० ।

५. ना० १।१।१५० ।

६. पू०—ना० १।१।१५१ ।

७. ना० १।१।१५१ ।

८. ना० १।१।१५० ।

९. ओ० सू० १५४ ।

१०. ओ० सू० १५ ।

११. ओ० ५।७ ।

३७. तए णं सा गोरी जहा पउमावई तहा निक्खंता जाव' सिद्धा ॥

३८. एवं—गन्धारी, लक्खणा, सुसीमा, जंबवई, सच्चभामा, रुप्पिणी । अट्ट वि पउमावईसरिसाओ' ॥

६, १० अज्झयणाणि

मूलसिरी-मूलदत्ता-पदं

३९. तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए रेवयए पव्वए नंदणवणे उज्जाणे कण्हे वासुदेवे ॥
४०. तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हस्स वासुदेवस्स पुत्ते जंबवईए देवीए अत्तए संबे नामं कुमारे होत्था—अहीणपडिपुण्णपंचेदियसरीरे ॥
४१. तस्स णं संबस्स कुमारस्स मूलसिरी नामं भारिया होत्था—वण्णओ' ॥
४२. अरहा समोसडे । कण्हे निग्गए । मूलसिरी वि निग्गया, जहा पउमावई । जं नवरं—देवाणुप्पिया ! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि जाव' सिद्धा ।
४३. एवं मूलदत्ता वि ।

छट्ठो वग्गो

१, २ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१. जइ' • णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पंचमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । छट्ठस्स णं भंते ! वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं छट्ठस्स वग्गस्स° सोलस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. मकाइ २. किकमे चेव, ३. मोगगरपाणी य ४. कासवे ।
५. खेमए° ६. छिइहरे चेव, ७. केलासे ८. हरिचंदणे ॥१॥

१. अं० ५।२१-३२ ।

२. अं० ५।७, २१-३२ ।

३. ओ० सू० १५ ।

४. अं० ५।२१-३२ ।

५. अं० ५।३६-४२ ।

६. सं० पा०—जइ छट्ठस्स उक्खेवओ नवरं सोलस ।

७. खेमे (ग) ।

६. वारत्त १०. सुदंसण ११. पुण्णभद्द तह १२. सुमणभद्द १३. सुपइट्ठे ।
 १४. मेहे १५. ऽतिमुत्त १६. अलक्के, अज्झयणाणं तु सोलसयं ॥२॥
 ३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं
 छट्टस्स वग्गस्स सोलस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स
 अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

मकाइ-किक्कम-पवं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए ।
 सेणिए राया ॥
 ५. तत्थ णं मकाई नामं गाहावई परिवसइ —अड्ढे जाव' अपरिभूए ॥
 ६. तेणं कालेणं तेणं समणं समणे भगवं महावीरे आदिकरे गुणसिलए जाव'
 संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । परिसा निग्गया ॥
 ७. तए णं से मकाई गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे जहा पण्णत्तीए गंगदत्ते' तहेव
 इमो वि जेट्ठपुत्तं कुडुंवे ठवेत्ता पुरिससहरसवाहिणीए सीयाए निक्खंते जाव'
 अणगारे जाए —इरियासमिए' ॥
 ८. तए णं से मकाई अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहाख्खाणं धेराणं
 अंतिए समाइयमाइयाइ एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ । सेसं जहा खंदगस्स'
 गुणरयणं तवोक्कम्मं । सोलसवासाइं परियाओ । तहेव विउले सिद्धे ॥
 ९. किक्कमे वि एवं चेव जाव' विउले सिद्धे ।

तइयं अज्झयणं

मोगगरपाणी

अज्जुण-मालागार-पवं

१०. तेणं कालेणं तेणं समणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ।
 चेल्लणा देवी ॥
 ११. तत्थ णं रायगिहे नयरे अज्जुणए नामं मालागारे परिवसइ—अड्ढे जाव'
 अपरिभूए ॥
 १२. तस्स णं अज्जुणयस्स मालायारस्स बंधुमई नामं भारिया होत्था—सूमाल-
 पाणिपाया ॥
 १३. तस्स णं अज्जुणयस्स मालायारस्स रायगिहस्स नयरस्स बहिया, एत्थ णं

१. ना० १।५।७ ।

२. ना० १।१।६४ ।

३. अ० १६।६८-७१ ।

४. ना० १।५।२६-३५ ।

५. पू०—ना० १।५।३५-३७ ।

६. अ० २।५७-६६ ।

७. अ० ६।४-८ ।

८. ना० १।५।७ ।

महं एगे पुष्कारामे होत्था—किण्हे जाव' महामेहनिउरुंबभूए दसद्ववण-
कुसुमकुसुमिए पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

१४. तस्स णं पुष्कारामस्स अदूरसामंते, एत्थ णं अज्जुणयस्स मालायारस्स अज्जय-
पज्जय-पिइपज्जयागए अणेगकुलपुरिस-परंपरागए मोगगरपाणिस्स जक्खस्स
जक्खाययणे होत्था—पोराणे दिव्वे सच्चे जहा पुण्णभद्दे' ॥

१५. तत्थ णं मोगगरपाणिस्स पडिमा एगं महं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं मोगगरं
गहाय चिट्ठइ ॥

अज्जुणस्स जक्खपज्जुवासणा-पदं

१६. तए णं से अज्जुणए मालागारे वालप्पभिइं चेव मोगगरपाणि-जक्खभत्ते' यावि
होत्था । कल्लाकल्लि पच्छियपिडगाइं' गेण्हइ, गेणिहत्ता रायगिहाओ नयराम्रो
पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव पुष्कारामे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता पुप्फुच्चयं करेइ, करेत्ता' अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाय, जेणेव
मोगगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
मोगगरपाणिस्स जक्खस्स महिरिहं पुप्फच्चणं' करेइ, करेत्ता जण्णुपायपडिए
पणामं करेइ, तओ पच्छा रायमगंसि वित्ति कप्पेमाणे विहरइ ॥

गोट्टीए अणाचार-पदं

१७. तत्थ णं रायगिहे नयरे ललिया नामं गोट्टी परिवसइ—अड्ढा जाव' अपरिभूता जं
कयसुकया यावि होत्था ॥

१८. तए णं रायगिहे नगरे अणया कयाइ पमोदे घुट्टे यावि होत्था ॥

१९. तए णं से अज्जुणए मालागारे कल्लं पभूयतराएहिं पुप्फेहिं कज्जं इति कट्ठु
पच्चूसकालसमयंसि बंधुमईए भारियाए सद्धि पच्छियपिडयाइं गेण्हइ,
गेणिहत्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नगरं
मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुष्कारामे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता बंधुमईए भारियाए सद्धि पुप्फुच्चयं करेइ ॥

२०. तए णं तीसे ललियाए गोट्टीए छ गोट्टिल्ला पुरिसा जेणेव मोगगरपाणिस्स
जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागया अभिरममाणा चिट्ठंति ॥

२१. तए णं से अज्जुणए मालागारे बंधुमईए भारियाए सद्धि पुप्फुच्चयं करेइ,

१. ओ० सू० ४ ।

२. ओ० सू० २ ।

३. जक्खस्स भत्ते (व) ।

४. पत्थिय० (क्व) ।

५. अतोये १२ सूत्रे 'पत्थियं भरेइ, भरेत्ता' इति
पाठो लभ्यते ।

६. पुप्फच्चणियं (क) ।

७. ना० १।५।७ ।

‘पत्थियं भरेइ, भरेत्ता’ अग्गाइ वराइ पुप्फाइ गहाय जेणेव मोगगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ ॥

२२. तए णं ते छ गोट्टिल्ला पुरिसा अज्जुणयं मालागारं बंधुमईए भारियाए सद्धि एज्जमाणं पासंति, पासित्ता अण्णमण्णं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे बंधुमईए भारियाए सद्धि इहं हव्वमागच्छइ । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं अज्जुणयं मालागारं अवओडय-बंधणयं करेत्ता बंधुमईए भारियाए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुंजमाणानं विहरित्तए त्ति कट्ठु एयमट्ठं अण्णमण्णस्स पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता कवाडंतरेसु निलुक्कंति, निच्चला निप्फंदा तुसिणीया पच्छण्णा चिट्ठंति ॥
२३. तए णं से अज्जुणए मालागारे बंधुमईए भारियाए सद्धि जेणेव मोगगरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, आलोए पणामं करेइ, महिरिहं पुप्फच्चणं करेइ, जण्णुपायपडिए पणामं करेइ ॥
२४. तए णं छ गोट्टिल्ला पुरिसा दवदवस्स कवाडंतरेहितो निग्गच्छंति निग्गच्छित्ता अज्जुणयं मालागारं गेण्हंति, गेण्हित्ता अवओडय-बंधणं करेति । बंधुमईए मालागारीए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुंजमाणा विहरंति ॥

अज्जुणस्स पडिसोध-पदं

२५. तए णं तस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमज्जुत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वालप्पभिइं चेव मोगगरपाणिस्स भगवओ कल्लाकल्लि जाव' पुप्फच्चणं करेमि, जण्णुपायपडिए पणामं करेमि, तओ पच्छा रायमग्गंसि वित्ति कप्पेमाणे विहरामि । तं जइ णं मोगगरपाणी जक्खे इह सण्णिहिए होंते, से णं किं मम एयारूवं आवइ पावेज्जमाणं पासंते ? तं नत्थि णं मोगगरपाणी जक्खे इह सण्णिहिए । सुव्वत्तं' णं एस कट्ठे ॥
२६. तए णं से मोगगरपाणी जक्खे अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमेयारूवं अज्जुत्थियं जाव' वियाणेत्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरयं अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता तडतडस्स' बंधाइ छिदइ, छिदित्ता तं पलसहस्सणिप्फणं अओमयं मोगगरं गेण्हइ, गेण्हित्ता ते इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएइ ॥
२७. तए णं से अज्जुणए मालागारे मोगगरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहस्स नगरस्स परिपेइतेणं कल्लाकल्लि इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएमाणे घाएमाणे विहरइ ॥

१. × (घ) ।

२. उवउडग (क, ग); अवउड (ख) ।

३. अं० ६।१६ ।

४. सुव्वत्ते (ख, ग) ।

५. अं० ६।२५ ।

६. तडतडतडस्स (ख) ।

रायगिहे आतंक-पदं

२८. तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग'-●तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह°-महापहपहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासेइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ -- एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहे नयरे बहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ ॥
२९. तए णं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं बयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे जाव' घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ । तं मा णं तुब्भे केइ कट्ठस्स वा तणस्स वा पाणियस्स वा पुप्फफलाणं वा अट्ठाए सइरं निग्गच्छइ । मा णं तस्स सरीरयस्स वावत्ती भविस्सइ त्ति कट्ठु दोच्चं पि तच्चं पि घोसणयं घोसेह, घोसेत्ता खिप्पामेव ममेयं पच्चप्पिणह ॥
३०. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव' पच्चप्पिणंति ॥
३१. तत्थ णं रायगिहे नगरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसइ—अइठे ॥
३२. तए णं से सुदंसणे समणोवासए यावि होत्था—अभिगयजीवाजीवे जाव' विहरइ ॥

भगवओ समोसरण-पदं

३३. तेणं कालेणं समएणं समणे भगवं' ●महावीरे पुब्बाणुपुब्बि चरमाणे गामाणु-गामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ ॥
३४. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव' किमंग पुण विपुलस्स अट्ठस्स गहणयाए ?

सुदंसणस्स बंदणट्ठं गमण-पदं

३५. तए णं तस्स सुदंसणस्स बहुजणस्स अंतिए एयं सोच्चा निसम्म अयं अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे

१. सं० पा०—सिंघाडग जाव महापहपहेसु ।

४. ना० १।५।४७ ।

२. अं० ६।२८ ।

५. सं० पा०—भगवं जाव समोसडे विहरइ ।

३. अं० ६।२९ ।

६. ओ० सू० ५२ ।

जाव' विहरइ । तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि'—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'-
 *परिग्हियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए ° अज्जलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! समणे भगवं महावीरे जाव' विहरइ । तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसांमि' °सक्कारेसि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं ° पज्जुवासामि ॥

३६. तए णं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! अज्जुणए मालागारे' °मोग्गरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहस्स नयरस्सं परिपेरतेणं कल्लाकल्लिं बहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे ° घाएमाणे-घाएमाणे विहरइ । तं मा णं तुमं पुत्ता ! समणं भगवं महावीरं वंदए निग्गच्छाहि, मा णं तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्सइ । तुमणं इह गए चेव समणं भगवं महावीरं वंदाहि ॥

३७. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी अम्मापियरं एवं वयासी—किण्णं अहं अम्मयाओ ! समणं भगवं महावीरं इहमागयं इह पत्तं इह समोसढं इह गए चेव वंदिस्सामि ? तं गच्छामि णं अहं अम्मयाओ ! तुम्हेहिं अम्भणुण्णाए समाणे समणं भगवं महावीरं वंदए ॥

३८. तए णं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो जाहे नो संचाएति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहिं सण्णवणाहिं विण्णवणाहिं' °परूवणाहिं आघवेत्तए पण्णवेत्तए सण्णवेत्तए विण्णवेत्तए ° परूवेत्तए ताहे एवं वयासी— अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबधं करेहि ॥

३९. तए णं से सुदंसणे अम्मापिईहिं अम्भणुण्णाए समाणे ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं' °मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकिय °सरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पायविहारचारेणं रायगिहं नगरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स अदूरसामंतेणं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

सुदंसणस्स अज्जुणकय-उबसग्ग-पदं

४०. तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं-

१. ना० १।१।६७ ।

२. द्रष्टव्यः अग्निमः पाठः ।

३. सं० पा०—करयल ° ।

४. ना० १।१।६७ ।

५. सं० पा०—नमंसांमि जाव पज्जुवासामि ।

६. सं० पा०—मालागारे जाव घाएमाणे ।

७. सं० पा०—विण्णवणाहिं जाव परूवेत्तए ।

८. 'सुद्धप्प' ति शुद्धात्मा यावत्करणात् वेसियाइं पवर वत्थाइं परिहिए ° (वृ);

सं० पा०—सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे ।

वीईवयमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुते रुट्टे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे तं पलसहस्सणिप्फणं अओमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे-उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव प्हारेत्थ गमणाए ॥

४१. तए णं से सुदंसणे समणोवासए मोग्गरपाणि जक्खं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खुभिए अचलिए असंभंते वत्थंतेणं भूमि पमज्जइ, पमज्जित्ता करयल'०परिगहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अजलि कट्टु० एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव' सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स । पुव्वि पि णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलं पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलं मुसावाए [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?], थूलं अदिण्णादाणे [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?], सदारसंतोसे कए जावज्जीवाए, इच्छापरिमाणे कए जावज्जीवाए । तं इदाणि पि णं तस्सेव अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, मुसावायं अदत्तादाणं मेहुणं परिगहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं कोहं जाव' मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । जइ णं एत्तो उवसग्गाओ मुच्चिस्सामि तो मे कप्पइ पारेत्तए । अहणं एत्तो उवसग्गाओ न मुच्चिस्सामि 'तो मे तहा' पच्चक्खाए चेव त्ति कट्टु सागारं पडिमं पडिवज्जइ ॥

४२. तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे तं पलसहस्सणिप्फणं अओमयं मोग्गरं उल्लाले-माणे-उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव उवागए । नो चेव णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए ॥

उवसग्गनिवारण-पवं

४३. तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासयं सव्वओ समंता' परिधोले-माणे-परिधोलेमाणे जाहे नो चेव णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए, ताहे सुदंसणस्स समणोवासयस्स पुरओ सपक्खि सपडिदिंसि ठिच्चा सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाए दिट्ठीए सुच्चिरं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरं विप्पजहइ, विप्पजहिता तं पलसहस्सणिप्फणं

१. सं० पा० — करयल ।

२. ओ० सू० २१ ।

३. ओ० सू० ११७ ।

४. तओ मे (क) ।

५. अयोमयं (ख) ।

६. सम्मंताओ (क, ख) ।

अओमयं मोगरं गहाय जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

४४. तए णं से अज्जुणए मालागारे मोगरपाणिणा जक्खेणं विप्पमुक्के समणे 'घस' ति घरणियलंसि सव्वंगेहि निवडिए' ॥

४५. तए णं से सुदंसणे समणोवासए 'निरुवसग्ग' मिति कट्टु पडिमं पारेइ ॥

सुदंसणस्स अज्जुणस्स य भगवओ पज्जुवासणा-पवं

४६. तए णं से अज्जुणए मालागारे तत्तो मुहुत्तंतरेणं आसत्ये समणे उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! के कहि वा संपत्थिया ?

४७. तए णं से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणयं मालागारं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सुदंसणे नामं समणोवासए—अभिगयजीवाजीवे' गुणसिलए चेइए समणं भगवं महावीरं वंदए संपत्थिए ॥

४८. तए णं से अज्जुणए मालागारे सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी—तं इच्छामि' णं देवाणुप्पिया ! अहमवि तुमए सद्धिं समणं भगवं महावीरं वदित्तए जाव' पज्जुवासित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

४९. तए णं सुदंसणे समणोवासए अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ जाव' पज्जुवासइ ॥

५०. तए णं समणे भगवं महावारे सुदंसणस्स समणोवासगस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स तीसे य' 'महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममाइक्खइ' । सुदंसणे पडिगए ॥

अज्जुणस्स पव्वज्जा-पवं

५१. तए णं से अज्जुणए मालागारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ' 'तुट्ठे' समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी'—सद्दहामि णं भंते ! निगगंथं पावयणं', 'पत्तियामि णं भंते ! निगगंथं पावयणं, रोएमि णं

१. दिसिं (ख, ग) ।

२. संनिवडिए (क) ।

३. पू०—ना० १।५।४७ ।

४. गच्छामि (क) ।

५. अ० ६।३५ ।

६. अ० ६।३५ ।

७. सं० पा०—तीसे य धम्मकहा ।

पू—ओ० सू० ७१-७७ ।

८. सं० पा०—हट्ठ' ।

९. सं० पा०—पावयणं जाव अम्भुट्टेमि ।

भंते ! निगंथं पावयणं °, अब्भुट्टेमि णं भंते ! निगंथं पावयणं ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

५२. तए णं से अज्जुणए मालागारे उत्तर'°पुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्क-
मिता° सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जाव' अणगारे जाए', °से णं
वासीचंदणकप्पे समतिणमणि-लेट्ठुकंचणे समसुहदुक्खे इहलोग-परलोग-अप्प-
डिबद्धे जीविय-मरण-निरवकंखे संसारपारगामी कम्मनिग्घायणट्ठाए एवं च णं °
विहरइ ॥

अज्जुणअणगारस्स तित्तिवखा-पवं

५३. तए णं से अज्जुणए अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे' °भवित्ता अगाराओ अणगा-
रियं° पव्वइए तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता
नमंसित्ता इमं एयारूवं अभिगहं' ओगेण्हइ — कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं
अणिक्खित्तेणं' तवोकम्मणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्ताए त्ति कट्ठु अयमेया-
रूवं अभिगहं', ओगेण्हइ' ओगेण्हित्ता जावज्जीवाए' °छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं
तवोकम्मणं अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ ॥
५४. तए णं से अज्जुणए अणगारे छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए'° सज्झायं
करेइ', °बीयाए पोरिसीए भाणं भियाइ, तइयाए पोरिसीए जहा गोयमसामी
जाव'° रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खाय-
रियं° अडइ ॥
५५. तए णं तं अज्जुणयं अणगारं रायगिहे नयरे उच्च'°-°नीय-मज्झिमाइं कुलाइं
घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणं बहवे इत्थीओ य पुरिसा य डहरा
य महल्ला य जुवाणा य एवं वयासी—इमेण मे पिता मारिए । इमेण मे माता
मारिया । इमेण मे भाया भगिणी भज्जा पुत्ते धूया सुण्हा मारिया । इमेण मे
अण्णयरे सयण-संवंधि-परियणे मारिए त्ति कट्ठु अप्पेगइया अवकोसंति, अप्पे-
गइआ हीलंति निदंति खिसंति गरिहंति तज्जंति तालेंति ॥

१. सं० पा०—उत्तर° ।

२. ना० १।५।३४, ३५ ।

३. सं० पा०—अणगारे जाए जाव विहरइ ।

पू०—ना० १।५।३५, ३६ ।

४. सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइए ।

५. ओगहं (क, ख, ग) ।

६. × (क, ख, ग) ।

७. ओगहं (क, ख, ग) ।

८. 'अभिगहं ओगेण्हइ' इति द्विरुक्तः पाठोस्ति ।

९. सं० पा०—जावज्जीवाए जाव विहरइ ।

१०. × (घ) ।

११. सं० पा०—करेइ जहा गोयमसामी जाव
अडइ ।

१२. म० २।१०७ १०८ ।

१३. सं० पा०—उच्च जाव अडमाणं ।

५६. तए णं से अज्जुणए अणगारे तेहिं बहूहि इत्थीहि य पुरिसेहि य डहरेहि य महल्लेहि य जुवाणएहि य आओसिज्जमाणे^१ जाव^२ तालेज्जमाणे तेसिं मणसा वि अपउस्समाणे सम्मं सहइ सम्मं खमइ सम्मं तितिक्खइ सम्मं अहियासेइ, सम्मं सहमाणे सम्मं खममाणे सम्मं तितिक्खमाणे सम्मं अहियासेमाणे रायगिहे नयरे उच्च-णीय-मज्झिम-कुलाइं अडमाणे जइ भत्तं लभइ तो पाणं न लभइ, अह पाणं लभइ तो भत्तं न लभइ ॥
५७. तए णं से अज्जुणए अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अणाइले अविसादी अपरितंतजोगी^३ अडइ, अडित्ता रायगिहाओ नगराओ पडिणक्खमइ, पडि-णिक्खमित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे^४ तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमेइ, पडिक्कमेत्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं^५ पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अढभणुणाए समाणे अमु-च्छिए अगिद्धे अगडिए अणज्झोववण्णे विलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तमा-हारं आहारेइ ।
५८. तए णं समणे भगवं महावीरे अणया रायगिहाओ पडिणक्खमइ, पडिणक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

अज्जुणअणगारस्स सिद्धि-पदं

५९. तए णं से अज्जुणए अणगारे तेणं ओरालेणं विपुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं महानु-भागेणं तवोक्कमेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं भूसेइ, भूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव^६ सिद्धे ॥

४-१४ अज्झयणाणि

कासवादि-पदं

६०. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । कासवे नामं गाहावई परिवसइ । जहा मकाई^१ । सोलस वासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥

१. आओसिज्जमाणे (क, ख, ग,) ।

२. अं० ६।५५ ।

३. °जोती (क, ख, ग,) ।

४. स० पा० — जहा गोयमसामी तहा पडिदंसेइ ।

५. ओ० सू० १५४ ।

६. अं० ६।५-८ ।

६१. एवं—खेमए वि गाहावई, नवरं—कायंदी नयरी । सोलस वासा परियाओ । विपुले पव्वए सिद्धे ॥
६२. एवं—धिइहरे वि गाहावई कायंदीए नयरीए । सोलस वासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
६३. एवं—केलासे वि गाहावई, नवरं—साएए नयरे । बारस वासाइं परिआओ । विपुले सिद्धे ॥
६४. एवं—हरिचंदणे वि गाहावई साएए नयरे । बारस वासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
६५. एवं—वारत्तए वि गाहावई, नवरं—रायगिहे नगरे । बारस वासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
६६. एवं—सुदंसणे वि गाहावई, नवरं—वाणियग्गामे नयरे । दूइपलासए चेइए । पंच वासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
६७. एवं—पुण्णभद्दे वि गाहावई वाणियग्गामे नयरे । पंचवासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
६८. एवं—सुमणभद्दे वि गाहावई सावत्थीए नयरीए । बहुवासाइं परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
६९. एवं—सुपइट्ठे वि गाहावई सावत्थीए नयरीए । सत्तावीसं वासा परियाओ । विपुले सिद्धे ॥
७०. एवं—मेहे वि गाहावई रायगिहे नयरे । वहूइं वासाइं परियाओ । विपुले सिद्धे ॥

पणरसमं अज्झयणं

अइमुत्ते

अइमुत्तकुमार-पदं

७१. तेणं कालेणं तेणं समएणं पोलासपुरे नगरे । सिरिवणे उज्जाणे ॥
७२. तत्थ णं पोलासपुरे नयरे विजये नामं राया होत्था ॥
७३. तस्स णं विजयस्स रण्णो सिरि नामं देवी होत्था—वण्णओ' ॥
७४. तस्स णं विजयस्स रण्णो पुत्ते सिरि ए देवी ए अत्त ए अतिमुत्ते नामं कुमारे होत्था—सूमालपाणिपाए' ॥

गोयमस्स भिक्खायरिया-पदं

७५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव' सिरिवणे' •उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हिता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे • विहरइ ॥
७६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती अणगारे जहा पणत्तीए जाव' पोलासपुरे नयरे उच्च'-•नीय-मज्झिमाइं कुलाइं वरसमुदाणस्स भिक्खायरियं • अडइ ॥

गोयम-अइमुत्तकुमार-संवाद-पदं

७७. इमं च णं अइमुत्ते कुमारे ण्हाए जाव' सव्वालंकारविभूसिए बहूहि दारएहि य दारियाहि य डिभएहि य डिभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धि

१. ओ० सू० १५ ।

२. पू०—ओ० सू० १४३ ।

३. अं० ६।३३ ।

४. सं० पा०—सिरिवणे विहरइ ।

५. अ० २।१०६-१०६ ।

६. सं० पा०—उच्च जाव अडइ ।

७. अं० ३।४४ ।

संपरिवुडे साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमिता जेणेव इंदट्टाणे तेणेव उवागए । तेहिं बहूहिं दारएहि य संपरिवुडे अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ॥

७८. तए णं भगवं गोयमे पोलासपुरे नयरे उच्च'-●नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमु-
दाणस्स भिक्खायरियाए ° अडमाणे इंदट्टाणस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ ॥
७९. तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं पासइ,
पासित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागए, भगवं गोयमं एवं वयासी—के णं
भंते ! तुब्भे ? किं वा अडह ?
८०. तए णं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया !
समणा निग्गंथा इरियासमिया जाव' गुत्तवंभयारी उच्च'-●नीय-मज्झिमाइं
कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए ° अडामो ॥
८१. तए णं अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—एह णं भंते ! तुब्भे जा णं
अहं तुब्भं भिक्खं दवावेमी त्ति कट्टु भगवं गोयमं अंगुलीए गेण्हइ, गेण्हित्ता
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए ॥
८२. तए णं सा सिरिदेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ
अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागया । भगवं गोयमं
तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता
विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
८३. तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—कहिं णं भंते ! तुब्भे
परिवसह ?
८४. तए णं से भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया !
मम धम्मोवएसए° समणे भगवं महावीरे आइगरे जाव' सिद्धिगइ-
नामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे इहेव पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया सिरिवणे
उज्जाणे अहापडिरूवं ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं ° तवसा अप्पाणं ° भावेमाणे
विहरइ । तत्थ णं अम्हे परिवसामो ॥

अइमुत्तकुमारस्स पठवज्जा-पदं

८५. तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी—गच्छामि णं भंते ! अहं
तुब्भेहिं सद्धिं समणं भगवं महावीरं पायवंदए ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं करेहि ॥

१. सं० पा०—उच्च जाव अडमाणे ।

२. ना० १।१।१६४ ।

३. सं० पा०—उच्च जाव अडामो ।

४. जेणेवहं (ख, घ) ।

५. धम्मोवएसए धम्मनेयरी (क); ° धम्मे
नेतारी (ख, घ) ।

६. ओ० सू० १६ ।

७. सं० पा०—संजमेणं जाव भावेमाणे ।

८६. तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवया गोयमेणं सद्धि जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ जाव' पज्जुवासइ ॥
८७. तए णं भगवं गोयमे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागए', •उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमेइ, पडिक्कमेत्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं • पडिदंमेइ, पडिदंसेत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
८८. तए णं समणे भगवं महावीरे अइमुत्तस्म कुमारस्स तीसे य' •महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममाइक्खइ • ॥
८९. तए णं से अइमुत्ते कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे' एवं वयासी—सइहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं जाव' जं नवरं—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अतिए जाव' पव्वयामि ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि ॥
९०. तए णं से अइमुत्ते कुमारे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागए जाव' इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुव्भेहिं अब्भणुणाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥
९१. तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—वाले सि ताव तुमं पुत्ता ! असंबुद्धे, किं णं तुमं जाणसि धम्मं ?
९२. तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी— एवं खलु अहं' अम्मयाओ ! जं चेव जाणामि तं चेव न जाणामि, जं चेव न जाणामि तं चेव जाणामि ॥
९३. तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—कहं णं तुमं पुत्ता ! जं चेव जाणसि तं चेव न जाणसि ? जं चेव न जाणसि तं चेव जाणसि ?
९४. तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—जाणामि अहं अम्मयाओ ! जहा जाएणं अवस्स मरियव्वं, न जाणामि अहं अम्मयाओ ! काहे वा कहिं वा कहं वा कियच्चिरेण' वा ? न जाणामि णं अम्मयाओ ! केहिं कम्माययणेहिं' जीवा नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेषु उववज्जंति,

१. अं० ६।३५ ।

२. सं० पा०—उवागए जाव पडिदंसेइ ।

३. सं० पा०—तीसे य धम्मकहा ।

४. पू०—अं० ६।५१ ।

५. ना० १।१।१०१ ।

६. अं० ५।२१ ।

७. अं० ३।६४-६६ ।

८. ×(क) ।

९. जाणसि (ख, ग) ।

१०. केवच्चिरेण (क, ख, ग, घ,) ।

११. कम्मायारेहि (क); कम्मायाणेहि (ख, ग);
कम्मावयणेहि (वृपा) ।

जाणामि णं' अम्मयाओ ! जहा सएहिं कम्माययणेहिं जीवा नेरइय-^{१०}तिरिक्ख-
जोणिय-मणुस्स-देवेसु^० उववज्जंति ।

एवं खलु अहं अम्मयाओ ! जं चेव जाणामि तं चेव न जाणामि, जं चेव न
जाणामि तं चेव जाणामि । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुभेहिं अभणुणाए
जाव' पव्वइत्तए ॥

६५. तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहिं^१
०य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए
वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामकाइं चेव अइमुत्तं कुमारं एवं
वयासी^०—तं इच्छामो ते जाया ! एगदिवसमवि रायसिंरि पासेत्तए ॥

६६. तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापिउवयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ।
अभिसेओ जहा महव्वलस्स^१ निक्खमणं जाव' सामाइयमाइयाइं एक्कारस
अंगाइं^१ अहिज्जइ । बहूइं वासाइं सामण्णपरियाणं पाउणइ, गुणरयणं तवोकम्म
जाव' विपुले सिद्धे ॥

सोलसमं अज्झयणं

अलक्के

अलक्क-पदं

६७. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नयरी, काममहावणे चेइए ॥

६८. तत्थ णं वाणारसीए अलक्के नामं राया होत्था ॥

६९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव' विहरइ । परिसा
निगया ॥

१००. तए णं अलक्के राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे हट्ठुट्ठे जहा कोणिए जाव'^१ पज्जुवा-
सइ । धम्मकहा ॥

१. हं (ख) ।

२. सं० पा०—नेरइय जाव उववज्जंति ।

३. अं० ६।६० ।

४. सं० पा०—आघवणाहिं^० ।

५. महावलस्स (फ, घ) । अं० ११।१६८ ।

६. अं० ११।१६८, १६९ ।

७. × (क, ख, ग,) ।

८. अं० १।२३, २४ ।

९. अं० ६।३३ ।

१०. ओ० सू० ५४-६६ ।

१०१. ताए णं से अलक्के राया समणस्स भगवन्मो महावीरस्स अंतिए जहा उद्दायणे^१
तहा निक्खंते, नवरं—जेट्टपुत्तं रज्जे अभिसिंचइ । एक्कारस अंगाइं । बहू
वासा परियाओ जाव^२ विपुलं सिद्धे ॥

निक्खेव-पदं

१०२. एवं खलु जंबू ! समणेणं^३ •भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं^०
छट्टमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

सत्तमो वग्गो

१-१३ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते' ! •समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स ° तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. नंदा तह २. नंदवई^१, ३. नंदुत्तर ४. नंदिसेणिया चेव
५. मरुता ६. सुमरुता ७. महमरुत्ता ८. मरुदेवा य अट्टमा ॥१॥
९. भद्दा य १०. सुभद्दा य, ११. सुजाया १२. सुमणाइया
१३. भूयदिण्णा य बोधव्वा, सेणियभज्जाण नामाई ॥२॥
३. जइ णं भंते' •समणेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स ° तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

नंदादि-पदं

४. एवं खलु जंबू ! नेणं कालेगं नेणं समणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया—वण्णओ^२ ॥
५. तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नाम देवी होत्था—वण्णओ^३ । सामी समोसढे । परिसा निग्गया ॥
६. तए णं सा नंदा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा हट्ठुट्ठा कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता जाणं दुरुहइ, जहा पउमावई जाव'एक्कारस अंगाई अहिज्जित्ता वीसं वासाई परियाओ जाव' सिद्धा ॥
७. एवं तेरम वि देवीओ नंदागमेण^४ नेयव्वाओ ॥

- | | |
|---|------------------|
| १. मं० पा० जइ णं भंते ! सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस । | ५. ओ० मू० १५ । |
| २. नंदमती (क); नंदमती (ख) । | ६. अं० ५।२१-३१ । |
| ३. सं० पा०—जइ णं भंते ! तेरस । | ७. अं० ५।३२ |
| ४. ओ० मू० १४ । | ८. अं० ७।३-६ । |

अट्ठमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

काली

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते' ! •समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठमस्स वग्गस्स ° दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जइ—

संगहणी-गाहा

१. काली २. सुकाली ३. महाकाली, ४. कण्हा ५. सुकण्हा ६. महाकण्हा ।
७. वीरकण्हा य बोधव्वा, ८. रामकण्हा तहेव य ।
९. पिउसेणकण्हा नवमी, दसमी १०. महामेणकण्हा य ॥१॥
३. जइ' •णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं ° दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

कालीए रयणावलितव-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था । पुण्णभहे चेइए ॥
५. तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए राया—वण्णओ' ॥
६. तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रण्णो भज्जा, कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया,

१. सं० पा०—जइ णं भंते ! अट्ठमस्स वग्गस्स २. सं० पा०—जइ दस ।
- उक्खेवओ जाव दस । ३. ओ० मू० १४ ।

काली नापं देवी होत्था—वण्णओ' । जहा नंदा जाव' सामाइयमाइयाइं
एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ । बहूहि चउत्थ'-●छट्ठम-दसम-दुवालसेहि
मासद्धमासखमणेहि विविहेहि तवोकम्मेहि । अप्पाणं भावेमाणी' विहरइ ॥

७. तए णं सा काली अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवा-
गया, उवागच्छित्ता एवं वयासी —इच्छामि णं अज्जाओ ! तुम्हेहि अभणुण्णयाया
समाणी रयणावलि तवं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंघं करेहि ॥

८. तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अभणुण्णयाया समाणी रयणावलि तवं
उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं जहा—

चउत्थं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठं छट्ठाइं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोइसमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसमं'	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
बावीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउवीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छव्वीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठावीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
तीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वत्तीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोत्तीसइमं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोत्तीसं छट्ठाइं	करेइ, करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

१. ओ० मू० १५ ।

२. अं० ७।५, ६ ।

३. सं० पा०—चउत्थ जाव अप्पाण

४. भावेमाणा (ग)

५. अट्ठारसं (क) ।

चोत्तीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
बत्तीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
तीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठावीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छव्वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउवीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
बावीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोद्दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठ छट्ठाइं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

एवं खलु एसा रयणावलीए तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी एगेणं संवच्छरेणं तिहिं मासेहिं बावीसाए य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं^१ *अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तोरिया किट्टिया^२ । आराहिया भवइ ॥

६. तयाणंतरं च णं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ, करेत्ता विगइवज्जं पारेइ । छट्ठं करेइ, करेत्ता विगइवज्जं पारेइ ।

एवं जहा पढमाए परिवाडीए तहा बीयाए वि, नवरं—सव्वपारणए^३ विगइवज्जं पारेइ^४ । *एवं खलु एसा रयणावलीए तवोकम्मस्स बिइया परिवाडी एगेणं संवच्छरेणं तिहिं मासेहिं बावीसाए य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव^५ । आराहिया भवइ ॥

१. सं० पा०—अहासुत्तं जाव आराहिया ।

२. सव्वत्थपारणए (ख, ग, घ) ।

३. सं० पा० —पारेइ जाव आराहिया ।

४. अं० ८।८।

१०. तयाणंतरं च णं तच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ, करेत्ता अलेवाडं पारेइ ।
सेसं तहेव । नवरं अलेवाडं पारेइ ॥

११. एवं चउत्था परिवाडी । नवरं सब्वपारणए आयंबिलं पारेइ । सेसं तं चेव ॥

संगहणी-गाहा

‘पढमंमि सब्वकामं, पारणयं’ बिइयए विगइवज्जं ।

तइयंमि अलेवाडं, आयंबिलमो चउत्थम्मि ॥१॥

१२. तए णं सा काली अज्जा रयणावली-तवोकम्मं पंचहि संवच्छरेहि दोहि य
मासेहि अट्ठावीसाए य दिवसेहि अहासुत्तं जाव^१ आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा
अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ नमंसइ,
वंदित्ता नमंसित्ता बहूहि चउत्थ जाव^१ अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥

१३. तए णं सा काली अज्जा तेणं ओरालेणं^२ •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिणं
कल्लाणेणं सिवेणं धण्णेणं मंगल्लेणं सस्सिरोएण उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं
उदारेणं महानुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठिचम्मावणद्धा
किडिकिडियाभूया किंसा^३ धम्मणिसंतया जाया यावि होत्था ‘जीवंजीवेण
गच्छइ जाव^४ सुहुयहुयासणे’^५ इव भासरासिपलिच्छण्णा तवेणं, तेएणं, तवतेय-
सिरीए अईव-अईव उवसोहेमाणी-उवसोहेमाणी चिट्ठइ ॥

१४. तए णं तीसे कालीए अज्जाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले अयमज्जत्थिए
चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, जहा खंदयस्स चित्ता जाव^६
अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेयं कल्लं
पाउप्पभायाए रयणाए जाव^७ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा
जलते अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छित्ता अज्जचंदणाए अज्जाए अन्नभणुणायाए
समाणीए सलेहणा-भूसणा-भूसियाए भत्तपाण-पडियाइक्खियाए कालं अणव-
कंखमाणीए विहरित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं जेणेव अज्जचंदणा
अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता
नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जो ! तुभेहि अन्नभणुणाया समाणी
सलेहणा-^८भूसणा-भूसियाए भत्तपाण-पडियाइक्खियाए कालं अणवकंख-
माणीए^९ विहरित्तए ।
अहासुहं ॥

१. पढमंसि सब्वकामपारणयंसि (क); पढमंसि
सब्वगुणिए पारणकं (वृपा) ।

२. अं० ८।८।

३. अं० ८।६ ।

४. सं० पा०—उरालेणं जाव धम्मणिसंतया ।

५. अं० २।६४।

६. से जहा इंगाल जाव सुहुयहुयासणे (क, ख,
ग, घ,) ।

७. अं० २।६६ ।

८. ना० १।१।२४ ।

९. सं० पा०—सलेहणा जाव विहरित्तए ।

१५. तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणा संलेहणा-भूसणा-भूसिया जाव' विहरइ ॥
१६. तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं अट्ठ संवच्छराइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छंदित्ता, जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव' चरिमुस्सासेहिं' सिद्धा ॥
१७. निक्खेवओ ॥

वीयं अज्झयणं

सुकाली

सुकालीए कणगावलितव-पदं

१८. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी । पुण्णभट्ठे चेइए । कोणिए राया ॥
१९. तत्थ णं सेणियस्स रण्णो भज्जा, कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया, सुकाली नामं देवी होत्था । जहा काली तहा सुकाली वि निक्खता जाव' बहूहि जाव' तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥
२०. तए णं सा सुकाली अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव अज्जचंदणा अज्जा' •तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता एवं वयासी०—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी कणगावली-तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए । एवं जहा रयणावली तहा कणगावली वि, नवरं—तिसु ठाणेषु अट्ठमाइं करेइ, जहिं रयणावलीए छट्ठाइं ।
एक्काए परिवाडीए संवच्छरो पंच मासा वारस य अहोरत्ता । चउण्हं पंच वरिसा नव मासा अट्ठारस दिवसा । सेसं तहेव' । नव वासा परियाओ जाव' सिद्धा ॥

१. अ० ८।१४ ।

२. ओ० सू० १५४ ।

३. चरिमुत्सासनिस्सासेहिं (ख, ग) ।

४,५. अ० ८।६ ।

६. सं० पा०—अज्जा जाव इच्छामि ।

७. अ० ८।१२-१६ ।

८. अ० ८।१६ ।

तइयं अज्भयणं

महाकाली

महाकालीए खुड्गासीहनिक्कीलियतव-पदं

२१. एवं'—महाकाली वि, नवरं—खुड्गां सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता
णं विहरइ, तं जहा—

चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोदसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोदसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोदसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
बारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोदसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

बारसम	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

तहेव चत्तारि परिव्वाडीओ । एक्काए परिव्वाडीए छम्मासा सत्त य दिवसा ।
चउण्हं दो वरिसा अट्ठावीसा य दिवसा जाव' सिद्धा ॥

चउत्थं अज्झयणं

कण्हा

कण्हाए महालयसीहणिककीलियतव-पवं

२२. एवं—कण्हा वि, नवरं—महालयं सीहणिककीलियं तवोकम्मं जहेव खुड्ढागं,
नवरं—चोत्तीसइमं जाव नेयव्वं । 'तहेव ओसारेयव्वं' । एक्काए वरिसं
छम्मासा अट्ठारस य दिवसा । चउण्हं छव्वरिसा दो मासा बारस य अहोरत्ता ।
मेसं जहा कालीए जाव' सिद्धा ॥

पंचमं अज्झयणं

सुकण्हा

सुकण्हाए भिक्खुपडिमा-पवं

२३. एवं—सुकण्हा वि, नवरं—सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ ।

१. अ० ८।१२-१६ ।

२. अ० ८।६-८ ।

३. X (क) ।

४. अ० ८।१२-१६ ।

५. अ० ८।६-८ ।

पढमे सत्तए एक्केक्कं भोयणस्स दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक्कं पाणयस्स ।

दोच्चे सत्तए दो-दो भोयणस्स दो-दो पाणयस्स पडिगाहेइ ।

तच्चे सत्तए तिण्णि-तिण्णि दत्तीओ भोयणस्स, तिण्णि-तिण्णि दत्तीओ पाणयस्स ।

चउत्थे सत्तए चत्तारि-चत्तारि दत्तीओ भोयणस्स, चत्तारि-चत्तारि दत्तीओ पाणयस्स ।

पंचमे सत्तए पंच-पंच दत्तीओ भोयणस्स, पंच-पंच दत्तीओ पाणयस्स ।

छट्ठे सत्तए छ-छ दत्तीओ भोयणस्स, छ-छ दत्तीओ पाणयस्स ।

सत्तमे सत्तए सत्त-सत्त दत्तीओ भोयणस्स, सत्त-सत्त दत्तीओ पाणयस्स पडिगाहेइ ।

एवं खलु एयं सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं एगूणपण्णाए रातिदिएहिं एगेण य छण्णउएण भिक्खासएणं अहासुत्तं जाव' आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमं-सित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुव्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरेतए ।

अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं करेहि ॥

२४. तए णं सा सुकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ—

पढमे अट्ठए एक्केक्कं भोयणस्स दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक्कं पाणयस्स जाव अट्ठमे अट्ठए अट्ठट्ठ भोयणस्स पडिगाहेइ, अट्ठट्ठ पाणयस्स ।

एवं खलु एयं अट्ठमियं भिक्खुपडिमं चउसट्ठीए रातिदिएहिं दोहि य अट्ठासी-एहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं आराहेत्ता जाव' नवनवमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ—

पढमे नवए एक्केक्कं भोयणस्स दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक्कं पाणयस्स जाव नवमे नवए नव-नव दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेइ, नव-नव पाणयस्स ।

एवं खलु एयं नवनवमियं भिक्खुपडिमं एक्कासीतिए राइदिएहिं चउहि य पंचुत्तरं हि भिक्खासएहिं अहासुत्तं आराहेत्ता जाव' दसदसमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ—

पढमे दसए एक्केक्कं भोयणस्स दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक्कं पाणयस्स जाव

१. अ० ८।८ ।

२. पू०—अ० ८।२३ ।

३. अ० ८।२३ ।

४. पाणस्स (फ, ख, ग, घ) ।

५. पू०—अ० ८।२३ ।

६. अ० ८।२३ ।

दसमे दसए दस-दस दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेइ, दस-दस पाणयस्स ।

एवं खलु एयं दसदसमियं भिक्खुपडिमं एक्केणं राइदियसएणं अट्ठछट्ठं हि य
भिक्खासएहि अहासुत्तं जाव' आराहेइ, आराहेत्ता बहूहि चउत्थ-छट्ठम-दसम-
दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि विविहेहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणी
विहरइ ॥

२५. तए णं सा सुकण्हा अज्जा तेणं ओरालेणं तवोकम्मेणं जाव' सिद्धा ॥

२६. निक्खेवओ ॥

छट्ठं अज्झयणं महाकण्हा

महाकण्हाए खुट्ठागसव्वओभट्ठ-पदं

२७. एवं—महाकण्हा वि, नवरं—खुट्ठागं सव्वओभट्ठं पडिमं उवसंपज्जिता णं
विहरइ—

चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

१. अं० ८।८ ।

२. पू०—अं० ८।१३ ।

३. अं० ८।१३-१६ ।

४. अं० ८।६-८ ।

५. × (क, ख, ग, घ)

अट्टमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्टमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्टमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

एवं खलु एयं खुट्ठागसव्वओभइस्स तवोकम्मस्स पढमं परिवार्डि तिहिं मासेहिं दसहिं य दिवसेहिं अहासुत्तं जाव^१ आराहेत्ता दोन्वाए परिवार्डि चउत्थं करेइ, करेत्ता विगइवज्जं पारेइ, पारेत्ता जहा रयणावलीए तहा एत्थं वि चत्तारि परिवार्डिओ । पारणा तहेव । चउण्हं कालो संवच्छरो मासो दस य दिवसा । सेसं तहेव जाव^१ सिद्धा ॥

२८. निक्खेवओ ॥

सत्तमं अज्झयणं

वीरकण्हा

वीरकण्हाए महालयसव्वओभइपडिमा-पव

२९. एवं—वीरकण्हा वि, नवरं—महालयं सव्वओभइं तवोकम्मं उवसंपज्जिता णं बिहरइ, तं जहा—

चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्टमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

१. अं० ८।८ ।

३. अं० ८।६-८ ।

२. अं० ८।१२-१६ ।

[illegible]

दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोइसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोइसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चउत्थं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
छट्ठं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

एक्काए कालो अट्ठ मासा पंच य दिवसा । चउण्हं दो वासा अट्ठ मासा वीस य दिवसा । सेसं तहेव जाव' सिद्धा ॥

अट्ठमं अज्झयणं

रामकण्हा

रामकण्हाए भद्दोत्तरपडिमा-पदं

३०. एवं—रामकण्हा वि, नवरं—भद्दोत्तरपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं जहा-

दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोइसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
अट्ठारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
चोइसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ
चोइसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ
अट्टारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ
चोइसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ
अट्टारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ
अट्टारसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ
वीसइमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ
दुवालसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ
चोइसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।
सोलसमं	करेइ,	करेत्ता	सव्वकामगुणियं	पारेइ ।

एक्काए कालो छम्मासा वीस य दिवसा । चउण्हं कालो दो वरिसा दो मासा
वोस य दिवसा' । सेसं तहेव जहा काली जाव' सिद्धा ॥

नवमं अज्झयणं पिउसेणकण्हा

पिउसेणकण्हाए मुत्तावलितव-पदं

३१. एवं'—पिउसेणकण्हा वि, नवरं—मुत्तावलि तवोकम्मं उवसंपज्जिता णं विहरइ,
तं जहा—

१. 'दिवसा' शब्दस्य पश्चात् वाचनान्तरे प्रतिमा-

त्रयस्य लक्षण-गाथा उपलभ्यते, यथा—

आई दोण्ह चउत्थं,

आई भद्दोत्तराए बारसमं ।

बारसमं सोलसमं,

वीसइमं चेव चरिमाइं ॥१॥

पढमं तइयं तो जाव,

चरिमयं ऊणमाइओ पूरे ।

पचय परिवाडीओ,

खुड्ढग-भद्दुत्तराए य ॥२॥

पढमं तु चउत्थं,

जाव चरिमयं ऊणमाइओ पूरे ।

सत्त य परिवाडीओ,

महालए सव्वओभइ ॥३॥

२. अं० ८।१२-१६ ।

३. अं० ८।६-८ ।

एवं तहेव ओसारेइ जाव चउत्थं करेइ, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ ।
एक्काए कालो एक्कारस मासा पण्णरस य दिवसा । चउण्हं तिण्णि वरिसा
दस य मासा । सेसं जाव' सिद्धा ॥

दसमं अज्झयणं

महासेणकण्हा

महासेणकण्हाए आयंबिलवड्डमाणतव-पदं

३२. एवं—महासेणकण्हा वि, नवरं—आयंबिलवड्डमाणं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं
विहरइ, तं जहा -

आयंबिलं	करेइ,	करेत्ता	चउत्थं	करेइ ।
वे आयंबिलाइं	करेइ,	करेत्ता	चउत्थं	करेइ ।
तिण्णि आयंबिलाइं	करेइ,	करेत्ता	चउत्थं	करेइ ।
चत्तारि आयंबिलाइं	करेइ,	करेत्ता	चउत्थं	करेइ ।
पंच आयंबिलाइं	करेइ,	करेत्ता	चउत्थं	करेइ ।
छ आयंबिलाइं	करेइ,	करेत्ता	चउत्थं	करेइ ।

एवं एक्कुत्तरियाए वड्डोए आयंबिलाइं वड्डति चउत्थंतरियाइं जाव आयंबिलसयं
करेइ, करेत्ता चउत्थं करेइ ॥

३३. तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा आयंबिलवड्डमाणं तवोकम्मं चोइसहिं वासेहिं
तिहि य मासेहिं वोसहिं य अहोरत्तेहिं 'अहासुत्तं जाव' आराहेत्ता' जेणेव
अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता
नमंसित्ता बहूहिं चउत्थं^१-छट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं
तवोकम्मेहिं अप्पाणं ° भावेमाणो विहरइ ॥

३४. तए णं सा महासेणकण्हा' अज्जा तेणं ओरालेणं जाव' तवेणं तेएणं तवतेय-
सिरीए अईव-अईव उवसोहेमाणी चिट्ठइ ॥

१. अं० ८।१२-१६ ।

२. अं० ८।६-८ ।

३. अं० ८।८ ।

४. अहासुत्तं जाव सम्म काएणं फासेइ जाव

आराहेत्ता (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—चउत्थं जाव भावेमाणी

६. महासेणकण्हा (क, ख,) ।

७. अं० ८।१३ ।

३५. तए णं तीसे महासेणकण्हाए अज्जाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले चिता जहा खंदयस्स जाव' अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छइ' ॥
३६. 'तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणा-भूसणा-भूसिया भत्तपाण-पडियाइक्खिया० कालं अणवकंख-माणी विहरइ ॥
३७. तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं सत्तरस वासाइं परियायं पालइत्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं' भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव' तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरिम-उस्सासनिस्सासेहि' सिद्धा ॥

संगहणी-गाहा

अट्ट य वासा आई, एक्कोत्तरयाए जाव सत्तरस ।

एसो खलु परियाओ, सेणियभज्जाण नायव्वो ॥१॥

निक्खेव-पदं

३८. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अयमट्ठे पणत्ते ॥

परिसेसो

अंतगडदसाणं अंगस्स एगो सुयखंधां । अट्ट वग्गा । अट्टसु चेव दिवसेसु' उद्दिस्सति' । तत्थ पढमबिइयवग्गे दस-दस उद्देसगा । तइयवग्गे तेरस उद्देसगा । चउत्थपंचमवग्गे दस-दस उद्देसगा । छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा । सत्तमवग्गे तेरस उद्देसगा । अट्ठमवग्गे दस उद्देसगा । सेसं जहा नायाधम्मकहाणं ॥

ग्रन्थ परिमाण

कुल अक्षर—४००५१

अनुष्टुप् श्लोक—१२५१ अ० १६

१. अ० २।६६ ।

२. पृ०—अ० ८।१४ ।

३. सं० पा०—जाव संलेहणा कालं ।

४. अत्ताणं (क) ।

५. ओ० सू० १५४ ।

६. चरिमउस्सासेहि (ख, ग) ।

७. ना० १।१।७ ।

८. उद्दिस्सिज्जति (क्व) ।

अणुत्तरोववाइयदसाओ

पढमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

जाली

उक्खेब-पढं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । अज्जसुहम्मस्स समोसरणं । परिस्सा निग्गया जाव' जंबू पज्जुवासमाणे' एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अट्टमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते ! अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे' अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं तिण्णि वग्गा पण्णत्ता ॥
३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं तस्मो' वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?
४. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

१. ना० १।१।६,७ ।

२. पज्जुवासइ (क, ख, ग, घ); ना० १।१।७

सूत्रानुसारेण अयं पाठः स्वीकृतः ।

३,४. अ० ३।७५ ।

५. सुवम्मे (क, ख, ग) ।

६,७. अ० ३।७५ ।

८. तिण्णि (ख) ।

९. अ० ३।७५ ।

संगहणी-गाहा

१. जालि २. मयालि ३. उवयाली', ४. पुरिससेणे य ५. वारिसेणे य ।
 ६. दीहदंते य ७. लट्टदंते य, ८. 'विहल्ले ९. वेहायसे' १०. अभए इ य कुमारे ॥१॥
 ५. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं पढमस्स' वग्गस्स
 दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं
 समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

जालि-पदं

६. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे—रिद्धत्थिमियसमिद्धे' ।
 गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । धारिणी देवी । सीहो सुमिणे । जाली
 कुमारो । जहा मेहो । अट्ठद्वयो दाओ' ॥
 ७. *तए णं से जालो'कुमारे उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव'
 माणुस्सए कामभोगं पच्चणुभवमाणे ° विहरइ ॥
 ८. सामी' समोसढे । सेणिओ निग्गओ । जहा मेहो तहा जाली वि निग्गओ । तहेव
 निक्खंतो जहा मेहो' । एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ । गुणरयणं तवोकम्मं 'जहा
 खंदयस्स' ॥ एवं जा चेव खंदगस्स' वत्तव्वया, सा चेव चित्ता, आपुच्छणा ।
 थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं तहेव दुरुहइ, नवरं—सोलस वासाइं सामण्णपरियागं
 पाउणित्ता', कालमासे कालं किच्चा उड्डं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारा-
 रूवाणं' सोहम्मीसाण'—*सणकुमार-माहिद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्साराणय-
 पाणय °—आरणच्चुए कप्पे नवयगेवेज्जविमाणपत्थडे उड्डं दूरं वीईवइत्ता
 विजयविमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥
 ९. तए णं ते थेरा भगवतो जालि अणगारं कालगयं जाणित्ता परिणिव्वाणवत्तिं
 काउस्सगं करंति, करेत्ता पत्त-चीवराइं गेण्हंति । तहेव उत्तरंति' जाव' इमे से
 आयारभंडए ॥

१. उवयालि (क, ख); ओवयाली (ग) ।

महावीरे जाव (घ) ।

२. विहल्ले विहायसे (ग, घ,) ।

१०. ना० १।१।२६-१५१ ।

३. अ० ३।७५ ।

११. × (क) । अ० २।६१-६३ ।

४. अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स (ख, ग, घ) ।

१२. खंदय (क, ख, घ,) । अ० २।६४-६६ ।

५. रिद्धि ° (ख, ग, घ,) ।

१३. पाउणिय (ख) ।

६. पू०—न० १।१।६१-६२ ।

१४. पू०—ना० १।१।२११ ।

७. सं० पा०—जाव उप्पि पासा विहरइ ।

१५. सं० पा०—सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए ।

८. ना० १।१।६३ ।

१६. ओतरंति (ख) ।

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं १७. अ० २।७० ।

१०. भंतैति ! भगवं गोयमे^१ •समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता^२ । एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी जाली नामं अणगारे पगइभद्दए^३ । से णं जाली अणगारे कालगए कहि गए ? कहि उववण्णे ?
११. एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी तहेव जहा खंदयस्स जाव^४ कालगए उड्ढं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं जाव^५ विजए विमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥
१२. जालिस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पणत्ता ? गोयमा ! वत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पणत्ता ॥
१३. से णं भंते ! ताम्भो^६ देवलोयाम्भो आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं कहि गच्छिहिइ ? कहि उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वामे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

१४. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^७ संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ॥

२-१० अज्झयणाणि

मयालिपभित्ति-पदं

१५. एवं सेसाण वि नवण्हं^८ भाणियव्वं, नवरं—सत्तं^९ धारिणिमुग्गा, वेहल्लवेहायसां चेल्लणाए, अभए नंदाए । ‘सव्वेसि सेणिम्भो पिया’^{१०} । आइल्लाणं पंचण्हं सोलस वासाइं सामण्णपरियाम्भो । तिण्हं बारस वासाइं । दोण्हं पंच वासाइं^{११} । आइल्लाणं पंचण्हं आणुपुव्वीए उववाम्भो विजए वेजयते जयंते अपराजिए

१. स० पा०—गोयमे जाव एवं ।

२. पू०—ना० १।१।२०६ ।

३. अ० २।७१ ।

४. अ० १।८ ।

५. ततो (ख) ।

६. अ० ३।७५ ।

७. अट्ठण्हं (क, ख,) ।

८. छ (ख, ग) ।

९. °वेहासा (क, ख); विहल्लवेहासे (ग) ।

१०. × (क, ख) ।

११. अतोऽग्रे ‘मासियाए सलेहणाए’ इति पाठः
द्वितीयवर्गस्य ६ सूत्रानुसारेण अध्या-
हतं व्यः ।

सव्वडुसिद्धे । 'दोहदंते सव्वट्टसिद्धे' उक्कमेणं सेसा । अममो विजए । सेसं जहा पढमे' ॥

निक्खेव-पढं

१६. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

१. × (क) ।

२. पढमे । अभयस्स नाणत्त, रायगिहे नयरे सेणिए राया, नंदा देवी, सेसं तहेव [क, ख, ग] । असौ पाठो वाचनान्तरस्य प्रतीयते ।

अस्मिन् नानात्वस्य संकेतोऽस्ति, किन्तु

यम्भानात्वं प्रदर्शितं तत् सर्वं पूर्वमायातमेव ।

३. अ० ३।७५ ।

दोच्चो वग्गो

१-१३ अज्झयणाणि

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-
दसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोव-
वाइयदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-
दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस्स अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा -

संगहणी-गाहा

१. दीहसेणे २. महासेणे, ३. 'लट्ठदंते य ४. गूढदंते य' ५. सुद्धदंते य ।
६. हल्ले ७. दुमे ८. दुमसेणे, ९. महादुमसेणे य आहिए ॥१॥
१०. सीहे य ११. सीहसेणे य, १२. महासीहसेणे य आहिए ।
१३. पुण्णसेणे य बोधव्वे, तेरसमे होइ अज्झयणे ॥२॥
३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-
दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस्स अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स
पढमज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

दीहसेणादि-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए ।
सेणिए राया । धारिणी देवी । सीहो सुमिणे । जहा जाली तहा जम्मं बालत्तणं

१,२. अ० ३।७५ ।

४. अ० ३।७५ ।

३. गूढदंते य लट्ठदंते य (क); °गूढदंते य (ख) ।

कलाओ, नवरं—दीहसेणो कुमारो सव्वेव वत्तव्वया जहा जालिस्स जाव' अंतं काहिइ ॥

५. एवं तेरस वि रायगिहे नयरे । सेणिओ पिया । धारिणी माया । तेरसण्ह वि सोलस वासा परियाओ । आणुपुव्वीए विजए दोण्णि, वेजयंते दोण्णि, जयंते दोण्णि, अपराजिए दोण्णि, सेसा महादुमसेणमादी पंच सव्वट्टसिद्धे ॥

निबल्लेव-पदं

६. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अणुत्तरोदवाइय-दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।
मासियाए संलेहणाए दोसु वि वग्गेसु ॥

तच्चो वग्गो पढमं अज्झयणं धण्णे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-
दसाणं दोच्चस्स णं वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स
अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-
दसाणं तच्चस्स वग्गस्स दसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. धण्णे य २. सुणक्खत्ते य, ३. इसिदासे य आहिए ।
४. पेल्लए ५. रामपुत्ते य, ६. चंदिमा ७. पिट्ठिमा' इ य ॥१॥
८. पेढालपुत्ते अणगारे, 'नवमे पोट्टिले वि य' ।
१०. वेहल्ले दसमे वुत्ते, इमे य दस आहिया ॥२॥
३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-
दसाणं तच्चस्स वग्गस्स दसं अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स
समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

धण्णस्स गिहवास-पदं

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी' नामं नयरी होत्था—

१, २, ३. अ० ३।७५ ।

६. अ. ३।७५ ।

४. पुट्ठिमा (ग, घ,) ।

७. कागंदी (क, ख) ।

५. अणगारे पुट्ठिले इ य (क) ।

रिद्धत्थिमियसमिद्धा' । सहसंबवणे उज्जाणे—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे' ।
जियसत्तु राया ॥

५. तत्थ णं काकंदीए नयरीए भद्दा नामं सत्थवाही परिवसइ—अद्दा जाव' अपरि-
भूया ॥
६. तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते धण्णे नामं दारए होत्था—अहीणपडिपुण्ण-
पंचेंदियसरीरे जाव' सुरूवे । पंचघाईपरिग्गहिए जहा महब्बलो जाव' बावत्तरिं
कलाओ अहीए जाव' अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥
७. तए णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णं दारयं उम्मुक्कबालभावं जाव' अलंभोगसमत्थं
वा वि जाणित्ता वत्तीसं पासायवडंसए कारेइ—अब्भुग्गयमूसिए जाव' पडिरूवे ।
तेसिं मज्जे एगं च णं महं भवणं कारेइ—अणंगखंभसयसणिविट्ठं जाव'
पडिरूवं ॥
८. तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं धण्णं दारयं वत्तीसाए इब्भवरकण्णगाणं एगदिव-
सेणं पाणिं गेण्हावेइ । वत्तीसओ दाओ" ॥
९. तए णं से धण्णे दारए उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव'
विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

धण्णस्स पव्वज्जा-पदं

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसडे । परिसा निग्गया । राया
जहा कोणिओ 'तहा निग्गओ'^{१२} ॥
११. तए णं तस्स धण्णस्स दारगस्स तं महया"^{१३}जणसद्दं वा जाव' जणसन्निवायं वा
सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणो-

१. पू०—ओ० सू० १ ।

२. पू०—ना० १।५।४ ।

३. ना० १।५।७ ।

४. ओ० सू० १४३ ।

५. भ० ११।१५४-१५६; राय० सू० ८०४-
८०७ ।

६. राय० सू० ८०८, ८०९; ओ० सू० १४७,-
१४८ ।

७. राय० सू० ८१० ।

८. ना० १।१।८६ ।

९. ना० १।१।८६ ।

१०. पू०—ना० १।१।९०-९२ ।

११. ना० १।१।९३ ।

१२. × (क) । ओ० सू० ५४-६६ ।

१३. सं० पा०—जहा जमाली तहा निग्गओ ।
नवरं पायचारणं । जाव जं नवरं अम्मयं
भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि । तए णं अहं
देवाणुप्पियाणं अंतिए पव्वयामि जाव जहा
जमाली तहा आपुच्छइ । मुच्छिया ।
वुत्तपडिवुत्तया जहा महब्बले जाव जाहे नो
संचाएइ जहा थावच्चापुत्तस्स जियसत्तुं
आपुच्छइ । छत्तचामराओ । सयमेव जियसत्तुं
निकखमणं करेति जहा थावच्चापुत्तस्स
कण्हो जाव पव्वइए । अणगारे जाए—
इरियासमिए जाव गुत्तबंभचारी ।

१४. ओ० सू० ५२ ।

गए संकप्पे समुप्पज्जित्था—किण्णं अज्ज काकंदीए नयरीए इंदमहे इ वा' जण्णं एते बह्वे उग्गा भोगा जाव' निग्गच्छंति—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कंचुइपुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! अज्ज काकंदीए नयरीए इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति ?

१२. तए णं से कंचुइपुरिसे समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए धण्णं दारयं एवं वयासी'—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे भगवं महावीरे काकंदीए नयरीए बहिया सहसंववणे उज्जाणे अहापडिरुवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तए णं एते बह्वे उग्गा भोगा जाव' निग्गच्छंति ॥

१३. तए णं से धण्णे दारए कंचुइपुरिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे जाव' पायचारेणं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरे तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

१४. तए णं समणे भगवं महावीरे धणस्स दारयस्स तीसे य महइमहालियाए इसि-परिसाए जाव' धम्मं परिकहेइ ॥

१५. तए णं से धण्णे दारए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गथं पावयणं जाव' अम्मयं भदं सत्थवाहिं आपुच्छामि, तए णं अहं देवा-णुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ॥

१६. जहा जमाली तहा आपुच्छइ' ॥

१७. तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं अणिट्ठं अकतं अप्पियं अमणुणं अमणामं असुय-पुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा निसम्मं धसत्ति सव्वगेहिं संनिवडिया । वुत्तपडिवुत्तया जहा महव्वले' ॥

१८. तए णं तं धण्णं दारयं भद्दा सत्थवाही जाहे नो संचाएइ जाव' जियसत्तुं

१. पू०—अ० ६।१५८ ।

२. अ० ६।१५८ ।

३. पू०—अ० ६।१५९ ।

४. अ० ६।१५९; ओ० सू० ५२ ।

५. अ० ६।१६२ ।

६. अ० ६।१६३ ।

७. अ० ६।१६४ ।

८. पू०—अ० ६।१६५-१६७ ।

९. पू०—अ० ६।१६८ ।

१०. अ० ११।१६६; ना० १।१।१०६-११३ ।

११. ना० १।५।१६, २० ।

आपुच्छइ—इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! धणस्स दारयस्स निक्खममाणस्स छत्त-
मउड-चामराओ य विदिन्नाओ ॥

१६. तए णं जियसत्तू राया भइं सत्थवाहि एव वयासी—अच्छाहि णं तुमं देवाणु-
प्पिए ! सुनिव्वुत्त-वीसत्था, अहणं सयमेव धणस्स दारयस्स निक्खमण-
सक्कारं करिस्सामि । सयमेव जियसत्तू निक्खमणं करेइ, जहा थावच्चापुत्तस्स
कण्हो' ॥

२०. तए णं से धण्णे दारए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ जाव' पव्वइए ॥

२१. तए णं से धण्णे दारए अणगारे जाए—इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए
आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-
पारिट्ठावणियासमिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते
गुत्ते गुत्तिदिए° गुत्तबंभयारी ॥

धणस्स तवच्चरिया-पदं

२२. तए णं से धण्णे अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं
पव्वइए, तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता
एव वयासी—इच्छामि' णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे जावज्जीवाए
छट्ठंछट्ठेणं अणिक्वित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे'
विहरित्तए छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि कप्पइ मे' आयंबिलं पडिगाहेत्तए', नो
चेव णं अणायबिलं । तं पि य संसट्ठं, नो चेव णं असंसट्ठं । तं पि य ण उज्झय-
धम्मियं, नो चेव णं अणुज्झय-धम्मियं । तं पि य जं अण्णे बहवे समण-माहण-
अतिहि-किवण-वणीमगा नावकंखंति ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंभं करेहि ॥

२३. तए णं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे
हट्ठतुट्ठे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्वित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिणं' तवो-
कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२४. तए णं से धण्णे अणगारे पढम-छट्ठखमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं
करेइ, जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ, जाव' जेणेव काकंदी नयरी तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काकंदीए नयरीए उच्च'-●नीय-मज्झमाइं कुलाइं

१. ना० १।५।२२-३३ ।

२. ना० १।५।३४ ।

३. एव खलु इच्छामि (ख, ग) ।

४. भावेमाणस्स (ख, ग) ।

५. × (क, ख) ।

६. पडिगहित्तए (क) ।

७. × (क, ख, ग) ।

८. भ० २।१०७-१०६ ।

९. सं० पा०—उच्च जाव अडमाणे ।

घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए ° अडमाणे आर्यंबिलं ° पडिगाहेति, नो चेव णं अणायंबिलं । तं पि य संसट्ठं, नो चेव णं असंसट्ठं । तं पि य उज्झिय-धम्मियं, नो चेव णं अणुज्झिय-धम्मियं तं पि य जं अण्णे बह्वे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा ° नावकंखंति ।

२५. तए णं से घण्णे अणगारे ताए अब्भुज्जयाए पययाए पयत्ताए पग्गहियाए एसणाए एसमाणे जइ भत्तं लभइ तो पाणं न लभइ, अह पाणं लभइ तो भत्तं न लभइ ॥
२६. तए णं से घण्णे अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसादी अपरितंत-जोगी जयण-घडण-जोगचरित्ते अहापज्जत्तं समुदाणं पडिगाहेइ, पडिगाहेत्ता काकं-दीओ नयरीओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जहा गोयमे जाव पडिदंसेइ ॥
२७. तए णं से घण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावोरेणं अब्भणुणाए समाणं अमुच्छिए ° अगिद्धे अगट्ठिए ° अणज्झोववण्णे विलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं आहारं आहारेइ, आहारेत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
२८. तए णं समणे भगवं महावोरे अण्णया कयाइ कायं दीओ नयरीओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥
२९. तए णं से घण्णे अणगारे समणस्स भगवओ महावोरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
३०. तए णं से घण्णे अणगारे तेणं ओरालेणं ° विउणेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं घन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं उदारेणं महानुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे घमणिसतए जाए यावि होत्था । जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ, भासं भासित्ता वि गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामीति गिलाइ । से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा पत्त-तिल-भंडग-सगडिया इ वा एरंडकट्ठसगडिया इ वा, इंगालसगडिया इ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससट्ठं गच्छइ, ससट्ठं चिट्ठइ, एवामेव घण्णे अणगारे ससट्ठं गच्छइ, ससट्ठं चिट्ठइ, उवचिए तवेणं, अवचिए मंस-सोणिएणं, हुयासणे विव भासरासिपडिच्छण्णे तवेणं, तेएणं, तव-तेयसिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे ° चिट्ठइ ॥

१. सं० पा०—आर्यंबिलं नो अणायंबिलं जाव नावकंखंति ।

२. × (घ) ।

३. अह (क) ।

४. तहा (ख, ग) । अ० २।११० ।

५. सं० पा०—अमुच्छिए जाव अणज्झोववण्णे

६. सं० पा०—उरालेणं जहा खंडओ जाव सुहय चिट्ठइ ।

धण्णस्स तवजणिय-सरीरलावण्ण-पवं

३१. धण्णस्स णं अणगारस्स पायाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए सुक्कच्छली इ वा कट्टपाउया इ वा जरग्गओवाहणा इ वा, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स पाया सुक्का लुक्खा' निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ॥
३२. धण्णस्स णं अणगारस्स पायंगुलियाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए कलसंगलिया इ वा मुग्गसंगलिया इ वा माससंगलिया इ वा तरुणिया छिण्णा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी' चिट्ठंति, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स पायंगुलियाओ' सुक्काओ' •लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस°-सोणियत्ताए ॥
३३. धण्णस्स णं अणगारस्स जंघाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए काकजंघा इ वा ढेणियालियाजंघा इ वा', •एवामेव धण्णस्स अणगारस्स जंघाओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस°-सोणियत्ताए ॥
३४. धण्णस्स अणगारस्स जाणूणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए कालिपोरे' इ वा मऊरपोरे इ वा ढेणियालियापोरे इ वा, •एवामेव धण्णस्स अणगारस्स जाणू सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस°-सोणियत्ताए ॥
३५. धण्णस्स णं अणगारस्स ऊरूणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए 'सामकरिल्ले इ वा' 'बोरीकरिल्ले' इ वा सल्लइकरिल्ले' इ वा 'साम-लिकरिल्ले इ वा' 'तरुणए' छिण्णे उण्हे' •दिण्णे सुक्के समाणे मिलायमाणे°

१. इदं पदं प्रयुक्तादर्शेषु नोपलभ्यते; ३७ वृत्ती ७. सं० पा०—एव जाव सोणियत्ताए ।

'उदरवर्णने' एवामेव उदरं सुक्कं लुक्खं ८. × (वृ) ।

निम्मंसं इत्यादि पूर्ववत् इत्युल्लेखेन तथा ९. गोरिकरिले (क) ।

५१ सूत्रे शीर्षस्य वर्णने सर्वेषु आदर्शेषु १०. सेल्लत्ति ° (ख) ।

वृत्ती च तथा दर्शनेन अस्माभिः सर्वत्र ११. वृत्तिकारेणात्र पाठान्तरनिर्देशः कृतः—
स्वीकृतमिदम् । पाठान्तरेण सामकरिल्ले इ वा (वृ) । आदर्शेषु

२. विलायमाणी (क) ।

३. पायंगुलीओ (ख, ग) ।

४. सं० पा०—सुक्काओ जाव सोणियत्ताए ।

५. सं० पा०—इ वा जाव नो सोणियत्ताए ।

६. कालपोरे (क, च) ।

१२. तरुणाए (क); तरुणे (ग); तरुणिए (क्व) ।

१३. सं० पा०—उण्हे जाव चिट्ठइ ।

असौ पाठः 'से जहानामए' अस्यानन्तरमेव वर्तते ।

चिट्ठइ, एवामेव घण्णस्स अणगारस्स ऊरू' •सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंसं •सोणियत्ताए ॥

३६. घण्णस्स णं अणगारस्स कडिपत्तस्स' अयमेयारूवे' तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए उट्टपदे' इ वा जरग्गपए' इ वा महिसपए' इ वा', •एवामेव घण्णस्स अणगारस्स कडिपत्ते सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंसं •सोणियत्ताए ॥

३७. घण्णस्स णं अणगारस्स उदर-भायणस्स अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए सुक्क-दिए इ वा भज्जणय-कभल्ले इ वा कट्ठ-कोलंवए इ वा, एवामेव घण्णस्स अणगारस्स उदरं [उदर-भायणं ?] सुक्कं' •लुक्खं निम्मंसं चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंसं •सोणियत्ताए ॥

३८. घण्णस्स णं अणगारस्स 'पासुलिय-कडयाणं'" अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए थासयावली इ वा 'पाणावली इ वा'" मुंडावली इ वा", •एवामेव घण्णस्स अणगारस्स पासुलिय-कडया सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंसं-सोणियत्ताए° ।

३९. घण्णस्स णं अणगारस्स पिट्ठि"-करंडयाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था —से जहानामए कण्णावली इ वा गोलावली" इ वा बट्टावली" इ वा, एवामेव" •घण्णस्स अणगारस्स पिट्ठि-करंडया सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंसं-सोणियत्ताए° ॥

४०. घण्णस्स णं अणगारस्स 'उर-कडयस्स'" अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—

१. सं० पा०—ऊरू जाव सोणियत्ताए ।

२. कडिपट्टस्स (ख, ग, घ, वृ पा) ।

३. इमेयारूवे (क, ख, ग, घ) ।

४. °पादे (ग) ।

५. °पादे (ग); लाक्षणिकदृष्ट्यात्र 'जरग्गपए' इति पाठो युज्यते । वृत्तिकारस्य सम्मुखे 'जरग्गपए' इति पाठ आसीत्, यथा—जरग्गपएत्ति जरद्गवपादः (वृ) । वृत्तिकारेण यथा पाठो लब्धः तथा व्याख्यात इति सम्भाव्यते ।

६. °पादे (ग) ।

७. सं० पा०—इ वा जाव सोणियत्ताए ।

८. सूत्रस्य प्रारम्भे 'उदरभायणस्स' इति प्रयुक्तमस्ति । अत्रापि तथैव किं न स्यात् ?

९. सं० पा—सुक्कं° ।

१०. पांसुलियकडलाइं (ख) ।

११. × (क); पीणावली° (ख, ग, घ) ।

१२. सं पा०—मुंडावली इ वा ।

१३. पिट्ठ (ग, वृ) ।

१४. गोणवाली (क) ।

१५. बट्टयावली (वृ) ।

१६. सं० पा०—एवामेव° ।

१७. उरकरंडयस्स (क, ग); उरकरंडस्स (ख) ।

असौ पाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृतः ।

से जहानामए चित्तकट्टरे' इ वा वीयणपत्ते' इ वा तालियंटपत्ते इ वा, एवामेव' •धणस्स अणगारस्स उर-कडए सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥

४१. धणस्स णं अणगारस्स वाहाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए समिसंगलिया इ वा वाहायासंगलिया" इ वा 'अगत्थियसंगलिया इ वा," एवामेव' •धणस्स अणगारस्स वाहाओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥

४२. धणस्स णं अणगारस्स हत्थाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए सुक्कछगणिया" इ वा वडपत्ते इ वा पलासपत्ते इ वा, एवामेव' •धणस्स अणगारस्स हत्था सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥

४३. धणस्स णं अणगारस्स हत्थंगुलियाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए कलसंगलिया इ वा मुग्गसंगलिया इ वा माससंगलिया इ वा तरुणिया छिण्णा आयवे दिण्णा सुक्का समाणी 'मिलायमाणी चिट्ठति', एवामेव' •धणस्स अणगारस्स हत्थंगुलियाओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥

४४. धणस्स णं अणगारस्स गीवाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए करगगीवा इ वा कुंडियागीवा इ वा उच्चत्थवणए" इ वा, एवामेव" •धणस्स अणगारस्स गीवा सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥

४५. धणस्स णं अणगारस्स हणुयाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए लाउफले इ वा हकुवफले" इ वा अंबगट्टिया" इ वा" •आयवे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी चिट्ठइ, एवामेव धणस्स अणगारस्स हणुया

१. चित्तपट्टरे (क); चित्तयकट्टरे (ख); चित्तयकट्टरे (ग) ।

२. वीइण° (ग); वीयणय° (घ) वियण° (ङ) ।

३. सं० पा०—एवामेव° ।

४. × (ख); पहाया° (ग) ।

५. × (क) ।

६. सं० पा०—एवामेव° ।

७. सुक्कछगलिया(क); सुक्खच्छगणिया(ख,ग) ।

८. सं० पा०—एवामेव° ।

९. × (क, ख, ग); मिलायंति (घ) ।

१०. सं० पा०—एवामेव° ।

११. उच्चट्टवणए (क); काछवणए (ख) ।

१२. सं० पा०—एवामेव° ।

१३. हेकुव° हंकुव° हेकुच° हकुन° (क्व) ।

१४. अंबगंठिया (क, घ) ।

१५. सं० पा०—अंबगट्टिया इ वा° एवामेव ।

सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥

४६. धण्णस्स णं अणगारस्स उट्ठाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए सुक्कजलोया इ वा सिलेस-गुलिया इ वा अलत्त-गुलिया इ वा, एवामेव ° धण्णस्स अणगारस्स उट्ठा सुक्का लुक्खा निम्मंसा चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥
४७. धण्णस्स णं अणगारस्स जिब्भाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए वडपत्ते इ वा पलासपत्ते इ वा सागपत्ते इ वा, एवामेव ° धण्णस्स अणगारस्स जिब्भा सुक्का लुक्खा निम्मंसा चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥
४८. धण्णस्स णं अणगारस्स नासाए अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए अंबगपेसिया इ वा अंबाडगपेसिया इ वा माउलुंगपेसिया इ वा तरुणिया ° छिण्णा आयवे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी चिट्ठइ, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स नासा सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥
४९. धण्णस्स णं अणगारस्स अच्छीणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए वीणाछिहे इ वा वद्धीसगछिहे इ वा पाभाइयतारिगा इ वा, एवामेव ° धण्णस्स अणगारस्स अच्छीओ सुक्काओ लुक्खाओ निम्मंसाओ अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥
५०. धण्णस्स णं अणगारस्स कण्णाणं अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए मूलाछल्लिया इ वा वालुंकछल्लिया इ वा कारेल्लयछल्लिया इ वा, एवामेव ° धण्णस्स अणगारस्स कण्णा सुक्का लुक्खा निम्मंसा चम्म-छिरत्ताए पण्णायति, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए ° ॥
५१. धण्णस्स णं अणगारस्स सीसस्स अयमेयारूवे तव-रूव-लावण्णे होत्था—से जहानामए तरुणगलाउए इ वा तरुणगएलालुए इ वा सिण्हालए इ वा तरुणए °

१. अलत्तग (ग) ।

२. सं० पा०—एवामेव ° ।

३. × (क); पलासपत्ते इ वा (ग); उंबरपत्ते (व) ।

४. सं० पा०—एवामेव ° ।

५. सं० पा०—तरुणिया ° एवामेव ° ।

६. पब्बीस ° (क, ख) ।

७. पभयातारगा (वृ); पाभाइयतारा (वृपा) ।

८. सं० पा०—एवामेव ° ।

९. केसाणं (क) ।

१०. वालुंका (क) ।

११. क्वचिच्च नीतिपदं दृश्यते न चावगम्यते (वृ) ।

१२. सं० पा०—एवामेव ° ।

१३. सिण्हालुए (क्व) ।

१४. सं० पा०—तरुणए जाव चिट्ठइ ।

●छिण्णे आयवे दिण्णे सुक्के समाने मिलायमाणे० चिट्ठइ, एवामेव धणस्स अणगारस्स सीसं सुक्कं' लुक्खं निम्मंसं अट्ठि-चम्म-छिरत्ताए पण्णायइ, नो चेव णं मंस-सोणियत्ताए' ॥

५२. धण्णे णं अणगारे' सुक्केणं भुक्खेणं पायजंघोरुणा, विगय-तडि-करालेणं कडि-कडाहेणं, पिट्ठिमस्सिएणं' उदरभायणेणं, जोइज्जमाणेहिं पासुलि'-कडएहिं, 'अक्खसुत्तमाला तिव'" गणेज्जमाणेहिं पिट्ठिकरंडगसंधीहिं, गंगातरंगभूएणं उरकडगदेसभाएणं, सुक्कसप्पसमाणाहिं बाहाहिं", सिढिलकडाली' 'विवलंबतेहि'" य अगहत्थेहिं, कंपणवाइओ विव वेवमाणीए सीसघडीए पम्माणवयणकमले" उ०भडघडमुहे उच्छुद्धणयणकोसे" जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ, भासं भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामि त्ति गिलाइ । से जहानामए इंगालसगडिया इ वा" ●कट्टसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा तिलंडासगडिया इ वा एरंडसगडिया इ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समानी ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, एवामेव धण्णे अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवच्चिए तवेणं, अवच्चिए मंससोणिएणं०, हुयासणे इव भासरासिपलिच्छण्णे तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

सेणियस्स महाबुद्धकरकारय-पुच्छा-पदं

५३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ॥
 ५४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे । परिसा निग्गया । सेणिए निग्गए । धम्मकहा । परिसा पडिगया ॥
 ५५. तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी —

१. × (ख, ग) ।

२. 'मंस-सोणियत्ताए' अतोप्रे सर्वासु प्रतिमु एवं सम्बत्थ । नवरं उयरभायणं कण्णा जीहा उट्ठा एएति अट्ठी न भणइ, चम्म-छिरत्ताए पण्णायइ त्ति भणइ इति पाठोस्ति । परं अस्माभिस्तु सर्वत्र पूर्णः पाठः लिखितः, अतोनाबध्यकत्वेनासौ पाठान्तररूपेण स्वीकृतः ।

३. अणगारे णं (क. ख, ग, घ) ।

४. पट्ठी० (क); पिट्ठिमवस्सिएणं (घ) ।

५. पासुलि (ग, घ) ।

६. अक्खमाला तिवा (क); मालाविव (ग);
 ० माला तिवा (घ) ।

७. × (क) ।

८. सडिल० (क, ख, ग) ।

९. विवचलंतेहि (क); विवचलंतेहि (ख) ।

१०. पम्मात० (क, ग); पम्माय० (ख) ।

११. उच्छुद्धु० (घ) ।

१२. सं० पा०—जहा संघओ तहा जाव हुयासणे; स्कन्दकप्रकरणे(भ० २।६४) प्रारम्भे 'इंगालसगडिया' इति पाठो नास्ति । तेनास्य पूर्तिः नायाधम्मकहाओ सूत्रात् कृता ।

इमासि णं भंते ! इंदभूइपामोक्खाणं चोइसण्हं समणसाहस्सीणं कतरे अणगारे महादुक्करकारे चैव महाणिज्जरतराए चैव ?

एव खलु सेणिया ! इमासि णं इंदभूइपामोक्खाणं चोइसण्हं समणसाहस्सीणं घण्णे अणगारे महादुक्करकारे चैव महाणिज्जरतराए चैव ॥

५६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, इमासि' ०णं इंदभूइपामोक्खाणं चोइसण्हं समण ०साहस्सीणं घण्णे अणगारे महादुक्करकारे चैव महाणिज्जरतराए चैव ?

भगवओ उत्तर-पदं

५७. एवं खलु सेणिया ! तेणं कालेण तेणं समएणं कायंदी नामं नयरी होत्था । घण्णे दारए उप्पि पासायवडेंसए' विहरइ ।

तए णं अहं अणया कयाई पुव्वाणुपुव्वीए चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव कायंदी नयरी जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागए । अहापडिक्खं ओगहं ओगिण्हत्ता संजमेणं' ०तवसा अप्पाणं भावेमाणे ० विहरामि । परिसा निगया । तहेव जाव' पव्वइए जाव' बिलमिव' ०पण्णगभूएणं अप्पाणेणं आहारं ० आहारेइ । घण्णस्स णं अणगारस्स' सरीरवण्णओ सव्वो जाव' तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ । से तेणट्ठेणं सेणिया ! एवं वुच्चइ 'इमासि णं इंदभूइपामोक्खाणं चोइसण्हं समणसाहस्सीणं घण्णे अणगारे महादुक्करकारे चैव महाणिज्जरतराए चैव ॥

सेणिएण घण्णस्स थवणा-पदं

५८. तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव घण्णे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छित्ता घण्णं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—घण्णे सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुपुण्णे' ०सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुकयत्थे' सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! ०कयलक्खणे सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीविय-फले त्ति कट्ठु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे

१. सं० पा०—इमासि जाव साहस्सीणं ।

२. पू०—अं ३।४-६ ।

३. सं० पा०—संजमेणं जाव विहरामि ।

४. अ० ३।११-२१ ।

५. अ० ३।२१-२७ ।

६. सं० पा०—बिलमिव जाव आहारेइ ।

७. अणगारस्स पादाणं (क, ख, ग, घ) ।

८. अ० ३।३१-५२ ।

९. सं० पा०—सुपुण्णे सुकयत्थे कयलक्खणे ।

१०. सकतत्थे (क); सकयत्थे (ख); कयत्थे (घ)

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिण-
पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउभूए,
तामेव दिसं पडिगए ॥

घण्णस्स सव्वट्ठसिद्ध-गमण-पदं

५६. तए णं तस्स घण्णस्स अणगारस्स अणया कयाइ पुठवरत्तावरत्तकाले धम्मजाग-
रियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अजभत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे
समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं^१ तवोकम्मेणं^२ घमणिसंतए जाए ।
जहा खंदओ^३ तहेव चित्ता । आपुच्छणं । थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं दुरुहइ ।
मासिया संलेहणा । नव मासा परियाओ जाव^४ कालमासे कालं किच्चा उड्ढं
चंदिमं^५—सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं जाव^६ नवयगेवेज्जविमाणपत्थडे
उड्ढं दूरं वीईवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । थेरा तहेव ओयरंति
जाव^७ इमे से आयारभंडए ॥

६०. भंतेति ! भगवं गोयमे तहेव आपुच्छति, जहा खंदयस्स भगवं वागरेइ जाव^८
सव्वट्ठसिद्धे विमाणे उववण्णे ॥

६१. घण्णस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पणत्ता ?
गोयमा ! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पणत्ता ॥

६२. से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ कहिं गच्छहिइ ? कहिं उववज्जहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्जिभहिइ बुज्जिभहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ
सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

६३. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^९ संपत्तेणं पढमस्स अजभय-
णस्स अयमट्ठे पणत्ते ॥

१,२. पू०—अ० ३।३० ।

३. अ० २।६६-६६ ।

४. अ० १।८ ।

५. सं० पा०—चंदिम जाव नवय० ।

६. अ० १।८ ।

७. अ० २।७० ।

८. अ० २।७१ ।

९. अ० ३।७५ ।

वीथं अजभयणं सुणक्खत्ते

सुणक्खत्त-पदं

६४. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं तच्चस्स वग्गस्स पढमस्स अजभय-
णस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दाच्चस्स णं भंते ! अजभयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
६५. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी नयरी । जियसत्तू राया ॥
६६. तत्थ णं काकंदीए नयरीए भद्दा नामं सत्थवाही परिवसइ—अड्डा ॥
६७. तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते सुणक्खत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-
पंचेदियसरीरे जाव' सुरूवे पंचधाइपरिक्खत्ते जहा धण्णे तहेव । वत्तीसओ
दाओ जाव' उप्पि पासायवडेंसए विहरइ ॥
६८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समोसरणं । जहा धण्णे तहा सुणक्खत्ते वि निग्गए ।
जहा थावच्चापुत्तस्स तहा निक्खमणं जाव' अणगारे जाए—इरियासमिए जाव'
गुत्तबंभयारी ॥
६९. तए णं से सुणक्खत्ते जं चेव दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे'
●भवित्ता अगाराओ अणगारियं० पव्वइए तं चेव दिवसं अभिग्गहं तहेव जाव'
बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं आहारं आहारेइ, आहारेत्ता संजमेणं' ●तवसा
अप्पाणं भावेमाणे० विहरइ ॥
७०. सामी बहिया जणवयविहारं विहरइ । एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, संजमेणं
तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१. ओ० सू० १४३ ।
२. अ० ३।६६ ।
३. ना० १।५।२८-३५ ।
४. अ० ३।२१ ।

५. सं० पा०—मुंडे जाव पव्वइए ।
६. अ० ३।२२-२७ ।
७. सं० पा०—संजमेणं जाव विहरइ ।

७१. तए णं से सुणक्खत्ते अणगारं तेणं ओरालेणं' तवोकम्मेणं' जहा खंदओ' अईव-
अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥
७२. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया ।
सामी समोसडे । परिसा निग्गया । राया निग्गओ । धम्मकहा । राया पडिगओ ।
परिसा पडिगया ॥
७३. तए णं तस्स सुणक्खत्तस्स अणगारस्स अणया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले
धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए
संकप्पे समुप्पज्जित्था, जहा खंदयस्स । बहू वासा परियाओ । गोयमपुच्छा ।
तहेव कहेइ जाव' सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे । तेत्तीसं सागरोवमाइं
ठिई' । महाविदेहे वासे सिज्झिहइ ॥

३-१० अज्झयणाणि

इसिदासावि-पदं

७४. एवं सुणक्खत्तगमेणं सेसा वि अट्ठ अज्झयणा भाणियव्वा, नवरं—आणुपुव्वीए
दोण्णि रायगिहे, दोण्णि साकेते, दोण्णि वाणियग्गामे, नवमो हत्थिणपुरे, दसमो
रायगिहे । नवण्हं भद्दाओ जणणीओ । नवण्ह वि वत्तीसओ दाओ । नवण्हं
निक्खमणं थावच्चापुत्तस्स सरिसं' । वेहल्लस्स पिया करेइ' । छम्मासा वेहल्लए ।
नव धण्णे । सेसाणं बहू वासा । मासं सलेहणा । सव्वट्ठसिद्धे । सव्वे महाविदेहे
सिज्झिहसंति ॥

निक्खेव-पदं

७५. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सहसंबुद्धेणं
लोगणाहेणं लोगप्पदीवेणं' लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं सरणदएणं चक्खुदएणं
मग्गदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं' धम्मवरचाउरंतचक्कवट्ठिणा अप्पडिहय-
वरणाणदंसणधरेणं जिणेणं जाणएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयएणं तिण्णेणं
तारएणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइनामधेयं
ठाणं संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

१,२. पू० ३।३० ।

३. अ० २।६४ ।

४. अ० २।६६-७१ ।

५. ठिई से ण भते (क, ख, ग, घ) ।

६. पू०—ना० १।५।२२-३३ ;

७. 'निक्खमणं' इति शेषः ।

८. × (ख) ।

९. × (क) ।

परिसेसो

अणुत्तरोववाइयदसाणं एगो सुयखंधो । तिणिण वग्गा । तिसु चेव दिवसेसु
उद्दिंसिज्जंति । तत्थ पढमे वग्गे दस उद्देसगा । बिइए वग्गे तेरस उद्देसगा ।
तइए वग्गे दस उद्देसगा । सेसं जहा नायाघम्मकहाणं तहा नेयव्वं ॥

ग्रन्थ परिमाण

कुल अक्षर—६६५४

अनुष्टुप् श्लोक—३११ अ० २

पणहावागरणाइं

पढमं अज्जकयणं

पढमं आसवदारं

उत्तेव-पदं

१. जंबू'

इणमो' अण्हय-संवर-विणिच्छयं' पवयणस्स निस्संदं ।

वोच्छामि णिच्छयत्थं, सुहासियत्थं महेसीहि ॥१॥

वृत्तिकारेण पुस्तकान्तरवर्ती उपोद्घातग्रन्थः
उल्लिखितः । तत्र 'जंबू' इति पदं युक्तमस्ति ।
किञ्च तस्मिन् प्रस्तुतसूत्रस्य प्रारम्भः मुधमं-
जम्बू-संवादपूर्वकः कृतोस्ति । किन्तु वृत्तिकृता
स्वीकृते पाठे मुधमंस्वामिनो नास्ति कोपि
उल्लेखः । तं विना केवलं 'जंबू' इति पदं
कथं युक्तं स्यात् ? इति सम्भाव्यते
पुस्तकान्तरवर्त्युपोद्घातग्रन्थस्य सम्बन्धि
'जंबू' पदं प्रस्तुतवाचनायामपि प्रविष्टम् ।
पुस्तकान्तरेषु उपोद्घातग्रन्थ उपलभ्यते,
यथा—

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी
होत्था । पुण्णभट्टे चेइए । वणसंडे ।
असोगवरपायवे । पुढविसिलापट्टए । तत्थणं
चंपाए नयरीए कोणिए नामं राया होत्था ।
धारिणी देवी । तेणं कालेणं तेणं समएणं
समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवामी

अज्जसुहम्मे नामं थेरे—जाइसंपण्णे कुल-
संपण्णे बनसंपण्णे रुवमंपण्णे विणयमंपण्णे
नाणसंपण्णे दंसणसंपण्णे चरित्तसंपण्णे
लज्जामंपण्णे लाघवसंपण्णे ओयंसी तेयंसी
वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए
जियलोभे जियनिहे जिइंदिए जियपरीसहे
जीवियास-मरण-भय-विप्पमुक्के तवप्पहाणे
गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे
निच्छयप्पहाणे अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे
लाघवप्पहाणे खंतिप्पहाणे गुत्तिप्पहाणे
मुत्तिप्पहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे वेयप्पहाणे
नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे
सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे
चरित्तप्पहाणे चोद्दसपुब्बी चउनाणोवगए
पंचहि अणगारसएहि सद्धि संपरिवुडे पुब्बा-
णुपुब्बि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे
जेणेव चंपा नगरी तेणेव उवागच्छइ जाव

पंचविहो पण्णत्तो, जिणेहिं इह अण्हओ अणादीओ ।
 हिंसा - मोसमदत्तं, अण्णंभ - परिग्गहं चेव ॥२॥
 जारिसओ, जंनामा, जह य कओ जारिसं फलं देति ।
 जेवि य करेति पावा, पाणवहं तं निसामेह ॥३॥

पाणवहस्स सरूव-पदं

२. पाणवहो नाम एस निच्चं जिणेहिं भणिओ—पावो चंडो रुद्धो खुद्धो साहसिओ^१
 अणारिओ निग्घणो निस्संसो महब्भओ पइभओ अतिभओ बीहुणओ तासणओ
 अणज्जो^२ उव्वेयणओ य निरवयक्खो निद्धम्मो निप्पिवासो निक्कलुणो निरय-

अहापडिक्खं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं
 तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति । परिंसा
 निग्गया । धम्मो कहिओ । जामेव दिंस्सि
 पाउब्भूया तामेव दिंस्सि पडिगया ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स
 थेरस्स अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे
 कासव गोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव संखित्त-
 विपुलतेयलेस्से अज्जसुहम्मस्स थेरस्स
 अदूरसामते उद्धंजाणू जाव संजमेणं तवसा
 अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तए णं से अज्जजंबू जायसइहे जायसंसए
 जायकोउहल्ले, उप्पणसइहे ३, संजायसइहे
 ३, समुप्पणसइहे ३, उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता
 जेणेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छित्ता अज्जसुहम्मं थेरं तिवक्खुत्तो
 आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ
 नमंसइ, नमंसित्ता नच्चासन्ने नाइदूरे विणएणं
 पज्जनिपुडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जइ
 णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव
 संपत्तेणं णवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइय-
 दसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं अंगस्स
 पण्हावागरणाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के
 अट्ठ पण्णत्ते ?

जंबू ! दसमस्स अंगस्स समणेणं जाव
 संपत्तेणं दो सुयक्खंघा पण्णत्ता अण्हयदारा
 य संवरदारा य । पढमस्स णं भंते ! सुयक्खं-
 घस्स समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्जभयणा
 पण्णत्ता ?

जंबू ! पढमस्स णं सुयक्खंघस्स समणेणं
 जाव संपत्तेणं पंच अज्जभयणा पण्णत्ता ।
 दोच्चस्स णं भंते ! एवं चेव । एएसि णं
 भंते ! अण्हय-संवरणां समणेणं जाव
 संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

ततेणं अज्जसुहम्मे थेरे जंबूनामेणं अणगारेणं
 एवं वुत्ते समाने जंबूअणगारं एवं वयासी—
 जंबू ! इणमो इत्यादि ॥ (वृ) ।

३. विणिच्छियं (घ) ।

१. मोसादत्तं (क) ।

२. जण्णामा (क) ।

३. पाणिबहं (ग) ।

४. साहस्सिओ (ग) ।

५. व्याकरणदृष्ट्या 'अण्णज्जो' इति पदं युक्त
 स्यात् ।

वास-गमण-निघणो मोह-महोभय-पवड्डो 'मरण वेमणंसो' पठमं अधम्म-दारं ॥

पाणवहस्स तीसनाम-पदं

३. तस्स य नामाणि इमाणि गोण्णाणि होति तीसं, तं जहा—१. पाणवहुम्मूलणा' सरीराओ ३. अवीसंभो ४. हिंसविहिंसा तथा ५. अकिच्चं च ६. घायणा ७. मारणा य ८. वहणा ९. उद्दवणा' १०. तिवायणा' य ११. आरंभ-समारंभो १२. 'आउयकम्मस्स उवद्दो' [भेय-णिट्ठवण-गालणा य संवट्ठग-संखेवो'] १३. मच्चू १४. असंजमो १५. कडग-मद्दणं १६. वोरमणं १७. परभव-संकाम-कारओ १८. दुग्गतिप्पवाओ १९. पावकोवो य २०. पावलोभो" २१. छविच्छेओ" २२. जीवियंतकरणो २३. भयंकरो २४. अणकरो" २५. वज्जो" २६. परितावण-अण्हओ २७. विणासो २८. निज्जवणा" २९. लुपणा" ३०. गुणाणं विराहणत्ति ।

अवि य तस्स एवमादीणि नामधेज्जाणि होति तीसं पाणवहस्स कलुसस्स कडुयफल-देसगाइं ॥

पाणवहस्स पगार-पदं

४. तं च पुण करंति केई पावा असंजया अविरया अणिहुय-परिणाम-दुप्पयोगी"

१. पयद्दओ (क, ग); पयट्ठओ (क्व);
प्रकर्षकः (वृ); वृत्तिकारेण 'प्रकर्षकः
प्रवर्तकः' इत्युल्लेखः कृतः । उत्तरवर्त्यादिशेषु
'प्रवर्तक' पदस्याधारेण 'पयट्ठओ' इति
पाठः प्रचलितोभूत् । पवड्डओ (वृपा) ।

२. मरण वेमणसो (ख, ग); मरणावेमणस्सो
(वृ); वृत्तिकारेण असौ पाठ एकपदत्वेन
व्याख्यातः, किन्तु अस्माभिः 'एस मारे'
(१।२४) इति आचाराङ्गसूत्रसन्दर्भेण
पृथक्पदत्वेन गृहीतः ।

३. × (क) ।

४. × (क) ।

५. पाणवहं उम्मूलणा (घ) ।

६. उद्दवण (क) ।

७. तिवायणा (क) ।

८. °कम्मस्सुवद्दो (क, ख) ।

९. अत्र कोष्ठकवर्तीनां भेदादिपदानि 'उवद्द'

पदस्य पर्यायवाचित्वेन निर्दिष्टानि सन्ति,

यथा—आउयकम्मस्स भेओ

" णिट्ठवणं

" गालणा

" संवट्ठगो

" संखेवो ।

वृत्तिकारेणापि लिखितमिदम् - एतेषां च
उपद्रवादीनामेकतरस्यैव गणनया नाम्नां
त्रिंशत् पूरणीयाः ।

१०. पावलो (वृ) ।

११. छविच्छेयकरो (वृ) ।

१२. अणकरो य (ग) ।

१३. सावज्जो (वृपा) ।

१४. निज्जवणो (ग) ।

१५. लुपणो (घ) ।

१६. एवमातीणि (ग) ।

१७. दुप्पओया (क) ।

पाणवहं भयंकरं बहुविहं परदुक्खुप्पायणप्पसत्ता इमेहि तसथावरेहि जीवेहि पडिणिविट्ठा, 'कि ते' ? —

५. पाठीण^१-तिमि^२-तिमिगिल-अणगेभस-विहजातिमंदुक्क-दुविहकच्छभ-णक्क-मगर-दुविहगाह-दिलिवेढय-मंदुय^३-सीमागर^४-पुलुय-सुंभार-बहुप्पगारा^५ जलयरविहाणाकते^६ य एवमादी ॥
६. कुरंग-रु-सरभ-चमर-संबर-दुरभ^७-ससय-पसय-गोण-रोहिय^८-हय-गय-खर-करभ-खग-वानर-गवय-विग-सियाल-कोल^९-मज्जार-कोलसुणक^{१०}-सिरियंदलय-आवत्त^{११}-कोकंति-गोकण-मिय-महिस-वियघ-छगल-दीविय-साण-तरच्छ-अच्छ-भल्ल-सद्दूल-सीह-चिल्लला^{१२} चउप्पयविहाणाकए य एवमादी ॥
७. अयगर^{१३}-गोणस-वराहि-मउलि^{१४}-काओदर-दभपुप्फ-आसालिय^{१५}-महोरगा उरगविहाणाकए^{१६} य एवमादी ॥
८. छीरल-सरंब^{१७}-सेह-सल्लग^{१८}-गोघा-उंदुर^{१९}-णउल-सरड-जाहग-मुगुंस-खाडहिल-वाउप्पय^{२०}-घरोलिया^{२१} सिरिसिवगणे य एवमादी ॥
९. कादंबक^{२२}-बक-बलाका-सारस-आडासेतीय-कुलल-बंजुल-पारिप्पव-कीव^{२३}-सउण-दीविय^{२४}-हंस-घत्तरट्ट^{२५}-भास-कुलीकोस^{२६}-कोच^{२७}-दगतुड-ढेणियालगसूईमुह-कविल

१. बहुविहभयंकरं (वृ); भयंकरं (वृपा) ।
२. बहुविहबहुप्पयारं (क, ख,); बहुविहं बहुप्पगारं (ग, घ) ।
३. कथं तं प्राणवधं कुर्वन्तीत्यर्थः (वृ); तद्यथेति वा (वृपा) ।
४. पाठीण (क) ।
५. तिमि (क) ।
६. मंदुय (क); मंदुक (ख); मंदुय (ग, घ) ।
७. सीमागर (क) ।
८. बहुप्रकारश्चेति कर्मधारयोऽस्तस्तान् घ्नन्तीति वक्ष्यमाणेन योगः । इह च द्वितीयाबहुवचने-प्येकाराभावः छान्दसत्वात् (वृ) ।
९. जलचरविधानककृताश्च, इह च कशब्द-लोपेन विधानशब्दस्यान्तदीर्घत्वम् (वृ) ।
१०. उरभ (ख) ।
११. रोहिस (वृपा) ।
१२. कोक (वृपा) ।
१३. ० सुणका (क, ख, ग, घ) ।
१४. सिरिकंदलगावत्त (ख); श्रीकन्दलका आवत्ताश्च (वृ) ।
१५. चिल्लल (क, ख, ग, घ,); चित्तला (वृपा) ।
१६. अयकर (क, ख, ग, घ) ।
१७. माउलि (ख, ग, घ) ।
१८. यासालिय (ख, घ, च) ;
१९. महोरगारगविहाणगकए (ख, ग, घ, च) ।
२०. सरंग (ख, घ) ।
२१. सेल्लग (ख, ग, घ, च) ।
२२. गोघुंदर (क, ख, ग) ।
२३. वाउप्पिय (ख, घ) ।
२४. घरोलिय (क, ख, ग); घरोलिय (घ) ।
२५. कादंबकीवक (क) ।
२६. कीर (ग) ।
२७. पिपिय (क); दीपिय (ग); पीपिय (वृ) ।
२८. घत्तरिट्ट (ख) ।
२९. कुडीकोस (ग) ।
३०. कुंघ (ख, घ) ।

पिंगलक्खग^१ - कारंडग^२ - चक्कवाग-उक्कोस- गरुल-पिंगुल^३-सुय-वरहिण^४- मयण-
साल-नंदीमुह-नंदमाणग-कोरंग-भिंगारग-कोणालग - जीवजीवक^५-तित्तिर-वट्टक-
लावक- कपिजलक^६ - कवोतग - पारेवग^७ - चिडिग- ठिक्क - कुक्कुड-वेसर^८-मयूरग-
चउरग-हरपोंडरीय^९-सालग^{१०} - वीरल्ल-सेण- वायस- विहंगभेणासि-चास-वगुलि-
चम्मट्टिल-विततपक्खी खहयरविहाणाकते य एवमादी ॥

१०. जल-थल-खग-चारिणो उ^{११} पंचिदिए पसुगणे विय-तिय-चउरिदिए य^{१२} विविहे
जीवे, पियजीविए, मरणदुक्खपडिक्कूले वराए हणंति बहुसंकिलिट्टकम्मा^{१३} ॥

पाणवहस्स कारण-पदं

११. इमेहि विविहेहि कारणेहि, 'किं ते'^{१४} ? —

चम्म-वसा-मंस - मेय-सोणिय- जग- फिप्फिस - मत्थुलिंग^{१५} - हियय^{१६}-अंत - पित्त-
पोप्फस-दंतट्टा, अट्टि-मिज-नह-नयण-कण्ण-ण्हारुणि-नक्क-धमणि-सिंग-दाढि -
पिच्छ-विस-विसाण-वालहेउ^{१७} ॥

१२. हिंसंति य भमर-मधुकरिगणे रसेसु गिद्धा, तहेव तेइदिए सरीरोवकरणट्टयाए,
किवणे बेइदिए^{१८} बह्वे वत्थोहरपरिमंडणट्टा, अण्णेहि य एवमाइएहि बहूहि
कारणसतेहि अबुहा इह हिंसंति तसे पाणे ॥

१३. इमे य एगिदिए^{१९} वराए तसे य अण्णे तदस्सिए चेव तणुसरीरे समारंभंति—अत्ताणे
असरणे अणाहे अबंधवे कम्मनिगल^{२०}-बद्धे अकुसलपरिणाम-मंदबुद्धिजण-दुव्वि-
जाणए, पुढविमए पुढविसंसिए, जलमए जलगए, अणलाणिल-तणवणस्सतिगण-
निस्सिए य 'तम्मय-तज्जिए'^{२१} चेव तदाहारे तप्परिणत-वण्ण-गंध-रस-फास-
बोंदिरूवे अचक्खूसे चक्खूसे य तसकाइए असंखे ॥

१. पिंगलक्ख (क) ।

२. कारंड (घ, च) ।

३. पंगुल (ख, ग, घ, च) ।

४. वरिहिण (ख, ग, घ, च) ।

५. जीवक (क); जीवजीवक (क्व) ।

६. कपिजलक (क) ।

७. परिवयग (ख, घ, च) ।

८. मसर (क); विसर (च); मेसर (ग, घ) ।

९. हयपोंडरीय (ख, ग, घ, च) ,

१०. करकरल्लग (क); करकरग (ख, ग, घ, च);

करग (वृपा) ।

११. य (ग, च) ।

१२. × (क, ख, घ) ।

१३. सत्त्वा इति गम्यते (वृ) ।

१४. किं तत् प्रयोजनम् ? तद्यथेति वा (वृ) ।

१५. मत्थुलुंग (क, घ) ।

१६. हितय (क, घ, च) ।

१७. °हेउ (क, च) । 'हणंति बहुसंकिलिट्टकम्मा'
इति अध्याहर्तव्यमत्र ।

१८. बिदिए (ख) ।

१९. एगिदिए बह्वे (घ, च) ।

२०. °नियल (क) ।

२१. तन्मयजीवाश्चेति (वृपा) ।

१४. थावरकाए य सुहुम-बायर-पत्तेयसरीर-नाम-साधारणे अणंते हणंति अविजाणओ य परिजाणओ य जीवे इमेहि विविहेहि कारणेहि, 'किं ते' ? —
करिसण-पोक्खरणी'-वावि-वप्पिण-कूव-सर-तलाग-चित्ति-वेदि'-खातिय-आराम-विहार-थूभ-पागार-दार-गोउर'-अट्टालग-चरिय-सेतु-संकम'-पासायविकप्प-भवण-घर-सरण-लेण-आवण-चेतिय-देवकुल-चित्तसभ-पव-आयतण-आवसह-भूमिघर-मंडवाण य कए, भायण-भंडोवगरणस्स विविहस्स य अट्टाए पुढवि हिंसंति मंदबुद्धिया ॥
१५. जलं च मज्जणय-पाण-भोयण-वत्थधोवण-सोयमादिएहि ॥
१६. पयण-पयावण-जलावण'-विदंसणेहि अगणि ॥
१७. सुप्प-वियण-तालयंट'-पेहुण-मुह-करयल-सागपत्त वत्थमादिएहि अणिलं ॥
१८. अगार-परियार-भक्ख-भोयण-सयण-आसण-फलग-मुसल-उक्खल-तत-वितत-आतोज्ज-वहण-वाहण-मंडव-विविहभवण-तोरण-विडंग'-देवकुल-जालय-अट्ट-चंद-निज्जूह'-चंदसालिय-वेतिय'-णिस्सेणि-दोणि-चंगेरि-खील-मेढक-सभ-प्पव-आवसह-गंध-मल्ल-अणुलेवण-अंबर-जुय-नंगल-मइय'-कुलिय-संदण-सीया-रह-सगड-जाण-जोग-अट्टालग-चरिअ'-दार-गोपुर-फलह-जंत-सूलिय'-लउड-मुसुंढि'-सतग्घि-बहुपहरण-आवरण-उवक्खराण कते" । अण्णेहि य एवमादिएहि बहूहि कारणसतेहि हिंसंति ते" तरुणणे, भणियाभणिए य एवमादी सत्ते सत्तपरिवज्जिया उवहणंति दढमूढा दारुणमती ॥
१९. कोहा माणा माया लोभा 'हस्स रती अरती सोय' वेदत्थ-'जीव-धम्म-अत्थ-कामहेउ',
सवसा अवसा अट्टा अणट्टाए य तसपाणे थावरे य हिंसंति मंदबुद्धी ।
सवसा हणंति, अवसा हणंति, सवसा अवसा दुहओ हणंति ।

१. किं तन् तद्यथेति वा (वृ) ।

२. पोक्खरिणी (क, ग) ।

३. वेति (क, ख) ।

४. गोपुर (क, ग) ।

५. संकमण (ख) ।

६. एतदादिभिः कारणैरिति प्रक्रमः (वृ) ।

७. जलण जलावण (ख, च) ।

८. तालयंट (क, घ); तालवंट (ख); तालविंट (च) ।

९. विटंग (ख) ।

१०. निज्जूहण (घ) ।

११. वेदिय (वब) ।

१२. मलिय (क) ।

१३. चरित (क, ग) ।

१४. सूलय (क, ख, घ, वृपा); मूसलय (ग) ।

१५. मुसुंढि (क, घ) ।

१६. कए (क, ग, घ) ।

१७. × (क, ग) ।

१८. इह पंचमीलोपो ह्ययः ।

१९. जीयकामत्थधम्महेउ (क, ख, घ, च) ।

अट्टा हणंति, अणट्टा हणंति, अट्टा अणट्टा दुहओ हणंति ।
हस्सा हणंति, वेरा हणंति, रतीए' हणंति 'हस्सा वेरा रतीए' हणंति ।
कुद्धा हणंति, लुद्धा हणंति, मुद्धा हणंति, कुद्धा लुद्धा मुद्धा हणंति ।
अत्था हणंति, धम्मा हणंति, कामा हणंति, अत्था धम्मा कामा हणंति ॥

पाणवहस्स कत्तार-पठं

२०. कयरे' ? जे ते सोयरिया मच्छबन्धा साउणिया वाहा कूरकम्मा' 'दीवित'-
बन्धप्पओग - तप्प- गल - जाल - वीरल्लग - आयसीदब्भवग्गुरा - कूडछेलिहत्था'
हरिएसा ऊणिया' य वीदंसग-पासहत्था वणचरगा लुद्धगा य महुघात-पोतघाया
एणीयारा पएणीयारा सर-दह - दोहिअ - तलाग - पल्लल- परिगालण - मलण-
सोत्तबन्धण-सलिलासयसोसगा 'विस-गरलस्स य दायगा' उत्तण-वल्लर-दवग्गि-
णिद्वय-पलीवका ॥
२१. कूरकम्मकारी इमे य बहवे मिलक्खुया', के' ते ? —
सक जवण सवर बब्बर काय" 'मुरुंड उड्ड'" भडग निण्णग" पक्काणिय कुलक्ख
गोड" सीहल पारस कोंच अंध दविल चिल्लल" पुलिद आरोस डोंब पोक्कण"
गंधहारग वहलीय जल्ल रोम" मास" बउस मलया य चुंचुया य चूलिय
कोंकणगा" मेद" पल्लव" मालव मगर" आभासिया अणक्क चीण ल्हासिय खस

- | | |
|--|---|
| १. रती य (क, ख, ग, घ, च) । | ६. मिलक्खुजाती (क, ख, ग, घ, च) । |
| २. हस्सवेरा रती य (क, ख, ग, घ, च); अत्र
एकारपरिवर्तनेन यकारो जातः । अस्थाला-
पकस्यानुसारेण 'हस्सा वेरा रतीए' एष पाठ
उपयुक्तोस्ति, किन्तु लिपिकरणे परिवर्तनं
जातम्, तेन 'हस्सा' स्थाने 'हस्स' तथा
'रतीए' स्थाने 'रतीय' इति जातम् । | १०. किं (क, ख, ग, घ, च) ।
११. गाय (ख) ।
१२. मुरुंडोद (ख, ग, घ, च); मुरुंड-उद (वृ) ।
१३. भित्तिय (ख, ग); तित्तिय (वृ) ।
१४. गोंड (ख, ग, घ, च) ।
१५. °बिल्लल (ख, ग, घ, च, वृ) ।
१६. पोक्काण (क, ख, ग, घ) ।
१७. राम (क, ख) ।
१८. मोस (क्व) ।
१९. कोंकणग (क) ।
२०. मेत (क, ख, ग, घ, च) ।
२१. पल्लव (क, घ); पल्लव (ख, वृ) ।
२२. महुर (च, वृ) । |
| ३. कयरे ते (क); चन्तीति प्रश्नः (वृ) । | |
| ४. कूरकम्मा वाउरिया (ग, च, वृपा) । | |
| ५. दीविय (क); देविय (वृपा) । | |
| ६. अयमालापकः क्वचित् कथंचिद् दृश्यते (वृ);
°छेलियाहत्था (ग) । | |
| ७. कुणिका (क्व); साउणिया (वृपा) । | |
| ८. विसगरदायगा (क); विसगरलदायगा (ख);
विसगरस्स ° (घ) । | |

खासिय नेहर' मरहट्ट' मुट्टिय आरब डोंविलग कुहण केकय हूण रोमग रुह मरुगा' चिलायविसयवासी य पावमतिणो,
जलयर-थलयर-'सणहपय-उरग'-खहचर-संडासतोंड-जीवोवघायजीवी, सण्णी
य असण्णिणो य पज्जत्ता असुभलेस्सपरिणामा' ॥

२२. एते अण्णे य एवमादी करेति पाणातिवाय-करणं, पावा पावाभिगमा पावरुई'
पाणवहकयरती पाणवहरूवाणुट्ठाणा पाणवहकहासु अभिरमंता तुट्ठा पाव
करेत्तु होति य बहुप्पगारं ॥

पाणवहस्स फलविवाग-पवं

२३. 'तस्स य पावस्स फलविवागं अयाणमाणा वड्ढेति—महब्भयं अविस्साम-वेयणं
दीहकालबहुदुक्खसंकडं' नरय-तिरिक्ख-जोणि । इप्पो आउक्खए चुया'
असुभकम्मबहुला उववज्जंति नरएसु हुलितं—महालएसु, वयरामय-कुहु-रुंद-
निस्संधि - दारविरहिय' - निम्मद्व' - भूमितल-खरामस्स'-विसम-णिरयघर-
चारएसु', महोसिण-सयावतत्त'-दुग्गंध-विस्स-उव्वेयणगेसु" वीभच्छ'-दरिसणि-
ज्जेसु, निच्चं हिमपडलसोयलेसु", कालोभासेसु" य, भीम-गंभीर-लोमहरिसणेसु,
णिरभिरामेसु, निप्पडियार-वाहि-रोग-जरा-पीलिएसु", अतीवनिच्चंधकार-
तिमिसेसु," पतिभएसु, ववगय-गह-चंद-सूर-णक्खत्त-जोइसेसु, मेयवसामंसपडल-
पुच्छद-पूयरुहिरुक्किण-विलीण-चिक्कण-रसियावावण-कुहियचिक्खत्तलकद्दमेसु,
कुकूलानल"-पलित्त- जाल - मुम्मुर- असिक्खुरकरवत्तधार-सुनिसितविच्छुयडंक-

१. मेहर (ख, ग, च) ।

२. मढा (वृषा) ।

३. एतानि च प्रायोलुप्तप्रथमाबहुवचनानि ।

४. सणहप्फतोरग (क, ख, ग); सणफतोरग
(घ, च) ।

५. °परिणामे (क, ख, घ) ।

६. पावरुती (ख, घ, च) ।

७. °दुक्खवेयणं (क) ।

८. 'तस्स' इति पदादारभ्य 'चुया' इति पदान्तः
पाठः वृत्तिकारेण सर्वेषु आदर्शेषु नोपलब्धः,
यथा—तस्सेत्यादि सूत्रं च क्वचिदेव दृश्यते
(वृ) ।

९. पार° (क, घ); यार° (ग); वार° (च) ।

१०. निमद्व (ख, ग, घ, च) ।

११. खरामंस (क, घ); खरामस (ग, च);
खरामरिस (वव) ।

१२. °नारएसु (ख) ।

१३. सइयत्त (क) ।

१४. उव्वेयजणगेसु (क्व) ।

१५. विमत्थ (ख, ग) ।

१६. °सीयलेसु य (क, ग, घ, च) ।

१७. काला° (क) ।

१८. जलपीलिएसु (क); जरपीलिएसु (ग, घ) ।

१९. तिमिएसु (क) ।

२०. कुकूला° (क) ।

निवातोवम्म'-फरिस-अतिदुस्सहेसु, असाणसरण-कडुयदुक्खपरितावणेसु,
अणुबद्ध-निरंतरवेयणेसु, जमपुरिससंकुलेसु ॥

२४. तत्थ य अंतोमुहुत्तलद्धि-भवपच्चएणं निव्वत्तेति यं ते सरीरं, हुंडं वीभच्छ-
दरिसणिज्जं' वीहणगं अट्टि-ण्हारु-णह-रोमवज्जियं 'असुभगंध-दुक्खविसहं' ॥

२५. ततो य पज्जत्तिमुवगया इदिण्हि पंचहि वेदेति असुभाए वेयणाए उज्जल-बल-
विउल'-उक्कड-खर-फरुस-पयंड-घोर-वीहणग-दारुणाए, किं ते ?—

कंदुमहाकुंभियपयणपउलण-तवगतलणभट्टभज्जणाणि य, लोहकडाहकढणाणि
य, कोट्ट'-बलिकरण-कोट्टणाणि य, सामलितिकखग-लोहकंटक-अभिसरणाप-
सरणाणि' फालण-विदालणाणि' य, अवकोडकबंधणाणि' य', लट्टिसय-
तालणाणि य, गलगवलुल्लंघणाणि य, सूलगभेयणाणि य, आएसपवंचणाणि,
खिसणविमाणणाणि य, विघुट्टपणिज्जणाणि, वज्जसयमातिकाणि य ॥

२६. एवं ते पुव्वकम्मकयसंचयोवत्ता निरयग्गि-महग्गिसंपलित्ता गाढदुक्खं महब्भयं
कक्कसं असायं सारीरं माणसं च तिव्वं दुविहं वेदेति वेयणं, पावकम्मकारी
बहूणि पलिओवम-सागरोवमाणि कलुणं पालेति ते अहाउं' जमकाइय'
तासिता य सद्दं करेति भीया, किं ते ?—

अविभाव'-सामि-भाय-वप्प-ताय 'जियवं' मुय मे' मरामि दुब्बलो वाहि-
पीलिओहं, किं दाणिज्जि ?

एवं दारुणे णिह्मो य मा देहि मे पहारे, उस्सासेतं' मुहुत्तयं मे देहि, पसायं
करेहि', मा रूस, वीसमामि, गेविज्जं मंच' मे मरामि, गाढं तण्हाइओ' अहं
देहि पाणीयं,

१. °डंडक° (क, ख, ग, घ, च) ।

२. उ (ग, घ) ।

३. दुहरिसणिज्जं (ख, वृ) ।

४. असुभदुक्खविसहं (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।

५. तिउल (वृपा) ।

६. कोट्टिकिरिया (वृपा) ।

७. अहिसरणोसारणाणि (क); °सारणाणि
(ख, ग, घ, च) ।

८. विदारणाणि (क, ग) ।

९. अवकोडग° (ग) ।

१०. × (ख, घ, च) ।

११. अहाउयं (वृ) ।

१२. जमकातिय (क, ख, ग, घ, च) ।

१३. अविहाव (वृ) ।

१४. जितवं (ग) ।

१५. जियवम्मुय (ख, च) ।

१६. °नं (ख) ।

१७. करेह (ख, ग, घ, च, वृ) ।

१८. मुयह (क, ख, ग, घ, च) ।

१९. तण्हातिओ (ख, घ) ।

ता हंत' ! पिय इमं जलं विमलं सीयलं ति घेतूण य नरयपाला' तवियं तउयं
से देंति कलसेण भंजलीसु, दट्ठूण य तं पवेवियंगमंगा भंसुपगलंतपप्पुयच्छा
छिण्णा तण्हा' इयम्ह कलुणाणि' जंपमाणा, विप्पेक्खंता दिसोदिसं', भत्ताणा
असरणा अणाहा अभंघवा बंधुविप्पहूणा विपलायंति य मिगा व वेगेण
भयुब्धिग्गा', घेतूण बला पलायमाणां निरणुकंपा मुहं विहाडेत्तु लोहडंडेहि
कलकलं' ण्हं वयणंसि छुभंति केइ जमकाइया हसंता ।।

२७. तेण य दट्ठा संता रसंति य भीमाइं विस्सराइं, रुदंति' य कलुणगाइं पारेवतगा'
व, एवं पलवित-विलाव-कलुणो कंदिय-बहुएन्न-रुदियसट्ठो परिदेविय'-रुद्ध-
बद्धकारव-संकुलो णीसट्ठो "रसिय-भणिय-कुविय-उक्कूइय-निरयपालतज्जिय-
गेण्ह, क्कम, पहर, छिद, भिद, उप्पाडेहि, उक्खणाहि", कत्ताहि, विकत्ताहि य,
भंज", हण, विहण, विच्छुभोच्छुभ", 'आकट्ट, विकट्ट", किं ण जंपसि"? सराहि
पावकम्माइं दुक्कयाइं"—एवं वयणमहप्पगब्भो पडिसुयासह-संकुलो तासओ"
सया निरयगोयराण महानगर-डज्जमाण-सरिसो निग्घोसो सुच्चए" अणिट्ठो
तहियं नेरइयाणं जाइज्जंताणं जायणाहि, किं ते ?—

असिवणदब्भवणजंतपत्थरसूइतलखारवाविकलकलेंतवेयरणिकलंबवाल्याजलिय-
गुहनिरंभण-उसिणोसिणकंटइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहपहगमणवाहणाणि ।।

२८. इमेहिं विविहेहिं आयुहेहिं', किं ते ?—

मोग्गर मुसुंढि" करकच सत्ति हल गय मुसल चक्क कोंत तोमर सूल लउल
भिडिमाल सव्वल" पट्टिस चम्मेट्ट" दुहण मुट्ठिय असिखेडग खग चव नाराय

- | | |
|---|--|
| १. हंता (क्व) । | च, वृ); अत्र वृत्तेः पाठान्तरं मूलपाठत्वेन |
| २. निरयपाला (क्व) । | स्वीकृतम् । 'भुज्जो' इति पदापेक्षया 'भंज' |
| ३. तण्ह (क, ख, घ, च) । | इति पदं क्रियापदप्रयोगे प्रासङ्गिकमस्ति । |
| ४. वचनानीति गम्यते (वृ) । | १३. विच्छुभोच्छुभ (क); विच्छुभउच्छुभ (वृ); |
| ५. °दिसिं (क, घ) । | निच्छुभ° (वृपा) । |
| ६. भउब्धिग्गा (क) - | १४. आकट्ट विकट्ट (ख, ग, घ, च) । |
| ७. कलकल (ग, घ, च); त्रपुकमिति गम्यते । | १५. जानासि (वृपा) । |
| ८. रुयंति (क, ग); रुवंति (घ); रोवंति (च) । | १६. विहणओ तासणओ पइब्भओ अइब्भओ(वृपा) । |
| ९. °वयणा (क, ग) । | १७. सुच्चए (ख, ग, घ) । |
| १०. परिवेदिय (क, ख, घ); परिवेविय (वृपा) । | १८. आउहेहि° (क, ग) । |
| ११. उप्पाडेहुक्खणाहि (क); उप्पाडेहुक्खणाहि | १९. मुसुंढि (क) । |
| (ख, ग, घ, च) । | २०. सहल (वृ) । |
| १२. भुज्जो; भुज्जो (क); भुज्जो (ख, ग, घ, च) । | २१. चम्मेड (क, घ) । |

कणक कप्पणि वासि परसु टंकतिक्ख निम्मल', अण्णेहि य एवमादिएहि
असुभेहि वेउव्विएहि पहरणसतेहि अणुबद्धतिव्ववेरा परोप्परं वेयणं उदीरेति
अभिहणंता ॥

२९. तत्थ य मोग्गरपहारचुण्णिय-मुसुंढिसंभग्गमहितदेहा जंतोपीलण'-फुरंत-कप्पिया
केइत्थ सचम्मका विगत्ता णिम्मूलुल्लूण'-कण्णोट्टणासिका छिण्हत्थपादा असि-
करकय-तिक्खकोत-परसु-प्पहारफालिया' वासीसंतच्छित्तंगमंगा कलकलखार-
परिसित्त-गाढड्ढंत्तंगत्ता कुंतगाभिण्ण-जज्जरिय-सव्वदेहा विलोलंति महीतले
विसुण्णियंगमंगा' ।

तत्थ य विग-मुणग-सियाल-काक-मज्जार - सरभ-दीविय-वियग्घ-सद्दूल-सीह-
दप्पिय-खुहाभिभूतेहि णिच्चकालमणसिएहि घोरासमाणभीमरूवेहि अक्कमित्ता
दढदाढागाढडक्कड्डिय' - सुतिक्खनहफालियउद्धदेहा विच्छिप्पंते समंतओ
विमुक्कसंधिबंधणा वियंगिमंगा ।

कंक-कुरर-गिद्ध-घोरकट्टवायसगणेहि य पुणो खरथिरदढणक्ख-लोहतुंडेहि
ओवत्तिता पक्खाह्य-'तिक्खणक्खविक्खित्तजिब्भ-अंछियनयण'-निद्योलुग्ग-
विगतवयणा', उक्कोसंता य, उप्पयंता निपतंता भमंता पुव्वकम्मोदयोवगता
पच्छाणुसएण' ड्ढमाणा, णिंदंता पुरेकडाइं कम्माइं पावगाइं, तहिं-तहिं तारि-
साणि'' ओसण्णचिक्कणाइं दुक्खाइं अणुभवत्तिता, ततो य आउक्खएणं उव्वट्टिया
समाणा बह्वे गच्छंति तिरियवसहिं—दुक्खुत्तारं'' सुदारुणं जम्मण-मरण-जरा-
वाहि-परियट्टणारहट्टं जलथलखहचर-परोप्पर-विहिसणपवंचं ॥

३०. इमं च जगपागडं'' वराका दुक्खं पावेति'' दीहकालं, किं ते ?—

सीउण्हत्तण्हल्लुह्वेयण-अप्पडीकारअडविजम्मण-णिच्चभउव्विग्गवास- जग्गणवध-
बंधण-तालणंकण''-निवायण-अट्ठिभंजण-नासाभेय''-प्पहार-दूमण-छविच्छेयण-
अभिओगपावण - कसंकुसार''-निवाय - दमणाणि वाहणाणि य, मायापिति-

१. ततस्तैरिति व्याख्येयम्, तृतीया बहुवचन-
लोपदर्शनात् (वृ) ।

२. °पिलुण (ख, च) ।

३. °ल्लूय (क) ।

४. °फालिय (वृ); वृत्तिकारेण विभक्तिरहितं
पदं लब्धम् । तेन अग्रिमपदेन सह समासः
सूचितः ।

५. निग्गयग्गजीहा (वृपा) ।

६. दिढ (क) ।

७. °जिब्भंछिय° (क, ख, ग, घ, च) ।

८. ओलुत्तविगयगत्ता (वृपा) ।

९. पच्छणुसएण (ख, ग, घ) ।

१०. तारिसाहिं (क) ।

११. दुक्खुत्तरं (ख) ।

१२. °पगडं (ख, ग, च) ।

१३. पावेति (क, ख, घ, च) ।

१४. ताडणंकण (च) ।

१५. नासाभेद (ख, घ, च) ।

१६. कस+अंकुश+आर ।

विष्पयोग - सोयपरिपीलणाणि य, सत्थगिगविसाभिघाय' - गलगवलाबलण-
मारणाणि य, गलजालुच्छिपणाणि' पउलण-विकप्पणाणि य, जावज्जीविग-
बंधणाणि पंजर-निरोहणाणि य, सज्जूह'-निद्धाडणाणि घमणाणि दोहणाणि
य, कुडंड'-गलबंधणाणि वाड'-परिवारणाणि' य, पंकजलनिमज्जणाणि बारिप्प-
वेसणाणि य, ओवायणिभंग-विसमणिवडण"-दवगिगजाल-दहणाइयाइं ॥

३१. एवं ते दुक्खसय-संपलित्ता नरगाओ आगया इहं सावसेसकम्मा तिरिक्ख-
पंचेंदिएसु पावन्ति पावकारी कम्माणि पमाद-राग-दोस-बहुसंचियाइं अतीव-
अस्साय'-कक्कसाइं ॥
३२. भमर-मसग-मच्छियाइएसु' य जाई"-कुलकोडिसयसहस्सेहिं नवहिं चउरिदियाण
तहि-तहिं चेव जम्मण"-मरणाणि अणुभवन्ता कालं संखेज्जकं भमन्ति नेरइय-
समाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-घाण-चक्खुसहिया ॥
३३. तहेव तेइंदिएसु—कुंथु"-पिपीलिका-अवधिकादिकेसु" य जाती-कुलकोडिसय-
सहस्सेहिं अट्ठहिं अणूणएहिं तेइंदियाण तहि-तहिं चेव जम्मण-मरणाणि अणुहवन्ता
कालं संखेज्जकं भमन्ति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण"-घाण-संपउत्ता ॥
३४. 'तहेव बेइंदिएसु'"-गंडूलय"-जलुय"-किमिय-चंदणगमादिएसु य जाती-कुलकोडि-
सयसहस्सेहिं सत्तहिं अणूणएहिं बेइंदियाण तहि-तहिं चेव जम्मण-मरणाणि
अणुहवन्ता कालं संखेज्जकं भमन्ति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिस-रसण-
संपउत्ता ॥
३५. पत्ता एगिदियत्तणं पि य—पुढवि-जल-जलण-मारुय-वणप्फति-सुहुम-बायरं च
पज्जत्तमपज्जत्तं पत्तेयसरीरणामसाहारणं च । पत्तेयसरीरजीविएसु य, तत्थवि
कालमसंखेज्जगं भमन्ति, अणंतकालं च अणंतकाए फासिदियभाव-संपउत्ता
दुक्खसमुदयं इमं अणिट्ठं पावन्ति" पुणो-पुणो तहि-तहिं चेव परभव-तरुणगहणे"

१. °विसघाय (क) ।

१०. जाइ (ग, च) ।

२. °लुंछिपणाणि (क); °छुपणाणि (ग); °छिपणाणि (च) ।

११. जणण (क) ।

१२. जंतु (क) ।

३. सयूह (ग) ।

१३. अवहिकाइकेसु (ख, घ, च) ।

४. कुडंड (ख, ग, च) ।

१४. रस (क) ।

५. वाडग (ग, घ, च) ।

१५. × (क, ख, च) ।

६. परियालणाणि (क) ।

१६. गंडूल (क, ग, घ, च) ।

७. विसमपडण (क) ।

१७. जलूय (ग) ।

८. असाय (ग, च) ।

१८. पावन्ति (ग); पावन्ति (च) ।

९. मच्छिमाइएसु (ख, घ); मच्छिगाइ ° (ग, च) ।

१९. तरुणगणे (बू); तरुणगहणे (बृपा) ।

कोट्टालकुलियदालण-सलिलमलण-खुंभण-रंभण-अणलाणिल-विविहसत्थघट्टण-
परोप्पराभिहणण-मारणविराहणाणि य अकामकाइं परप्पओगोदीरणाहिं य
कज्जप्पओयणेहिं य पेस्सपसु-निमित्तं ओसहाहारमाइएहिं उक्खणण-उक्कत्थण-
पयण-कोट्टण-पीसण-पिट्टण-भज्जण-गालण-आमोडण-सडण-फुडण-भंजण-
छेयण-तच्छण-विलुंचण-पत्तज्जोडण-अग्गिदहणाइयाति ॥

३६. एवं ते भवपरंपरादुक्खसमणुवद्धा अडंति संसार-वीहणकरे जीवा पाणाइवाय-
निरया अणंतकालं ॥
३७. जेवि य इह माणुसत्तणं आगया कंहंचि नरगाओ उव्वट्टिया अघण्णा, ते वि य
दीसंति पायसो विकय-विगल-रूवा खुज्जा वडभा य वामणा य बहिरा काणा
कुंटा य पंगुला 'विअला य मूका य' मम्मणा य अंधिल्लग'-एगच्चक्खुविणिह्य-
सच्चिल्लया' बाहिरोगपीलिय-अप्पाउय - सत्थवज्झ-वाला कुलक्खणुविकण्णदेह-
दुब्बल-कुसंधयण-कुप्पमाण-कुमंठिया कुरूवा किविणा य हीणा हीणसत्ता'
निच्चं साक्खपरिवज्जिया अमुह-दुक्खभागी णरगाओ उव्वट्टिया इहं सावसेस-
कम्मा ॥
३८. एवं णरग-तिरिक्खजोणि कुमाणुसत्तं च हिंडमाणा पार्वंति अणंतकाइं दुक्खाइं
पावकारी ॥
३९. एसो सो पाणवहस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ अप्पमुहो बहुदुक्खो
महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चती, न
य अवेदयित्ता' अत्थि हु मोक्खोत्ति"—एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो
उ वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य पाणवहस्स फलविवागं ॥

निगमण-पदं

४०. एसो सो पाणवहो" चंडो रुद्धो खुद्धो अणारिओ निग्घिणो निस्संसो महब्भओ
वीहणओ" तासणओ" अणज्जो" उव्वेयणओ" य निरवयक्खो" निद्धम्मो

१. °पयोगो° (ख, ग, च) ।

२. °यणाहि (क) ।

३. नरगा (ख, ग, घ, च) ।

४. अवि य जलमूया (वृषा) ।

५. अंधेल्लग (क) ।

६. सपिसल्लया (वृषा) ।

७. दीणा निस्सत्ता (क) ।

८. ततः प्राणीति शेषः (वृ) ।

९. तमिति शेषः (वृ) ।

१०. अस्मादिति शेषः (वृ) ।

११. पाणिवधो (ख, ग, घ, च) ।

१२. बीभणओ (क, ग); बीभाणओ (ख, घ) ।

१३. तासओ (क, ख, ग, घ) ।

१४. द्रष्टव्यम्—प० ११२ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

१५. उव्वेयणओ (क, ख, ग, घ, च) ।

१६. गिरावकंखो (ख) ।

निप्पिवासो निक्कलुणो निरयवास-गमण-निघणो' मोह-महब्भय-पवड्डभो' मरण
वेमणसो' । पढमं अहम्मदारं समत्तं ।

—त्ति वेमि ॥

१. निबंघणो (क) ।

२. पयट्टभो (क, ख); पयट्टभो (ग, घ) ।

३. वेमणस्सो (ख, ग, घ, च); द्वितीयसूत्रवर्तीनि

एतानि विशेषणानि अत्र न सन्ति, वृत्तिकारे-
णापि न व्याख्यातानि—साहसिभो पद्मभो
अतिमभो ।

बीअं अज्भयणं

बीअं आसवदारं

उक्तेव-पदं

१. जंवू ! बितियं च' अलियवयणं—लहुसगलहु-चवल-भणियं भयंकर-दुहकर-अयसकर-वेरकरगं अरतिरति-रागदोस-मणसंकिनेस-वियरणं अलिय-नियडि-साति-जोयवहुलं नीयजण-निसेवियं निसंसं' अप्पच्चयकारकं परमसाहु-गरह-णिज्जं परपीलाकारकं परमकणह्लेस्ससहियं' दुग्गइविणिवायवहुणं' भव-पुणब्भवकरं चिरपरिचियमणुगतं दुरंतं' । बितियं अधम्मदारं ॥

अलियवयणस्स तीसनाम-पदं

२. तस्स य नमाणि गोष्णाणि होंति तीसं, तं जहा—१. अलियं २. सढं ३. अणज्जं ४. मायामोसो' ५. असंतकं ६. कूडकवडमवत्थु ७. निरत्थयमवत्थगं च ८. विद्देसरहणिज्जं ९. अणुज्जगं' १०. कक्कणा य ११. वंचणा य १२. मिच्छापच्छाकडं च १३. साती १४. ओच्छन्नं' १५. उक्कूलं' च १६. अट्टं' १७. अब्भवस्साणं च १८. किब्बिसं १९. वलयं २०. गहणं च २१. मम्मणं च २२. नूमं २३. नियती' २४. अप्पच्चओ २५. असमओ २६. असच्चसंधत्तणं २७. विवक्खो २८. अवहीयं' २९. उवहि-असुद्धं ३०. अवलोवो त्ति ।

१. × (ख, ग) ।

२. निस्संसं (ग) ।

३. °लेससहियं (क) ।

४. °पवहुणं (क) ।

५. दुरंतं कीर्तितं (ख, ग, घ, ञ) ।

६. मायामोहं (क) ।

७. अणज्जुगं (घ) ।

८. ओत्थत्तं (क, वृपा) ।

९. उक्कूलं (वृपा) ।

१०. आट्टं (ख) ।

११. नियडी (ग, ञ) ।

१२. आणाइयं (वृपा) ।

अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं सावज्जस्स
अलियस्स वइजोगस्स अणेगाई ॥

अलियवयणस्स पगार-पदं

३. तं च पुण वदंति केई अलियं पावा अस्संजया अविरया कवडकुडिल-कडुय-
चडुलभावा' कुद्धा लुद्धा 'भया य' हस्सट्टिया' य सक्खी चोरा चारभडा
खंडरक्खा जियजूईकरा' य गहिय-गहणा कक्कगुरुग'-कारगा कुलिगी उवहिया
वाणियगा य कूडतुला' कूडमाणी कूडकाहावणोवजीवी पडकार-कलाय-
कारुइज्ज। वंचणपरा चारिय-चडुयार'-नगरगुत्तिय'-परिचारग-दुट्टवायि-सूयक-
अणवलभणिया य पुव्वकालियवयण-दच्छा साहसिका लहुस्सगा असच्चा
गारविया असच्चट्टावणाहिचित्ता उच्चच्छंदा अणिग्गहा अणियता छंदेण मुक्क-
वायी भवंति अलियाहि जे अविरया ॥
४. अवरे नत्थिकवादिणो वामलोकवादी भणंति—सुणंति'। नत्थि जीवो । न जाइ
इह 'परे वा' लोए । न य किंचिवि फुसति पुण्णपावं । नत्थि फलं सुकय-दुक्क-
याणं । पंचमहाभूतियं सरीरं भासंति ह' वातजोगजुत्तं । पंच य खंधे भणंति
केई । मणं च मणजीविका वदंति । वाउजीवोत्ति एवमाहंसु । सरीरं सादियं
सनिधणं इह भवे 'एगे भवे' १, तस्स विप्पणासम्मि' सव्वनासोत्ति—एवं जंपंति
मुसावादी ॥
५. तम्हा दाणव्वय'-पोसहाणं तव-संजम-बंभचेर-कल्लाणमाइयाणं नत्थि फलं,
नवि'य पाणवह-अलियवयणं, न चेव चोरिक्ककरण-परदारसेवणं' वा सपरिग्गह-
पावकम्मकरणं पि नत्थि किंचि', न नेरइय-तिरिय-मणुयाण जोणी, न देवलोगो
वत्थि, न य अत्थि सिद्धिगमणं, अम्मापियरो वि नत्थि, नवि अत्थि पुरिसकारो,

१. चटुल० (ख, ग, घ, च) ।

७. चाटुयार (ख); चटुयार (ग, च) ।

२. अस्मिन्कृतृपदप्रकरणे वृत्तिकृता चतुर्थ्यन्त
पञ्चम्यन्तं वा व्याख्यातं 'भया य' इति पदं
नैव संगच्छते । सम्भवतः 'भयट्टा' अथवा
'भयट्टा य' इति पदं आसीत्, किन्तु लिपि-
करणक्रमे परिवर्तितमिवाभाति ।

८. नगरगोत्तिय (ग) ।

९. जगदिति गम्यते (वृ) ।

१०. परेच्च (क, च); परिच्च (घ) ।

११. हे (वृ) ।

१२. × (ख, ग, च) ।

१३. विप्पणासे (क); विप्पणासंसि (च)

१४. दाणवत (क, च) ।

१५. नेवि (ख, च) ।

१६. परदारा० (क) ।

१७. किपि (क, च) ।

३. हस्सट्टि (क); हस्सट्टाय (वृपा) ।

४. ० जुयकरा (ख) ।

५. ० कुरुग (क); ० कुरग (ख, ग, च);
० कुरुग (घ) ।

६. कूडतुल (ग) ।

पच्चक्खाणमवि नत्थि, नवि अत्थि कालमच्चू, अरहंता चक्कवट्ठी बलदेव-
वासुदेवा नत्थि, नेवत्थि केइ रिसओ, धम्माधम्मफलं च नवि अत्थि किञ्चि
बहुयं च थोवं' वा ।

तम्हा एवं विजाणिऊणं जहा सुवहु-इंदियाणुकूलेसु सब्बविसएसु वट्टह । नत्थि
काइ किरिया वा अकिरिया वा - एवं भणंति नत्थिकवादिणो वामलोगवादी ॥

६. इमं पि विइयं कुदंसणं असवभाववाइणो पण्णवेति मूढा—संभूतो अंडकाओ
लोको । सयंभुणा सयं च निम्मिओ । एवं एतं अलियं, पयावइणा इस्सरेण य
कयं ति केई' । एवं विण्हुमयं कसिणमेव य जगं ति केई ॥

७. एवमेके वदंति मोसं—एको आया अकारको वेदको य मुकयस्स दुक्कयस्स य
करणाणि कारणाणि सब्बहा सब्बहि च निच्चो य निक्किओ निग्गुणो य अणु-
वलेवओत्ति' वि य ॥

८. एवमाहंसु असवभावं—जंपि इहं किञ्चि जीवलोके दीसइ मुकयं वा दुक्कयं वा
एयं जदिच्छाए वा, सहावेण वावि दइवतप्पभावओ वावि भवति, 'नत्थेत्थ
किञ्चि कयकं तत्तं' ।

लक्खण-विहाण नियती य कारिया—एवं केइ जंपंति इड्डिरससातगारवपरा,
बहवे करणालसा परूवेति धम्मवीमंसएणं मोसं ॥

९. अवरे अहम्माओ रायदुट्ठं अवभक्खाणं भणंति अलियं—चोरोत्ति' अचोरियं
करेंतं, डामरिओत्ति वि य एमेव उदासीणं, दुस्सीलोत्ति य परदारं गच्छन्ति
मइलिति सीलकलियं, अयंपि गुरुत्तप्पओत्ति, अण्णे एवमेव भणंति उवहणंता',
मित्तकलत्ताइं सेवंति अयंपि लुत्तधम्मो, इमो वि वीसंभघायओ पावकम्मकारी
अकम्मकारी अगम्मगामी, अयं दुरप्पा बहुएसु य पातगेसु' जुत्तोत्ति—एवं
जपंति' मच्छरी' भइके व' गुण-कित्ति-नेह-परलोग-निप्पिवासा ॥

१०. एवं ते अलियवयणदच्छा परदोसुप्पायणप्पसत्ता वेढेंति अक्खइय-वीएण अप्पाणं
कम्मबंधणेण मुहरी असमिक्खियप्पलावी, निक्खेवे अवहरंति परस्स अत्थंमि
गढियगिद्धा, अभिजुंजंति य परं असंतएहि', लुद्धा य करेंति कूडसक्खित्तणं,
असच्चा मत्थालियं च कन्नालियं च भोमालियं च तहा गवालियं च गरुयं
भणंति अहरगतिगमणं ॥

१. थोवं (क) ।

२. जाणिऊण (ख, ग, घ, च) ।

३. केयि (ख, घ, च); केति (ग) ।

४. अण्णो अलेवओत्ति (वृषा) ।

५. नत्थि किञ्चि कयं तत्तं (वृषा) ।

६. चोरिति (क) ।

७. तदधृति कीर्त्यादिकमिति गम्यते (वृ) ।

८. पावगेसु (ग, च) ।

९. भणंति (क) ।

१०. मच्छरीया (ग) ।

११. वा (ग, च) ।

१२. दूषणैः इति गम्यम् (वृ) ।

११. अणंपि य जाति-रुव-कुल-सील-पच्चय-मायाणिगुणं चवला पिसुणं परमट्टभेदकं असंतकं विद्देसमणत्थकारकं पावकम्ममूलं दुद्धिट्ठं दुस्सुयं अमुणियं निल्लज्जं लोकरहणिज्जं वह-बंध-परिकिलेस-बहुलं जरा-मरण-दुक्खसोयनेम्मं असुद्ध-परिणाम-संकिलिट्ठं भणंति अलियाहिसंधि-निविट्ठा', असंतगुणुदीरका य संतगुण-नासका य हिंसाभूतोवघातितं अलियसंपज्जा वयणं सावज्जमकुसलं साहुगरह-णिज्जं अधम्मजणणं भणंति अणभिगत-पुन्नपावा ॥
१२. पुणो य अधिकरण-किरिया-पवत्तगा बहुविहं अणत्थं अवमद्दं अप्पणो परस्स य करेति, एमेव' जपमाणा महिससूकरे य साहेति घायगाणं, ससय-पसय-रोहिए य साहेति वागुरीणं', तित्तिर-वट्टक-लावके य कविजल-कवोयके य साहेति साउणीणं, भस-मगर-कच्छभे य साहेति मच्छियाणं, संखे खुल्लए य साहेति मगराणं', अयगर-गोणस-मंडलि-दव्वीकर-मउली य साहेति' बालवीण', गोहा-सेहा य सल्लग-सरडगे य साहेति लुद्धगाणं, गयकुल-वानरकुले य साहेति पासियाणं, सुक-बरहिण-मयणसाल-कोइल-हंसकुले सारसे य साहेति पोसगाणं, वध-बंध-जायणं च साहेति गोम्मियाणं, धण-धन्न-गवेलए य साहेति तवकराणं, गाम-नगर-पट्टणे य साहेति' चारियाणं पारघाइय'-पंथघातियाओ साहेति य गंठिभेयाणं, कयं च चोरियं नगरगोत्तियाणं, लंछण-निल्लंछण'-धमण-दुहण-पोसण-वणण-दुमण-वाहणादियाइं 'साहेति बहूणि'" गोमियाणं, धातु-मणि-सिल-प्पवाल-रयणागरे य साहेति आगरीणं, पुप्फविहिं फलविहिं च साहेति मालियाणं, अग्घमहुकोसए य साहेति वणचराणं, जंताइं विसाइंमूलकम्म-आहेवण"-आभि-ओगमंतोसहिप्पओगे चोरिय-परदारगमण-बहुपावकम्मकरणं ओखंदे" गामघाति याओ वणदहण-तलागभेयणाणि बुद्धि-विसय"-विणासणाणि वसीकरणमादियाइं भयमरण-किलेस-दोसजणणाणि" भाव-बहुसंकिलिट्ठ-मलिणाणि भूतघातोवघा-तियाइंसच्चाणि वि ताइं हिंसकाइं वयणाइं उदाहरंति ॥
१३. पुट्ठा व अपुट्ठा वा परतत्तिवावडा य असमिक्खियभासिणो उवदिसंति सहसा -- उट्ठा गोणा गवया दमंतु, परिणयवया अस्सा हत्थी गवेलग-कुक्कुडा य किज्जंतु,

१. संकिलिट्ठा (ख, ग); संनिविट्ठा (च) ।

२. एवमेव (ख) ।

३. वगुरीणं (क); वगुरीणं (ख) ।

४. मणिणा (वृपा) ।

५. साहेति (क); सार्हिति (ख) ।

६. बालियाणं (वृपा) ।

७. सार्हिति (क) ।

८. तृतीयाश्रयनस्य तृतीये सूत्रे 'पुरघाय-

पंथघायग'० इति पाठो दृश्यते । अत्रापि तथाविधः पाठः परिकल्प्यते ।

९. निलंछण (क) ।

१०. बहूणि साहेति (क) ।

११. आहिचणं, आविघणं च (वृपा) ।

१२. ओखंदे (क, ख, ग, घ, च) ।

१३. विस (क, ग, घ, च) ।

१४. कर्तुरिति गम्यते (वृ) ।

किणावेध' य, विक्केह, पयह, सयणस्स देह', पिय, धय', दासि-दास-भयक-
भाइल्लका य सिस्सा य पेसकजणो कम्मकरा किकरा य एए, सयण-परिजणो य
कोस अच्छंति ? भारिया भे करेतु' कम्मं, गहणाइं वणाइं खेतु' खिलभूमि-वत्त-
राइं उत्तण-घण-संकडाइ डज्झंतु' सूडिज्जंतु य, रुक्खा भिज्जंतु जंतभंडाइयस्स
उवहिस्स कारणाए' बहुविहस्स' य अट्टाए, उच्छू दुज्जंतु, पीलियंतु य तिला,
पयावेह य इट्टकाओ' घरट्टयाए', च्छेत्ताइं कसह, कसावेह य लहुं गाम-नगर-
खेड-कब्बडे निवेसेह अडवीदेसेसु विपुलसीमे, पुप्फाणि य फलाणि य कंदमूलाइं
कालपत्ताइं गेण्ह", करेह संचयं परिजणट्टयाए", साली वोहो जवा य लुच्चंतु
मलिज्जंतु उप्पणिज्जंतु" य, लहुं च पविसंतु य कोट्टागारं, अप्पमहुक्कोसगा य
हम्मंतु पोयसत्था, सेणा निज्जाउ" जाउ" डमरं, घोरा वट्टंतु य संगामा, पवहंतु
य सगड-वहणाइं, उवणयणं चोलगं विवाहो जन्नो अमुगम्मि होउ दिवसेसु
करणेसु मुहुत्तेसु नक्खत्तेसु तिहिम्मि य, अज्ज होउ ण्हवणं मुदितं बहुखज्जपेज्ज-
कलियं, कोउकं विण्हावणकं संतिकम्माणि कुण्ह, ससि-रवि-गहोवराग-विसमेसु
सज्जण-परियणस्स य नियकस्स य जीवियस्स परिरक्खणट्टयाए पडिसीसकाइं
च देह, देह य सीसोवहारे" विविहोसहि-मज्ज-मंस-भक्खण्णपाण-मल्लानुलेवण-
पईवजलिउज्जलसुगंधधूवावकार-पुप्फफल"-समिद्धे, पायच्छित्ते करेह, पाणाइ-
वायकरणेण बहुविहेणं, विवरीउप्पाय"-दुस्सिमिण-पावसउण-असोमग्गहचरिय-
अमंगलनिमित्त-पडिघायहेउं वित्तिच्छेयं करेह, मा देह किंचि दाणं, 'सुट्ठुहओ-
सुट्ठुहओ" सुट्ठुछिण्णो भिण्णोत्ति उवदिसंता ॥

१४. 'एवं विविहं' करेति अलियं मणेण वायाए कम्मुणा य अकुसला अणज्जा
अलियाणा अलियधम्मणिरया अलियासु कहासु अभिरमंता तुट्ठा अलियं करेतु
होति य बहुप्पयारं ॥

- | | |
|--|--|
| १. किणावेध (क) । | ११. गेण्हेह (क) । |
| २. देध (ख) । | १२. परिजणस्स अट्टाए (ख, ग, च) । |
| ३. वाचनान्तरेण खादत पिबत दत्त च (वृ) । | १३. अप्पुणिज्जंतु (क) । |
| ४. करेतु (क, वृपा) । | १४. निज्जाओ (क) । |
| ५. च्छेत्त (क) । | १५. जाओ (क) । |
| ६. पाठांतरेण गहनानि वनानि छिद्यन्ताम् (वृ) । | १६. देवतानामिति गम्यते (वृ) । |
| ७. वाचनान्तरे तु यत्र भांडस्य उक्तरूपस्य
कारणात् (वृ) । | १७. पुप्फण्डल (क) । |
| ८. बहुविधस्य च कार्यसमूहस्येति गम्यम् (वृ) । | १८. विपरीतउप्पाय (ख); विवरीउप्पाय
(ग, घ, च) । |
| ९. इट्टगाओ (क) । | १९. सुट्ठुहओ (क, ग, घ, च) । |
| १०. मम घरट्टयाए (ख, ग, घ, च) । | २०. एवंविहं (क, ख); एवं तिबिहं (ग, वृपा) । |

अलियवयणस्स फलविवागपदं

१५. तस्स य अलियस्स फलविवागं अयाणमाणा वड्ढंति महब्भयं अविस्सामवेयणं दीहकालं बहुदुक्खसंकडं नरय-तिरिय-जोणिं । तेण य अलिएण समणुबद्धा आइद्धा पुणब्भवंधकारे भमंति भीमे दुग्गतिवसहिमुवगया ॥
१६. तेय दीसंतिह दुग्गगा दुरंता परव्वसा अत्थभोगपरिवज्जिया असुहिता 'फुडियच्छवी बीभच्छा विवन्ना' खरफरुस-विरत्त-ज्झाम-ज्झुसिरा निच्छाया लल्ल-विफल-वाया असक्कतमसक्कया अगंधा अचेयणा दुभगा अकंता काकस्सरा हीणभिण्णघोसा विहिंसा जडबहिरंधया' य मम्मणा अकंत-विकय'-करणा णीया णीयजण-निसेविणो लोग-गरहणिज्जा भिच्चा असरिसजणस्स पेस्सा दुम्मेहा लोक-वेद-अज्झप्प-समयसुतिवज्जिया नरा धम्मबुद्धि-वियला ॥
१७. अलिएण य 'ते डज्झमाणा' असंतण्णं अवमाणण-पट्टिमंस-अहिक्वेव-पिसुणभेयण-गुरु-बंधव-सयण-मित्तवक्खारणादियाइं अब्भक्खाणाइं बहुविहाइं पावेंति अमणोरमाइं' हियय-मण-दूमकाइं जावज्जीवं दुरुद्धराइं' अणिट्ठखरफरुसवयण-तज्जण-निब्भच्छण-दीणवदणविमणा कुभोयणा कुवाससा कुवसहोसु किलिस्संता नेव सुहं नेव निव्वुइं उवलभंति अच्चंत-विपुल-दुक्खसय-संपलित्ता' ॥
१८. एसो सो अलियवयणस्स फलविवाओ इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ वहरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहि मुच्चइ, न य अवेदयित्ता अत्थि हु मोकखोत्ति-एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य अलिथ-वयणस्स फलविवागं ॥

निगमण-पदं

१९. एयं तं वित्थियंपि अलियवयणं लहुसगलहु-चवल-भणियं भयंकर-दुहकर-अयसकर-वेरकरणं अरतिरत्ति-रागदोस-मणसंकिलेस-वियरणं अलिय-नियडि-सादि-जोगवहुलं नीयजण-निसेवियं निस्संसं अप्पच्चयकारकं परमसाहु-गरहणिज्जं परपीलाकारकं परमकण्हनेससहियं दुग्गतिविनिवायवड्डणं भव-पुणब्भवकरं चिरपरिचियमणुगयं दुरंतं । वित्थियं अधम्मदारं समत्तं ।

त्ति वेमि ॥

१. फुडियच्छविबीभच्छविवन्ना (ख, ग, घ, च, वृ) । ४. तेण य डज्झमाणा (ग) ।
 २. जडबहिरमूका (क, ख, ग, घ, च, वृपा) । ५. अणुवमाणि (वृ); अमणोरमाइं (वृपा) ।
 ३. °विकंत (ख, ग, च); अकृतानि विकृतानि ६. दुद्धराइं (क) ।
 च विरूपतयाकृतानि (वृपा) । ७. संपडत्ता (ग) ।

तइयं अज्भयणं

तइयं आसवदारं

अक्खेव-पदं

१. जंबू ! तइयं च अदिण्णादाणं'—हर-दह-मरण-भय-कलुस-तासण-परसंतिगऽ-
भेज्जलोभमूलं काल-विसम-संसियं अहोऽच्छिण्णतण्ह-पत्थाण-पत्थोइमइयं
अकित्तिकरणं अणज्जं छिद्दमंतर'-विधुर-वसण-मग्गण-उस्सव-मत्त-प्पमत्त-
पसुत्त-वंचणाखिवण'-घायणपर-अणिहुयपरिणामतक्करजणबहुमयं अकलुणं
रायपुरिसरक्खियं सया साहुगरहणिज्जं पियजण-मित्तजण-भेदविप्पीतिकारकं
रागदोसबहुलं पुणो य उप्पूर-समर-संगाम-डमर-कलि-कलह-वेहकरणं दुग्गति-
विणिवायवड्डणं भव-पुणब्भवकरं चिरपरिचितमणुगयं दुरंतं । तइयं
अधम्मदारं ॥

अदिण्णादाणस्स तीसनाम-पदं

२. तस्स य णामाणि गोष्णाणि होंति तीसं, तंजहा—१. चोरिककं २. परहडं
३. अदत्तं ४. कूरिकडं ५. परलोभो ६. असंजमो ७. परघणम्मि गेही
८. लोलिकका ९. तक्करत्तणं ति य १०. अवहारो ११. हत्थलहुत्तणं
१२. पावकम्मकरणं १३. तेणिकका १४. हरण-विप्पणासो १५. आदियणा
१६. लुपणा घणाणं १७. अप्पच्चमो १८. ओवीलो १९. अक्खेवो २०. खेवो

१. अदिन्निदाणं (क, ख, घ) ।

टुककृतं' वस्यते (वृ) ।

२. वाचनान्तरे त्विदमेव पठ्यते—छिद्रविषम-
पापकं च (वृ) ।

५. परलोभो (क, ख, ग, घ, च) ।

६. लोलिककं (ग) ।

३. वंचणक्खिवण (ग, च) ।

७. हत्थलत्तणं (वृ); हत्थलहुत्तणं (वृपा) ।

४. कूरिकरं (क) कूरिकयं (ख); क्वचित्तु 'कुर-

८. तेणिककं (ग) ।

२१. विक्खेवो २२. कूडया २३. कुलमसी य २४. कंखा २५. लालप्पण-
पत्थणा य २६. 'आससणाय वसणं' २७. इच्छा मुच्छा य २८. तण्हा गेही
२९. नियडिकम्मं ३०. अपरच्छ त्ति ।

अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होति तीसं अदिण्णादाणस्स'
पाव-कलिकलुस-कम्मबहुलस्स अणेगाइं ॥

चोरिय-चोरपगार-पदं

३. तं च पुण करेति चोरियं तक्करा परदव्वहरा छेया कयकरण-लद्धलक्खा
साहसिया लहुस्सगा अतिमहिच्छ-लोभगत्था', दहर-ओवीलका य गेहिया
अहिमरा अणभंजका' भगसंधिया रायदुट्टकारी य विसयनिच्छूढा' लोकवज्झा,
उट्टहक'-गामघाय-पुरघाय-पंथघायग-आलीवग'-तिथभेया लहुहत्थ-संपउत्ता
जूईकरा' खंडरक्ख-त्थीचोर-पुरिसचोर-संधिच्छेया य गंथिभेदग-'परघणहरण-
लोमावहार-अक्खेवी हडकारक'-निम्महग-गूढचोर-गोचोर-अस्सचोरग-
दासिचोरा य एकचोरा ओकडुक-संपदायक-उच्छिपक-सत्थघायक-बिलकोली-
कारका य निग्गाह-विप्पलुंगगा' बहुविहतेणिकहरणबुद्धी," एते अण्णेय
एवमादी परस्स दव्वाहि जे अविरया ॥

रणो परघणहरण-पदं

४. विपुलवल-परिग्गहा य वहवे रायाणो परघणम्मि गिद्धा' चउरंग-समत्त'
बलसमग्गा निच्छिय-वरजोह-जुद्धसद्धिय-'अहमहमिति' दप्पिएहि सेन्नेहि"
संपरिवुडा पउम-सगड-सूइ-चक्क-सागर-गरुलवूहाइएहि" अणिएहि उत्थरंता
अभिभूय हरंति परघणाइं ॥

घणत्थं जुद्ध-पदं

५. अवरे रणसीसलद्धलक्खा संगामम्मि अतिवयंति सण्णद्धवद्धपरियर-उप्पीलिय-

- | | |
|---|---|
| १. आसासणाय वमणं (क, च); वसण (वृ);
आससणाय वसणं (वृपा) । | ६. परघणलोमावहारअक्खेवहडकारगा (वृपा) । |
| २. अदिण्णादाणम्म (क, ग) । | १०. विलुंगका (ख, घ, च) । |
| ३. °घत्था (क) । | ११. बहुविहतहवहरणबुद्धी (वृपा) । |
| ४. अणभंजक (ख ग, घ, वृ) । | १२. गिद्धा सए दव्वे असंतुट्टा परविसए अभिहणंति
लुद्धा परघणस्स कज्जे (क, ख, ग, घ, च, वृपा) । |
| ५. °निच्छूढ (क, ग, घ) । | १३. विभत्त (वृ); समत्त (वृपा) । |
| ६. उट्टोहक (वृ); उट्टहक (वृपा) । | १४. भिच्चेहि (वृ); सेन्नेहि (वृपा) । |
| ७. आदीवक (ख) । | १५. °बूहतिएहि (क, ग, घ, च); °बूहाहिएहि
(ख); व्रहाचितेहि (वृ) । |
| ८. जूईकरा (क, घ); जूयिकरा (ख, च) । | |

चिघपट्ट-गहियाउहपहरणा माढि-गुड-वम्मगुडिया' आविद्धजालिका कवय'-
कंकडइया' उरसिरमुह-बद्धकंठतोण-माइयवरफलगरचित-पहकर-सरभस-
खरचावकर-करंछिय-सुनिसितसरवरिसचडकरक-मुयंतघणचंडवेग-घारानिवाय-
मग्गे,' अणगेघणुमंडलग-संधित-उच्छलियसत्तिकणग-वामकरगहियवेडग-
निम्मलनिक्किट्टुखग्ग - पहरंतकोत - तोमर - चक्क-गया-परमु-मुसल-लंगल-सूल-
लउल' - भिडिमाल - सबवल - पट्टिस - चम्मेट्ट - दुघण-मोट्टिय'-मोग्गर-वरफलिह-
जंतपत्थर - दुहण-तोण - कुवेणी-पीठकलिए, ईली - पहरण-मिलिमिलिमिलंत-
खिप्पंत-विज्जुज्जलविरचितसमप्पहणतले, फुडपहरणे, महारण-संख-भेरि-
वरतूर-पउरपडुपडहाह्य-णिणाय-गंभीरणंदित-पक्खुभियविपुलघोमे, ह्य-गय-
रह-जोह-तुरिय-पसरित-रउद्धत-तमंधकारवहुले, कातरनर-णयणहिय-
वाउलकरे, विलुलिय - उक्कडवर - मउड - तिरीड - कुंडलोडुदामाडोविय-
पागडपडाग-उसियज्झय'-वेंजयंति-चामरचलंत-छत्तंधकारगंभीरे, ह्यहेसिय-
हत्थिगुलुगुलाइय-रहघणघणाइय - पाइक्कहरहराइय-अप्फोडियसीहनाय-छेलिय-
विघुट्टुक्कुट्टु-कंठकयसद्-भीमगज्जिए, सयराहसंत-रुसंत-कलकलरवे,
आसूणियवयण-रुद्धभीम-दसणाघरोट्टु-गाढदट्ट-सप्पहारणुज्जयकरे, अमरिसवस-
तिव्वरत्त-निहारितच्छे, वेरदिट्टि-कुद्धवेट्टिय-तिवलीकुडिलभिउडि-कयनिलाडे,
वधपरिणय-नरसहस्स-विककम-वियंभियवले, वगंततुरंग-रहपहाविय-समरभडा-
वडिय-छेय-लाघव-पहारसाधित - समूसवियवाहुजुयल-मुक्कट्टहास-पुक्कंत'-बोल-
वहुले, फुरफलगावरणगहिय'-गयवरपत्थंत-दरियभडखल-परोप्परवलग्ग-
जुद्धगव्विय - विउसितवरासिरोसतुरियअभिमुहपहरंत - छिन्नकरिकर-वियंगित-
करे', अवइद्ध-निसुद्धभिन्न-फालिय-पगलिय-रुहिरकय-भूमिकद्दम-चिलिच्चिल-
पहे, कुच्छिदालिय - गलंत-निभेलितंत-फुरुफुरंत'-विगल-मम्माहय-विकय'-
गाढदिन्नपहारमुच्छित - रुलंत - विब्भल'' - विलावकलुणे ह्यजोह - भमंततुरग-
उद्दाममत्तकुंजर-परिसंकितजण - निवुक्कच्छिन्नघय - भग्गरहवर - नट्टिसिरकरि-

१. माढिवरवम्मगुडिया(वृ); माढिगुडवम्मगुडिया (वृपा) ।
२. कवया (ख, च) ।
३. कंकडइया (क) ।
४. °निवायमंते (वृपा) ।
५. लउड° (ख) ।
६. मुट्टि (क); मोट्टि (ख) ।

७. °घय (ख, च) ।
८. फुक्कंत (ख, घ, च) ।
९. फलफलगा ° (क, ग, घ); फडफलगा ° (च) ।
१०. विभंगितकरे (क, ख, ग, घ, च) ।
११. फुरफरंत (क, घ) ।
१२. विहिय (ख, च) ।
१३. वेब्भल (ख, ग, घ, च) ।

कलेवराकिण्ण - पडिय - पहरणविकिण्णाभरणभूमिभागे', नच्चंतकबंधपउर-
भयंकरवायस-परिलेंतगिद्धमंडल-भमंतच्छायंधकारगंभीरे ।
वसु-वसुह-विकंपितव्व पच्चक्खपिउवणं परमरुद्ध-बीहणगं दुप्पवेसतरणं
अभिवडंति' संगामसंकडं परधणं महंता ॥

लुंटाक-पदं

६. अवरे पाइक्कचोरसंधा सेणावई चोरवंदपागट्टिका' य अडवीदेसदुग्गवासी काल-
हरित-रत्त-पीत-सुविकल-अणेगसयचिंधपट्ट-बद्धा परविसए अभिहणंति लुद्धा
धणस्स कज्जे ॥

सामुद्ध्यचोर-पदं

७. रयणागरसागरं उम्मीसहस्समालाकुलाकुलविभ्रोयपोतकलकरेंतकलियं,
पायालसहस्स-वायवसवेगसलिलउद्धम्ममाण-दगरयरयंधकारं, वरफेणपउरधवल-
पुलंपुलसमुद्ध्यट्टहासं, मारुयविच्छुब्भमाणपाणिय-जलमालुप्पील-'हुलियं, अवि-
य' समंतओ खुभिय-लुलिय-खोखुब्भमाण-पक्खलिय-चलियविपुलजलचक्कवाल-
महानईवेगतुरियआपूरमाण - गंभीरविपुलआवत्तचवल-भममाणगुप्पमाणुच्छलंत-
पच्चोणियत्तपाणिय - पधावियखरफरुसपयंडवाउलियसलिलफुट्टंतवीचिकल्लोल-
संकुलं, महामगर-मच्छ-कच्छभ-ओहार गाह-तिमि-सुसुमार-सावय-समाहय-
समुद्धायमाणक-पूरघोरपउरं, कायरजण-हिययकंपणं, घोरमारसंतं महब्भयं
भयंकरं पतिभयं उत्तासणगं अणोरपारं आगासं चैव निरवलंबं, उप्पाइयपवण-
धणियनोल्लिय-उवरुवरितरंगदरिय-अतिवेगवेग' चक्खुपहमुत्थरंतं, कत्थइ
गंभीरविपुलगज्जिय-गुंजिय-निग्घाय-गरुयनिवतित-सुदीहनीहारि-दूरमुव्वंतगंभीर-
धुगुधुगेंतसदं, पडिपहरंभंत-जक्खरक्खसकुहंडपिसायरुसियतज्जायउवसग्ग-
सहस्ससंकुलं', बहुप्पाइयभूयं', विरचितबलिहोमधूवउवचार-दिन्नरुधिरच्चणा-
करणपयत - जोगपयय-चरियं, परियंतजुगंतकालकप्पोवमं, दुरंतं, महानई-
नईवइ - महाभीमदरिसणिज्जं, दुरणुचरं' विसमप्पवेसं दुक्खुत्तारं दुरासयं
लवणसलिलपुण्णं असिय-सिय-समूसियगेहि दच्छतरं' वाहणेहि अइवइत्ता
समुद्धमज्जे हणंति गंतूण जणस्स पोते ॥

१. °विणिकिण्णा ° (क) ।

२. अभिवदंति (क); अभिवयंति (ग); अति-
पतंति (वृ) ।

३. °पागट्टिका (ख, च) ।

४. हुलियकं पि य (क, ग); हुलिकं तं पि य
(ख, च); हुलियं तं पि य (च) ।

५. लुप्ततृतीयैकवचनदर्शनात् (वृ) ।

६. °पिसायपडिगज्जिय ° (वृ); °पिसायरुसि-
यतज्जाय ° (वृपा) ।

७. उवद्वाभिभूयं (वृपा) ।

८. दुरणुचरं (ग) ।

९. हत्यतरंकेहि (क, ख, ग, च, च) ।

दारुणघोर-पदं

८. परदव्वहरणनिरणुकंपा' निरवयक्खा गामागर-नगर-खेड-कव्वड-मडंव-दोणमुह-पट्टणासम-णिगम-जणवते य धणसमिद्धे हणंति, थिरहियय-छिण्णलज्जा वंदिग्गह-गोग्गहे य गेण्हंति, दारुणमतो णिक्किवा णियं हणंति, छिंदंति गेहसंघि, निक्खित्ताणि य हरंति धणधन्नदव्वजायाणि जणवयकुलाणं णिग्घणमतो परस्स दव्वाहिं जे अविरया ॥

अदिण्णादाणस्स ५.लविवाग-पदं

६. तहेव केई अदिण्णादाणं' गवेसमाणा कालाकालेसु संचरंता चियका-पज्जलिय-सरस-दरदड्ढ-कड्डिय-कलेवरे, रुहिरलित्तवयण-अक्खत'-खातियपीत'-डाइणि-भमंतभयकर-जंबुयसिखियते', धूयकय-घोरसद्दे, वेयालुट्टिय-निसुद्ध-कहकहंत-पहसित-बीहणक-निरभिरामे, अतिदुब्बिगंध'-बीभच्छदरिसणिज्जे, सुसाणे वण-मुन्नघर - लेण - अंतरावण - गिरिकंदर - विसमसावय - समाकुलासु वसहीसु किलिस्संता, सीतातव-सोसिय-सरीरा दड्ढच्छवी निरय-तिरिय-भवसंकड-दुक्खसंभार-वेयणिज्जाणि पावकम्माणि संचिणंता, दुल्लहभक्खन्नपाणभोयणा पिवासिया भुंभिया किलंता मंस-कुणिम-कंद-मूल-जंकिचिकयाहारा उव्विग्गा उप्पुया' असरणा अडवीवासं उवेति वालसत-संकणिज्जं ।

अयसकरा तक्करा भयंकरा 'कास हरामो' त्ति अज्ज दव्वं इति सामत्थं करंति गुज्झं । बहुयस्स जणस्स कज्जकरणेसु विग्घकरा मत्त-पमत्त-पसुत्त'-वीसत्थ-छिद्दाती वसणभुदएसु हरणबुद्धी विगव्व' रुहिरमहिया परंति नरवतिमज्जाय-मतिककंता' सज्जणजणदुगुंछिया' सकम्मेहि पावकम्मकारी असुभपरिणया य दुक्खभागी निच्चाविल'-दुहमनिव्वुइमणा इहलोके चेव किलिस्संता परदव्वहरा नरा वसणसयसमावण्णा ॥

१०. तहेव केइ' परस्स दव्वं गवेसमाणा गहिता य हया य बद्धरुद्धा य तरितं' अति-

१. परदव्वहरा नरा निरणुकंपा (क, ख, ग, ८. पासुत्त (क, च) ।

घ, च, वृपा) ।

६. वगव्व (क) ।

२. अदिण्णदाणं (क, ग, घ, च) ।

१०. °मतिककमंता (क) ।

३. अदर (वृपा) ।

११. °दुगुंछिया (ख, घ); °दुगुंछिया (ग) ।

४. खतिय ° (क, ख, घ) ।

१२. निच्चाइल (क, ग, घ); निच्चाउल (ख, वृपा) ।

५. °सिक्खियते (क, ख, ग, घ, च) ।

६. दुरभिगंध (वृ) ।

१३. केयि (क, ख, घ) ।

७. अफुया (ख) ।

१४. तुरियं (ग); तुरितं (च) ।

घाडिया पुरवरं समप्पिया चोरगाह-चारभड-चाडुकराण तेहि' य कप्पडप्पहार-
निहय-आ रक्खिय-खर-फरुस-वयण-तज्जण-गलत्थल्ल-उत्थल्लणाहि विमणा
चारगवसहि पवेसिया निरयवसहिसरिसं ॥

११. तत्थवि गोम्मिकप्पहार-दूमण-निबभच्छण-कडुयवयण-'भेसणग-भयाभिभूया'
अक्खित्त-नियंसणा मलिणदंडिखंडवसणा उक्कोडा-लंच-पास-मगण-परायणेहि
गोम्मिकभडेहि विविहेहि बंधणेहि, किं ते ? हडि-नियड'-बालरज्जुय-कुदंडग-
वरत्त'-लोहसंकल-हत्थंदुय-वज्झपट्ट-दामक-णिक्कोडणेहि, अण्णेहि य एवमादिएहि
गोम्मिक'-भंडोवकरणेहि दुक्खसमुदीरणेहि संकोडण-मोडणाहि' वज्झंति
मंदपुण्णा ॥
१२. संपुड-कवाड-लोहपंजर-भूमिघर-निरोह-कूव-चारग-खीलग° - जुय'-चक्क-वितत-
बंधण-खंभालण-उद्धचलणबंधण-विहम्मणाहि य विहेडयंता, अक्कोडकगाढ-
उरसिरवद्ध-उद्धपूरित'-फुरंतउरकडग° मोडणामेडणाहि' बद्धा य नीससंता,
सीसावेड - ऊर्याल°-चप्पडगसंधिबंधण° - तत्तसलागसूडयाकोडणाणि तच्छण-
विमाणणाणि य खार-कडुय-तित्त-नावण-जायण-कारणसयाणि बहुयाणि पावि-
यंता, उरखोडीदिन्नगाढपेल्लण-अट्टिकसंभग-संपंसुलिगा°, गल-कालकलोहदंड-
उर-उदर-वत्थि-पट्टि-परिपीलिता, मच्छंत°-हियय-संचुण्णियंगमंगा ॥
१३. आणत्तीकिंकरेहि केति अविराहिय-वेरिएहि जमपुरिस-सन्निहेहि पहया ते तत्थ
मंदपुण्णा, चडवेला-वज्झपट्ट-पाराइ-छिव-कस-लत-वरत्त-वेत्त-प्पहारसयतालि-
यंगमंगा, किवणा° लंवंतचम्म-वण-वेयण-विमुहियमणा, घणकोट्टिम-नियल°-
जुयलसंकोडिय-मोडिया य कीरंति निरुच्चार, एया अण्णा य एवमादीओ
वेयणाओ पावा 'पावेंति अर्दंतिदिया'° वसट्ठा बहुमोहमोहिया परघणम्म लुद्धा

- | | |
|---|---|
| १. तेहि (क) । | मोटनाअे डनाभ्यामित्येतदुत्तरत्र योज्यते |
| २. भेसणगाभिभूया (वृ); भेसणगभयाभिभूता (वृपा) । | (वृ) । |
| ३. नियल (ख, घ, च) । | ११. मोडणाहि (ख, ग, घ, च) । |
| ४. वरत्ता (ख) । | १२. गुर्याल (क); ऊर्यावल (वृपा) । |
| ५. गोमिक (क) । | १३. चप्पडसंधि° (ख, घ, च) । |
| ६. मोडणेहि (ख, घ, च) । | १४. संपंसुलिगा (क) । |
| ७. कीलग (च) । | १५. इह यकारस्य छकारादेशो आन्वसत्त्वाद् (वृ) । |
| ८. जूय (ग) । | १६. किविणा (क) । |
| ९. उद्धपुरीय (क, वृपा) । | १७. नियड (ख) । |
| १०. इह प्रथमाबहुवचनलोपो ऋयस्ततश्च | १८. पावंतर्दंतिदिया (ख, घ) । |

फासिंदियविसय-तिव्वगिद्धा, इत्थिगय-रूव-सद्-रस-गंध-इट्ठ-रति-महितभोग-तण्हाइया य घणतोसगा गहिया य जे नरगणा ॥

१४. पुणरवि ते कम्मदुव्वियद्धा उवणीया रायकिकराणं तेसि वधसत्थगपाढयाणं विलउलीकारकाणं लंचसयगेण्हगाणं कूड-कवड-माया-नियडि-आयरण-पणिहि-वंचण-विसारयाणं बहुविहअलियसयजंपकाणं परलोकपरम्मुहाणं निरयगति-गामियाणं ॥

१५. तेहिं य आणत्त-जीयदंडा तुरियं उग्घाडिया पुरवरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु वेत्त-दंड-लउड-कट्ठ-लेट्ठु-पत्थर-पणालि-पणोल्लि-मुट्ठि-लया-पाद-पण्हि-जाणु-कोप्पर-पहारसंभग-महियगत्ता अट्टारस-कम्मकारणा जाइयंगमंगा कलुणा सुक्कोट्टकंठगलकनालुजिब्भा जायंता पाणीयं विगयजीवियासा तण्हादिता वरागा तपि य ण लभंति वज्झपुरिसेहिं घाडियंता ॥

१६. तत्थ य खरफरुसपडहघट्टित-कूडगह-गाढरुट्टिनिसट्टपरामट्टा वज्झकरकुडिजुय-नियत्था, सुरत्तकणवीर-गहिय-विमुकुल-कंठेगुणवज्झदूत-आविद्ध-मल्लदामा मरणभयुप्पण्णसेयमायतणेहुत्तुपियकिलिन्नगत्ता चुण्णगुंडियसरीरा रयरेणुभरिय-केसा कुसुंभगोक्खिणमुद्धया छिण्णजीवियासा घुण्णंता वज्झपाणपीता तिलं-तिलं चैव छिज्जमाणा सरीरविकित्त-लोहिअोलित्त-कागणिमंसाणि खावियंता पावा खरकरसएहिं तालिज्जमाणदेहा वातिकनरनारिसंपरिवुडा पंच्छिज्जंता य नागरजणेण, वज्झनेवत्थिया पणेज्जंति नयरमज्झेण, किवणकलुणा अत्ताणा असरणा अणाहा अबंधवा बंधुविप्पहीणा विपेक्खंता दिसोदिसिं, मरणभयुव्विग्गा आघायण-पडिदुवार-संपाविया अधण्णा सूलग-विलग-भिण्णदेहा ॥

१. तरियं (क, ग, घ) ।

२. मथित ° (क, ख) ।

३. चोरः चोरापको मन्त्री,

भेदज्ञः काणकक्रयी ।

अल्लदः स्थानदश्चैव,

चोरः सप्तविधः स्मृतः ॥१॥

भलनं कुशलं तर्जा,

राजभागोज्वलोकनम् ।

अमार्गदर्शनं शय्या,

पदभङ्गस्तथैव च ॥२॥

विश्रामः पादपतनं,

आसनं गोपनं तथा ।

खण्डस्य खादनं चैव,

तथाऽन्यन्माहराजिकम् ॥३॥

पद्याऽन्युदकरज्जुनां,

प्रदानं ज्ञानपूर्वकम् ।

एताः प्रसूतयो ज्ञेया,

अष्टादश मनीषिभिः ॥४॥ (वृ)

४. तण्हातिता (क, च) ।

५. विमुक्कल (ख, च) ।

६. कुसुंभगोक्खिन् ° (क); कुसुंभगोक्खिण-मुद्धया (ख); कुसुंभगोक्खिन् ° (ख) ।

७. वज्झयाणभीया (क, वृषा) ।

८. सरीरविकित्त (ख, ग); सरीरविकित्त (घ, च) ।

१७. ते य तत्थ कीरंति परिकप्पियंगमंगा, उल्लंविज्जंति रुक्खसालेहिं केई कलुणाहं विलवमाणा, अवरे चउरंग-धणियबद्धा पव्वयकडगा पमुच्चंते' दूरपात-बहुविसम-पत्थरसहा, अण्णे य गयचलण-मलण-निमद्विया कीरंति पावकारी, अट्टारस-खंडिया य कीरंति मुंडपरसूहि, केई उक्कत्तकण्णोदुनासा' उप्पाडियनयणदसण-वसणा जिबभंछिय-छिण्णकण्णसिरा पणिज्जंते', छिज्जंते य असिणा, निव्विसया छिण्णहत्थपाया य पमुच्चंते, जावज्जीवबंधणा' य कीरंति केइ परदव्वहरणलुद्धा कारगलनियलजुयलरुद्धा चारगाए—हतसारा सयणविप्पमुक्का मित्तजण-निरक्कया' निरासा बहुजणधिककारसहलज्जाविता अलज्जा' अणुबद्धखुहा-परद्धा' सीउण्हतण्हवेयणदुहट्टघट्टिय'-विवण्णमुह-विच्छवीया विहलमइलदुब्बला किलंता कासंता वाहिया य आमाभिभूयगत्ता परूढनहकेसमंसुरोमा छग-मुत्तम्मि-णियगम्मि खुत्ता तत्थेव मया अकामका बंधिऊण पादेसु कड्डिया खाइयाए छूढा ॥
१८. तत्थ य वग-मुणग-सियाल-कोल-मज्जारवंद-संदंसगतुंड'-पक्खिगणविविहमुहसय-विलुत्तगत्ता कय-विहंगा ॥
१९. केइ किमिणा य कुथितदेहा अणिट्टवयणेहिं सप्पमाणा—सुट्ठुकयं जं मउति पावो, तुट्ठेण जणेण हम्ममाणा' लज्जावणका य होति सयणस्सवि दीहकालं मया संता ॥
२०. पुणो परलोगसमावण्णा नरगे गच्छंति निरभिरामे अंगारपलित्तककप्प-अच्चत्थ-सीतवेदण-अस्साओदिण्ण-सततदुक्खसयसमभिदुते ॥
२१. ततोवि उट्ठवट्टिया समाणा पुणोवि पवज्जति तिरियजोणि । तहिपि निरयोवमं' अणुभवंति' वेयणं ते ॥
२२. अणंतकालेण जति नाम कहिंचि मणुयभावं लभंति' णेगेहिं णिरयगतिगमण-तिरियभव-सयसहस्स-परियट्टेहि' । तत्थवि य भवंतऽणारिया नीचकुलसमुप्पण्णा आरियजणेवि लोगवज्झा तिरिक्खभूता य अकुसला कामभोगतिसिया जहिं

१. पमुच्चति (ख, घ) ।

८. °तण्हा ° (क) ।

२. उक्खित्त ° (ख); उक्कित्त ° (घ, च) ।

९. संडासतुंड (क, घ, च) ।

३. प्रणीयन्ते आघातस्थानमिति गम्यते (बु) ।

१०. अण्णमाणा (क) ।

४. जावज्जीय ° (क) ।

११. निरयोवमं (ख) ।

५. °निरिक्कया (क, ग) ।

१२. अणुहवंति (क, घ) ।

६. अणज्जा (क) ।

१३. सहंति (ख, घ, च) ।

७. °पारद्ध (ख, ग, बृ); °परद्ध (घ, बृपा) ।

१४. परियट्टेहिं (ग) ।

निबंधंति निरयवत्तिणि', भवप्पवंचकरण-पणोल्लि', पुणोवि 'संसार-णेमे'
धम्मसुत्ति-विज्जया अणज्जा कूरा मिच्छत्तसुत्ति-पवण्णा य होति एगंतदंडरुइणो,
वेढेता कोसिकारकीडो व्व अप्पगं अट्टकम्मतंतु-घणबंधणेणं ॥

२३. एवं नरग-तिरिय-नर-अमर-गमणपेरंतचक्कवालं जम्मणजरमरणकरण'-
गंभीरदुक्ख-पखुभियपउरसलिलं संजोगवियोगवीची'-चित्तापसंगपसरिय-वहबंध-
महत्त्वविपुलकल्लोल-कलुणविलवित-लोभकलकलितबोलबहुलं अवमाणणफेण-
तिव्वस्सिण-पुलंपुलप्पभूयरोगवेयण-पराभवविणिवात-फरुसधरिसणसमावडिय-
कठिणकम्मपत्थर - तरंगरंगंत - निच्चमच्चुभय - तोयपट्टं कसायपायाल-संकुलं
भवसयसहस्सजलसंचयं अणंतं उव्वेयणयं अणोरपारं महब्भयं भयंकरं पइभयं
अपरिमियमहिच्छ-कलुसमतिवाउवेगउद्धम्ममाण-आसापिवासपायाल-कामरति-
रागदोसबंधण-वहुविहसंकप्पविपुलदगरयरयंधकारं, मोहमहावत्तभोगभममाण-
गुप्पमाणव्वलंतवहुगव्भवास - पच्चोणियत्तपाणिय - पघावितवसणसमावण्ण'-
रुण्णचंडमारुयसमाहयाऽमणुण्णवीचोवाकुलित - भंगफुट्टंतज्जिण्णकल्लोलसंकुलजलं,
पमायबहुचंडदुट्ठसावयसमाहय'-उट्ठायमाणगपूरधोरविद्धंसणत्थबहुलं, अण्णाण-
भमंतमच्छपरिहत्थ - अनिहुत्तिदियमहामगरतुरियचरियखोखुब्भमाण - संताव-
निच्चय - चलतचवलचंचल-अत्ताणाऽसरणपुव्वकयकम्मसंचयोदिणवज्जवेइज्ज-
माण'-दुहसयविपाकघुण्णंतजलसमूहं, इड्डिरससायगारवोहारगहियकम्मपडिबद्ध-
सत्तं - कड्डिज्जमाणनिरयतलहुत्तसण्णविसण्णवहुलं, अरइरइभयविसायसोग-
मिच्छत्तसेलसंकडं, अणातिसंताणकम्मबंधणकिलेसचिक्खल्लसुदुत्तारं, अमरनर-
तिरियनिरयगतिगमणकुडिलपरियत्तविपुलवेलं, हिंसालय - अदत्तादाण'- मेहुण-
परिगहारंभ-करणकारावणाणुमोदण-अट्ठाविहअण्णट्टकम्मपिडित-गुरुभारोवकंत-
दुग्गजलोघदूरणिबोलिज्जमाण"-उम्मग्गनिमग्गदुल्लभतलं, सारीरमणोमयाणि

१. °वत्तिणि (ख, ग, घ, च) ।

२. पणोल्लि—प्रणोदीनि, अत्र द्वितीयाबहुवचन-
लोपो ह्यः (वृ) ।

३. संसारणेममूले (क, ख, घ); संसारावत्त-
णेममूले (ग, च): वृत्तिकृता 'नेम ति मूल'
इति व्याख्यातम् । अनेन ज्ञायते मूलमिति
पदं व्याख्याज्जमरित, न तु मूलपाठाज्जम् ।
उत्तरकालीनादर्शेषु अस्य पदस्य मूलपाठे
समावेशो जातः । 'इह च मूलाइति बाध्ये
मूल इत्युक्तं प्राकृतत्वेन लिङ्गव्य-

त्ययादिति'—वृत्तिकृता विवरणमिदं व्याख्या-
गतमूलपदमाश्रित्य कृतम् ।

४. जम्मजरा° (ग, च) ।

५. बीई (क); वीति (ख, घ) ।

६. पबाहिय° (वृपा) ।

७. पव्वात° (क); पम्मात° (ख, ग, घ) ।

८. °वेज्जमाण (ख, वृ) ।

९. °गारवापहार° (ख) ।

१०. अदत्तदाण (क, ख, ग, घ) ।

११. °पोलिज्जमाण (क, घ) ।

दुक्खाणि उप्पियंता, सातस्सायपरितावणमयं उव्वुडुनिवुडुयं करेता, चउरंत-
महंतमणवयगं र्हं संसारसागरं अट्टियअणालंबणपतिठाणमप्पमेयं, चुलसीति-
जोणिसयसहस्सगुविलं, अणालोकमंधकारं, अणंतकालं निच्चं उत्तत्थ-मुण्ण-भय-
सण्णसंपउत्ता वसंति उव्विग्गवासवसंहि ॥

२४. जहिं-जहिं आउयं^१ निबंधंति पावकारी बंधवजण-सयण-मित्तपरिवज्जिया
अणिट्ठा भवंतऽणादेज्ज - दुव्विणीया कुट्टाणासण - कुसेज्ज-कुभोयणा असुइणो
कुसंधयण-कुप्पमाण-कुसंठिया कुरूवा बहुकोह-माण-माया-लोभा बहुमोहा
धम्मसण्ण - सम्मत्त - परिब्भट्ठा^२ दारिद्रोवद्वाभिभूया, निच्चं परकम्मकारिणो
जीवणत्थरहिया किविणा^३ परपिडतक्कका दुक्खलद्धाहारा अरस-विरस-तुच्छ-
कयकुच्छिपूरा, परस्स पेच्छंता रिद्धिसक्कार-भोयणविसेस-समुदयविहिं निदंता
अप्पकं कयंत च, परिवयंता इह यं^४ पुरेकडाइं कम्माइं पावगाइं^५, विमणा
सोएण डज्झमाणा परिभूया होंति सत्तपरिवज्जिया य, छोभा सिप्प-कला-
समयसत्थ-परिवज्जिया जहाजायपमुभूया अचियत्ता णिच्चनीयकम्मोवजीविणो
लोयकुच्छणिज्जा मोहमणोरह-निरासवहुला आसापासपडिवद्धपाणा अत्थो-
पायाण-कामसोक्खे य लोयसारे होंति अपच्चंतगा य सुट्ठुवि य उज्जमंता,
तद्विसुज्जुत्त-कम्मकयदुक्ख-संठविय-सित्थपिड-संचयपरा खीणदव्वसारा, निच्चं
अधुवधण-धण-कोस-परिभोग-विवज्जिया, रहिय-काम-भोग-परिभोग-सव्व-
सोक्खा परसिरिभोगोवभोगनिस्साणं^६-मग्गणपरायणावरागा अकामिकाएविणेंति
दुक्खं, णेव सुहं णेव निव्वुत्ति उवलभंति, अच्चंतविपुलदुक्खसय-संपलित्ता
परस्स दव्वेहिं जे अविरया ॥

२५. एसो सो अदिण्णादाणस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो
महब्भओ^७ बहुयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चति न य
अवेयइत्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहंसु णायकुलणंदणो महप्पा जिणो उ
वीरवरनामधेज्जो^८, कहेसो य अदिण्णादाणस्स^९ फलविवागं ॥

निगमण-पदं

२६. एयं तं ततियपि अदिण्णादाणं^{१०} हर-दह-मरण-भय-कलुस-तासण-परसंतिकऽभेज्ज-

१. आउयं (क, ख, ग) ।

२. पमट्ठा (ख, ग, घ) ।

३. किविणा (ख, ग, घ) ।

४. × (ख, घ, च) ।

५. पावकारिणः (वृषा)

६. °निसण्ण (ख, ग) ।

७. महब्भयो (ख, घ) ।

८. वरवीर° (ख, घ, च) ।

९. अदिण्णदाणस्स (क, ख, ग, घ) ।

१०. अदिण्णदाणं (क, ख, ग, घ, च) ।

लोभमूलं^१ °काल - विसम - संसियं अहोऽच्छिण्णतण्ह - पत्थाण-पत्थोइमइयं
अकित्तिकरणं अणज्जं छिद्दमंतर-विधुर-वसण-मग्गण-उत्सव-मत्त-प्पमत्त-पसुत्त-
वंचणाखिवण - घायणपर - अणिहुयपरिणाम - तक्करजणबहुमयं अकलुणं
रायपुरिसरक्खियं सया साहुगरहणिज्जं पियजण-मित्तजण-भेदविप्पीतिकारकं
रागदासवहुलं पुणो य उप्पूर-समर-संगाम-डमर-कलि-कलह-वेहकरणं दुग्गति-
विणिवायवड्डुणं भव-पुणवभवकरं ° चिरपरिगतमणुगतं दुरंतं । ततियं अहम्मदारं
समत्तं ।

—त्ति बेमि ॥

१. °भिज्जणा° (क, ग); °ऽभिज्ज° २. सं० पा०—एवं जाव चिरपरिगत° ।
(ख, घ, च) ।

चउत्थं अज्झयणं

चउत्थं आसवदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू ! अबंभं च चउत्थं—सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पत्थणिज्जं, पंक-पणग'-
पासजालभूयं, थी-पुरिस-नपुंसगवेदचिधं तव-संजम-बंभचेर-विग्घं भेदाययण'-
बहुपमादमूलं कायरकापुरिससेवियं सुयणजणवज्जणिज्जं उड्ढं नरग-तिरिय-
तिलोक्कपड्डाणं, जरा-मरण-रोग-सोगबहुलं वध-बंध-विघाय-दुब्बिघायं दंसण-
चरित्तमोहस्स हेउभूयं चिरपरिचियमणुगयं' दुरंतं । चउत्थं अधम्मदारं ॥

अबंभस्स तीसनाम-पदं

२. तस्स य णामाणि गोष्णाणि इमाणि होंति तीसं, तं जहा—१. अबंभं २. मेहुणं
३. चरंतं ४. संसग्गि ५. सेवणाधिकारो ६. संकप्पो ७. वाहणा' पदानं
८. दप्पो ९. मोहो १०. मणसंखोभो ११. अणिग्गहो १२. वुग्गहो' १३. विघाओ
१४. विभंगो १५. विब्भमो १६. अधम्मो १७. असीलया १८. गामधम्मतत्ती
१९. रती २०. रागो" २१. कामभोग-मारो २२. वेरं २३. रहस्सं २४. गुज्झं
२५. बहुमाणो २६. बंभचेर-विग्घो २७. वावत्ति २८. विराहणा २९. पसंगो
३०. कामगुणो त्ति ।

अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं ॥

१. पणय (ग) ।

५. पाहणा (क) ।

२. भेदायण (ख, ग, घ, च) ।

६. विग्गहो (ख, च) ।

३. चिरपरिगयं (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।

७. रागचित्ता (क, ख, ग, घ, च वृपा) ।

४. चउत्थं (वृ); चरंतं (वृपा) ।

सुरगणस्त आशंभ-पदं

३. तं च पुण निसेवंति सुरगणा सअच्छरा मोह-मोहिय-मती, असुर-भूयग'-गरुल-विज्जु-जलण-दीव-उदहि-दिस'-पवण-थणिया । अणवणिय-पणवणिय-इसि-वादिय-भूयवादियकंदिय-महाकंदिय-कूहंड-पतगदेवा', पिसाय-भूय-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किपुरिस - महोरग - गंधव्व - तिरिय- जोइस-विमाणवासि-मणुयगणा, जलयर-थलयर-खहयराय मोहपडिबद्धचित्ता अवितण्हा कामभोगतिसिया, तण्हाए बलवईए महईए समभिभूया गढिया य अतिमुच्छिया य, अबंभे ओसण्णा, तामसेण भावेण अणुम्मुक्का', दंसण-चरित्तमोहस्म पंजरं पिव करेंति 'अण्णोण्णं सेवमाण ।' ॥

चक्कवट्टिस्स अबंभ-पदं

४. भुज्जो असुर-सुर-तिरिय-मणुय-भोगरति-विहार-संपउत्ता य चक्कवट्टी सुरनरवतिसक्कया सुरवरव्व देवलोए भरह'-णग-णगर-णियम-जणवय-पुरवर-दोणमुह-खेड-कब्बड-मडंब-संबाह-पट्टण-सहस्समंडियं थिमिय-मेयणियं एगच्छत्तं ससागरं भुजिऊण वसुहं नरसीहा नरवई नरिदा नरवसभा मरुय-वसभकप्पा, अब्भहियं रायतेय-लच्छीए दिप्पमाणा सोमा रायवंस-तिलगा ।
रवि-ससि-संख-वरचक्क - सोत्थिय - पडाग-जव-मच्छ-कुम्म-रहवर-भग-भवण-विमाण-तुरय'-तोरण-गोपुर-मणि-रयण-नंदियावत्त-मुसल-णंगल-सुरइयवरकप्प-रुक्ख-मिगवति-भद्दासण-सुरुचि' - थूभ-वरमउड-सरिय - कुंडल-कुंजर-वरवसभ-दीव-मंदिर-गरुल-द्वय-इंदकेउ - दप्पण - अट्ठावय - चाव-बाण-नक्खत्त-मेह-मेहल-वीणा-जुग-छत्त-दाम-दामिणि-कमंडलु-कमल-घंटा-वरपोत-सुइ-सागर-कुमुदगार-मगर-हार-गागर-नेउर-णग-णगर-वइर- किन्नर - मयूर - वररायहंस - सारस-चकोर-चक्कवागमिहुण-चामर - खेडग - पव्वीसग-विपंचि-वरतालियंट-सिरिया-भिसेय-मेइणि-'खग-अंकुस'-विमलकलस - भिगार-वद्धमाणग-पसत्थ-उत्तमविभ-त्तवर-पुरिसलक्खणधरा ।
बत्तीसं रायवरसहस्साणुजायमग्गा" चउसट्टिसहस्सपवरजुवतीण णयणकंता

१. भूयंग (क) ।

२. दिसि (ख, च) ।

३. पतंग० (क, ख, ग, घ, च) ।

४. अणुमुक्का (क, ख, ग, घ, च); आदर्शेषु एतत् पदं लभ्यते. किन्तु नैतत् शुद्धमस्ति । उन्मुक्तपदस्य प्राकृतरूपं 'उम्मुक्क' इति जायते । न उम्मुक्का=अणुमुक्का ।

५. अणमण्णं० (च); अण्णोण्णस्स सेवणया (वृ); अण्णोण्णं सेवमाणा (वृपा) ।

६. भरघ (क, ग) ।

७. तुरत (क); तुरग (ख, घ, च) ।

८. सुरुचि (क, घ, च)

९. खगंकुस (क, ख, ग, घ, च) ।

१०. वरराय० (क, ग) ।

रत्ताभा पउमपम्ह - कोरंटगदाम - चंपक-सुतवितवरकणकनिहसवण्णा सुजाय-
 सव्वंगसुंदरंगा महग्घ-वरपट्टणुगय - विचित्तराग-एणि - पेणि'-णिम्मिय'-दुगुल्ल-
 वरचीणपट्ट - कोसेज्ज-सोणीसुत्तक - विभूसियंगा वरसुरभिगंध - वरचुण्णवास-
 वरकुसुमभरिय-सिरया' कप्पिय-छेयायरियसुकय-रइत्तमाल-कडगंगय'-तुडिय-
 पवरभूसण-पिणद्धदेहा एकावलिकंठसुरइयवच्छा पालंबपलंवमाणसुकयपड-
 उत्तरिज्जमुद्दियापिंगलंगुलिया उज्जल-नेवत्थ-रइय-चिल्लग-विरायमाणा तेएण
 दिवाकरोव्व दित्ता सारय'-नवथणिय-महुर-गंभीर-निद्धघोसा उप्पण्णसमत्तरयण-
 चक्करयणप्पहाणा नवनिहिवइणो समिद्धकोसा चाउरंता चाउराहिं सेणाहिं
 समणुजाइज्जमाणमग्गा तुरगवती गयवती रहवती नरवती विपुलकुलविस्सु-
 यजसा सारयससिसकल-सोमवयणा सूरा तेलोक्क-निग्गय-पभावलद्धसद्दा
 समत्तभरहाहिवा नरिंदा, ससेलवण-काणणं च हिमवंत-सागरंतं धीरा भुत्तूण
 भरह्वासं, जियसत्तू पवररायसीहा पुव्वकडतवप्पभावा निविट्ट-संचियसुहा'
 अणेगवाससयमायुवंतो भज्जाहि य जणवयप्पहाणाहिं लालियंता अतुल-सद्द-
 फरिस-रस-रूव-गंधे य अणुभवित्ता तेवि उवणमंति मरणधम्मं, 'अवितित्ता
 कामाणं' ॥

बलदेव-वासुदेवस्स अंबंभ-पवं

५. भुज्जो' बलदेव-वासुदेवा य पवरपुरिसा महावलपरकम्मा महाधणुवियड्डुका
 महासत्तसागरा दुद्धरा धणुद्धरा नरवसभा रामकेसवा भायरो सपरिसा वसुदेव-
 समुद्दिविजयमादियदसाराणं, पज्जुण्ण - पयिव' - संव-अनिरुद्ध - निसह - उम्मुय-
 सारण-गय-सुमुह-दुम्मुहादीण जायवाणं अद्धट्टणावि कुमारकोडीणं हिययदयिया,
 देवीए रोहिणीए देवीए देवकीए य आणंदहिययभावनंदणकरा सोलस
 रायवरसहस्साणुजातमग्गा सोलसदेवीसहस्स-वरणयण-हिययदयिया णाणामणि-
 कणग-रयण-मोत्तिय-पवाल-धण-धन्नसंचय - रिद्धि - समिद्धकोसा, हय-गय-रह-
 सहस्ससामी गामागर - णगर-खेड - कव्वड - मडंव - दोणमुह-पट्टणासम-संवाह-
 सहस्सथिमियनिव्वयपमुदितजण - विविहसस्सनिप्फज्जमाणमेइणि" - सर-सरिय-
 तलाग-सेल-काणण-आरामुज्जाण-मणाभिरामपरिमंडियस्स दाहिण्डुवेयड्डुगिरि-
 विभत्तस्स लवणजलहिपरिगयस्स छव्विहकालगुणकमजुत्तस्स" अद्धभरहस्स

१. पएणि (क, ख, घ, च) ।

२. खोमिय (वृषा)

३. सिरिया (क); सिरसा (च) ।

४. कुंडलकडगंगय (क); कुंडलंगय (वृषा) ।

५. सागर (वृषा) ।

६. संचय° (क, ख, घ) ।

७. अतित्ता कामभोगाणं (क) ।

८. भुज्जो भुज्जो (ग) ।

९. पयंब (ख, घ); पइंव (ग) ।

१०. °सास° (क, ग, घ) ।

११. °कामजुत्तस्स (ख, ग, घ, च) ।

सामिका, धीरकित्तिपुरिसा ओहबला अइवला अनिहया अपराजियसत्तुमद्वणा रिपुसहस्स-माणमहणा साणुवकोसा अमच्छरी अचवला अचंडा मितमंजुलपलावा 'हसिय-गंभीर-महुरभणिया' 'अब्भुवगयवच्छला सरणा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माण-पमाण-पडिपुण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगा ससि-सोमागार-कंतपियदंसणा अमरिसणा' पयंडंडप्पयार-गंभीर-दरिसणिज्जा तालद्वय-उव्विद्वगरुलकेऊ बलवग-गज्जंत-दरित - दप्पित - मुट्ठियचाणूरमूरगा रिट्ठवसभघाती-केसरिमुह-विप्फाडगा' दरितनागदप्पमहणा जमलज्जुणभंजगा महासउणि-पूतणरिऊ कंसमउडमोडगा जरासंध-माणमहणा ।

तेहि य 'अविरल-सम-सहिय-चंदमंडलसमप्पभेहि सूरमिरीयिकवयं' विणिम्मु-यंनेहि' सपतिदंडेहि आयवत्तेहि धरिज्जंतेहि विरायंता ।

ताहि य पवरगिरिगृहरविहरणसमुद्धियाहि' निरुवहयचमर-पच्छिमसरीर-संजाताहि अमडल' - सियकमल - विमुकुलुज्जलित-रयतगिरिसिहर-विमलससि-किरणसरिस-कलहोय-निम्मलाहि पवणाहयचवलचलिय-सललिय-पणच्चिय'-वीडपसरिय'-खीरोदगपवरसागरूपूरचंचलाहि माणससरपसर-परिचियावास-विसदवेसाहि कणगगिरिसिहर-संसिताहि ओवायुप्पाय चवलजयिणसिगघवेगाहि हंसवधूयाहि चेव कलिया', नाणामणिकणग-महरिहतवणिज्जुज्जलविचित्त-डंडाहि सललियाहि नरवतिसिरिसमुदयप्पकासणकरीहि' वरपट्टणुगयाहि समिद्धरायकुल-सेवियाहि कालागुरुपवर - कुंदुरुक्क - तुरुक्क - धूववसवास-

१. महुरपरिपुणमच्चवयणा (वृपा) ।
२. अमसणा (क, ग, च) ।
३. केसिमुह ° (वृपा) ।
४. °मरीयि ° (ख); सुचिमरीयि (वृपा) ।
५. वाचनान्तरे पुनरातपत्रवर्णकं एवं इत्यते—
अब्भपडलपिगलुज्जलेहि अविरल-सम-सहिय-
चंदमंडलसमप्पभेहि मंगजसयभक्ति-च्छेय-
चित्तिर्याल्लिखिणि - मणि - हेमजाल - विरइय-
परिगय-पेरंत-कणय-बंठिय-पयलिय-खिणिखि-
णित-सुमहुर-सुइसुह-सद्दालसोहिएहि सपयरग-
मुत्तदाम-लंबंतभूसणेहि नरिद-वामप्पमाण-
रुंदपरिमंडलेहि सीयायव-वायवरिस-विस-
दोसणासएहि तमरय-मल्लबहुल-पडल-घाडण-
पहाकरेहि मुट्ठसुहसिबच्छायसमणुबडेहि वेर-

लियदंडसज्जिएहि वयरामय-वत्थि-णिउण-
जोइय - अट्टमहम्मवरकंचणसलागनिम्मिएहि
सुविमलरयय-सुट्ठच्छइएहि णिउणोविय-
मिसिमिसित-मणि-रयण-मूर-मंडल-विनिमिर-
कर-निग्गय-रडिहय-पुणरवि पच्चोवयंतचंचल-
मरीदकवयं विणिम्मुयतेहि (वृ) ।

६. °कुहर ° (ख, ग, घ, च) । विहरणं
विचरणं गवामिति गम्यते (वृ) ।

७. आमलित (वृपा) ।

८. सललिय-पवत्त (वृ) ।

९. वीयि ° (क) ।

१०. वासुदेव-बलदेवा इति प्रक्रमः (वृ) ।

११. °प्पगासण ° (ग) ।

विसद'-गंधुद्धुयाभिरामाहि चिल्लिकाहि' उभयोपासंपि चामराहि उक्खिप्प-
माणाहि सुहसीतलवातवीतियंगा ।

अजिता अजितरहा हल-मुसल-कणगपाणी' संख-चक्क-गय-सत्ति-णंदगघरा
पवरुज्जलसुकय-विमलकोत्थुभ'-तिरीडघारी कुंडलउज्जोवियाणणा पुंडरीय-
णयणा एगावलीकंठरइयवच्छा सिरिवच्छसुलंछणा वरजसा सव्वोउय-सुरभि-
कुसुम-सुरइयपलंब-सोहंत-वियसंत-चित्तवणमालरइयवच्छा, अट्टसयविभत्त-
लक्खण-पसत्थसुंदरविराइयंगमंगा मत्तगयवरिद-ललियविक्कम-विलसियगती
कडिसुत्तगनील-पीत-कोसेज्जवाससा पवरदित्तेया सारयनवथणिय-महुरगंभीर-
निद्धघोसा नरसीहा सीहविक्कमगई अत्थमिय'-पवररायसीहा सोमा वारवइ-
पुण्णचंदा' पुव्वकडतवप्पभावा' निविट्टसंचियसुहा' अणेगवाससयमायुवंतो
भज्जाहि य जणवयप्पहाणाहि लालियंता अतुलसद्-फरिस-रस-रूव-गंधे
अणुभवेत्ता ते वि उवणमंति मरणधम्मं, अवितित्ता कामाणं ॥

मंडलिय-नरवरेंवस्स अबंभ-पदं

६. भुज्जो मंडलिय-नरवरेंदा सबला सअंतेउरा सपरिसा सपुरोहिय-अमच्च-
दंडनायक-सेणावति-मंतनीतिकुसला नाणामणिरयण-विपुलधण-धन्न-संचयनिही
समिद्धकोसा रज्जसिंरि विपुलमणुभवित्ता विक्कोसंता बलेण मत्ता ते वि
उवणमंति मरणधम्मं, अवितित्ता कामाणं ॥

जुगलियाणं लावण्णनिरूवणपुरस्सरं अबंभ-पदं

७. भुज्जो उत्तरकुरु-देवकुरु-वणविवर-पायचारिणो नरगणा भोगुत्तमा भोगलक्खण-
घरा भोगसस्सिरीया पसत्थसोम्मपडिपुण्णरूवदरिसणिज्जा' सुजात-सव्वंग-
सुंदरंगा रत्तुप्पलपत्तकंत-कर-चरण-कोमलनला सुपइट्ठिय-कुम्मचारुचलणा
अणुपुव्वसुसंहयंगुलीया' उन्नततणुतंबनिद्धनक्खा संठियसुसिलिट्ठगूढगोफा
एणी-कुरुविद-वत्त-वट्टाणुपुव्वजंघा समुग्ग-निसग्गगूढजाणू' वरवारण-
मत्त-तुल्लविक्कम-विलासितगती वरतुरग-सुजायगुज्जभदेसा आइण्णहयव्व

१. विसय (क, घ, च) ।

२. चिल्लिकाहि (क, ग) ।

३. चक्क० (ख, ग) ।

४. गोथूभ (क, घ, च) ।

५. अत्थमिया (क, ख, ग, घ, च, वृ); अत्थमिय
(वृपा) ।

६. ०पुण्णयंदा (क, ख, घ) ।

७. पुव्वकय० (ग, च) ।

८. निविट्ट० (ग) ।

९. ०सोम० (ख, ग, घ, च) ।

१०. ०सुमाहयं० (क); आणुपुव्वीसुजायपीवरंगु-
लीया (वृपा) ।

११. निमुग्ग० (वृपा) ।

निरुवलेवा पमुइयवरतुरग-सीह-अतिरेगवट्टियकडी' साहतसोणंद-मुसल-दप्पण-
निगरियवरकणग-च्छरुसरिस-वरवइरवलियमज्झा उज्जुग-मम-महिय-जच्च-
तणु-कसिण-णिद्ध-आदेज्ज-लडह-सूमाल-मउयरोमराई भम-विहग-मुजातपीण-
कुच्छी भसोदरा पम्हविगडनाभा सन्तनपासा संगयपासा सुंदरपासा मुजातपासा
मितमाइय-पीणरइयपासा अकरंडुय-कणगरुयगनिम्मल-मुजाय-निरुवहयदेहधारी
कणगसिलातल-पसत्थ-समतल-उवइय-विच्छिण्णपिटुलवच्छा जुयसन्निभपीणरइय-
पीवरपउट्ट-संठियमुसिलिट्टविमिटुलट्टमुनिचित्थणथिरमुवद्धसंधी पुरवरफलिह'-
वट्टियभुया भुयईसरविपुलभोग-आयाणफलिह-उच्छूढदीहवाहू रत्ततलोवइय-
मउय-मंसल-मुजायलक्खण-पसत्थ-अच्छिह्जालपाणी पीवरमुजायकोमलवरंगुली
तंवतलिणमुइरुइलनिद्धनक्खा निद्धपाणिलेहा चंदपाणिनेहा सूरपाणिलेहा संख-
पाणिलेहा चक्कपाणिनेहा दिसासोवत्थियपाणिनेहा' 'रवि-ससि-संख-
वरचक्क-दिसासोवत्थिय-विभत्त-मुविरइय-पाणिनेहा' वरमहिस-वराह-सीह-
सद्दूल-रिसह-नागवर-पडिपुण्णविउलखंधा चउरंगुलमुप्पमाण-कंबुवरसरिसगीवा
अवट्टिय-सुविभत्त-चित्तमंसू उवच्चिय-मंसल-पसत्थ-सद्दूलविपुलहणुया ओयविय-
सिल-प्पवाल-विंवफलसन्निभाघरोट्टा पंडुरससिसकल'-विमलसंख-गोखीर-फेण-
कुंद-दगरय-मुणालिया-धवलदंतसेढी अखंडदंता अप्फुडियदंता अविरलदंता
सुणिद्धदंता मुजायदंता एगदंतसेढिव्व अणेगदंता हुयवहनिद्धंतधोयतत्ततवणिज्ज-
रत्ततलतालुजीहा गरुलायत-उज्जुतुंगनासा अवदालियपोंडरीयनयणा कोकासिय-
धवलपत्तलच्छा आणामियचावरुइल-किण्हदभराजिसंठिय-संगयायय'-मुजाय-
भुमगा अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुसवणा पीणमंसलकवोलदेसभागा अचिरुगय-
बालचंदसंठियमहानिडाला उडुवतिरिव पडिपुण्णसोमवयणा छतागारुत्तमंगदेसा'
घणनिचियसुबद्धलक्खणुण्णयकूडागारनिभपिडियगसिरा' हुयवहनिद्धंतधोयतत्त-
तवणिज्ज-रत्तकैसंतकेसभूमी सामलीपोंडघणनिचियछोडिय-मिउ-विसद-पसत्थ-
सुहुम-लक्खण-सुगंध-सुंदर-भुयमोयग-भिग-नील' - कज्जल - पहट्टभमरण- निद्ध-

१. °कडी गंगावत्त-दाहिणावत्त-सरंगभंगुर-रवि-
किरण-बोहियविकोसायंत्तपम्ह - गंभीरविगड-
नाभा (क, ख, ग, घ, च); वृत्तिकृता किञ्चित्-
पुरोवर्तिनः 'पम्हविगडनाभा' इति पाठस्य
व्याख्यायां विवृतमिदम् — इदं च विशेषणं न
पुनरुक्तम् । पूर्वोक्तस्य नाभिविशेषणस्य
बाहुल्येनापाठादिति (वृ) । एतेन प्रतीयते केषु
चिदादर्शेषु नाभिवर्णकं पाठद्वयमुपलभ्यते,
किन्तु बहुलेषु आदर्शेषु असी दिप्पणगतः पाठो

नास्ति ।

२. °वरफलिह (ग) ।
३. दिसासुट्टिय° (क) ।
४. × (क) ।
५. पंडर° (क, ग, घ) ।
६. × (क, ख, ग) ।
७. °रुत्तिमंग° (क, ग) ।
८. °सन्निभ° (क) ।
९. नेलग (क); नेल (ख) ।

निगुरुंब-निचिय-कुचिय-पयाहिणावत्त-मुद्धसिरया सुजात-सुविभत्त-संगयंगा
लक्खणवंजणगुणोववेया पसत्थबत्तीसलक्खणधरा हंसस्सरा कुंचस्सरा दुंदुभिस्सरा
सीहस्सरा 'ओघस्सरा' मेघस्सरा' सुस्सरा सुस्सरनिग्घोसा' वज्जरिसहनाराय-
संघयणा समचउरंससंठाणसंठिया छायाउज्जोवियंगमंगा छवी' निरातंका
कंकग्गहणी कवोतपरिणामा सउणिपोस'-पिट्ठंतरोरुपरिणया पउमुप्पलसरिस-
गंधसास-सुरभिवयणा अणुलोमवाउवेगा अवदाय-निद्ध-काला 'विग्गहिय-उण्णय-
कुच्छी' अमयरसफलाहारा तिगाउय-समूसिया तिपलिआवमट्ठित्तीका तिण्णि य
पलिआवमाइं परमाउं पालयित्ता ते वि उवणमंति मरणधम्मं, अवितित्ता
कामाणं ॥

जुगलिणीणं लावण्णनिरुवणपुरस्सरं अवंभ-पदं

८. पमया वि य तेसिं होति—सोम्मा सुजाय-सव्वंग-मुंदरीओ पहाणमहिलागुणेहि
जुत्ता' अतिकंत-विसप्पमाण-मउय-मुकुमाल-कुम्मसंठिय-सिलिट्ठवरणा उज्जु-
मउय-पीवरसुसंहतंगुलीओ' अब्भुण्णत-रतिद-तलिण-तंव-मुइ-णिद्धनक्का रोम-
रहिय-वट्ठसंठिअ-अजहण्ण-पसत्थ-लक्खण-अकोप्प-जंघजुयलासुणिम्मन-सुनिगूढ-
जण्णू मंसल-पसत्थ-सुबद्ध-संधी कयलीखंभातिरेकसंठिय-निव्वणमुकुमाल-मउय-
कोमल-अविरल-सम-सहित-वट्ठ-पीवर-निरंतरोरु अट्ठावयवीचिपट्टमंठिय'-
पसत्थविच्छिण्णपिहुलसोणी वयणायामप्पमाणदुगुणिय-विसालमंसलमुबद्धजहण-
वरधारिणीओ" वज्जविराडय-पसत्थलक्खणनिरोदरीओ तिवलिवलित-तणु-
नमियमज्झियाओ उज्जुय-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-निद्ध-आदेज्ज-लडह-
सुकुमाल-मउय सुविभत्तरोमराई" गंगावत्तग-पदाहिणावत्त-तरंगभंग-रविकिरण-
तरुण-वोधितअकोसायंतपउम-गंभीरविगडनाभी अणुवभडपसत्थजातपीणकुच्छी
सन्नतपासा संगतपासा सुंदरपासा" मुजानपासा मियमायिय-पीणरइतपासा
अकरंडुय"-कणगरुयगनिम्मल"-सुजाय-निरुवह्यगायलट्ठी कंचणकलसपमाण-सम-

१. उज्जस्सरा (ग) ।

२. मेघस्सरा ओघस्सरा (घ) ।

३. वाचनान्तरे मिहघोसादिकानि विशेषणानि पठ्यन्ते (वृ) ।

४. मुद्रितवृत्ती—पसत्थच्छवि, हस्तलिखितवृत्ती—छविति प्रशस्तत्वचः ।

५. सगुणि° (क) ।

६. विग्गहितुण्णय° (ख, ग) ।

७. संजुत्ता (क) ।

८. मुसाहतंगुलीओ (क, ग, घ, च) ।

९. °पट्ठिसंठिय (क); °पडिसंठिय (ख, घ) ।

१०. °वरजहण° (क) ।

११. रोमराती (क); °रोमरातीओ (ग) ।

१२. × (क, ख, ग, घ, च); सन्नतपाश्वर्दि-विशेषणानि पूर्ववत् (वृ); वृत्तिसङ्केतानु-सारेणासौ पाठः स्वीकृतः ।

१३. अकरंडुय (क, ख) ।

१४. °रुय° (ख). °रुय° (घ) ।

सहिय-लट्ठचूचुयम्मेलग-जमल-जुयल-वट्ठियपओहराआ भुयंगअणुपुव्वतणुय-
गोपुच्छवट्ठ-सम-संहिय-नमिय-आदेज्ज-लडहबाहा तंवनहा मंसलगहत्था कोमल-
पीवरवरंगुलीया निद्धपाणिनेहा ससि-सूर-संख-चक्क-वरसोत्थिय-विभत्त-सुवि-
रइय-पाणिनेहा पीणुण्णयकक्खवत्थिप्पदेस-पडिपुण्णगलकबोला चउरंगुल-
सुप्पमाण-कंबुवरसरिसगीवा मंसलसंठियपसत्थहणुया दालिमपुप्फप्पगास-पीवर-
पलंबकुंचितवराधरा सुंदरोत्तरोट्टा दधि-दगरय-'कुंद-चंद'-वासंतिमउल-अच्छि-
द्विमलदसणा रत्तुप्पल-रत्तपउमपत्त-मुकुमालनालुजीहा कणवीरमउलऽकुडि-
लऽभुण्णय-उज्जुतुंगनासा सारदनवकमल-कुमुत-कुवलयदलनिगरसरिसलक्खण-
पसत्थ-अजिम्महकंतनयणा' आनामियचावरुइल-किण्हभराइसंगय-सुजाय-तणु-
कसिण-निद्धभुमगा अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुस्सवणा पीणमट्ठ'-गंडलेहा
चउरंगुलविसाल - समनिडाला कोमुदिरयणिकरविमलपडिपुण्णसोमवदणा'
छत्तुन्नय-उत्तिमंगा' अकविल-सुसिणिद्ध-दीहसिरया छत्त-ज्भय-जूव-थूभ-दामिणि-
कमंडलु-कलस-वावि-सोत्थिय-पडाग-जव-मच्छ-कुम्म-रहवर - मकरज्भय-अंक-
थाल-अंकुस-अट्ठावय-सुपइट्ठ-अमर-सिरियाभिसेय-तोरण-मेइणि-उदधिवर-पवर-
भवण-गिरिवर-वरायस-सुललियगय'-उसभ-सीह-चामर-पसत्थवत्तासलक्खणध-
रीओ हंससरिच्छगतीओ' कोइल-महुयरि-गिराओ कंता सव्वस्स अणुमयाओ'
ववगयवलिपलितवंग-दुव्वन्न-वाधि'-दोहग'-सोयमुक्काओ'', उच्चत्तेण य नराण
थोवूणमूसियाओ, सिगारागारचारुवेसा सुंदर-थण-जहण-वयण-कर-चरण'-
णयणा लावण्णरूवजोव्वणगुणोव्वेया नंदणवणविवरचारिणीओ व्व अच्छराओ
उत्तरकुरुमाणुसच्छराओ अच्छेरगपेच्छणिज्जियाओ तिण्णि य पलिओवमाइं
परमाउं पालयित्ता ताऽवि'' उवणमंति मरणधम्मं, अवितित्ता कामाणं ।।

अबंभस्स फलविभाग-पदं

६. मेहुणसण्णासंपगिद्धा य मोहभरिया सत्थेहिं हणंति एक्कमेक्कं विसयविसउदीर-
एसु । अवरे परदारेहिं'' हम्मंति विसुणिया घणनासं सयणविप्पणासं च पाउ-

१. चंद-कुंद (च) ।

२. अजिम्म ° (क, घ, च) ।

३. पीणमट्ठसुद्ध (ख) ।

४. °वयणा (ख, घ, च) ।

५. °उत्तमंगा (ग, च) ।

६. सललिय° (क, ग, वृ) ।

७. सरिसण्णीओ (च) ।

८. अणुगयाओ (ख) ।

९. बाहि (घ) ।

१०. दोभग (घ, च) ।

११. °मुक्का (क, ख, घ) ।

१२. चलण (ख, च) ।

१३. ताओ (च) ।

१४. प्रवृत्ता इति गम्यते (वृ) ।

- णंति' । परस्स दाराओ जे अविरया मेहुणसण्णसंपगिद्धा य मोहभरिया अस्सा हत्थी गवा य महिसा मिगा य मारेंति एक्कमेक्कं, मणुयगणा वानरा य पक्खी य विरुज्झंति, मित्ताणि' खिप्पं भवंति सत्तू, समये धम्मे गणे य भिदंति पार-दारी । धम्मगुणरया य बंभयारी खणेण उल्लोट्टए' चरित्तओ', जसमंतो सुव्वया य पावंति अयसकिंति', रोगत्ता वाहिया य वड्ढेंति रोयवाही, दुवे य लोया दुआराहगा भवंति—इहलोए चेव परलोए—परस्स दाराओ जे अविरया ॥
१०. तहेव केइ परस्स दारं गवेसमाणा गहिया हया य बद्धरुद्धा य एवं जाव' नरगे गच्छंति निरभिरामे विपुलमोहाभिभूयसण्णा ॥
११. मेहुणमूलं च सुव्वए तत्थ-तत्थ वत्तपुव्वा' संगामा बहुजणक्खयकरा' सीयाए दोवतीए काए, रुप्पिणीए, पउमावईए, ताराए, कंचणाए, रत्तसुभदाए, अहिल्लि-याए', सुवण्णगुलियाए, किण्णरीए, सुखविज्जुमतीए, रोहणीए य ॥
१२. अण्णेसु य एवमादिएसु बहवो' महिलाकएसु सुव्वंति अइक्कंता संगामा गाम-धम्ममूला ॥
१३. 'इहलोए ताव नट्टा' 'परलोए वि' य नट्टा महयामोहतिमिसंधकारे घोरे, तसथावर-सुहुमबादरेसु पज्जत्तमपज्जत्तक-साहारणसरीर-पत्तेयसरीरेसु य, अंडज-पोतज-जराउय-रसज-संसेइम-संमुच्छिम-उब्भिय-उववाइएसु य, नरग-तिरिय-देव-माणुसेसु, जरा-मरण-रोग-सोग'-बहुले, पलिओवम-सागरोवमाइं अणादीयं अणवदगं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्ठंति जीवा मोहवस-सण्णिविट्ठा ॥
१४. एसो सो अबंभस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ य अप्पसुहो बहुदुक्खो-महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चती, न य अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य अबंभस्स फलविवागं ॥

निगमण-पदं

१५. एयं तं अबंभंति चउत्थं सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स पत्थणिज्जं, 'पंक-पणग-

- | | |
|-----------------------------------|---|
| १. राज्ञः सकामादिति गम्यते (वृ) । | ६. अहित्तियाए (क, ख, ग, घ); अहित्रिका अप्रतीता (वृ) । |
| २. मित्ता (क, ग, घ) । | १०. बहुओ (क, ख) । |
| ३. उल्लोट्टए (क); उल्लोट्टए (ग) । | ११. × (क, ग, घ) । |
| ४. चरित्ताओ (ग, च) । | १२. परलोयम्मि (ख, घ) । |
| ५. अकिंति (वृ); अयसकिंति (वृपा) । | १३. × (क, ख, घ) । |
| ६. पण्हा० ३।१०-२० । | १४. सं० पा०—पत्थणिज्जं एवं चिरपरि० । |
| ७. वुत्तपुव्वा (ख) । | |
| ८. जणक्खयकरा (क, ख, ग, घ, च) । | |

पासजालभूयं थी-पुरिस-नपुंसगवेदचिंघं तव-संजम-बंभचेरविग्घं भेदाययण-
बहुपमादमूलं कायरकापुरिससेवियं सुयणजणवज्जणिज्जं उड्ढं नरग-तिरिय-
तिलोककपड्डाणं जरा-मरण-रोग-सोगवहुलं वध-बंध-विघाय-दुव्विघायं दंसण-
चरित्तमोहस्स हेउभूयं० चिरपरिचियमणुगयं' दुरंतं । चउत्थं अधम्मदारं
समत्तं ।

—त्ति वेमि ॥

पंचमं अज्भयणं

पंचमं आसवदारं

उक्तेव-पदं

१. जंबू ! एत्तो' परिग्गहो पंचमो उ नियमा—णाणामणि-कणग-रयण-महरिह-परिमल-सपुत्तदार-परिजण - दासी-दास - भयग-पेस-ह्य-गय-गो-महिस-उट्ट-खर-अय-गवेलग-सीया-सगड-रह-जाण-जुग - मंदण - सयणासण-वाहण-कुविय-धण-धण-पाण-भोयण - अच्छायण - गंध-मल्ल-भायण-भवणविहिं चेव बहुविहीयं, भरहं णग-णगर-णियमं - जणवय-पुरवर-दोणमुह-खेड-कब्बड-मडंब-संबाह-पट्टण-सहस्समंडियं थिमियमेइणीयं, एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं अपरिमिय-मणंततण्हमणुगय-महिच्छसार-निरयमूलो, लोभकलिकसाय-महक्खंधो', चिता-सयनिचियं-विपुलसालो, 'गारव-पविरल्लियग्गविडवो', नियडि-तयापत्तपल्लव-धरो, पुप्फफलं जस्स कामभोगा, आयासविसूरणाकलह-पकंपियग्गसिहरो, नरवतिसंपूजितो, बहुजणस्स हिययदइओ इमस्स मोक्खवर-भोत्तिमग्गस्स पलिहभूओ' । चरिमं अहम्मदारं ॥

परिग्गहस्स तीसनाम-पदं

२. तस्स य नामाणि^१ गोण्णाणि^२ होति तीसं, तं जहा—१. परिग्गहो २. संचयो ३. 'चयो ४. उवचयो' ५. 'नहाणं ६. संभारो ७. संकरो ८. आयारो' ९. पिंडो

१. इत्तो (ग) ।

२. निगम (च) ।

३. महाक्खंधो (ख, च) ।

४. चितायास^० (वृ); चितासय^० (बृपा) ।

५. गोरव-पविरल्लि^० (घ, बृपा) ।

६. फलिह^० (ग, च) ।

७. नामाणि इमाणि (ख, च) ।

८. चओ उवचओ (क, ग) ।

९. आयारो (क, ख, घ, च) ।

१०. दव्वसारो ११. तहा^१ महिच्छा १२. पडिबंघो १३. लोहप्पा १४. महदी^२
१५. उवकरणं १६. संरक्खणा य १७. भारो १८. संपायुप्पायको १९. कलिक-
रंडो २०. पवित्थरो २१. अणत्थो २२. संथवो २३. अणुत्ती २४. आयासो
२५. अविओगो २६. अमुत्ती २७. तण्हा २८. अणत्थको २९. आसत्ती
३०. असंतोसो त्ति ।

अवि य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं ॥

देवाणं परिग्गह-पदं

३. तं च पुण परिग्गहं ममायंति लोभघत्था भवनवरविमाणवासिणो परिग्गहस्यी^३
परिग्गहे विविहकरणबुद्धो,
देवनिकाया य—अमुर-भुयग-गरुल-विज्जु-जलण-दाव-उदहि-दिसि^४ -पवण-
थणिय-अणवणिय-पणवणिय-इसिवाइय-भूतवाइय -कांदिय-महाकांदिय-कुहंड-
पतगदेवा^५, पिसाय-भूय-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किपुरिस-महोरग -गंधव्वा य
तिरियवासी ।

पंचविहा जोइसिया य देवा,—वहस्सती-चंद-सूर-सुक्क-सनिच्छरा, राहु-धूमकेउ-
बुधा य अंगारका य तत्ततवणिज्जकणगवण्णा, जे य गहा जोइसाम्म^६ चारं
चरंति, केऊ य गतिरतीया, अट्टावीसतिविहा य नक्खत्तदेवगणा,^७ नाणासंठाण-
संठियाओ य तारगाओ, ठियनस्सा चारिणो य अविस्साम-मंडलगती उवरि-
चरा ।

उड्डुलोगवासी दुविहा वेमाणिया य देवा—सोहम्मोसाण-सणकुमार-माहिद-
बंभलोग-लंतक-महासुक्क-सहस्सार-आणय - पाणय-आरणच्चुय-कप्पवरविमाण-
वासिणो सुरगणा गेवेज्जा अणुत्तरा य दुविहा कप्पातीया विमाणवासी महि-
ड्डिका उत्तमा सुरवरा ।

एवं च ते चउव्विहा सपरिसा वि देवा ममायंति भवण-वाहण-जाण-विमाण-
सयणासणाणि य नाणाविहवत्थभूसणाणि य पवरपहरणाणि य नाणामणिपंच-
वण्णदिव्वं च भायणविहि नाणाविह - कामरूव - वेउव्विय-अच्छरणसंघाते
दीवसमुद्दे दिसाओ^८ चेतियाणि वणसंडे पव्वते गामनगराणि य आरामुज्जाण-
काणणाणि य कूव-सर-तलाग-वावि-दीहिय-देवकुल-सभ-प्पव-वसहिमाइयाइं

१. तह (क, च) ।

२. महंती (वृ०); महदी (वृपा) ।

३. °स्ती (क, ग) ।

४. दिस (क, ग, घ) ।

५. पतत ° (क); पतंग ° (च) ।

६. जोइसियम्मि (ख, घ) ।

७. देवतगणा (ख, घ, च) ।

८. दिसाओ विदिसाओ (ग, च) ।

बहुकाइं कित्तणाणि य परिगेण्हत्ता परिग्गहं विपुलदब्बसारं देवावि सइंदगा न तित्ति न तुट्ठि उवलभंति अच्चंत-विपुल-लोभाभिभूतसन्ना' ।

वासहर-इसुगार'-वट्टपव्वय-कुंडल-रुयगवर-माणुसुत्तर-कालोदधि-'लवण-सलिल'-
दहपति-रतिकर-अंजणकसेल-दहिमुहभोवातुप्पाय'-कंचणक-चित्त'-विचित्त-
जमक-वरसिहरि-कूडवासी ॥

मणुस्साणं परिग्गह-पदं

४. वक्खार - अकम्मयभूमीसु, सुविभत्तभागदेसासु कम्मभूमिसु जेऽवि य नरा चाउरंतचक्कवट्ठी वासुदेवा बलदेवा मंडलीया इस्सरा तलवरा सेणावती इग्भा सेट्ठी रट्ठिया पुरोहिया कुमारा दंडणायगा माडंबिया सत्थवाहा कोडुंबिया अमच्चा एए अण्णे य एवमादी परिग्गहं संचिणंति अणंतं असरणं दुरंतं अधुव-मणिच्चं असासयं पावकम्मनेम्मं अवकिरियव्वं' विणासमूलं वहवंधपरिकिलेस-बहुलं' अणंतसंकिलेसकरणं' ते तं धण-कणग-रयण-निचयं पिंडिता' चेव लोभ-घत्था संसारं अतिवयंति' सव्वदुक्ख-संनिलयणं ॥

परिग्गहत्थं सिक्खा-पदं

५. परिग्गहस्सेव य अट्ठाए सिप्पसयं सिक्खाए बहुजणो कलाओ य बावत्तिरि सुनि-पुणाओ लेहाइयाओ सउणरुयावसाणाओ गणियप्पहाणाओ, चउसट्ठि च महिला-गुणे रतिजणणे, सिप्पसेवं, असि-मसि-किसी-वाणिज्जं, ववहारं, अत्थसत्थ-ईसत्थ-च्छरूपगयं, विविहाओ य जोगजुंजणाओ" य, अण्णेसु एवमादिएसु बहसु कारणसएसु जावज्जीवं नडिज्जए", संचिणंति मंदबुद्धी ॥

परिग्गहीणं पवित्ति-पदं

६. परिग्गहस्सेव य अट्ठाए करंति पाणाण वहकरणं अलिय-नियडि-साइ-संपओगे परदव्व-अभिज्जा सपरदारगमणसेवणाए" आयास-विसूरणं कलह-भंडण-वेराणि य अवमाण-विमाणणाओ इच्छ-महिच्छ-प्पिवास-सतततिसिया तण्ह-गेहि-लोभ-घत्था अत्ताण-अणिग्गहिया करंति कोहमाणमायालोभे अकित्तिणिज्जे ॥

१. °भूतसत्ता (च) ।

२. इक्खुगार (ख, घ, च) ।

३. लवणसमुद्द (क) ।

४. दहिमुहवातुप्पाय (क); °उवातुप्पाय (च) ।

५. × (क, ख, ग, घ) ।

६. अकिरियव्वं (क); अवकिरियव्वं (घ) ।

७. मनंतं परि° (क) ।

८. मनसंकिलेस ° (क) ।

९. पिंडिता (ख) ।

१०. अविचयंति (ख, घ) ।

११. परिग्रहाय शिक्षत इति प्रतीतम् (बु) ।

१२. बहुवचनार्थत्वादेकवचनस्य (बु) ।

१३. × (ख, घ); °अभिगमण° (ग) ।

७. परिग्गहे चेव हंति नियमा सल्ला दंडा य गारवा य कसाय-सण्णा य कामगुण-अण्हागा य इंदियलेसाओ ।
 सयण-संपओगा सचित्ताचित्तमीसगाइं दव्वाइं अणंतकाइं इच्छंति परिघेत्तुं ।
 सदेवमणुयासुरम्मि लोए लोभपरिग्गहो जिणवरेहि भणिओ, नत्थि एरिसो
 पासो पडिबंधो^१ सब्बजीवाणं सब्बलोए ॥

परिग्गहस्स फलविवाग-पदं

८. परलोगम्मि य नट्ठा^२ तमं पविट्ठा, महया मोहमोहियमती, तिमिसंधकारे,
 तसथावर-सुहुमवादरेसु, पज्जत्तमपज्जत्तग-^३साहारणसरीर-पत्तेयसरीरेसु य,
 अंडज-पोतज - जराउय-रसज-संसेइम-संमुच्छिम-उब्भिय-उववाइएसु य, नरग-
 तिरिय-देव-माणुसेसु, जरा - मरण-रोग-सोग-बहुले, पलिओवम-सागरोवमाइं
 अणादीयं अणवदगं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणु^४परियट्ठंति जीवा
 मोहवससण्णिविट्ठा ॥
९. एसो सो परिग्गहस्स फलविवाओ इहलोइओ पारलोइओ^५ अप्पमुहो बहुदुक्खो
 महब्भओ बहुरयप्पादो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहि मुच्चई, न य
 अवेदयित्ता^६ अत्थि हु मोक्खोत्ति—एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ
 वीरवरनामधेज्जो, कहेसी य परिग्गहस्स फलविवागं ॥

निगमण-पदं

१०. एसो सो परिग्गहो पंचमो उ नियमा—नाणामणि-कणग-रयण-महरिह^७परि-
 मल-सपुत्तदार-परिजण-दासी - दास-भयग-पेस-हय-गय-गो-महिस-उट्ट-खर-अय-
 गवेलग - सीया-सगड-रह-जाण-जुग-संदण-सयणासण-वाहण-कुविय-घण-घण-
 पाण-भोयण-अच्छायण-गंध-मल्ल-भायण-भवणविहिं चेव बहुविहीयं, भरहं
 णग-णगर-णियम-जणवय-पुरवर-दोणमुह-खेड-कब्बड-मडंब-संवाह-पट्ठणसहस्स-
 मंडियं थिमियमेइणीयं, एगच्छत्तं ससागरं भुजिऊण वसुहं अपरिमियमणंततण्ह-
 मणुगय-महिच्छसार-निरयमूलो, लोभकलिकसाय-महक्खंधो, चितासयनिचिय-
 विपुलसालो, गारव-पविरल्लियग्गविडवो, नियडि-तयापत्तपल्लवधरो, पुप्फफलं
 जस्स कामभोगा, आयासविसूराणाकलह-पकंपियग्गसिहरो, नरवतिसंपूजितो,
 बहुजणस्स हिययदइओ^८ इमस्स मोक्खवर-मोत्तिमग्गस्स फलिहभूयो । चरिमं
 अधम्मदारं समत्तं ।

१. पडिबंधो अत्थि (ल, ग, घ, च) ।

२. ४।१३ सूत्रे अतः प्राग् 'इहलोए ताव नट्ठा'

पाठो विद्यते, अत्र तु स न दृश्यते ।

३. सं० पा०—एवं जाव परियट्ठंति ।

४. परलोइओ (ल, ग, घ, च) ।

५. अवेत्तिता (ग) ।

६. सं० पा०—एवं जाव इमस्स

एएहिं पंचहिं असंवरेहिं रयमादिणित्तु^१ अणुसमयं ।
 चउव्विहगतिपेरंतं, अणुपरियट्ठंति संसारं ॥१॥
 सव्वगई - पक्खंदे, काहेति अणंतए अकयपुण्णा ।
 जे य ण सुणंति धम्मं, सोऊण य जे पमायंति ॥२॥
 अणुसिट्ठं^२पि बहुविहं, मिच्छदिट्ठी णरा अबुद्धीया ।
 बद्धनिकाइयकम्मा, सुणेंति धम्मं न य करेंति ॥३॥
 किं सक्का काउं जे, जं णेच्छह ओसहं मुहा पाउं ।
 जिणवयणं गुणमहुरं, विरेयणं सव्वदुक्खाणं ॥४॥
 पंचेव^३ उज्झिऊणं, पंचेव य रक्खिऊण भावेण ।
 कम्मरय - विप्पमुक्का, सिद्धिवरमणुत्तरं जंति ॥५॥

१. °अचिणित्तु (वृ) ।

३. पंचेव य (च) ।

२. अणुसिट्ठं (क, ग, घ); अणुसिट्ठा (वृ) ।

छट्ठं अज्झयणं पढमं संवरदारं

उक्खेब-पदं

१. जंबू !

एत्तो संवरदाराइं, पंच वोच्छामि आणुपुब्बीए ।
जह् भणियाणि भगवया, सब्बदुहविमोक्खणट्ठाए ॥१॥
पढमं होइ अहिंसा, बितियं सच्चवयणंति पण्णत्तं ।
दत्तमणुण्णायसंवरो, य बंभचेरमपरिग्गहत्तं च ॥२॥
तत्थ पढमं अहिंसा, तसथावरसब्बभूयस्सेमकरी ।
तीसे सभावणाए, किंचि वोच्छं गुणुद्देसं ॥३॥

२. ताणि उ इमाणि सुब्बय-महब्बयाइं 'लोकहिय-सब्बयाइं' सुयसागर-देसियाइं
तव-संजम-महब्बयाइं सीलगुणवरब्बयाइं सच्चज्जवब्बयाइं नरग-तिरिय-मणुय-
देवगति-विवज्जकाइं' सब्बजिणसासणगाइं कम्मरयविदारगाइं भवसयविणा-
सणकाइं दुहसयविमोयणकाइं सुहसयपवत्तणकाइं कापुरिसदुत्तराइं सप्पुरिस-
निसेवियाइं' निब्बाणगमणमग्ग-सग्गपणायगाइं' संवरदाराइं पंच कहियाणि उ
भगवया ॥

अहिंसा-पज्जबनाम-पदं

३. तत्थ पढमं अहिंसा, जा सा सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स भवति—

१. लोए बिइअब्बयाइं (बृ); लोयहियसब्बयाइं (ग, च) ।
(बृपा) । ३. सप्पुरिसतीरियाइं (बृपा) ।
२. विवज्जयकाइं (क); विवज्जयकाइं (ख, ४. पयाणगाइं (बृपा) ।

दीवो ताणं सरणं गती पइट्ठा
 निव्वाणं^१ निव्वुई^२ समाही
 सत्ती कित्ती कंती
 रती य विरती य सुयंग तित्ती
 दया विमुत्ती खंती समत्ताराहणा
 महंती बोही बुद्धी धिती
 समिद्धी रिद्धी विद्धी
 ठिती पुट्ठी नंदा भद्दा
 विसुद्धी लद्धी विसिट्ठिट्ठी
 कल्लाणं मंगलं पमोओ विभूती रक्खा
 सिद्धावासो अणासवो
 केवलीणं ठाणं
 सिव-समिई-सील-संजमो त्ति य
 सीलपरिघरो^३ संवरो य गुत्ती ववसाओ
 उस्सओ^४ य जणो, आयतणं जयणमप्पमाओ ।
 आसासो वीसासो, अभओ सवूस्स वि अमाघाओ ।
 चोक्खपवित्ता^५ सुती पूया विमल-पभासा य निम्मलतर त्ति ।
 एवमादीणि निययगुण-निम्मियाइं पज्जवणामाणि होंति अहिंसाए भगवतीए ॥

अहिंसा-थुइ-पदं

४. एसा सा भगवती अहिंसा, जा सा—

भीयाणं पिव सरणं, पक्खीणं पिव गयणं^६ ।
 तिसियाणं पिव सलिलं, खुहियाणं पिव असणं ।
 समुद्दमज्जे व पोतवहणं, चउप्पयाणं व आसमपयं ।
 दुहट्ठियाणं^७ व ओसहिबलं, अडवीमज्जे व सत्थगमणं ॥

५. एत्तो विसिट्ठतरिका अहिंसा, जा सा—

पुढवि-जल-अगणि - मारुय - वणप्फइ-बीज-हरित-जलचर-थलचर-खहचर-तस-
 थावर-सव्वभूय-खेमकरी ॥

१. नेव्वाणं (क) ।

२. नेव्वुई (क, ख) ।

३. छीलायारो (क); सीलघरो (ख, घ, च) ।

४. उस्सतो (क) ।

५. चोक्खा पविस्ती (क) ।

६. गमणं (क, ग, व) ।

७. दुहट्ठियाणं (च, ग) ।

अहिंसा-माहृप्प-पदं

६. एसा भगवती अहिंसा, जा सा —

अपरिमियनाणदंसणधरेहिं सीलगुण-विणय-तव-संजमनायकेहिं नित्थंकरेहिं
सव्वजगवच्छलेहिं' तिलोगमहिंएहिं जिणचंदेहिं मुट्ठुद्विटा, ओहिंजिणेहिं
विण्णाया, उज्जुमतीहिं विदिट्ठा, विपुलमतीहिं विदिता', पुव्वधरेहिं अघोता,
वेउव्वीहिं पतिण्णा ।

आभिणिबोहियनाणीहिं सुयनाणीहिं मणपज्जवनाणीहिं केवलनाणीहिं आमोसहि-
पत्तेहिं खेलोसहिपत्तेहिं जल्लोसहिपत्तेहिं विष्णोसहिपत्तेहिं सव्वोसहिपत्तेहिं
वीजबुद्धीहिं कोट्टबुद्धीहिं पदाणुसारीहिं संभिण्णसोतेहिं मुयधरेहिं मणवलिंएहिं
वयिवलिंएहिं कायवलिंएहिं नाणवलिंएहिं दंसणवलिंएहिं चरित्तवलिंएहिं
खीरासवेहिं महुआसवेहिं सप्पिआसवेहिं' अक्खीणमहाणसिंएहिं चारणेहिं
विज्जाहरेहिं चउत्थभत्तिंएहिं 'छट्ठभत्तिंएहिं अट्ठमभत्तिंएहिं एवं-दसम-दुवालस-
चोद्दस-सोलस - अट्ठमास - मास - दोमास-चउमास-पंचमास'-छम्मासभत्तिंएहिं
उक्खित्तचरंएहिं निक्खित्तचरंएहिं अंतचरंएहिं पंतचरंएहिं लूहचरंएहिं समुदाण-
चरंएहिं अण्णइलांएहिं मोणचरंएहिं संसट्ठकप्पिंएहिं तज्जायससट्ठकप्पिंएहिं उवनि-
हिंएहिं सुद्धेसणिंएहिं संखादत्तिंएहिं दिट्ठलाभिंएहिं अदिट्ठलाभिंएहिं पुट्ठलाभिंएहिं
आयंबिलिंएहिं पुरिमट्ठिंएहिं एक्कासणिंएहिं निव्विनिंएहिं भिण्णपिडवाइंएहिं
परिमियपिडवाइंएहिं अंताहारेहिं पंताहारेहिं अरसाहारेहिं विरसाहारेहिं लूहाहा-
रेहिं तुच्छाहारेहिं अंतजीवीहिं पंतजीवीहिं लूहजीवीहिं तुच्छजीवीहिं उवसंत-
जीवीहिं पसंतजीवीहिं विवित्तजीवीहिं अक्खीरमहुसप्पिंएहिं' अमज्जमंसासिंएहिं
ठाणाइंएहिं पडिमट्ठाईंएहिं' ठाणुक्कडिंएहिं' वीरासणिंएहिं णेसज्जिंएहिं डंडाइंएहिं
लगंडसाईंएहिं एगपासगेहिं आयावंएहिं अप्पाउंएहिं अणिट्ठुभंएहिं अकंडूयंएहिं
धुतकेसमंसु-लोमनखेहिं सव्वगायपडिक्कम्मविप्पमुक्केहिं समणुचिण्णा ।

सुयधरविदितत्थकायबुद्धीहिं' । धीरमतिबुद्धिणो य जे ते आसीविस-उग्गतेयकप्पा
निच्छय-ववसाय-पज्जत्तकयमतीयां' णिच्चं सज्झायज्झाण-अणुबद्धधम्मज्झाणा
पंचमहव्वयचरित्तजुत्ता समिता समितीसु समितपावा छव्विहजगवच्छला"
निच्चमप्पमत्ता, एंएहिं" अण्णेहिं य जा सा अणुपालिया भगवती ॥

१. सव्वजगजीव ° (क) ।

२. विविदिता (घ) ।

३. सप्पियासवेहिं (ख, ग, घ, च) ।

४. एवं जाव (क, ख, ग, घ) ।

५. अक्खित्त ° (क) ।

६. पडिमट्ठाइंएहिं (ख, घ, च) ।

७. ठाणुक्कुडुंएहिं (क) ।

८. समणुपालितेति सम्बन्धः (वृ) ।

९. मिच्छत्तकयमतीया (ख, घ); विणीयपज्जत्त-
कयमतीया (वृपा) ।

१०. छव्विहजगजीववच्छला (क) ।

११. एंएहिं य (घ, च) ।

उच्छगवेसणा-पदं

७. इमं च पुढवि-दग-अगणि-मारुय-तरुगण-तस-थावर-सव्वभूय-संजमदयट्ठयाए सुद्धं उच्छं गवेसियव्वं अकतमकारितमणाहूयमणुहिट्ठं, अकीयकडं, नवहि य कीडीहि सुपरिसुद्धं, दसहि य दोसेहि विप्पमुक्कं, उग्गमउप्पायणेसणासुद्धं, ववगय-चुय-चइय'-चत्तदेहं च, फासुयं च ।
न निसज्जकहापओयणक्खामुओवणीयं, न तिगिच्छा-मंत-मूल-भेसज्जहेउं', न लक्खणुप्पाय-सुमिण-जोइस-निमित्त-कह-कुहकप्पउत्तं ॥
८. नवि डंभणाए, नवि रक्खणाते, नवि सासणाते, नवि डंभण-रक्खण-सासणाते भिक्खं गवेसियव्वं ॥
९. नवि वंदणाते, नवि माणणाते, नवि पूयणाते, नवि वंदण-माणण-पूयणाते भिक्खं गवेसियव्वं ॥
१०. नवि होलणाते, नवि निंदणाते, नवि गरहणाते, नवि होलण-निंदण-गरहणाते भिक्खं गवेसियव्वं ॥
११. नवि भेसणाते, नवि तज्जणाते, नवि तालणाते, नवि भेसण-तज्जण-तालणाते भिक्खं गवेसियव्वं ॥
१२. नवि गारवेणं, नवि कुहणयाते, नवि वणीमयाते, नवि गारव-कुहण-वणीमयाते भिक्खं गवेसियव्वं ॥
१३. नवि मित्तयाए, नवि पत्थणाए, नवि सेवणाए, नवि मित्त-पत्थण-सेवणाते भिक्खं गवेसियव्वं ॥
१४. अण्णाए अगढिए अदुट्ठे अदीणे' अविमणे अकलुणे अविताती अपरितंतजोगी जयण-घडण-करण-चरिय-विणय-गुण-जोगसंपउत्ते भिक्खू भिक्खेसणाते निरते ॥
१५. इमं च सव्वजगजीव-रक्खणदयट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभावियं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विओसमणं ॥

अहिंसाए पंचभावणा-पदं

१६. तस्स इमा पंच भावणामो पढमस्स वयस्स होंति पाणातिवायवेरमण-परिरक्खणद्वयाए ॥
१७. पढमं—ठाणगमणगुणजोगजुंजण-जुगंतरनिवातियाए दिट्ठीए इरियव्वं कीड-

१. चयिय (क); चाविय (क्व) ।

३. अदीणे (वृ) ।

२. भेसज्जकज्जहेउं (क, ख, ग, घ, ञ) ।

पयंग-तस-थावर-दयावरेण, निच्चं पुप्फ-फल-तय-पवाल-कंद-मूल-दगमट्टिय-बीज-हरिय-परिवज्जएण' सम्मं' ।

एवं खु' सव्वपाणा न होलियव्वा, न निदियव्वा, न गरहियव्वा, न हिंसियव्वा, न छिदियव्वा, न भिदियव्वा, न वहेयव्वा, न भयं दुक्खं च किंचि लब्भा पावेउं जे ।

एवं इरियासमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, असवलमसंकिलिट्ट-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू ॥

१८. वितियं च—मणेण पावएणं पावगं अहम्मियं दारुणं निस्संसं' वह-बंध-परिकिलेसबहुलं भय-मरण-परिकिलेससंकिलिट्टं न कयावि मणेण पावएणं' पावगं किंचि वि भायव्वं ।

एवं मणसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, असवलमसंकिलिट्ट-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू ॥

१९. ततियं च—वतीते पावियाते पावगं न किंचि वि भासियव्वं ।

एवं वतिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, असवलमसंकिलिट्ट-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसओ संजओ सुसाहू ॥

२०. चउत्थं—आहारएसणाए' सुद्धं उच्छं गवेसियव्वं अण्णाए 'अगट्ठिए अट्टुट्टे' अदीणे' अविमणं' अकलुणे अविसादी', अपरित्तजोगी जयण-घडण-करण-चरिय-विणय-गुण-जोगसंपउत्ते'' भिक्खू भिक्खेसणाए जुत्ते समुदाणेऊण भिक्खचरियं उच्छं घेत्तूण आगते गुरुजणस्स पासं, गमणागमणातिचार-पडिक्कमण-पडिक्कंते, आलोयण-दायणं च दाऊण गुरुजणस्स जहोवाणंसं निरइयारं च अप्पमत्तो पुणरवि अणेसणाए पयतो'' पडिक्कमित्ता पसंतआसीण-सुहणिसण्णे'', मुहुत्तमेत्तं च भाण-मुहजोग-नाण-सज्जाय-गोवियमणे धम्ममणे अविमणे सुहमणे अविग्गहमणे समाहिमणे सद्धासंवेगनिज्जरमणे पवयणवच्छल्लभावियमणे उट्टेऊण य पहट्टुट्टे जहराडणियं'' निमंतइत्ता य साहवे भावओ य, विइण्णे'' य

१. परिवज्जिएणं (क) ।

२. समं (ग, घ) ।

३. खलु (क, ग) ।

४. निस्संसं (ख, घ) ।

५. पावतेणं (ख) ।

६. आहारं एसणाए (क, ग, घ, च) ।

७. अकट्ठिए असिट्टे (क, ख, ग, घ, च, वृ);

एते पदे वृत्तेर्वाचनान्तरस्य तथा अस्यैवाध्यय-

नस्य चतुर्दशसूत्रस्याधारेण स्वीकृते ।

८. 'अदीणे' त्यादि तु पूर्ववत् (वृ) ।

९. × (क, ख, ग, घ, च) ।

१०. अविसादी (ख, घ, च) ।

११. °संपओगजुत्ते (क, ख, ग, घ, च) ।

१२. पयत्तो (क, ख, घ, च) ।

१३. सुणिसण्णा (घ) ।

१४. जहराडणियं (क, ग) ।

१५. विइण्णे (क, ख, घ, च) ।

गुरुजणेणं, उपविट्ठे संपमज्जिऊण ससोसं कायं तथा करतलं, अमुच्छिअ अगिद्धे अगढिए अगरहिए अणज्झोववण्णे अणाइले अलुद्धे अणत्तट्ठिते असुरसुरं अचवचवं अद्दुयमविलंबियं^१ अपरिसाडि आलोयभायणे जयं पयत्तेणं ववगय-संजोगमणिगालं च विगयधूमं अक्खोवज्जण-वणाणुलेवणभूयं संजमजायामाया-निमित्तं^२ संजयभारवहणट्ठयाए भुजेज्जा पाणधारणट्ठयाए^३ संजए णं समियं । एवं आहारसमितिजोगेणं भाविओ भवति अतरप्पा, असवलमसंकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू ॥

२१. पंचमगं —पोढ-फलग-सिज्जा-संधारग-वत्थ-पत्त-कंबल-दंडग-रयहरण-चोलपट्टग-मुहपोत्तिग-पायपुच्छणादी । एयंपि संजमस्स उवबूहणट्ठयाए^४ वातातव-दंसमसग-सोय-परिरक्खणट्ठयाए उवगरणं रागदोसरहियं परिहरित्तव्वं संजतेणं^५ णिच्चं पडिलेहण-पप्फोडण-पमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेण होइ समयं निक्खिवियव्वं च गिण्हियव्वं च भायण-भंडोवहि-उवगरण । एवं आयाणभंडनिक्खेवणासमितिजोगेण भाविओ भवति अतरप्पा, असवलमसंकिलिट्ठ-निव्वण-चरित्तभावणाए अहिंसए संजते सुसाहू ॥

निगमण-पदं

२२. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होति सुप्पणिहियं इमेहि पंचहि वि कारणेहि मण-वयण-काय-परिरक्खएहि ॥
२३. णिच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्धो अपरिसावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णातो ॥
२४. एवं पढमं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्ठियं आराहियं आणाते अणुपालियं भवति ॥
२५. एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवितं सुदेसितं पसत्थं । पढमं संवरदारं समत्तं ।

—त्ति बेमि ॥

१ अद्दुय ° (च) ।

२. मायनिमित्तं (क, ख, ग, घ) ।

३. ° रक्खणट्ठयाए (क) ।

४. उवगहणट्ठयाए (क, ख, च) ।

५. संजमेणं (ग) ।

सत्तमं अज्झयणं

वीयं संवरदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू ! वितियं च सच्चवयणं—सुद्धं सुइयं सिवं सुजायं सुभासियं सुव्वयं सुकहियं सुदिट्ठं सुपतिट्ठियं सुपतिट्ठियजसं सुसंजमियवयणबुइयं सुरवर-नरवसभ-पवर-बलवग-सुविहियजण-बहुमयं परमसाहुधम्मचरणं तव-नियम-परिग्गहियं सुगति-पहदेसगं च लोगुत्तमं वयमिणं विज्जाहरगगणगमणविज्जाण साहकं सम्मग्ग-सिद्धिपहदेसकं अवितहं, तं सच्चं उज्जुयं अकुडिलं भूयत्थं, अत्थतो विसुद्धं उज्जोयकरं पभासकं भवति सव्वभावाण जीवलोगे अविसंवादि जहत्थमधुरं पच्चक्खं दइवयं' व जं तं अच्छेरकारकं अवत्थंतरेसु बहुएसु माणुसाणं ॥

सच्चत्स माहप्प-पदं

२. सच्चेण महासमुद्दमज्जे चिट्ठंति, न निमज्जंति मूढाणिया वि पोया ॥
३. सच्चेण य उदगसंभमंमि वि' न बुज्झइ', न य मरंति, थाहं च ते लभंति ॥
४. सच्चेण य अगणिसंभमंमि वि' न डज्झंति उज्जुगा' मणूसा ॥
५. सच्चेण य तत्ततेल्ल-तउय-लोह-सीसकाइं छिवंति धरंति', न य डज्झंति मणूसा ॥
६. पव्वयकडकाहिं मुच्चंते, न य मरंति सच्चेण य परिग्गहिया ॥
७. असिपंजरगया' समराओ वि णिइंति अणहा य सच्चवादी ॥

१. दरियवं (ख, ग); देवयं (घ) ।

२. × (क, ख, ग, घ, च) ।

३. वचनपरिणामान्नोह्यन्ते (ब) ।

४. × (क) ।

५. उज्जगा (क, ख, घ) ।

६. अंजलिभिरिति गम्यते (ब) ।

७. असिपंजरससिपंजरगया (क, च) ।

८. वहबंघभियोगवेरघोरेहि पमुच्चंति य, अमित्तमज्झाहि निइति^१ अणहा य सच्चवादी ॥
९. सादेव्वाणि य देवयाओ करेति सच्चवयणे रताणं ॥

सच्चस्स थुइ-पदं

१०. तं सच्चं^२ भगवं तित्थगरसुभासियं दसविहं चोदसपुव्वीहि पाहुडत्थविदितं 'महरिसीण य समयप्पदिण्णं'^३ देविद-नरिद-भासियत्थं वेमाणियसाहियं महत्थं मंतोसहिविज्जसाहणट्ठं चारणगण-समण-सिद्धविज्जं मणुयगणाणं च वंदणिज्जं 'अमरगणाणं च अच्चणिज्जं असुरगणाणं च पूयणिज्जं,'^४
- अणोगपासंड-परिग्गहियं, जं तं लोकम्मि सारभूयं ।
 गंभीरतरं महासमुदाओ, थिरतरं मेरुपव्वयाओ ।
 सोमतरं चंदमंडलाओ, दित्ततरं सूरमंडलाओ ।
 विमलतरं सरयनहयलाओ, सुरभितरं गंधमादणाओ ॥
११. जे वि य लोगम्मि अपरिसेसा मंता जोगा जवा य विज्जा य जंभका य अत्थाणि य सत्थाणि य सिक्खाओ य आगमा य सव्वाणि^५ वि ताइं सच्चे पइट्ठियाइं ॥

सावज्जसच्च-पदं

१२. सच्चंपि य संजमस्स उवरोहकारकं^६ किंचि न वत्तव्वं—हिंसा-सावज्जसंपउत्तं भेय-विकहकारकं अणत्थवाय-कलहकारकं अणज्जं अववाय-विवायसंपउत्तं बेलंबं ओजघेज्जबहुलं निल्लज्जं लोयगरहणिज्जं दुडिट्ठं दुस्सुयं दुम्मुणियं^७ ॥
१३. अप्पणो थवणा, परेसु निंदा—
- नसि^८ मेहावी, न तंसि घण्णो ।
 नसि पियघम्मो, न तं कुलीणो ।
 नसि दाणपती, न तंसि सूरु ।
 नसि पडिरूवो, न तंसि लट्ठो ।
 न पंडिओ, न बहुस्सुओ, न वि य तं तवस्सी ।

१. नइति (क) ।
 २. भगवंतं (क, ख, ग, घ, च) ।
 ३. °प्पइण्णं (वृ); महरिसिसमयपइण्णचिण्णं (बृपा) ।
 ४. × (क) ।
 ५. सव्वाइं (ख, च) ।
 ६. अवरोहकारकं (ख) ।
 ७. अमुणियं (ख, ग, घ, च) ।
 ८. त्वमिति गम्यते (वृ) ।

न यावि परलोगणिच्छियमतीऽसि सव्वकालं, जाति-कुल-रूढ-वाहि-रोगेण वा वि जं होइ वज्जणिज्जं दुहिलं' उवयारमतिकतं—एवंविहं सच्चं पि न वत्तव्वं ॥

अणवउजसच्च-पवं

१४. अहं केरिसकं पुणाइं सच्चं तु भासियव्वं ? जं तं दव्वेहि पज्जवेहि य गुणेहि कम्मेहि सिप्पेहि आगमेहि य नामक्खाय-निवाओवसग्ग-तद्धिय-समास-संधि-पद-हेउ-जोगिय-उणादि-किरियाविहाण-धातु-सर'-विभत्ति-वण्णजुत्तं तिकल्लं दसविहं पि सच्चं जहं भणियं तहं य कम्मुणा होइ ।

दुवालसविहा होइ भासा, वयणंपि य होइ सोलसविहं ।

एवं अरहंतमणुणां समिक्खियं संजणं कालम्मि य वत्तव्वं ॥

१५. इमं च अलिय-पिसुण-फरुस-कडुय-चवल-वयण-परिरक्खणट्ठयाए' पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभाविकं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाणं विओसमणं ॥

सच्चस्स पंचभावणा-पवं

१६. तस्स इमा पंच भावणाओ बित्तियस्स वयस्स अलियवयणवेरमण'-परिरक्खणट्ठयाए ॥

१७. पढमं -सोऊणं संवरट्ठं परमट्ठं, सुट्ठु जाणिऊणं न वेगियं' न तुरियं न चवलं न कडुयं न फरुसं न साहसं न य परस्स पीलाकरं सावज्जं, सच्चं च हियं च मियं च 'गाहकं च' सुद्धं संगयमकाहलं च समिक्खितं संजतेण कालम्मि य वत्तव्वं ।

एवं अणुवीइसमितिजोगेण' भाविओ भवति अंतरप्पा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरुओ सच्चज्जवसंपण्णो ॥

१८. बित्तियं—कोहो' ण सेवियव्वो । कुद्धो चंडिकिकओ मणूसो अलियं भणेज्ज, पिसुणं भणेज्ज, फरुसं भणेज्ज, अलियं पिसुणं फरुसं भणेज्ज ।

कलहं करेज्ज, वेरं करेज्ज, विकहं करेज्ज, कलहं वेरं विकहं करेज्ज ।

सच्चं हणेज्ज, सीलं हणेज्ज, विणयं हणेज्ज, सच्चं सीलं विणयं हणेज्ज ।

वेसो भवेज्ज, वत्थुं भवेज्ज, गम्मो भवेज्ज, वेसो वत्थुं गम्मो भवेज्ज ।

१. दुहओ (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।

पदस्यार्थो भ्रान्तिं जनयति ।

२. रस (वृपा) ।

५. वेतितं (क); वेइयं (ख, ग, च) ।

३. परिरक्खणट्ठाए (क) ।

६. गाहगं (क) ।

४. अलियवयणस्स ° (क, ख, ग, घ, च); एतद् विहाय सर्वेष्वपि संबन्धारेषु समस्तं पदमुप-
लभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते । असमस्त-

७. अणुवीति ° (क); अणुवीयि ° (ख, घ; अणुवीय ° (च) ।

८. कोषो (ख, घ) ।

एयं अण्णं च एवमादियं भणेज्ज कोहग्गि-संपलित्तो, तम्हा कोहो न सेवियव्वो ।
एवं खंतीए' भाविअो भवति अंतरप्पा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरु
सच्चज्जवसंपण्णो ॥

१९. ततियं—लोभो न सेवियव्वो ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं खेतस्स व वत्थुस्स व कतेण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं कित्तीए व लोभस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं इड्ढीए व सोक्खस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं भत्तस्स व पाणस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं पीढस्स व फलगस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं सेज्जाए व संथारकस्स' व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं वत्थस्स व पत्तस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं कंबलस्स व पायपुंछणस्स व कएण ।
लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं सीसस्स व सिस्सिणीए व कएण ।
अण्णेसु' य एवमादिएसु बहुसु कारणसत्तेसु लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं, तम्हा
लोभो न सेवियव्वो ।

एवं मुत्तीए' भाविअो भवति अंतरप्पा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरु
सच्चज्जवसंपण्णो ॥

२०. चउत्थं—न भाइयव्वं । भीतं खु भया अइति लहुयं, भीतो अबित्तिज्जअो
मणूसो, भीतो भूतेहिं व घेपेज्जा, भीतो अण्णं पि हु भेसेज्जा, भीतो तव-संजमं
पि हु मुएज्जा, भीतो य भरं न नित्थरेज्जा, सप्पुरिसनिसेवियं च मग्गं भीतो
न समत्थो अणुचरित्तं । तम्हा न भाइयव्वं' भयस्स वा वाहिस्स वा रोगस्स वा
जराए वा मच्चुस्स वा अण्णस्स व एवमादियस्स' ।

एवं घेज्जेण भाविअो भवति अंतरप्पा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरु
सच्चज्जवसंपण्णो ॥

२१. पंचमकं—हासं न सेवियव्वं । अलियाइं असंतकाइं जंपंति हासइत्ता । परपरि-
भवकारणं च हासं, परपरिवायप्पियं च हासं, परपीलाकारणं च हासं, भेदवि-
मुत्तिकारकं च हासं, अण्णोण्णजणियं च होज्ज हासं, अण्णोण्णगमणं च होज्ज
मम्मं, अण्णोण्णगमणं च होज्ज कम्मं, कंदप्पाभिअोगगमणं च होज्ज हासं,
आसुरियं किव्विसत्तं च जणेज्ज हासं, तम्हा हासं न सेवियव्वं ।

१. खंतीयं (ख); खंतीय (ग, घ, च) ।

२. संथारस्स (क) ।

३. लुद्धो लोलो भणेज्ज अनियं अण्णेसु (क, ख,
ग, घ, च) ।

४. मुत्तीय (ख, घ) ।

५. भावितव्वं (क); भातियव्वं (ग) ।

६. एगस्स (वृ); एवमादियस्स (वृपा) ।

एवं मोणेण भाविओ भवइ अंतरप्पा, संजय-कर-चरण-नयण-वयणो सूरु
सच्चज्जवसंपण्णो ॥

निगमण-पदं

२२. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ मुप्पणिहियं इमेहि पंचहि वि कारणेहि
मण-वयण-काय-परिरक्खएहि ॥
२३. निच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो
अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो' सव्वजिणमणुण्णाओ ॥
२४. एवं बित्तियं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं 'आराहियं
आणाए अणुपालियं' भवति ॥
२५. एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवितं
सुदेसितं पसत्थं । बित्तियं संवरदारं समत्तं ।

— त्ति वेमि ॥

१. × (क, ख, ग, घ) ।

२. अणुपालियं आणाए आराहियं (क, ख, ग, घ, च) ।

अट्ठमं अज्झयणं तइयं संवरबारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू ! दत्ताणुण्णायसंवरो' नाम होति ततियं—सुव्वतं^१ महव्वतं गुणव्वतं परदव्व-हरणपडिविरइकरणजुत्तं अपरिमियमणंततण्हामणुगय-महिच्छ-मणवयणकलुस-आयाणसुनिग्गहियं सुसंजमियमण-हत्थ-पायनिहुयं निग्गथं णेट्ठिकं निरुत्तं निरासवं निब्भयं विमुत्तं उत्तमनरवसभ-पवरबलवग-सुविहियजणसंमतं परम-साहुधम्मचरणं ॥

अदत्तस्स अग्गहण-पदं

२. जत्थ य गामागर-नगर-निगम-खेड-कव्वड'-मडंब-दोणमुह-संवाह-पट्टणासमगयं च किंचि दव्वं मणि-मुत्त-सिल-प्पवाल-कंस-दूस-रयय-वरकणग-रयणमादि पडियं पम्हुट्ठं विप्पणट्ठं न कप्पति कस्सति^२ कहेउं वा गेण्हिउं वा । अहिरण्ण-सुवण्णिकेण समलेट्ठुकचणेणं अपरिग्गहसंवुडेणं लोगंमि विहरियव्वं ॥
३. जं पि य होज्जा हि दव्वजातं 'खलगतं खेत्तगत रण्णमंतरगतं व'^३ किंचि पुप्फ-फल-तय-प्पवाल-कंद-मूल-तण-कट्ट-सक्कराई अप्पं व बहं व अणुं व थूलगं वा न कप्पति अग्गहे अदिण्णंमि गिण्हिउं जे ॥

- | | |
|---|---|
| <p>१. दत्तमणुण्णायं० (क); दत्तमणुण्णायं० (ख, ग, घ, च) ।</p> <p>२. सुव्वत (क, ख, ग, घ, च); वृत्तिकारेण 'सुव्वय' इति पाठो लब्धः, तेन 'हे सुव्वत' इति सम्बोधनत्वेन व्याख्यातः । वस्तुतोऽत्र 'सुव्वयं महव्वयं गुणव्वयं' एतानि त्रीण्यपि</p> | <p>पदानि एकरूपाणि सन्ति । एकस्मिन् क्वचित्प्रयुक्तादर्शे 'सुव्वयं' इति पाठोपि लब्धः । तेनासौ पाठः स्वीकृतः ।</p> <p>३. खव्वड (क)</p> <p>४. कासती (क, घ) ।</p> <p>५. वाचनान्तरे—जलथलगयं खेत्तमंतरगयं(वु) ।</p> |
|---|---|

४. हणिहणि ओगहं अणुणविय गेण्हियव्वं । वज्जेयव्वो य सव्वकालं अचियत्त-
घरप्पवेसो, अचियत्तभत्तपाणं अचियत्तपीढ-फलग-सेज्जा-संधारग-वत्थ-पत्त-
कंबल-दंडग-रयहरण-निसेज्ज-चोलपट्टग-मुहपोत्तिय-पायपुंछणाइ-भायण - भंडो-
वहि-उवकरणं परपरिवाओ परस्स दोसो परववएसेणं जं च गेण्हइ, परस्स
नासेइ जं च सुकयं, दाणस्स य अंतरातियं, दाणविप्पणासो, पेसुण्णं चेव
मच्छरित्तं च ॥

अदत्तादाणवेरमणस्स अजोगता-पदं

५. जे वि य पीढ-फलग-सेज्जा-संधारग-वत्थ-पाय^१-कंबल-रओहरण^२-निसेज्ज-
चोलपट्टग-मुहपोत्तिय-पायपुंछणादि-भायण-भंडोवहि-उवकरणं^३ असंविभागी,
असंगहरइ,
'तव-वइतेणे'^४ य रूवतेणे य, आयारे चेव भावतेणे य,
सइकरे भंभकरे कलहकरे वेरकरे विकहकरे असमाहिकारके, सया अप्पमाण-
भोई^५ सततं अणुवद्धवेरे य निच्चरोसी, से तारिसए नाराहए वयमिणं ॥

अदत्तादाणवेरमणस्स अजोगता-पदं

६. अह केरिसए पुणाइं आराहए वयमिणं ?
जे से उवहि-भत्तपाण-^६'दाण-संगहण'^७-कुसले अच्चंतवाल-दुब्बल-गिलाण-वुड्ढ-
खमके पवत्ति-आयरिय-उवज्झाए सेहे साहम्मिए तवस्सी-कुल-गण-संघ-चेइयट्ठे
य निज्जरट्ठी वेयावच्चं अणिस्सियं दसविहं बहुविहं करेति, न य अचियत्तस्स
घरं^८ पविसइ, न य अचियत्तस्स 'गेण्हइ भत्तपाणं'^९, न य अचियत्तस्स सेवइ
पीढ-फलग-सेज्जा-संधारग-वत्थ-पाय-कंबल-दंडग-रओहरण- निसेज्ज-चोलपट्टय-
मुहपोत्तिय-पायपुंछणाइ-भायण-भंडोवहि-उवकरणं, न य परिवायं परस्स जंपति,
ण यावि दोसे परस्स गेण्हति, परववएसेणवि न किंचि गेण्हति, न य विपरि-
णामेति कंचि^{१०} जणं, न यावि णासेति दिण्ण-सुकयं, दाऊण य काऊण य न होइ
पच्छाताविए, संविभागसीले संगहोवग्गहकुसले, से तारिसए आराहए वयमिणं ॥
७. इमं च परदव्वहरणवेरमण-परिरक्खणट्टयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं
पेच्चाभाविकं आगमेसिभइं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण
विओसमणं^{११} ॥

१. पत्त (च) ।

२. रयोहरण (ख, ग, घ,) ।

३. प्रतीत्येति गम्यते (बु) ।

४. तव तेणे य वइ° (क, ख, ग, घ) ।

५. °ओती (क, ग) ।

६. संगहणदाण (क, ग, च) ।

७. गिहं (क, ग) ।

८. भत्तपाणं गेण्हइ (ख, घ, च) ।

९. किंचि (क) ।

१०. विओवसमणं (क, ख, ग, घ, च) ।

अदत्तावाणवेरमणस्स पंचभावणा-पवं

८. तस्स इमा पंच भावणा ततियस्स वतस्स होंति परदव्वहरणवेरमण-परि-
रक्खणद्वयाए ॥
९. पढमं—देवकुल-सभ-प्पवा-आवसह'-रक्खमूल-आराम-कंदरा - आगर-गिरिगुह'-
'कम्मंत-उज्जाण'-जाणसाल-कुवितसाल-मंडव - सुण्णघर - सुसाण-लेण'-आवणे,
अण्णमि य एवमादिर्यामि दगमद्विय'-बीज-हरित-तसपाण-असंसत्ते अहाकडे
फासुए विवित्ते पसत्थे उवस्सए होइ विहरियव्वं ।
आहाकम्म-बहुले य जे से आसित्त-संमज्जिओसित्त-सोहिय-छायण-दुमण-लिपण-
अणुलिपण-जलण-भंडचालण', अंतो वहि च असंजमो जत्थ वट्ठती', संजयाण
अट्ठा 'वज्जेयव्वे हु उवस्सए' से तारिसए सुत्तपडिकुट्ठे ।
एवं विवित्तवासवसहिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-
करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय'-ओग्गहरुई' ॥
१०. वितियं—आरामुज्जाण-काणण-वणप्पदेसभागे जं किंचि इक्कडं व कढिणगं व
जंतुगं व 'परा-मेरा'" - कुच्च - कुस - डब्ब - पलाल - भूयग - वल्लय'" - पुप्प - फल-
तय-प्पवाल-कंद-मूल-तण-कट्ठ-सक्कराईं गेण्हइ सेज्जोवहिस्स अट्ठा, न कप्पए
ओग्गहे अदिण्णमि गेण्हउं जे । हणिहणि ओग्गहं अणुण्णविय गेण्हियव्वं ।
एवं ओग्गहसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-करण-
कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरुई ॥
११. ततियं—पीढ-फल-सेज्जा-संथारगद्वयाए रक्खा न छिदियव्वा, न य छेदणेण"
भेयणेण य सेज्जा कारेयव्वा ।
जस्सेव उवस्सए वसेज्ज सेज्जं तत्थेव गवेसेज्जा, न य विसमं समं करेज्जा, न
निवाय'" - पवाय-उस्सुकत्तं, न डंसमसगेसु खुभियव्वं, अग्गी धूमो य न कायव्वो ।
एवं संजमबहुले संवरबहुले संवुडबहुले समाहिबहुले धीरे काएण फासयंतं सययं
अज्झप्पज्झाणजुत्ते समिए एगे चरेज्ज धम्मं ।

१. वसहि (क, ख, घ) ।

७. वट्ठति (च) ।

२. गिरिगुहा (च) ।

८. वज्जेयव्वो हु उवस्सओ (ग) ।

३. कम्मंतुज्जाण (क, ग, घ), कम्मं उज्जाण
(ख, च) ।

९. दत्तमणुण्णाय (क, ख, ग, घ, च); सर्वत्र ।

४. नयण (ख) ।

१०. °स्ती (क, ग) ।

५. °मद्विया (ख, घ) ।

११. परमेर (क); परंमेरा (ख); परमेरा (घ) ।

६. एतेषां समाहारद्वन्द्वः विभक्तिलोपश्च इत्यः
(बृ) ।

१२. पव्वय (ख, घ); वल्लजः तृणविशेषः (बृ) ।

१३. छेदण (ख, ग, घ, च) ।

१४. निव्वाय (ख) ।

एवं सेज्जासमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरूई ॥

१२. चउत्थं—साहारणपिडपातलाभे भोत्तव्वं संजएण समियं, न सायसूयाहिकं, न खद्धं, न वेइयं, न तुरियं, न चवलं, न साहसं, न य परस्स पीलाकरं सावज्जं, तह भोत्तव्वं जह से ततियवयं न सीदति ।

साहारणपिडवायलाभे सुहुमं 'अदिण्णादाणवय-नियम-वेरमणं' ।

एवं साहारणपिडवायलाभे समितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरूती ॥

१३. पंचमणं—साहम्मिएसु विणओ पउंजियव्वो, उवकारण-पारणासु विणओ पउंजियव्वो, वायण-परियट्टणासु विणओ पउंजियव्वो, दाण-गहण-पुच्छणासु विणओ पउंजियव्वो, निक्खमण-पवेसणासु विणओ पउंजियव्वो, अण्णेसु य एवमाइएसु बहुसु कारणसएसु विणओ पउंजियव्वो । विणओ वि तवो तवो वि धम्मो, तम्हा विणओ पउंजियव्वो गुरुसु साहमु तवस्सीसु य । एवं विणएण भाविओ भवति अंतरप्पा, निच्चं अहिकरण-करण-कारावण-पावकम्मविरते दत्ताणुण्णाय-ओग्गहरूई ॥

निगमण-पदं

१४. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुपणिहियं 'इमेहिं पंचहि वि कारणेहिं मण-वयण-काय-परिरक्खिएहि ॥
१५. निच्चं आमरणतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णाओ ॥
१६. 'एवं ततियं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं 'आराहियं आणाए अणुपालियं' भवति ।
१७. एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परुवियं पसिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवियं' सुदेसियं पसत्थं । ततियं संवरदारं समत्तं ।

—त्ति बेमि ॥

१. वेतितं (क) ।

२. अदिण्णादाणविरमणवर्यानियमणं (वृ);
अदिण्णादाणवयनियमवेरमणं (वृपा) ।

३. अणुपालियं आणाए आराहियं (च) ।

४. एवं जाव आघवियं (क, ख, ग, घ) ।

नवमं अज्झयणं

चउत्थं संवरदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू ! एत्तो य बंभचेरं—उत्तम-तव-नियम-णाण-दंसण-चरित्त-सम्मत्त-विणयमूल-जम'-नियम-गुणप्पहाणजुत्तं हिमवंत-महंत-तेयमंतं पसत्थ-गंभीर-थिमित-मज्झं अज्जवसाहुजणाचरितं मोक्खमगं विसुद्ध-सिद्धिगति-निलयं 'सासयमव्वाबाहम-पुणब्भवं पसत्थं सोमं सुभं सिवमचलमक्खयकरं' जतिवर-सारक्खियं सुचरियं सुसाहियं नवरि मुणिवरेहि महापुरिस-धीर'-सूर-धम्मिय-घितिमंताण य सया विसुद्धं भव्वं भव्वजणाणुचिण्णं निस्संकियं निब्भयं नित्तुसं निरायासं निरुवलेवं निव्वुतिघरं नियम-निप्पकंपं तवसंजममूलदलिय-णेम्मं पंचमहव्वयसुरक्खियं समितिगुत्तिगुत्तं भाणवरकवाडसुकयं अज्झप्पदिण्णफलिहं सणद्धोत्थइय-दुग्गइपहं सुगतिपहदेसगं' लोगुत्तमं च वयमिणं पउमसरतलागपालिभूयं महासगडभ्ररगतुंबभूयं महाविडिमरुक्खक्खंधभूयं महानगरपागारकवाडफलिहभूयं रज्जुपिणद्धो व इंदकेतू विसुद्धणेगगुणसंपिणद्धं ॥

बंभचेरमाहुप्प-पदं

२. जंमि य भगंमि हंइ सहसा सव्वं संभग-मथिय-चुण्णिय-कुसल्लिय-पल्लट्ट-

- | | |
|--|--------------------------------|
| १. यम (ग, घ) । | ५. वीर (क, ख, घ) । |
| २. सासयमपुणब्भवं पसत्थं सोमं सुहं सिवमक्ख-
यकरं (वृ); सासयमव्वाबाहमपुणब्भवं पसत्थं
सोमं सुहं सिवमचलमक्खयकरं (वृपा) । | ६. भव्वजणसमुच्चिण्णं (क, ख) । |
| ३. संरक्खियं (ख) । | ७. नीसंकं (ख) । |
| ४. सुभासियं (ग) । | ८. °सुकयरक्खणं (च) । |
| | ९. सण्णद्धवद्धोच्छइय °(च) । |
| | १०. °देसगं च (क, ख, ग, घ, च) । |

पडिय-खंडिय-परिसडिय-विणासियं विणयसीलतवनियमगुणसमूहं, तं बंभं
भगवन्तं—

गहगण-नक्खत्त-तारगाणं वा जहा उडुपती^१,

मणि-मुत्त-सिल-प्पवाल-रत्तरयणागराणं च जहा समुद्धो,

वेरुलिओ चेव जह मणीणं,

जह^२ मउडो चेव भूसणाणं,

वत्थाणं चेव खोमजुयलं,

अरविदं चेव पुप्फजेट्टं,

गोसीसं चेव चंदणाणं,

हिमवन्तो चेव ओसहीणं,

सीतोदा चेव निन्नगाणं,

उदहीसु जहा सयंभुरमणो,

रुयगवरे चेव मंडलिकपव्वयाण पवरे,

एरावण इव कुंजराणं,

सीहो व्व जहा मिगाणं पवरो,

पवकाणं चेव वेणुदेवे,

घरणो जह पण्णगइंदराया^३,

कप्पाणं चेव बंभलोए,

सभासु य जहा भवे सुहम्मा,

ठितिसु लवसत्तम व्व पवरा,

दाणाणं चेव अभयदाणं,

किमिराओ चेव कंबलाणं,

संघयणे चेव वज्जरिसभे,

संठाणे चेव समचउरंसे,

भाणेसु य परमसुक्कज्झाणं,

णाणेसु य परमकेवलं तु सिद्धं,

लेसासु य परमसुक्कलेस्सा,

तित्थकरो चेव जह मुणीणं,

वासेसु जहा महाविदेहे,

गिरिराया चेव मंदरवरे,

१. उडूपती (क); उदूपती (ग, घ) ।

२. जहा (ख, ग) ।

३. पण्णइंदराया (क, घ, च) ।

वणेषु जह नंदणवणं पवरं,
दुमेसु जह जंबू सुदंसणा वीसुयजसा— जीसे नामेण य अयं दीवो,
तुरगवती गयवती रहवती नरवती जह वीसुए चेव राया,
रहिए चेव जहा महारहगते ।

एवमणेगा गुणा अहीणा भवति एककमि बंभचेरे ॥

३. जंमि य आराहियंमि आराहियं वयमिणं सव्वं ।

सीलं तवो य विणमो य, संजमो य खंती गुत्ती मुत्ती ।

तहेव इहलोइय-पारलोइय-जसो य कित्ती य पच्चमो य ।

तम्हा निहुएण बंभचेरं चरियव्वं सव्वमो विसुद्धं जावज्जीवाए जाव सेयट्ठि-
संजमोत्ति—एवं भणियं वयं भगवया ।

तं च इमं—

पंचमहव्वय-सुव्वयमूलं, समणमणाइलसाहुसुचिण्णं ।

वेरविरामण-पज्जवसाणं, सव्वसमुद्द-महोदधितित्थं ॥१॥

तित्थकरेहि सुदेसियमगं, नरयतिरिच्छविवज्जियमगं ।

सव्वपवित्त-सुनिम्मियसारं, सिद्धिविमाण-अवंगुयदारं ॥२॥

देवनरिंदनमंसियपूयं, सव्वजगुत्तममंगलमगं ।

दुद्धरिसं गुणनायगमेक्कं, मोक्खपहस्स वडिसकभूयं ॥३॥

जेण सुद्धचरिएण भवइ सुबंभणो सुसमणो सुसाहू । स इसी स मुणी स संजं,
स एव भिक्खू, जो सुद्धं चरति बंभचेरं ॥

बंभचेरधिरीकरण-पदं

४. इमं च रति-राग-दोस-मोह'-पवड्डणकरं किमज्झ-पमायदोस-पासत्थसीलकरणं
अव्वमंगणाणि य तेल्लमज्जणाणि य अभिक्खणं कक्खसीसकरचरणवदणधोवण-
संबाहण-गायकम्म-परिमदण-अणुलेवण-चुण्णवास-धूवण - सरीरपरिमंडण-बाउ-
सिक-हसिय-भणिय-नट्टगीयवाइयनडनट्टकजल्लमल्लपेच्छण-वेलंबकं जाणि य
सिंगारागाराणि य अण्णाणि य एवमादियाणि तव-संजम-बंभचेर-घातोवघाति-
याइं अणुचरमाणेणं बंभचेरं वज्जेयव्वाइं सव्वकालं । भावेयव्वो भवइ य
अंतरप्पा इमेहिं तव-नियम-सील-जोगेहिं निच्चकालं, किं ते ?—

अण्हाणक-उदंतधोवण' - सेयमलजल्लधारण - मूणवय-केसलोय-खम-दम-अचेलग-
खुप्पिवास - लाघव - सितोसिण-कट्टसेज्ज-भूमिनिसेज्ज-परघरपवेस-लद्धावलद्ध-

१. संमोह (क, च) ।

वर्जयितव्या इति योगः (वृ) ।

२. छान्दसत्वाच्च प्रथमाबहुवचनलोपो ह्यस्य; ३. अदंतधोवण (च) ।

माणावमाण-निदण-दंसमसगफास-नियम-तवगुणविणयमादिएहि जहा से थिर-तरंगं होइ बंभचेरं ॥

५. इमं च अवंभचेरविरमण^१-परिरक्खणट्टयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहित पेन्वाभाविकं आगमेसिभदं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विओसवणं ॥

बंभचेरस्स पंचभावणा-पवं

६. तस्स इमा पंच भावणाओ चउत्थवयस्स होंति अवंभचेरवेरमण-परिरक्खणट्टयाए ॥
७. पढमं—सयणासण - घरदुवारअंगण - आगास - गवक्ख - साल - अभिलोयण-पच्छवत्थुक-पसाहणकण्हाणिकावकासा, अवकासा जे य वेसियाणं, अच्छंति य जत्थ इत्थिकाओ अभिक्खणं मोह-दोस-रति-रागवड्डणीओ, कहंति य कहाओ बहुविहाओ, ते हु वज्जणिज्जा । इत्थिसंसत्त-संकिलिट्ठा, अण्णे वि य एवमादी अवकासा ते हु वज्जणिज्जा जत्थ मणोविबभमो 'वा भंगो वा'^२ भंसणा वा अट्ठं रुद्धं च होज्ज भाणं तं तं वज्जेज्ज वज्जभीरू अणायतणं अंतपंतवासी । एवमसंसत्तवासवसहीसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, आरतमण-विरयगामधम्मे जितेंदिण् वंभचेरगुत्ते ॥
८. वितियं—नारीजणस्स मज्जे न कहेयव्वा कहा—विचित्ता विव्वोय-विलास-संपउत्ता हास-सिंगार-लोइयकह व्व मोहजणणी, न आवाह-विवाह-वरकहा,^३ इत्थीणं वा सुभग-दुब्भग^४-कहा, चउसट्ठि^५ च महिला गुणा, न वण्ण-देस-जाति-कुल-रूव-नाम-नेवत्थ-परिजणकहव्व इत्थियाणं, अण्णा वि य एवमादियाओ कहाओ सिंगार-कलुणाओ तव-संजम-बंभचेर-घातोवघातियाओ अणुचरमाणेण बंभचेरं न कहेयव्वा, न सुणेयव्वा, न चितेयव्वा । एवं इत्थीकहविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, आरतमण-विरयगामधम्मे जितेंदिण् वंभचेरगुत्ते ॥
९. ततियं—नारीण हसिय - भणिय - चेट्टिय - विप्पेक्खिय-गइ - विलास-कीलियं, विव्वोइय-नट्ट-गीत-वाइय-सरीरसंठाण-वण्ण - कर - चरण - नयण - लावण्ण-रूव-जोवण्ण-पयोहर-अधर-वत्थ-अलंकार-भूसणाणि य, गुज्झोकासियाइ^६, अण्णाणि य एवमादियाइ तव-संजम-बंभचेर-घातोवघातियाइ अणुचरमाणेण बंभचेरं न चक्खूसा न मणसा न वयसा पत्थेयव्वाइ पावकम्माइ ।

१. बंभचेर^० (क, ग, घ); बंभविरमण (ख) ।

२. व्व भंगो व्व (क) ।

३. °कहाविव (क, ख, ग, घ, च) ।

४. दुभग (ख, ग, घ) ।

५. चोयट्ठि (ख, ग, घ) ।

६. गुज्झोवकासियाइ (क, ख, ग, घ, च) ।

एवं इत्थीरूवविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, आरतमण-विरयगामधम्मे जितेंदिए बंभचेरगुत्ते ॥

१०. चउत्थं—पुव्वरय-पुव्वकीलिय-पुव्वसगंथ^१-गंथ-संथुया जे ते आवाह-विवाह-चोल्लकेसु य तिथिसु जण्णेसु उस्सवेसु य सिंगारागार-चारुवेसाहिं इत्थीहिं^२ हाव-भाव-पललिय - विक्खेव^३ - विलास-सालिणीहिं अणुकूलपेम्मकाहिं^४ सद्धि अणुभूया सयण-संपओगा, उदुसुह-वरकुसुम-सुरभिचंदण-सुगंधिवर^५-वास-धूव-सुहफरिस-वत्थ-भूसणगुणोववेया, रमणिज्जाओज्ज-गेज्ज^६-पउरनड-नट्टक-जल्ल-मल्ल-मृट्टिक-वेलंबग - कहग - पवग - लासग - आइक्खग - लंख - मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-तालायर-पकरणाणि य बहूणि महुरसर-गीत-मुस्सराइं, अण्णाणि य एवमाइयाइं तव-संजम-बंभचेर-घातोवघातियाइं अणुचरमाणेण बंभचेरं न ताइं समणेण लब्भा दट्ठं न कहेउं नवि सुमरिउं जे ।

एवं पुव्वरयपुव्वकीलियविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, आरयमण-विरतगामधम्मे जिइंदिए बंभचेरगुत्ते ॥

११. पंचमगं—आहारपणीय-निद्धभोयण-विज्जए संजते सुसाहू ववगयखीर-दहि-सप्पि-नवनीय-तेल्ल-गुल-खंड-मच्छंडिक-महु-मज्ज-मंस-खज्जक-विगति-परिचत्त-कयाहारे न दप्पणं^१ न बहुसो न नितिकं न सायसूपाहिकं न खद्धं, तथा भोत्तव्वं जहू से जायामाता य भवति, न य भवति विब्भमो भंसणा य धम्मस्स ।

एवं पणीयाहारविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा, आरयमण-विरतगामधम्मे जिइंदिए बंभचेरगुत्ते ॥

निगमण-पदं

१२. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहितं इमेहि पंचहि वि कारणेहि मण-वयण-काय-परिरक्खिण्हि ॥
१३. णिच्चं आमरणंतं च एस^१ जोगो णेयव्वो^२ धितिमता मतिमता अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी^३ असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुण्णाओ ॥

१. °संगंथ (ख, ग, घ, च) ।

२. × (ख, ग, घ, च); स्त्रीभिरिति गम्यते (वृ) ।

३. विक्खेव (क, ख, घ, च) ।

४. °पेम्मकाहि (क) ।

५. सुगध° (क, ख, ग, घ, च) ।

६. गेय (ग) ।

७. आहारं भुंजीतेतिशेषः (वृ) ।

८. एसो (क, ख, ग, घ) ।

९. णायव्वो (ख, घ) ।

१०. अपरिस्सावी (क); अपरिस्साती (ख, घ, च) ।

१४. एवं' चउत्थं संवरदारं फासितं पालितं सोहितं तीरितं किट्टितं आराहितं
आणाए अणुपालितं भवति ॥
१५. एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं पळुवियं पसिद्धं सिद्धवरसासणमिणं
आघवियं मुदेसितं पसत्थं । चउत्थं संवरदारं समत्तं ।

—त्ति बेमि ॥

दसमं अज्झयणं

पंचमं संवरदारं

उक्खेव-पदं

१. जंबू ! अपरिग्गहो' संवुडे य समणे आरंभ-परिग्गहातो विरते, विरते कोहमाणमायालोभा ।
 एगे असंजमे । दो चेव राग-दोसा । तिण्णि य दंडा, गारवा य, गुत्तीओ, तिण्णि' य विराहणाओ । चत्तारि कसाया, भाणा, सण्णा, विकहा तथा य हुंति चउरो पंच य किरियाओ, समिति-इंदिय-महव्वयाइं च । छज्जीवनिकाया, छच्च लेसाओ सत्त भया । अट्ट य मया । नव चेव य वंभचेरगुत्ती । दसप्पकारे य समणधम्मे । एक्कारस य उवासगाणं' । वारस य भिक्खुपडिमा । किरियठाणा य । भूयगामा । परमाधम्मिया । गाहासोलसया । असंजम-अवंभ-णाय-असमाहिठाणा । सबला । परिसहा । सूयगड्जभयण-देव-भावण-उद्देस-गुण-पकप्प-पावसुत-मोहणिज्जे । सिद्धातिगुणा य । जोगसंगहे, 'सुरिदा । तेत्तीसा आसातणा' । [आदि' एक्काइयं करेत्ता एक्कुत्तरियाए' वड्डिएसु तीसानो जाव उ भवे निकाहिका"]

१. अपरिग्गह (क, ग, घ, च) ।
 २. तिन्नि तिन्नि (क, ग, घ, च) ।
 ३. प्रतिमा भवन्तीति गम्यम् (वृ) ।
 ४. तेत्तीसा आसातणा सुरिदा (क, ख, ग, घ, च);
 आदर्शेषु यद्यपि 'तेत्तीसा आसातणा सुरिदा' एवं पाठो दृश्यते, किन्तु अर्थमीमांसया नैव सङ्गच्छते । 'जोगसंगहे सुरिदा' एष क्रमः स्यात् तदार्थसङ्गतिर्जायते । यथा—'तिण्णि य दंडा गारवा य गुत्तीओ, तिण्णि य विराह-णाओ' एवं एकस्यां संख्यायामनेकेषां विष-

याणामुल्लेखोस्ति तथा द्वात्रिंशत्संख्यायामपि द्वयोर्विषयोऽस्तेऽस्तेऽस्ति, द्रष्टव्यमिह 'समवाओ' (३२।१,२) यथा—'वत्तीसं जोगसंगहा पण्णत्ता' तथा 'वत्तीसं देविदा पण्णत्ता' । अत्र 'देविदा' इति पदस्य स्थाने 'सुरिदा' इति पदं प्रयुक्तमस्ति ।

५. एणसु ति वाक्यशेषः (वृ) ।
 ६. वृद्ध्या इति गम्यते (वृ) ।
 ७. असौ पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।

विरती-पणिहोसु अविरतीसु य, एवमादिसु बहूषु ठाणेषु जिणपसत्थेसु अवितहेसु सासयभावेसु अवट्ठिएसु संकं कंखं निराकरेत्ता सद्दहते सासणं भगवतो अणियाणे अगारवे अलुद्धे अमूढमण-वयण-कायगुत्ते ॥

२. जो सो वीरवरवयणविरतिपवित्थर-बहुविहप्पकारो सम्मत्तविसुद्धमूलो धितिकंदो विणयवेइओ निग्गततिलोक्कविपुलजसनिचियपीणपीवरसुजातखंधो पंचमहव्वयविसालसालो भावणतयंत' - उभाण-सुभजोग - नाण-पल्लववरंकुरधरो बहुगुणकुसुमसमिद्धो सीलसुगंधो अण्हयफलो' पुणो य मोक्खवरबीजसारो मंदरगिरि-सिहरचूलिका इव इमस्स मोक्खवर-भोत्तिमगस्स सिहरभूओ संवरवरपायवो । चरिमं संवरदारं ॥

अकप्पदब्बजाय-पदं

३. जत्थ न कप्पइ गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासमगयं च किंचि अप्पं व बहुं व अणुं व थूलं व तस-थावरकाय-दब्बजायं मणसा वि परिघेत्तुं ।' न हिरण-सुवण-वैत्त-वत्थुं, न दासी-दास-भयक-पेस-हय-गय-गवेलगं व, न जाण-जुग-सयणासणाइं, न छत्तकं न कुंडिया' 'न पाणहा' न पेहुण-वीयण-तालियटका' ॥
४. न यावि अय-तउय-तंब - सीसक-कंस - रयत - जातरूव-मणि - मुत्ताधारपुडक-' संख-दंतमणि-सिंग-सेल'-काय-वइर'-चेल-चम्म-पत्ताइं महारिहाइं परस्स अज्झो-ववायलोभजणणाइं परियट्ठिउं गुणवओ' ॥
५. न यावि पुप्फ-फल-कंद-मूलादियाइं, सणसत्तरसाइं सव्वघण्णाइं तिहिं वि जोगेहिं परिघेत्तुं ओसहभेसज्जभोयणट्ठयाए संजएणं । किं कारणं ? —
अपरिमितणाणदंसणघरेहिं सील-गुण-विणय-तव-संजमनायकेहिं तित्थयरेहिं

१. भावणतयं (घ, वृ); °तयंत (वृपा) ।

२. अण्हव ° (वृ) ।

३. परिघेत्तू (क, ख, ग, घ) ।

४. कौंडिका (ख, घ) ।

५. नोवाहणा (ख); न वाहणा (ग, च);
नोपाणहा (क्व) ।

६. न कल्पते परिग्रहीतुमिति शेषः ।

७. °हारपुलक (क) ।

८. लेस (वृपा) ।

९. वर (क, ख, ग, घ, च, वृ); एतत् पदं १०. गुणवयाइं (क) ।

वृत्तिरचनात् पूर्वमेव विपर्यस्तं जातम् ।

वृत्तिकृता 'वर' इति पदं लब्धम्, तेन 'काचवरः प्रधानकाचः' इति व्याख्यातम् ।
वस्तुतोत्र 'वइर' इति पदमासीत् । लिपि-
दोषेण तद् विपर्ययो जातः । निसीहुज्जयणस्स
एकादशोद्देशे प्रथमे सूत्रे 'कायपायाणि वा'...
वइरपायाणि वा' इति पदद्वयं सुस्पष्टमस्ति ।
अत्रापि पात्रप्रकरणे तथैव गुज्यते ।
आचारचूलायाः पात्रैषणाध्ययने 'वइर'
पदस्य उल्लेखो नास्ति ।

सव्वजग-जीव-वच्छलेहिं तिलोयमहिंहि जिणवरिदेहिं एस जोणी जगाणं दिट्ठा न कप्पते' जोणिसमुच्छेदोत्ति, तेण वज्जंति समणसीहा ॥

असण्णिहि-पदं

६. जंपि य ओदण-कुम्मास गंज-तप्पण-मंथु-भुज्जिय-पलल-सूप-सक्कुलि-वेढिम-वर-सरक'-चुण्णकोसग - पिड - सिहरिणि - वट्ट-मोयग-खीर-दहि-सप्पि-नवनीत-तेल्ल-गुड'-खंड-मच्छंडिय-मधू-मज्ज-मंस-खज्जक वंजणविधिमादिकं पणीयं उवस्सए परघरे व रण्णे न कप्पति तंपि सण्णिहि काऊण' सुविहियाणं ॥

अकप्पभोयण-पदं

७. जंपि य उद्दिट्ठ-ठविय-रचित्तग-पज्जवजात-पकिण्ण-पाउकरण-पामिच्चं, मीसक-कीयकड-पाहुडं वा, दाणट्ट-पुण्णपगडं, समण-वणीमगट्ठयाए व कयं, पच्छाकम्मं पुरेकम्मं नितिकं मक्खियं अतिरित्तं मोहरं चेव सयंगाहमाहडं' मट्ठिओवलित्तं, अच्छेज्जं चेव अणीसट्ठं, जं तं तिहीसु' जण्णेसु ऊसवेसु य अंतो व्व बहि व होज्ज समणट्ठयाए ठवियं, हिंसा-सावज्ज-संपउत्तं न कप्पति तंपि य पग्घित्तुं ॥

कप्पभोयण-पदं

८. अह केरिसयं पुणाइ कप्पति ? जं तं एक्कारसपिडवायसुद्धं किण्ण-हण्ण-पयण-कयकारियाणुमोयण-नव-कोडीहि सुपरिसुद्धं, दसहि य दोसेहि विप्पमुक्कं, उग्गम-उप्पायणेसणासुद्धं, ववगय-चुय-चइय'-चत्तदेहं च फासुयं च ववगयसंजोगमणिगालं, विगयधूमं, छट्ठाण-निमित्तं, छक्कायपरिरक्खणट्ठा हणिहणि' फामुकेण भिक्खेण वट्ठियव्वं ॥

रोगायंकेवि असण्णिहि-पदं

९. जंपि य समणस्स सुविहियस्स उ रोगायंके बहुप्पकारंमि समुप्पण्णे, वाताहिक-पित्तसिंभाइरित्तकुविय-तहसण्णिवायजाते', उदयपत्ते उज्जल-वल-विउल-तिउल-कक्खड-पगाड-दुक्खे, अमुभ-कडुय-फरुस-चंडफलाविवागे महब्भये जीवियंतकरणं सव्वसरीर-परितावणकरे न कप्पति' तारिसे वि तह अप्पणो परस्स वा ओसह-भेसज्जं भत्त-पाणं च तंपि सण्णिहिकयं ॥

१. कप्पती (क, ग, घ, च) ।

२. बिसारक (क) ।

३. गुल (ग, घ, च) ।

४. काउ (ग) ।

५. सयगाह ° (घ, च) ।

६. तिहीसु (क, च) ।

७. चयिय (क); चविय (घ) ।

८. हणि-हणि (क, ग, घ) ।

९. °जाते व्व (क, ग, घ, च) ।

१०. कप्पती (क) ।

उवगरणधारणविहि-पदं

१०. जंपि य समणस्स सुविहियस्स तु पडिग्गहधारिस्स भवति भायण-भंडोवहि-उवगरणं पडिग्गहो पायवंधणं पायकेसरिया पायठवणं च पडलाइं तिण्णेव, रयत्ताणं च गोच्छओ, तिण्णेव य पच्छाका, रओहरण-चोलपट्टक-मुहणंतकमा-दीयं । एयं पि य संजमस्स उववूहणट्टयाए वायायव-दंस-मसग-सीय-परिरक्खण-ट्टयाए उवगरणं रागदोसरहियं परिहरियव्वं संजएण णिच्चं, पडिलेहण-पप्फो-ङ्गण-पमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेण होइ सततं निक्खिवियव्वं च गिण्हियव्वं च भायण-भंडोवहि-उवगरणं ॥

समणस्स सरूवनिरूवण-पदं

११. एवं मे संजते विमुत्ते निस्संगे निप्परिग्गहरुई निम्ममे निन्नेह-बंधणे सव्वपाव-विरते वासीचंदण-समाणकप्पे सम-तिण'-मणि-मुत्त'-लेट्ठु-कंचण-समे समे य माणावमाणणाए समियराए समित-रागदोमे, समिए समितीमु, सम्मदिट्ठी, समे य जे सव्वपाणभूतेमु, से हु समणे, सुयधारते उज्जुए' संजते सुसाहू, सरणं सव्वभूयाणं, सव्वजगवच्छले सच्चभासके य, संसारंते ठिते य, संसारसमुच्छिण्णे सततं मरणाणुपारए, पारगे' य सव्वेसि संसयाणं, पवयणमायाहि अट्ठहि अट्ठकम्मगंठीविमोयके, अट्ठमयमहणे ससमयकुसले य भवति सुह-दुक्ख-निव्वि-सेसे, अन्धितर-बाहिरंमि सया तवोवहाणंमि य सुट्ठुज्जुत्ते, खंते दंते य हिय-निरते', ईरियासमिते भासासमिते एसणासमिते आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणा-समिते उच्चार-पासवण-खेल-सिघाणजल्ल-परिट्ठावणियासमिते मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबंभयारि चाई' लज्जू घन्ने तवस्सी खंतिखमे जितिदिए सोधिए' अणियाणे अबहिल्लेस्से अममे अकिंचणे छिण्णगंघे' निरुवलेवे,

सुविमल-वरकंसभायणं व' मुक्कतोए,
संखे विव निरंगणे विगय-राग-दोस-मोहे,
कुम्मो व' इंदिएसु गुत्ते,
जच्चकंचणं' व जायरूवे,
पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे,

१. तण (क) ।

२. मुत्ते (ख) ।

३. उज्जते (क्व); उद्यतो वा (वृ) ।

४. पारके (क, ख, घ, च) ।

५. विइनिरते (वृपा) ।

६. चागी (ख, घ, च) ।

७. सोधिके (क, ख, घ, च) ।

८. छिण्णसोए (वृपा) ।

९. चेव (क, ख, ग, घ, च) ।

१०. इव (क, ग) ।

११. °कंचणं (क, ग, घ) ।

चंदो इव सोमभावयाए^१,
 सूरौ व्व दित्ततेए,
 अचले जह मंदरे गिरिवरे,
 अक्खोभे सागरो व्व थिमिए,
 पुढवीव^२ सव्वफाससहे,
 तवसावि^३ य भासरासिच्छन्ने व्व जाततेए,
 जलियहुयासणो विव तेयसा जलंते,
 गोसीसचंदणं पिव सीयले सुगंधे य,
 हरयो^४ विव समियभावे,
 उग्घसिय सुनिम्मलं व आयंसमंडलतलं पागडभावेण सुद्धभावे,
 सोंडीरे कुंजरे^५ व्व,
 वसभे व्व जायथामे,
 'सीहे वा'^६ जहा मिगाहिवे होति दुप्पघरिसे,
 सारयसलिलं व सुद्धहियए,
 भारंडे चेव अप्पमत्ते,
 खग्गिविसाणं व एगजाते,
 खाणुं चेव उड्डुकाए,
 सुन्तागारे व्व अप्पडिकम्मे,
 सुन्तागारावणस्संतो निवायसरणप्पदीवज्झाणमिव निप्पकंपे,
 जहा खुरो चेव एगघारे,
 जहा अही चेव एगदिट्ठी,
 आगासं चेव निरालंबे,
 विहगे^७ विव सव्वघो विप्पमुक्के,
 कय-परनिलये जहा चेव उरए,
 अपडिबद्धे अनिलो व्व,
 जीवो व्व अप्पडिहयगती,

१. सोमताए (वृ); सोमभावयाए (वृपा); ओवाइयसुत्ते (सू० २७) 'चंदो इव सोमलेसा' तथा कप्पसुत्ते 'चंदो इव सोमलेसे' आयारो तह आयारचूला परिशिष्ट ३, पृ० १६ तथा जंबुदीवपण्णत्तीए 'चंदो इव सोमदंसणे' इति पाठो विद्यते, आयारो तह आयारचूला परिशिष्ट ३, पृ० १७ ।
२. पुढवी विव (घ, च) ।
३. °इ (ख, ग, घ, च) ।
४. हरतो (ख, घ, च) ।
५. कुंजरो (ग, च) ।
६. सीहे व्व (क); सीहो वा (ख, घ) सीहो व्व (च) ।
७. विहगे (ख, च) ।

गामे-गामे एगरायं, नगरे-नगरे य पंचरायं दूइज्जंते य, जित्तिदि ए जितपरीसहे निब्भए' विऊ' सच्चित्ताचित्तमीसकेहिं दव्वेहिं विरायं गते, संचयतो विरए, मुत्ते लहुके निरवकंखे जीवियमरणासविप्पमुक्के, निस्संघि निव्वणं चरित्तं धीरे काएण फासयंते, सततं अज्झप्पभाणजुत्ते निहुए' एगे चरेज्ज धम्मं ॥

१२. इमं च परिग्गह्वेरमण-परिरक्खणट्टयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभाविकं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सब्बदुक्खपावाण विप्रोसमणं ॥

अपरिग्गहस्स पंचभावणा-पदं

१३. तस्स इमा पंचभावणाओ चरिमस्स वयस्स होति परिग्गह्वेरमण-रक्खणट्टयाए ॥

१४. पढमं—सोइंदि एण सोच्चा सद्दाइं मणुण्ण-भद्दाइं, किं ते ? —

वरमुरय-मुइंग-पणव-दद्दुर-कच्छभि- वीणा-विपंची - वल्लिय-वद्धीसक-सुघोस- नंदि-सूसरपरिवादिणी-वंस- तूणक-पट्ठक-तंती - तल-ताल-तुडियनिग्घोस-गीय- वाइयाइं, नडनट्टक-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिक-वेलंबक-कहक-पवक-लासग-आइक्खक- लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-तालायर-पकरणाणि य, बहूणि महुरसर-गीत- सुस्सराइं, कंची-मेहला'- कलाव - पतरक- पहेरक-पायजालग-घंटिय-खिखिणि- रयणोइज्जालय-छुट्ठिय - नेउर-चलणमालिय - कणगानियल- जालग-भूसणसद्दाणि, लीलचंक्रममाणानुदीरियाइं, तरुणीजणहसिय - भणिय-क्लारिभत-मंजुलाइं, गुणवयणाणि य बहूणि महुरजणभासियाइं, अण्णेसु य एवमादिएसु सद्देसु मणुण्ण-भद्दाएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं न रज्जियव्वं न गिज्जियव्वं न मुज्जियव्वं न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं न सइं च मइं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि सोइंदि एण सोच्चा सद्दाइं अमणुण्ण-पावकाइं, किं ते ? —

अक्कोस-फरुस - खिसण- अवमाणण - तज्जण - निब्भंछण - दित्तवयण-तासण- उक्कज्जिय-रुण्ण-रडिय - कंदिय - निग्घट्टरसिय-कलुणविलवियाइं, अण्णेसु य एवमादिएसु सद्देसु अमणुण्ण-पावएसु न तेसु समणेण रुसियव्वं न हीलियव्वं न निदियव्वं न खिसियव्वं न छिदियव्वं न भिदियव्वं न बहेयव्वं न दुगुंछावत्तिया व लब्भा उप्पाएउं ।

एवं सोत्तिदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा, मणुण्णाऽमणुण्ण-सुब्धि-दुब्धि- रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संबुडे पणिहिंतिदि ए चरेज्ज धम्मं ॥

१. निब्भओ (ग) ।

४. मेहल (क, ग, घ, च)

२. विउत्ते (च); विसुद्ध (वृषा) ।

५. करुण° (क) ।

३. निहुते (क); निहुके (ख, घ, च) ।

१५. ब्रितियं—चक्खुइंदिएण पासिय रूवाणि मणुण्णाइं भद्काइं, सच्चित्ताऽचित्त-मीसकाइं—कट्ठे पोत्थे य चित्तकम्मे लेप्पकम्मे सेले य दंतकम्मे य, पंचहि वण्णेहि अण्णेगसंठाण-संठियाइं, गंधिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमाणि य मल्लाई बहुविहाणि य अहियं नयण-मणसुहकराइं, वणसंडे पव्वते य गामागरनगराणि य खुद्दिय-पुक्खरणि-वावी-दीहिय-गुंजालिय-सरसरपंतिय-सागर-बिलपंतिय-खातिय'-नदि-सर-तलाग-वप्पिणी-फुल्लुप्पल-पउम' परिमंडियाभिरामे, अण्णेग-सउणगण - मिट्ठणविचरिए, वरमंडव - विविहभवण - तोरण-चेतिय-देवकुल-सभ-प्पवावसह-सुकयसयणासण-सीय-रह-सगड-जाण-जुग-संदण-नरनारिगणे य सोमपडिरूवदरिसणिज्जे, अलंकियविभूसिए, पुव्वकयतवप्पभावसोहग्गसंपउत्ते, नड-नट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहक-पवग - लासग-आइक्खग - लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-तालायर-पकरणाणि य बहूणि सुकरणाणि, अण्णेसु य एवमादिएसु रूवेसु मणुण्ण-भद्एसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं न 'रज्जियव्वं न गिज्जियव्वं न मुज्जियव्वं न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं न सइं' च मइं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि चक्खिदिएण पासिय रूवाइं अमणुण्ण-पावकाइं, किं ते ? —

गंडि-कोढिक-कुणि-उदरि-कच्छुल्ल-पइल्ल-कुज्ज - पंगुल-वामण-अंधिल्लग - एग-चक्खुविणिहय-सप्पिसल्लग-वाहिरोगपीलियं, विगयाणि य मयककलेवराणि', सकिमिणकुहियं च दव्वरासिं, अण्णेसु य एवमादिएसु अमणुण्ण-पावतेसु न तेसु समणेण रूसियव्वं' •न हीलियव्वं न निंदियव्वं न खिसियव्वं न छिंदियव्वं न भिंदियव्वं न वहेयव्वं • न दुगुंछावत्तिया व लब्भा उप्पातेउं ।

एवं चक्खिदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा', •मणुण्णाऽमणुण्ण-सुब्भि-दुब्भि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे पणिहिंतिदिए • चरेज्ज धम्मं ॥

१६. ततियं—घाणिदिएण अग्घाइय गंधाति मणुण्ण-भद्गाइं, किं ते ? —

जलय-थलय-सरसपुप्फफलपाणभोयण-कोट्ठ'-तगर-पत्त-चोय-दमणक-मरुय - एला-रस-पिक्कमंसि'-गोसीस-सरसचंदण-कप्पूर - लवंग-अगर-कुंकुम - कक्कोल -उसीर-सेयचंदण-सुगंधसारंगजुत्तिवरधूववासे उउय'-पिडिम-णिहारिम-गंधिएसु, अण्णेसु

१. खादिय (क, ग) ।

२. पउमसंड (ख, घ) ।

३. रज्जियव्वं जाव न सइं (क, ख, ग, घ) ।

४. मतक° (ख, घ, च) ।

५. सं० पा०—रूसियव्वं जाव न ।

६. सं० पा०—अंतरप्पा जाव चरेज्ज ।

७. कुट्ठ (क, ग) ।

८. पक्कमंसि (ख) विक्कमंसि (घ) ।

९. उउय (क, घ) ।

य एवमादिएसु गंधेषु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं' •न रज्जियव्वं न गिज्जियव्वं न मुज्जियव्वं न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं • न सति च मइं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि घाणिदिण्ण अग्घाइय गंधाणि अमणुण्ण-पावकाइं, किं ते ? —

अहिमड-अस्समड-हत्थिमडगोमड-विग-मुणग-सियाल-मणुय-मज्जार-सीह-दीविय-मयकुहियविणट्टकिविण-बहुदुरभिगंधेषु, अण्णेषु य एवमादिएसु गंधेषु अमणुण्ण-पावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं न हीलियव्वं' •न निदियव्वं न खिसियव्वं न छिदियव्वं न भिदियव्वं न वहेयव्वं न दुगुंछावत्तिया व लब्भा उप्पाएउं ।

एवं घाणिदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा, मणुण्णाऽमणुण्ण-सुब्धि-दुब्धि-रागदोस-पणिहियप्पा माहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे • पणिहिण्णिदि' चरेज्ज घम्मं ॥

१७. चउत्थं — जिब्भिदिण्ण साइय रसाणि उ मणुण्ण-भद्दकाइं, किं ते ? —

उग्गाहिम-विविहपाण-भोयण-गुलकय-खंडकय-तेल्लघयकय-भक्खेसु बहुविहेसु लवणरससंजुत्तेसु महु-मंस-बहुप्पगारमज्जिय-निट्ठाणग-दालियं-सेहं-दुद्ध-दहि-सरय-मज्ज-वरवारुणी-सीहु-काविसायणक-साकट्टारस-बहुप्पगारेसु भोयणेषु य मणुण्णवण्ण-गंध-रस-फास-बहुद्वसंभितेसु, अण्णेषु य एवमादिएसु रसेसु मणुण्ण-भद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं' •न रज्जियव्वं न गिज्जियव्वं न मुज्जियव्वं न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं • न सइं च मइं च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि जिब्भिदिण्ण सायिय रसाति अमणुण्ण-पावगाइं, किं ते ? —

अरस-विरस-सीय-लुक्ख-णिज्जप्प'-पाण-भोयणाइं दोसीण-वावण्ण-कुहिय-पूइय-अमणुण्ण-विणट्ट-पमूय-बहुद्विभगंधियाइं तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-रस-लिडनीर-साइं, अण्णेषु य एवमादिएसु रसेसु अमणुण्ण-पावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं' •न हीलियव्वं न निदियव्वं न खिसियव्वं न छिदियव्वं न भिदियव्वं न वहेयव्वं न दुगुंछावत्तिया व लब्भा उप्पाएउं ।

एवं जिब्भिदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा, मणुण्णाऽमणुण्ण-सुब्धि-दुब्धि-रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे पणिहिण्णिदि' •चरेज्ज घम्मं ॥

१८. पंचमगं—फासिदिण्ण फासिय फासाइं मणुण्ण-भद्दकाइं, किं ते ? —

१. सं० पा०—सज्जियव्वं जाव न सति ।

२. सं० पा०—हीलियव्वं जाव पणिहिण्णिदि ।

३. पिहियपंचेदि (ख) ।

४. सं० पा०—सज्जियव्वं जाव न सइं

५. णिज्जं (क, ख, ग) ।

६. सं० पा०—रूसियव्वं जाव चरेज्ज ।

दगमंडव-हार-सेयचंदण- सीयलविमलजल - विविहकुसुमसत्थर-ओसीर - मुत्तिय-
मुणाल-दोसिणा पेहुणउक्खेवग-तालियंट-बीयणग-जणियसुहसीयले य पवणे
गिम्हकाले, सुहफासाणि य बहूणि सयणाणि आसणाणि य, पाउरणगुणे य
सिसिरकाले अंगार-पतावणा य आयव-निद्ध-मउय-सीय-उसिण-लहुया य जे
उदुसुहफासा अंगसुह-निव्वुइकरा ते', अण्णेषु य एवमादिएसु फासेसु मणुण-
भइएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं न रज्जियव्वं न गिज्जियव्वं न मुज्जियव्वं
न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न अज्जोववज्जियव्वं' न तुसियव्वं न
हसियव्वं न सति च मति च तत्थ कुज्जा ।

पुणरवि फासिंदिएण फासिय फासाति अमणुण-पावकाइ, किं ते ? —

अणेगबंध-वह-तालणंकण-अतिभारारोहणए, अंगभंजण-सूर्नखप्पदेस-गाय-
पच्छण' - लक्खारस-खारतेल-कलकलतउ-सीसक' - काललोहसिचण - हडिबंधण-
रज्जु-निगल-संकल- हत्थंडुय' - कुंभिपाक-दहण - सीहपुच्छण - उब्बंधण - सूलभेय-
गयचलणमलण - करचरणकणनासोट्टसीसछेयण' - जिब्बंधण - वसणनयणहिययंत-
दंतभंजण' - जोत्तलयकसप्पहार - पादपण्हजाणुपत्थरनिवाय - पीलण - कविकच्छु-
अगणि-विच्छुयडक्क-वायातवदंसमसकनिवाते, 'दुट्टणिसेज्जा दुनिसीहिया'
कक्खड' - गुरु-सीय-उसिण-लुक्खेसु बहुविहेसु, अण्णेषु य एवमाइएसु फासेसु
अमणुण-पावकेसु न तेसु समणेण हसियव्वं न हीलियव्वं न निदियव्वं न
गरहियव्वं न खिसियव्वं न छिदियव्वं न भिदियव्वं न वहेयव्वं न दुगुंछावत्तियं
च लब्भा उप्पाएउं ।

एवं फासिंदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा, मणुणामणुण-सुब्भि-दुब्भि-
रागदोस-पणिहियप्पा साहू मण-वयण-कायगुत्ते संवुडे पणिहिंतिदिए चरेज्ज
वम्मं ॥

निगमज-पदं

१६. एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहियं इमेहि पंचहिवि कारणेहि
मण-वयण-काय-परिरक्खिएहि ॥

२०. निच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणावसो अकलुसो

१. तान् स्पृष्ट्वा इति प्रकृतम् (व) ।

२. पूर्ववर्तिषु १४-१७ सूत्रेषु एतत् पदं नास्ति ।
तत्र सिपिकाले त्रुटितमथवात्र अतिरिक्त-
मस्ति ।

३. °पच्छण (क, घ) ।

४. सिंसक (क, ख, ग, घ, च) ।

५. हत्थंडुय (ख, ग) ।

६. कण्णनासोट्ट ° (क, ग, घ) ।

७. °हिययदंत ° (क, ग); °हियएदंत ° (घ) ।

८. दुट्टणिसेज्जदुनिसीहिय (क, ख, ग, घ, च) ।

९. कक्कड (क) ।

अच्छिद्धो अपरिस्सावी असंकिलिटो सुद्धो सव्वजिणमणुणातो ॥

२१. एवं पंचमं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं आराहियं 'आणाए अणुपालियं' भवति ॥
२२. एवं नायमुणिणा भगवया पण्णवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवियं सुदेसियं पसत्थं—पंचमं संवरदारं समत्तं ।

—त्ति बेमि ॥

२३. 'एयाइं वयाति' पंचवि सुव्वय-महव्वयाइं हेउसय-विवित्त-पुक्कलाइं कहिया अरहंतसासणे पंच समासेण संवरा, वित्थरेण उ पणवीसति । समिय-सहिय-संवुडे सया जयण-घडण-सुविसुद्ध-दंसणे एए अणुचरिय संजते चरमसरीरघरे भविस्सतीति' ।

परिसेसो

पण्हावागरणां एगो सुयक्खंधो, दस अज्झयणगा एक्कसरगा, दससु चेव दिवसेसु उट्टिसिज्जन्ति, एगंतरेसु आयंबिलेसु निरुद्धेसु आउत्तभत्तपाणएणं । अंगं जहा आयारस्स ॥

पण्हावागरणं दसमं अंगं सुत्तमो समत्तं ।

अन्य परिमाण

कुल अक्षर—४१३३८

अनुष्टुप् श्लोक—१२६१ अ० १६

१. अणुपालियं आणाए आराहियं (क, ख, ग, घ, च) ।

२. वताइं (ख) ।

३. वाचनान्तरे पुनर्निगमनमन्यथाऽभिधीयते यदुत एतानि पंचापि सुव्रत ! महाव्रतानि लोकघृतिद्व्रतानि श्रुतसागरदर्शितानि तपः संयमव्रतानि क्षीणगुणधरव्रतानि सत्यार्जव-

व्रतानि नरकतिर्यङ्मनुजदेवगतिविवर्जकानि सर्वजिनशासनकानि कर्मरजोबिहारकाणि भवशतबिभोचकानि दुःखशतविनाशकानि सुखशतप्रवर्त्तकानि कापुरुषदुरुत्तराणि सत्पुरुषतीरितानि निर्वाणगमनस्वर्गप्रयाण-कानि पंचापि संवरद्वाराणि समाप्तानीति ब्रवीमि (बृ) ।

विवागसयं

पढमो सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं

मियापुत्ते

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं^१ नयरो होत्था —वण्णओ^२ । पुण्णभद्दे चेइए^३ ॥
२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं अणगारे जाइसंपण्णे वण्णओ^४, चउद्दसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगार-सएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वानुपुव्वि^५ •चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा नयरी० जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं^६ •ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे० विहरइ । परिसा निग्गया । धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥
३. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे सत्तुस्सेहे जहा गोयमसामी तहा जाव^७ आणकोट्टोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१. नाम (क, ख) ।

२. ओ० सू० १ ।

३. चेतिते (क); चेइए (ग); चेइए तहा वण्णओ (घ) ।

४. ना० १।१।४ ।

५. ०पुव्वी (क, ख); सं० पा०—पुव्वानुपुव्वि जाव जेणेव ।

६. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ ।

७. ओ० सू० ८२ ।

४. तए णं अज्जजंबू नामे' अणगारे जायसइडे जाव' जेणेव अज्जसुहम्मे अणगारे तेणेव उवागए तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जाव' पज्जुवासमाणे' एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दसमस्स अंगस्स पण्हावागरणाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, एक्कारसमस्स णं भंते ! अंगस्स विवागसुयस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
५. तए णं अज्जसुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं एक्कारसमस्स अंगस्स विवाग-सुयस्स दो सुयक्खंधा पण्णत्ता, तं जहा—दुहविवागा य सुहविवागा य ॥
६. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं एक्कारसमस्स अंगस्स विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा पण्णत्ता, तं जहा—दुहविवागा य सुहविवागा य । पढमस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स दुहविवागाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
७. तए णं अज्जसुहम्मे' अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं दस अज्जमयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. 'मियउत्ते' य २. उज्जिमयए, ३. अभग्ग" ४. सगडे" ५. बहस्सई ६. नंदी ।
 ७. उंबर ८. सोरियदत्ते य, ९. देवदत्ता य १०. अंजु य" ॥१॥
 ८. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं दस

- | | |
|---|--|
| १. नामं (ग) | ९. ना० १।१।७ । |
| २. ओ० सू० ८३ । | १०. मियापुत्ते (ख, घ) । |
| ३. ओ० सू० ८३ । | ११. अभग्गे (ख) । |
| ४. पज्जुवासइ (क, ख, ग, घ) । एतादृशे प्रसंगे प्रायेण 'पज्जुवासमाणे' इति पाठो लभ्यते, लिपिदोषात् 'पज्जुवासइ' इति जातः संभाव्यते । | १२. सगते (ग) । |
| ५, ६. ना० १।१।७ । | १३. ठाणं (१०।१११) सूत्रे विपाकाध्ययननामसु विपर्ययो दृश्यते, तच्चथा—
मियापुत्ते य गोत्तासे, अंडे सगडेति यावरे ।
माहणे णंदित्तेणे, सोरिए य उदुंबरे ॥
सहसुहाहे आमलए, कुमारे लेच्छई इति । |
| ७. ना० १।१।७ | १४. ना० १।१।७ । |
| ८. ० सुवम्मे (क) । | |

अज्जयणा पणत्ता, तं जहा—मियउत्ते जाव' अज्जू य । पठमस्स णं भंते !
अज्जयणस्स दुह्विवागाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे
पणत्ते ?

मियापुत्त-वण्णग-पदं

६. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! तेणं
कालेणं तेणं समएणं मियग्गामे नामं नयरे होत्था—वण्णओ' ॥
१०. तस्स णं मियग्गामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए चंदणपायवे
नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे—वण्णओ' ॥
११. तत्थ णं सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे हांत्था—चिराइए जहा पुण्णभद्दे' ॥
१२. तत्थ णं मियग्गामे नयरे विजए नामं खत्तिए राया परिवसइ— वण्णओ' ॥
१३. तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स मिया नामं देवी होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-
पंचिदियसरीरा—वण्णओ' ॥
१४. तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियाए देवीए अत्तए मियापुत्ते' नामं दारए
होत्था—जातिअंधे जानिमूए जातिवहिरे जातिपंगुले हुंडे य वायव्वे' । नत्थि णं
तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छो वा नासा वा । केवलं से
तेसिं अंगोवंगाणं आगिती आगितिमेत्ते ॥
१५. तए णं सा मियादेवी तं मियापुत्तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं
भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

गोयमस्स जाइअंधेपुरिसविसए पुच्छा-पदं

१६. तत्थ णं मियग्गामे नयरे एगे जाइअंधे पुरिसे परिवसइ । से णं एगेणं सचक्खुएणं
पुरिसेणं पुरओ दंडएणं' 'पकड्डिज्जमाणे-पकड्डिज्जमाणे'" फट्ट-हडाहड-सीसे
मच्छिया-चडगर-पहकरेणं अणिज्जमाणमग्गे मियग्गामे नयरे गेहे-गेहे कोलुण-
वडियाए वित्ति कप्पेमाणे विहरइ ॥
१७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे" पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे

१. वि० १।१।७ ।

२. ओ० सू० १ ।

३. ना० १।३।३ ।

४. ओ० सू० २ ।

५. ओ० सू० १४ ।

६. ओ० सू० १५ ।

७. मियपुत्ते (क) ।

८. वायवे (क, घ) ।

९. डंडएणं (क, ग) ।

१०. पगडिज्जमाणे २ (ख); पगडिज्जमाणे २
(घ) ।

११. सं० पा०—महावीरे जाव समोसरिए ।

गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे मियग्गामे नयरे चंदणपायवे उज्जाणे ° समोसरिए । परिसा निग्गया ॥

१८. तए णं से विजए खत्तिए इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे जहा कूणिए तहा निग्गए जाव' पज्जुवासइ ॥

१९. तए णं से जाइअंधे पुरिसे तं महयाजणसदं च' °जणवूहं ए जणबोलं च जणकलकलं च ° सुणेत्ता तं पुरिसं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! अज्ज मियग्गामे नयरे इंदमहे इ वा' °खंदमहे इ वा' उज्जाण-गिरिजत्ता इ वा, जम्भो णं बहवे उग्गा भोगा' एगदिसि एगाभिमुहा ° निग्गच्छंति ?

२०. तए णं से पुरिसे तं जाइअंधं पुरिसं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज मियग्गामे नयरे इंदमहे इ वा' °खंदमहे इ वा' उज्जाण-गिरिजत्ता इ वा, जम्भो णं बहवे उग्गा भोगा' एगदिसि एगाभिमुहा ° निग्गच्छंति । एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे' °भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चंव मियग्गामे नयरे चंदणपायवे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ । तए णं एए जाव' निग्गच्छंति ॥

२१. तए णं से अंधे पुरिसे तं पुरिसं एवं वयासी—गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! अम्हे वि समणं भगवं" °महावीरं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लानं मंगलं देवयं चेइयं ° पज्जुवासामो ॥

२२. तए णं से जाइअंधे पुरिसे तेणं पुरओ दंडएणं पुरिसेणं पकड्डिज्जमाणे-पकड्डिज्जमाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव 'उवागच्छइ, उवागच्छित्ता'" तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ जाव' पज्जुवासइ ॥

२३. तए णं समणे भगवं महावीरे विजयस्स रण्णो तीसे य" °महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं ° धम्ममाइक्खइ" । परिसा" पडिगया विजए वि गए ॥

१. ओ० सू० ५४-६६ ।

२. सं० पा०—जणसदं च जाव सुणेत्ता ।

३. सं० पा०—इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति ।

४. पू०—ना० १।१।६६ ।

५. पू०—ना० १।१।६६ ।

६. सं० पा०—इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति ।

७. ८. पू०—ना० १।१।६६ ।

८. सं० पा०—समणे जाव विहरइ ।

१०. वि० १।१।१६ ।

११. सं० पा०—भगवं जाव पज्जुवासामो ।

१२. उवागए २ (ख, ग) ।

१३. ना० १।१।६६ ।

१४. सं० पा०—तीसे य० ।

१५. धम्मं परिकहेइ (ख) ।

१६. परिसा जाव (क, घ) ।

२४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव' संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
२५. तए णं से भगवं गोयमे तं जाइअंधं पुरिसं पासइ, पासित्ता जायसइडे' •जाय-संसए जायकोउहल्ले, उप्पणसइडे उप्पणसंसए उप्पणकोउहल्ले, संजायसइडे संजायसंसए संजायकोउहल्ले, समुप्पणसइडे समुप्पणसंसए समुप्पणकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता नच्चसण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे • एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! केइ पुरिसे जाइअंधे जायअंधारूवे' ?
हंता अत्थि ॥

भगवया मियापुत्तरूव-निरुवण-पदं

२६. कहं णं भंते ! से पुरिसे जाइअंधे जायअंधारूवे ?
एवं खलु गोयमा ! इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए मियापुत्ते नामं दारए जाइअंधे जायअंधारूवे । नत्थि णं तस्स दारगस्स' •हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा केवलं से तेसिं अंगोवंगणं आगिती • आगितिमेत्ते ।
तए णं सा मियादेवी' •तं मियापुत्तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं • पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

गोयमस्स मियापुत्तवंसण-पदं

२७. तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मियापुत्तं दारगं पासित्तए ।
अहासुहं देवाणुप्पिया !
२८. तए णं से भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए' समाण हट्ठुट्ठे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरिय'•मच्चवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं • सोहेमाणे-

१. ओ० सू० ८२ ।

२. सं० पा०—जायसइडे जाव एवं ।

३. जाइअंधारूवे (घ) ।

४. सं० पा०—दारगस्स जाव आगितिमेत्ते ।

५. सं० पा०—मियादेवी जाव पडिजागरमाणी ।

६. अणुण्णाते (क) ।

७. सं० पा०—अतुरियं जाव सोहेमाणे ।

सोहेमाणे जेणेव मियगामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मियगामं नयरं मज्झमज्झेणं जेणेव मियादेवीए गिहे तेणेव उवागच्छइ ॥

२६. तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठु^१ चित्त-
माणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं^२ हियया आसणाओ
अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठुपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-
पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं
देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पओयणं ?
३०. तए णं से भगवं गोयमे मियं देवि एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिए ! तव पुत्तं
पासिउं हव्वमागए ॥
३१. तए णं सा मियादेवी मियापुत्तस्स दारगस्स अणुमग्गजायए चत्तारि पुत्ते
सव्वालंकारविभूसिए करेइ, करेत्ता भगवओ गोयमस्स पाएमु पाडेइ, पाडेत्ता
एवं वयासी—एए णं भंते ! मम पुत्ते पासह ॥
३२. तए णं से भगवं गोयमे मियं देवि एवं वयासी नो खलु देवाणुप्पिए ! अहं एए
तव पुत्ते पासिउं हव्वमागए । तत्थ णं जे से तव जेट्ठे पुत्ते मियापुत्ते दारए जाइ-
अंधे जायअंधारूवे, जं णं तुमं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं
पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरसि, तं णं अहं पासिउं हव्वमागए ॥
३३. तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी—से के णं गोयमा ! से तहारूवे
नाणी वा तवस्सी वा, जेणं^३ एसमट्ठे मम ताव रहस्सीकए^४ तुब्भं हव्वमक्खाए,
जओ णं तुब्भे जाणह ?
३४. तए णं भगवं गोयमे मियं देवि एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! मम धम्माय-
रिए समणे भगवं^५ महावीरे तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं एसमट्ठे तव
ताव रहस्सीकए मम हव्वमक्खाते^६, जओ णं अहं जाणामि । जावं च णं
मियादेवी भगवया गोयमेण सद्धि एयमट्ठं संलवइ, तावं च णं मियापुत्तस्स
दारगस्स भत्तवेला जाया यावि होत्था ॥
३५. तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! 'इहं चेव'^७
चिट्ठह, जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि त्ति कट्ठु जेणेव भत्तघरए^८
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वत्थपरियट्ठयं^९ करेइ, करेत्ता कट्ठुसगडियं^{१०}

१. स० पा०—हट्ठुट्ठुहियया ।

२. जेणं तव (क, ख, ग, घ); प्रतिष्ठा एतत् पदं
निषिद्धोषात् समुल्लिखितं प्रतिभाति । अत्र
तुब्भं इति पाठदर्शनात् ।

३. रहस्सकडे (क) ।

४. स० पा०—भगवं जाव जओ णं [ख, ग];

भगवं जओ णं (क); महावीरे जाव ततेणं
(घ) ।

५. इहच्चेव (क) ।

६. भत्तपाणघरए (घ) ।

७. °परियट्ठं (घ) ।

८. कट्ठुसगडि (ग) ।

गिण्हइ, गिण्हत्ता विउलस्स असण-पाण-खाइम-साइमस्स भरेइ, भरेत्ता तं कटुसगडियं अणुकड्डुमाणी-अणुकड्डुमाणी जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता भगव गोयमं एवं वयासी—एह णं 'भंते ! तुब्भे मए सद्धि' अणुगच्छह, जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि ॥

३६. तए णं से भगवं गोयमे मिय देवि पिट्ठओ समणुगच्छइ ॥
३७. तए णं सा मियादेवा तं कटुसगडियं अणुकड्डुमाणी-अणुकड्डुमाणी जेणेव भूमिघरए^१ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता चउप्पुडणं^२ वत्थेणं मुहं बंधमाणी भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भे वि णं भंते ! मुहपोत्तियाए मुहं बधह ॥
३८. तए णं से भगवं गोयमे मियादेवीए एवं वुत्ते समाणे मुहपोत्तियाए मुहं बंधेइ ॥
३९. तए णं सा मियादेवी परंमुही भूमिघरस्स दुवारं विहाडेइ । तए णं गंधे निग्गच्छइ, से जहानामए--'अहिमडे इ वा' ^३ गोमडे इ वा सुणहमडे इ वा मज्जारमडे इ वा मणुस्समडे इ वा महिसमडे इ वा मूसगमडे इ वा आसमडे इ वा हत्थिमडे इ वा सीहमडे इ वा वग्घमडे इ वा विगमडे इ वा दीविगमडे इ वा मय-कुहिय-विणट्ठ-दुरभिवावण-दुब्धिगंधे किमिजालाउलसंसत्ते असुइ-विलीण-विगय-वीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ? नो इणट्ठे समट्ठे । एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुण्णतराए चेव अमणामतराए चेव^४ गंधे पण्णत्ते ॥
४०. तए णं से मियापुत्ते दारए तस्स विउलस्स असण-पाण-खाइम-साइमस्स गंधेणं अभिभूए समाणे तंसि विउलंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि मुच्छिए गडिए गिट्ठे अज्झोववण्णे तं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसएणं आहारेइ, आहारेत्ता खिप्पामेव विद्धंसेइ, विद्धंसेत्ता तओ पच्छा पूयत्ताए य सोणियत्ताए य पारिणामेइ, तं पि य णं पूयं च सोणियं च आहारेइ ॥

गोयमेण मियापुत्तस्स पुब्बभवपुच्छा-पदं

४१. तए णं भगवओ गोयमस्स तं मियापुत्तं दारगं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए कप्पिए^५ पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे दारए पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं 'पावगं फलवित्तिविसेसं'^६ पच्चणुभवमाणे विहरइ । न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया

१. तुब्भे भंते मम (ख, ग, घ) ।

२. भूमिघरे (ख, घ) ।

३. चउप्पालेणं (ग) ।

४. अहिमडे इ वा सप्पकडेवरे इ वा (वृ); सं०

पा०—अहिमडे इ वा जाव ततो वि अणिट्ठ-

तराए चेव जाव गंधे ।

५. × (क, ख, ग) ।

६. पावफलविभागं (ग) ।

वा । पचक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिक्खवियं वेयणं वेदिति' त्ति कट्टु मियं देवि आपुच्छइ, आपुच्छित्ता मियाए देवीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्ख-
मित्ता मियग्गामं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव समणे
भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो
आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं
वयासी—एवं खलु अहं तुब्भेहि अग्गणुण्णाए समणे मियग्गामं नयरं मज्झ-
मज्झेणं अणुप्पविसामि, जेणेव मियाए देवीए गिहे तेणेव उवागए । तए णं सा
मियादेवी ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठा, तं चेव सव्वं जाव' पूयं च
सोणियं च आहारेइ । तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए
मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे दारए पुरा' •पोराणाणं दुच्चि-
ण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्तिविसेसं
पच्चणुभवमाणे • विहरइ ॥

४२. से णं भते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसि ? किं नामए वा किं गोत्ते' वा ?
'कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा' ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा
समायरित्ता, केसिं वा पुरा' •पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं
पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे • विहरइ ?

मियापुत्तस्स एक्काइभव-वण्णग-पवं

४३. गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा !
तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सयदुवारे नामं नयरे
होत्था - रिद्धत्थिमियसमिद्धे वण्णओ' ॥
४४. तत्थ णं सयदुवारे नयरे धणवई नामं राया होत्था—वण्णओ' ॥
४५. तस्स णं सयदुवारस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए विजय-
वद्धमाणे नामं खेडे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥
४६. तस्स णं विजयवद्धमाणस्स' खेडस्स पंच गामसयाइ आभोए यावि होत्था ॥
४७. तत्थ णं विजयवद्धमाणे खेडे एक्काई' नामं रट्ठकूडे होत्था—अहम्मिए" •अधम्मा-

१. वेत्ति (ख); वेयह (घ) ।

२. वि० १।१।२६-४० ।

३. सं० पा०—पुरा जाव विहरइ ।

४. गोए (घ) ।

५. कयरं गामं (क); कयरं गामं किं कए (ख) । ११. सं० पा०--अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ।

६. सं० पा०—पुरा जाव विहरइ ।

७. ओ० सू० १ ।

८. ओ० सू० १४ ।

९. •वद्धमाणस्स (क, ख, ग) सर्वत्र ।

१०. एकायि (क, ग) ।

णुए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्मपलोई अधम्मपलज्जणे अधम्मसमुदाचारे
अधम्मेषं चैव वित्तिं कप्पेमाणे दुस्सीले दुव्वए^० दुप्पडियाणंदे ॥

४८. से णं एक्काई रट्टुकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंचण्हं गामसयाणं 'आहेवच्चं
पोरेवच्चं सामित्तं भट्ठित्तं महत्तरगतं आणा-ईसर-मेणावच्चं कारेमाणे पाले-
माणे" विहरइ ॥

४९. तए णं से एक्काई रट्टुकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइं बहूहिं
करेहि य भरेहि य विद्धीहिं य उक्कोडाहि य पराभवेहिं य देज्जेहिं य
भेज्जेहिं य कुत्तेहिं य लंछपोसेहि य आलीवणेहिं य पंथकोट्टेहिं य ओवीलेमाणे-
ओवीलेमाणे विहम्ममाणे-विहम्ममाणे तज्जेमाणं-तज्जेमाणं तालेमाणं-तालेमाणे
निद्धणे करेमाणे-करेमाणे विहरइ ॥

५०. तए णं से एक्काई रट्टुकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स बहूणं राईसर'-●तलवर-
माडंबिय-कोडुंबिय-इव्वभ-सेट्ठि-सेणावइ^० सत्थवाहाणं, अण्णेसिं च बहूणं गामेत्तलग-
पुरिसाणं बहूसु 'कज्जेसु य कारणेसु य मंतेसु य गुज्झएसु य निच्छएसु य'
ववहारेसु य सुणमाणे भणइ 'न सुणेमि,' असुणमाणे भणइ 'सुणेमि,' '●पस्समाणे
भणइ 'न पासेमि,' अपस्समाणे भणइ 'पासेमि,' भासमाणे भणइ 'न भासेमि ।'
अभासमाणे भणइ 'भासेमि,' गिण्हमाणे भणइ 'न गिण्हेमि,' अगिण्हमाणे भणइ
'गिण्हेमि,' जाणमाणे भणइ 'न जाणेमि,' अजाणमाणे भणइ 'जाणेमि' ^० ॥

५१. तए णं से एक्काई रट्टुकूडे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं
'पावं कम्मं" कलिकलुसं समज्जिणमाणे विहरइ ॥

५२. तए णं तस्स एक्काइस्स" रट्टुकूडस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि जमगसमगमेव
सोलस रोगायंका" पाउव्वभूया, [तं जहा—
सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले" भगंदले" ।
अरिसा" अजीरए दिट्ठी-मुद्धसूले" अकारए ।
अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कंडू" उदरे" कोठे ॥१॥]"

१. आहेवच्चं जाव पालेमाणे (क, ख, ग) ।

२. वित्तिहि (वृपा) ।

३. पराभएहि (क, ग) ।

४. देज्जए (क) ।

५. कुत्तेहि (क, घ) ।

६. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाहाणं ।

७. कज्जेसु कारणेसु मंतेसु गुज्झएसु निच्छएसु
(क); ^०गुज्झेसु^० (घ) ।

८. सं० पा०—एव पस्समाणे भासमाणे गिण्ह-
माणे जाणमाणे ।

९. पावकम्मं (ग) ।

१०. एगाइयस्स (क, ख, ग, घ)

११. रोयायंका (क); रोयातंका (ख) ।

१२. जोणिसूले (ग); 'जोणिसूले' त्ति अपपाठः
'कुच्छिसूले' इत्यस्यान्यत्र दर्शनात् (वृ) ।

१३. भगंदरे (ख, ग, घ) ।

१४. अरसा (ख) ।

१५. मुहसूले (क, ग) ।

१६. कंडू (ख) ।

१७. दओदरे (क) ।

१८. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यातः प्रतीयते ।

५३. तए णं से एक्काई रटुकूडे सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! विजयवद्धमाणे खेडे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्दणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—इहं खलु देवाणुप्पिया ! एक्काइस्स' रटुकूडस्स सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया, [तं जहा—सासे जाव कोडे]', तं जो णं इच्छइ देवाणुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा 'जाणुओ वा जाणुयपुत्तो' वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा एक्काइस्स रटुकूडस्स तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए', तस्स णं एक्काई रटुकूडे विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ । दोच्चं पि तच्चं पि उग्घोसेह, उग्घोसेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

५४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव' तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

५५. तए णं विजयवद्धमाणे खेडे इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया 'सएहिं-सएहिं' गिहेहितो' पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता विजयवद्धमाणस्स खेडस्स मज्झमज्झेणं जेणेव एक्काई-रटुकूडस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता एक्काई-रटुकूडस्स सरीरगं परामुसंति, परामुसित्ता तेसिं रोगायंकाणं निदाणं पुच्छंति, पुच्छिता एक्काई-रटुकूडस्स बहूहिं अब्भं-गेहि य उव्वट्टणाहि' य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणेहि' य अब्बट्टणाहि' य अब्बट्टणाहि य अणुवासणाहि य बत्थिकम्मेहि य निरुहेहि' य सिरावेहेहि य तच्छणेहि य पच्छणेहि य सिरबत्थीहि' य तप्पणाहि य पुडपागेहि य छल्लीहि य बल्लीहि य' मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामित्तए ॥

१. एक्काइयस्स (घ) ।

६. रोगाणं (ग, ग, घ) ।

२. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्याशः प्रतीयते ।

१०. उवट्टणेहि (ख) ।

३. जाणुओ वा जाणुपुत्तो (ख, ग, घ) ।

११. सेयणाहि (क); सेवणेहि (ख) ।

४. उवसमित्तए (क) ।

१२. अब्बट्टणाहि (क, ख, ग); अब्बट्टणेहि (घ) ।

५. वि० १।१।५३ ।

१३. निरुभेहि (ग); निरुहेहि (घ) ।

६. सएहितो (क) ।

१४. सिरोबत्थीहि (घ) ।

७. गेहेहितो (क) ।

१५. × (ख, ग, घ) ।

८. एमाती (क) ।

५६. तए णं ते बह्वे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएन्ति तेसि सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकां उवसामित्ताए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसं पाउवभूया तामेव दिसं पडिगया ॥
५७. तए णं एक्काई रट्ठकूडे वेज्ज-पडियाइक्खिए परियारगपरिचत्ते निव्विण्णांसह-भेसज्जे' सोलसरोगायंकेहिं अभिभूए समाणे रज्जे य रट्ठे यं °कोसे य कोट्टागारे य बले य बाहणे य, पुरे य ° अंतउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे रज्जं च रट्ठं च' °कोसं च कोट्टागारं च बलं च बाहणं च पुरं च अंतउरं च ° आसा-एमाणे' पत्येमाणे पीहेमाणे' अभिलसमाणे अट्टदुहट्टवसट्टे अट्टाइज्जाइ वाससयाइ परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्को-सेणं सागरोवमट्ठिइएमु नेरइएसु' नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

मियापुत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

५८. से णं तओ अणंतं उव्वट्ठित्ता इहेव मियग्गामे नयरे विजयस्स खत्तियस्स मियाए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥
५९. तए णं तीसे मियाए देवीए सरीरे वेयणा पाउवभूया उज्जला' °विउला कक्कसा पगाढा चंडा दुक्खा तिब्बा ° दुरहियासा' जप्पभिइं च णं मियापुत्ते दारए मियाए देवीए कुच्छिसि गवभत्ताए' उववण्णे, तप्पभिइं च णं मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था ॥
६०. तए णं तीसे मियाए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियाए" जागरमाणीए इमे एयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे"—एवं खलु अहं विजयस्स खत्तियस्स पुव्वि इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा धेज्जा वेसासिया अणुमया आसि । जप्पभिइं च णं मम इमे गवभे कुच्छिसि गवभत्ताए उववण्णे, तप्पभिइं च णं अहं विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था । नेच्छइ णं विजए खत्तिए मम नामं वा गोयं वा गिण्हित्ताए", किमंग पुण दंसणं वा परिभोगं वा ? तं सेयं खलु मम एयं गवभं बहूहि गवभसाडणाहि य

१. निवट्टोसह ° (क्व) ।

२. सं० पा०—रट्ठे य जाव अंतउरे ।

३. सं० पा०—रट्ठं च ।

४. आसयमाणे (क); आसायमाणे (ख, घ) ।

५. बीहेमाणे (घ) ।

६. नरएसु (ग) ।

७. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।

८. जलंता (क, ग, घ) ।

९. पुत्तत्ताए (क) ।

१०. कुडुंबजागरियं (क) ।

११. समुप्पज्जित्था (घ) ।

१२. गिण्हित्ताए वा (क) ।

पाडणाहि य गालणाहि य मारणाहि य साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता बहूणि खाराणि य कडुयाणि य तूवराणि य गब्भसाडणाणि य पाडणाणि य गालणाणि य मारणाणि य खायमाणी य पियमाणी^१ य इच्छइ तं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा, नो चेव णं से गब्भे सडइ वा पडइ वा गलइ वा मरइ वा ॥

६१. तए णं सा मियादेवी जाहे नो संचाएइ तं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा ताहे संता तंता परितंता अकामिया असयंबसा तं गब्भं दुहंदुहेणं परिवहइ ॥
६२. तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अट्ठ नालीओ अब्भितरप्पवहाओ,^२ अट्ठ नालीओ बाहिरप्पवहाओ, अट्ठ पूयप्पवहाओ, अट्ठ सोणियप्पवहाओ, दुवे दुवे कण्णंतरेसु, दुवे दुवे अच्छिअंतरेसु, दुवे दुवे नक्कंतरेसु, दुवे दुवे धमणिअंतरेसु अभिक्खणं-अभिक्खणं पूयं च सोणियं च 'परिसवमाणीओ-परिसवमाणीओ' चेव^३ चिट्ठंति ॥
६३. तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अगिए नामं वाही पाउभूए । जे^४ णं से दारए आहारेइ, से णं खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ^५, पूयत्ताए य सोणियत्ताए य परिणमइ, तं पि य से पूयं च सोणियं च आहारेइ ॥
६४. तए णं सा मियादेवी अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया—जातिअंधे^६ जातिमूए जातिबहिरे जातिपंगुले हुंडे य वायव्वे । नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा । केवलं से तेसि अंगोवंगाणं आगिती^७ आगितिमेत्ते ॥
६५. तए णं सा मियादेवी तं दारगं हुंडं अंधारूवं पासइ, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया अम्मघाई सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं देवाणुप्पिया ! तुमं एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि ॥
६६. तए णं सा अम्मघाई मियादेवीए तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेजेव विजए खत्तिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिगगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मियादेवी नवण्हं मासाणं^८ बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया—जातिअंधे जातिमूए जातिबहिरे जातिपंगुले

१. पीयमाणी (ख, ग, घ) ।

२. गब्भंतरं (क, ग); अग्भंतरं (ख) ।

३. परित्सवमाणीओ (क) ।

४. X (क, घ) ।

५. जं (क) ।

६. विद्धंसेति (घ) ।

७. सं० पा०—जातिअंधे जाव आगितिमेत्ते ।

८. सं० पा०—मासाणं जाव आगितिमेत्ते ।

हुंडे य वायव्वे । नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा । केवलं से तेसिं अंगोवंगाणं आगिती ° आगितिमेत्ते ।

तए णं सा मियादेवी तं दारगं हुंडं अंधारूवं पासइ, पासित्ता भीया नत्था तसिया उव्विगा संजायभया ममं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए' उज्झाहि । तं संदिसह णं सामी ! तं दारगं अहं एगंते उज्झामि उदाहु मा ॥

६७. तए णं से विजए खत्तिए तीसे अम्मघाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा तहेव संभंते उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव मियादेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मियं देवि एवं वयासी—देवाणुप्पिए ! तुब्भं 'पढमे गब्भे' । तं जइ णं तुमं एयं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झसि, तो णं तुब्भं पया नो थिरा भविस्सइ, तो णं तुमं एयं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहराहि, तो णं तुब्भं पया 'थिरा भविस्सइ' ॥

६८. तए णं सा मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

६९. एवं खलु गोयमा ! मियापुत्ते दारए पुरा पोरणाणं °दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कं-ताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्तिविसेसं ° पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

मियापुत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

७०. मियापुत्ते णं भंते ! दारए इअो कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! मियापुत्ते दारए छव्वीसं वासाइं परमाइं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव° जंबुदीवे दीवे भारहे वासे वेयड्डुगिरिपायमूले सीहकुलंसि सीहत्ताए पच्चायाहिइ' ।

से णं तत्थ सीहे भविस्सइ—अहम्मिए° °बहुनगरनिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी ° साहसिए सुबहुं पाव° °कम्मं कलिकलुसं ° समज्जिणइ, समज्जिणित्ता कालमासे

१. उक्कुरुडियाए (घ) ।

२. पढमगब्भे (क, ख, ग); पढमं गब्भे (घव) ।

३. नो अथिरा भविस्संति (क, ख) ।

४. सं० पा०—पोराणाणं जाव पच्चणुभव-माणे ।

५. इहं (क) ।

६. पयाहिति (क) ।

७. सं० पा०—अहम्मिए । जाव साहसिए । सिंहवर्णनत्वात् 'अहम्मिट्ठे अहम्मवस्साइ' इत्यादिनि विशेषणानि अन्यत्रोक्तान्यपि इह न घटन्ते ।

८. सं० पा०—पावं जाव समज्जिणइ ।

कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्टिइएसु' •नेरइएसु नेरइयत्ताए° उववज्जिहिइ ।

से णं तम्हो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिरोसवेसु उववज्जिहिइ । तत्थ णं कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवम'•ट्टिइएसु नेरइएसु नेरइत्ताए उववज्जिहिइ° ।

से णं तम्हो अणंतरं उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिइ । तत्थ वि कालं किच्चा तच्चाए पुढवीए सत्त सागरोवम'•ट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ° ।

से णं तम्हो सीहेसु, तयाणंतरं चोत्थीए, उरगो, पंचमीए, इत्थीओ, छट्ठीए, मणुओ, अहेसत्तमाए । तम्हो अणंतरं उव्वट्टित्ता से जाइं इमाइं जलयरपंचि-दियतिरिक्खजोणियाणं मच्छ-कच्छभ-गाह-मगर-सुसुमारार्हणं अद्भुतेरस जाइकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्साइं, तत्थ णं एगमेगंसि जोणिविहाणंसि अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ । से णं तम्हो अणंतरं उव्वट्टित्ता चउपएसु उरपरिसप्पेसु भुयपरिसप्पेसु खह्यरेसु चउरिंदिएसु तेइंदिएसु वेइंदिएसु वणप्फइ-कडुयक्खेसु कडुयदुद्धिएसु वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु' अणेगसयसहस्सखुत्तो' •उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ° ।

से णं तम्हो अणंतरं उव्वट्टित्ता सुपइट्ठपुरे नयरे गोणत्ताए पच्चायाहिइ ।

से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे अणया कयाइ पढमपाउसंसि गंगाए महानईए खलीणमट्ठयं खणमाणे तडीए' पेल्लिए समाणे कालगए तत्थेव सुपइट्ठपुरे नयरे सेट्टिकुलंसि पुत्तत्ताए' पच्चायाइस्सइ ॥

से णं तत्थ उम्मुक्क'•बालभावे विणय-परिणयमेत्ते° जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म मुंडे भवित्ता अगाराआ अणगारियं पव्वइस्सइ ।

से णं तत्थ अणगारे भविस्सइ—इरियासमिए' •भासासमिए एसणासमिए आयाण-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्त° बंभयारी ।

१. सं० पा०—° ट्टिइएसु जाव उववज्जिहिइ ।

२. सं० पा०—सागरोवम° ।

३. सं० पा० सागरोवम° ।

४. पुढवी (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—° खुत्तो° ।

६. तडीए पढीए (घ) ।

७. पुमत्ताए (ख) ।

८. सं० पा०—उम्मुक्क जाव जोव्वणग° ।

९. रियासमिते (क); सं० पा०—इरियासमिए जाव बंभयारी ।

से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता आलोइय-पडिक्कंते
समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उव्ववज्जिहिइ ।
से णं तम्मो अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवन्ति—अड्डाइं^१
अपरिभूयाइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिति । जहा दढपइण्णं^२ जाव^३
सिज्जिह्महिइ बुज्जिह्महिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

७१. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^४ संपत्तेणं दुहविवागाणं
पढमस्स अज्जमयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

--त्ति वेमि ॥

१. पू०—ओ० सू० १४१ ।

३. ओ० सू० १४२-१५४ ।

२. दढपइन्ने सच्चवेव वत्तव्वया कलाओ

४. ना० १।१।७ ।

जाव (क, ख, ग, घ)

बीयं अज्भयणं

उज्जिभयए

उक्खेव-पवं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुह्विवागाणं पढमस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्भयणस्स' समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मि अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे' नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे' ॥
३. तस्स णं वाणियगामस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए दूइपलासे नामं उज्जाणे होत्था ॥
४. तत्थ णं दूइपलासे सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था ॥
५. तत्थ णं वाणियगामे नयरे' मित्ते नामं राया होत्था—वण्णओ' ॥
६. तस्स णं मित्तस्स रण्णो सिरी नामं देवी होत्था—वण्णओ' ॥
७. तत्थ णं वाणियगामे कामज्भया नामं गणिया होत्था—अहीण'-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमाकार-कंत-पिय-दंसणा°सुरूवा बावत्तरिकलापंडिया'

१. ना० १।१।७ ।

२. अज्भयणस्स दुह्विवागाणं (ख, ग, घ) ।

३. वाणियगामे (ख, ग, घ) ।

४. पू०—ओ० सू० १ ।

५. × (ख, घ) ।

६. ओ० सू० १४ ।

७. ओ० सू० १५ ।

८. सं० पा०—अहीण जाव सुरूवा ।

९. अउसट्ठीकलापंडिया (ना० १।३।८); 'बावत्तरीकलापंडिय'ति लेखाद्या शकुनिस्त-पर्यन्ता गणितप्रधानाः कलाः प्रायः पुरुषाणा-मेव अभ्यासयोग्याः । स्त्रीणां तु विज्ञेया एव प्रायः (वृ) ।

चउसट्ठिगणियागुणोववेया एगूणतीसविसेसे रममाणी एक्कवीसरइगुणप्पहाणा
बत्तीसपुरिसोवयारकुसला नवंगमुत्तपडिबोहिया अट्टारसदेसीभासाविसारया
सिगारागारचारुवेसा गीयरइगंधव्वणट्टकुसला संगय-गय'-●भणिय हसिय-विहिय-
विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला ° सुंदरथण'-●जहण-वयण-कर-
चरण-नयण-लावण-विलासकलिया ° ऊसियज्झया सहस्सलंभा विदिण्णछत्त-
चामर-वालवीयणीया कण्णीरहप्पयाया यावि होत्था । बहूणं गणियासहस्साणं
आहेवच्चं' °पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगतं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारे-
माणी पालेमाणी ° विहरइ ॥

८. तत्थ णं वाणियगामे विजयमित्ते नामं सत्थवाहे परिवसइ—अड्ढे' ॥
९. तस्स णं विजयमित्तस्स सुभट्ठा नामं भारिया होत्था' ॥
१०. तस्स णं विजयमित्तस्स पुत्ते सुभट्ठाए भारियाए अत्तए उज्झयण नामं दारए
होत्था—अहीण'-●पडिपुण्ण-पंचिदिय-सरीरे लक्खण-वज्जण-गुणोववेए माणुम्माण-
प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे ° सुरूवे ॥
११. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसडे' परिसा निग्गया ।
राया निग्गाम्मो, जहा कूणिम्मो' निग्गाम्मो । धम्मो कहिम्मो । परिसा पडिगया
राया य गम्मो ॥

गोयमेण उज्झययस्स पुव्वभक्कपुच्छा-पवं

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई
नामंअणगारे गोयमगोत्तेण जाव' संखित्तविउलतेयलेसे छट्ठंछट्ठणं' °अणिक्खित्तेणं
तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
१३. तए णं भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ,
बोयाए पोरिसीए भाणं भियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते
मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइं
पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता

१. सं० पा०—संगयगय; पू०—ना० १।३।८ पादटिप्पणमपि ।

२. सं० पा०—सुंदरथण ° ।

३. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ ।

४. पू०—ओ० सू० १४१ ।

५. होत्था । अहीण (घ) ।

६. सं० पा०—अहीण जाव सुरूवे ।

७. समोसरिण (क); समोसरणं (ग) ।

८. ओ० सू० ५-६६ ।

९. ओ० सू० ८२ ।

१०. सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जहा पण्णत्तीए पढा
जाव जेणेव ।

नमंसित्ता एवं वयासो—इच्छामि णं भंते ! तुम्हेहि अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठक्खमणपारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घर-समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं ॥

१४. तएणं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ दूइपलासाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियमच्चवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे° जेणेव वाणियगामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाणियगामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे जेणेव रायमग्गे तेणेव ओगाढे ।

तत्थ णं बहवे हत्थो पासइ—सण्णद्ध-बद्धवम्मिय-गुडिए उप्पीलियकच्छे उद्दामिय-घंटे नाणामणिरयण-विविह-गवेज्जउत्तरकचुइज्जे पडिकप्पिए भयपडागवर-पंचामेल-आरूढहत्थारोहे गहियाउहप्पहरणे ।

अण्णे य तत्थ बहवे आसे पासइ—सण्णद्ध-बद्धवम्मिय-गुडिए आविद्धगुडे ओसारियपक्खरे उत्तरकंचुइय-ओचूलामुहचंडाघर'-चामर-थासग-परिमंडिय-कडीए आरूढअस्सारोहे गहियाउहप्पहरणे ।

अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसे पासइ-सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टीए पिण्णद्धगेवेज्जे° विमलवरबद्ध-चिघपट्टे गहियाउहप्पहरणे ।

तेसि च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ अवओडयबंघणं उक्खित्त'-कण्णनासं नेहत्तुप्पियगतं वज्झं-करकडि-जुयनियच्छं कंठेगुणरत्त-मल्लदामं चुण्णगुडियगतं चुण्णयं वज्झपाणपीयं तिलं-तिलं चेव छिज्जमाणं कागणिमंसाइ खावियंतं पावं खक्खरसएहिं° हम्ममाणं अणेगनर-नारी-संपरिवुडं चच्चरे-चच्चरे खंडपडहएणं उग्घोसिज्जमाणं इमं च णं एयारूवं उग्घोसणं सुणेइ° -नो खलु देवाणुप्पिया ! उज्झियगस्स दारगस्स केइ° राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति ॥

१५. तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था अहो णं इमे पुरिसे° पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं

१. चूला ° (ख) ।

२. पिण्णद्ध ° (क, ख, ग) ।

३. उक्खित्त (क, ख, ग); उक्कत्त (घ) ।

४. बद्ध (क, ख) ।

५. कक्खरग ° (क, ग); कक्कर ° (ख, घ) ।

६. पडिसुणेइ (क) ।

७. केयी (क, घ) ।

८. सं० पा०—पुरिसे जाव निरयपडिक्किय ।

पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ । न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा । पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे० निरयपडिरुवियं वेयणं वेण्ड ति कट्ठु वाणिय-गामे नयरे उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइं अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाणं गिण्हइ, गिण्हत्ता वाणियगामे नयरे मज्झमज्झेणं० *पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसं-भंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणव दूइपलासए उज्जाणे जेणव समणे भगवं महावीरे तेणव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसण-मणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं० पडिदंमेइ, पडिदंमेत्ता समणं भगवं महा-वीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी - एवं खलु अहं भंते ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाने वाणियगामे नयरे जावं तहेव सत्वं निवेएइ० ॥

१६. से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसिं ? *किं नामए वा किं गोत्ते वा ? कयरसि गामंसि वा नयरसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसि वा पुरा पोरणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं० पच्चणुभवमाणे विहरइ ?

उज्जिमयस्स गोत्तासभव-वण्णग-पदं

१७. एवं० खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे० वासे हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था - रिद्धत्थिमियसमिद्धे० ॥
१८. तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे सुनंदे नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे० ॥
१९. तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे गोमंडवे होत्था—अणेगखंभसयसंनिविट्ठे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरुवे पडिरुवे ॥
२०. तत्थ णं बहवे नगरगोरुवा सणाहा य अणाहा य 'नगरगावीओ य नगरबलीवद्दा य नगरपडियाओ य नगरवसभा य' पउरतण-पाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसति ॥
२१. तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे भीमे नामं कूडग्गाहे होत्था—अहम्मिए जाव० दुप्पडियाणंदे ॥

१. स० पा०—मज्झमज्झेणं जाव पडिदंमेइ ।

२. वि० १।२।१३-१५ ।

३. वेण्ड (क, ख, ग) ।

४. सं० पा०—आसि जाव पच्चणुभवमाणे ।

५. पू०—वि० १।१।४३ ।

६. भरहे (क) ।

७. पू०—ओ० सू० १ ।

८. पू०—ओ० सू० १४ ।

९. नगरबलद्दा य नगरपडियाओ य महिसिओ य य वसभाण (ग) ।

१०. वि० १।१।४७ ।

२२. तस्स णं भीमस्स कूडग्गाहस्स उप्पला नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा' ॥
२३. तए णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अण्णदा कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था ॥
२४. तए णं तीसे उप्पलाए कूडग्गाहिणीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउवभूए - धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ^१, *संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासि माणुस्सए जम्मजोवियफले °, जाओ णं बहूणं नगरगोरूवाणं सणाहाण य' *अणाहाण य नगरगावियाण य नगरबलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगर°-वसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि^२ य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिब्भाहि य ओट्टेहि य कंबलेहि य सोल्लेहि^३ य तलिएहि य भज्जिएहि^४ य परिसुक्केहि य लावणेहि^५ य सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं^६ च पसण्णं च आसाएमाणीओ वीसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति । तं जइ णं अहमवि बहूणं नगर' *गोरूवाणं सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरबलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगरवसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि य वहेहि य कण्णेहि य अच्छीहि य नासाहि य जिब्भाहि य ओट्टेहि य कंबलेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी दोहलं ° विणिज्जामि त्ति कट्ठु तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा^७ पंडुल्लइयमुही^८ ओमंथिय-नयणवदणकमला जहोइयं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंका-राहारं अपरिभुंजेमाणी करयलमलियव्व कमलमाला ओहय^९ *मणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया ° क्रियाइ ॥

१. पू०—वि० १।२।७ ।

२. सं० पा०—अम्मयाओ जाव सुलद्धे जाओ ।

३. सं० पा०—सणाहाण य जाव वसभाण ।

४. ककुहेहि (क) ।

५. सोल्लिएहि (वृ) ।

६. भज्जेहि (ग) ।

७. लावणिएहि (क, ग) ।

८. सिधुं (ल) ।

९. सं० पा०—नगर जाव विणिज्जामि ।

१०. दीणविमणहीणा (वृ); दीपविमणवयणा (वृपा) ।

११. °मुहा (घ) ।

१२. सं० पा०—ओहय जाव क्रियाइ ।

२५. इमं च णं भीमे कूडग्गाहे जेणेव उप्पला कूडग्गाहिणी^१ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता [उप्पलं कूडग्गाहिणिं ?] ओहय^२ •मणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहि अट्टज्झाणोवगयं भूमिगयदिट्ठीयं क्रियायमाणि^३ • पासइ, पासित्ता एवं वयासी— किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहय^४ •मणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोव- गया भूमिगयदिट्ठीया • क्रियासि ?
२६. तए णं सा उप्पला भारिया भीमं कूडग्गाहं एवं वयासी—एवं खलु देवाणु- प्पिया ! ममं तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दोहले पाउभूए—घण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कय- पुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासि माणुस्सए जम्मजीवियफले, जाओ णं वहूणं^५ •नगरगोरूवाणं सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरवलीवद्वाण य नगरपड्डियाण य नगरवसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि य वहेहि य कण्णेहि य अच्छोहि य नासाहि य जिवभाहि य ओट्टेहि य कंबलेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य • लावणेहि य सुरं च महं च मेरुं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणीओ बीसाए- माणीओ परिभाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति । तए णं अहं देवाणुप्पिया ! तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि^६ •सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुगा ओलुगसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा पंडुल्लइयमुही ओमंथिय-नयणवदणकमला जहोइयं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकाराहारं अपरिभुंज- माणी करयलमलियव्व कमलमाला ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया • क्रियामि ॥
२७. तए णं से भीमे कूडग्गाहे उप्पलं भारियं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय^७ •मणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया • क्रियाहि । अहं णं तहा करिस्सामि^८ जहा णं तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ— ताहि इट्ठाहि कंताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि वग्गूहि समासासेइ ॥
२८. तए णं से भीमे कूडग्गाहे अद्धरत्तकालसमयंसि^९ एगे अबीए^{१०} सण्णद्धं •बद्धवम्मिय- कवए उप्पीलियसरासणपट्टीए पिणद्धगेवेज्जे विमलवरबद्ध-चिधपट्टे गहिया-

१. कूडग्गाही (क, ख) ।

२. सं० पा०—ओहय जाव पासइ ।

३. सं० पा०—ओहय जाव क्रियासि ।

४. सं० पा०—बहूणं गोरूवाणं ऊहे जाव लावणेहि ।

५. सं० पा०—अविणिज्जमाणंसि जाव क्रियामि ।

६. सं० पा०—ओहय • ।

७. करीहामि (क) ।

८. अद्ध • (क, ग) ।

९. अव्वितीए (ग) ।

१०. सं० पा०—सण्णद्ध जाव पहरणे ।

उह°प्पहरणे साम्भो गिहाम्भो निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता 'हत्थिणाउरं नयरं' मज्झमज्झेणं जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागए बहूणं नगरगोरूवाणं° *सणाहाण य अणाहाण य नगरगावियाण य नगरबलीवद्दाण य नगरपड्डियाण य नगर°-वसभाण य -अप्पेगइयाणं ऊहे छिदइ', *अप्पेगइयाणं थणे छिदइ, अप्पेगइयाणं वसणे छिदइ, अप्पेगइयाणं छेप्पा छिदइ, अप्पेगइयाणं ककुहे छिदइ, अप्पेगइयाणं वहे छिदइ, अप्पेगइयाणं कण्णे छिदइ, अप्पेगइयाणं नासा छिदइ, अप्पेगइयाणं जिब्भा छिदइ, अप्पेगइयाणं ओट्टे छिदइ°, अप्पेगइयाणं कंबलए छिदइ, अप्पेगइयाणं अण्णमण्णाइं अंगोवंगाइं वियंगेइ', वियंगेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उप्पलाए कूडगाहिणीए उवणेइ ॥

२६. तए णं सा उप्पला भारिया तेहि बहूहि गोमंसेहि सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणी बीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी तं दोहलं विणेइ ॥
३०. तए णं सा उप्पला कूडगाहिणी संपुण्णदोहला संभाणियदोहला विणीयदोहला विच्छिण्णदोहला° संपण्णदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ॥
३१. तए णं सा उप्पला कूडगाहिणी अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया ॥
३२. तए णं तेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया-महया [चिच्ची ?] सहेणं° विघुट्टे° विस्सरे° आरसिए ॥
३३. तए णं तस्स दारगस्स आरसियसइं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे नयरे बहवे नगरगोरूवा° *सणाहा य अणाहा य नगरगावीम्भो य नगरबलीवद्दा य नगरपड्डियाम्भो य नगर°वसभा य भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वम्भो समंता विपलाइत्था° ॥
३४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं नामघेज्जं करेत्ति—जम्हा णं अम्हं इमेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया-महया चिच्चीसहेणं विघुट्टे विस्सरे आरसिए, तए णं एयस्स" दारगस्स आरसियसइं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे

१. हत्थिणाउरे नयरे (क्व) ।

२. सं० पा०—नगरगोरूवाणं जाव वसभाण ।

३. सं० पा०—छिदइ जाव अप्पेगइयाणं ।

४. विगत्तेत्ति (क) ।

५. बोच्छिन्न° (ख, घ) ।

६. ३४ सूत्रे पुनरावर्तने 'चिच्चीसहेणं' इति

७. वुट्टे (ख); विघुट्टे (ग) ।

८. बीसरेणं (ख); चिच्चीसरे (ग); विसरे (घ) ।

९. सं० पा०—नगरगोरूवा जाव वसभा ।

१०. विप्पलाइत्था (क, घ) ।

११. तस्स (क) ।

पदमस्ति । तदत्र कथं न स्यात् ?

नयरे बहवे नगरगोरूवा' *सणाहा य अणाहा य नगरगावीओ य नगरबलीवहा
य नगरपड्डियाओ य नगरवसभा य० भीया तत्था तसिया उज्ज्वगा संजायभया
सव्वओ समंता विपलाइत्था, तम्हा णं होउ अम्हं दारए गोत्तासे नामेणं ॥

३५. तए णं से गोत्तासे दारए उम्मुक्कबालभावे जाए यावि होत्था ॥

३६. तए णं से भीमे कूडगाहे अणया कयाइ कालधम्मणा संजुत्ते ॥

३७. तए णं से गोत्तासे दारए बहूणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धि
संपरिवुडे रोयमाणं कंदमाणं विलवमाणे भीमस्स कूडगाहस्स नीहरणं करेइ,
करेत्ता बहूइं लोइयमयकिच्चाइं करेइ ॥

३८. तए णं से मुनंदे राया गोत्तासं दारयं अणया कयाइ सयमेव कूडगाहत्ताए
ठवेइ ॥

३९. तए णं से गोत्तासे दारए कूडगाहे जाए यावि होत्था—अहम्मिए जाव'
दुप्पड्डियाणदे ॥

४०. तए णं से गोत्तासे' कूडगाहे' कल्लाकल्लि अद्धरत्तकालसमयंसि एगे अबीए
सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए जाव' गहियाउहप्पहरणे साओ गिहाओ 'निज्जाइ,
निज्जाइत्ता' जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूणं नगरगोरू-
वाणं सणाहाण य अणाहाण य जाव' वियंगेइ, वियंगेत्ता जेणेव सए गेहे तेणेव
उवागए ॥

४१. तए णं से गोत्तासे कूडगाहे तेहिं बहूहिं गोमंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जि-
एहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य मुरं च महं च मेरगं च जाइं च सोधुं च
पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥

४२. तए णं से गोत्तासे कूडगाहे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं
पावकम्मं समज्जिणित्ता पंचवाससयाइं परमाउं पालइत्ता अट्टदुहट्टोवगए'
कालमासे कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसं तिसागरोवमठिइएसु नेरइएसु
नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

उज्ज्वलयस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

४३. तए णं सा विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दा नामं भारिया जार्यानिदुया' यावि
होत्था—जाया-जाया दारगा विणिहायमावज्जंति" ॥

१. सं० पा०—नगरगोरूवा भीया ।

२. वि० १।१।४७ ।

३. गोत्तासे दारए (फ, ख, ग, घ) ।

४. × (क) ।

५. वि० १।२।१४ ।

६. निगच्छइ २ (घ) ।

७. वि० १।२।२८ ।

८. अट्टदुहट्टवसट्टे (घ) ।

९. °निदुया (क, घ); निडुया (ग);

नश्यत्प्रसूतिका निदुः (अभिधान चिन्तामणि
३।१६३) ।

१०. तस्याः इति गम्यस् (वृ) ।

४४. तए णं से गोत्तासे कूडगाहे दोच्चाए पुढवीए अणंतरं उव्वट्ठित्ता इहेव वाणिय-
गामे नयरे विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दाए भारियाए कुञ्चिसि पुत्तत्ताए
उववण्णे ॥
४५. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अणया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं
दारणं पयाया ॥
४६. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही तं दारणं जायमेत्तयं चेव एगंते उक्कुरुडियाए'
उज्झवेइ, उज्झवेत्ता दोच्चं पि गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी
संगोवेमाणी संवड्ढेइ' ॥
४७. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो ठिइवडियं' च चंदसूरदंसणं' च जागरियं
च महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं करेति ॥
४८. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे निव्वत्ते संपत्ते बारसाहे
अयमेयारूव' गोणं गुणनिप्फणं नामधेज्जं करेति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए
जायमेत्तए चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए
उज्झए नामेणं ॥
४९. तए णं से उज्झयए दारए पंचघाईपरिग्गहिए, [तं जहा—खीरघाईए मज्जण-
घाईए मंडणघाईए कीलावणघाईए अंकघाईए]' जहा दढपइण्णे जाव' निव्वाय-
निव्वाघाय-गिरिकंदरमल्लीणे व्व चंपगपायवे सुहंसुहेणं विहरइ ॥
५०. तए णं से विजयमित्ते सत्थवाहे अणया कयाइ गणिमं च धरिमं च मेज्जं च
पारिच्छेज्जं च—चउव्विहं भंडं' गहाय लवणसमुदं पोयवहणेण उवागए ॥
५१. तए णं से विजयमित्ते तत्थ लवणसमुदे पोयविवत्तोए निब्बुडुभंडसारं अत्ताणे
असरणे कालधम्मणा संजुत्ते ॥
५२. तए णं तं विजयमित्तं सत्थवाहं जे जहा बहवे ईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-
इठभ-सेट्ठि-सत्थवाहा लवणसमुदपोयविवत्तियं' निब्बुडुभंडसारं कालधम्मणा
संजुत्तं सुणेति, ते तहा हत्थनिकखेवं च बाहिरभंडसारं च गहाय एगंतं
अवक्कमंति ॥
५३. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही विजयमित्तं सत्थवाहं लवणसमुदपोयविवत्तियं
निब्बुडुभंडसारं कालधम्मणा संजुत्तं सुणेइ, सुणेत्ता महया पइसोएणं अप्फुण्णा

१. उक्कुरुडियाए (ग) ।

२. संवड्ढेमाणीति (क) ।

३. ठियपडिय (क); ठियपडिकम्मं (घ) ।

४. चंदसूरपालणियं (वृ) ।

५. इमेयारूव (घ) ।

६. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

७. ओ० सू० १४४, वाचनान्तरं पृ० १५१,
१५२ ।

८. भंडगं (घ) ।

९. लवणसमुदे पोय० (क, ख, ग, घ) ।

- समाणी परसुनियत्ता इव' चंपगलया घस त्ति घरणीयलंसि सब्वंगेहि सन्निवडिया ॥
५४. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही मुहुत्तंतरेणं आसत्था समाणी बहूहि मित्त'-●नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहि सद्धि° परिवुडा रोयमाणी कंदमाणी विलव-माणी विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ ॥
५५. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ लवणसमुद्दोत्तरणं च सत्थविणासं च पोयविणासं च पइमरणं च अणुचितेमाणी-अणुचितेमाणी कालघम्मणा संजुत्ता ॥
५६. तए णं ते नगरगुत्तिया सुभद्दं सत्थवाहिं कालगयं जाणित्ता उज्झयणं दारणं सामो गिहाओ निच्छुभेत्ति, निच्छुभेत्ता तं गिहं अण्णस्स दलयंति ॥
५७. तए णं से उज्झयण दारए सामो गिहाओ निच्छूढे समाणे वाणियगामे नगरे सिंघाडग' - ●तिग - चउक्क - चच्चर - चउम्मह-महापह°पहेसु जूयखलएसु° वेसघरएसु° पाणागारेसु य मुहंसुहेणं परिवड्डइ ॥
५८. तए णं से उज्झयण दारए अणोहट्टए' अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारे मज्जप्पसंगी 'चोर-जूय'-वेस-दारप्पसंगी जाए यावि होत्था ॥
५९. तए णं से उज्झयण अण्णया कयाइ कामज्झयण गणियाए सद्धि संपलग्गे जाए यावि होत्था, कामज्झयण गणियाए सद्धि उरालाईं माणुस्सगाईं भोगभोगाईं भुंजमाणे विहरइ ॥
६०. तए णं तस्स मित्तस्स रण्णो अण्णया कयाइ सिरीए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था, नो संचाएइ मित्ते राया सिरीए देवीए सद्धि उरालाईं माणुस्सगाईं भोगभोगाईं भुंजमाणे विहरित्तए ॥
६१. तए णं से मित्ते राया अण्णया कयाइ 'उज्झयण दारए' कामज्झयण गणियाए गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता कामज्झयणं गणियं अग्निमतरियं' ठवेइ ठवेत्ता कामज्झयण गणियाए सद्धि उरालाईं माणुस्सगाईं भोगभोगाईं भुंजमाणे विहरइ ॥
६२. तए णं से उज्झयण दारए कामज्झयण गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे'

१. विव (क्व) ।

२. सं० पा०—मित्त जाव परिवुडा ।

३. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

४. जूयखलएसु (क) ।

५. वेसियाघरएसु (घ) ।

६. अणोहट्टिए (क, ख) ।

७. वृत्ती 'चोर-जूय' इति पदे व्याख्याते नरुस्तः ।

८. उज्झयणदारए (क, घ); अत्र विभक्ति-व्यत्ययो दृश्यते, अन्यथा व्याकरणदृष्ट्या 'उज्झयणं दारयं' इति पाठो युक्तः स्यात् ।

९. अग्निमतरियं (ख, घ) ।

१०. निच्छुभमाणे समाणे (क); निच्छुभे समाणे (घ) ।

कामज्झयाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे अण्णत्थ कत्थइ सुइं
च रइं च धिइं च अविदमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते
तयप्पियकरणे तवभावणाभाविए कामज्झयाए गणियाए बहूणि अंतराणि य
छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥

६३. तए णं से उज्झयए दारए अण्णया कयाइ 'कामज्झयाए गणियाए' 'अंतरं' लभेइ,
लभेत्ता कामज्झयाए गणियाए गिहं रहसियं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता काम-
ज्झयाए गणियाए सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥
६४. इमं च णं मित्ते राया ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते
सव्वालंकारविभूसिए मणुस्सवग्गुरापखित्ते जेणेव कामज्झयाए गिहे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तत्थ णं 'उज्झयगं दारगं' कामज्झयाए गणियाए
सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं' पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते
रुद्धे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिर्वलिं भिउडिं निडाले साहट्ठु
उज्झयगं दारगं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्ठि-मुट्ठि-जाणु-कोप्परपहार-
संभगं-महियगतं करेइ, करेत्ता अबभोडग-बंधणं करेइ, करेत्ता एएणं विहाणेणं
वज्झं आणवेइ ॥
६५. एवं खलु गोयमा ! उज्झयए दारए पुरा' 'पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कं-
ताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे °
विहरइ ॥

उज्झययत्स आगामिभव-वण्णग-पदं

६६. उज्झयए णं भंते ! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ?
कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! उज्झयए दारए पणुवीसं' वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव
तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे
रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ॥
६७. से णं तम्मो अणंतरं उव्वट्ठित्ता इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढुगिरिपायमूले
वाणरकुलंसि वाणरत्ताए उववज्जिहिइ ॥
६८. से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तिरियभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे

१. कामज्झयागणियं (घ) ।

२. अंतराणि (ख) ।

३. उज्झयए दारए (क, ख, ग, घ) ।

४. विहरमाणं (क, ख, ग) ।

५. भग्न (क) ।

६. सं० पा०—पुरा जाव विहरइ ।

७. पणवीसं (ग) ।

जाए-जाए वाणरपेल्लए वहेइ । तं एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे^१
कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इंदपुरे नयरे गणिया-
कुलंसि पुत्तत्ताए^२ पच्चायाहिइ ॥

६६. तए णं तं दारयं अम्मापियरो जायमेत्तकं वद्धेहि^३, नपुंसगकम्मं
सिक्खावेहि^४ ॥

७०. तए णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहस्स इमं एयारूवं नामघेज्जं
करेहि^५—होउ णं अम्हं इमे दारए पियसेणे नामं नपुंसए ॥

७१. तए णं से पियसेणे नपुंसए उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणमेत्ते जोव्वणगमणु-
प्पत्ते रूवेण य जोव्वणेण य लावणेण य उक्किट्ठे उक्किट्ठसरीरे भविस्सइ ॥

७२. तए णं से पियसेणे नपुंसए इंदपुरे नयरे वह्वे राईसर^६—*तलवर-माडंबिय-
कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह^७ पभियओ वहूहि य विज्जापओगेहि य
मंतपओगेहि य चुण्णपओगेहि य हियउड्डावणेहि य निण्हवणेहि य पण्हवणेहि
य वसीकरणेहि य आभिओगिएहि आभिओगित्ता उरालाई माणुस्सगाई
भोगभोगाई भुंजमाणे विहरिस्सइ ॥

७३. तए णं से पियसेणे नपुंसए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं
पावकम्मं समज्जिणित्ता एककीसं वाससयं परमाउं पालइत्ता कालमासे
कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ।
ततो सिरीसिवेसु, संसारो तहेव जहा पढमे जाव^८ *वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु
अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्तातत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ ।^९
से णं तओ अणंतं उव्वट्ठित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए
महिसत्ताए पच्चायाहिइ ।

से णं तत्थ अण्णया कयाइ गोट्टिल्लएहि जीवियाओ ववरोविए समाने तत्थेव
चंपाए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए^{१०} पच्चायाहिइ ।

से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं अतिए केवलं बोहि बुज्झिहिइ,
अणगारे भविस्सइ, सोहम्मे कप्पे, जहा पढमे जाव^{११} अंतं काहिइ ॥

निकखेव-पदं

७४. *एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^{१२} संपत्तेणं दुह्विवागाणं
विइयस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । —त्ति बेमि^{१३} ॥

१. एयसमुदाचारे (वु) ।

२. पुमत्ताए (क, ग) ।

३. वद्धेहि (क) ।

४. सं० पा०—राईसर जाव पभियओ ।

५. वि० १।१।७०; सं० पा०—जाव पुढवी ।

६. पुमत्ताए (क, ग) ।

७. वि० १।१।७० ।

८. सं० पा०—निकखेवो ।

९. ना० १।१।७ ।

तइयं अज्भयणं अभगसेणे

उक्खेव-पदं

१. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं दोच्चस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी०—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरिमताले नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे' ॥
३. तस्स णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं अमोहदंसी उज्जाणे ॥
४. तत्थ णं अमोहदंसिस्स जक्खस्स आययणे होत्था ॥ ,
५. तत्थ णं पुरिमताले नयरे महब्बले नामं राया होत्था ॥
६. तस्स णं पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए देसप्पंतं अडवि-संसिया, एत्थ णं सालाडवी नामं चोरपल्ली होत्था—विसमगिरिकंदर-कोलंब-संनिविट्ठा वंसीकलंक-पागारपरिक्खत्ता छिण्णसेल-विसमप्पवाय-फरिहोवगूढा अग्भितर-पाणीया सुदुल्लभजलपेरंता अणेगखंडी विदियजणदिन्न-निग्गमप्पवेसा सुबहुस्स' वि कुवियजणस्स दुप्पहंसा यावि होत्था ॥
७. तत्थ णं सालाडवीए चोरपल्लीए विजए नामं चोरसेणावई परिवसइ—अहम्मिए^१
^१अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अघम्माणुए अघम्मपलोइ अघम्मपलज्जणे अघम्मसील-समुदायारे अघम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणे बिहरइ—हण-छिद-भिद-वियत्तए०

१. सं० पा०—तच्चस्स उक्खेवो ।

२. ना० १।१।७ ।

३. पू०—ओ० सू० १ ।

४. सुबहुयस्स (क) ।

५. सं० पा०—अहम्मिए जाव जोहियपाणी ।

लोहियपाणी बहुनयरनिगयजसे सूरै दढप्पहारे साहसिए सहवेही असि-लट्टि-
पढममल्ले । से णं तत्थ सालाडवीए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं
‘पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगतं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पाले-
माणे ० विहरइ ॥

८. तए णं से विजए चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाणं
य संधिच्छेयगाणं य खंडपट्टाणं य, अण्णेसिं च बहूणं छिण्ण-भिण्ण-बाहिराहि-
याणं कुडंगे यावि होत्था ॥

९. तए णं से विजए चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लं जणवयं
बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकोट्टेहि
य खत्तखणणेहि य ‘ओवीलेमाणे-ओवीलेमाणे’ “विहम्ममाणे-विहम्ममाणे”
तज्जेमाणे-तज्जेमाणे तालेमाणे-तालेमाणे नित्थाणे निद्धणे निक्कणे करेमाणे
विहरइ, महब्बलस्स रण्णो अभिक्खणं-अभिक्खणं कप्पायं गेण्हइ ॥

१०. तस्स णं विजयस्स चोरसेणावइस्स खंडसिरी नामं भारिया होत्था—अहीणपडि-
पुण्ण-पंचिदियसरीरा ॥

११. तस्स णं विजयस्स चोरसेणावइस्स पुत्ते खंडसिरीए भारियाए अत्तए अभगसेने
नामं दारए होत्था—अहीणपडिपुण्ण-पंचिदियसरीरे ॥

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुरिमताले नयरे समोसढे ।
परिसा निगया । राया निग्गओ । धम्मो कहिओ । परिसा राया य गओ ॥

गोयमेण अभगसेणस्स पुढवभवपुच्छा-पढं

१३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी गोयमे
जाव” ‘रायमग्गंसि ओगाढे’”, तत्थ णं बहवे हत्थी पासइ”, अण्णे य तत्थ बहवे
आसे पासइ”, अण्णे य तत्थ बहवे पुरिसे पासइ - सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवए” । तेसिं
च” णं पुरिसाणं मज्झयं एगं पुरिसं पासइ—अवओडय” “बंधणं उक्खित्त-कण्ण-
नासं नेहत्तुप्पियगतं वज्झकरकडि-जुयनियच्छं कंठेगुणरत्त-मल्लदामं चुण्णगुंडिय-

१. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ ।

२. गंठिभेयाण (क, ख, ग, घ) ।

३. संधिच्छेयाण (क, ख, ग, घ) ।

४. खंडपाडियाण (बृपा) ।

५. उवीलेमाणे २ (घ, बृ) ।

६. विडंसेमाणे २ अत्थापहारेहि (ख); अत्था-
पहारेहि य विडंसेमाणे २ (घ) ।

७. × (क, बृ) ।

८. पू०—ओ० सू० १५ ।

९. पू०—वि० १।२।१० ।

१०. वि० १।२।१२-१४ ।

११. रायमग्गं समवगाढे (ख, घ); रायमग्गं
समोसढे (ग) ।

१२, १३, १४, पू०—वि० १।२।१४ ।

१५. × (क, ख, ग, घ) ।

१६. सं० पा०—अवओडय जाव उग्गोसिज्जमाणं ।

गातं चुण्णयं वज्जपाणपीयं तिलं-तिलं चेव छिज्जमाणं काकणिमंसाइं खावियंतं पावं खक्खरसएहिं हम्ममाणं अणेगनर-नारी-संपरिवुडं चच्चरे-चच्चरे खंडपड-हएणं° उग्घोसिज्जमाणं [इमं च णं एयारूवं उग्घोसणं सुणेइ—नो खलु देवाणुप्पिया ! अभंगसेणस्स चोरसेणावइस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्जइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्जंति' ?] ॥

१४. तए णं तं पुरिसं रायपुरिसा पढमंसि चच्चरंसि निसियावेति, निसियावेत्ता अट्ठ चुलप्पिउए अग्गओ घाएंति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं 'तासेमाणा-तासेमाणा' कलुणं काकणिमंसाइं खावेति, रहिरपाणं च पाएंति ।

तयानंतरं च णं दोच्चंसि चच्चरंसि अट्ठ चुल्लमाउयाओ अग्गओ घाएंति, °घाएत्ता कसप्पहारेहिं तासेमाणा-तासेमाणा कलुणं काकणिमंसाइं खावेति, रहिरपाणं च पाएंति° ।

एवं तच्चे चच्चरे अट्ठ महापिउए, चउत्थे अट्ठ महामाउयाओ, पंचमे पुत्ते, छट्ठे सुण्हाओ, सत्तमे जामाउया, अट्ठमे धूयाओ, नवमे नत्तुया, दसमे नत्तुईओ, एक्कारसमे नत्तुयावई, बारसमे नत्तुइणीओ, तेरसमे पिउस्सियपइया, चोइसमे पिउस्सियाओ, पण्णरसमे माउस्सियापइया, सोलसमे माउस्सियाओ, सत्तरसमे मामियाओ, अट्ठारसमे अवसेसं [स्स ?]' मित्त-नाइ-नियग-सयणसंबंधि-परियणं [स्स ?] अग्गओ घाएंति, घाएत्ता कसप्पहारेहिं तासेमाणा-तासेमाणा कलुणं काकणिमंसाइं खावेति, रहिरपाणं च पाएंति ॥

१५. तए णं 'भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता'° अयमेयारूवे अज्जत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे'—°अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्ति-विसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ । न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा । पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिक्खियं वेयणं वेएइ त्ति कट्ठ पुरिमताले नयरे उच्च-नीय-मज्झिम-कुलाइं अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाणं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरिम-ताले नयरे मज्झमज्झेणं पडिनिक्खमइ जाव' समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते ! °तुब्भेहिं अब्भणुणाए समाणे पुरिमताले नयरे जाव' तहेव सव्वं निवेएइ° ॥

१. द्रष्टव्यम्—वि० १।२।१४ सूत्रम् ।

२. तालेमाणा २ (ब) ।

३. सं० पा०—घाएंति २ ।

४. पूर्वक्रमेण अत्रापि षष्ठी विभक्तिर्युज्यते ।

५. से भगवं गोयमे तं पुरिसं पासइ । (क, ख,

ग, घ) । १।१।४१ तथा १।२।१५ सूत्रानु-

सारेण अयं पाठो लिखितः ।

६. सं० पा०—समुप्पण्णे जाव तहेव निव्वए ।

७. वि० १।२।१५ ।

८. सं० पा०—तं चेव जाव से णं ।

९. वि० १।३।१३-१५ ।

१६. से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसी' ? *किं नामए वा किं गोत्ते वा ? कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसिं वा पुरा पोरणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिकंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिवित्तेसं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ?

अभगसेणेस्स निन्नयभव-वण्णग-पदं

१७. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे पुरिमताले नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥
१८. तत्थ णं पुरिमताले नयरे उदिओदिए नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे ॥
१९. तत्थ णं पुरिमताले निन्नए नामं अंडय'-वाणियए होत्था—अड्ढे जाव' अपरि-भूए, अहम्मिअ' *अधम्मणुए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्मपलोई अधम्मपल-ज्जणे अधम्मसमुदाचारे अधम्मेणं चैव वित्तिं कप्पेमाणे दुस्सीले दुव्वए° दुप्पडियाणंदे ॥
२०. तस्स णं निन्नयस्स अंडय-वाणियस्स बह्वे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्ला-कल्लिं कुट्ठालियाओ य पत्थियपिडए° य गिण्हंति, गिण्हित्ता पुरिमतालस्स नयरस्स परिपेरंतेसु बह्वे काइअंडए य घूइअंडए य पारेवइअंडए य टिट्ठिभि-अंडए य वगिअंडए य मयूरिअंडए य कुक्कुडिअंडए य, अण्णेसिं च बहूणं जलयर-थलयर-खह्यरमाईणं अंडाई' गेण्हंति, गेण्हित्ता पत्थियपिडगाई भरेति, भरेत्ता जेणेव निन्नए अंडवाणियए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता निन्नयस्स अंडवाणियस्स उवणंति ॥
२१. ताए णं तस्स निन्नयस्स अंडवाणियगस्स बह्वे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा बह्वे काइअंडए य जाव' कुक्कुडिअंडए य, अण्णेसिं च बहूणं जलयर-थलयर-खह्यरमाईणं अंडए' तवएसु य कवल्लीसु य कंडुसु' य भज्जणएसु य इंगालेसु य तलेंति भज्जेति सोल्लेंति, तलेत्ता भज्जेत्ता सोल्लेत्ता य रायमग्गे अंतरावणंसि अंडयपणिएणं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ।
- अप्पणा वि णं से निन्नयए अंडवाणियए तेहिं बहूहिं काइअंडएहि य जाव कुक्कुडिअंडएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं

१. सं० पा०—आसी जाव विहरइ ।

६. अंडयाई (क) ।

२. अंड (क, ग) ।

७. वि० १।३।२० ।

३. ओ० सू० १४१ ।

८. अंडयाई (क) ।

४. सं० पा०—अहम्मिअ जाव दुप्पडियाणंदे ।

९. कंडुसु (क); कंडूएसु (ग)

५. पत्थियापिडए (क, ख, ग, घ) ।

च जाइं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजे-
माणे बिहरइ ॥

२२. तए णं से निन्ने अंडवाणियए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं
पावकम्मं समज्जिणित्ता एगं वाससहस्सं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं
किच्चा तच्चाए पुढवीए उक्कोसेणं' सत्तसागरोवमठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए
उववण्णे ॥

अभग्गसेणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

२३. से णं तम्मो अणंतरं उव्वट्ठित्ता इहेव सालाडवीए चोरपल्लीए विजयस्स चोर-
सेणावइस्स खंदसिरीए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥
२४. तए णं तीसे खंदसिरीए भारियाए अण्णया कयाइ तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं
इमे एयारूवे दोह्ले पाउब्भूए—घण्णाओ णं ताम्मो अम्मयाओ' 'जाओ णं' बहूहि
मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहि, अण्णाहि य चोरमहिलाहि
सद्धि संपरिवुडा ण्हाया' •कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ता
सव्वालंकारविभूसिया विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महं च मेरगं च
जाइं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजे-
माणी बिहरंति। जिमियभुत्तुत्तरागया' पुरिसनेवत्था' सण्णद्व-बद्ध°•वम्मियकवइया
उप्पीलियसरासणपट्टीया पिणद्वगेवेज्जा विमलवरबद्ध-चिधपट्टा गहियाउह°प्प-
हरणावरणा भरिएहि, फलएहि निक्कट्टाहि' असीहि. अंसागएहितोणेहि, सज्जीवेहि
अंसागएहि घणूहि, समुक्खित्तेहि सरेहि, समुल्लालियाहि' दामाहि', ओसारि-
याहि' ऊरुधंटाहि, छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं' महया उक्किट्टि"-•सीहणाय-बोल-
कलकल-रवेणं पक्खुभियमहा°समुदरवभूयं पिव करेमाणीओ सालाडवीए
चोरपल्लीए सब्बओ समंता ओलोएमाणीओ-ओलोएमाणीओ आहिडमाणीओ-
आहिडमाणीओ दोहलं विणेंति। तं जइ अहं पि जाव दोहलं विणिएज्जामि"

१. उक्कोस (क); उक्कोसे (ख, ग, घ) ।

२. पू०—वि० १।२।२४ ।

३. जाणं (क, ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।

५. °गयाओ (ख, ग, घ) ।

६. °नेवत्थिया (क, ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—सण्णद्वबद्ध जाव प्यहरणा° ।

८. निक्किट्टाहि (ख) ।

९. समुल्लासियाहि (वृ) ।

१०. दामाहि दाहाहि (ख); दाहाहि (वृषा) ।

११. लंबियाहि (क, ग) ।

१२. वज्जमाणेणं २ (ख, ग, घ) ।

१३. सं० पा०—उक्किट्टि जाव समुद्°; उक्किट्ट
(ग) ।

१४. विणेज्जामि (क); विणीज्जामि (ख, ग, घ) ।

- त्ति कट्टु तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा जाव' अट्टज्झाणोव-
गया भूमिगयदिट्ठीया भियाइ ॥
२५. तए णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरिभारियं ओहयमणसंकप्पं जाव' भियाय-
माणि पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा
जाव भूमिगयदिट्ठीया भियासि ?
२६. तए णं सा खंदसिरी विजयं चोरसेणावई एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया !
मम तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दोहले पाउब्भूए जाव' भूमिगयदिट्ठीया
भियामि ॥
२७. तए णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरीए भारियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा
निसम्म खंदसिरिभारियं एवं वयासी—अहामुहं देवाणुप्पिए ! त्ति एयमट्ठं
पडिसुणेइ ॥
२८. तए णं सा खंदसिरिभारिया विजएणं चोरसेणावइणा अब्भणुण्णाया समाणी
हट्टुट्ठा बहूहि मित्त'-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहि°, अण्णाहि
य बहूहि चोरमहिलाहि सद्धि संपरिवुडा ण्हाया जाव' विभूसिया विउलं असणं
पाणं खाइमं साइमं सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसणं च आसाए-
माणी वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी विहरइ । जिमियभुत्तुरागया
पुरिसनेवत्था सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवइया जाव' आहिंडमाणी दोहलं विणेइ ॥
२९. तए णं सा खंदसिरिभारिया संपुण्णदोहला संमाणियदोहला विणीयदोहला
विच्छिण्णदोहला° संपण्णदोहला तं गव्वं सुहंसुहेणं परिवहइ ॥
३०. तए णं खंदसिरी चोरसेणावइणी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया ॥
३१. तए णं से विजए चोरसेणावई तस्स दारगस्स महया इड्डीसक्कारसमुदएणं
दसरत्तं ठिइवडियं करेइ ॥
३२. तए णं से विजए चोरसेणावई तस्स दारगस्स एक्कारसमे दिवसे विउलं असणं
पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-
परियणं आमंतेइ, आमंतेत्ता जाव' तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-
परियणस्स पुरओ एवं वयासी—जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गव्वगयंसि
समाणंसि इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए अभगसेणे
नामेणं ।

१. वि० १।२।२४ ।

२. वि० १।२।२५ ।

३. वि० १।३।२४ ।

४. सं० पा०—मित्त जाव अण्णाहि ।

५. वि० १।३।२४ ।

६. वि० १।३।२४ ।

७. वोच्छिण्ण° (क, ख, घ) ।

८. ठित्तिपडितं (क, वृ) ।

९. ना० १।७।६ ।

३३. तए णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचघाईपरिगहिए जाव' परिवड्डइ ॥
३४. तए णं से अभग्गसेणे कुमारे उम्मुक्कबालभावे यावि होत्था । 'अट्ट दारियाओ जाव अट्टओ दाओ । उप्पि भुंजइ' ॥
३५. तए णं से विजए चोरसेणावई अण्णया कयाइ कालघम्मुणा संजुत्ते ॥
३६. तए णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचहिं चोरसएहि सद्धि संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे विजयस्स चोरसेणावइस्स महया इड्डोसक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइ लोइयाइ मयकिच्चाइ करेइ, करेत्ता केणइ' कालेणं अप्पसोए जाए यावि होत्था ॥
३७. तए णं ताइ पंच चोरसयाइ अण्णया कयाइ अभग्गसेणं कुमारं सालाडवीए चोरपल्लीए महया-महया चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति ॥
३८. तए णं से अभग्गसेणे कुमारे चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव' महब्बलस्स रण्णो अभिक्खणं-अभिक्खणं कप्पायं गिण्हइ ॥
३९. तए णं ते जाणवया पुरिसा अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा बहुगामघायणाहिं' ताविया' समाणा अण्णमण्णं सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरिमतालस्स नयरस्स उत्तरिल्लं जणवयं बहूहिं गामघाएहिं जाव' निद्धणं करेमाणे विहरइ । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो एयमट्ठं विण्णवित्तए' ॥
४०. तए णं ते जाणवया पुरिसा एयमट्ठं अण्णमण्णेणं' पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता महत्थं महग्घ महरिहं रायारिहं पाहुडं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे तेणेव उवागया' महब्बलस्स रण्णो तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेंति,

१. वि० १।२।४६ ।

२. 'अट्टदारियाओ' ति, अस्यायमर्थः—'तए ण तस्स अभग्गसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अभग्गसेणं कुमारं सोहणंसि तिहिकरणक्खत्तमुहुत्तंसि अट्टहिं दारयाहिं सद्धि एगदिवसेण पाणिं गिण्हाविसु' ति, यावत्करणादिदं दृश्यं—'तए ण तस्स अभग्गसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो इमं एयारूवं पीईदाणं दलयंति' ति 'अट्टओ दाओ' ति अष्टपरिमाणमस्येति अष्टको दायो—दानं वाच्य इति शेषः, स चैवम्—'अट्ट हिरण्णकोडीओ अट्ट सुवण्णकोडीओ' इत्यादि यावत् 'अट्ट पेसणकारियाओ अण्णं च विपुलघणकणगरयणमणिमोत्तियसंख-सिलप्पवालरत्तरयणमाइयं संतसारसावएज्ज'

मिति, 'उप्पि भुंजइ' ति अस्यायमर्थः—'तए णं से अभग्गसेणे कुमारे उप्पि पासाय-वरगए फुट्टमाणेहिं मुयगमत्थएहिं वरतराण-संपउत्तेहिं बत्तीसइबडेहिं नाडएहिं उवगिज्ज-माणे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भव-माणे विहरइ' ति (वृ) ।

३. X (क) ।

४. वि० १।३।७-९ ।

५. °घायावणाहिं (ख, ग, घ) ।

६. तासिता (क) ।

७. वि० १।३।९ ।

८. निवेयित्तए (क); निवेएत्तए (ग) ।

९. अण्णेण्णं (ग) ।

१०. उवागया जेणेव महब्बले राया तेणेव उवागया (ख, ग, घ) ।

उवणेत्ता करयल'परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए • अंजलि कट्टु महब्बलं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! सालाडवीए चोरपल्लीए अभगसेणे चोरसेणावई अम्हे बहूहि गामघाएहि य जाव' निद्वणे करेमाणे विहरइ । तं इच्छामि णं सामी ! तुज्झं बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसित्तए त्ति कट्टु पायवडिया पंजलिउडा' महब्बलं रायं एयमट्ठं विण्णवेति ॥

४१. तए णं से महब्बले राया तेसि जाणवयाणं पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते' • रुट्ठे कुविए चंडिविकए • मिसिमिसेमाणे' तिवलियं भिउडि निडाले साहट्टु दंडं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सालाडवि चोरपल्लि विलुंपाहि, विलुंपित्ता अभगसेणं चोरसेणावई जीवग्गाहं गेण्हाहि, गेण्हित्ता ममं उवणेहि' ॥

४२. तए णं से दंडे तह त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥

४३. तए णं से दंडे बहूहि पुरिसेहि' सण्णद्ध-बद्धवम्मियकवएहि जाव' गहियाउह-पहरणेहि सद्धि संपरिवुडे मगइएहि" फलएहि", • निक्कट्टाहि असीहि, अंसागएहि तोणेहि, सज्जीवेहि अंसागएहि धणूहि, समुक्खित्तेहि सरेहि, समुल्लालियाहि दामाहि, ओसारियाहि ऊरुघंटाहि", छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं महया उक्किट्ठि"- • सीहणाय-बोल-कलकल-रवेणं पक्खुभियमहासमुद्धरवभूयं पिव • करेमाणे पुरिमतालं नयरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ" गमणाए ॥

४४. तए णं तस्स अभगसेणस्स चोरसेणावइस्स चारपुरिसा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव सालाडवी चोरपल्ली, जेणेव अभगसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागया करयल"परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु अभगसेणं चोरसेणावई • एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलेणं रण्णा महयाभडचडगरेणं दंडे आणत्ते—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया !

१. सं० पा०—करयल • ।

२. वि० १।३।६ ।

३. पंजलियडा (क) ।

४. जाणवदाणं (क) ।

५. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे; आसुरुत्ते (ग, घ) ।

६. मिसिमिसेमाणे (ख) ।

७. उवणेहिति (क); उवणेहि (ख, ग, घ) ।

८. पुरिसेहि सद्धि (क, ग घ) ।

९. वि० १।२।१४ ।

१०. वि० १।३।२४ अस्य स्थाने 'भरिएहि' इति पाठः । शब्दभेदेपि अनयोः वृत्तिकारेण एक एव अर्थः कृतः—'भरिएहि' इति हस्त-पाशितैः, 'मगइएहि' ति हस्तपाशितैः ।

११. सं० पा०—फलएहि जाव छिप्पतूरेणं ।

१२. उक्किट्ठ (ख, ग, घ); सं० पा०—उक्किट्ठि जाव करेमाणे ।

१३. पाहारेत्थ (क) ।

१४. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

सालाडवि चोरपल्लि विलुंपाहि, अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गेण्हाहि, गेण्हत्ता ममं उवणेहि । तए णं से दंडे महयाभडचडगरेणं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४५. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई तेसिं चारपुरिसाणं अंतिए एयमटुं सोच्चा निसम्म पंच चोरसयाइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलेणं रण्णा महयाभडचडगरेणं दंडे आणत्ते जाव' तेणेव पहारेत्थ गमणाए' । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तं दंडं सालाडवि चोरपल्लि असंपत्तं अंतरा चेव पडिसेहत्तए ॥

४६. तए णं ताइं पंच चोरसयाइं अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तहत्ति' °एयमटुं ° पडिसुणेंति ॥

४७. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता पंचहि चोरसएहिं सद्धिं ण्हाए' °कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल °-पायच्छित्ते भोयणमंडवंसि तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ । जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए पंचहि चोरसएहिं सद्धिं अल्लं चम्मं दुरुहइ, दुरुहिता सण्णद-बद्ध °वम्मियकवएहिं उप्पीलियसरासणपट्टीएहिं पिणद्वगेवेज्जेहिं विमलवरबद्ध-चिघपट्टेहिं गहियाउह °पहरणेहिं' मगइएहिं जाव' उक्किट्ठि-सीह्नाय-बोल-कलकलरवेणं' पच्चावरण्हकालसमयंसि सालाडवीओ चोरपल्लीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता विसमदुग्गगहणं ठिए गहियभत्तपाणिए तं दंडं पडिवालेमाणे-पडिवालेमाणे चिट्ठइ ॥

४८. तए णं से दंडे जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था ॥

४९. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई तं दंडं खिप्पामेव हय-महिय'-°पवरवीर-घाइय-विवडियचिघघयपडागं दिसोदिसिं ° पडिसेहेति' ॥

५०. तए णं से दंडे अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा हय-°महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिघघयपडागे दिसोदिसिं ° पडिसेहिए समाणे अथामे अवले अवीरिए

१. वि० १।३।४४ ।

२. आगते ततेणं अभग्गसेणे ताइं पंचचोरसयाइं एवं वयासी (क, ख, ग); गमणाए आगते ततेणं से अभग्गसेणे ताइं पंचचोरसयाइं एवं वयासी (घ) ।

३. सं० पा०—तहत्ति जाव पडिसुणेंति ।

४. सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।

५. सं० पा०—सण्णदबद्ध जाव पहरणेहिं ।

६. पहरणे (क, घ) ।

७. वि० १।३।४३ ।

८. पू०—१।३।४३ ।

९. सं० पा०—महिय जाव पडिसेहेति ।

१०. विप्पडिसेहेइ (वृ) ।

११. सं० पा०—हय जाव पडिसेहिए ।

अपुरिसक्कारपरक्कमे अघारणिज्जमिति कट्ठु जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महब्बले राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'० परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थाए अंजलिं कट्ठु महब्बलं रायं० एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अभगसेणे चोरसेणावई विसमदुग्गहणं ठिणं गहियभत्तपाणिणं, नो खलु से सक्का केणवि' सुवहुएणवि आसवलेण वा हत्थिवलेण वा जोहवलेण वा 'रहवलेण वा चाउरंगेणं पि' [सेणवलेण ?] उरंउरेणं गिण्हित्ताए ।

ताहे सामेण य' भेएण य' उवप्पयाणेण य' विस्सम्भमाणेउं पवत्ते' यावि होत्था । जे वि य से अग्गिभतरगा सीसगभमा', मित्त-नाड-नियग-सयण-संबंधि-परियणं च विउलेणं-धण-कणग-रयण-संतसार-सावएज्जेणं' भिदइ, अभगसेणस्स य' चोरसेणावइस्स अभिक्खणं-अभिक्खणं महत्थाइं महग्घाइं महरिहाइं रायारिहाइं पाहुडाइं पेसेइ, अभगसेणं चोरसेणावइं वीसम्भमाणेइ ॥

५१. तए णं से महब्बले राया अण्णया कयाइ पुरिमताले नयरे एगं महं महइमहालियं कूडागारसालं कारेइ" - अणेगखंभसयसन्निविट्ठं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं ॥

५२. तए णं से महब्बले राया अण्णया कयाइ पुरिमताले नयरे उस्सुक्कं'० उक्करं अभडप्पवेसं अदंडिमकुदंडिमं अधरिमं अघारणिज्जं अणुद्वयमुइगं अमिलाय-मल्लदामं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालाचराणुचरियं पमुइयपक्कीलिया-भिरामं जहारिहं० दसरत्तं पमोयं उग्घोसावेइ, उग्घोसावेत्ता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सालाडवीए चोरपल्लीए । तत्थ णं तुब्भे अभगसेणं चोरसेणावइं करयल'० परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थाए अंजलिं कट्ठु० एवं वयह"—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो उस्सुक्के जाव दसरत्ते पमोए उग्घोसिए । तं किं णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पुप्फ-वत्थ-गंघ्र-मल्लालंकारे य इहं हव्वमाणिज्जउ उदाहु सयमेव गच्छित्था" ?

१. सं० पा०—करयल० ।

२. केणइ (ख, ग, घ) ।

३. × (क) ।

४, ५, ६. वा (ग) ।

७. पयत्ते (क) ।

८. सीसगसमा (घ); तान् इति शेषः (वृ) ।

९. सावएजेणं (क, ग) ।

१०. × (क, ग) ।

११. करेइ (क, ख, घ) ।

१२. सं० पा०—उस्सुक्कं जाव दसरत्तं; उस्सुक्कं (क) सर्वत्र ।

१३. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

१४. वदाह (क) ।

१५. गच्छित्ता (क, ख, ग, घ); मुद्रितवृत्ती

५३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा महब्बलस्स रण्णो करयल'●परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वथणं° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता पुरिमतालाओ नयराम्मो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता नाइविकट्ठेहिं अद्धानेहिं सुहेहिं वसहिपायरासेहिं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं करयल'●परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नयरे महब्बलस्स रण्णो उस्सुक्के जाव' दसरत्ते पमोए उग्घोसिए । तं किं णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारे य इहं हव्वमाणिज्जउ उदाहु सयमेव गच्छित्था ?
५४. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया ! पुरिमतालं नयरं सयमेव गच्छामि । ते कोडुंबियपुरिसे सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेइ ॥
५५. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहि मित्त'-●नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं सद्धि° परिवुडे ण्हाए' ●कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सालाडवीओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुरिमताले नयरे, जेणेव महब्बले राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'●परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु° महब्बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता महत्थं' ●महग्घं महरिहं रायारिहं° पाहुडं उवणेइ ॥
५६. तए णं से महब्बले राया अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तं महत्थं' ●महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं° पडिच्छइ, अभग्गसेणं चोरासेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ विसज्जेइ, कूडागारसालं च से आवसहिं' दलयइ ॥
५७. तए णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई महब्बलेणं रण्णा विसज्जिए समाणे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ ॥
५८. तए णं से महब्बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

'उदाहु सयमेव गच्छित्ता उताहो स्वयमेव गमिष्यसि' । हस्तलिखितवृत्ती—'गच्छित्था स्वयमेव गमिष्यथ' इत्यस्ति ।

१. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेंति ।
२. नातिविक° (ख); नाइविग° (वृ) ।
३. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
४. वि० १।३।५२ ।

५. सं० पा०—मित्त जाव परिवुडे ।
६. सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।
७. सं० पा०—करयल° ।
८. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।
९. सं० पा०—महत्थं जाव पडिच्छइ ।
१०. वसहि (क) ।

गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह, उवक्खडावेत्ता तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसणं च सुवहं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं च अभगसेणस्स चोरसेणावइस्स कूडागारसालाए उवणेह ॥

५६. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल'०परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु'० जाव' उवणेंति ॥

६०. तए णं से अभगसेणे चोरसेणावई बहूहि मित्त'-०नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेंहि'० सद्धि संपरिवुडे ण्हाए जाव' सव्वालंकारविभूसिए तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसणं च आसाए-माणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे पमत्ते विहरइ ॥

६१. तए णं से महब्बले राया कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे' देवाणुप्पिया ! पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइं पिहेह, पिहेत्ता अभगसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हह, गिण्हित्ता ममं उवणेह ॥

६२. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल'०परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं'० पडिसुणेंति, पडिसुणेंता पुरिमतालस्स नयरस्स दुवाराइं पिहेंति, अभगसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गिण्हंति, गिण्हित्ता महब्बलस्स रण्णो उवणेंति ॥

६३. तए णं से महब्बले राया अभगसेणं चोरसेणावइं एएणं विहाणेणं वज्रं आणवेइ ॥

६४. एवं खलु गोयमा ! अभगसेणे चोरसेणावई पुरा पोराणाणं'०दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे'० विहरइ ॥

अभगसेणस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

६५. अभगसेणे णं भंते ! चोरसेणावई कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! अभगसेणे चोरसेणावई सत्ततीसं वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे कए समाने कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोस'०सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए'० उववज्जिहिइ ।

१. सं० पा०—करयल'० ।

२. वि० १।३।५८ ।

३. सं० पा०—मित्त'० ।

४. वि० १।३।५५ ।

५. तुमं (ग) ।

६. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेंति ।

७. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।

८. सं० पा०—उक्कोस नेरइएसु ।

से णं तम्मो अणंतरं उव्वट्ठित्ता, एवं संसारो जहा पढमे जाव' •वाउ-तैउ-आउ-
पुठवीसु अण्णेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चा-
याइस्सइ । °

तम्मो उव्वट्ठित्ता वाणारसीए नयरीए सूयरत्ताए पच्चायाहिइ । से णं तत्थ
सोयरिएहि जीवियाम्मो ववरोविए समाणे तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि
पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावो, एवं जहा पढमे जाव'
अंतं काहिइ ॥

निस्सेव-पदं

६६. '•एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं
तइयस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति वेमि ॥ °

१. वि० १।१।७०; सं० पा०—जाव पुठवी ।

२. वि० १।१।७० ।

३. सं० पा०—निस्सेवप्पो

४. ना० १।१।७ ।

चउत्थं अज्भयणं

सगडे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते' ! •समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं तच्चवस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी० — एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं साहंजणी नामं नयरी होत्था — रिद्धत्थिमियसमिद्धा ॥
३. तीसे णं साहंजणीए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए देवरमणे नामं उज्जाणे होत्था ॥
४. तत्थ णं अमोहस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था — पोराणे ॥
५. तत्थ णं साहंजणीए नयरीए महचंदे नामं राया होत्था — महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिदसारे ॥
६. तस्स णं महचंदस्स रण्णो सुसेणे नामं अमच्चे होत्था — साम-भेय-दंड-उवप्पयाण-नीति-सुप्पउत्त-नयविहण्णू' ॥
७. तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुदरिसणा नामं गणिया होत्था — वण्णओ' ॥
८. तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुभदे नामं सत्थवाहे होत्था — अड्ढे ॥
९. तस्स णं सुभदस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था — अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा ॥
१०. तस्स णं सुभदस्स सत्थवाहस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सगडे नामं दारए होत्था — अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरे ॥

१. सं० पा० — चउत्थस्स उक्खेवओ ।

३. पू० — ना० १।१।१६ ।

२. णा० १।१।७ ।

४. वि० १।२।७ ।

११. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए^१ । परिसा राया य निग्गए । घम्मो कहिओ । परिसा गया ॥

सगडस्स पुढवभवपुच्छा-पवं

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव^२ रायमग्गं^३ ओगाढे । तत्थ णं हत्थी, आसे, अण्णे य बहवे पुरिसे पासइ^४ । तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झमयं पासइ एणं सइत्थियं पुरिसं अवओडयबंधणं उक्खित्तं^५-कण्णनासं जाव^६ खंडपडहेण उग्घोसिज्जमाणं^७ •इमं च णं एयारूवं उग्घोसणं सुणेइ—नो खलु देवाणुप्पिया ! सगडस्स दारगस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अववरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अववरज्झंति ॥

सगडस्स छन्नियभव-वण्णग-पवं

१३. तए णं भगवओ गोयमस्स^८ चिंता तहेव जाव^९ भगवं वागरेइ—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे छगलपुरे नामं नयरे होत्था ॥
१४. तत्थ णं सीहगिरी नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे ॥
१५. तत्थ णं छगलपुरे नयरे छन्निए नामं छागलिए परिवसइ—अड्ढे जाव^{१०} अपरिभूए, अहम्मिए जाव^{११} दुप्पड्डियाणंदे ॥
१६. तस्स णं छन्नियस्स छागलियस्स बहवे [बहूणि ?] अयाण य एलयाण^{१२} य रोज्झाण य 'वसभाण य'^{१३} ससयाण य सूयराण य 'पसयाण य सिंहाण य'^{१४} हरिणाण य मयूराण य महिसाण य सयबद्धाणि सहस्सबद्धाणि य जूहाणि वाडगंसि संनिरुद्धाइं^{१५} चिट्ठंति ।

१. समोसरणं (क, ख, घ) ।

२. वि० १।२।१२-१४ ।

३. रायमग्गे (ख, घ) ।

४. पू०—वि० १।२।१४ ।

५. उक्खित्त (ख); उक्कड (ग); उक्खित्त (घ) ।

६. वि० १।२।१४ ।

७. सं० पा०—उग्घोसिज्जमाणं जाव चिंता ।

८. वि० १।२।१५, १६ ।

९. ओ० सू० १४१ ।

१०. वि० १।१।४७ ।

११. एलाण (क, ख, ग, घ) ।

१२. पसयाण य (क); × (ख, ग) ।

१३. सिंहाण य (क); × (ख, ग); पसुयाण० (घ) ।

१४. निरुद्धाइं (क); निरुद्धा (ख, ग) ।

अण्णे य तत्थ बह्वे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा बह्वे अए य जाव महिसे य सारक्खमाणा संगोवेमाणा^१ चिट्ठंति^२ ।

अण्णे य से बह्वे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा बह्वे अए य जाव महिसे य जीवियाओ ववरोवेत्ता, ववरोवेत्ता मंसाइं कप्पणीकप्पियाइं^३ करंति, करेत्ता छन्नियस्स छागलियस्स उवणंति ।

अण्णे य से बह्वे पुरिसा ताइं बहुयाइं अयमंसाइं जाव महिसमंसाइ य तवएसु य कवल्लीसु य कंदुसु^४ य भज्जणेसु य इंगालेसु य तलेंति य भज्जेति य सोल्लेंति य, तलेत्ता य भज्जेत्ता य सोल्लेत्ता य तओ रायमग्गंसि वित्ति कप्पेमाणा विहरंति ।

अप्पणा वि य^५ णं से छन्निए छागलिए तेहिं वहुहिं अयमंसेहि य जाव महिस-मंसेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ ॥

१७. तए णं से छन्निए छागलिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं कज्जिकलुसं समज्जिणित्ता सत्त वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा चोत्थीए पुढवीए उक्कोसेणं दससागरोवमठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

सगडस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

१८. तए णं सा सुभइस्स सत्थवाहस्स भद्दा भारिया जायनिंदुया यावि होत्था—जाया-जाया दारगा विणिहायमावज्जंति ॥

१९. तए णं से छन्निए छागलिए चोत्थीए पुढवीए अणंतरं उव्वट्ठित्ता इहेव साहंजणीए नयरीए सुभइस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

२०. तए णं सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारगं पयाया ॥

२१. तए णं तं दारगं अम्मापियरो जायमेत्तं चेव सगडस्स हेट्ठओ ठवेंति, दोच्चं पि गिण्हावेंति, अणुपुव्वेणं सारक्खंति संगोवेंति संवड्ढेंति, जहा उज्जिअए जाव^६

१. संगोयमाणा (क) ।

३. कप्पिणी ° (ख) ।

२. चिट्ठंति । अण्णे य से बह्वे पुरिसा अयाण

४. कंदुसु (ख, ग) ।

य जाव गिहंसि संनिरुद्धा चिट्ठंति (क, ग,

५. × (क) ।

घ); असी पाठः नावश्यकः प्रतिभाति ।

६. वि० १।२।४७, ४८ ।

अस्यार्थः पूर्वपाठे समागतोस्ति ।

जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमेत्तए चेव सगडस्स हेट्ठमो ठविए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए सगडे नामेणं । सेसं जहा' उज्झियए । सुभद्दे लवणसमुद्दे कालगए, माया वि कालगया । से वि सामो गिहाओ निच्छूढे ॥

२२. तए णं से सगडे दारए सामो गिहाओ निच्छूढे समाणे' •साहंजणीए नयरीए सिघाडग-तिग-चउवक-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु जूयखलएसु वेसघरएसु पाणागारेसु य सुहंसुहेणं परिवड्ढइ ॥
२३. तए णं से सगडे दारए अणोहट्टए अणिवारिए सच्छंदमई सहरप्पयारे मज्जप्पसंगी चोर-जूय-वेस-दारप्पसंगी जाए यावि होत्था ॥
२४. तए णं से सगडे अण्णया कयाइ ° सुदरिसणाए गणियाए सद्धि संपलग्गे यावि होत्था ॥
२५. तए णं से सुसेणे अमच्चे तं सगडं दारणं अण्णया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेइ, निच्छुभावेत्ता सुदरिसणं गणियं अग्गितरियं ठवेइ, ठवेत्ता सुदरिसणाए गणियाए सद्धि उरालाई माणुस्सगाई भोगभोगाई भुंजमाणे विहरइ ॥
२६. तए णं से सगडे दारए सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे' •सुदरिसणाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गडिअ अज्झोववण्णे अण्णत्थ कत्थइ सुइं च रइं च धिइं च अलभमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्झवसाणे तदट्ठो-वउत्ते तयप्पियकरणे तवभावणाभाविअ सुदरिसणाए गणियाए बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥
२७. तए णं से सगडे दारए अण्णया कयाइ सुदरिसणाए गणियाए अंतरं लभेइ, लभेत्ता सुदरिसणाए गणियाए गिहं रहसियं ° अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सुदरिसणाए सद्धि उरालाई माणुस्सगाई भोगभोगाई भुंजमाणे विहरइ ॥
२८. इमं च णं सुसेणे अमच्चे ण्हाए जाव' विभूसिए मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते' जेणेव सुदरिसणाए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडं दारयं सुदरिसणाए गणियाए सद्धि उरालाई भोगभोगाई भुंजमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते जाव' मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडि निडाले साहट्ठु सगडं दारयं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता अट्ठि' •मुट्ठि-जाणु-कोप्पर-पहारसंभगं °

१. वि० १।२।४६-५६ ।

सुदरिसणाए गिहं ।

२. सं० पा०—समाणे सिघाडग तद्देव जाव
सुदरिसणाए ।

५. वि० १।२।६४ ।

६. मणुस्सवग्गुराए (ख, ग, घ) ।

३. ठावेइ (क) ।

७. वि० १।२।६४ ।

४. सं० पा०—निच्छुभेमाणे अण्णत्थ कत्थइ
सुइं वा अलभ अण्णया कयाइ रहसियं

८. सं० पा०—अट्ठि जाव महियगत्तं ।

महियगतं करेइ, करेत्ता अवप्पोडयबंघणं करेइ, करेत्ता जेणेव महचंदे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल'० परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु महचंदं रायं० एवं वयासी—एवं खलु सामी ! सगडे दारए मम अंतेउरसि' अवरद्धे ॥

२९. तए णं से महचंदे राया सुसेणं अमच्चं एवं वयासी—तुमं चेव णं देवाणुप्पिया ! सगडस्स दारगस्स दंडं वत्तेहि' ॥
३०. तए णं से सुसेणे अमच्चे महचंदेणं रण्णा अळमणुण्णाए समाणे सगडं दारयं सुदरिसणं च गणियं एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥
३१. तं एवं खलु गोयमा ! सगडे दारए पुरा पोरानाणं' ० दुच्चिणाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे० विहरइ ॥

सगडस्स आगामिभाव-वण्णग-पदं

३२. सगडे णं भंते ! दारए कालगए कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! सगडे णं दारए सत्तावण्णं वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे एगं महं अयोमयं तत्तं समजोइभूयं इत्थिपडिमं अवतासाविए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ॥
३३. से णं तप्पो अणंतरं उव्वट्ठित्ता रायगिहे नयरे मातंगकुलंसि जमलत्ताए' पच्चायाहिइ' ॥
३४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहस्स' इमं एयारूवं नामधेज्जं करिस्संति—तं होउ णं दारए सगडे नामेणं, होउ णं दारिया सुदरिसणा नामेणं ॥
३५. तए णं से सगडे दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते' भविस्सइ ॥
३६. तए णं सा सुदरिसणावि दारिया उम्मुक्कबालभावा विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावणेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ-सरीरा भविस्सइ ॥

१. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

२. अंतेपुरिसि (क, घ) ।

३. वत्तेहि (क, घ) ।

४. सं० पा०—पोरानाणं जाव विहरइ ।

५. जुगलत्ताए (घ) ।

६. पयायाहिति (ग) ।

७. निव्वत्तवारसगस्स (क, ख, ग, घ) ।

८. ०प्पत्ते अलं भोगससत्ये यावि (वृ) ।

३७. तए णं से सगडे दारए सुदरिसणाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे सुदरिसणाए भइणीए^१ सद्धि उरालाई माणुस्सगाई भोगभोगाई भुंजमाणे विहरिस्सइ ॥
३८. तए णं से सगडे दारए अण्णया कयाइ सयमेव कूडगाहत्तं उवसंपज्जिता णं विहरिस्सइ ॥
३९. तए णं से सगडे दारए कूडगाहे भविस्सइ—अहम्मिए जाव^२ दुप्पडियाणंदे, एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ^३, संसारो तहेव जाव^४ •वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्स-खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ^५ ।
 से णं तन्नो अणंतरे उव्वट्ठित्ता वाणारसीए नयरीए मच्छत्ताए उववज्जिहिइ ।
 से णं तत्थ मच्छबंघिएहि व्हिए तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । बोहिं, पव्वज्जा, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

४०. •एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^६ संपत्तेणं दुहविवागाणं चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति बेमि ° ॥

१. भारियाए (क, ख); × (ग) ।

२. वि० १।१।४७ ।

३. उववन्ने (क, ख, ग, घ); अशुद्धं प्रतिभाति ।

४. वि० १।१।७०; सं० पा०—जाव पुढवी ।

५. सं० पा०—निक्खेवो ।

६. ना० १।१।७ ।

पंचमं अञ्जयणं

बहस्सइदत्ते

उक्खेव-पदं

१. '०जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाण चउत्थस्स अञ्जयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! अञ्जयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी ०—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबी नामं नयरी होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धा । बाहिं चंदोतरणे उज्जाणे । सेयभद्दे जक्खे ॥
३. तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सयाणिए नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिदसारे' । मियावई देवी ॥
४. तस्स णं सयाणियस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए उदयणे नामं कुमारे होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरे' जुवराया ॥
५. तस्स णं उदयणस्स कुमारस्स पउमावई नामं देवी होत्था ॥
६. तस्स णं सयाणियस्स सोमदत्ते नामं पुरोहिए होत्था—रिउब्बेय-यज्जुब्बेय-सामवेय-अथव्वणवेयकुसले ॥
७. तस्स णं सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ता नामं भारिया होत्था ॥
८. तस्स णं सोमदत्तस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए बहस्सइदत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरे' ॥
९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसठे' ॥

१. सं० पा०—पंचमस्स अञ्जयणस्स उक्खेवओ । ५. पू०—वि० १।२।१० ।

२. ना० १।१।७ ।

६. समवसरणं (क, ख, ग, घ); वि० १।२।११

३. पू०—ओ० सू० १४ ।

सूत्राधारेण असौ पाठः स्वीकृतः ।

४. पू०—वि० १।२।१० ।

गोयमेण बहस्सइदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव जाव' रायंमग्गमोगाढे तहेव पासइ हत्थी, आसे, पुरिसमज्जे' पुरिसं । चित्ता । तहेव' पुच्छइ पुव्वभवं । भगवं वागरेइ—

बहस्सइदत्तस्स महेसरदत्तभव-वण्णग-पदं

११. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहेवासे सव्वओभदे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे' ॥
१२. तत्थ णं सव्वओभदे नयरे जियसत्तू नामं राया होत्था ॥
१३. तस्स णं जियसत्तुस्स रण्णो महेसरदत्ते' नामं पुरोहिए होत्था—रिउव्वेय'-यज्जुव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेयकुसले यावि होत्था ॥
१४. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए जियसत्तुस्स रण्णो रज्जबलविवट्ठणट्ठयाए कल्ला-कल्लि' एगमेगं माहणदारयं, एगमेगं खत्तियदारयं, एगमेगं वइस्सदारयं, एगमेगं सुद्धदारयं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसि जीवंतगाणं चेव हिययउंडए गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो संतिहोमं करेइ ॥
१५. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठमीचाउद्दीसीसु दुवे-दुवे माहण-खत्तिय-वइस्स-सुद्धे, चउण्हं मासाणं चत्तारि-चत्तारि, छण्हं मासाणं अट्ठ-अट्ठ, संवच्छरस्स सोलस-सोलस ।
- जाहे-जाहे वि य णं जियसत्तू राया परबलेणं अभिजुज्जइ', ताहे-ताहे वि य णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठसयं माहणदारगाणं, अट्ठसयं खत्तियदारगाणं, अट्ठसयं वइस्सदारगाणं, अट्ठसयं सुद्धदारगाणं पुरिसेहि गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता तेसि जीवंतगाणं चेव हिययउंडियाओ गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो संतिहोमं करेइ । तए णं से परबले खिप्पामेव विद्धंसेइ' वा पडिसेहिज्जइ वा ॥
१६. तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा पंचमाए' पुढवीए उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमट्ठिइए नरगे उववण्णे ॥

१. वि० १।२।१२-१४ ।

२. × (घ) ।

३. पू०—वि० १।२।१४-१६ ।

४. पू०—ओ० सू० १ ।

५. महिस्सर० (क) ।

६. रिव्वेइ (क) ।

७. कल्लं कल्लं (क); कल्ला कल्लं (ग) ।

८. अभिजुज्जइ (ख, ग) ।

९. जीवंतगाणं (क); जीवंताणं (ख) ।

१०. विद्धंसइ (ख, ग); विद्धंसिज्जइ (क्व) ।

११. पंचमीए (ग) ।

बहस्सइदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

१७. से णं तम्मो अणंतरं उवट्ठिता इहेव कांसवोणं नयरीए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ताए भारियाए पुत्तत्ताए उववण्णे ॥
१८. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहस्स 'इमं एयारूवं' नाम-धेज्जं करेन्ति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्ताए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए वहस्सइदत्ते नामेणं ॥
१९. तए णं से वहस्सइदत्ते दारए पंचधाईपरिगगहिए जाव' परिवड्डइ ॥
२०. तए णं से वहस्सइत्ते दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणु-प्पत्ते होत्था । से णं उदयणस्स कुमारस्स पियवालवयस्सए यावि होत्था सहजायए सहवड्डियए सहपंसुकीलियए ॥
२१. तए णं से सयाणिए राया अण्णया कयाइ कालघम्मुणा संजुत्ते ॥
२२. तए णं से उदयणे कुमारे बहूहि राईसर'-●तलवर-माडंविय-कोडुंविय-इब्ब-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईहि सद्धि संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे सयाणियस्स रण्णो महया इड्डीसक्कारसमुदएणं नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ ॥
२३. तए णं ते बहवे राईसर'-●तलवर-माडंविय-कोडुंविय-इब्ब-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभित्तमो उदयणं कुमारं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचन्ति ॥
२४. तए णं से उदयणे कुमारे राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे' ॥
२५. तए णं से वहस्सइदत्ते दारए उदयणस्स रण्णो पुरोहियकम्मं करेमाणे सव्वट्ठाणेषु सव्वभूमियासु अंतोउरे य दिण्णवियारे जाए यावि होत्था ॥
२६. तए णं से वहस्सइदत्ते पुरोहिए उदयणस्स रण्णो अंतोउरं वेलासु य अवेलासु य कालेसु य अकालेसु य राओ य विआले य पविसमाणे अण्णया कयाइ पउमा-वईए देवीए सद्धि संपलग्गे यावि होत्था । पउमावईए देवीए सद्धि उरालाईं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥
२७. इमं च णं उदयणे राया ण्हाए जाव' विभूसिए जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहस्सइदत्तं पुरोहियं पउमावईए देवीए सद्धि उरालाईं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता आसुत्ते तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्ठु बहस्सइदत्तं पुरोहियं पुरिसेहि गिण्हावेइ', ●गिण्हावेत्ता

१. एमेयारूवं (व) ।

२. वि० १।२।४६ ।

३. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह° ।

४. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह° ।

५. पू०—ओ० सू० १४ ।

६. वि० १।२।६४ ।

७. सं० पा०—गिण्हावेइ जाव एएणं ।

अट्टि-मुट्टि-जाणु-कोप्परपहार-संभग-महियगतं करेइ, करेत्ता अवओडगबंधणं करेइ, करेत्ता ° एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥

२८. एवं खलु गोयमा ! बहस्सइदत्ते पुरोहिए पुरा पोराणाणं ° दुच्चिण्णाणं दुप्प-डिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणु-भवमाणे ° विहरइ ॥

बहस्सइदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

२९. बहस्सइदत्ते णं भंते ! पुरोहिए' इओ कालगए समाने कहिं गच्छहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! बहस्सइदत्ते णं पुरोहिए चोसट्ठि वासाइं परमाउं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिण्णे' कए समाने कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' ° उक्कोससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्ठित्ता, एवं संसारो जहा पढमे जाव' वाउ-तेउ-आउ-पुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उदाइत्ता-उदाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ ° ।

तओ हत्थिणाउरे नयरे मियत्ताए पच्चायाइस्सइ । से णं तत्थ वाउरिएहिं वहिए समाने तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए' पच्चायाहिइ । बोहि, सोहम्मे, महाविदेहे वासे सिज्झहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३०. ° एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तणं दुहविवागाणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति बेमि ° ॥

१. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।

५. वि० १।१।७० ।

२. दारए (क, ख, ग, घ) ।

६. पुमत्ताए (क) ।

३. सूलभिण्णे (घ) ।

७. सं० पा०—निक्खेवो

४. सं० पा०—पुढवीए संसारो तहेव पुढवी ।

८. ना० १।१।७ ।

छट्ठं अज्झयणं नंदिवद्धणे

उक्खेव-पवं

१. जइ णं भंते ! 'समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी ° —एवं खलु जंबू तेणं कालेणं तेणं समएणं महुरा नामं नयरी । भंडीरे उज्जाणे । सुदरिसणे' जक्खे । सिरिदामे राया । बंधुसिरी भारिया । पुत्ते नंदिवद्धणे कुमारे—अहीण'-पडि-पुण्ण-पंचिदियसरीरे ° जुवराया" ॥
३. तस्स सिरिदामस्स सुबंधू नामं अमच्चे होत्था —'साम-दंड-भेय-उवप्पयाणनीति-सुप्पउत्त-नयविहण्णू' ॥
४. तस्स णं सुबंधुस्स अमच्चस्स बहुमित्तपुत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण पंचिदियसरीरे" ॥
५. तस्स णं सिरिदामस्स रण्णो चित्ते नामं अलंकारिए' होत्था—सिरिदामस्स रण्णो चित्तं बहुविहं' अलंकारियकम्मं" करेमाणे सव्वट्ठाणेषु य सव्वभूमियासु य अंतेउरे य दिण्णवियारे यावि होत्था ॥

१. सं० पा०—छट्ठस्स उक्खेवअओ ।

२. ना० १।१।७ ।

३. सुदरसणे (ख, ग); सुदसणे (क्व) ।

४. सं० पा०—अहीण जाव जुवराया ।

५. जुगराया (क) ।

६. सामदंड (क, ख, ग, घ); पू०—ना० १।१।१६ ।

७. पू०—वि० १।२।१० ।

८. अलंकारए (क, ख, ग) ।

९. × (क) ।

१०. अलंकारियं कम्मं (क) ।

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसडे । परिसा निग्गया, राया निग्गमो जाव' परिसा पडिगया ॥

गोयमेण नंविबद्धणस्स पुब्बभवपुच्छा-पवं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव' रायमग्गमोगाडे । तहेव हत्थो, आसे, पुरिसे पासइ । तेसि च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासइ जाव' नर-नारीसंपरिवुडं ॥
८. तए णं तं पुरिसं रायपुरिसा चच्चरंसि तत्तंसि अयोमयंसि समजोइभूयंसि सीहासणंसि निवेसावेति ।
तयाणंतरं च णं पुरिसाणं मज्झगयं बहूहिं अयकलसेहिं तत्तेहिं समजोइभूएहिं, अप्पेगइया तंबभरिएहिं, अप्पेगइया तउयभरिएहिं, अप्पेगइया सीसगभरिएहिं, अप्पेगइया कलकलभरिएहिं, अप्पेगइया खारतेल्लभरिएहिं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचति ।
तयाणंतरं च तत्तं अयोमयं समजोइभूयं अयोमयं संडासगं गहाय हारं पिणद्धंति ।
तयाणंतरं च णं अद्धहारं* पिणद्धंति तिसरियं पिणद्धंति पालंबं पिणद्धंति कडिसुत्तयं पिणद्धंति पट्टं पिणद्धंति मउडं पिणद्धंति* । चित्ता तहेव जाव' वागरेइ—

नंविबद्धणस्स दुज्जोहणभव-वण्णग-पवं

९. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे सीहपुरे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे* ॥
१०. तत्थ णं सीहपुरे नयरे सीहरहे नामं राया होत्था ॥
११. तस्स णं सीहरहस्स रण्णो दुज्जोहणे नामं चारगपाले* होत्था—अहम्मिए जाव' दुप्पडियाणंदे ॥
१२. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स इमेयारूवे चारगभंडे होत्था—
१३. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बह्वे अयकुंडीओ—अप्पेगइयाओ तंबभरियाओ, अप्पेगइयाओ तउयभरियाओ, अप्पेगइयाओ सीसगभरियाओ, अप्पेगइयाओ कलकलभरियाओ, अप्पेगइयाओ खारतेल्लभरियाओ—अगणिकार्यंसि अहियाओ चिट्ठंति ॥

१. वि० १।२।११ ।

२. वि० १।२।१२-१४ ।

३. वि० १।२।१४ ।

४. सं० पा०—अद्धहारं जाव पट्टं मउडं ।

५. वि० १।२।१५, १६ ।

६. पू०—ओ० सू० १ ।

७. चारगपालए (व) ।

८. वि० १।१।४७ ।

१४. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे उट्टियाओ-- अप्पेगइयाओ आसमुत्त-
भरियाओ, अप्पेगइयाओ हत्थिमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ उट्टमुत्तभरियाओ,
अप्पेगइयाओ गोमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ महिसमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ
अयमुत्तभरियाओ, अप्पेगइयाओ एलमुत्तभरियाओ— बहुपडिपुण्णाओ चिट्ठंति ॥
१५. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे हत्थंडुयाण य पायंडुयाण य हडीण'
य नियलाण य संकलाण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता' चिट्ठंति ॥
१६. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे वेणुलयाण' य वेत्तलयाण' य चिच्चाल-
याण य छियाण य कसाण य वायरासीण' य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता
चिट्ठंति ॥
१७. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सिलाण य लउडाण' य मोगगराण य
कणंगराण' य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ॥
१८. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे तंतीण' य वरत्ताण य वागरज्जूण य
वालयमुत्तरज्जूण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ॥
१९. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे असिपत्ताण य करपत्ताण य खुरपत्ताण
य कलंबचीरपत्ताण य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ॥
२०. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे लोहखीलाण य कडसक्कराण य
चम्मपट्टाण य अलीपट्टाण' य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ॥
२१. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सूईण य डंभणाण य कोट्टिल्लाण' य
पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ॥
२२. तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे सत्थाण' य पिप्पलाण य कुहाडाण'
य नहच्छेयणाण य दब्भणाण' य पुंजा य निगरा य संनिक्खित्ता चिट्ठंति ॥
२३. तए णं से दुज्जोहणे चारगपाले सीहरहस्स रण्णो बहवे चोरे य पारदारिए य
गंठिभेए य रायावकारी य अणहारए' य बालघायए य विस्संभघायए य जूइगरे"

१. हडीण (क) ।

२. संनिक्खित्ता (क) ।

३. वेणुलयाओ (ग) ।

४. वेत्तलयाओ (ग) ।

५. पादरासीण (क) ।

६. लउलाण (वृ) ।

७. कणगराण (ख, ग, घ); काणंगराण (वृषा) ।

८. तंताण (ख) ।

९. अलाण (क); अलपडाण (ग); अल्लपल्लाण
(मुद्रित वृ); अलीण (हस्त० वृ); अली-

घटाण (हस्त० वृ) ।

१०. कोट्टिल्लाण (ख) ।

११. एकस्यां हस्तलिखितवृत्ती 'पच्छाण' इति
विद्यते ।

१२. कुठाराण (ग) ।

१३. दब्भणाण (ख); डब्भणाण (ग); दब्भ-
तिणाण (घ) ।

१४. अणहारए (क, घ) ।

१५. जूयिकरे (क); जूयगरे (ख, ग) ।

य संडपट्टे' य पुरिसेहि गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता उत्ताणए पाडेइ, लोहदंडेणं मुहं विहाडेइ, विहाडेत्ता अप्पेगइए तत्ततंबं पज्जेइ, अप्पेगइए तउयं पज्जेइ, अप्पेगइए सीसगं पज्जेइ, अप्पेगइए कलकलं पज्जेइ, अप्पेगइए खारतेल्लं पज्जेइ, अप्पेगइयाणं तेणं चेव अभिसेगं करेइ ।

अप्पेगइए उत्ताणए पाडेइ, पाडेत्ता आसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए हत्थिमुत्तं पज्जेइ',
•अप्पेगइए उट्टमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए गोमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए महिसमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए अयमुत्तं पज्जेइ, अप्पेगइए ° एलमुत्तं पज्जेइ ।

अप्पेगइए हेट्टामुहए पाडेइ छडछडस्स' वम्मावेइ, वम्मावेत्ता अप्पेगइए तेणं चेव ओवीलं दलयइ । अप्पेगइए हत्थंडुयाइ' बंधावेइ, अप्पेगइए पायंडुए बंधावेइ, अप्पेगइए हडिबंधणं करेइ, अप्पेगइए नियलबंधणं करेइ, अप्पेगइए संकोडिय-मोडियए' करेइ, अप्पेगइए संकलबंधणं करेइ, अप्पेगइए हत्थच्छिण्णए करेइ',
•अप्पेगइए पायच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए नक्कच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए उट्टच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए जिब्भच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए सीसच्छिण्णए करेइ, अप्पेगइए ° सत्थोवाडियए करेइ ।

अप्पेगइए वेणुलयाहि य', •अप्पेगइए वेत्तलयाहि य, अप्पेगइए चिंचालयाहि य, अप्पेगइए छियाहि य, अप्पेगइए कसाहि य, अप्पेगइए ° वायरासीहि य हणावेइ ।

अप्पेगइए उत्ताणए कारवेइ, कारवेत्ता उरे सिलं' दलावेइ, दलावेत्ता तओ लउडं' छुहावेइ, छुहावेत्ता पुरिसेहि उक्कंपावेइ' ।

अप्पेगइए तंतीहि य'', •अप्पेगइए वरत्ताहि य, अप्पेगइए वागरज्जूहि य, अप्पेगइए वालय' सुत्तरज्जूहि य हत्थेसु य पाएसु य बंधावेइ, अगडंसि 'ओचूलं बोलगं' पज्जेइ' ।

अप्पेगइए असिपत्तेहि य'', •अप्पेगइए करपत्तेहि य, अप्पेगइए खुरपत्तेहि य अप्पेगइए ° कलंबचीरपत्तेहि य पच्छावेइ, पच्छावेत्ता खारतेल्लेणं अम्भंगावेइ ।

१. खंडपट्टे (क, ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—पज्जेइ जाव एलमुत्तं ।

३. थलथलस्स (क, घ) ।

४. हत्थंडु° (ख); हत्थंड° (ख); हत्थियं (घ) ।

५. मोडिए (वृ) ।

६. सं० पा०—करेइ जाव सत्थोवाडियए ।

७. सं० पा०—वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि ।

८. सिर (क) ।

९. लउलं (क, घ); नउलं (ख) ।

१०. ओकंपावेइ (क) ।

११. सं० पा०—तंतीहि य जाव सुत्तरज्जूहि ।

१२. ओलंवालगं (क); उचूलंपालगं (ख);
उचूलंवालगं (ग) उचूलंपाणग (घ); ओचूल-
वालगं (ह० वृ) ।

१३. पाययति खादयतीत्यादि लौकिकीभाषा
कारयतीति तु भावार्थः (वृ) ।

१४. सं० पा०—असिपत्तेहि य जाव कलंबचीर-
पत्तेहि ।

अप्पेगइयाणं निलाडेसु य अवदूसु य कोप्परेसु य जाणूसु य खलुएसु य लोहकीलए
य कडसक्कराओ य दवावेइ^१ अलिए^२ भंजावेइ ।

अप्पेगइए सूर्इओ य डंभणाणि^३ य हत्थंगुलियासु य पायंगुलियासु य कोट्टिल्लएहि^४
आउडावेइ, आउडावेत्ता भूमि कंडूयावेइ^५ ।

अप्पेगइए सत्थेहि य^६ •अप्पेगइए पिप्पलेहि य अप्पेगइए कुहाडेहि य अप्पेगइए^७
नहच्छेयणेहि य अंगं पच्छावेइ, दब्भेहि य कुसेहि य उल्लवद्धेहि^८ य वेढावेइ,
आयवंसि दलयइ, दलइत्ता मुक्के समाणे चडचडस्स उप्पाडेइ ॥

२४. तए णं से दुज्जोहणे चारगपाले एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे
सुबहुं पावकम्मं^९ समज्जिणित्ता एगतीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे
कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमठिइएसु नेरइएसु
नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

नंदिवद्धणस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

२५. से णं तओ अप्पंतरे उव्वट्टित्ता इहेव महुराए नयरीए सिरिदामस्स रण्णे बंधु-
सिरीए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए^{१०} उववण्णे ॥

२६. तए णं बंधुसिरी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव^{११} दारगं पयाया ॥

२७. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहे इमं एयाख्वं नामधेज्जं
करंति—होउ णं अम्हं दारगे नंदिवद्धणे^{१२} नामेणं ॥

१. दलावेइ (क) ।

२. अल (क); अलए (घ) ।

३. दंभणाणि (क, घ) ।

४. कंडूयावेइ (ख, ग) ।

५. सं० पा०—सत्थेहि य जाव नहच्छेयणेहि ।

६. उल्लवज्जेहि (क); उल्लदब्भेहि (ख);
उलदज्जेहि (घ); ओल्लवद्धेहि (ङ) ।

७. पावं (क) ।

८. पुमत्ताए (क) ।

९. ओ० सू० १४३ ।

१०. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ); प्रस्तुतागमस्य
प्रथमाध्ययनस्य सप्तमे सूत्रे 'नंदी' इति
पदमस्ति । वृत्तिकृताश्च 'नंदिवद्धनं' इति नाम
सूचितम्—'नंदी' ति सूत्रत्वादेव नंदिवद्धनो
राजकुमारः (वृ) । प्रस्तुताध्ययनस्य द्वितीये

सूत्रे 'पुत्ते नंदिवद्धणे कुमारै' इति पाठोस्ति ।
अध्ययनपरिसमाप्ती च वृत्तिकृता पुनरस्यैव
नाम्नः उल्लेखः कृतोस्ति—षष्ठाध्ययनविवरणं
नंदिवद्धनस्याधिकारो हि समाप्तः (वृ) ।
किंतु अस्याध्ययनस्य सप्तविंशतितमसूत्रादारभ्य
मूलपाठे सर्वत्र 'नंदिसेण' नाम्नः उल्लेखोस्ति ।
स्थानाङ्गसूत्रे (१०।१।१) 'नंदिसेण' नाम्नः
उल्लेखोस्ति । द्वयोरप्यावयवोक्तिकारः
अभयदेवसूरिरस्ति । वृत्तिकारस्याभिमतैन
प्रस्तुतसूत्रे 'नंदिवद्धनः' इति नाम्नास्ति—
'नंदिसेणे य' ति मथुरायां श्रीदामराजसुतो
नंदिसेणो युवराजो विपाकश्रुते च नंदिवद्धनः
श्रूयते (स्थानाङ्गवृत्ति) स्थानाङ्गप्रसिद्धस्य
'नंदिसेण' नाम्नः प्रस्तुतसूत्रे समावेशो जातः ।
अतएव नाम्नोर्मिश्रणमत्र परिलक्ष्यते ।

२८. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे पंचघाईपरिवुडे जाव' परिवड्डइ ॥
२९. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे उम्मुक्कबालभावे' *विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वण-गमणुप्पत्ते° विहरइ जाव जुवराया जाए यावि होत्था ॥
३०. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे रज्जे य जाव' अंतरे य मुच्छिण गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ सिरिदामं रायं जीवियाओ ववरोवेत्ता सयमेव रज्जसिरि कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ॥
३१. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे सिरिदामस्स रण्णो बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे विहरइ ॥
३२. तए णं से नंदिवद्धणे' कुमारे सिरिदामस्स रण्णो अंतरं अलभमाणे अण्णया कयाइ चित्तं अलंकारियं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी —तुमं णं देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रण्णो सब्बट्ठाणेसु य सब्बभूमियासु य अंतरे य दिण्णवियारे सिरिदामस्स रण्णो अभिक्खणं-अभिक्खणं अलंकारियं कम्मं करेमाणे विहरसि, तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! सिरिदामस्स रण्णो अलंकारियं कम्मं करेमाणे गीवाए खुरं निवेसेहि । तो' णं अहं तुमं अद्धरज्जियं करिस्सामि । तुमं अम्हेहिं सद्धि उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्ससि ॥
३३. तए णं से चित्ते अलंकारिए नंदिवद्धणस्स'कुमारस्स वयणं एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥
३४. तए णं तस्स चित्तस्स अलंकारियस्स इमेयारूवे" *अज्झत्थिए चितिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था जइ णं मम सिरिदामे राया एयमट्ठं आगमेइ, तए णं मम न नज्जइ केणइ असुभेणं कु-मारेणं मारिस्सइ त्ति कट्ठु भीए तत्थे तसिए उव्विगे संजायभए जेणेव सिरिदामे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरिदामं रायं रहस्सियगं करयल"°परिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु° एवं वयासी—एवं खलु सामी ! नंदिवद्धणे" कुमारे रज्जे य जाव" अंतरे मुच्छिण गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे इच्छइ तुब्भे जीवियाओ ववरोवित्ता सयमेव रज्जसिरि कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ॥
३५. तए णं से सिरिदामे राया चित्तस्स अलंकारियस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म

१. नंदितेणे (क, ख, ग, घ) ।

२. वि० १।२।४६ ।

३. नंदितेणे (क, ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावे जाव विहरइ ।

५. नंदितेणे (क, ख, ग, घ) ।

६. वि० १।१।५७ ।

७,८. नंदितेणे (क, ख, ग, घ) ।

९. ता (ख, घ); तं (ग) ।

१०. नंदितेणस्स (क, ख, ग घ) ।

११. सं० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

१२. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

१३. नंदितेणे (क, ख, ग, घ) ।

१४. वि० १।१।५७ ।

आसुरत्ते' *रुद्धे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे तिर्वलिं मिउडिं निडाले °
साहट्टु नंदिवद्धणं' कुमारं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावेत्ता एएणं विहाणेणं
वज्झं आणवेइ ॥

३६. तं एवं खलु गोयमा ! नंदिवद्धणे' कुमारे' *पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्प-
डिकंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभव-
माणे ° विहरइ ॥

नंदिवद्धणस्स आगामिभव-वज्जग-पवं

३७. नंदिवद्धणे' कुमारे इओ चुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं
उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! नंदिवद्धणे' कुमारे सट्ठि वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं
किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइय-
त्ताए उववज्जिहिइ । संसारो तहेव* । तओ हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए
उववज्जिहिइ ।

से णं तत्थ मच्छिंएहिं वहिए समाणे तत्थेव सेट्ठिकुले पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ ।
बोहि, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परि-
निव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिइ ॥

निक्खेव-पवं

३८. *एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं
छट्टस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ° ॥

१. सं० पा०—आसुरत्ते जाव साहट्टु ।

२. नंदिसेणं (क, ख, ग, घ) ।

३. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।

४. पुत्ते (क); सं० पा०—कुमारे जाव विहरइ ।

५, ६. नंदिसेणे (क, ख, ग, घ) ।

७. पू०—वि० १।१।६६ ।

८. सं० पा०—निक्खेवो ।

९. ना० १।१।७ ।

सत्तमं अज्भयणं

उंबरदत्ते

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते^१ ! •समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^२ संपत्तेणं दुहविवागाणं छट्टस्स अज्भयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! अज्भयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी^३—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पाडलिसंडे नयरे । ‘वणसंडे उज्जाणे’^४ । ‘उंबरदत्ते जक्खे’^५ ॥
३. तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सिद्धत्थे राया ॥
४. तत्थ णं पाडलिसंडे नयरे सागरदत्ते सत्थवाहे होत्था—अड्ढे । गंगदत्ता भारिया ॥
५. तस्स णं सागरदत्तस्स पुत्ते गंगदत्ताए भारियाए अत्तए उंबरदत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरोरे^६ ॥
६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समोसरणं जाव^७ परिसा पडिगया ॥

गोयमेण उंबरदत्तस्स पुब्बभवपुच्छा-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे तहेव^८ जेणेव पाडलिसंडे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुप्प-

१. सं० पा०—सत्तमस्स उक्खेवओ ।

२. ना० १।१।७ ।

३. वणसंडं उज्जाणं (क, ख, ग) ।

४. उंबरदत्तो जक्खो (क) ।

५. पू०—ओ० सू० १४३ ।

६. बि०—१।२।११ ।

७. पू०—बि० १।२।१२-१४ ।

विसइ, अणुप्पविसित्ता तत्थ णं पासइ एगं पुरिसं—कच्छुल्लं कोढियं दाओयरियं^१ भगंदलियं^२ अरिसिल्लं कासिल्लं सासिल्लं सोगिलं 'सूयमुहं सूयहत्थं'^३ सूयपायं सडियहत्थंगुलियं सडियपायंगुलियं सडियकण्णनासियं^४ रसियाए य पूएण य थिविथिवितं^५ वणमुहकिमिउत्तुयंत-पगलंतपूयरुहिरं लालापगलंतकण्णनासं अभिक्खणं-अभिक्खणं पूयकवले य रुहिरकवले य किमियकवले य वममाणं कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं कूवमाणं^६ मच्छियाचडगरपहकरेणं अण्णिज्जमाणमगं फुट्टहडाहडसीसं^७ दडिखंडवसणं खंडमल्लखंडघडहत्थगयं गेहे-गेहे देहंबलियाए विवित्तिं कप्पेमाणं पासइ । तया भगवं गोयमे ! उच्च-नीय-^८मज्झिम-कुलाइं अडमाणे^९ अहापज्जत्तं समुदाणं गिण्हइ पाडलिसंडाओ नयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं आलोएइ, भत्तपाणं पडिदंसेइ, समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भ-णुण्णाए^{१०} समाणं अमुच्छिए अगिद्धे अगडिहिए अणज्झोववण्णे^{११} बिलमिव पण्णगभूते^{१२} अप्पाणेणं आहारमाहारइ, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

८. तए णं से भगवं गोयमे दोच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोर्सिीए सज्झायं करेइ जाव" पाडलिसंडं नयरं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविसइ, तं चेव पुरिसं पासइ—कच्छुल्लं तहेव जाव" संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

९. तए णं से भगवं गोयमे तच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि तहेव जाव" पाडलिसंडं नयरं पच्चत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविसमाणे तं चेव पुरिसं पासइ—कच्छुल्लं" ॥

१०. ^{१३}तए णं से भगवं गोयमे चउत्थं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि तहेव जाव"पाडलिसंडं नयरं उत्तरेणं दुवारेणं अणुपविसमाणे तं चेव पुरिसं पासइ - कच्छुल्लं" ॥

- | | |
|---|--|
| १. उदरियं (वृ), मुद्रितवृत्ती दोउयरियं; दोउरियं (क्व) । | ६. सं० पा०—अब्भणुण्णाए जाव बिलमिव । |
| २. भगंदरिय (ग, घ) । | १०. °भूतेणं (क्व) । |
| ३. सुयमुहं सुयहत्थं (घ) । | ११. वि० १।२।१३, १४ । |
| ४. °नासेयं (क) । | १२. वि० १।७।७ । |
| ५. थिविथिवितं (क) । | १३. वि० १।७।८ । |
| ६. कूवमाणं (ह० वृ) । | १४. पू०—वि० १।७।७ । |
| ७. फुट्ट० (क) । | १५. सं० पा०—चउत्थं छट्ठ उत्तरेणं इमेयारूवे । |
| ८. सं० पा०—नीय जाव अडइ । | १६. वि० १।७।८ । |
| | १७. पू०—वि० १।७।७ । |

११. तए णं भगवओ गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता ° इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं ° दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्ति-विसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ । न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा । पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे निरयपडिक्खियं वेयणं वेएइ त्ति कट्ठु जाव' समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ° एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते ! छट्ठक्खमणपारणगंसि जाव' रियंते जेणेव पाडलिसंडे नयरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता पाडलिसंडं नयरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविट्ठे । तत्थ णं एगं पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव' देहंबलियाए वित्ति कप्पेमाणं । 'तए णं'⁴ अहं दोच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि दाहिणिल्लेणं दुवारेणं तहेव । तच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि पच्चत्थिमिल्लेणं दुवारेणं तहेव । तए णं अहं चोत्थ-छट्ठक्खमणपारणगंसि उत्तरदुवारेणं अणुप्पविसामि, तं चेव पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव देहंबलियाए वित्ति कप्पेमाण' । चित्ता ममं ॥
१२. °से णं भंते ! पुरिसे पुब्बभवे के आसि ? किं नामए वा किं गोत्ते वा ? कयरंसि गामसि वा नयरंसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, केसि वा पुरा पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ ?

उंवरहत्तस्स घण्णंतरीभव-वण्णग-पदं

१३. गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी °—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे विजयपुरे नामं नयरे होत्था— रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥
१४. तत्थ णं विजयपुरे नयरे कणगरहे नामं राया होत्था ॥
१५. तस्स णं कणगरहस्स रण्णो घण्णंतरी नामं वेज्जे होत्था—अट्ठंगाउव्वेयपाढए [तं जहा—१. कुमारभिच्चं २. सालागे ३. सल्लहत्ते ४. कायतिगिच्छा ५. जंगोले ६. भूयविज्जे ७. रसायणे ८. वाजीकरणे]⁵ सिवहत्थे सुहहत्थे लहुहत्थे ॥
१६. तए णं से घण्णंतरी वेज्जे विजयपुरे नयरे कणगरहस्स रण्णो अंतउरे य, अण्णेसि च बहूणं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाणं, अण्णेसि च बहूणं दुब्बलाण य गिलाणाण य वाहियाण य रोगियाण य सणाहाण

१. सं० पा०—पोराणाणं जाव एवं ।

२. वि० १।२।१५ ।

३. वि० १।२।१३, १४ ।

४. वि० १।७।७ ।

५. तं (क, घ) ।

६. कप्पेमाणे विहरइ (क, ख, ग, घ) ।

७. सं० पा०—पुब्बभवपुच्छा बागरेइ ।

८. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यातः प्रतीयते ।

य अणाहाण य समणाण य माहणाण य भिक्खुणाण^१ य करोडियाण य कप्पडि-
याण य आउराण य—अप्पेगइयाणं मच्छमंसाइं उवदिसइं, अप्पेगइयाणं कच्छभ-
मंसाइं, अप्पेगइयाणं गाहमंसाइं, अप्पेगइयाणं मगरमंसाइं, अप्पेगइयाणं
सुं सुमारमंसाइं, अप्पेगइयाणं अयमंसाइं, एवं—एलय^२-रोज्झ-सूयर-मिग-ससय-गो-
महिसमंसाइं उवदिसइ, अप्पेगइयाणं तित्तिरमंसाइं उवदिसइ, अप्पेगइयाणं
वट्टक-लावक-कवोय-कुक्कुड-मयूरमंसाइं उवदिसइ, अण्णेसि च बहूणं जलयर-थल-
यर-खहयरमाईणं मंसाइं उवदिसइ । अप्पणा वि णं से धण्णंतरी वेज्जे तेहिं बहूहिं
मच्छमंसेहि य जाव मयूरमंसेहि य, अण्णेहि य बहूहिं जलयर-थलयर-खहयर-
मंसेहि य, मच्छरसएहि य जाव मयूररसएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य
भज्जिएहि य सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे
वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ ॥

१७. तए णं से धण्णंतरी वेज्जे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं
पावं कम्मं समज्जिणित्ता वत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं
किच्चा छट्ठीए पुढवीए उवकोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए
उववण्णे ॥

उंबरदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

१८. तए णं सा गंगदत्ता भारिया जायनिंदुया यावि होत्था—जाया-जाया दारगा
विणिघायमावज्जंति ॥
१९. तए णं तीसे गंगदत्ताए सत्थवाहीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि
कुंडुबजागरियं जागरमाणीए अयं अज्झत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए
संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं सिद्धिं बहूइं वासाइं उरा-
लाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा
दारियं वा पयामि । तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ णं ताओ अम्म-
याओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयल-
क्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं
तासि अम्मयाणं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जांसि मण्णे नियगकुच्छिसंभूयगाइं
थणदुद्धलुद्धयाइं महुरसमुल्लावगाइं मम्मणपजंपियाइं थणमूला^४ कक्खदेसभागं
अभिसरमाणयाइं^५ मुद्धयाइं पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हऊण
उच्छंगे निवेसियाइं देति समुल्लावए सुमहुरे पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए ।

१. भिक्खुयाण (क, ल); भिक्खुणाण (ग);

भिक्खावरे (घ) ।

२. उवदंसेइ (घ) ।

३. एसा (क, घ); वि० १।४।१६ सूत्रे कतिचन

पदानि अधिकानि ह्यन्ते ।

४. थणमूल (क, ल, घ) ।

५. अतिसर० (क, ल, ग, घ) ।

अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा एत्तो एगतरमवि न पत्ता । तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छित्ता सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं सद्धि पाडलिसंडाओ नयराओ पडिनिक्खमित्ता बहिया जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छित्ता, तत्थ णं उंबरदत्तस्स जक्खस्स महारिहं पुप्फच्चणं करेत्ता जाणुपायपडियाए ओयाइत्तए'—जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारियं वा पयामि, तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवद्धि-स्सामि त्ति कट्ठु ओवाइयं ओवाइणित्तए—एवं संपेहेइ, सपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धि बहूइं वासाइं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी जाव एत्तो एगमवि न पत्ता । तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया जाव ओवाइणित्तए ॥

२०. तए णं से सागरदत्तं सत्थवाहे गंगदत्तं भारियं एवं वयासी—ममं पि णं देवाणु-प्पिए ! एस चेव मणोरहे कहं णं तुमं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जासि ? गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणइ ॥

२१. तए णं सा गंगदत्ता भारिया सागरदत्तसत्थवाहेणं एयमट्ठं अब्भणुण्णाया समाणी सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं सद्धि सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पाडलिसंडं नयरं मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं ठवेइ, ठवेत्ता पुक्खरिणि ओगाहेइ, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलकिहुं करेइ, करेत्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता उल्लपडसाडिया पुक्खरिणीओ' पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता तं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकार गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उंबरदत्तस्स जक्खस्स आलोए पणामं करेइ, करेत्ता लोमहत्थयं परामुसइ, परामुसित्ता उंबरदत्तं जक्खं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता पम्हल'-●सुकुमाल-गंधकासाइयाए °

१. ना० १।१।२४ ।

२. उव्वाएत्तए (ग); ओवायइत्तए (क्व) ।

३. पोक्खरिणी (क); पुक्खरणी (ग) ।

४. पुक्खरिणि (क, ग); पुक्खरणीए (ख) ।

५. सं० पा०—पम्हल ° ।

गायलट्टी ओलूहइ, ओलूहिता सेयाइं वत्थाइं परिहेइ, परिहेत्ता महरिहं पुष्फा-
रुहणं मल्लारुहणं गंधारुहणं चुण्णारुहणं करेइ, करेत्ता धूवं डहइ, डहिता
जण्णुपायवडिया एवं वयइ—जइ णं अहं देवानुप्पिया ! दारगं वा दारियं वा
पयामि, तो णं^१ *अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवडि-
स्सामि त्ति कट्ठु ओवाइयं^२ ओवाइणइ, ओवाइणित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया
तामेव दिसं पडिगया ॥

२२. तए णं से घण्णंतरी वेज्जे तओ नरयाओ अणंतरे उव्वट्ठित्ता इहेव जंबुद्वीवे दीवे
पाडलिसंडे नयरे गंगदत्ताए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

२३. तए णं तीसे गंगदत्ताए भारियाए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे
दोहले पाउब्भूए—घण्णाओ णं ताओ^३ *अम्मयाओ, संपुण्णाओ णं ताओ
अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ,
कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ,
सुलद्धे णं तासिं अम्मयाणं माणुस्सए जम्मजीवियं^४ फले, जाओ णं विउल
असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता बहूहि मित्तं^५—*नाइ-
नियग-सयण-संबधि-परियणमहिलाहिं सद्धिं^६ परिवुडाओ तं विउलं असणं
पाणं खाइमं साइमं सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च पुष्फं^७—*वत्थ
गंध-मल्लालंकारं^८ गहाय पाडलिसंडं नयरं मज्झमज्झेणं पडिनिक्खमंति,
पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीं
ओगाहेति, ओगाहेत्ता ण्हायाओ^९ *कयबलिकम्माओ कयकोउय-मंगलं^{१०}—
पायच्छित्ताओ तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं बहूहि मित्तं^{११}—*नाइ-नियग-
सयण-संबधि-परियणमहिलाहिं^{१२} सद्धिं आसाएति वीसाएति परिभाएति
परिभुंजंति, दोहलं विणेंति—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए
जाव^{१३} उट्ठियम्मि सूरं सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव सागरदत्ते
सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—
घण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव दोहलं विणेंति, तं इच्छामि णं देवानुप्पिया !
तुब्भेहिं अम्भणुण्णाया जाव दोहलं विणित्तए ॥

२४. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणइ ॥

२५. तए णं सा गंगदत्ता सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं अम्भणुण्णाया समानी विउलं

१. सं० पा०—तो णं जाव ओयाइणइ ।

२. सं० पा०—ताओ जाव फले ।

३. सं० पा०—मित्तं जाव परिवुडाओ ।

४. सं० पा०—पुष्फं जाव गहाय ।

५. सं० पा०—ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ ।

६. सं० पा०—मित्तं जाव सद्धिं ।

७. ना० १।१।२४ ।

असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता तं विउलं असणं पाणं
खाइमं साइमं सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसणं च सुबहुं पुप्फ-
वत्थ-गंध-मल्लालंकारं परिगेण्हावेइ, परिगेण्हावेत्ता बहूहिं^१ *मित्त-नाइ-
नियग-संयण-संबंधि-परियणमहिलाहिं सद्धिं^२ ° ण्हाया कयबलिकम्मा
कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता^३ जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव
उवागच्छइ जाव^४ धूवं डहेइ, डहेत्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ ॥

२६. तए णं ताम्भो मित्त^५ -नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण^६ महिलाभो गंगदत्तं
सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसियं करंति ॥

२७. तए णं सा गंगदत्ता भारिया ताहिं मित्त^७ -नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-
महिलाहिं, ° अण्णाहिं य बहूहिं नगरमहिलाहिं सद्धिं तं विउलं असणं पाणं
खाइमं साइमं सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणी
वीसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी दोहलं विणेइ, विणेत्ता जामेव दिसं
पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

२८. तए णं सा गंगदत्ता सत्थवाही संपुण्णदोहला^८ तं गम्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ॥

२९. तए णं सा गंगदत्ता भारिया नवण्हं मासाणं^९ ° बहुपडिपुण्णाणं दारगं °
पयाया । ठिइवडिया जाव^{१०} जम्हा णं अम्हं इमे दारए उंबरदत्तस्स जक्खस्स
ओवाइयलद्धए तं होउ णं दारए उंबरदत्ते नामेणं ॥

३०. तए णं से उंबरदत्ते पंचधाईपरिगहिए परिवड्डए ॥

३१. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे^{११} ° अण्णया कयाइ गणिमं च धरिमं च मेज्जं च
पारिच्छेज्जं च—चउव्विहं भंडं गहाय लवणसमुदं पोयवहणेण उवागए ॥

३२. तए णं से सागरदत्ते तत्थ लवणसमुदं पोयविदत्तोए निब्बुडुभंडसारे अत्ताणे
असरणे कालधम्मणा संजुत्ते^{१२} ° ॥

३३. ° तए णं सा गंगदत्ता सत्थवाही अण्णया कयाइ लवणसमुदोत्तरणं च
सत्थविणासं च पोयविणासं च पइमरणं च अणुचितेमाणी-अणुचितेमाणी
कालधम्मणा संजुत्ता ॥ °

१. सं० पा०—बहूहिं जाव ण्हाया ।

२, ३. पू०—वि० १।७।२१ ।

४. वि० १।७।२१ ।

५. सं० पा०—मित्त जाव महिलाभो ।

६. सं० पा०—मित्त ° ।

७. पू०—वि० १।२।३०; पसत्थदोहला ५ १२. सं० पा०—गंगदत्ता वि ।

(क, ख, ग, घ) ।

८. सं० पा०—मासाणं जाव पयाया ।

९. वि० १।३।३१, ३२ ।

१०. सं० पा०—जहा विजयमित्ते जाव कालमासे
कालं किच्चा ।

११. पू०—वि० १।२।५३, ५४ ।

३४. "तए णं ते नगरगुत्तिया गंगदत्तं सत्थवाहिं कालगयं जाणित्ता उंबरदत्तं दारणं साम्भो गिहाम्भो निच्छुभेति, निच्छुभेत्ता तं गिहं अण्णस्स दलयंति ॥
३५. तए णं तस्स उंबरदत्तस्स दारणस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया, [तं जहा—सासे कासे जाव^१ कोढे]" ॥
३६. तए णं से उंबरदत्तं दारणं सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाने 'कच्छुल्ले जाव^२ देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणं विहरइ'" ॥
३७. एवं खलु गोयमा ! उंबरदत्ते दारणं पुरा पोरणाणं^३ •दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फन्नवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे •विहरइ ॥

उंबरदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

३८. 'उंबरदत्ते णं भंते ! दारणं' कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
- गोयमा ! उंबरदत्ते दारणं वावत्तरिं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ^४ । संसारो तहेव^५ ।
- तम्भो हत्थिणाउरे नयरे कुक्कुडत्ताए पच्चायाहिइ । 'से णं गोट्टिल्लएहि वहिए'^६ तत्थेव हत्थिणाउरे नयरे सेट्टिकुलंसि उववज्जिहिइ । बोही । सोहम्मे कप्पे । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३९. "एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^७ संपत्तेणं दुहविवागाणं सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि • ॥

१. सं० पा०—उंबरदत्ते निच्छूढे जहा दारणं (घ); प्राक्तनाध्ययनक्रमेणायं पाठो गृहीतः ।
२. वि० १।१।५२ । ८. उववण्णे (क, ख, ग, घ) । भाविप्रश्नप्रसङ्ग-त्वेन असौ पाठः असङ्गतः प्रतिभाति ।
३. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्याशः प्रतीयते । ९. तहेव जाव पुढवी (ख, ग, घ); पू०—वि० १।१।७० ।
४. वि० १।७।७ । ५. सडियहत्थं जाव विहरइ (क, ख, ग, घ) । १०. जायमत्ते चेव गोट्टिवहिए (घ) ।
६. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ । ११. सं० पा०—निक्खेवो ।
७. तए णं उंबरदत्ते दारणं (क, ख); से णं १२. ना० १।१।७ ।

अट्टमं अज्झयणं सोरियदत्ते

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! 'समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्टमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी०—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सोरियपुरं नयरं । सोरियवडेंसगं उज्जाणं । सोरिओ जक्खो । सोरियदत्ते राया ॥
३. तस्स णं सोरियपुरस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं एगे मच्छंधपाडए' होत्था ॥
४. तत्थ णं समुद्दत्ते नामं मच्छंधे परिवसइ—अहम्मिए जाव' दुप्पडियाणंदे ॥
५. तस्स णं समुद्दत्तस्स समुद्दत्ता नामं भारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरे' ॥
६. तस्स णं समुद्दत्तस्स मच्छंधस्स पुत्ते समुद्दत्ताए भारियाए अत्तए सोरियदत्ते नामं दारए होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरे' ॥
७. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसठे जाव' परिता पडिगया ॥

१. सं० पा०—अट्टमस्स उक्खेवओ ।

५. पू०—ओ० सू० १५ ।

२. ना० १।१।७ ।

६. पू०—वि० १।२।१० ।

३. मच्छंधे पाडए (ख); मच्छववपाडए (घ) ।

७. वि० १।४।११ ।

४. वि० १।१।४७ ।

सोरियदत्तस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे सीसे जाव' सोरिय-पुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं [अडमाणे ?] अहापज्जत्तं समुदाणं गहाय सोरियपुराओ नयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तस्स मच्छंध-पाडगस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे महइमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झयणं पासइ एणं पुरिसं—सुक्कं भुक्खं निम्मंसं अट्ठिचम्मावणद्धं किडिकिडियाभूयं नीलसाडगनियत्थं मच्छकंटएणं गलए अणुलगेणं कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं उक्कूवमाणं' अभिक्खणं-अभिक्खणं पूयकवले य रुहरकवले य किमियकवले' य वममाणं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमे पुरिसे पुरा पोराणाणं' दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे० विहरइ—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ । पुव्वभवपुच्छा जाव' वागरणं ॥

सोरियदत्तस्स सिरीयभव-वण्णग-पदं

९. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे नंदिपुरे नामं नयरे होत्था । मित्ते राया ॥
 १०. तस्स णं मित्तस्स रण्णो सिरीए नामं महाणसिए होत्था—अहम्मिए जाव' दुप्पडियाणंदे ॥
 ११. तस्स णं सिरीयस्स महाणसियस्स बह्वे मच्छिया य वागुरिया य साउणिया' य दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्लाकल्लि' बह्वे सण्हमच्छा य जाव' पडागाइपडागे य, अए य जाव' महिसे य, तित्तिरे य जाव' मयूरे य जीवियाओ ववरोवेति, ववरोवेत्ता सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति, अण्णे य से बह्वे तित्तिरा य जाव मयूरा य पंजरंसि संनिरुद्धा चिट्ठंति, अण्णे य बह्वे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा ते बह्वे तित्तिरे य जाव मयूरे य जीवंतए' चेव 'निप्पक्खेंति, निप्प-क्खेत्ता' सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति ॥

१. वि० १।२।१२-१४ ।

२. कूवमाणं (ब) ।

३. किमिकवले (ख) ।

४. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।

५. वि० १।२।१५, १६ ।

६. वि० १।१।४७ ।

७. सोरिया (ख) ।

८. कल्लं कल्लं (क, ग) ।

९. पण्ण० पद १ ।

१०. वि० १।७।१६ ।

११. वि० १।७।१६ ।

१२. जीवियए (ख) ।

१३. निप्पेक्खति २ (क); निप्पेक्खेइ २ (घ) ।

१२. तए णं से सिरोए महाणसिए बहूणं जलयर-थलयर-खहयराणं मंसाइं कप्पणी-कप्पियाइं करेइ, तं जहा—सण्हखंडियाणि य 'वट्टखंडियाणि य दीहखंडियाणि' य रहस्सखंडियाणि य, हिमपक्काणि य जम्मपक्काणि य घम्मपक्काणि' य मारुयपक्काणि य कालाणि य हेरंगाणि' य महिट्ठाणि य आमलरसियाणि य मुद्दियारसियाणि य कविट्ठरसियाणि य दालिमरसियाणि य मच्छरसियाणि य तलियाणि य भज्जियाणि य सोल्लियाणि य 'उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता' अण्णे य बहवे मच्छरसए य एणेज्जरसए य तित्तिररसए य जाव' मयूररसए य, अण्णं च विउलं हरियसागं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्तस्स रण्णे भोयणमंडवंसि भोयणवेलाए उवणेति । अप्पणा वि णं से सिरीए महाणसिए तेसिं च बहूहिं जलयर-थलयर-खहयरमंसेहिं च रसिएहिं य हरियसागेहिं य सोल्लेहिं य तलिएहिं य भज्जिएहिं य सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे दोसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥
१३. तए णं से सिरीए महाणसिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं* पावं कम्मं कलिकलुसं* समज्जिणित्ता तेत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उववण्णे ॥

सोरियदत्तस्स वत्तमाणभव-वण्णग-पवं

१४. तए णं सा समुद्दत्ता भारिया निदू यावि होत्था—जाया-जाया दारगा विणि-घायमावज्जंति । जहा गंगदत्ताए चित्ता, आपुच्छणा, ओवाइयं, दोहलो जाव' दारगं पयाया जाव' जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोरियस्स जक्खस्स ओवाइय-लद्धए, तम्हा णं होउ अम्हं दारए सोरियदत्ते नामेणं ॥
१५. तए णं से सोरियदत्ते दारए पंचघाईपरिगहिए जाव' उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते यावि होत्था ॥
१६. तए णं से समुद्दत्ते अण्णया कयाइ कालघम्मुणा संजुत्ते ॥
१७. तए णं से सोरियदत्ते दारए बहूहिं मित्त'—नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं सद्धिं संपरिवुडे* रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे समुद्दत्तस्स नीहरणं करेइ, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ, अण्णया कयाइ सयमेव मच्छंघमह-त्तरगतं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

१. दीहखंडियाण वट्टखंडियाण (क) ।

२. येमपक्काणि(क, ख, ह० वृ); येवपक्काणि (ग);

घमपक्काणी(घ, ह० वृ); वेगपक्काणि (मु० वृ) ।

३. हराणि (घ) ।

४. उवक्खडावेत्ता (क, घ) ।

५. वि० १।७।१६ ।

६. सं० पा०—सुबहुं जाव समज्जिणित्ता ।

७. ओवालिय (क) ।

८. वि० १।७।१६-२६ ।

९. वि० १।७।२६ ।

१०. वि० १।३।३३, ३४ ।

११. सं० पा०—मित्त' ।

१८. तए णं से सोरियदत्ते दारए मच्छंधे जाए अहम्मिए जाव' दुप्पडियाणंदे ।
१९. तए णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा कल्लाकल्लि' एगट्टियाहिं जउणं महाणइं ओगाहेति, ओगाहेत्ता बहूहि दहगलणेहि य दहमलणेहि य दहमदणेहि य दहमहणेहि य दहवहणेहि य दहपवहणेहि य मच्छंधुलेहि य' 'पयंचुलेहि य' 'पंचपुलेहि य जंभाहि य' 'तिसराहि य भिसराहि य' 'घिसराहि य विसराहि य हिल्लिरीहि य 'भिल्लिरीहि य गिल्लिरीहि य' 'भिल्लिरीहि य जालेहि य गलेहि य कूडपासेहि य 'वक्कबंधेहि य सुत्तबंधेहि य' 'बालबंधेहि य बहवे सण्हमच्छे जाव' पडागाइपडागे य गेण्हति एगट्टियाओ' 'भरेंति, भरेत्ता कूलं गाहेति, गाहेत्ता मच्छखलए' 'करेंति, करेत्ता आयवंसि दलयंति । अण्णे य से बहवे पुरिसा दिण्णभइ-भत्त-वेयणा आयव-त्तएहिं मच्छेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य रायमगंसि वित्ति कप्पेमाणा विहरंति । अप्पणा वि णं से सोरियदत्ते बहूहि सण्हमच्छेहि य जाव पडागाइपडागेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य मुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणे वीसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥
२०. तए णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स' अण्णया कयाइ ते मच्छे सोल्ले य तलिए य भज्जिए य आहारेमाणस्स मच्छकंटए गले लगे यावि होत्था ॥
२१. तए णं से सोरियदत्ते मच्छंधे महयाए वेयणाए अभिभूए समाणे कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सोरियपुरे नयरे सिघाडग'—'तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह' पहेसु य महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वयह—एव खलु देवाणुप्पिया ! सोरियदत्तस्स मच्छकंटए गले लगे । तं जो णं इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा सोरियदत्तस्स मच्छियस्स

१. वि० १।१।४७ ।

२. कल्लं कल्लं (घ) ।

३. × (क, ख, ग) ।

४. पयंचुलेहि य (ख); × (ग) ।

५. पंचपुलेहि य बम्भारिएहि य (क); पंचपुलेहि

य जम्भाहि य (ख); पंचल्लेहि य बम्भाहि

य (ग); प्रपंचपुलादयः मत्स्यबंधनविशेषाः

(मु० ४); प्रपंचुलादयः (ह० ४);

बंधुलादयः (ह० ४) ।

६. तिसिराहि य भिसिराहि य (ग) ।

७. × (क, ख, घ) ।

८. णक्खबंधेहि य (ग); णक्खबंधेहि य वक्कबंधेहि य बालबंधेहि य (घ) ।

९. पण्ण० पद० १ ।

१०. एगट्टियं (क, ख, ग) ।

११. मच्छक्खलए (क, ख) ।

१२. मच्छंधियस्स (क, ख, ग, घ) ।

१३. सं० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

- मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए, तस्स णं सोरियदत्ते विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ ॥
२२. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव' उग्घोसंति ॥
२३. तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य इमं एयारूवं उग्घोसणं' निसामेंति, निसामेत्ता जेणेव सोरिय-
दत्तस्स गेहे जेणेव सोरियदत्ते मच्छंधे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता बहूहि
उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य बुद्धीहि परि-
णामेमाणा-परिणामेमाणा वमणेहि य छड्डणेहि य ओवीलणेहि य कवलग्गाहेहि य
सल्लुद्धरणेहि य विसल्लकरणेहि य इच्छंति सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स मच्छकंटयं
गलाओ नीहरित्तए, नो संचाएंति नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा ॥
२४. तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य
तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स मच्छकंटयं गलाओ
नीहरित्तए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं
पडिगया' ।
२५. तए णं से सोरियदत्ते मच्छंधे वेज्जपडियाइक्खिए परियारगपरिचत्ते निव्वि-
ण्णोसहभेसज्जे तेणं दुक्खेणं अभिभूए समाने सुक्के भुक्खे जाव' किमियकवले य
वममाणे विहरइ ॥
२६. एवं खलु गोयमा ! सोरियदत्ते पुरा पोराणाणं' दुच्चिण्णाणं दुप्पडिककंताणं
असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणे'
विहरइ ॥

सोरियदत्तस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

२७. सोरियदत्ते णं भंते ! मच्छंधे इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ?
कहिं उववज्जिहिइ ?
- गोयमा ! सत्तरि वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे
रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ । संसारो तहेव' ।
हत्थिणाउरे नयरे मच्छत्ताए उववज्जिहिइ' । से णं तओ मच्छिएहिं जीवियाओ

१. वि० १।८।२१ ।

२. उग्घोसणं उग्घोसेज्जतं (ख, घ) ।

३. मच्छंधे (क, ख, ग, घ) ।

४. परिगया (क) ।

५. वि० १।८।८ ।

६. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।

७. वि० १।१।७० । तहेव जाव पुढवी (क) ।

८. उववण्णे (क, ख, ग, घ) । भाविप्रह्न-
प्रसंगत्वेन असौ पाठः असंग्रति; प्रतिभाति ।

ववरोविए तत्थेव सेट्टिकुलंसि उववज्जिहिइ । बोही । सोहम्मे कप्पे । महाविदेहे
वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२८. 'एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं
अट्टमस्स अञ्जयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति बेमि ० ॥

—————

नवमं अज्झयणं

देवदत्ता

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते । 'समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं अट्टमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी०—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रोहीडए' नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे । पुढवीवडेंसए उज्जाणे । धरणो जक्खो । वेसमणदत्ते' राया । सिरी देवी । पूसनंदी कुमारे जुवराया ॥
३. तत्थ णं रोहीडए नयरे दत्ते नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे । कण्हसिरी भारिया ॥
४. तस्स णं दत्तस्स धूया कण्हसिरीए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा' ॥
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव' परिसा पडिगया ॥

देवदत्ताए पुब्बभवपुज्झा-पदं

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवन्तो महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी छट्ठ-क्खमणपारणगंसि तहेव जाव' रायमग्गमोगाढे हत्थी आसे पुरिसे पासइ । तेसिं

१. सं० पा०—उक्खेवजो नवमस्स ।

इति पाठोस्ति । वि० १।४।१० तथा

२. ना० १।१।७ ।

१।४।३६ सूत्रानुसारेण पाठद्वयोमिश्रणं

३. रोहीतके (क, ग) सर्वत्र ।

संभाव्यते । अस्माभिरत्र एको गृहीतः ।

४. वेसमणदत्तो (ख, घ) ।

६. वि० १।४।११ ।

५. सर्वासु प्रतिषु 'अहीण जाव उक्किट्टसरीरा'

७. वि० १।२।१३, १४ ।

पुरिसाणं मज्झमयणं पासइ एणं इत्थियं—अवओडयबंधणं उक्खित्त'-कण्णनासं नेहतुप्पियगतं वज्झ-करकडि-जुयनियच्छं कंठेगुणरत्त-मल्लदामं चुण्णगुडियगातं चुण्णयं वज्झपाणपीयं० सूले भिज्जमाणं पासइ, पासित्ता भगवओ गोयमस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, तहेव निग्गए जाव' एवं वयासी—एस णं भंते ! इत्थिया पुव्वभवे का आसि' ?

देवदत्ताए सीहसेणभब-वण्णग-पदं

७. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे सुपइट्ठे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे । महासेणे' राया ॥
८. तस्स णं महासेणस्स रण्णो धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे' यावि होत्था ॥
९. तस्स णं महासेणस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए सीहसेणे नामं कुमारे होत्था—अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरे जुवराया ॥
१०. तए णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अण्णया कयाइ पंच पासायवडें-सयसयाइं करेंति—अब्भुगयमूसियाइ' ॥
११. तए णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अण्णया कयाइ सामापामो-क्खणं' पंचण्हं रायवरकन्नगसयाणं एग दिवसे पाणिं गिण्हावेंसु । पंचसओ' दाओ ॥
१२. तए णं से सीहसेणे कुमारे सामापामोक्खेहिं पंचहिं देवीसएहिं सद्धि उप्पि पासायवरगए जाव' विहरइ ॥
१३. तए णं से महासेणे राया अण्णया कयाइ कालघम्मुणा संजुत्ते । नीहरणं । राया जाए' ॥
१४. तए णं से सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गडिए अज्झोववण्णे अवसेसामो देवीओ नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ ॥
१५. तए णं तासि एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं सवणयाए"—एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे

१. सं० पा०—उक्खित्त जाव सूले ।

२. वि० १।२।१५ ।

३. पू०—वि० १।२।१६ ।

४. महासेणे (क) ।

५. ओरोवे (क) ।

६. पू०—ना० १।१।८६ ।

७. सम्मा० (क) सर्वत्र ।

८. पंचसयओ (व) ।

९. ना० १।१।८३ ।

१०. जाए महया (व) ।

११. समणयाए (ख); समाणाइं (घ) ।

गदिए अज्झोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे विहरइ । तं सेयं खलु अम्हं सामं देवि अग्गियओगेण वा विसप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्तए—एवं संपेहेति, संपेहेत्ता सामाए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि' य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरंति ॥

१६. तए णं सा सामा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा सवणयाए'—“एवं खलु ममं [एगूणगाणं ?] पंचण्हं सवत्तीसयाणं [एगूणाइ ?] पंचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं सवणयाए अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए जाव' पडिजागरमाणीओ विहरंति” तं न नज्जइ णं ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्संती ति कट्ठु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया जेणेव कोवघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहय'मणसंकप्पा करतलपल्हत्थ-मुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया० भियाइ ॥
१७. तए णं से सीहसेणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव कोवघरए, जेणेव सामा देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामं देवि ओहय'मणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहि अट्टज्झाणोवगयं भूमिगयदिट्ठीयं भियायमाणि० पासइ, पासित्ता एवं वयासी किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहय'मणसंकप्पा करतल-पल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया० भियासि ?
१८. तए णं सा सामा देवी सीहसेणेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा उप्फेणउप्फेणियं' सीहसेणं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! ममं एगूणगाणं पंच सवत्तीसयाणं एगूणाइं पंच माइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं सवणयाए' अण्णमण्णं सदावेत्ता' एवं वयासी—“एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गदिए अज्झोववण्णे अम्हं धूयाओ नो आढाइ नो परिजाणइ जाव' अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ-पडिजागरमाणीओ विहरंति ।” तं न नज्जइ णं सामी ! ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्संती ति कट्ठु भीया जाव' भियामि ॥

१. विरहाणि (क, ग, घ) ।

२. सवणयाए एवं वयासी (क, ग, घ); समाणी एवं वयासी (ख); अत्र श्रवणप्रसङ्गोऽस्ति, न तु कथनस्य । तेन 'एवं वयासी' इति पाठः प्रकृतो नास्ति, सम्भवतो लिपिदोषेण जातः ।

३. वि० १।६।१५ ।

४. सं० पा०—ओहय जाव भियाइ ।

५. सं० पा०—ओहय जाव पासइ ।

६. सं० पा०—ओहय जाव भियासि ।

७. उप्फेणाउप्फेणियं (क) ।

८. समाणाइं (ख, ग); समाणाइं सवणयाए (घ) ।

९. सदावेति २ (क, ख, ग, घ) ।

१०. वि० १।६।१५ ।

११. वि० १।६।१६ ।

१६. तए णं से सीहसेणे राया सामं देवि एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओह्यमणसंकप्पा जाव' मियाहि । अहं णं 'तह घत्तिहामि' जहा णं तव नत्थि कत्तो वि' सरीरस्स आवाहे वा पवाहे वा भविस्सइ त्ति कट्ठु ताहि इट्ठाहि कंताहि पियाहि मणुणाहि मणामाहि वग्गूहि समासासेइ, समासासेत्ता तप्पो पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुपइट्ठस्स नयरस्स बहिया एगं महं कूडागारसालं—अणंगक्खंभसयसंनिविट्ठं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं करेह 'ममं एयमाणत्तियं' पच्चप्पिणह ॥
२०. तए णं से कोडुंबियपुरिसा करयल' परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं ° पडिसुणेंति, पडिसुणेंता सुपइट्ठनयरस्स' बहिया पच्चत्थिमे दिसीभाए एगं महं कूडागारसालं—अणंगक्खंभसयसंनिविट्ठं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं करेंति, जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥
२१. तए णं से सीहसेणे राया अणया कयाइ एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंच माइसयाइं आमतेइ ॥
२२. तए णं तासि एगूणगाणं पंच देवीसयाणं एगूणाइं पंच माइसयाइं सीहसेणेणं रण्णा आमंति याइ समाणाइं सव्वालंकारविभूसियाइं जहाविभवेणं जेणेव सुपइट्ठे नयरे, जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवेंति' ॥
२३. तए णं से सीहसेणे राया एगूणपंचण्हं देवीसयाणं एगूणगाणं पंचण्हं माइसयाणं कूडागारसालं आवासं' दलयइ ॥
२४. तए णं से सीहसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेह, सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मत्तलालंकारं च कूडागारसालं साहरह ॥
२५. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव' साहरंति ॥

१. वि० १।६।१६ ।

२. तह घत्तीहामि (क); तहा पत्तिहामि (ग);
तहा वत्तीहामि (घ); तहा जत्तिहामि
(ङ); °जत्तीहामि (इ० वृ) °यत्ती-
हामि (ह० वृ) ।

३. इ (ख ग) ।

४. °सालं करेह (क, ख, ग, घ) ।

५. एयमट्ठं (क, ख, ग) ।

६. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेंति ।

७. सुपइट्ठियं (क, ख, ग, घ) ।

८. °सालं जाव करेंति (क, ख, ग, घ) ।

९. उवणेंति (क); उवागच्छंति (घ) ।

१०. आवसहं (क, ख); आवहं (ग) ।

११. वि० १।६।२४ ।

२६. तए णं तासि एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं 'एगूणाइं पंच माइसयाइं' सव्वालंकारविभूसियाइं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च महं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसणं च आसाएमाणाइं बीसाएमाणाइं परिभाएमाणाइं परिभुंजेमाणाइं गंधवेहि य नाडएहि य उवगीयमाणाइं - उवगीयमाणाइं विहरंति ॥
२७. तए णं से सीहसेणे राया अद्वरत्तकालसमयंसि बहूहि पुरिसेहि सद्धि संपरिवुडे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता कूडागारसालाए दुवाराइं पिहेइ, पिहेत्ता कूडागारसालाए सव्वओ समंता अगणिकायं दलयइ ॥
२८. तए णं तासि एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणगाइं पंच माइसयाइं सीहसेणेणं रण्णा आलीवियाइं समाणाइं रोयमाणाइं कंदमाणाइं विलवमाणाइं अत्ताणाइं असरणाइं कालघम्मणा संजुत्ताइं ॥
२९. तए णं से सीहसेणे राया एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं^१ 'पावं कम्मं कलिकलुसं' समज्जिणित्ता चोत्तीसं वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

देवताए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

३०. से णं तओ अणंतरं उव्वट्ठित्ता इहेव रोहीडए^१ नयरे दत्तस्स सत्थवाहस्स कण्हसिरीए भारियाए कुच्छिसि दारियत्ताए उववण्णे ॥
३१. तए णं सा कण्हसिरी नवण्हं मासाणं^२ 'बहुपडिपुण्णाणं' दारियं पयाया—सूमालं सुरूवं ॥
३२. तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो निव्वत्तवारसाहियाए विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता जाव^३ मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ नामधेज्जं करंति—होउ णं दारिया देवदत्ता नामेणं ॥
३३. तए णं सा देवदत्ता दारिया पंचधाईपरिगहिया जाव^४ परिवड्डइ ॥
३४. तए णं सा देवदत्ता दारिया उम्मुक्कबालभावा^५ 'विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वण-गमणुप्पत्ता रूवेण जोव्वणेण लावण्णेण य^६ अईव-अईव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥

१. पंच माइसयाइं जाव (क, ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—सुबहुं जाव समज्जिणित्ता ।

३. रोहीतए (क, ख, ग) ।

४. सं० पा०—मासाणं जाव दारियं ।

५. वि० १।३।३२ ।

६. वि० १।२।४९ ।

७. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावा जोव्वणेण रूवेण लावण्णेण य जाव अईव ।

३५. तए णं सा देवदत्ता दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया जाव' विभूसिया बहूहि खुज्जाहि जाव' परिक्खित्ता उप्पि आगासतलगंसि' कणगतिदूसएणं कीलमाणी विहरइ ॥
३६. इमं च णं वेसमणदत्ते राया ण्हाए जाव' विभूसिए आसं 'दुरुहति, दुरुहिता' बहूहि पुरिसेहि सद्धि संपरिवुडे आसवाहणियाए' निज्जायमाणे दत्तस्स गाहा-वइस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ ॥
३७. तए णं से वेसमणे राया'•दत्तस्स गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं• वीईवयमाणे देवदत्तं दारियं उप्पि आगासतलगंसि कणगतिदूसएणं कीलमाणि पासइ, पासित्ता देवदत्ताए दारियाए 'रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य' जायविम्हाए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—कस्स णं देवाणुप्पिया ! एसा दारिया ? किं च' नामघेज्जेणं ?
३८. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा वेसमणरायं करयल'•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु° एवं वयासी—एस णं सामी ! दत्तस्स सत्थवाहस्स धूया कण्ह-सिरीए भारियाए अत्तया देवदत्ता नामं' दारिया रूवेण य जोव्वण्णेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा ॥
३९. तए णं से वेसमणे राया आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अग्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुभे देवाणुप्पिया ! दत्तस्स धूयं कण्हसिरीए भारियाए अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसनदिस्स जुवरण्णो भारियत्ताए वरेह, जइ वि य सा सयरज्जसुंका' ॥
४०. तए णं ते अग्भितरठाणिज्जा पुरिसा वेसमणेणं रण्णा एवं बुत्ता समाणा हट्ठुट्ठा करयल'•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु° एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता ण्हाया जाव' सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया संपरिवुडा जेणेव दत्तस्स गिहे तेणेव उवागया ॥
४१. तए णं से दत्ते सत्थवाहे ते अग्भितरठाणिज्जे पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चुग्गए' आसणेणं

१. वि० १।२।६४ ।

२. ओ० सू० ७० ।

३. °तल्लि (क) ।

४. वि० १।२।६४ ।

५. दुरुहति (क) ।

६. आसवाहणियाए (ग) ।

७. सं० पा०—राया जाव वीईवयमाणे ।

८. रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य (ग, घ) ।

९. वा (घ) ।

१०. सं० पा०—करयल° ।

११. नामेणं (क) ।

१२. सयं० (ल, घ) ।

१३. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेंति ।

१४. ओ० सू० २०; पू०—ना० १।१६।१३४ ।

१५. अब्भुग्गए (ल, ग) ।

उवनिमंतेइ, उवनिमंतेत्ता ते पुरिसे आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी—
सदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किं आगमणप्पओयणं ?

४२. तए णं ते रायपुरिसा दत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया !
तव धूयं कण्हसिरीए अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसनंदिस्स जुवरणो भारियत्ताए
वरेमो । तं जइ णं जाणसि देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा,
सरिसो वा संजोगो, दिज्जउ णं देवदत्ता दारिया पूसनंदिस्स जुवरणो । भण
देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुकं' ?
४३. तए णं से दत्ते ते अम्भितरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी—एवं चेव णं देवाणु-
प्पिया ! ममं सुकं जं णं वेसमणे राया मम दारियानिमित्तेणं अणुणिण्हइ । ते
अम्भितरठाणिज्जे पुरिसे विउलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ
सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
४४. तए णं ते अम्भितरठाणिज्जा पुरिसा जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छंति,
वेसमणस्स रण्णो एयमट्ठं निवेदेति ॥
४५. तए णं से दत्ते गाहावई अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-
मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-
नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ, ण्हाए' १ कयवलिकम्मे कयकोउय-
मंगल ० -पायच्छित्ते सुहासणवरगएणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं
सद्धि संपरिवुडे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे वीसाएमाणे
परिभाएमाण परिभुंजेमाणे एवं च णं विहरइ । जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं
आयते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं 'विउलेणं
पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं' सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता
देवदत्तं दारियं ण्हायं जाव' सव्वालंकारविभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणि'
सीयं दुरुहेइ, दुरुहेत्ता सुबहुमित्त'-२ नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं ० सद्धि
संपरिवुडे सव्विड्डीए जाव' दुंदुहिनिग्घोस-नाइयरवेणं रोहीडयं नयरं मज्झं-
मज्झेणं जेणेव वेसमणरण्णो गिहे, जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता करयल'-३ परिगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु वेसमणं
रायं जएणं विजएणं ० वद्धावेइ, वद्धावेत्ता वेसमणस्स रण्णो देवदत्तं दारियं
उवणेइ ॥

१. सुकं (ख, ग, घ) ।

२. सं पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।

३. विउलगंधपुप्फ जाव मल्लालंकारेणं (क, ख, ग, घ) ।

४. वि० १।२।६४ ।

५. ०वाहिणी (ख, ग) ।

६. सं० पा०—मित्त जाव सद्धि ।

७. ओ० सू० ६७ ।

८. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेइ ।

४६. तए णं से वेसमणे राया देवदत्तं दारियं उवणीयं पासइ, पासित्ता हट्टुट्टे विउलं
असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-
संबंधि-परियणं आमंतेइ जाव' सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता
पूसनंदि कुमारं देवदत्तं च' दारियं पट्टयं दुरुहेइ', दुरुहेत्ता सेयापीएहि' कलसेहि
मज्जावेइ, मज्जावेत्ता वरनेवत्थाइं करेइ, करेत्ता अग्गिहोमं करेइ', करेत्ता
पूसनंदि कुमारं देवदत्ताए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ ॥
४७. तए णं से वेसमणदत्ते राया पूसनंदिकुमारस्स देवदत्तं दारियं सन्विट्ठीए जाव'
दुंदुहिनिग्घोस-नाइयरवेणं महया इट्ठीसक्कारसमुदएणं पाणिग्गहणं कारेइ',
करेत्ता देवदत्ताए दारियाए अम्मापियरो मित्त'-०-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-०-
परियणं च विउलेणं' असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण
य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥
४८. तए णं से पूसनंदी कुमारे देवदत्ताए भारियाए" सद्धि उप्पि पासायवरगए फुट्ट-
माणेहि मुइंगमत्थएहि वत्तीसइबद्धनाइएहि उवगिज्जमाणे"-०-उवगिज्जमाणे
उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्-फरिस-रस-रुव-गंधे विउले
माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे ० विहरइ ॥
४९. तए णं से वेसमणे राया अण्णया कयाइ कालघम्मुणा संजुत्ते । नीहरणं जाव"
राया जाए पूसनंदी ॥
५०. तए णं से पूसनंदी राया सिरीए देवीए माइभत्ते यावि होत्था । कल्लाकल्लि
जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए पायवडणं
करेइ, करेत्ता सयपाग-सहस्सपागेहि तेल्लेहि अम्भंगावेइ, अट्ठिसुहाए मंसुहाए
तयासुहाए" रोमसुहाए—चउव्विहाए संवाहणाए संवाहावेइ, संवाहावेत्ता
सुरभिणा गंधट्टएणं" उव्वट्टावेइ", उव्वट्टावेत्ता तिहि उदएहि मज्जावेइ,

१. वि० १।६।४५ ।

२. × (क, घ) ।

३. द्रुहेति (क); द्रुहति (ख); दुरहेति (ग);
दुरुहेति (घ) ।

४. सेयापीतएहि (क) ।

५. कारेइ (क) ।

६. ओ० सू० ६७ ।

७. करेइ (क, ख, ग, घ) ।

८. सं० पा०—मित्त जाव परियणं ।

९. विउलं (क, ख, ग, घ) ।

१०. दारियाए (क, ख) ।

११. सं० पा०—उवगिज्जमाणे जाव विहरइ ।

१२. वि० १।५।२२-२४ ।

१३. अम्मसुहाए (ख) ।

१४. गंधट्टएणं (क); गंधवट्टएणं (ख, ग, घ);
ठाणेपि ३।८७ सूत्रे 'गंधट्टएणं' इति पाठोस्ति ।

१५. उव्वट्टेइ (ग) ।

[तं जहा—उसिणोदएणं 'सीओदएणं गंधोदएणं'] विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं भोयावेइ, भोयावेत्ता सिरीए देवीए ण्हायाए^१ *कयबलिकम्माए कयकोउय-मंगल^२-पायच्छित्ताए जिमियभुत्तुत्तरागयाए तओ पच्छा ण्हाइ वा भुंजइ वा, उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुंजमाणे विहरइ ॥

५१. तए णं तोसे देवदत्ताए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणोए इमेयारूवे अजभत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु पूसनंदी राया सिरीए देवीए माइभत्ते जाव^३ विहरइ । तं एएणं वक्खेवेणं नो संचाएमि अहं पूसनंदिणा रण्णा सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुंजमाणी विहरित्तए । तं सेयं खलु ममं सिरिदेवि^४ अग्गिपओगेण वा सत्थप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा^५ जीवियाओ ववरोवेत्ता पूसनंदिणा रण्णा सद्धि उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुंजमाणीए विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सिरीए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणी^६ विहरइ ॥

५२. तए णं सा सिरी देवी अण्णया कयाइ मज्जाइया^७ विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्ता जाया यावि होत्था ॥

५३. इमं च णं देवदत्ता देवी जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरि देवि मज्जाइयं विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्तं पासइ, पासित्ता दिसालोयं करेइ, करेत्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोहदंडं परामुसइ, परामुसित्ता लोहदंडं तावेइ, तत्तं^८ समजोइभूयं फुल्लकिंसुयसमाणं^९ संडासएणं गहाय जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए अवार्णंसि पक्खिबइ^{१०} ॥

५४. तए णं सा सिरी देवी महया-महया सद्देणं आरसित्ता कालधम्मणा संजुत्ता ॥

५५. तए णं तांसे सिराए देवीए दासचेडाओ आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदत्तं देवि तओ अवक्कममाणि पासंति, पासित्ता जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सिरि देवि निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवियविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा ! अहो ! अक्कज्ज-

१. गंधोदएणं सीओदएणं (क, ग); कोष्ठकवर्त्ती

पाठः व्याख्याशः प्रतीयते ।

२. सं० पा०—ण्हायाए जाव पायच्छित्ताए ।

३. वि० १।६।५० ।

४. सिरिदेवी (क, ख, ग, घ) ।

५. वा मंतपओगेण वा (घ) ।

६. पडिजागरमाणा (क, ग) ।

७. मज्जातीता (क); मज्जावीता (घ) ।

८. तए णं तं (क, ख) ।

९. पुप्फकिंसुय० (ग) ।

१०. पक्खिबेइ (ख, ग) ।

मिति कट्टु रोयमाणीओ कंदमाणीओ विलवमाणीओ जेणेव पूसनंदी राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छत्ता पूसनंदि रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! सिरी देवी देवदत्ताए देवीए अकाले चेव जीवियाओ ववरोविया ॥

५६. तए णं से पूसनंदी राया तासि दासचेडीणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म महया माइसोएणं अप्पुण्णे^१ समाणे परमुनियत्ते विव चंपगवरपायवे घस त्ति घरणीय-लंसि सब्वगेहिं संनिवडिए ॥

५७. तए णं से पूसनंदी राया मुहुत्तंतरेण आसत्थे समाणे व्हहिं राईसर^२—●तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-मेट्ठि-सेणावइ^३—सत्थवाहेहिं मित्त^४—●नाइ-नियग-सयण-संबंधि^५—परियणेण य सद्धि रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे सिरीए देवीए महया इड्डीए नीहरणं करेइ, करेत्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे देवदत्तं देवि पुरिमेहिं गिण्हावेइ, एएणं^६ विहाणेणं वज्झं आणवेइ ॥

५८. तं एवं खलु गोयमा ! देवदत्ता देवी पुरा पोराणाणं^७ ●दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कं-ताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणी^८ विहरइ ॥

देवदत्ताए आगाभिभव-वण्णग-पदं

५९. देवदत्ता णं भंते ! देवी इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! असीइं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ^१ । संसारो [तहेव जाव^२ ?] वणस्सई ।

तओ अणंतरे उव्वट्ठित्ता गंगपुरे नयरे हंसत्ताए पच्चायाहिइ ।

से णं तत्थ साउणिएहिं वहिए समाणे तत्थेव गंगपुरे नयरे सेट्ठिकुलंसि उववज्जि, हिइ । बोही । सोहम्मे । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

निक्खेव-पदं

६०. ●एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^३ संपत्तेणं दुह्विवागाणं नवमत्स अज्जमयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

—त्ति वेमि ॥^४

१. अप्पुण्णे णं (क) ।

२. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाहेहि ।

३. सं० पा०—मित्त जाव परियणेण ।

४. तत्तेणं (ख, घ); तेणं (क्व) ।

५. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहर ।

६. उववज्जि (क, ख, ग, घ) ।

७. वि० १।१।७० ।

८. सं० पा०—निक्खेवो ।

९. ना० १।१।७ ।

दसमं अज्झयणं

अंश

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते' ! °समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं नवमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी°—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बड्डमाणपुरे नामं नयरे होत्था । विजयवड्डमाणे उज्जाणे । माणिभट्ठे जक्खे । विजयमित्ते राया ॥
३. तत्थ णं घणदेवे नामं सत्थवाहे होत्था—अड्ढे । पियंगू नामं भारिया । अंज दारिया जाव' उक्किट्टसरीरा । समोसरणं परिसा जाव' गया ॥

अंजुए पुब्बभवपुच्छा-पदं

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव' अड्डमाणे विजयमित्तस्स रण्णे गिहस्स असोगवणियाए अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे पासइ एगं इत्थियं—सुक्कं भुक्खं निम्मंसं किडिकिडियाभूयं अट्ठिचम्मावणद्धं नीलसाडगनियत्थं' कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं' कूवमाणि पासइ, पासित्ता चित्ता तहेव जाव' एवं वयासी—सा णं भंते ! इत्थिया पुब्बभवे का आसि' ? वागरणं ॥

१. सं० पा०—दसमस्स उक्खेवओ ।

२. ना० १।१।७ ।

३. वि० १।४।३६ ।

४. वि० १।४।११ ।

५. वि० १।२।१२-१४ ।

६. °नियण्णं (ख) ।

७. विस्सराइं (ख, घ); विसराइं (ग);

८. वि० १।२।१५ ।

९. पू०—वि० १।२।१६ ।

अंजूए पुढविसिरीभव-वण्णग-पदं

५. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे इंदपुरे नामं नयरे होत्था ॥
६. तत्थ णं इंददत्ते राया । पुढविसिरी' नामं गणिया होत्था—वण्णगो' ॥
७. तए णं सा पुढविसिरी गणिया इंदपुरे नयरे वहवे राईसर'-●तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इवभ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाह°प्पभियओ बहूहि° ●य विज्जापओगेहि य मंतपओगेहि य चुण्णप्पओगेहि य हियउड्डावणेहि य निण्हवणेहि य पण्हवणेहि य वसीकरणेहि य आभिओगिएहि° आभिओगित्ता° उरालाई माणुस्सगाई भोगभोगाई भुंजमाणी विहरइ ॥
८. तए णं सा पुढविसिरी गणिया एयकम्मा एयप्पहाणा एयविज्जा एयसमायारा सुबहुं° ●पावं कम्मं कलिकलुसं° समज्जिणित्ता पणतीसं वाससयाई परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीसं सागरोवम-ट्टिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा ॥

अंजूए वत्तमाणभव-वण्णग-पदं

९. सा णं तओ अणंतरे उव्वट्टित्ता इहेव वड्डमाणपुरे नयरे घणदेवस्स सत्थवाहस्स पियंगुभारियाए कुच्छिसि दारियत्ताए उववण्णा ॥
१०. तए णं सा पियंगुभारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारियं पयाया । नामं अंजू° । सेसं जहा देवदत्ताए° ॥
११. तए णं से विजए राया आसवाहणियाए निज्जायमाणे जहा वेसमणदत्ते' तहा अंजुं पासइ, नवरं—अप्पणो अट्टाए वरेइ जहा तेयली जाव° अंजूए भारियाए सट्ठि उप्पि पासायवरगए जाव° विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥
१२. तए णं तीसे अंजूए देवीए अण्णया कयाइ जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था ॥
१३. तए णं से विजए राया कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—गच्छह

१. पुहवि° (क, ग) ।

२. वि० १।२।७ ।

३. सं० पा०—राईसर जाव प्पभियओ ।

४. सं० पा० - बहूहि चुण्णप्पओगेहि जाव आभि-
ओगित्ता । द्रष्टव्यम्—वि० १।२।७२ ।

५. अहिओगेत्ता (ग) ।

६. सं० पा०—सुबहुं जाव समज्जिणित्ता ।

७. अंजूसिरी (ब) ।

८. वि० १।६।३२-३५ ।

९. वि० १।६।३६-४६ ।

१०. ना० १।१४।१६, २० ।

११. वि० १।६।४८ ।

णं तुमं देवाणुप्पिया ! वड्डमाणपुरे नयरे सिंघाडग'-०तिग-चउक्क-चच्चर-
चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा० एवं
वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! विजयस्स रण्णो अंजूए देवीए जोणिसूले
पाउब्भूए । तं जो णं इच्छइ वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओवा जाणुयपुत्तो
वा तेगिच्छिओ वा तेगिच्छियपुत्तो वा' ०अंजूए देवीए जोणीसूले उवसामित्तए
तस्स णं वेसमणदत्ते राया विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ ॥

१४. तए णं ते कोडुंविपपुरिसा० जाव' उग्घोसेंति ॥

१५. तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया
य तेगिच्छियपुत्ता य इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म जेणेव विजए
राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता उप्पत्तियाहिं' वेणइयाहिं कम्मियाहिं
पारिणामियाहिं बुद्धीहिं परिणामेमाणा इच्छंति अंजूए देवीए जोणिसूलं
उवसामित्तए, नो संचाएंति उवसामित्तए ॥

१६. तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य
तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति अंजूए देवीए जोणिसूलं उवसामित्तए,
ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

१७. तए णं सा अंजू देवी ताए वेयणाए अभिभूया समाणी सुक्का भुक्खा निम्मंसा
कट्ठाइं कलुणाइं वीसराइं विलवइ ॥

१८. एवं खलु गोयमा ! अंजू देवी पुरा पोराणाणं' ०दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं
असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणी०
विहरइ ॥

अंजूए आगामिभव-वण्ण-पदं

१९. अंजू णं भंते ! देवी इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं
उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! अंजू णं देवी नउइं वासाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा
इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ' । एवं संसारो
जहा पढमे तहा नेयव्वं जाव' वणस्सई ।

सा णं तओ अणंतरं उव्वट्ठित्ता सव्वओभदे नयरे मयूरत्ताए पच्चायाहिइ ।

१. सं० पा०—सिंघाडग जाव एवं ।

२. सं० पा०—तेगिच्छियपुत्तो वा जाव उग्घो-
सेंति ।

३. वि० १।१०।१३ ।

४. अंजूए देवीए बहवे उप्पत्तियाहिं (क, ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—पोराणाणं जाव विहरइ ।

६. उववण्णा (क, ख, ग, घ) ।

७. वि० १।१।७० ।

से णं तत्थ साउणिएहिं वहिए समणे तत्थेव सव्वग्गोभदे नयरे सेट्टिकुलंसि पुत्तत्ताए' पच्चायाहिइ ।

से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं अंतिए पव्वइस्सइ । केवलं बोहिं बुज्झिहिइ । पव्वज्जा । सोहम्मे ।

से णं तग्गो देवलोगाग्गो आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे जहा पढमे जाव' सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

निकखेव-पदं

२०. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुह्विवागाणं दसमस्स अज्जयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' !

—त्ति वेमि ॥

बीओ सुयक्खंधो

पढमं अज्झयणं

सुबाहू

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिए चेइए । सुहम्मे समोसढे । जंबू जाव' पज्जुवासमाणे' एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, सुहविवागाणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
२. तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

सुबाहू भद्दं दी य, सुजाए य सुवासवे ।

तहेव जिणदासे य, धणवई य महब्बले ॥

भद्दं दी महच्चंदे, वरदत्ते 'तहेव य' ॥ १॥

३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

१. वि० १।१।३, ४ ।

२. पज्जुवासइ (क, ख, ग, घ) ।

३. ना० १।१।७ ।

४. ना० १।१।७ ।

५. × (क, ख, ग, घ); मुद्रितप्रत्यनुसार

गृहीतोयं पाठः ।

६. ना० १।१।७ ।

सुबाहुकुमार-पदं

४. तए णं से सुद्धमे जंबू-अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥
५. तस्स' णं हत्थिसीसस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं पुप्फकरंडए नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे ॥
६. तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स' जक्खाययणे होत्था—दिब्बे ॥
७. तत्थ णं हत्थिसीसे' नयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था—महयाहिमंवत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे ॥
८. तस्स णं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था ॥
९. तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि' सीहं सुमिणे पासइ, जहा मेहस्स जम्मणं तहा' भाणियव्वं ॥
१०. *तए णं से सुबाहुकुमारे बावत्तरिकलापंडिए जाव' अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥
११. तए णं तं सुबाहुकुमारं अम्मापियरो बावत्तरिकलापंडियं जाव' * अलंभोग-समत्थं वा' जाणंति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासायवडेंसगसयाइं कारेंति"—अब्भुगयमूसियपहसियाइं" । एगं च णं महं भवणं कारेंति एवं जहा महब्बलस्स रण्णो, नवरं—पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचहं रायवरकन्नगसयाणं" एगदिवसेणं पाणि गिण्हावेति" । तहेव पंचसइओ दाओ जाव" उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहि" *मुइंगमत्थएहि वरतरुणिसंपउत्तेहि बत्तीसइवद्धएहि नाडएहि उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे इट्ठे सइ-फरिस-रस-रूव-गंधे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे० विहरइ ॥

१. तत्थ (क) ।

२. जहस्स (क) ।

३. *सीसए (क, घ) ।

४. वासधरंसि (क्व) ।

५. ना० १।१।१८-३२, ७२-८७; नवर अकाल-
मेघदोहदवक्तव्यता नास्ति (वृ) ।

६. सं० पा०—सुबाहुकुमारे जाव अलंभोगस-
मत्थं ।

७. ओ० सू० १४८ ।

८. ओ० सू० १४९ ।

९. वा वि (क, ख, ग) ।

१०. करेंति (क, ख); करेति (ग); करावेति
(घ) ।

११. पू०—ना० १।१।८९ ।

१२. *कन्नासयाणं (घ) ।

१३. गिण्हावेसु (क, ग) ।

१४. अ० ११।१५८-१६१ ।

१५. सं० पा०—फुट्टमाणेहि जाव विहरइ ।

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे^१ । परिसा निग्गया । अदीणसत्तू जहा कूणि^२ तहा निग्गए । सुबाहू वि जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए जाव^३ धम्मो कहिओ^४ । राया परिसा गया ॥
१३. तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंति^५ए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ जाव^६ एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं^७ । जहा णं देवाणुप्पियाणं अंति^८ए बह्वे राईसर^९—*तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभियओ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगा-रियं पव्वयंति ° नो खलु अहं तहा संचाएमि पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अंति^{१०}ए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेह ॥
१४. तए णं से सुबाहू समणस्स भगवओ महावीरस्स अंति^{११}ए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खा-वइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

सुबाहुस्स पुव्वभवपुच्छा-पदं

१५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई जाव^१ एवं वयासी—अहो णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदंसणे सुरूवे ।
- बहुजणस्स वि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदंसणे सुरूवे ।
- साहुजणस्स वि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे °कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे सुभगे सुभगरूवे पियदंसणे ° सुरूवे ।
- सुबाहुणा भंते ! कुमारेणं इमा^२ एयारूवा उराला माणुसिड्डी^३ किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमण्णागया ? के वा एस आसि पुव्वभवे^४ ? °कि

१. समोसरणं (क, ख, ग, घ) ।

२. ओ० सू० ५५-६६ ।

३. भ० ६।१५-१६३ ।

४. ना० १।१।१०१ ।

५. पू०—राय० सू० ६६५ ।

६. सं० पा०—राईसर जाव नो खलु अहं ।

७. वि० १।१।२४, २५ ।

८. सं० पा०—इट्ठरूवे जाव सुरूवे ।

९. इमे (क, ख) ।

१०. माणुस्सिड्डी (ख); माणुस्सरिड्डी (घ) ।

११. सं० पा०—पुव्वभवे जाव अभिसमण्णागया ।

नामए वा किं वा गोएणं ? कयरंसि वा गामंसि वा सण्णिवेसंसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता, कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिए एगमवि आयरियं सुवयणं सोच्चा निसम्म सुवाहुणा कुमारेण इमा एयारूवा उराला माणुस्सिद्धी लद्धा पत्ता° अभिसमण्णागया ?

सुवाहुस्स सुमुहभव-वण्णग-पदं

१६. 'गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी'—
१७. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे ॥
१८. तत्थ णं हत्थिणाउरे नयरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ—अइडे ॥
१९. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा जाइसंपण्णा जाव° पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव सहस्सववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति', उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावे-माणा विहरंति ॥
२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते नामं अणगारे ओराले° 'घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरवंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संक्खित्त-विउल°-तेयलेस्से मासमासेणं खममाणे' विहरइ ॥
२१. तए णं से सुदत्ते अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्जायं करेइ, जहा गोयमसामी तहेव 'धम्मघोमे थेरे'° आपुच्छइ जाव° अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिहे अणुप्पविट्ठे ॥
२२. तए णं से सुमुहे गाहावई सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्टतुट्ठे आसणाओ अढ्भुट्ठेइ, अढ्भुट्ठेत्ता पायवीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं पच्चुगच्छइ', पच्चुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता 'जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयहत्थेण°' विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेस्सा-मीति तुट्ठे पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे पडिलाभिए वि तुट्ठे ॥

१. × (क, ख, ग) ।

२. ना० १।१।४ ।

३. उवागया (ग) ।

४. सं० पा० — उराले जाव लेस्से ।

५. खवमाणे (क) ।

६. सुहम्मे थेरे (क); सुदत्ते थेरे धम्मघोसे

(ख); 'सुहम्मे थेरे' त्ति धमंघोषस्थविरा-
नित्यर्थः, धर्मशब्दसाम्याच्छब्दद्वयस्याप्ये-

कार्थत्वात् (वृ) ।

७. वि० १।२।१३, १४ ।

८. अणुगच्छइ (घ) ।

९. × (क, ख, ग) ।

२३. तए णं तस्स सुमुहस्स' गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं 'गाहगसुद्धेणं दायगसुद्धेणं' ति विहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परिक्कीए', मणुस्साउए निबद्धे, गेहंसि य से इमाइ पंच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, [तं जहा— वसुहारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिते', चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदु-भीओ, अंतरा वि य णं आगासंसि 'अहो दाणे अहो दाणे' वुट्ठे य'।] हत्थिणाउरे सिंघाडणं-^१तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह^२पहेसु बहुजणो अणमणस्स एवं आइक्खइ एवं भासेइ एवं पणवेइ एवं परूवेइ—घण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई^३ ^४पुण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई एवं—कयत्थे णं कयलक्खणे ण सुलद्धे णं सुमुहस्स गाहावइस्स जम्मजीवियफले, जस्स णं इमा एयारूवा उराला माणुस्सिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया^५ ॥
- तं घण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई पुण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई एवं—कयत्थे णं कयलक्खणे णं सुलद्धे णं सुमुहस्स गाहावइस्स जम्म-जीवियफले, जस्स णं इमा एयारूवा उराला माणुस्सिद्धी लद्धा पत्ता अभि-समण्णागया ॥
२४. तए णं से सुमुहे गाहावई बहूइ वाससयाइ आउयं पालेइ, पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे नयरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥
२५. तए णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी तहेव सीहं पासइ, सेसं तं चेव जाव' उप्पि पासाए विहरइ । तं एवं खलु गोयमा ! सुवाहुणा इमा एयारूवा माणुसिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ॥
२६. पभू णं भंते ! सुवाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?
हंता पभू ॥
२७. तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
२८. तए णं समणे भगवं महावीरे अणया कयाइ हत्थिसीसाओ नयराओ पुप्फकरंडयउज्जाणाओ कयवणमालपियजक्खाययणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१. 'तस्स सुमुहस्स' ति विभक्तिपरिणामात्

'तेन सुमुहेने' ति द्रष्टव्यम् (बृ) ।

२. दायगसुद्धेणं पडिगसुद्धेणं (घ) ।

३. परित्तकए (घ) ।

४. निवाडिए (क्व) ।

५. अहोदानं २ (घ) ।

६. कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यासः प्रतीयते ।

७. सं० पा०—सिंघाडण जाव पहेसु ।

८. सं० पा०—गाहावई जाव तं घण्णे ।

९. वि० २।१।६-११ ।

२६. तए णं से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव' पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

३०. तए णं से सुबाहुकुमारे अण्णया कयाइ चाउहसट्टमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दग्गसंथारं संथरइ, संथरित्ता दग्गसंथारं दुरूहइ, दुरूहित्ता अट्टमभत्तं पगिण्हइ', पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्टमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ॥

सुबाहुकुमारस्स पबज्जा-पवं

३१ तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि' धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अञ्जत्थिए चित्तिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—धण्णा णं ते गामागर'-०णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संवाह'-सण्णिवेसा, जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ ।

धण्णा णं ते राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इग्ग-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभियग्गो, जे णं समणस्स भगवग्गो महावीरस्स अंतिए मुंडा' ०भवित्ता अगाराग्गो अणगारियं ० पव्वयंति ।

धण्णा णं ते राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इग्ग-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभियग्गो, जे णं समणस्स भगवग्गो महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइय' ०सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं ० गिहिधम्मं पडिवज्जति ।

धण्णा णं ते राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इग्ग-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-प्पभियग्गो, जे णं समणस्स भगवग्गो महावीरस्स अंतिए धम्मं सुणेंति ।

तं जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वानुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा' ०इह समोसरेज्जा इहेव हत्थीसीसस्स नयरस्स बहिया पुप्फकरंडयउज्ज्जाणे कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे अहापडिक्खं अोगहं अोगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे ० विहरेज्जा, तए णं अहं समणस्स भगवग्गो महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता' ०अगाराग्गो अणगारियं ० पव्वएज्जा ॥

३२. तए णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं

१. जी० सू० १६२ ।

२. पडिगिण्हइ (क) ।

३. ०बरत्तकाले (क, ख) ।

४. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसा ।

५. सं० पा०—मुंडा जाव पव्वयति ।

६. सं० पा०—पंचाणुव्वइय जाव गिहिधम्मं ।

७. सं० पा०—इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा ।

८. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वएज्जा ।

अज्भत्थियं जाव' वियाणित्ता पुब्बाणुपुब्बि' •चरमाणे गामाणुगामं°
दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे नयरे जेणेव पुप्फकरंडयउज्जाणे जेणेव कयवण-
मालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं
ओगहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । परिसा राया
निग्गए ॥

३३. तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं महया'•जणसद्दं वा जाव' जणसण्णिवायं
वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्भत्थिए चित्तिए कप्पिए
पत्थिए भणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं जहा जमाली तहा° निग्गओ ।
धम्मो कहिओ । परिसा राया पडिगया ॥

३४. तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा
निसम्म हट्ठुट्ठे जहा मेहो तहा अम्मापियरो आपुच्छइ । निक्खमणाभिसेओ
तहेव जाव' अणगारे जाए इरियासमिए' जाव' गुत्तवंभयारी ॥

सुबाहुकुमारस्स आगामिभव-वण्णग-पदं

३५. तए णं से सुबाहु अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं
अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थ-
छट्ठुमतवोवहारणंहि अप्पाणं भावेत्ता, बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता,
मासियाए सलेहणाए अप्पाणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता
आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए
उववण्णे ॥

३६. से णं तओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता
माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ, केवलं वोहि बुज्झिहिइ, तहारूवाणं थेराणं अंतिए
मुंडे भवित्ता'•अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्सइ ।

से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णं पाउणिहिइ । आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते
कालगए सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ' ।

से णं ताओ माणुस्सं, पव्वज्जा, बंभलोए । माणुस्सं, महासुक्के । माणुस्सं,
आणए । माणुस्सं, आरणे । माणुस्सं सव्वट्ठसिद्धे ।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्ठित्ता महाविदेहे वःसे जाइं कुलाइं भवन्ति अट्ठाइं

१. वि० २।१।३१ ।

२. सं० पा०—पुब्बाणुपुब्बि जाव दूइज्जमाणे ।

३. सं० पा०—तं महया जहा पढमं तहा ।

४. अ० ६।१५८ ।

५. ना० १।१।१०१-१५१ ।

६. रियासमिए (क) ।

७. वि० १।१।७० ।

८. अत्ताणं (ख) ।

९. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइस्सइ ।

१०. उववण्णे (क, ख, ग, घ) ।

जहा दढपइण्णे^१ सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिब्बाहिइ सव्वदुक्खा-
णमंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पवं

३७. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव^२ संपत्तेणं सुहविवागाणं
पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति वेमि ॥

बीयं अजभयणं

महानंदी

१. बितियस्स उक्खेवओ ।

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे नयरे । धूमकरंडग उज्जाणं । धण्णो जक्खो । धणावहो राया । सरस्सई देवी ।

सुमिणदंसणं कहणा, जम्मं बालत्तणं कलाओ य ।

जोव्वणं पाणिग्गहणं, दाओ पासाय भोगा य ॥१॥

जहा सुबाहुस्स, नवरं—महानंदी कुमारे । सिरिदेवीपामोक्खा णं पंचसया । सामीसमोसरणं । सावगधम्मं । पुव्वभवपुच्छा । महाविदेहे वासे पुंडरीगिणी^१ नयरी । विजए कुमारे । जुगबाहू तित्थयरे^२ पडिलाभिए । मणुस्साउए निबद्धे । इह उप्पण्णे । सेसं जहा सुबाहुस्स जाव^३ महाविदेहे वासे सिज्झिहहिइ बुज्झिहहिइ मुच्चिहहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ । निक्खेवओ ॥

तच्चं अजभयणं

सुजाए

१. तच्चस्स^४ उक्खेवओ ।

वीरपुरं नयरं । मणोरमं उज्जाणं । वीरकण्हमित्ते^५ राया । सिरि देवी । सुजाए कुमारे । बलसिरिपामोक्खा पंचसया । सामीसमोसरणं । पुव्वभवपुच्छा । उसुयारे नयरे । उसभदत्ते गाहावई । पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभिए । मणुस्साउए निबद्धे । इहं उप्पण्णे जाव^३ महाविदेहे वासे सिज्झिहहिइ बुज्झिहहिइ मुच्चिहहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ । निक्खेवओ ॥

१. पुंडरिगिणी (क); पुंडरिगिणी (घ) ।

२. तित्थंकरे (ख) ।

३. वि० २।१।६-३६ ।

४. वीरकिण्ह^० (क) ।

५. वि० २।१।६-३६ ।

चउत्थं अज्झयणं

सुवासवे

१. चउत्थस्स उक्खेवओ

विजयपुरं नयरं । नंदणवणं उज्जाणं । असोगो जक्खो । वासवदत्ते राया ।
कण्हा देवी । सुवासवे कुमारे । भट्टापामोक्खाणं पंचसया जाव पुव्वभवे । कोसंबो
नयरी । धणपाले राया । वेसमणभट्टे अणगारे पडिलाभिए । इह जाव' सिद्धे ॥

पंचमं अज्झयणं

जिणदासे

१. पंचमस्स उक्खेवओ ।

सोगंधिया नयरी । नीलासोगं उज्जाणं । सुकालो जक्खो । अप्पडिहओ राया ।
सुकण्णा देवी । महचंदे कुमारे । तस्स अरुहदत्ता भारिया । जिणदासो पुत्तो ।
तित्थयरागमणं । जिणदासो पुव्वभवो । मज्झमिया नयरी । मेहरहे राया ।
सुधम्मि अणगारे पडिलाभिए जाव' सिद्धे ॥

छट्ठं अज्झयणं

धणवई

१. छट्ठस्स उक्खेवओ ।

कणगपुरं नयरं । सेयासोयं उज्जाणं । वीरभट्टो जक्खो । पियचंदो राया ।
सुभट्टा देवी । वेसमणे कुमारे जुवराया । सिरिदेवीपामोक्खा पंचसया । तित्थ-
यरागमणं । धणवई जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवो । मणिवइया' नयरी । मित्तो
राया । संभूतिविजए अणगारे पडिलाभिए जाव' सिद्धे ॥

१. वि० २।१।६-३६ ।

२. सुकोसलो (ग) ।

३. वि० २।१।६-३६ ।

४. मणिवया (घ) ।

५. वि० २।१।६-३६ ।

सत्तमं अज्झयणं

महब्बले

१. सत्तमस्स उक्खेवओ ।

महापुरं नयरं । रत्तासोगं उज्जाणं । रत्तपाओ जक्खो । बले राया । सुभद्दा देवी । महब्बले कुमारे । रत्तवईपामोक्खा पंचसया । तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो । मणिपुरं नयरं । नागदत्ते गाहावई । इंदपुत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव' सिद्धे ॥

अट्ठमं अज्झयणं

भद्दनंदी

१. अट्ठमस्स उक्खेवओ ।

सुघोसं नयरं । देवरमणं उज्जाणं । वीरसेणो जक्खो । अज्जुणो राया । तत्तवई देवी । भद्दनंदी कुमारे । सिरिदेवीपामोक्खा पंचसया जाव पुव्वभवे । महाघोसे नयरे । धम्मघोसे गाहावई । धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव' सिद्धे ॥

नवमं अज्झयणं

महच्चंदे

१. नवमस्स उक्खेवओ ।

चंपा नयरी । पुण्णभद्दे उज्जाणे । पुण्णभद्दे जक्खे । दत्ते राया । रत्तवती देवी । महच्चंदे कुमारे जुवराया । सिरिकंतापामोक्खा णं पंचसया जाव पुव्वभवो । तिगिंछी नयरी । जियसत्तू राया । धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव' सिद्धे ॥

१. वि० २।१।६-३३ ।

२. वेरसेणो (क) ।

३. वि० २।१।६-३६ ।

४. वि० २।१।६-३६ ।

दसमं अज्झयणं

वरदत्ते

१. दसमस्स उक्खेवम्भो ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं साएयं नामं नयरं होत्था । उत्तरकुरुउज्जाणे । पासा-
मिम्भो जक्खो । मित्तनंदी राया । सिरिकंता देवी । वरदत्ते कुमारे । वरसेणा-
पामोक्खा पंच देवीसया । तित्थयरागमणं । सावगधम्मं । पुव्वभवपुच्छा ।
सयदुवारे नयरे । विमलवाहणे राया । धम्मरुई अणगारे पाडेलाभिण् । मणुस्सा-
उए निवद्धे । इहं उप्पण्णे । मेमं जहा मुवाहुस्स कुमारस्स । चिंता जाव
पव्वज्जा । कप्पंतरिते जाव' मव्वट्ठमिद्धे । तम्भो महाविदेहे जहा दढपइण्णे जाव'
सिज्झिह्मिह्मि बुज्झिह्मिह्मि मुच्चिह्मिह्मि परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ॥

२. एवं खलु जंवू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव' संपत्तेणं सुहविवागाणं
दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !

परिसेसो

विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा दुहविवागो सुहविवागो य । तत्थ दुहविवागे दस
अज्झयणा एकसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति । एवं सुहविवागे वि ।
सेसं जहा आयारस्स ॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर ५६७१८,

अनुष्टुप्-श्लोक १७७२ अक्षर १४,

१. वि० २।१।६-३६ ।

३. ना० १।१।७ ।

२. ओ० सू० १४१-१५४ ।

परिशिष्ट

परिशिष्ट—१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

नायाधम्मकहाओ

संक्षिप्त-पाठ	पूर्ण-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतिए जाव पब्बयामि	२।१।२५	१।१।१०१
अंतेउरे य जाव अज्झोववण्णे	१।१।१४१	१।१।१२८
अगळे वा जाव सागरे	१।८।१५४	१।८।१५४
अग्गिसामण्णे जाव मच्चुसामण्णे	१।१।१११	१।१।१११
अग्घेणं जाव आसणेणं	१।१६।१६७	१।१६।१८६
अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	१।२।७६	ओ० सू० २
अज्जग जाव परिभाएत्तए	१।६।५	१।१।११०
अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साबिया जाया		
तहेव चिंता तहेव सागरदत्तं आपुच्छति	१।१६।६८-१०४	१।१४।४४-५०
अज्झत्थिए०	१।८।७६	१।१।४८
अज्झत्थिए किमण्णे जाव विर्यंभइ	१।१६।२७२	१।१६।२७२
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	१।१।५३, ५६, १५४, १५५, १६६, २०४, २०५; १।२।१२, ७१; १।५।११८, १२४; १।७।२५; १।१६।११८, २८५; २।१।३८	१।१।४८
अज्झत्थिय जाव जाणित्ता	१।१६।२८६	१।१।४८
अट्टदुहुट्टवसट्टमाणसगए जाव रयणि	१।१।१५५	१।१।१५४
अट्टमस्स उप्पेवओ एवं खलु जंबू		
जाव चत्तारि	२।८।१, २	२।२।१, २
अट्टाई जाव नो बागरेइ	१।५।६६	१।५।६६
अट्टाई जाव बागरेइ	१।५।६६	१।५।६६
अट्टाहियं महानंदीसरं जामेव		
दिसं पाउ जाव पडिगए	१।८।२२६	१।८।२२४
अट्टा जाव अपरिभूया	१।५।७	ओ० सू० १४१
अट्टा जाव भत्तपाणा	१।३।८	ओ० सू० १४१

अणंते जाव समुप्पण्णे	१।८।२२५	वृत्ति
अणंते णाणे समुप्पण्णे जाव सिद्धा	१।१६।३२४	१।५।८४
अणगारवण्णओ भाणियब्बो	१।१।१६४	ओ० सू० १६४
अणगारे जाव इहमागए	१।५।६८	ओ० सू० ५२
अणगारे जाव पज्जवासमाणे	२।१।४	१।१।७
अणिट्ठतराए चेव जाव गंघेणं	१।१२।३	१।८।४२
अणिट्ठा जाव अमणामा	१।१६।६७	१।१।४६
अणिट्ठा जाव दंसणं	१।१४।४३	१।१४।३६
अणिट्ठा जाव परिभोगं	१।१४।५०	१।१४।३६
अणुत्तरे पुणरवि तं चेव जाव तओ		
पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ		
जाव पव्वइस्ससि	१।१।११३	१।१।११२
अण्णं च तं विउलं	१।८।२०७	१।८।२०५
अणमण्णं जाव समणे	१।१३।३८	१।५।५३
अत्थत्थिया जाव ताहि इट्ठाहि जाव अणवरयं	१।१।१४३	ओ० सू० ६८
अत्थामा जाव अघारणिज्ज०	१।१६।२५३	१।१६।२१
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	१।८।१२८	१।५।१२२
अपत्थियपत्थए जाव वज्जिए	१।५।१२२	उवा०।२।२२
अपत्थियपत्थया जाव परिवज्जिया	१।८।७४	१।५।१२२
अपुण्णाए जाव निबोलियाए	१।१६।२५	१।१६।८
अळभणुण्णाए जाव पव्वइत्तए	१।१२।३६	१।१।१०४
अळभुज्जएणं जाव विहरित्तए	१।५।११८; १।१६।२८	१।५।१२४
अळभुट्ठेसि जाव बंदसि	१।५।६७	१।५।६६
अभिंसिचइ जाव पडिगए	१।१६।२८०	१।१।१६१
अभिंसिचइ जाव राया जाए विहरइ	१।५।६३-६५	१।१।१७-११६
अमच्चे जाव तुसिणीए	१।१२।१५	१।१२।७
अम्मयाओ जाव पव्वइत्तए	१।१।१०६	१।१।१०७
अम्मयाओ जाव सुलद्धे	१।१।१२	१।१।३३
अयमेयारुवे जाव समुप्पज्जित्था	१।५।६५	१।१।४८
अरहण्णग जाव बाणियगाणं	१।८।६७	१।८।६४
अरहण्णग संज्जत्तगा	१।८।८४	१।८।६६
अरिद्धेनेमि जाव गमित्तए	१।१६।३२०	१।१६।३३४
अरिद्धेनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	१।५।२०	१।१।१०६
अरिद्धे जाव पडिगए	१।१६।६५	१।१६।६१

अवरकंका जाव सण्णिवाडिया	१।१६।२७६	१।१६।२६२
अवसेसं तहेव जाव सामाइयमाइयाइं	१।५।६६-१०१	१।५।३४-३८
अवहरइ जाव तालेइ	१।१८।१२	१।१८।८
अवहिया जाव अवक्खित्ता	१।१६।२२०	१।१६।२१६
अवीरिए जाव अघारणिज्ज०	१।८।१६६	१।१६।२१
असक्कारिय जाव निच्छूढे	१।१६।२४६	१।१६।२४५
असक्कारिया जाव निच्छूढा	१।८।१७२	१।८।१५६
असणं जाव अणुवड्ढेमि	१।२।१२	१।२।१२
असणं जाव दवावेमाणी	१।१४।३६	१।१४।३८
असणं जाव परिभुजेमाणी	१।२।२०	१।२।१४
असणं जाव परिवेसेइ	१।२।५२,५३	१।२।३७,३८
असणं जाव विहरइ	१।१२।४	१।२।१४
असणं मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाणं		
कुलधर जाव सम्माणित्ता	१।७।२२	१।७।६
असण जाव पसन्नं	१।१६।१५२	१।१६।१५१
असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा एत्तो		
अणिट्ठतराए चेव	१।१६।५२	वृत्ति
असोगवणिया जाव कंडरीयं	१।१६।३४	१।१६।३३
अहं जाव अणेगभूयभावभविए	१।५।७६	१।५।७६
अहं जाव सुया	१।५।७६	१।५।७६
अहं रज्जं च जाव ओसन्न जाव उउबद्ध		
पीढ० विहरामि	१।५।१२४	१।५।१७,११८
अहम्मिए जाव अहम्मकेऊ	१।१८।१६	वृत्ति
अहम्मिए जाव विहरइ	१।१८।१६	१।१८।१६
अहाकप्पं जाव किट्ठेत्ता	१।१।२०१	१।१।१६८
अहापडिरूवं जाव विहरइ (ति)	१।१।६७;१।१६।११	१।१।४
अहापवत्तेहि जाव मज्जपाणएण	१।५।११६	१।५।११५
अहासुत्तं जाव सम्मं	१।१।२०१	१।१।१६८
अहिमडे इ वा जाव अणिट्ठतराए		
अमणामतराए	१।८।४२	वृत्ति
अदीण जाव सुरूवे	१।१।१६	ओ० सू० १५
अहो णं तं चेव	१।१२।१६	१।१२।१३
आइगरे जाव विहरइ	२।१।२०	१।१।६५
आइण्ण वेढो	१।१७।१४	वृत्ति

आएहि य जाव परिणामेमाणा	१।८।१०४	१।८।१६८
आउक्खएणं जाव चइत्ता	१।१६।१२३	१।१।२१२
आढंति जाव पज्जुवासंति	१।१६।१८८	१।१६।१८६
आढाइ जाव तुसिणीए	१।१२।७;१।१६।१५	१।८।१७०
आढाइ जाव तुसिणीया	२।१।३६	१।८।१७०
आढाइ जाव नो पज्जुवासइ	१।१६।१६०	१।१६।१८६
आढाइ जाव भोगं	१।१४।६१	१।१४।६०
आढाइ जाव संचिट्ठइ	१।१६।३०	१।८।१७०
आढायंति °	१।१।१५५	१।१।१५४
आढायंति जाव संलवेंति	१।१।१५४	१।१।१५४
आपुच्छइ जाव पडिगए	१।१६।२००	१।१।१६१
आपुच्छणिज्जं जाव बङ्गावियं	१।७।४२	१।७।६
आपुच्छामि जाव पब्बयामि	१।१२।३८	१।१।१०१
आपुच्छामि तएणं जाव पब्बयामि	१।१६।१२	१।१।१०१
आरोग्गतुट्ठी जाव दिट्ठे	१।१।२६	१।१।२०
आलंबे वा जाव भविस्सइ	१।१६।३१२	१।८।१८६
आलिघरएसु य जाव कुसुमघरएसु	१।३।१६	वृत्ति
आलोएहि जाव पडिबज्जाहि	१।१६।११५	वृत्ति
आसयंति वा जाव तुयट्ठंति	१।१७।२२	१।१७।२२
आसाएइ जाव अणुपरियट्ठिस्सइ	१।१६।४२	१।६।४४
आसाएमाणीओ जाव परिभुंजेमाणीओ	१।२।१७	१।१।८१
आसाएमाणी जाव बिहरइ	१।२।१४	१।१।८१
आसाएमाणे जाव बिहरइ	१।१२।२२	१।१।८१
आसायणिज्जं जाव सव्विदिय०	१।१२।२०	१।१२।४
आसायणिज्जे जाव सव्विदिय०	१।१२।१६	१।१२।४
आसिय जाव गंधवट्ठिभूयं	१।५।६७	१।१।३३
आसिय जाव परिगीयं	१।१।७६	वृत्ति
आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा	१।१६।२८	१।१।१६१
आसुरुत्ते जाव तिबलियं	५।८।१५६	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव तिबलियं एवं	१।१६।२८६	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव पउमनाभं	१।१६।२८०	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	१।५।१२२	१।१।१६१
आहारे वा जाव पब्बयामो	१।८।१३	१।५।६०
आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था	१।१।१६७	१।१।१५७
आहेवच्चं जाव पालेमाणे	१।५।६	१।१।११८

आहेवच्चं जाव विहरइ	१।३।८	१।१।११८
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।१८।२०	१।५।६
आहेवच्चं जाव विहरसि	१।१।१५७	१।५।६
इट्टा जाव मणामा	१।१६।७०	१।१।४६
इट्टा तं चेव	१।१६।४८	१।१६।४७
इट्टाहि जाव आसासेइ	१।१६।१३१	१।१।४६
इट्टाहि जाव एवं	१।८।२०३	१।१।४६
इट्टाहि जाव वग्गुहि	१।८।६७	१।१।४८
इट्टाहि जाव समासासेइ	१।१।५०	१।१।४६
इट्ठे जाव से णं	१।५।२०	१।१।१४५
इड्ढी जाव परक्कमे	१।८।७६; १।१६।२६५	उवा० २।४०
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।७।६; २।१।१२	१।१।४८
इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ	१।१४।४०	१।१।१६४
इहमागए जाव विहरइ	१।५।५३	१।१।६७; १।५।५२
ईसर जाव नीहरणं	१।१४।५६	१।५।६; १।२।३४
ईसर जाव पभित्तीणं	१।७।६	१।५।६
ईहामिय जाव भत्तिचित्तं	१।१।८६; १।८।४६	१।१।२५
उक्किट्ठ जाव समुहरवभूयं	१।१८।४०	१।८।६७
उक्किट्ठाए जाव देवगईए	१।१६।२०४, २०६	राय० सू० १०
उक्किट्ठाए जाए विज्जाहरगईए	१।१६।१६०	१।४।२१
उक्किट्ठाए प्फ कुम्मगईए	१।४।२१	वृत्ति
उक्खेवओ तइयवग्गस्स	२।३।१	२।२।१
उक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२।५।३	२।२।३
उज्जलंजाव दुरहियासं	१।१।१६३	१।१।१६२
उज्जला जाव दाहवक्कंतीए	१।१।१८७	१।१।१६२
उज्जला जाव दुरहियासा	१।५।१०६; १।१६।२०; १।१६।४५	१।१।१६२
उज्जाणे जाव विहरइ	१।१६।३२१	१।१६।३१६
उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदंढयं जाव		
धाउरत्ताओ	१।५।८०	अ० २।५२; १।५।५२
उत्तरिज्जेहि जाव चिट्ठाओ	१।८।१७६	१।८।१७७
उत्तरिज्जेहि जाव परम्मुहा	१।८।१७८	१।८।१७७
उदगपरिफोसिया जाव भिसियाए	१।८।१५१	१।८।१४१
उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं	१।२।१४	राय० सू० ६७
उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा	१।१६।१२८	१।१६।३७
उम्मुक्कबालभावा जाव रुवेण	१।८।३८; १।१६।३७	वि० १।४।३६

उम्मुक्कबालभावे जाव जोब्बणग०	१।१४।२२	१।१।२०
उरालस्स क सि घ मं जाव सुमिणस्स	१।१।१६	१।१।१६
उरालाई जाव भुंजमाणा	१।१२।४०	१।१६।११३
उरालाई जाव विहरइ	१।१४।२०	१।१२।४०
उरालाई जाव विहरिज्जामि	१।१६।११३	१।१६।११३
उरालाई जाव विहरिस्सइ	१।१६।२०४	१।१६।११३
उराले जाव तेयलेस्से	१।१६।१२	१।१।६
उरालेणं तहेव जाव भासं	१।१।२०४	१।१।२०२
उववेए जाव फासेणं	१।१२।४	१।१२।३
उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्ठियावेज्जमाणे	१।३।२२	१।३।२१
उव्वत्तेइ जाव टिट्ठियावेइ	१।३।२६	१।३।२१
उव्वत्तेति जाव दंतेहि निक्खुडेति जाव करेत्तए	१।४।१६	१।४।११
उव्वत्तेति जाव नो चेव णं संचाएति करेत्तए	१।४।१२	१।४।११
एगदिसि जाव बाणियगा	१।८।६७	१।८।६२
एगयओ जहा अरहन्नए जाव लवणसमुद्धं	१।१७।५	१।८।६६
एज्जमाणि जाव निवेसेह	१।८।१७१	१।१।४८; १।१६।१३१
एवं अत्थेणं दारेणं दासेहि पेसेहि परियणेणं	१।१४।७७	१।१४।७७
एवं कुलत्था वि भाणियव्वा । नवरं इमं		
नाणत्तं—इत्थि कुलत्था य धन्नकुलत्था य ।		
इत्थि कुलत्था तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—		
कुलबहुयाइ य कुलमाउयाइ य कुलधूयाइ या		
धन्नकुलत्था तहेव	१।५।७४	१।५।७३
एवं जहा मल्लिणाए	१।१६।२००	१।८।१५४
एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायणिहस्स	१।१८।३१, ३२	१।१८।२०, २२
एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं	२।१।१५	राय० सू० ६६८
एवं जहेव तयलिणाए सुव्वयाओ तहेव		
समोसढाओ तहेव संघाढओ जाव अणुपविट्ठे		
तहेव जाव सूमालिया	१।१६।६४-६७	१।१४।४०-४३
एवं जहेव राई तहेव रयणी वि	२।१।५७-६०	२।१।५७-५०
एवं जाव बोसस्स	२।३।११	ठाणं २।३।५६-३६२
एवं जाव सागरदत्तस्स	१।१६।८८-९१	१।१६।६३-६६
एवं पत्तियामि णं रोएमि णं	१।१।१०१	१।१।१०१
एवं पाएहि सीसे पोट्टे कायंसि	१।१।१५३	१।१।१५३
एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्टए वि		
कण्णसक्कुलीओ वि नासापुडाइ	१।१४।२१	१।१४।२१

एवं पासत्ये कुसीले पमत्तं
 एवं मासा बि । नवरं इमं नाणत्तं—मासा
 तिबिहा पणत्ता, तं जहा—कालमासा य
 अत्थमासा य घन्नमासा य । तत्थ णं जे ते
 कालमासा ते णं दुबालस तं जहा—सावणे
 जाव आसाढे । तेणं अभक्खेया । अत्थमासा
 दुबिहा हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य तेणं
 अभक्खेया । घन्नमासा तहेव
 एवं वट्टए आढोलियाओ तिट्ठसए पोचुल्लए
 साढोल्लए
 एवं सेसाओ बि
 एवं सेसाओ बि
 ओरोह जाव बिहरइ
 ओसन्ने जाव संथारए
 ओहय जाव क्रियायह
 ओहयमण जाव क्रियायइ
 ओहयमणसंकप्पं जाव क्रियायमाणि
 ओहयमणसंकप्पा०
 ओहयमणसंकप्पा जाव क्रियाइ
 ओहयमणसंकप्पा जाव क्रियायइ
 ओहयमणसंकप्पा जाव क्रियायंति
 ओहयमणसंकप्पा जाव क्रियायह
 ओहयमणसंकप्पा जाव क्रियायामि
 ओहयमणसंकप्पा जाव क्रियाहि
 ओहयमणसंकप्पे जाव क्रियामि
 ओहयमणसंकप्पे जाव क्रियायइ
 ओहयमणसंकप्पे जाव क्रियायमाणे
 ओहयमणसंकप्पे जाव क्रियायसि
 कंढरीए उट्ठाए उट्ठेइ उठेत्ता जाव से जहेयं
 कंत्ता जाव भवेज्जामि
 कंते जाव जीबियउत्तासए
 कक्खडा जाव दुरहियासा
 कज्जेसु य जाव रहस्सेसु
 कट्ठु जाव पडिसहेइ
 कट्ठस्स य जाव भरेति

१।५।११७

१।५।११७

१।५।७५

१।५।७३; भ० १।२।२५-२१६

१।१।५

१।१।५

२।७।६

२।७।२

२।५।६

२।५।२

१।१६।२२५

१।१६।१६५

१।५।१२५

१।५।११७

१।५।१७१

१।१।३४

१।३।२३

१।१।३४

१।१४।३५; १।१६।२०५

१।१।३४

१।१४।३५

१।१।३४

१।१।३४

वृत्ति

१।१४।३७; १।१६।६२, ५७, २०७

१।१।३४

१।६।१५

१।१।३४

१।५।१७३

१।१।३४

१।१६।६५

१।१।३४

१।१६।६४, ६२, २०५

१।१।३४

१।१७।१०

१।१।३४

१।५।१६५; १।१४।७७; १।१७।५

१।१।३४

१।१६।३२

१।१।३४

१।१७।६

१।१।३४

१।१६।१२

१।१।१०१

१।१६।६७

१।१४।४३

१।१।१४५

१।१।१०६

१।१।१६२

वृत्ति

१।७।४२

१।५।६०

१।१६।२५५

१।१६।२५१, २५२

१।१७।२५

१।१७।२२

कणग जाव दलयइ	१।१६।१६८	१।१।६१
कणग जाव पडिमाए	१।८।१८०	१।८।४१
कणग जाव सावएज्जं	१।१८।३८	१।१।६१
कणग जाव सिलप्पबाले	१।१८।३३	१।१।६१
कयकोउय जाव सब्बालंकारविभूसिया	१।१।८१	१।२।२६
कयत्थे जाव जम्म०	१।१३।३५	१।१३।२५
कयबलिकम्मं जाव सब्बालंकारविभूसियं	१।१६।७३	१।१।८१
कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता	१।१।२७	१।१।३३
कयबलिकम्मा जाव विपुलाइं जाव विहरइ	१।१।३२	१।२।६६
कयबलिकम्मे जाव रायगिहं	१।२।५८	१।१।८१
कयबलिकम्मे जाव सरीरे	१।१।६६	१।१।२७
कयबलिकम्मे जाव सब्बालंकार०	१।१।४७	१।१।८१
करयल०	१।५।६८, १।२३; १।८।७३, ८१, ६८, १।५८, १।६०; १।६।३१; १।१४।३१, ५०	१।१।१६
करयल०	१।८।२०३, २०४; १।१६।१३७, १६१, २१६, २६४; १।१७।११	१।१।२६
करयल०	१।१६।२४६	१।१।३६
करयल अंजलि	१।१।५८, ६०	१।१।१६
करयल जाव एवं	१।१।३०; १।१६।१७०, २६२; १।१६।१३, ४६; २।१।२०	१।१।२६
करयल जाव एवं	१।६।१७; १।१४।२७, २८; १।१६।४३	१।१।२१
करयल जाव कट्ठु	१।१।११८; १।१६।१३३; २।१।११	१।१।२६
करयल जाव कट्ठु तहेव जाव समोसरह	१।१६।१४२	१।१६।१३२
करयल जाव कण्हं	१।१६।१३८	१।१६।१३७
करयल जाव पच्चप्पिणंति	१।८।१६६	१।८।१६५
करयल जाव पडिसुणेइ	१।८।१६५	१।१।२६
करयल जाव वढावेइ	१।१५।१८	१।१।४८
करयल जाव वढावेति	१।१६।२३६	१।१।४८
करयल जाव वढावेति	१।१७।२६	१।१।३६
करयल जाव वढावेत्ता	१।८।१३१; १।१६।२४४	१।१।४८
करयल जाव वढावेहि	१।८।१०७	१।१।४८
करयल तं चेव जाव समासोरह	१।१६।१३४	१।१६।१३२
करयल तहत्ति जेणेव	१।१४।१३	१।५।१३
करयलपरिग्हियं जाव अंजलि	१।१।२१	१।१।१६

करयलपरिगहियं जाव कट्टु	१११३६	१११२६
करयलपरिगहियं जाव बद्धावेत्ता	११८१२६	१११४८
करयल बद्धावेह	११५१२०	१११४८
करयल बद्धावेत्ता	११८१०५	१११४८
करयल बद्धावेत्ता	१११६१५७	१११३६
करेह जाव अडमाणीओ	१११४११,४२	वृत्ति
करेंति जाव पच्चुत्तरंति	११६११५	११२११४
करेत्ता जाव विगयसोया	१११८१२७	११६१४८
करेमो तं चेव जाव णूमेमो	१११६१२८८	१११६१२८२
करेह करेत्ता जाव पच्चप्पिणह	२११११२	राय० सू० ६
करेह जाव पच्चप्पिणंति	११८१४०	११८१५१
कल्लं	११८१५१	१११२४
कल्लं जाव बिहरइ	११५११२४	११५११२४
कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा	११२१३३	११२१३३
कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए	११२१६७	११२१३३
कसप्पहारेहि य जाव लयाप्पहारेहि	११२१४५	११२१३३
कारणेसु य जाव तहा	११५१६०	१११११६
कालगए जाव प्पहीणे	१११६१३२२	११५१८४
कालोभासे जाव वेयणं	११२१६७	वृत्ति
कासे जोणिसूले जाव कोढे	१११६१३०	१११३१२८
किण्हाण य जाव सुक्किलाण	१११७१२२	१११७१२३
किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि	१११३१२०	१११७१२३
किण्होभासा जाव निउरंभूया	११७११३	ओ० सू० ४
कुंभए एवं तं चेव जाव पवेसेइ रोहासज्जे	११८११७४	११८११७३
कुडवा जाव एणदेसंसि	११७११७,१८	११७११५,१६
के जाव गमणाए	१११११११	१११११०७
कोट्टपुडाण य जाव अण्णेसि	१११७१२२	वृत्ति
कोट्टागारंसि सकम्म सं	११७१२५	११७१७
कोडुबिय जाव सिप्पामेव लहुकरणजुत्तं		
जाव जुत्तामेव उवट्ठवेंति	११८१५२	उवा० ११४७; ११८१५१
कोडुबियपुरिसा जाव एवं	१११५१७	१११५१६
कोडुबियपुरिसा जाव ते वि तहेव	११११११७	११११११६
कोडुबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति	१११६२	१११२३
संड जाव एडेह	१११६१७८	१११६१७४

संतीए जाव बंभचैरबासेणं	१।१०।५	१।१०।३
सिज्जणाहि य जाव एयमट्टं	१।१८।१४	१।१८।१०
सीरघाईए जाव गिरिकंदरमल्लीणा	१।१६।३६	आयारचूला १५।१४
गंध जाव उत्सुककं	१।८।८४	१।१।३०
गंध जाव पडिविसज्जेइ	१।१६।१६६	१।८।१६०
गंध जाव सक्कारेत्ता	१।७।६	१।१।३०
गंधवेहि य जाव बिहरंति	१।१६।१५२	१।१६।१५०
गज्जियं जाव थणियसद्दे	१।६।६	१।८।७१
गणनायग जाव आमंतेंति	१।१।८१	१।१।२४
गणिमस्स जाव चउव्विहभंडगस्स	१।८।६६	१।८।६६
गन्धस्स जाव बिणेंति	१।२।१७	१।२।१७
गय०	१।८।६३	१।१।६७
गवलगुलिय जाव क्षुरघारेणं	१।६।१६	उवा० २।२२
गवल जाव एडेमि	१।६।३७	१।६।१६
गहाय जाव पडिगए	१।१८।३६	१।१८।३८
गामघां वा जाव पंथकोट्टि	१।१८।२४	१।१८।२२
गामागर जाव अणुपविससि	१।१६।२२६	१।८।५८
गामागर जाव आहिडह	१।१४।४३; १।१७।१७	१।८।५८
गिण्हामि जाव मगगणवेसणं	१।२।२६	१।२।२७, २६
गुणे० किं चालेइ जाव नो परिक्खयइ	१।८।७६	१।८।७४
घडएसु जाव संवसावेइ	१।१२।१६	१।१२।१६
चउत्थ जाव भावेमाणे	१।८।१६	१।१।१६५
चउत्थ जाव बिहरइ	१।५।१०१; १।१।३३	१।१।१६५
चउत्थ जाव बिहरंति	१।८।१७, २५	१।१।१६५
चउत्थस्स उव्वसवअ।	२।४।१	२।२।१
चंपगपायवे०	१।१८।४६	१।१।१०५
चच्चर जाव महापहपहेसु	१।१।६७	१।१।३३
चरगा वा जाव पच्चप्पिणंति	१।१५।७	१।१५।६
चरमाणा जाव जेणेव	१।२।६६	१।१।४
चरमाणे जाव जेणेव	१।५।१०	१।१।४
चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव		
बिहरइ	१।५।१०८	१।१।४
बबलं० नहेहि	१।४।१७	१।४।१४
चारगसोहणं जाव ठिइपडियं	१।१४।३३, ३४	१।१।७६-७६

चारुवेसा जाव पडिरूवा	१।२।८	१।१।१७
चालित्तए जाव विप्परिणामित्तए	१।८।७६	१।८।७६
चिट्ठइ जाव उट्टाए	१।१।१५१	१।१।१५०
चिट्ठइ जाव संजमेणं	१।१।१६३	१।१।१५१
चित्तेह जाव पच्चप्पिणह	१।८।११७	१।१।२३
चेइए जाव अहापडिरूवं	१।२।६६	१।१।४
चेइए जाव विहरइ	१।१।६४	१।१।४
चेइए जाव संजमेणं	२।१।३	१।१।४
चोक्खा जाव सुहासणवरगया	१।१६।१५२	१।२।१४
चोरनायगं जाव कुडगे	१।१।८।३०	१।१।८।२१
चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए	१।१।८।२८	१।१।८।२५
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ	१।१३।३६	१।१३।३६
जाव विहरइ	१।१६।१०८	१।१६।१०६
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरित्तए	१।१६।१०७	१।१६।१०६
छट्ठम जाव विहरइ	१।१६।१०५	१।१।१६५
जणवयं जाव नित्थाणं	१।१।८।३२	१।१।८।२२
जहा पोट्टिला जाव परिभाएमाणी	१।१६।६२	१।१४।३८
जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलिय सरीरे		
जाए	१।१६।२४-२६	१।५।११४-११६
जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा	१।१७।११	१।८।७२
जहा महब्बले जाव परिवट्ठिया	१।८।३७	राय० सू० ८०४
जहा मार्गदियदारगणं जाव कालियवाए	१।१७।६	१।६।६
जहा बद्धमाणसामी नवरं नवहत्थुस्सेहे०	२।१।१६	ओ० सू० १६; वाचनान्तर पृ० १४०
जहा सूरियाभो जाव भासमणपज्जसीए	२।१।४०	राय० सू० ७६७
जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए	१।१६।२०	१।५।१०६
जायं च जाव अणुवड्ढेमि	१।२।१४	१।२।१२
जाया जाव पडिलाभेमाणी	१।१४।४६	१।५।४७
जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे	१।१२।२३	१।१२।२२
जाव जहा	१।४।२२	१।२।७६
जाव पज्जुवासइ	१।५।१७	१।१।६६
जाव सणियं	१।४।१६	१।४।१३
जाव समणोवासए जाए अभिगयजीवा-		
जीवे जाव पडिलाभेमाणे	१।५।६३, ६४	राय० सू० ६६३; १।५।४७
जाव हावभावं	१।८।१२१	१।८।११७

जिमिय जाव सूइभूया	१।२।१४	१।१।८१
जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासण०	१।१६।२१६	१।२।१४
जोब्बणेण य जाव नो सलु	१।८।१५४	१।८।६०
भोडा जाव मिलायमाणा	१।११।४	१।११।२
ठवेति जाव चिट्ठति	१।१७।२२	१।१७।२२
डिभएहि य जाव कुमारियाहि	१।२।२७	१।२।२५
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	१।१४।६४	१।१।२७
ण्हाए जाव सरणं उवेइ २ करयल एवं व	१।१६।२६५	१।१६।२६४
ण्हाए जाव सुद्धप्पावेसाहं	१।२।७१	१।१।१२४
ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणीयं	१।१४।५३	१।१४।१८
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।२।६६; १।८।१७६	१।१।२७
ण्हाया जाव बहूहि	१।८।१६८	१।८।१७६
ण्हाया जाव सरीरा	१।३।११	१।१।२७
ण्हायाणं जाव सुहासण०	१।१६।८	१।७।६
तइयज्झयणस्स उक्खेबओ	२।१।५६	२।१।४६
तइयवग्गस्स निक्खेबओ	२।३।१२	२।१।६३
तएणं से दूए एवं बयासी जहा बासुदेवे		
नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव	१।१६।१४३, १४४	१।१६।१३४-१४१
तं इक्खामि णं जाव पब्बइत्तए	१।१।१११	१।१।१०४
तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स		
जाव पब्बइत्तसि	१।१।१०७	१।१।१०६
तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स	१।१८।५२	१।१८।५१
तं रयणिं च णं बोइस्स महासुमिणा		
वण्णओ	१।८।२६	कल्पसूत्र ४
तक्करे जाव गिट्ठे विव आमिसभक्खी	१।२।३३	१।२।११
तच्चं दूयं चंपं नयारि । तत्थ णं तुम		
कण्णं अंगरायं सत्तं नंदिरायं करयल		
तहेव जाव समोसरह । चउत्थं दूयं		
सोत्तिमइं नयारि । तत्थ णं तुमं सिसु-		
पालं वमघोससुयं पंचभाइसय-संपरिवुडं		
करयल तहेव जाव समोसरह । पंचमं		
दूयं हत्थिसीसं नयारि । तत्थ णं तुमं		
वमदत्तं रायं करयल जाव समोसरह ।		
छुट्ठं दूवं महुवरं नयारि । तत्थ णं तुमं		

धरं रायं करयल जाव समोसरह ।
 सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं । तत्थ णं
 तुमं सहदेवं जरासंघसुयं करयल जाव
 समोसरह । अट्टमं दूयं कोडिण्णं नयरं ।
 तत्थ णं तुमं कप्पि भेसगसुयं करयल
 तहेव जाव समोसरह । नवमं दूयं
 बिराटं नयरिं । तत्थ णं तुमं कीयगं
 भाउसयसमगं करयल जाव समोस-
 रह । दसमं दूयं अबसेसेसु गामागर-
 नगरेसु अणेगाइं रायहत्साइं जाव-समो-
 सरह । तए णं से दूए तहेव निगगच्छइ
 जेणेव गामागर तहेव जाव समोसरह ।

तच्चं पि जाव संबिट्ठइ
 तच्चा जाव सम्भूया
 तणकूडे०
 तत्थे जाव संजायभए
 तयावर ईहापूह जाव सण्णिजाइसरणे
 तलवर जाव पमितओ
 तलवर जाव सत्थवाह
 तहत्ति जाव पडिसुणेंति
 तहारूवेहि जाव विपुलं
 तहेव जाव पहारेत्थ
 तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सम्भं
 जाव अंतं
 तहेव सेयापीएहि कलसेहि ण्हावेइ
 जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइ-

छत्तं पडागाइपडागं पासइ २ त्ता
 विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता
 ताओ जाव विदेहे वासे जाव अंतं
 तिकखुत्तो जाव एबं
 तिग जाव पहेसु
 तिग जाव बहुजणस्स
 तित्तेसु जाव विमुक्कबंघणे
 तुट्ठी वा जाव आणंदो
 तुळभण्णं जाव पव्वयामि
 तुरियं जाव वेइयं

१।१६।१४५

१।१६।३५

१।१२।३१

१।१४।७७

१।१।१६८

१।८।१८१

१।१४।६५

१।५।६

१।५।१३

१।१।२१५

१।८।१३६, १३७

२।१।५१-५४

१।५।२८, २९

१।१६।३२६

१।१६।३४

१।५।२६

१।१६।२६

१।६।४

१।२।६४

१।१२।४३

१।८।१६६

१।१६।१३२-१३४

१।१६।३५

१।१२।१६

१।१४।७६

१।१।१६०

१।१।१६०

१।५।६

ओ० सू० ५२

१।१।२६

१।१।२०६

१।८।६६, १००

२।१।३२-४४

१।१।१२६, १४४, ६६

१।१।२१२

१।१६।२६

१।१।३३

१।५।५३

१।६।४

१।२।६३

१।१।१०४

१।४।१४

तुरुक्क जाव गंघवट्टिभूयं	१।१६।१५५	१।१।२२
तेसि जाव बहूणि	१।१७।६	१।८।७१
थलय०	१।८।४६	१।८।३०
थलय जाव दसद्धवणं	१।८।३१	१।८।३०
बल्लय जाव मल्लेणं	१।८।३२	१।८।३०
थावच्चापुत्ते जाव मुंटे	१।५।८०	१।५।३४
थेरागमणं इंदकुंभे उज्ज्वाणे समोसठा	१।८।८	१।८।१२
थेरा जाव आलित्ते	१।१६।३१५	१।१।१४६
दंडणाणि जाव अणुपरियट्टइ	१।४।१८	सूय० २।२।७८
दंडणाणि य जाव अणुपरियट्टइ	१।३।२४	१।३।२४
दसमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव अट्ट	२।१०।१,२	२।२।१,२
दाणघम्मं च जाव विहरइ	१।८।१४१ १५२	१।८।१४०
दारियं जाव भियायमाणि	१।१६।६४	१।१६।६२
दासवेडियाहि जाव गरहिज्जमाणी	१।८।१४७	१।८।१४६
दाहिणकुभरहस्स जाव दिसं	१।१६।२६६	१।१६।२६७
दिट्ठे जाव आरोग	१।१।२०	१।१।२०
दित्ते जाव विउलभत्तपाणे	१।२।७	वृत्ति
दीहमद्धं जाव वीईवइस्सइ	१।२।७६	१।२।६७
दुपयस्स वा जाव निव्वत्तेइ	१।८।१२६	१।८।११६
दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ	१।१७।१३	१।१।१०२
दुरुहंति जाव कालं	१।१६।३२३	१।१६।३२३
दुरूढा जाव पाउब्भवंति	१।८।१४	१।५।६१
दूइज्जमाणा जाव जेणेव	१।१६।३२१	१।१।४
दूइज्जमाणे जाव विहरइ	१।१६।३२०	१।१।४; १।१६।३१६
देवकन्ना	१।८।१५४	१।८।८६
देवकन्ना वा जाव जारिसिया	१।८।८६, १११	वृत्ति
देवयभूयाए जाव निव्वत्तिए	१।८।१२८	१।८।१२६
देवलोगाओ जाव महाविदेहे	१।१६।२४	१।१।२१२
देवाणुप्पिया जाव कालगए	१।१६।३२३	१।१६।३२२
देवाणुप्पिया जाव जीवियफले	१।८।७६	उवा० २।४०
देवाणुप्पिया जाव नाइ	१।१६।२६५	१।५।१२३
देवाणुप्पिया जाव पव्वत्तिए	१।१६।३४	१।१६।२६
देवाणुप्पिया जाव साहुराहि	१।१६।२४२	१।१६।२४०
देवाणुप्पिया जाव सुलद्धे	१।१६।२६	१।१६।२६
देवी जाव पंडुस्स	१।१६।३०१	१।१६।२६२

देवी जाव पडमनाम०	१।१६।२३६	१।१६।२३३
देवी जाव साहिया	१।१६।२४०	१।१६।२०८
देवेण वा जाव निगंथाओ	१।८।७५	उवा० २।४५
देवेण वा जाव मल्लीए	१।८।१३५	१।८।७५
दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ	२।२।१	२।१।६
घण कणग जाव परिभाएउं	१।१।६२	१।१।६१
घण जाव सावएज्जस्स	१।७।३४	१।१।६१
घण जाव सावएज्जे	१।१६।६	१।१।६१
घण्णा णं ते जाव ईसरपभियओ	१।१३।१५	१।१।३३
घम्मं सोच्चा जं नवरं	१।५।८७	१।१।१०१
घम्मं सोच्चा जहा णं देवाणुप्पियाणं, अंतिए बहुवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरण्णं जाव पव्वइया तहा णं अहं		
णो संचाएमि पव्वइए	१।५।४५	राय० सू० ६६५
घम्मकहा भाणियव्वा	१।५।७८	१।५।६३
घम्मोत्ति वा जाव विजयस्स	१।२।७५	१।२।६४
घोवसि जाव आसयसि	२।१।३५	२।१।३४
घोवेइ जाव आसयइ	२।१।३८	२।१।३४
घोवेइ जाव चेएइ	१।१६।११६	१।१६।११४
घोवेसि जाव चेएसि	१।१६।११५	१।१६।११४
नंदीसरे अट्ठाहियं करेति जाव		
पडिगया	१।८।२२४	जंजू० वस० ५
नगरगिहाणि	१।८।६७	१।८।५८
नगर जाव सण्णिवेसाणं आहेवच्चं		
जाव विहराहि	१।१।११८	ओ० सू० ६८
नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ	१।१४।८५	१।१।६६
नट्टा य जाव दिन्न०	१।१३।२०	ओ० सू० १
नट्टमईए जाव अवहिए	१।१७।१०	१।१७।८
नयरिं अणुपविसह	१।१६।२१६	१।१६।२१८
नवमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंजू		
जाव अट्ठ	२।६।१,२	२।२।१,२
नवरं तस्स	१।७।२८,२६	१।७।८,२५,२६
नाइ० १।५।२६; १।७।६, ६, २२, २६, ४२; १।१५।११; १।१६।५०, ५४; १।१८, ५१, ५६		१।१।८१
नाइ० १।१४।१८; १।१५।१६		१।५।२०

नाइ चउण्ह य कुल जाव विहराहि	१।७।२५	१।७।६
नाइ जाव आमंतेइ	१।१४।५३	१।७।६
नाइ जाव नगरमहिलाओ	१।२।१६	१।२।१२
नाइ जाव परियणं	१।१४।१६	१।१।८१
नाइ जाव परियणेण	१।६।४८	१।१।८१
नाइ जाव परिकुठे	१।१६।५०	१।५।२०
नाइ जाव संपरिकुठे	१।१३।१५; १।१४।५३	१।५।२०
नामं वा जाव परिभोगं	१।१६।६७	१।१४।३६
नाम जाव परिभोगं	१।१४।३७	१।१४।३६
नासानीसासवायवोज्झं जाव		
हंसलक्खणं	१।१।१२८	आयारचूला १।५।२८
निक्खेवओ	२।४।६	२।१।४५
निक्खेवओ अज्झयणस्स	२।२।८	२।१।४५
निक्खेवओ चउत्थवग्गस्स	२।४।६	२।१।६३
निक्खेवओ दसमवग्गस्स	२।१०।७	२।१।६३
निक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२।३।८	२।१।४५
निक्खेवओ बिइयवग्गस्स	२।२।१०	२।१।६३
निग्गंथा जाव पडिसुणेंति	१।१६।२३	१।१।२६
निग्गंथाणं जाव विहरित्तए	१।५।१२४	१।५।११४
निग्गंथी वा	१।१८।६१	१।२।६८
निग्गंथी वा जाव पव्वइए	१।७।२७; १।१०।३; १।११।३, ५	१।२।६८
निग्गंथे वा जाव पव्वइए	१।२।७६	१।२।६८
निग्गंथो वा	१।१७।२५, ३६	१।२।६८
निग्गंथी वा जाव पंचसु	१।१५।१४	१।३।२४
निग्गंथो वा २ जाव विहरित्तइ	१।५।१२६	१।२।७६
निट्ठियं जाव विज्झायं	१।१।१८४	१।१।१८३
निप्पाणे जाव जीवविप्पज्जे	१।१८।५४	१।२।३२
नियगं	१।७।६	१।१।८१
निब्बत्तियनामधेज्जे जाव चाउदंते	१।१।१६७	१।१।१५६
निब्बाघायंसि जाव परिवङ्गइ	१।१६।३६	राय० सू० ८०४
निसंते जाव अन्नणुणायो	१।१४।५०	१।१।१०४
निसम्मं जं नवरं महव्वलं कुमारं		
रज्जे ठावेमि	१।८।८	१।५।८७
निसीयइ जाव कुसलोदंतं	१।१६।१६८	१।१६।१८७

निस्संचारं जाव चिट्ठंति	१।८।१७२	१।८।१६७
नीलुप्पल०	१।१८।४६	१।६।१६
नीलुप्पल जाव अंसि	१।१४।७३	१।६।१६
नीलुप्पल जाव खंधंसि	१।१४।७७	१।१४।७३
पउमनाहे जाव नो पडिसेहिए	१।१६।२८७	१।१६।२८५
पंचअणगारमया वह्णि वामाणि मामण-		
परियागं पाउणिता जेणेव पुंडगीए पव्वाए		
तेणेव उवागच्छंति जहेव थावच्चापुत्ते		
तहेव सिद्धा०	१।५।१२७, १२८	१।५।८३, ८४
पंचमवग्गस्स उक्खेवओ एव खलु जंबू		
जाव बत्तीसं	२।५।१, २	२।२।१, २
पंचमे जाव भवियव्वं	१।७।३३	१।७।२५, ६
पंचयण्णं जाव पूरियं	१।१६।२७६	१।१६।२७५
पंचाणुव्वइयं जाव समणोवामए जाए		
अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं	१।५।४५-४७	वृत्ति; ओ० सू० १२०, १६२
पंडवा०	१।१६।३१३	१।१।११६
पंथएणं जाव विहरइ	१।५।१२६	१।५।१२४
पगइभए जाव विणीए	१।१।२०६; १।१६।२४	ओ०सू० ११६
पच्चक्खाए जाव आलोइय०	१।१६।४६	१।१।२०६
पच्चक्खाए जाव थूलाए	१।१३।४२	१।१।२०६
पज्जग जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे		
पव्वइस्ससि	१।१।१११	१।१।११०
पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति	१।१।७७	१।१।२३
पट्टिया जाव गहियाउहपहरणा	१।२।३२	राय०सू० ६६४
पडागे जाव दिसोदिसि	१।१६।२५२	वृत्ति
पडिबुद्धा जाव विहाडिय	१।१६।६५	१।१६।६२
पडिबुद्धि जाव जियसत्तुं	१।८।३६	१।८।२७
पडिबुद्धी० करयल०	१।८।४७	१।१।३६
पडिलाभेमाणे जाव विहरइ	१।५।५६	१।५।५२
पडिसुणेंति जाव उवसंपज्जिता	१।१६।२३	१।५।११३
पढमज्झयणस्स उक्खेवओ	२।७।३; २।८।३; २।६।३	२।२।३
पढमस्स उक्खेवओ	२।१०।३	२।२।३
पणामेत्ता जाव कूबं	१।१६।२४४	१।१६।२४३
पणत्ते जाव सगं	१।५।६०	१।५।५५

पतिवया जाव अपासमाणी	१।१६।६२	१।१६।५६
पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए	१।७।१५	१।७।१४
पत्तिया जाव चिट्ठंति	१।११।२	१।११।२
पत्तेयं जाव पहारेत्थ	१।१६।१७१	१।१६।१४६
पमाएयब्बं जाव जामेव	१।५।३३	१।१।१४८
परलोए नो आगच्छइ जाव वीईवइस्सइ	१।१५।१४	१।२।७६
परिग्गहिए जाव परिवसित्तए	१।८।१३१	१।८।१०७
परिणमंति तं चेव	१।१२।१७	१।१२।६
परिणममाणा जाव ववरोवेति	१।१५।१५	१।१५।११
परिणामेणं जाव जाईसरणे	१।१३।३५	१।१।६०
परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं	१।१४।८३	१।१।१६०
परितंता जाव पडिगया	१।१३।३१	१।४।१६
परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति	१।१७।२२	१।१७।२२
परियागए जाव पासित्ता	१।३।१६	१।३।५
परियाणह जाव मत्थयंसि	१।१।४८	१।१।४८
पल्लंसि जाव बिहरंति	१।७।२०	१।७।१६
पवर जाव पडिसेहित्था	१।१६।२५६	१।८।१६५
पवर जाव भीए	१।१८।४४	१।१८।४२
पवरविबडिय जाव पडिसेहिया	१।१६।२५३	१।८।१६५
पव्वए जाव सिद्धे	१।५।१०४, १०५	१।५।८३, ८४
पव्वावेइ जाव उवसंपज्जित्ता	२।१।३०, ३१	१।१।१५०, १५१
पव्वावेइ जाव जायामायाउत्तियं	१।१।१६२	१।१।१५०
पसन्थदोहला जाव बिहरइ	१।८।३३	१।१।६८, ६९
पाणाइवाएणं जाव मिच्छदंसणसल्लेणं	१।६।४	१।१।२०६
पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा	१।१।१८६	१।१।१८१
पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए	१।१।१८२	१।१।१८१
० पामोक्खा जाव वाणियगा	१।८।८१	१।८।६६
० पामोक्खे जाव वाणियगे	१।८।८३	१।८।६६
पायसंघट्टाणाणि य जाव रयरेणुगुंडणाणि	१।१।१८६	१।१।१५३
पावयणं जाव पव्वइए	१।२।७३	१।१।१०१; भ० ६।१५०, १५१
पावयणं जाव से जहेयं	१।१२।३५	१।१।१०१
पासाईए जाव पडिरूवे	१।१।८६	१।१।८६
पासित्ता जाव नो वंदसि	१।५।६७	१।५।६६
पियं जाव विविहा	१।१।२०६	भ० २।५२

पीइदाणं जाव पडिविसज्जेइ	१।३।३१	१।१।३०
पीइमणा जाव हियया	२।१।११	१।१।१६
पीढं	१।५।११७	१।५।११०
पुच्छणाए जाव एमहालियं	१।१।१५४, १५५	१।८।१५३
पुढवि जाव पाओबगमणं	१।५।८३	१।१।२०६
पुसघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स	१।२।५६, ६४	१।२।४०
पुप्फ जाव मल्लालंकार	१।२।१४	१।२।१२
पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा	१।१३।१६	१।१।१२
पुरापोराणं जाव पच्चणुब्भवमाणी	१।१६।६२	वृत्ति
पुरापोराणं जाव विहरइ	१।१६।११३	१।१६।६२
पुव्वभवपुच्छा एवं	२।१।५०	२।१।१५
पोक्खरिणीओ जाव सरमरपंतियाओ	१।१३।१५	राय०सू० १७४
पोसहसालं जाव पुव्वसंगइयं	१।१६।२०१-२०३	१।१६।२३७-२३६
पोसहसालाए जाव विहरइ	१।१३।१४	१।१।५३
फलिया जाव उवसोभेमाणा	१।११।४	१।१।१२
फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं	१।५।११४	१।५।११०
फासुयं पीढ जाव विहरइ	१।५।११३	१।५।११०
बंधिता जाव रज्जू	१।१४।७७	१।१४।७३
बहिया जाव खणावेत्तए	१।१३।१५	१।१३।१५
बहिया जाव विहरंति	१।५।११८	१।१।१६६
बहिया जाव विहरित्तए	१।५।११७	१।१।१६६
बहुनायाओ एवं जहा पोट्टिला जाव उव्वलद्धे	१।१६।६७	१।१४।४३
बहूइं जाव पडिगयाइं	१।१६।१८२	१।८।१६१
बहूणि गामाणि जाव गिहाइं	१।१६।१६६	१।८।५८
बहूहि जाव चउत्थ विहरइ	१।५।३८	१।१।१६५
बहूसु जाव विहरेज्जाह	१।६।२०	१।६।२०
बारवइं एवं जहा पंडू तहा घोमणं घोसावेइ		
जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा	१।१६।२२३, २२४	१।१६।२१३, २१४
बावत्तरि कलाओ जाव अलंभोगसमत्थे	१।१६।३०८, ३०६	१।१।८४, ८५
बासट्ठि जाव उत्तरइ	१।१६।२८७	१।१६।२८५
बासट्ठि जाव उत्तिण्णा	१।१६।२८७	१।१६।२८५
बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ	२।१।५५	२।१।४५
बुज्झिहिइ जाव अतं	१।१३।४४	१।१।२१२

भगवओ जाव पव्वइत्तए	१।१।११३	१।१।१०४
भड०	१।८।६४	१।८।५७
भवणवइ० तिस्थयर०	१।८।३६	कल्पसूत्र महावीरजन्म प्रकरण
भविता जाव बोहसपुव्वाइं	१।१४।८२	१।५।८०
भविता जाव पव्वइत्तए	१।८।२०४; २।१।२७	१।१।१०४
भविता जाव पव्वइस्सामो	१।१२।४०	१।१।१०१
भविता जाव पव्वयामो	१।८।१८६; १।१६।३१०	१।१।१०१
भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स	२।४।८	ठाणं० २।३५५-३६२
भारहाओ जाव हत्थिणाउरं	१।१६।२४०	१।१६।२५४
भाव जाव चित्तेउं	१।८।११८	१।८।११७
भासासमिए जाव बिहरइ	१।५।३५-३७	वृत्ति
भीए जाव इच्छामि	१।१२।३६	१।५।२१
भीए जाव संजायभए	१।१४।६६	१।१।१६०
भीया जाव संजायभया	१।६।२५, २७	१।१।१६०
भीया वा	१।८।७६	१।८।७३
भीया संजायभया	१।८।७२	१।१।१६०
भुंजावेंति जाव आपुच्छंति	१।८।६६	१।८।६६
० भुत्तुत्तरागए जाव सुइभूए	१।१२।४	१।२।१४
भेसज्जेहिं जाव तेगिच्छं	१।१६।२२	१।५।११०
भोगभोगाइं जाव बिहरइ	१।१।६६	१।१।१७
भोगभोगाइं जाव बिहरति	१।१६।१८३	१।१।३२
भोगभोगाइं जाव बिहराहि	१।१६।२०८	१।१।३२
मइविकप्पणाहिं जाव उवणेंति	१।१६।२४७	ओ० सू० ५७
मज्झंमज्जेणं जाव सयं	१।१६।१६६	१।१६।२१८
मट्टियाए जाव अविग्गेणं	१।८।१४३	१।५।६०
मट्टियालेवे जाव उप्पत्तिता	१।६।४	१।६।४
मणुण्णे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे	१।१२।८	१।१२।४
मत्थयच्छिहुए जाव पडिमाए	१।८।४१, ४२	१।८।४१
मयूरपोयगं जाव नदुल्लगं	१।३।२८	१।३।२७
महत्थं०	१।८।८१	१।८।८१
महत्थं जाव उवणेंति	१।८।८४	१।८।८१
महत्थं जाव तिस्थयराभिसेयं	१।८।२०५	१।१।११६
महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं	१।५।६८	१।१।११६
महत्थं जाव पडिच्छइ	१।१७।१७	१।८।८२

महत्थं जाव पाहुळं	११७।१६	१।५।२०
महत्थं जाव पाहुळं रायारिहं	१।१३।१५	१।५।२०
महत्थं जाव रायाभिसेयं	१।५।६२; १।१६।३७	१।१।११६
महब्बले जाव महया	१।८।१६	१।५।३४
महयाहय जाव बिहरइ	२।१।१०	राय० सू० ८
महालियं जाव बंधिता अत्याह जाव उदगंसि	१।१४।७७	१।१४।७५
महावीरस्स जाव पब्बइस्ससि	१।१।११०	१।१।१०६
महिङ्गीए जाव महासोक्खे	१।१।५३	सूय० २।२।७३
महुरालाउयं जाव नेहावागाढं	१।१६।८	१।१६।८
माणुस्सगाइं जाव बिहरइ	१।१५।१६	१।१।६७
माया इ वा जाव सुण्हा	१।१४।७१	सूय० २।२।७
मासाणं जाव दारियं	१।१६।१२४	१।२।२०
माहण जाव वणीमगाण	१।१४।३८	आयारभूला १।१६
माहणी जाव निसिरइ	१।१६।२४	१।१६।१४
मित्त	१।७।२२	१।१।८१
मित्त जाव चउत्थ	१।७।१०	१।७।६
मित्त जाव बहवे	१।७।३८	१।७।२५, ११
मित्त जाव संपरिवुडा	१।५।२०	१।२।१२
मित्तनाइ गणनायग जाव सडि	१।१।८१	१।१।८१
मित्तपक्खं जाव भरहो	१।१।११८	वृत्ति
मुडावियं जाव सयमेव	१।१।१६१	१।१।१४६
मुंडे जाव पब्बयाहि	१।१६।१४	१।१।१०१
मुच्छिण जाव अज्झोववण्णे	१।१६।२६	१।१६।२८
मेहे जाव सवणाए	१।१।१५४	१।१।१०६
य णं जाव परमसुइभूए	१।१२।२२	१।१।८१
रज्जइ जाव नो बिप्पडिघाय०	१।१६।४६	१।१७।२५
रज्जं च जाव अंतेउरं	१।१६।२६	१।१।१६
रज्जे जाव अंतेउरे	१।१४।६०	१।१४।२१
रज्जे य जाव अंतेउरे	१।८।१५१; १।१६।१८७; १।१६।२६	१।१।१६
रज्जे य जाव वियगेइ जाव अंगमगाइ	१।१४।२२	१।१४।२१
रज्जे य जाव वियत्तेइ	१।१४।२२	१।१४।२१
रण्णो जाव तहत्ति	१।१६।३०३	१।८।१०४
रण्णो वा जाव एरिसए	१।८।१५३	१।८।६७
रयण जाव आभाणी	१।१८।५६	१।१६।१; १।१८।५१

रहमहया	१।१६।१४७	१।८।५७
राईसर जाव गिहाइं	१।१४।४३	१।८।५८
राईसर जाव विहरइ	१।८।१४६	१।८।१४०
रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा	१।१४।५६	१।१४।५६
रिउब्बेय जाव परिणिट्टिया	१।८।१३६	ओ० सू० ६७
रुट्टा जाव मिसिमिसेमाणी	१।२।५७	१।१।१६१
रूवेण य जाव उक्किट्टसरीरा	१।१६।२००	१।८।६०
रूवेण य जाव लावण्णेण	१।१६।१६०	१।८।३८
रूवेण य जाव सरीरा	१।१४।११	१।८।६०
रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण	१।१८।१३	१।१८।६
रोयमार्णि जाव नावयक्खसि	१।६।४०	१।६।४०
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।२।३४	१।२।२६
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।६।४७	१।६।४०
लद्धमईए जाव अमूढदिसाभाए	१।१७।१३	१।१७।१२
लवण जाव ओगाहित्तए	१।६।६	१।६।४
लवण जाव ओगाहेह	१।६।५	१।६।४
लवणसमुद्दे जाव एडेमि	१।६।२०	१।६।१६
लोइयाइं जाव विगयसोए	१।१८।५७	१।६।४८
वंदामो जाव पज्जुवासामो	१।१३।३८	ओ० सू० ५२
वंदित्तए जाव पज्जवासित्तए	२।१।१२	राय० सू० ६ वृत्ति
वण्णहेडं वा जाव आहारेइ	१।१८।४८	१।१८।६१
वण्णेणं जाव अहिए	१।१०।४	१।१०।२
वण्णेणं जाव फासेणं	१।१२।३	१।१२।१२
वत्थ जाव पडिविसज्जेइ	१।१४।१६	१।८।१६०
वत्थ जाव सम्माणेत्ता	१।१६।५४	१।७।६
वत्थस्स जाव सुद्धेणं	१।५।६१	१।५।६१
वत्थे जाव तिसंभं	१।७।३३	१।७।६
वयासी जाव के अन्ने आहारे जाव पब्बयामि	१।१२।४५	१।५।६०
वयासी जाव तुसिणीए	१।१६।१६, १७	१।१६।१४, १५
वरतरुणी जाव सुरूवा	१।१।१३७	१।१।१३४
ववरोवेह जाव आभागी	१।१८।५३	१।१८।५२
वाइय जाव रवेणं	१।८।२०२	१।१।११८
वाणियगाणं जाव परियणा	१।८।६७	१।८।६६
वावाहं वा जाव :	१।४।२०	१।४।११

बायणाए जाव धम्माणुओगचिताए	१।१।१८६	१।१।१५३
बाराओ तं चेव जाव नियघरं	१।६।४	१।६।४
बावीसु य जाव विहरेज्जाह	१।६।२०	१।६।२०
बासाइं जाव देंति	१।२।१२	१।२।१२
वासुदेवपामोक्खे जाव उवागए	१।१६।१७७	१।१६।१७६
वासुदेवे धणुं परामुसइ वेढो	१।१६।२५८	वृत्ति
बासे जाव असीइं च सयसहस्मा दलइत्तए	१।८।१६४	१।८।१६४
विउला पगाढा जाव दुरहियासा	१।१६।४०	१।१।१६२
विगोवइत्ता जाव पव्वइए	१।१६।२६	ओ० सू० ५२
विजया जाव अवक्कमामो	१।२।४७	१।२।४४
विणिम्मयमाणी २ एवं	१।५।३३	१।१।१४८
वेज्जा य जाव कुसलपुत्ता	१।१३।३०	१।१३।२६
सइं वा जाव अलभमाणा	१।६।२२,२४	१।६।२१
सइं वा जाव जेणेव	१।६।२३	१।६।२१
संकामेत्ता जाव महत्थं पाहुडं	१।८।८४	१।८।८१
संकिए जाव कलुससमावण्णे	१।३।२४	१।३।२१
संगयगयहसिय०	१।३।८	१।१।१३४
संचाएइ जाव विहरित्तए	१।५।११८	१।५।११७
संचाएत्ति० करेत्तए ताहे दोच्चं पि अवक्कमंति	१।४।१४,१५	१।४।११,१२
संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ	१।८।८२	१।८।८१
संता जाव भावा	१।१२।३२	१।१२।३१
संताणं जाव सबभूयाणं	१।१२।२६	१।१२।१६
संते जाव निविण्णे	१।८।७६	१।४।१२
संते जाव भावे	१।१२।२६	१।१२।१६
संपरिवुडे एवं जाव विहरइ	१।८।१४७	१।१६।१७८
संभगं जाव पासित्ता	१।१६।२६३	१।१६।२६२
संभगं जाव सण्णिवइया	१।१६।२७८	१।१६।२६२
संभगं तोरण जाव पासइ	१।१६।२७८	१।१६।२६२
संसारभउब्बिग्गा जाव पव्वइत्तए	१।१४।५३	१।१।१४५
संसारभउब्बिग्गे जाव पव्वयामि	१।५।८६	१।१।१४५
सकोरेंट जाव सेयवर०	१।८।५७	१।१।६६
सकोरेंटमल्लदाम जाव सेयवरचामराहिं महया	१।८।१६१	१।८।५७
सकोरेंट० सेयचामर हयगयरहमहया-		
भउच्चडगरेण जाव परिविस्सता	१।१६।१५३	१।८।५७

सकोरेंट ह्यगय	१।१६।१५७	१।८।५७
सक्का जाव नन्तथ	१।५।२५	१।५।२४
सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं	१।८।२०३	१।८।७६
सगज्जिया जाव पाउससिरी	१।१।६४	१।१।५६
सज्जइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ	१।१५।१६	१।३।२४
सण्णद्ध०	१।१६।२४८	१।२।३२
सण्णद्ध जाव गहिया	१।१६।१३४; १।१८।३५	१।२।३२
सण्णद्ध जाव पहरणा	१।१६।२५१	१।२।३२
सण्णद्धबद्ध जाव गहियाउह०	१।१६।२३६	१।२।३२
सत्तट्ठ जाव उप्पयइ	१।६।३७	१।६।३६
सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्तगं	१।८।७७	१।८।७३
सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु		
जंबू जाव चत्तारि	२।७।१,२	२।२।१,२
सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स	१।१।६	ओ० सू० ८२
सत्थवज्झा जाव कालमासे	१।१६।३१	१।१६।३१
सद् जाव गंधाणं	४।१।१७।२	१।१७।२२
सद्दफरिसरसरूवगंघे जाव भुंजमाणे	१।५।६	ओ० सू० १५
सद्दहंति जाव रोएंति	१।१५।१३	१।१।१०१
सद्दावेइ जाव जेणेव	१।८।६६, १००	१।८।६२, ६३
सद्दावेइ जाव तं	१।७।१०	१।७।६, ७, ६
सद्दावेइ जाव तहेव पहारेत्थ	१।८।११२, ११३	१।८।६६, १००
सद्दावेइ जाव पहारेत्थ	१।८।१५५, १५६	१।८।६६, १००
सद्दावेह जाव सद्दावेति	१।१।१३६	१।१।१३८
सद्देणं जाव अम्हे	१।३।१६	१।३।१८
समणस्स जाव पव्वइत्तए	१।१।१०७	१।१।१०४
समणस्स जाव पव्वइत्तसि	१।१।१०८, ११२	१।१।१०६
समणाउसो जाव पंच	१।७।३५, ४३	१।७।२७
समणाउसो जाव पव्वइए	१।१०।५; १।१८।४८; १।१६।४२, ४७	१।३।२४
समणाउसो जाव माणुस्सए	१।६।५३	१।६।४४
समणाणं जाव पमत्ताणं	१।५।११८	१।५।११७
समणाणं जाव बीईवइत्तइ	१।३।३४	१।२।७६
समणाणं जाव सावियाण	१।१७।३६	१।२।७६
समणाण य जाव परिवेसिज्जइ	१।८।२००	१।८।१६६, १६७
समत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरि०	१।१६।१४०	ओ० सू० ६३

समाणा जाव चिट्ठति	१११५।१०	१११५।६
समाणी जाव विहरित्तण	११२।१७	११२।१७
समोवइए जाव निसीइत्ता	१११६।२२७, २२८	१११६।१६७, १६८
समोसरण	११५।८५	१११।४
सम्मज्जिओवलित्तं जाव सुगंधवरगंधियं	१११।३३	१११।२२
सम्मज्जिओवलित्तं सुगंध जाव कलियं	११३।६	१११।२२
सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ	१११६।३००	१११४।१६
सयमेव० आयाए जाव धम्ममाइक्खइ	१११।१५०	१११।१४६
सरिसगं जाव गुणोववेयं	११८।१२०	११८।४१
सरिसियाओ जाव समणस्स पव्वइम्ससि	१११।१०६	१११।१०८
सव्वओ जाव करेमाणा	१११६।२३	१११६।२३
सव्वं तं चेव आभरणं	११५।३०-३२	१११।१४५-१४७
सव्वज्जुईए जाव निग्घोसनाइयरवेणं	१११।३३	ओ० सू० ६७
सव्वट्ठाणेषु जाव रज्जधुराचित्तए	१११४।५६	१११४।५६; १११।१६
सहइ जाव अहियासेइ	१११।१३	१११।१५
सहजायया जाव समेच्चा	११८।१०, ११	११३।६, ७
सहियाणं जाव पुव्वरत्ता०	११५।११८	११३।७
साइमं जाव परिभाएमाणी	१११६।६३	१११६।६२
सामदंड०	११८।४५; १११४।४	१११।१६
सालइएणं जाव नेहावगाढेणं	१११६।२५, २६	१११६।८
सालइयं जाव आहारेसि	१११६।१६	१११६।१६
सालइयं जाव गोवेइ	१११६।८	१११६।८
सालइयं जाव नेहावगाढं	१११६।१६; ११६, २०	१११६।८
सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स	१११६।२२	१११६।८
सालइयस्स जाव एगंमि	१११६।१६	१११६।१६
साहरह जाव ओलयंति	११८।६२	११८।४८
सिगारा जाव कुसला	१११।१३६	१११।१३४
सिगारागारचारूवेसाओ जाव कुसलाओ	१११।१३५	१११।१३४
सिघाडग०	११५।५३	१११।३३
सिघाडग जाव पहेसु	११३।३३; ११३।२६; ११६।१५३; ११८।१६	१११।३३
सिघाडग जाव बहुजणो	११७।४१; ११८।२००; ११३।२६	११५।५३
सिघाडग जाव महया	१११।६५	ओ० सू० ५२
सिक्खावइए जाव पडिवण्ण	११३।३६	उवा० १।४५
सिज्झिहइ जाव मंतं	१११५।२१	१११।२१२

सिञ्जिभहिह जाव सब्बदुक्खाण०	१।१६।४६	१।१।२।१२
सिद्धे जाव प्पहीणे	१।५।८४	ठाणं १।२४६
सीलव्वय जाव न परिच्चयसि	१।८।७४	१।८।७४
सीलव्व तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए	१।८।७७,७८	१।८।७४,७५
सीहनाय जाव रवेणं	१।८।६७	ओ०सू० ५२
सीहनाय जाव समुद्दरवभूयं	१।१८।३५	१।८।६७
सुइं वा०	१।६।३७	१।२।२६
सुइं वा जाव अलभमाणे	१।१६।२१५	१।१६।२१२
सुइं वा जाव लभामि	१।१६।२२१	१।१६।२१२
सुईं वा जाव उवलद्धा	१।१६।२२६	१।१६।२१२
सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे	१।५।८	ओ०सू० १४३
सुभरूवत्ताए	१।१५।१३	१।१५।११
सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ	१।८।२६	१।१।३२
सुमिणा जाव भुज्जो २ अणुवूहति	१।१।३१	१।१।२६
सुरं च जाव पसन्नं	१।१८।३३	१।१६।१४६
सुरट्ठाजणवए जाव विहरइ	१।१६।३१६	१।१६।३१८
सुरूवा जाव वामहत्थेणं	१।१६।१६३	वृत्ति
सूमालं निव्वत्तवारसाहस्स इमं एयारूवं	१।१६।३०५,३०६	१।१६।३३,३४
सूमालिया जाव गए	१।१६।८७	१।१६।६२
से धम्मे अभिरुइए तए णं देवा पव्वइत्तए	१।१६।१३	१।१।१०४
सेयवर हयगय महया भडचडगरपहकरेणं	१।१६।२३७	१।८।५७
सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ	१।१६।८१-८६	१।१६।५६-६१
सोणियासवस्स जाव अवस्स०	१।१८।६१	१।१।१०६
सोणियासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स	१।१८।४८	१।१।१०६
हए जाव पडिसेहिए	१।१६।२५७	१।८।१६५
हट्ठ जाव हियया	२।१।२०,२१,२४,२५	१।१।१६
हट्ठुट्ठ जाव पच्चप्पिणंति	१।१।२३	१।१।१६,२२
हट्ठुट्ठ जाव मत्थए	१।५।१३	१।१।२६
हट्ठुट्ठ जाव हियए	१।१।२०;१।१६।१३५	१।१।१६
हत्थाओ जाव पडिनिज्जाएज्जासि	१।७।६	१।७।६
हत्थिलंध जाव परिवुडे	१।१६।१४६	१।१६।१४६
हत्थिलंधवरगए जाव सेयवरचामराहि	१।८।१६३	१।८।५७
हत्थिणाउरे जाव सरीरा	१।१६।२०३	१।१६।२००
हत्थी जाव छुहाए	१।१।१८५	१।१।१५७

हत्थीहि य जाव कलभियाहि	१।१।१६८	१।१।१५७
हत्थीहि य जाव संपरिवुडे	१।१।१५८	१।१।१५७
हयगय०	१।१६।२४८	१।८।५७
हयगय जाव पच्चप्पिणंति	१।१६।१३६	ओ०सू० ५६
हयगय जाव परिवुडा	१।१६।१५६	१।८।५७
हयगय जाव रवेणं	१।१।६६	१।१।६७
हयगय जाव हत्थिणाजराओ	१।१६।३०३	१।८।५७
हयगय संपरिवुडे	१।१६।१७४	१।८।५७
हयगया जाव अप्पेगइया	१।१६।१३८	१।५।१५
हय जाव सेणं	१।८।१६२	१।८।५७
हयमहिय जाव नो पडिसेहिए	१।१६।२८५	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहिए	१।८।१६६; १।१६।२५६	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहित्ता	१।१६।२८६	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहिया	१।१८।४२	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहेइ	१।१८।२४	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहेति	१।१८।४१	१।८।१६५
हरिसवस०	१।१।१६१	वृत्ति
हियए जाव पडिसुणेइ	१।१।१२६	ओ०सू० ५६
हियाए जाव आणुगामियत्ताए	१।१३।३८	ओ०सू० ५२
हिरण्णं जाव वइरं	१।१७।१६	१।१७।१६
हिरण्णागरे य जाव बहवे	१।१७।१८	१।१७।१४
हीलणिज्जे०	१।४।१८	१।३।२४
हीलणिज्जे संसारो भाणियब्बो	१।५।१२५	१।३।२४
हीलिज्जमाणीए जाव निवारिज्जमाणीए	१।१६।११८	१।६।११७
हीलेति जाव परिभवन्ति	१।१६।११७	१।३।२४
होत्था जाव सेणियस्स रण्णो		
इट्ठा जाव बिहरइ	१।१।१७	वृत्ति

उवासगदसाओ

अंतलिक्खपडिवण्णे एवं वयासी
अंतियं जाव अस्सि

७।१७
५।२, २१

७।१०
३।२०, २१

अग्निमित्ताए वा जाव विहरइ	७।२६	७।२६
अज्ज जाव ववरोविज्जसि	३।४४	२।२२
अज्झवसाणेणं जाव खओवसमेणं	८।३७	१।६६
अट्टेहि य जाव वागरणेहि	७।४८	६।२८
अट्टेहि य जाव निप्पट्ट०	६।२८	६।२८
अड्ढे चत्तारि	६।३,४;१०।३,४	२।३,४
अड्ढे जहा आणंदो नवरं अट्टहिरण्णको-		
डीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ अट्टहि		
वड्ढि अट्टहि सकंसाओ पवि अट्टवया		
दस गो साहस्सिएणं वएणं	८।३-५	१।११-१३
अड्ढे जाव अपरिभूए	१।११	ओ० सू० १४१
अणारिए जहा चुलणीपिया तहा चित्तेइ		
जाव कणीयसं जाव आईचइ	५।४२	३।४२
अणारिए जाव समाचरति	३।४४;४।४२	३।४२
अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं	६।२१,२२,२३;७।२३,२४	६।२०
अण्णदा कदाइ बहिया जाव विहरइ	१।५४	ना० १।१।१६६
अपच्छिम जाव अणवकंखमाणे	१।७२	१।६५
अपच्छिम जाव भत्तपाण	८।४६	१।६५
अपच्छिम जाव भूसियस्स	८।४६	१।६५
अपच्छिम जाव वागरित्ताए	८।४६	८।४६
अठ्ठभणुण्णाए तं चेव सव्वं कहेइ जाव	१।७६	१।७१-७८
अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे	१।५५	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ	८।१६	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवेजी णं जाव अणइक्कमणिज्जेणं	१।३१	ओ० सू० १६२
अभीए जाव विहरइ	२।२६,३५; ३।२२	२।२३
अभीयं जाव छम्मज्झाणोवगयं	२।२४	२।२३
अभीयं जाव पासइ	२।४०;३।२३	२।२४
अभीयं जाव विहरमाणं	२।२८,३०	२।२४
अवहरइ वा जाव परिट्ठवेइ	७।२६	७।२५
अस्सिणी भारिया । सामी सामासठे जहा आणंदो तहेव		
गिहिधम्मं पडिवज्जइ । सामी बहिया विहरइ	६।५-१५	२।५-१५
असंगवणिया जाव विहरसि	७।१७	७।८
अहीण जाव सुरूवा	१।१४	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवाओ	८।६	ओ० सू० १५

आमोसेसि वा जाव ववरोवेसि	७।२६	७।२५
आपुच्छिता जेणेव पोसहसाला तेणेव		
उवागच्छइ, २ ता जहा आणंदो जाव समणस्स	२।१६	१।६०
आलोइज्जइ जाव तवोकम्मं	१।७८	ठा० ३।३४८
आलोइज्जइ जाव पडिवज्जिज्जइ	१।७८	वृत्ति अ० ३
आलोएइ जाव जहारिहं	८।५०	वृत्ति अ० ३
आलोएइ जाव पडिवज्जइ	३।४६	वृत्ति अ० ३
आलोएयव्वं जाव पडिवज्जेयव्वं	१।८०	वृत्ति अ० ३
आलोएह जाव पडिवज्जेह	१।७८	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव अहारिहं	८।४६	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव तवोकम्मं	१।७७	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव पडिवज्जाहि	१।१८; ३।४५; ८।४६	वृत्ति अ० ३
इट्ठे जाव पंचविहे	१।१४	ओ० सू० १५
इड्ढी जाव अभिसमण्णागए	२।४०	२।४०
इमेणं जाव धमणिसंतए	१।६५	१।६४
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	३।४२	१।७३
उक्खेवो	३।१; ४।१; ५।१; ६।१; ७।१; ८।१; ९।१; १०।१	२।१
उज्जलं जाव अहियासेइ	२।३३, ३६; ३।२६	वृत्ति
उज्जलं जाव अहियासेमि	३।४४	वृत्ति
उज्जलं जाव दुरहियासं	२।२७	वृत्ति
उट्ठाणे इ वा जाव अणियता	६।२१, २३	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव नियता	६।२१, २३; ७।२६	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे	६।२०, २३; ७।२६	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव पुरिसक्कार०	७।२४	६।२०
उट्ठाणं जाव परक्कमेणं	६।२३	६।२०
उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमेणं	६।२१; ७।२३	६।२०
उद्धाविए जहा चुलणीपिया तहेव सव्वं		
भाणियव्वं । नवरं अग्निमित्ता भारिया		
कोलाहलं सुणित्ता मणइ । सेसं जहा		
चुलणीपिया वत्तव्वया सव्वा नवरं अरुणच्चए		
विमाणे उववातो जाव महाविदेहे	७।७८-८८	३।४२-५२
उद्धाविए जहा सुरादेवो । तहेव भारिया		
पुच्छइ, तहेव कहेइ । सेसं जहा चुलणीपियस्स		
जाव सोहम्मे	५।४२-५२	३।४२-५२

उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव तच्चकम्मसंपया	७।११,१८	७।१०
उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव महियपूइए		
जाव तच्च०	७।४५	७।१०
उरालाइं जाव भुंजमाणे	८।२७	८।१६
उरालाइं जाव विहरित्तए	८।१८	८।१८
उरालेणं जहा कामदेवे जाव सोहम्मे	३।५०-५२	२।५३-५५
उरालेणं जाव किसे	८।३५	१।६४
उरालेणं तवोकम्मेणं जहा आणंदो		
तहेव अपच्छिम०	८।३६	१।६५
एक्कारसमं जाव आराहेइ	१।६३	१।६२
एवं एक्कारस उवासणपडिमाओ तहेव जाव		
सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव		
अंतं काहिइ	६।३५-४१	२।५०-५६
एवं तहेव उच्चारयेव्वं सव्वं जाव कणीयसं		
जाव आइंचइ । अहं तं उज्जलं जाव		
अहियासेमि	३।४४	३।२७-३८
एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं च	१।६६; ८।३७	१।६६
एवं देवो दोच्चं पि तच्चं पि भणइ जाव		
ववरोविज्जसि	४।४१	४।३६
एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्केक्के पंच		
सोल्लया । तहेव करेइ, जहा चुलणी-		
पियस्स, नवरं एक्केक्के पंच सोल्लया	४।२२-३८	३।२२-३८
एवं वण्णगग्रहिया निणिण वि उवसग्गा तहेव		
पांडिउच्चारयव्वा जाव दवा पांडगआ	२।४५	२।२४-४०
ओहयमणमंकप्पा जाव भियाइ	८।४२	रा० सू० ७६५
कज्जेसु य आपुच्छउ	१।५६	१।१३
कदाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठुत्तं ठवेत्ता		
तहा पोसहसालाए जाव धम्मपण्णत्ति	६।३३, ३४	२।१८, १९
करएहि य जाव उट्टियाहि	७।७	७।७
करगा य जाव उट्टियाओ	७।२२	७।७
करेइ । सेसं जहा चुलणीपियस्स तहा		
भहा भणइ । एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स		
निरवसेसं जाव सोहम्मे	४।४५-५२	३।४५.५२
कल्लं जाव जलंते	१।५७; ७।१२	ओ० सू० २२

कल्लं विउलं	११५७	११५७
कामदेवा जाव जीवियाओ	२१४५	२१२२
कामदेवा तहेव जाव सो वि विहरइ	२१३०, ३१	२१२२, २३
कामदेवे गाहावई । भद्दा भारिया । छ		
हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ		
वड्डिपउत्ताओ छ पवित्थग्पउत्ताओ		
छ व्वया दसगोसाहम्मिणं वणं	२१३-६	११११-१४
कासे जाव कोढे	४१३६	वृत्ति
कुंडकोलिए गाहावई । पूसा भारिया		
छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ		
छ वड्डिपउत्ताओ छ पवित्थग्पउत्ताओ		
छ व्वया दसगोसाहम्मिणं वणं	६१३-६	२१३-६
कुडुंब जाव इमेयारूवे	८११८	११६५
कुडुंबस्स जाव आधारे	११५७	१११३
केणट्ठेणं एवं	७१४६	७१४८
कोडुंबिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणंति	७१३४	११४८
गिहाओ जाव सोणिण	३१४२	३१४२
गिहाओ तहेव जाव आइंचइ	३१४२	३१४२
गिहाओ तहेव जाव कणीयसं जाव आइंचइ	३१४४	३१४२
गिहिणो जाव समुप्पज्जइ	११७६, ७७	११७६
गुण जाव भावेमाणस्स	६११८	२११८
गुरु जाव ववरोविज्जसि	३१४४	३१४१
घाएत्ता जहा कयं तपा विचिनेइ जाव गायं	३१४२	३१२१
घाएत्ता जहा जेठुपुत्तं तहेव भणइ, तहेव		
करेइ । एवं कणीयंसि पि जाव अहियासेइ	३१२७-३८	३१२१-२६
चत्तारि पल्लोवमाइं ठिई । मेसं तहेव		
जाव सिज्झिहिनि	५१५२	२१५५, ५६
चुल्लसयाण गाहावई अइंढे जाव छ		
हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगोसाह-		
स्सिएणं वणं । बहुला भारिया	५१३-६	४१३-६
चेइए जहा संखे जाव पज्जुवासइ	२१४३	भ० १२११
जहा आणंदो तहा निग्गच्छइ तहेव		
साबयधम्मं पडिबज्जइ	८११०-१५	१११६-२४
जाए जाव विहरइ	६११६, १७	२११६, १७

जाया जाव पडिलाभेमाणी	११५६	११५५
जाव पज्जुवासइ	७११४	१११६
जुगवं जाव निउणसिप्पोवगए	७१५०	राय० सू० १२
जेट्टपुत्तं जाव कणीयसं जाव आईचइ	४१४२	३१४२
ठावेत्ता जाव विहरित्तए ।	११५७	११५७
णमंसइ जाव पज्जुवासइ	११२	ओ० सू० ५२
णमंसित्ता जाव पज्जुवासइ	७११५	ओ० सू० ५२
णाइइरे जाव पंञ्चलियडा	७१३५	११२०
ण्हाए जाव अप्पमहग्घा०	११५७	ओ० सू० २०
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	७११५	ओ० सू० २०
ण्हाए सुद्धप्पावेस अप्प०	११२०	ओ० सू० २०
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	७१३५	ओ० सू० २०
तं मित्त जाव विउलेणं पुप्फ ५ सक्कारेइ		
सम्माणेइ, २ ता तस्सेव मित्त जाव पुरओ	११५७	११५७
तच्चं पि तहेव भणइ जाव ववगेविज्जसि	५१४१	५१४०
तत्थ णं बाणारसीए चुलणीपिया नामं		
गाहावई पग्गिसई अड्ढे सामा भारिया		
अट्ट हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ		
अट्ट वड्ढिप० अट्टपवित्थरप० । अट्ट वया		
दसगोसाहस्सिएणं वएणं जहा आणंदो		
ईसर जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था	३१३-६	२१३-६
तव जाव कणीयसं	३१४५	३१४४
तिक्खुत्तो जाव वंदइ	७१३५	११२०
तीसे य जाव घम्मकहा सम्मत्ता	२१४४	२१११
तुमं जाव ववगेविज्जसि	३१४४	२१२२
दुहट्ट जाव ववगेविज्जसि	७१७५	२१२२
देवराया जाव सक्कंसि	२१४०	वृत्ति
देवाणुप्पिए समणे भगवं महावीरे		
जाव समोसढे तं	७१३१	११४५
देवाणुप्पिया जाव महागोवे	७१४६	७१४४
घम्मायरिएणं जाव महावीरेणं	७१५०	७१५०
घम्मायरियस्स जाव महावीरस्स	७१५१	७१५०
नाममुद्दणं च तहेव जाव पडिगए	६१२८	६१२०-२४

निष्खेवो

२।५७;३।५३;४।५३;५।५४;

६।४१;७।८६;८।५४;९।२७

१।८५

निष्खेवो पढमस्स

१।८५

वृत्ति

नीणेमि एवं जहा चुलणीपिय, नवरं

एक्केक्के सत्त मंससोल्लया जाव

कणीयसं जाव आइंचामि

५।२१-३७

३।२१-३७

नीलुप्पल एवं जहा चुलणीपियस्म तहेव देवो

उवसगं करेइ जाव कणीयसं

घाएइ, २ ता जाव आइंचइ

७।५७-७३

३।२१-३८

नीलुप्पल जाव असि

२।४५;३।२१,४४;४२१

२।२२

नीलुप्पल जाव असिणा

२।२२,२६

२।२२

पंचजोयणसयाइं जाव लोलुयन्चुयं

१।७६

१।६६

पढमं अहासुत्तं जाव एक्कारस वि

८।३३,३४

१।६२,६३

पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं ४

जहा आणंदो जाव एक्कारस वि

३।४८,४९

१।६२-६३

पाउणिता जाव सोहम्मे

१।५३

१।८४

पाडिहारिएणं जाव उवनिमंतिस्सामि

७।११

१।४५

पावयणं जाव जहेयं

७।३७

१।२३

पीढ जाव ओगिणिहत्ता

७।५२

१।४५

पीढ जाव संथारएणं

७।५१

१।४५

पीढ जाव संथारयं

७।१८

१।४५

पीढ-फलग जाव उवनिमंतेत्तए

७।१८

१।४५

पुण्णे कयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे

२।४०

२।४०

पुत्तं जाव आइंचइ

७।७८

३।४२

पुरिसे तहेव कहेइ जहा चुलणीपिया

धन्ना वि पडिभणइ जाव कणीयसं

४।४४

३।४४

पुव्वरत्ता जाव धम्मजागरियं

१।६५

१।५७

पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसहसालाए समणस्स

७।५४

२।१८

पोसहिए०

१।६०

ना० १।१।५३

फग्गुणी भारिया । सामी समोसढे जहा

आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिबज्जइ

जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता

पोसहसालाए । समणस्स भगवओ

महावीरस्स धम्मपण्णति उवसंपज्जिता णं

विहरइ । नवरं निरुवसगो एक्कारस्स वि		
उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ एवं		
कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे	१०।५-२५	२।५-१६, ५०-५५
फलग जाव ओगिण्हित्ता	७।५१	१।४५
फलग जाव संधारयं	७।१६	१।४५
बंभयारी जाव दम्भसंधारोवगए	२।४०	१।६०
बंभयारी समणस्स	३।१६	१।६०
बहूहि जाव भावेत्ता	२।५५	१।८४
बहूणं राईसर जहा चित्तिं जाव विहरित्तए	१।५७	१।५७
बहूहि जाव भावेमाणस्स	६।३३	२।१८
भविता जाव अहं	७।३७	१।२३
भारिया जाव सम०	७।७८	७।७५
भोगा जाव पव्वइया	७।३७	ओ० सू० ५२
मंसमुच्छया जाव अज्झोववण्णा	८।२०	वृत्ति
मत्ता जाव उत्तरिज्जयं	८।३८	८।२७
मत्ता जाव विककुमाणी	८।४६	८।२७
महइ जाव धम्मकहा समत्ता	७।१६	२।११
महावीरे जाव विहरइ	२।४२	१।१७
महावीरे जाव विहरइ	२।४३; ७।१५	१।२०
महावीरे जाव समोसरिए	१।१७; ७।१२	ओ० सू० १६-२२
महासतयं तहेव भणइ जाव दोच्चं पि		
तच्चं पि एवं वयासी—हंभो तहेव	८।३८-४०	८।२७-२६
मारणंतिय जाव कालं	१।६५	१।६५
मित्त जाव जेट्ठपुत्तं	१।५७	१।५७
मित्त जाव पुग्गो	१।५६	१।५७
मुंढे जाव पव्वइत्तए	१।२३, ५३	ओ० सू० ५२
मोहुम्माय जाव एवं वयासी तहेव जाव		
दोच्चं पि	८।४६	८।२७-२६
राईसर जाव सत्थवाहाणं	१।१३	१।२३
राईसर जाव सयस्स	१।५७	१।१३
लद्धट्ठे जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ		
जाव पज्जुवासइ । धम्मकहा ।	६।२६, २७	२।४३, ४४
वदणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	७।१०	ओ० सू० २
वंदामि जाव पज्जुवासामि	७।१५	ओ० सू० ५२

वदाहि जाव पज्जुवासाहि	१।४५;७।३१	ओ० सू० ५२
वंदिस्सामि जाव पज्जुवासिस्सामि	७।११	ओ० सू० ५२
वंदेज्जाहि जाव पज्जुवामेज्जाहि	७।१०	ओ० सू० ५२
वयासी जाव उववज्जिहिसि	८।४६	८।४१
वाताहतं वा जाव परिट्टवेइ	७।२६	७।२५
विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे	७।४७,४६	७।४६
विहरइ । तए णं	२।५१-५४	१।६२-६५
वीइक्कंताइं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ ।		
धम्मपण्णत्ति । वीसं वासाइं परियाणं नाणत्त		
अरुणगवे विमाणे उववाओ महाविदेहे		
वामे सिज्झिह्मिइ	६।१८-२६	२।१८,१९,५०-५६
वीइक्कंता एवं नहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ		
जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्ति	८।२५,२६	२।१८,१९
संचाएइ जाव सणियं	२।३४	२।२८
संताणं जाव भावाणं	१।७८	१।७८
संतेहिं जाव वागरित्तए	८।४६	८।४६
संतेहिं जाव वागरिया	८।४६	८।४६
सखिखिणियाइं जाव परिहिए	७।१०	२।४०
सइहामि णं जाव से जहेयं	१।२३	रा० सू० ६६५
सइहापुत्ता तं चेव सव्वं जाव पज्जुवासिस्सामि	७।१७	७।१०,११
समाएणं अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव		
जंबू पज्जुवासमाणे	१।३-५	रा० सू० ६८६; ओ० सू० ८२,८३
समणे जाव विहरइ तं महाफलं		
गच्छामि णं जाव पज्जुवासामि	१।२०	ओ० सू० ५२
समणोवासए जाव अहियासेइ	५।३८	२।२७
समणोवामए जाव विहरइ	४।४०;५।३८	३।२२
समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया		
जाव न भंजेसि	३।४४;७।७५	२।२२
समणोवासया ! जहा कामदेवो जाव न भंजेसि	३।२१	२।२२
समणोवासया ! जाव न भंजेसि	२।३४;५।२१,३६	२।२२
समणोवासया ! तं चेव भणइ	७।७७	७।७४
समणोवासया ! तं चेव भणइ सो		
जाव विहरइ	३।२३,२४	३।२१,२२
समणोवासया ! तहेव जाव गायं आइंचइ	३।४४	३।२३-२५

समणोवासया ! तहेव जाव ववरोविज्जसि	३।४१	३।३६
समणोवासया ! तहेव भणइ जाव न भंजेसि	२।२८	२।२२
समुप्पज्जित्था एवं जहा चुलणीपिया		
तहेव चित्तेइ	७।७८	३।४२
समोसरणं जहा आणंदो तहा निग्गओ ।		
तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ ।		
साचेव वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्तं	२।७-१६	१।१७-२३, ५४-६०
सहइ जाव अहियासेइ	२।२७	वृत्ति
सहंति जाव अहियासेंति	२।४६	२।२७
सहित्तए जाव अहियासित्तए	२।४६	२।२७
साइमं जहा पूरणो जाव जेट्ठपुत्तं	१।५७	अ० ३।१०२
सामी समोसढे । चुलणीपिया वि जहा आणंदो		
तहा निग्गओ । तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ ।		
गोयम पुच्छा । तहेव सेसं जहा कामदेवस्स		
जाव पोसहसालाए	३।७-१६	२।७-१६
सामी समोसढे जहा आणंदो तहा गिहिधम्मं		
पडिवज्जइ । सेसं जहा कामदेवो जाव		
धम्मपण्णत्ति	५।७-१६	२।७-१६
सामी समोसढे जहा कामदेवो तहा		
सावयधम्मं पडिवज्जइ । सा सब्बेव		
वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ	६।७-१७	२।७-१७
साहस्सीणं जाव अण्णेसि	२।४०	वृत्ति
सिंघाडग जाव पहेसु	५।३६	अ० सू० ५२
सिंघाडग जाव विप्पइरित्तए	५।४२	५।३६
सीलव्वय-गुणेहि जाव भावेत्ता	८।५३	१।८४
सील जाव भावेमाणस्स	७।५४	१।५७
सीलव्वय जाव भावेमाणस्स	८।२५	१।५७
सीलाइं जाव न भंजेसि	४।२१	२।२२
सीलाइं जाव पोसहोववासाइं	२।२२	२।२२
सीलाइं बयाइं न छड्ढेसि तो जीबियाओ	२।२४	२।२२
मुक्के जाव किसे	१।६४	अ० २।६४
सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घा	७।१५, ३५	१।४६
सुग्गदेवे गाहावइ अड्ढे छ हिरण्णकोडीओ		
जाव छ व्वया दस गोसाहस्सिएणं बाएणं		

तस्स धन्नाभारिया । सामी समोसढो जहा		
आणंदो तहेव पडिवज्जइ गिहिधम्मं		
जहा कामदेवो जाव समणस्स	४।३-१६	१।११-१४; २।७-१६
सो वि दोच्चं पि तच्चं पि भणइ,		
कामदेवो वि जाव विहरइ	२।३६, ३७	२।३४, ३५
हंभो ! तं चेव भणइ सो वि तहेव		
जाव अणाढायमाणे	८।२६, ३०	८।२७, २८
हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी	१।२३	ओ० सू० ८०
हट्ठतुट्ठ जाव गिहिधम्मं	१।५१, ५२	१।२३, २४
हट्ठतुट्ठ जाव समणं	२।४८	१।२३
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	१।७४; ८।४८	१।२३
हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहा आणंदो तहा		
गिहिधम्म पडिवज्जइ, नवरं एगा-		
हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एगा-		
हिरण्णकोडी वट्ठिपउत्ता एगाहिरण्ण-		
कोडी पवित्थरपउत्ता एगे वए		
दसगोसाहस्सिएणं जाव समणं	७।३०, ३१	१।२३, २४
हट्ठतुट्ठा कोट्टुबियपुरिसे सद्दावेइ, २ ता		
एवं वयासी खिप्पामेव लहुकरण		
जाव पज्जुवासइ	१।४६-४६	ओ० सू० ८०; अ० ६।१४१-१४३; उवा० ७।३३
हट्ठतुट्ठा समणं	७।३७	१।५१
हणेसि वा जाव अकाले	७।२६	७।२५
हारविराइयवच्छं जाव दसदिसाओ	२।४०	ओ० सू० ४७
हेऊहि य जाव बागरणेहि	७।५०	६।२८

अंतगडवसाओ

अंतिए जाव पब्बइत्तए	३।७६	३।२०
अज्जा जाव इज्जामि	८।२०	८।७
अणगारे जाए जाव विहरइ	६।५२	ना० १।५।३५

अणुत्तरे जाव केवल०	३।६२	वृत्ति
अतुरियं जाव अडंति	३।२३	भ० २।१०८
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	३।८६	उवा० २।२२
अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए	३।१०२	३।८६
अरहओ मुंढे जाव पव्वाहि	३।७४	३।७०
अरिट्टनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	५।११	३।७६
अहासुत्तं जाव आराहिया	८।८	ठा० ७।१३
आधवणाहिं०	६।६५	नाम १।१।११४
आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं	१।१६	ना० १।५।८७
आसुरुत्ते जाव सिद्धे	३।१०१	३।८६-६२
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।१४	ना० १।५।६
इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ता	३।१०१	३।८७, ८८
ईसर जाव सत्थवाहाणं	१।१४	ना० १।५।६
उच्च जाव अडइ	६।७६	भ० २।१०८
उच्च जाव अडमाणं	६।५५	भ० २।१०६
उच्च जाव अडमाणा	३।२६, ३०	३।२४
उच्च जाव अडमाणे	६।७८	२।२४
उच्च जाव अडामो	६।८०	३।२३
उच्च जाव पडिलाभेइ	३।२८, २६	३।२४, २५
उज्जाणे जाव पज्जुवासइ	३।६१	ना० १।१।६६
उज्जला जाव दुरहियासा	३।६०	ना० १।१।१६२
उत्तर०	६।५२	५।२६
उम्मुक्क जाव अणुप्पत्ते	३।५०	ना० १।१।२०
उरालेणं जाव घमणिसंतया	८।१३	भ० २।६४
उवागए जाव पडिदंसेइ	६।८७	६।५७
उवागच्छित्ता जाव वंदइ	३।६८	३।६१
ओह्य जाव भियाइ	५।१७	३।४३
ओह्य जाव भियायइ	३।४३	ना० १।१।३४
करयल०	५।२२; ६।३५, ४१	ना० १।१।२६
करेइ जहा गोयमसामी जाव अडइ	६।५४	भ० २।१०७, १०८
काएणं जाव दो वि पाए	३।८८	वृत्ति
कामा खेलासवा जाव विप्पजहियव्वा	३।७६	ना० १।१।१०६
कुमारस्स	१।१६	राय० सू० ६८८
चउत्थ जाव अप्पाणं	८।६	५।३१

चउत्थ जाव भावेमाणी	८१३३	५१३१
चउत्थ जाव भावेमाणे	११२१	५१३१
चउत्थस्स वग्गस्स निक्खेवओ	४१७	११२५
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरंति	३१२१	३१२०
जइ उक्खेवओ अट्टमस्स	३११७	३१३
जइ छट्ठस्स उक्खेवओ नवरं सोलस	६११,२	११५,६
जइ णं भंते अट्टमस्स वग्गस्स उक्खेवओ		
जाव दस	८११७,१८	११५,६
जइ णं भंते तेरस	७१३	११७
जइ णं भंते सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ		
जाव तेरस	७११,२	११५,६
जइ तच्चस्स उक्खेवओ	३११	११५
जइ दस	८११६	११७
जइ दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ	२११,२	११५,६
जहा अभओ नवरं हरिणेगमेसिस्स		
अट्टमभत्तं पगेण्हइ जाव अंजलि	३१४७-४६	ना० १११५३-५८
जहा गोयम सामी तथा पडिदसेइ	६१५७	भ० २१११०
जहा गोयमो जाव इच्छामो	३१२२	भ० २११०७
जावज्जीवाए जाव विहरइ	६१५३	६१५३
जाव संलेहणाकालं	८१३६	८११५
ण्हाए जाव विभूसिए	३१४४	ओ० सू० ७०
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	३१३६	ओ० सू० २०
तं महा जहा गोयमे तथा	३११३	१११६,२०
तीसे य धम्मकहा	३१६२	राय० सू० ६६३
तीसे य धम्मकहा	६१५०,८८	ना० ११११००
देहं जाव किलंतं	३१६५	वृत्ति
धारिणी सीहं सुमिणे	३१११६	१११७
नमंसांमि जाव पज्जुवासामि	६१३५	ओ० सू० ५२
नयरीए जाव अडित्तए	३१२२	भ० २११०७
नवमस्स उक्खेवओ	३१११२	३१३
निग्गया जाव पडिगया	११२	ना० १११५
निक्खमणं जहा महब्बलस्स जाव		
तमाणाए तह्म जाव संजमइ	३१७८-८५	भ० ११११६८; ना० ११११५-१५१

नेरइय जाव उववज्जंति	६।६४	६।६४
पउमावईए य धम्मकहा	५।८	राय०सू० ६।६३
पब्बावेइ जाव संजमियब्बं	५।२८	ना० १।१।१५०
पारेइ जाव आराहिया	८।६	८।८
पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि	६।५१	ना० १।१।१०१
पुरिसं पाससि जाव अणुपवेसिए	३।१०४	३।६५
पोरिसीए जाव अडमाणा	३।३०	३।२२, २३
बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए	३।७७	ना० १।१।११४
बारवईए उच्च जाव पडिविसज्जेइ	३।२६, २७	३।२४, २५
भगवं जाव समोसढे विहरइ	६।३३	ना० १।१।६४
भूतं जाव पव्वइस्संति	५।१४	५।१२
भूतं वा जाव पव्वइस्संति	५।१३	५।१२
मालागारे जाव घाएमाणे	६।३६	६।२८
मासियाए संलेहणाए बारस वासाइं		
परियाए जाव सिद्धे	१।२४	ना० १।५।८४
मुंडा जाव पव्वइया	३।३०; ५।११	३।२०
मुंडा जाव पव्वयामि	५।२१, २२	३।२०
मुंडे जाव पव्वइए	६।५३	३।२०
मुंडे जाव पव्वइत्तए	५।१६	३।२०
मुंडे जाव पव्वइस्सइ	३।५०	३।२०
रज्जे य जाव अंतेउरे	५।११	ना० १।१।१६
रूवेणं जाव लावण्णेणं	३।५७	३।६०
सहुकरणजाणपवरं जाव उवट्ठवेंति	३।३१	ना० १।१६।१३३
विण्णवणाहिं जाव परूवेत्तए	६।४५	६।४५
संजमेणं जाव भावेमाणे	६।८४	६।३३
संलेहणा जाव विहरित्तए	८।१४	८।१४
संलेहणाए जाव सिद्धे	३।१३	१।२४
समणेणं जाव छट्ठस्स	६।१०२	४।७
समाणा जाव अहासुहं	३।३०	३।२०
समोसढे सिरिवणे उज्जाणे अहा जाव विहरइ	३।१२	ना० १।५।१०
सरिसया जाव नलकूबरसमाणा	३।३०	३।१६
सरिसियाणं जाव बत्तीसाए	३।१०	ना० १।१।६०
सिंघाडग जाव उग्घोसेमाणा	५।१६	ना० १।५।२६

सिंघाडग जाव महापहपहेसु	६।२८	५।१६
सिंढे जाव प्पहीणे	३।६२	वृत्ति
सिरिबणे विहरइ	६।७५	६।३३
सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे	६।३६	ओ० सू० ५३
सोच्चा	१।१६	ना० १।१।६६
सोच्चा जं नवरं अम्मापियरो आपुच्छामि		
जहा मेहो महेलियावज्जं जाव वट्ठियकुले	३।६३-७३	ना० १।१।१०१-१०७; ११०-११३
हट्ठ	६।५१	ना० १।१।१०१
हट्ठ जाव हियया	३।२५	ओ०सू० २०
हट्ठुट्ठ जाव हियया	३।४२	३।२५

अणुत्तरोववाइयवसाओ

अंबगठिया इ वा एवामेव	३।४५	३।३१; वृत्ति
अमुच्छिण जाव अणज्झोववण्णे	३।२७	अं० ६।५७
आयंबिलं नो अणायंबिलं जाव नावकंखति	३।२४	३।२२
इमासि जाव साहस्तीणं	३।५६	३।५५
इ वा जाव नो सोणियत्ताए	३।३३	३।३१
इ वा जाव सोणियत्ताए	३।३६	३।३१
उच्च जाव अडमाणे	३।२४	भ० २।१०६
उण्हे जाव चिट्ठइ	३।३५	३।३४
उरालेणं जहा खंदओ जाव सुहुय चिट्ठइ	३।३०	भ० २।६४
ऊरू जाव सोणियत्ताए	३।३५	३।३१
एवं जाव सोणियत्ताए	३।३४	३।३१
एवामेव०	३।३६-४४, ४६, ४७, ४९, ५०	३।३१
गोयमे जाव एवं	१।१०	भ० २।७१
चंदिम जाव नवय०	३।५६	१।८
जहा खंघओ तहा जाव हुयासणे	३।५२	भ० २।६४; ना० १।१।२०२
जहा जमाली तहा निग्गओ । नवरं पायचारें ।		
जाव जं नवरं अम्मयं भइं सत्थवाहि आपुच्छामि ।		
तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए पब्बयामि ।		

जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ । मुच्छिया ।
 बुत्तपडिबुत्तया जहा महब्बले जाव जाहे नो
 संचाएइ जहा थावच्चापुत्तस्स जियसत्तुं
 आपुच्चइ । छत्तचामराओ । सयमेव जियसत्तु
 निक्खमणं करेति जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो
 जाव पव्वइए अणगारे जाए—इरियासमिए

जाव गुत्तवंभयारी	३।११-२१	भ० ६।३३, ११, ११; ना० १।१, १।५
जाव उप्पि पासा विहरइ	१।७	ना० १।१।६३
तरुणए जाव चिट्ठइ	३।५१	३।४३
तरुणिमा एवामेव	३।४८	३।४३
बिलमिव जाव आहारेइ	३।५७	३।२७
मुंडावली इ वा	३।३८	३।३१
मुंडे जाव पव्वइए	३।६६	३।२२
सजमेणं जाव विहरइ	३।६६	३।२७
संजमेणं जाव विहरामि	३।५७	३।२७
सुकं०	३।३७	३।३१
सुककाओ जाव सोणियत्ताए	३।३२	३।३१
सुपुण्णे सुकयत्थे कयलक्खणे	३।५८	३।५८
सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए	१।८	ना० १।१।२११

पण्हावागरणाइं

अंतरप्पा जाव चरेज्ज	१०।१५	१०।१४
एवं जाव इमस्स	५।१०	५।१
एवं जाव चिरपरिगत०	३।२६	३।१
एवं जाव परियट्ठंति	५।८	४।१३
पत्थणिज्जं एवं चिरपरि०	४।१५	४।१
रुसियब्बं जाव चरेज्ज	१०।१७	१०।१४
रुसियब्बं जाव न	१०।१५	१०।१४
सज्जियब्बं जाव न सइं	१०।१७	१०।१४
सज्जियब्बं जाव न सति	१०।१६	१०।१४
हीलियब्बं जाव पणिहिदिए	१०।१६	१०।१४

विवागसुयं

अट्टमस्स उक्खेवओ	१।८।१,२	१।२।१,२
अट्ठि जाव महियगत्तं	१।४।२८	१।२।६४
अतुरिय जाव सोहेमाणे	१।१।२८	वृत्ति
अट्ठहार जाव पट्टं मउडं	१।६।८	वृत्ति
अब्भणुण्णाए जाव बिलमिव	१।७।७	अं० ६।५७
अम्मयाओ जाव सुलद्धे जाओ	१।२।२४	ना० १।१।३३
अवओडय जाव उग्घोसिज्जमाणं	१।३।१३	१।२।१४
अविणिज्जमाणंसि जाव भियामि	१।२।२६	१।२।२४
असिपत्तेहि य जाव कलंवचीरपत्तेहि	१।६।२३	१।६।१६
अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे	१।१।४७; १।३।१६	वृत्ति
अहम्मिए जाव लोहियपाणी	१।३।७	वृत्ति
अहम्मिए जाव साहस्सिए	१।१।७०	वृत्ति
अहापडिरूव जाव विहरइ	१।१।२	ओ० सू० २२
अहिमडे इ वा जाव तनो वि अणिट्ठतराए		
चेव जाव गंधे	१।१।३६	ना० १।८।४२
अहीण जाव जुवराया	१।६।२	१।५।४
अहीण जाव सुरूवा	१।२।७	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवे	१।२।१०	ओ० सू० १४३
आसि जाव पच्चणुभवमाणे	१।२।१६	१।१।४२
आसी जाव विहरइ	१।३।१६	१।१।४२
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	१।३।४१	१।२।६४
आसुरुत्ते जाव साहट्ठु	१।६।३५	१।२।६४
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।२।७; १।३।७	वृत्ति
इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति	१।१।१६	ना० १।१।६६
इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति	१।१।२०	ना० १।१।६७
इट्ठरूवे जाव सुरूवे	२।१।१५	२।१।१५
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।६।३४	१।१।४१
इरियासमिए जाव बंभयारी	१।१।७०	ओ० सू० २७
इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा	२।१।३१	ओ० सू० २१
उ'बरदत्ते निच्छूडे जहा उज्जिभयए	१।७।३४	१।२।५६
उक्किट्ठि जाव करेमाणे	१।३।४३	१।३।२४
उक्किट्ठि जाव समुहं	१।३।२४	ओ० सू० ५२

उक्कोस नेरइएसु	१।३।६५	१।१।७०
उक्खित्त जाव सूले०	१।६।६	१।२।१४
उक्खेवओ नवमस्स	१।६।१,२	१।२।१,२
उक्खेवओ सत्तमस्स	१।७।१,२	१।२।१,२
उग्घोसिज्जमाणं जाव चित्ता	१।४।१२,१३	१।२।१४,१५
उज्जला जाव दुरहियासा	१।१।५६	वृत्ति
उम्मुक्क जाव जोव्वणग०	१।१।७०	वृत्ति
उम्मुक्कबालभावा जोव्वणेण रूवेण		
लावण्णेण य जाव अईव	१।६।३४	१।४।३६
उम्मुक्कबालभावे जाव विहरइ	१।६।२६	१।४।३५
उराले जाव लेस्से	२।१।२०	ओ० सू० ८२
उवगिज्जमाणे जाव विहरइ	१।६।४८	ना० १।१।६३
उत्सुक्कं जाव दसरत्तं	१।३।५२	वृत्ति
एवं पस्समाणे भासमाणे गेण्हमाणे जाणमाणे	१।१।५०	१।१।५०
ओह्य०	१।२।२७	१।२।२४
ओह्य जाव म्भियाइ	१।२।२४; १।६।१६	वृत्ति
ओह्य जाव म्भियासि	१।२।२५; १।६।१७	१।२।२४
ओह्य जाव पासइ	१।२।२५; १।६।१७	१।२।२४
करयल०	१।३।४०, ५५, ५६; १।६।३८	१।१।६६
करयल०	१।३।५०	१।३।४०
करयल जाव एवं	१।३।४४; १।४।२८	१।३।४०
करयल जाव एवं	१।३।५२, ५३; १।६।३४	१।१।६६
करयल जाव पडिसुणेंति	१।३।५३, ६२; १।६।३४; १।६।२०, ४०	ओ० सू० ५६
करयल जाव वद्धावेइ	१।६।४५	१।३।५५
करेइ जाव सत्थोवाडिए	१।६।२३	वृत्ति
कुमारे जाव विहरइ	१।६।३६	१।१।६६
०खुत्तो०	१।१।७०	१।१।७०
गंगदत्ता वि	१।७।३३	१।२।५५
गामागर जाव सण्णिवेसा	२।१।३१	ओ० सू० ८६
गाहावई जाव तं घण्णे	२।१।२३	वृत्ति
गिण्हावेइ जाव एएणं	१।५।२७	१।२।६४
घाएति २	१।३।१४	१।३।१४
चउत्थं छट्ठ उत्तरेणं इमेयारूवे	१।७।१०, ११	१।७।६; १।२।१५
चउत्थस्स उक्खेवओ	१।४।१, २	१।२।१, २

छट्छट्टेणं जहा पणत्तीए पढम जाव जेणेव	१।२।१२-१४	भ० २।१०६-१०८
छट्टस्स उक्खेवओ	१।६।१,२	१।२।१,२
छिदइ जाव अप्पेगइयाणं	१।२।२८	१।२।२४
जणसइं च जाव सुणेत्ता	१।१।१६	ओ० सू० ५२
जहा विजयमिस्से जाव कालमासे कालं किच्चा	१।७।३१,३२	१।२।५०,५१
जातिअंघे जाव आगितिमेत्ते	१।१।६४	१।१।१४
जायसइठे जाव एवं	१।१।२५	ओ० सू० ८३
जाव पुढवी	१।३।६५; १।४।३६	१।१।७०
०ट्टिइएसु जाव उववज्जिहिइ	१।१।७०	१।१।५७
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	१।३।४७,५५; १।६।४५	१।२।६४
ण्हायाए जाव पायच्छित्ताए	१।६।५०	१।२।६४
ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ	१।७।२०	१।२।६४
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।३।२४	१।२।६४
तं चेव जाव से णं	१।३।१५	१।२।१५
तंतीहि य जाव सुत्तरुज्जुहि	१।६।२३	१।६।१८
तं महया जहा पढमं तहा	२।१।३२	२।१।१२; भ० ६।१५८
तच्चस्स उक्खवा	१।३।१,२	१।२।१,२
तह त्ति जाव पडिसुणेंनि	१।३।४६	१।१।६६
ताओ जाव फले	१।७।२३	१।७।१६
तीसे य०	१।१।२३	ना० १।१।१००
तेगिन्छियपुत्तो वा जाव उग्घोसेत्ति	१।१०।१३,१४	१।८।२१,२२
तो णं जाव ओवाइणइ	१।७।२१	१।७।१६
दसमस्स उक्खेवओ	१।१०।१,२	१।२।१,२
दारगस्स जाव आगितिमिस्से	१।१।२६	१।१।१४
नगरगोरूवा जाव भीया	१।२।३४	१।२।३३
नगरगोरूवा जाव वसभा	१।२।३३	१।२।२४
नगरगोरूवाणं जाव वसभाण	१।२।२८	१।२।२४
नगर जाव विणिज्जामि	१।२।२४	१।२।२४
निक्खेवओ	१।३।६६	१।१।७१
निक्खेवो १।२।७४; १।४।४०, १।५।३०; १।६।३८; १।७।३६; १।८।२८; १।९।६०		१।१।७१
निच्छुभेमाणे अन्नत्थ कत्थइ सुइं वा अलभ		
अण्णया कयाइ रहस्सियं सुदरिसणाए गिहं	१।४।२६,२७	१।२।६२,६३
नीय जाव अडइ	१।७।७	१।२।१५
पंचमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ	१।५।१,२	१।२।१,२
पंच्चाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं	२।१।३१	२।१।१३
पज्जेइ जाव एलमुत्तं	१।६।२३	१।६।१४

पम्हल०	१।७।२१	वृत्ति
पावं जाव समज्जिणइ	१।१।७०	१।१।५१
पुढवीए संसारो तहेव पुढवी	१।५।२६	१।३।६५
पुप्फ जाव गहाय	१।७।२३	१।७।२१
पुरा जाव विहरइ	१।१।४१, ४२; १।२।६५	१।१।४१
पुरिसे जाव निरयपडिरुवियं	१।२।१५	१।१।४१
पुव्वभवपुच्छा वागरेइ	१।७।१२, १३	१।१।४२, ४३
पुव्वभवे जाव अभिसमण्णागया	२।१।१५	वृत्ति
पुव्वाणुपुव्वि जाव जेणेव	१।१।२	ना० १।१।४
पुव्वाणुपुव्वि जाव दूइज्जमाणे	२।१।३२	२।१।३१
पोराणाणं जाव एवं	१।७।११	१।२।१५
पोराणाणं जाव पच्चणुभवमाणे	१।१।६६	१।१।४१
पोराणाणं जाव विहरइ	१।३।६४।१।४।६१; १।५।२८; १।७।३७; १।८।८, २६; १।९।५८;	
	१।१०।१८	१।१।४१
फलएहि जाव छिप्पतूरेणं	१।३।४३	१।३।२४
फुट्टमाणेहि जाव विहरइ	२।१।११	ना० १।१।६३
बहूणं गोरुवाणं ऊहे जाव लावणेहि	१।२।२६	१।२।२४
बहूहिं चुण्णप्पओगेहि य जाव आभिओगित्ता	१।१०।७	१।२।७२
बहूहिं जाव ण्हाया	१।७।२५	१।७।२३
भगवं जाव जओ णं	१।१।३४	१।१।३३
भगवं जाव पज्जुवासामो	१।१।२१	ओ०सू० ५२
भविता जाव पव्वइस्सइ	२।१।३५	२।१।१३
भविता जाव पव्वएज्जा	२।१।३१	२।१।१३
मज्झंमज्झेणं जाव पडिदंसेइ	१।२।१५	म० २।१।१०
महत्थं जाव पडिच्छइ	१।३।५६	१।३।४०
महत्थं जाव पाहुडं	१।३।५५	१।३।४०
महावीरे जाव समोसरिए	१।१।१७	वृत्ति
महिय जाव पडिसेहेति	१।३।४६	वृत्ति
मासाणं जाव आगितिमेत्ते	१।१।६६	१।१।६४
मासाण जाव दारियं	१।६।३१	१।२।३१
मासाणं जाव पयाया	१।७।२६	१।२।३१
मित्त०	१।३।६०; १।८।१७	१।२।३७
मित्त०	१।७।२७	१।७।१६
मित्त जाव अण्णाहि	१।३।२८	१।३।२४
मित्त जाव परियणं	१।६।४७	१।२।३७
मित्त जाव परियणेण	१।६।५७	१।२।३७

मित्त जाव परिवुडा	१।२।५४	१।२।३७
मित्त जाव परिवुडाओ	१।७।२३	१।७।१६
मित्त जाव परिवुडे	१।३।५५	१।२।३७
मित्त जाव महिलाओ	१।७।२६	१।७।१६
मित्त जाव सद्धि	१।७।२३	१।७।१६
मित्त जाव सद्धि	१।६।४५	१।२।३७
मियादेवी जाव पडिजागरमाणी	१।१।२६	१।१।१५
मुंडा जाव पव्वयंति	२।१।३१	२।१।१३
रट्टं च	१।१।५७	१।१।५७
रट्टे य जाव अंतेउरे	१।१।५७	वृत्ति
राईसर जाव नो खलु अहं	२।१।१३	वृत्ति
राईसर जाव पभियओ	१।२।७२	१।१।५०
राईसर जाव प्पभियओ	१।१।०।७	१।१।५०
राईसर जाव सत्थवाह०	१।५।२२, २३	१।१।५०
राईसर जाव सत्थवाहाण	१।१।५०	ओ०सू० ५२
राईसर जाव सत्थवाहेहिं	१।६।५७	१।१।५०
राया जाव जीईवयमाणे	१।६।३७	१।६।३६
वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि	१।६।२३	१।६।१६
संगयगय०	१।२।७	वृत्ति
सणाहाण य जाव वसभाण	१।२।२४	१।२।२०
सण्णद्ध जाव पहरणे	१।२।२८	१।२।१४
सण्णद्धबद्ध जाव पहरणेहिं	१।३।४७	१।२।१४
सण्णद्धबद्ध जाव प्पहरणा०	१।३।२४	१।२।१४
सत्थेहि य जाव नहच्छेयणेहि	१।६।२३	१।६।२२
समणे जाव विहरइ	१।१।२०	ना० १।१।६७
समाणे सिघाडग तहेव जाव सुदरिसणाए	१।४।२२-२४	१।२।५७-५६
समुप्पण्णे जाव तहेव निग्गए	१।३।१५	१।२।१५
सागरोवम०	१।१।७०	१।१।५७
सिघाडग जाव एवं	१।१।०।१३	१।१।५३
सिघाडग जाव पहेसु	१।२।५७; १।८।२१; २।१।२३	१।१।५३
सुंदरथण	१।२।७	वृत्ति
सुबहुं जाव समज्जिणित्ता	१।८।१३; १।६।२२६; १।१।०।८	१।१।५१
सुवाहुकुमारे जाव अलंभोगसमत्थं	२।१।१०, ११	ओ०सू० १४८, १४६
हट्टुट्टुहियया	१।१।२६	ओ०सू० २०
हय जाव पडिसेहिए	१।३।५०	१।३।४६

शुद्धि-पत्र

मूलपाठ

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२०	० मणप्पत्ते	० मणुप्पत्ते
५७	१२	जहेसु	ज्ञहेसु
६०	२२	हीत्थ	हृत्थी
१७७	३	कट्ट	कट्ठ
२०६	१०	विप्पहर-माण	विप्पहरमाण
३०६	१६	संकाणि	संकामणि
४२६	१६	वेरमणाइ	वेरमणाहं
४५५	१५	पज्जुवासणयाए	पज्जुवासणाए
४६१	७	देवदेसंस	देवसंदेस
५१६	१६	तुम	तुमं
५५१	७	ताइ	ताहं
५७५	१६	० समुदएणं	० समुदएण
५६८	१२	सत्तिरीएण	सत्तिरीएणं
६१६	६	दसं	दस
७३०	२०	खणमाणे	खणमाणे
७३८	७	अप्पेगइयाण	अप्पेगइयाणं
७३६	१२	दुप्पडियाणदे	दुप्पडियाणदे

पाठान्तर

१६	पा० ६	पट्टंसि	पट्टंसि
४८	पा० ४	मिणद्धति	मिणद्धेति
५२२	पा० २	आसुइत्त	आसुइत्ते

परिक्षिष्ट

२८	२४	अभिगयजीवेजी नं	अभिगयजीवाजीवेजं
----	----	----------------	-----------------

